स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचांग २००५-०६ ई.

दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३०वाँ



एक मात्र वितरक :
मॉडर्न पब्लिशर्ज़
रेलवे रोड, जालन्धर
फोन : 2457160

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर - 144008

मूल्य 48.00 रु.

अन्य प्राप्ति स्थान :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 2457959

स्थापित सं० 1875 ई०

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 130वां

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी के सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित

पंचाँग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद–आलम जन्त्री उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं बर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश यात्रा योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित निर्दिष्ट किए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री—संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 301 रुपए होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 551 रुपए अथवा 11 पौंड होगी।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री—आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाता है। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। इसके लिए **वृहद् जन्मपत्री** के लिए फीस 551 रुपए से 1100 रुपए तक। विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 1000 रुपए अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

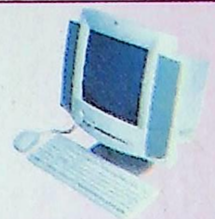
वर्षफल—आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा ? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन्, ई० व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 275 रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा-व्यापारियों के लिए चाँस—वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए चाँस की मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। मासिक रिपोर्ट की फीस 401 रुपए है। यदि एक जिन्स से अधिक होगी तो रुपए अतिरिक्त होंगे।

शेयर-बाज़ार—शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों के तेज़ी से चाँस के लिए शेयर बाज़ार की मासिक रिपोर्ट की फीस 400 रुपए। साथ में अपनी जन्मपत्री की फोटो कापी भी भेज दें।

नोट—पण्डित जी से प्रत्यक्ष केवल शनिवार एवं बुधवार को मिला जा सकता है। अत: दूर से आने वाले सज्जन फोन या पत्र द्वारा पहले समय निश्चित करके सम्पर्क करें।

कम्प्यूटर (Computrized) शुद्ध/वैज्ञानिक जन्मपत्री—लेटैस्ट प्रामाणिक सॉफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 251/- रुपये, वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्त लिखित उपायों सहित 550 रुपये।



Pt. Panna Lal Jyotishi M.A. Office Pt. Devi Dayal Jyotishi & Sons.

Adda Hoshiarpur, Jalandhar—144008 (India) Ph. 2457959, 2221325

कृपया ड्राफ्ट/मनीआर्डर पं० पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर के नाम से ही भेजें।


गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी


श्री गणेशाय नमः


संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी


श्री सरस्वत्यै नमः


स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

वि. संवत् २०६२ (सन् २००५-०६ ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

राजा शनि — मन्त्री बुध

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)

सुपुत्रः स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम M.Tech.)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर— 144 008 (भारत) फोन नं. : 2457959, फैक्स 2227388

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३० वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

प्रकाशक : मॉडर्न पब्लिशर्ज़, रेलवे रोड, जालन्धर शहर फोन : 2458388

Printed at : MBD Printographics (P) Ltd. Ram Nagar, Ind. Area, Gagret, Distt. Una (H.P.).

पंचाँग दिवाकर के १२५वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर

जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दुसभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेरभिव्यंजनां करोति। एकं प्रामाणिकं पञ्चाङ्गं धर्मपरायणसमाजस्य कृते पर्वत्योहार ग्रहसंचारग्रहणविवरण मुहूर्तज्योतिषादीनां विषयेषु आलोकस्तम्भस्य कार्यं करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सुप्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्मगणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्ग दिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामुपयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामुपेयोगी प्रतीयते।

आशास्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामयमान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

श्री हस्त-मुद्रा—
१००८ स्वामी नारायणानन्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम् (वाराणसी)

क्या आप ज्योतिष सीखना चाहते हैं ? (अनुपम ग्रन्थ माला)

पंचाँग दिवाकर देखने की विधि

(१) पंचांग दिवाकर का निर्माण ग्रीनविच (Greenwich) से पूर्व रेखांश ७५°।३४ एवं अक्षांश ३१°।१९ उत्तर के आधार पर लिया गया है। पंचांग में निर्दिष्ट मुख्यत: सूर्योदयास्त भी इसी अक्षांश अर्थात् जालन्धर शहर का है।

(२) इस पंचांग का गणित भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा प्रामाणित तथा इसके निर्माण में भारत सरकार द्वारा मान्य सूक्ष्म दृक् गणित एवं चित्रा पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है।

(३) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में उपयोगी होंगे। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट जमा कर देवें।

(४) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। तिथि, नक्षत्रों आदि के घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टा. में निकल आता है। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में भी दिए गए हैं। जहाँ पर २४, २५, २६ आदि अंक लिखे हैं, वहाँ २४ रात्रि १२ बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटा कर अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार पिछली तारीख** का दिन ही माना जाता है।

(५) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश काल, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको भा. स्टै. टाईम में परिवर्तित किया जा सकता है। **ध्यान रखें**, चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल है। तिथि, नक्षत्रादि के **घंटा मिनट एवं दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैण्डर्ड टाईम में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।**

(६) पक्षों में शुक्ल पक्ष को शुदि या चाँदना पक्ष, तथा कृष्ण पक्ष को वदि या अन्धेरा पक्ष भी कहते हैं। पूर्णिमा १५ के अंक से तथा अमावास को ३० के अंक में निर्दिष्ट किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०। ०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

(७) गत अनेक वर्षों से सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह नक्षत्रों के संचार एवं पर्व-त्यौहारों के विवरण घड़ी/पलों के साथ-साथ घण्टों/मिनटों का भी समावेश किया गया है, जोकि आधुनिक अंग्रेजी पठित ज्योतिर्विदों के लिए भी 'पंचांग' समान रूप से उपयोगी हो गया है।

परमोपयोगी शास्त्र-वाक्यानि

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति।
यत्प्रयंत्यभि संविशति, तद् विजिज्ञासतस्व तद्ब्रह्म॥ उपनिषद्

अर्थात् जिस (परमात्म) तत्त्व से यह सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई है, जिसमें यह जीवित रहती है, और जिसमें फिर लीन हो जाती है, वही परब्रह्म परमात्मा है, उसी को जानने की इच्छा करो।

आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, ग्रह-नक्षत्र, चराचर सभी दिशाएँ, वृक्ष-वनस्पतियां, नदियाँ और समुद्र—ये सभी श्री भगवान् के शरीरांग हैं। सभी रूपों में स्वयं भगवान् प्रकट हैं—ऐसा समझ कर सभी को अनन्य भाव से प्रणाम करें। —(श्रीमद्भागवद)

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्न बोधस्य योगोभवति दुखहा॥ (गीता ६, १६)

अधिक खाने वाला या बिल्कुल नहीं खाने वाला, अधिक सोने वाला, या अधिक जागने वाला ही व्यक्ति योग को नहीं पा सकता। इसको तो उचित आहार और व्यवहार में सन्तुलन रखने वाला, अपने सभी कर्मों में सन्तुलित आचरण रखने वाला, उचित मात्रा में जागरण एवं उचित नींद लेने वाला सन्तुलित व्यक्ति ही योग को प्राप्त कर दु:खों का निवारण कर लेता है।

साधूनांदर्शनं पुण्य तीर्थभूता हि साधव:। कालेन फलते तीर्थ सद्य: साधुसमागम:॥

साधुओं अर्थात् सज्जन लोगों का दर्शन तीर्थ स्थलों की भान्ति साक्षात पुण्य कारक एवं पवित्र करने वाला होता है। तीर्थों पर किए गए जप-स्नान आदि का फल तो कुछ समय पश्चात् मिलता है, परन्तु साधु अर्थात् महान् पुरुषों के समागम का फल तुरन्त प्राप्त हो जाता है।

दुर्लभं त्रयमेव एतद् देवानुग्रह हेतुकम्। मनुष्यत्व मुमुक्षत्व महापुरुष संश्रय:॥

अर्थात् तीन अत्यन्त दुर्लभ वस्तुएँ तो केवल श्री भगवान् की कृपा से ही प्राप्त होती हैं—मनुष्यत्व, मुमुक्षत्व (मोक्ष पाने की उत्कट इच्छा) तथा महापुरुषों का संग॥

शान्ति के लिए ईश्वरपरायण होना अनिवार्य—
नास्तिबुद्धिरयुक्तस्य न चा युक्तस्य भावना।
न चाभावयत: शान्ति:, अशान्तस्य कुत: सुखम्॥ श्रीगीता ॥ २॥

अर्थात् जो व्यक्ति आयुक्त (जो ईश्वर या धर्म-परायण नहीं) उसकी बुद्धि निश्चयात्मक नहीं होती और उसमें दया, करुणा आदि भावनाएँ भी नहीं होती, भावनाहीन व्यक्ति को शान्ति नहीं मिलती तथा जिस व्यक्ति को शान्ति नहीं, उसे सुख प्राप्ति कैसे हो सकती है ?

न च पश्यन्ति जन्मान्धा: कामान्धो नैव पश्यति। मदोन्मत्ता न पश्यन्ति अर्थी दोषं न पश्यति॥

अर्थात् जन्म के अन्धों को कुछ दिखाई नहीं देता है। कामासक्त व्यक्ति को भी कुछ नहीं सूझता, नशे आदि से उन्मत्त व्यक्ति को भी कुछ दिखाई नहीं देता और अपने स्वार्थ में संलग्न व्यक्ति को भी कोई दोष दिखाई नहीं देता है।

आहार निद्राभय मैथुनानि सामानि चैमानि नृणां पशूनाम्।
ज्ञानं नराणामधि को विशेष ज्ञानेन हीना: पशुभि: समाना:॥

अर्थात् भोजनाहार, निद्रा, भय, भोग-विलास आदि प्रसंग—ये सब मनुष्यों और पशुओं में समान हैं। पशुओं की अपेक्षा मनुष्यों में केवल ज्ञान ही विशेष अतिरिक्त गुण है। अत: ज्ञान से हीन मनुष्य पशु के समान है।

विषय-सूची—पंचांगदिवाकर संवत् २०६२

इस वर्ष के नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2005–06 ई.)

—जनवरी 2005 ई.—

इंग्लिश नववर्ष प्रारंभ 1 जन. शनि
लोहड़ी पर्व 12 जन. बुध
मकर संक्रान्ति (माघी) 13 जन. गु.
पुत्रदा एकादशी व्रत 20 जन. गुरु
पौष पूर्णिमा 25 जन. मंग
माघस्नान प्रारंभ 25 जन. मंग
गणतन्त्र दिवस भारत 26 जन. बुध
श्रीगणेश संकट चतुर्थी 29 जन. श.

—फरवरी—

भौमवती मौनी अमावस 8 फर. मं.
गौरी तृतीया 11 फर. शुक्र
तिल चतुर्थी व्रतादौ 11/12 फर.
बसन्त पंचमी 13 फर. रवि
रथ-आरोग्य सप्तमी 15 फर. मंग
भीष्माष्टमी 16 फर. बुध
भीष्म द्वादशी 20 फर. रवि
माघ पूर्णिमा 24 फर. गुरु
माघ स्नान समाप्त 24 फर. गुरु
गुरु रविदास जयंती 24 फर. गुरु

—मार्च—

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत 8 मार्च मंग
होलाष्टक प्रारम्भ 18 मार्च शुक्र
गोविन्द द्वादशी 22 मार्च मंग.
पूर्णिमा, होली पर्व 25 मार्च शुक्र
होलाष्टक समाप्त 25 मार्च शुक्र
होलिका दहन 25 मार्च शुक्र
गुड फ्राइडे 25 मार्च शुक्र
होला मेला (आनंदपुर सा.) 26 मार्च श.

—अप्रैल—

श्री शीतलाष्टमी व्रत 2 अप्रै. शनि
वारुणी पर्व 6 अप्रै. बुध
वि. संवत् 2061 पूर्ण 8 अप्रै. शुक्र
वि. संवत् 2062 प्रा. 9 अप्रै. शनि
चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ 9 अप्रै. शनि
गौरी तृतीया (गणगौर) 11 अप्रै. चंद्र
श्री लक्ष्मी पंचमी 13 अप्रै. बुध
वैशाखी पर्व, संक्रान्ति 13 अप्रै. बुध
श्री दुर्गाष्टमी 17 अप्रै. रवि
श्री रामनवमी 18 अप्रै. चंद्र
नवरात्रे समाप्त 18 अप्रै. चंद्र
महावीर जयन्ती 22 अप्रै. शुक्र
वैशाख स्नान प्रारंभ 24 अप्रै. रवि

—मई—

टैगोर जयंती 7 मई शनि
श्रीपरशुराम जयन्ती 10 मई मंग
अक्षया तृतीया 11 मई बुध
गुरु शंकराचार्य जयं. 13 मई शुक्र
श्री गंगा जयन्ती 15 मई रवि
श्रीजानकी जयंती 17 मई मंग
श्रीबगुलामुखी जयंती 17 मई मंग
नरसिंह चौदश 22 मई रवि
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा 23 मई चंद्र
वैशाख स्नान समाप्त 23 मई चंद्र

—जून—

भद्रकाली एकादशी 2 जून गुरु
वटसावित्री व्रत (अमा.) 6 जून चं.
सोमवती भावुका अमा. 6 जून चंद्र
रम्भा तृतीया व्रत 9 जून गुरु
मेलाक्षीर भवानी (काश.) 15 जून बु.
श्रीगंगा दशहरा (हरिद्वार) 17 जून शुक्र
निर्जला एकादशी व्रत 18 जून शनि
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) 21 जून मं.
सन्त कबीर जयन्ती 22 जून बुध

—जुलाई—

रथ यात्रा (पुरी) 8 जुला. शुक्र
कुमार षष्ठी 12 जुला. मंग
विवस्वत सप्तमी 13 जुला. बुध
चातुर्मास्य व्रतादि प्रा. 18 जुला. चंद्र
गुरुपूर्णिमा, ब्यास पूजा 21 जुला. गु.
चातुर्मास्य व्रतादि (मतान्तरे) 21 जुला. गु.

—अगस्त—

हरियाली अमावस 5 अग. शुक्र
मधुस्रवा–सिंघारा तीज 8 अग. चंद्र
नाग–पंचमी 10 अग. बुध
गो. तुलसी जयंती 12 अग. शुक्र
दुर्गाष्टमी (मेला चिंतपूर्णी) 13 अग. श.
भारत स्वतन्त्रता दिवस 15 अग. चं.
श्रावण पूर्णिमा 19 अग. शुक्र
दर्शन श्रीअमरनाथगुफा 19 अग. शु.
रक्षा-बन्धन 19 अग. शुक्र
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी 22 अग. चंद्र
चन्दन षष्ठी व्रत 24 अग. बुध
दूर्वाष्टमी व्रत 26 अग. शुक्र
श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत. स्मा. 26 अ.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी वैष्ण. 27 अग. श.
गुग्गा नवमी 28 अग. रवि
वत्स द्वादशी 31 अग. बुध

—सितम्बर—

कुशोत्पाटनी पिठौरी अमा. 3 सितं. श.
हरितालिका तृतीया 6 सितं. मंग
सिद्धि विनायक व्रत 7 सितं. बुध
कलंक चतुर्थी (चंद्रदर्शन निषेध) 7 सितं.
ऋषि पंचमी 8 सितं. गुरु
सूर्य षष्ठी व्रत 10 सितं. शनि
मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी 10 सितं. श.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा. 11 सितं. र.
श्री राधाष्टमी 11 सितं. रवि
श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन) 12 सितं. चं.
श्रीवामन जयं. (द्वादशी) 15 सितं. गु.
अनन्त चतुर्दशी व्रत 17 सितं. शनि
मे. बाबा सोढल, जालं. 17 सितं. श.
पूर्णिमा श्राद्ध (10/50 बाद) 17 सितं. श.
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारंभ 18 सितं. रवि
महालक्ष्मी व्रत समा. 25 सितं. रवि

—अक्तूबर—

महात्मा गाँधी जयं. 2 अक्तू. रवि
सर्वपितृ श्राद्ध 3 अक्तू. चंद्र
श्राद्ध समाप्त 3 अक्तू. चंद्र
कंकण सूर्यग्रहण 3 अक्तू. चंद्र
सोमवती अमावस 3 अक्तू. चंद्र
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ 4 अक्तू. मंग
उपांग ललिता व्रत 8 अक्तू. शनि
सरस्वती आवाहन 10 अक्तू. चंद्र
सरस्वती पूजन 10 अक्तू. चंद्र
बलिदान दिवस 10 अक्तू. चंद्र
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी 11 अक्तू. मं.
सरस्वती विसर्जन 12 अक्तू. बुध
महानवमी 12 अक्तू. बुध
नवरात्रे समाप्त 12 अक्तू. बुध
विजयादशमी (दशहरा) 12 अक्तू. बु.
भरत मिलाप 13 अक्तू. गुरु
शरद् पूर्णिमा-कोजागर व्रत 16 अक्तू. र.
खण्डग्रास चंद्रग्रहण 17 अक्तू. चंद्र
महर्षि बाल्मीकि जयं. 17 अक्तू. चंद्र
कार्तिक स्नान प्रारंभ 17 अक्तू. चंद्र
करवा चौथ व्रत 20 अक्तू. गुरु
अहोई अष्टमी व्रत 25 अक्तू. मंग
गोवत्स द्वादशी 29 अक्तू. शनि
धन त्रयोदशी 30 अक्तू. रवि
नरक चतुर्दशी 31 अक्तू. चंद्र
श्री हनुमान जयन्ती 31 अक्तू. चंद्र

—नवम्बर—

दीपावली 1 नवं. मंग
महालक्ष्मी पूजन 1 नवं. मंग
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा 2 नवं. बुध
विश्वकर्मा दिवस (पंजाब) 2 नवं. बुध
भाई दूज, यमद्वितीया 3 नवं. गुरु
सूर्य षष्ठी व्रत 7 नवं. चंद्र
गोपाष्टमी 9 नवं. बुध
अक्षय-कूष्माण्ड नवमी 10 नवं. गुरु
भीष्म पंचक प्रारम्भ 11 नवं. शुक्र
देवप्रबोधिनी एकादशी 12 नवं. शनि
चातुर्मास्यादि समा. 12 नवं. शनि
तुलसी विवाह 13 नवं. रवि
बैकण्ठ चौदश 14 नवं. चंद्र
श्रीगुरु नानक जयन्ती 15 नवं. मंग
भीष्मपंचक समाप्त 15 नवं. मंग
कार्तिक स्नान समाप्त 15 नवं. मंग
कार्तिक पूर्णिमा 15 नवं. मंग
मेला पुष्कर, रामतीर्थ 15 नवं. मंग
श्रीकाल भैरवाष्टमी 23 नवं. बुध

—दिसम्बर—

स्कन्द-चम्पा षष्ठी 6 दिसं. मंग
मोक्षदा एकादशी व्रत 11 दिसं. रवि
दत्तात्रेय जयं., पूर्णिमा 15 दिसं. गुरु
सूर्य उत्तरायण में 21 दिसं. बुध
क्रिसमिस डे 25 दिसं. रवि

–जनवरी 2006 ई.–

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. रवि
पुत्रदा एकादशी व्रत	10 जन. मंग
लोहड़ी पर्व	13 जन. शुक्र
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. शनि
पूर्णिमा, माघस्नान प्रारंभ	14 जन. शनि
श्रीगणेश संकट चतुर्थी	18 जन. बुध
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. गुरु
माघ (मौनी) अमावस	29 जन. रवि

–फरवरी–

गौरी तृतीया	1 फर. बुध
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	1 फर. बुध
बसन्त पंचमी	2 फर. गुरु
रथ-आरोग्य सप्तमी	4 फर. शनि
भीष्माष्टमी	5 फर. रवि
भीष्म द्वादशी	9 फर. गुरु
माघ पूर्णिमा स्नान	13 फर. चंद्र
माघ स्नान समाप्त	13 फर. चंद्र
गुरु रविदास जयंती	13 फर. चंद्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	26 फर. रवि
सोमवती फा. अमावस	27 फर. चंद्र

–मार्च–

होलाष्टक प्रारम्भ	7 मार्च मंग
गोबिन्द द्वादशी	11 मार्च शनि
पूर्णिमा, होली पर्व	14 मार्च मंग
होलिका दहन (भद्रा बाद)	14 मार्च मंग
होलाष्टक समाप्त	14 मार्च मंग
होला मेला (आनंदपुर सा.)	15 मार्च बुध
श्रीशीतलाष्टमी व्रत	23 मार्च गुरु
वारुणी योग	27 मार्च सोम
खग्रास सूर्यग्रहण	29 मार्च बुध
वि. संवत् 2062 पूर्ण	29 मार्च बुध

एकादशी व्रत

सफला एका. (पौष कृ.)	6 जन. गु.
पुत्रदा एका. (पौष शुक्ल)	20 जन. गु.
षट्तिला एका. (माघ कृ.)	5 फर. श.
जया एका. (माघ शु.)	19 फर. श.
विजया एका. (फागु. कृ.)	6 मार्च र.
आमलकी एका. (फागु. शु.)	21 मार्च चं.
पापमोचनी एका. (चैत्र कृ.)	5 अप्रै. चं.
कामदा एका. (चैत्र शुक्ल)	20 अप्रै. बु.
वरूथिनी एका. (वैशा. कृ.)	4 मई बु.
मोहिनी एका. (वैशा. शु.)	20 मई शु.
अपरा एका. (ज्ये. कृ.)	2 जून गु.
निर्जला एका. (ज्ये. शु.)	18 जून श.
योगिनी एका. (आषा. कृ.)	2 जुला. श.
देवशयनी एका. (स्मार्त)	17 जुला. र.
देवशयनी एका. (आषा. शु.)	18 जुला. चं.
कामिका एका. (श्राव. कृ.)	31 जुला. र.
पवित्रा एका. (श्राव. शु.)	16 अग. मं.
अजा एका. (भाद्र. कृ.)	30 अग. मं.
पद्मा एका. (भाद. शु.)	14 सितं. बु.
इन्दिरा एका. (आश्वि. कृ.)	29 सितं. गु.
पापांकुशा एका. (आ. शु.)	13 अक्तू. गु.
पापांकुशा एका. वैष्णव	14 अक्तू. शु.
रमा एका. (कार्ति. कृ.)	28 अक्तू. शु.
देवप्रबोधिनी एका. (का. शु.)	12 नवं. श.
उत्पन्ना एका. (मार्ग. कृ.)	27 नवं. र.
मोक्षदा एका. (मार्ग. शु.)	11 दिसं. र.
सफला एका. (पौष कृ.)	27 दिसं. मं.

(सन् 2006 ई.)

पुत्रदा एका. (पौष शु.)	10 जन. मं.
षट्तिला एका. (माघ कृ.)	26 जन. गु.
जया एका. (माघ शु.)	8 फर. बु.
विजया एका. (फा. कृ.)	24 फर. शु.
आमलकी एका. (फा. शु.)	10 मार्च शु.
पापमोचनी एका. स्मा.	25 मार्च शु.
पापमोचनी एका. वैष्ण	26 मार्च र.

व्रत श्री सत्यनारायण

पौष पूर्णिमा व्रत	24 जन. चं.
माघ पूर्णिमा व्रत	23 फर. बु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	25 मार्च शु.
चैत्र पूर्णिमा व्रत	23 अप्रै. श.
वैशाख पूर्णिमा व्रत	23 मई चं.
ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत	21 जून मं.
आषाढ़ पूर्णिमा व्रत	21 जुला. गु.
श्रावण पूर्णिमा व्रत	19 अग. शु.
भाद्रपद पूर्णिमा व्रत	17 सितं. श.
आश्विन पूर्णिमा व्रत	16 अक्तू. र.
कार्तिक पूर्णिमा व्रत	15 नवं. मं.
मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत	15 दिसं. गु.

(सन् 2006 ई.)

पौष पूर्णिमा व्रत	13 जन. शु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	12 फर. र.
चैत्र पूर्णिमा व्रत	14 मार्च मं.

अमावस्याएँ

(स्नान-दान, देव पितरादि तर्पणाय)

चैत्र अमावस	8 अप्रै. शु.
वैशाख अमावस	8 मई र.
ज्येष्ठ (सोमवती) अमा.	6 जून चं.
आषाढ़ अमावस	6 जुला. बु.
श्रावण अमा. (तर्पणाय)	4 अग. गु.
श्रावण अमा. (स्नानदानार्थ)	5 अग. शु.
भाद्रपद अमावस (पिठौरी)	3 सितं. श.
आश्विन अमावस	3 अक्तू. चं.
कार्तिक अमा. (तर्पणाय)	1 नवं. मं.
कार्तिक अमा. (स्नानदानार्थ)	2 नवं. बु.
मार्गशीर्ष अमावस	1 दिसं. गु.
पौष अमा. (तर्पणाय)	30 दिसं. शु.
पौष अमा. (स्नानदानार्थ)	31 दिसं. श.
माघ (मौनी) अमावस	29 जन. र.
फाल्गुन (सोमवती) अमा.	27 फर. चं.
चैत्र अमावस	29 मार्च बु.

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

श्री गणेश संकट चतुर्थी	29 जन. श.
श्री गणेश तिल चतुर्थी	11–12 फ.
श्रीगणेश चतुर्थी (फाल्गुन)	27 फर. र.
श्री गणेश चतु. (चैत्र)	29 मार्च मं.
श्री गणेश चतु. (वैशाख)	27 अप्रै. बु.
श्री गणेश चतु. (ज्येष्ठ)	26 मई गु.
श्री गणेश चतु. (आषाढ़)	25 जून श.
श्री गणेश चतु. (श्रावण)	24 जुला. र.
श्री गणेश चतु. (भाद्र.)	22 अग. चं.
श्रीसिद्धि विनायक (भाद्र. शु.)	7 सितं.
श्रीगणेश चतु. (आश्विन)	21 सितं. बु.
श्रीगणेश चतु. (कार्तिक)	20 अक्तू. गु.
श्रीगणेश चतु. (मार्ग.)	19 नवं. श.
श्रीगणेश चतु. (पौष)	19 दिसं. चं.

(सन् 2006 ई.)

श्रीगणेश संकट चतुर्थी	18 जन. बु.
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	1 फर. बु.
श्रीगणेश चतु. (फाल्गुन)	16 फर. गु.
श्रीगणेश चतु. (चैत्र)	18 मार्च श.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

श्रीपार्श्वनाथ जयंती	6 जन. गु.
मेरू त्रयोदशी	7 फर. चं.
मर्यादा महोत्सव	15 फर. मं.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	23–25 मा.
ऋषभदेव जयंती	1 अप्रै. शु.
वरसी तप शुरु	2 अप्रै. श.
ओली तप शुरु	17 अप्रै. र.
महावीर जयंती	22 अप्रै. शु.
ओली तप समाप्त	24 अप्रै. र
वरसी तप समापन	11 मई बु.
केवल ज्ञान दिवस	18 मई बु.
मे. चक्रेश्वरी देवी (सरहिन्द)	5–7 जून
चातुर्मास्य व्रतादि प्रारंभ	21 जुला. गु.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	21 जुला. गु.
जैन महोत्सव	5 अग. शु.
पर्युषण पर्वारम्भ	31 अग. बु.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	31 अग. बु.
संवत्सरी महापर्व	7 सितं. बु.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	10 सितं. श.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	12 सितं. चं.
श्री महावीर निर्वाण	1 नवं. मं.
श्री वीर संवत् 2531 शुरु	2 नवं. बु.
जन्म आचार्य श्रीतुलसी	3 नवं. गु.
ज्ञान पंचमी	6 नवं. र.
चातुर्मास्य व्रतादि समाप्त	15 नवं. मं.
मौनी एकादशी	11 दिसं. र.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	20 दिसं. मं.
श्री पार्श्वनाथ जयंती	26 दिसं. चं.

(सन् 2006 ई.)

मेरू त्रयोदशी	27 जन. शु.
मर्यादा महोत्सव	4 फर. श.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	12–14 मार्च
ऋषभदेव जयंती	22 मार्च बु.
वरसी तप शुरू	23 मार्च गु.

मुस्लिम त्यौहार

ईदुलजुहा (बकरीद)	21 जन. शु.
मुहर्रम, 1426 हिजरी प्रा.	11 फर. शु.
मुहर्रम (ताजिया)	20 फर. र.
चेहलुम	31 मार्च गु.
आखिरी चहार	6 अप्रै. बु.
शहादत–ए–ईमामहसन	8 अप्रै. शु.
ईद–ए–मिलाद	22 अप्रै. शु.
ईद–ए–मौलाद	27 अप्रै. बु.
ग्यारहवीं शरीफ	20 मई शु.
जन्म श्री हजरत अली	19 अग. शु.
शबे–मिराज	2 सितं. शु.
शबे–बारात	20 सितं. मं.
रमज़ान (रोज़े शुरु)	6 अक्तू. गु.
शहादत–ए–हजरत अली	26 अक्तू. बु.
जमातुलविदा	28 अक्तू. शु.
शबे–कदर	1 नवं. मं.
ईद–उल–फितर	4 नवं. शु.

(सन् 2006 ई.)

ईदुलजुहा (बकरीद)	11 जन. बु.
मुहर्रम, 1427 हिजरी प्रा.	31 जन. मं.
मुहर्रम (ताजिया)	9 फर. गु.
चेहलुम	20 मार्च चं.
आखिरी चहार	29 मार्च बु.
शहादत–ए–इमाम हसन	29 मार्च बु.

पितृ पक्ष में श्राद्ध

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2005 ई० में श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

पूर्णिमा का श्राद्ध	17 सितं. श.
प्रतिपदा का श्राद्ध	18 सितं. र.
द्वितीया का श्राद्ध	19 सितं. चं.
तृतीया का श्राद्ध	20 सितं. मं.
चतुर्थी का श्राद्ध	21 सितं. बु.
पंचमी का श्राद्ध	22 सितं. गु.
षष्ठी का श्राद्ध	23 सितं. शु.
सप्तमी का श्राद्ध	24 सितं. श.
अष्टमी का श्राद्ध	25 सितं. र.
नवमी का श्राद्ध	26 सितं. चं.
दशमी का श्राद्ध	27 सितं. मं.
एकादशी का श्राद्ध	28 सितं. बु.
द्वादशी का श्राद्ध	29 सितं. गु.
त्रयोदशी का श्राद्ध	30 सितं. शु.
चतुर्दशी का श्राद्ध	2 अक्तू. र.
अमावस (सर्वपितृ) श्राद्ध	3 अक्तू. चं.

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयंती	15 फर. मं.
होलिका दहन	25 मार्च शु.
श्रीभगवत्नारायण जयं.	29 मार्च मं.
वैशाखी पर्व	13–15 अप्रै.
रामनवमी पर्व	18 अप्रै. चं.
जानकी जयंती	17 मई मं.
गंगा दशहरा	17 जून शु.
गुरु पूर्णिमा	21 जुला. गु.
तुलसी जयंती पर्व	12 अग. शु.
श्रीकृष्ण जयंती पर्व	26–28 अग.
वामन जयंती	15 सितं. गु.
विजयादशमी	12 अक्तू. बु.
शरद पूर्णिमा पर्व	16–17 अक्तू.
बाल्मीकि जयंती	17 अक्तू. चं.
महंत गु. गोबिंददास जयं.	27 अक्तू. गु.
श्री हनुमान जयंती	31 अक्तू. चं.
दीपावली पर्व	1 नवं. मं.
श्री गीता जयंती	11 दिसं. र.

प्रदोष व्रत

पौष कृष्ण	8 जन. श.
पौष शुक्ल	22 जन. श.
माघ कृष्ण	6 फर. र.
माघ शुक्ल	21 फर. चं.
फाल्गुन कृष्ण (भौम)	8 मार्च मं.
फाल्गुन शुक्ल	23 मार्च बु.
चैत्र कृष्ण	6 अप्रै. बु.
चैत्र शुक्ल	21 अप्रै. गु.
वैशाख कृष्ण	5 मई श.
वैशाख शुक्ल	21 मई श.
ज्येष्ठ कृष्ण	4 जून श.
ज्येष्ठ शुक्ल	19 जून र.
आषाढ़ कृष्ण	3 जुला. र.
आषाढ़ शुक्ल (भौम प्रदोष)	19 जुला. मं.
श्रावण कृष्ण (भौम प्रदोष)	2 अग. मं.
श्रावण शुक्ल	17 अग. बु.
भाद्रपद कृष्ण	1 सितं. गु.
भाद्रपद शुक्ल	15 सितं. गु.
आश्विन कृष्ण	30 सितं. शु.
आश्विन शुक्ल	15 अक्तू. श.
कार्तिक कृष्ण	30 अक्तू. र.
कार्तिक शुक्ल	13 नवं. र.
मार्गशीर्ष कृष्ण	29 नवं. मं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (भौम प्रदोष)	13 दिसं. मं.
पौष कृष्ण	28 दिसं. बु.
पौष शुक्ल (2006 ई०)	11 जन. बु.
माघ कृष्ण	27 जन. शु.
माघ शुक्ल	10 फर. शु.
फाल्गुन कृष्ण	25 फर. श.
फाल्गुन शुक्ल	12 मार्च र.
चैत्र कृष्ण	27 मार्च चं.

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. र.
लाला लाजपतराय जयं.	28 जन. शु.
स्वामी विवेकानन्द	1 फर. मं.
स्वामी रामानन्दाचार्य	1 फर. मं.
सिद्ध बाबा लालदयाल जी (ध्यानपुर व दतारपुर)	10 फर. गु.
श्री गुरु रविदास जयंती	24 फर. गु.
श्री गुरु रामदास जी	5 मार्च श.
स्वा. दयानन्द सरस्वती	8 मार्च मं.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	12 मार्च श.
शहीदी सः भगत सिंह	23 मार्च बु.
श्री चैतन्य महाप्रभु	25 मार्च शु.
सन्त श्रीतुकाराम	27 मार्च र.
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. गु.
श्री महावीर जयंती	22 अप्रै. शु.
श्री वल्लभाचार्य जयं.	4 मई बु.
श्री रविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई श.
श्री परशुराम जयं.	10 मई मं.
आ. गुरु शंकराचार्य	13 मई शु.
स्वामी रामानुजाचार्य	14 मई श.
श्री नारद जयन्ती	24 मई मं.
महाराणा प्रताप	10 जून शु.
सन्त कबीर जयंती	22 जून बु.
श्री ध्यानू भगत जयंती	24 जून शु.
ऋषि वेदव्यास जयंती	21 जुला. गु.
लोकमान्य तिलक जयं.	23 जुला. श.
गो. सन्त तुलसीदास	12 अग. शु.
सन्त ज्ञानेश्वर	27 अग. श.
भक्त नवल (जोधपुर)	27 अग. श.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. गु.
श्री चन्द्र जयंती	12 सितं. चं.
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. र.
श्री अग्रसेन जयंती	4 अक्तू. मं.
श्री माधवाचार्य	13 अक्तू. गु.
श्री धनवन्तरी	30 अक्तू. र.
श्री हनुमान जयंती	31 अक्तू. चं.
विश्वकर्मा जयंती	3 नवं. गु.
महा. रणजीत सिंह	13 नवं. र.
पं. जवाहरलाल नेहरू	14 नवं. चं.
श्री वीर वैरागी	14 नवं. चं.
श्री गुरु नानक देव	15 नवं. मं.
सत्य श्रीसाईं बाबा	23 नवं. बु.
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. श.
श्री दत्तात्रेय	15 दिसं. गु.

(सन् 2006 ई.)

स्वामी रामानन्दाचार्य जी	22 जन. र.
स्वामी विवेकान्द जी	22 जन. र.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. चं.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. श.
सिद्ध बा. लालदयाल जी	31 जन. मं.
गुरु रविदास जी	13 फर. चं.
गुरु रामदास जी	22 फर. बु.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	26 फर. र.
परमहंस रामकृष्ण जी	1 मार्च बु.
श्री चैतन्य महाप्रभु	14 मार्च मं.
सन्त तुकाराम जी	17 मार्च शु.

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल—सन् 2005–06 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास. वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टें. टा.)
माघ संक्रान्ति	13 जन. गुरु	29-42	अगले दिन सू. उ. से 12-05 तक
फागु. संक्रान्ति	12 फर. शनि	18-42	दोपहर 12-18 से प्रारम्भ
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च चंद्र	15-37	प्रातः 9-13 से अपरान्ह तक
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. बुध	24-09	सायं 5-45 से अगले दिन 6-33 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई शनि	21-04	दोपहर 2-40 से आरम्भ
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून मंग	27-40	अगले दिन सू. उ. से 10-04 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. शनि	14-34	प्रातः 8-10 से दोपहर तक
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. मंग	22-57	बाद दुपैहर से
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. शुक्र	22-51	बाद दुपैहर से
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. चंद	10-47	प्रातः सू. उ. से अपरान्ह तक
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं. बुध	10-32	प्रातः सू. उ. से अपरान्ह तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसं. गुरु	25-09	अगले दिन 7-33 तक
माघ संक्रान्ति	14 जन. शनि	11-55	प्रातः उषाकाल से प्रारम्भ
फागु. संक्रान्ति	12 फर. रवि	24-55	अगले दिन प्रातः 7-19 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च मंग	21-49	दुपैहर के बाद

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल—सन् 2005–06 ई.

भारतीय मुहूर्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2005–06ई	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टे. टा.)
19 जन.	कुम्भ	28–52	19 की रात्रि 10–52 से 20 की प्रातः 10–52 तक
18 फर.	मीन	19–02	दोपहर 1–02 से रात्रि 25–02 तक
20 मार्च	मेष	18–03	दोपहर 12–03 से रात्रि 24–03 तक
19 अप्रै.	वृष	29–07	19 की रात्रि 11–07 से 20 की प्रातः 11–07 तक
20 मई	मिथुन	28–17	20 की रात्रि 10–17 से 21 की प्रातः 10–17 तक
21 जून	कर्क	12–16	प्रातः 6–16 से सायं 6–16 तक
22 जुला.	सिंह	23–11	सायं 5–11 से अगले दिन प्रातः 5–11 तक
23 अग.	कन्या	6–15	22 की रात्रि 12–15 से 23 की दोप. 12–15 तक
22 सितं.	तुला	27–53	22 की रात्रि 1–53 से 23 की दोप. 1–53 तक
23 अक्तू.	वृश्चि.	13–12	प्रातः 7–12 से सायं 7–12 तक
22 नवं.	धनु	10–45	प्रातः 4–45 से सायं 4–45 तक
21 दिसं.	मकर	24–05	सायं 6–05 से अगले दिन प्रातः 6–05 तक
20 जन.	कुम्भ	10–45	प्रातः 4–45 से सायं 4–45 तक
18 फर.	मीन	24–56	सायं 18–56 से अगले दिन प्रातः 6–55 तक
20 मार्च	मेष	23–56	सायं 5–56 से अगले दिन प्रा. 5–56 तक

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले–सन् 2005 ई.

मेला	तिथि
मे. लोहड़ी (सर्वत्र)	12 जन.
मे. दांऊ (रोपड़, चण्डीगढ़)	12 जन.
मे. माघी (मुक्तसर)	13 जन.
मे. पोंगल (द. भारत)	13 जन.
मे. मस्तुआणा (पंजाब)	31 जन.
मेला मौनी अमावस (यू.पी.) हरिद्वार आदि	8 फर.
बसन्त पंचमी	13 फर.
श्रीस्वा. स्वरूपानन्दजी जयं. (भूपतवाला रोड़, हरिद्वार)	13 फर.
महेन्द्र बाहरी (जालन्धर)	18 फर.
मे. जैसलमेर (राज.)	21–24 फर.
मे. जयंती देवी (चण्डीगढ़)	21–24 फर.
मे. माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	24 फर.
मे. श्री महाशिवरात्रि	8 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	8 मार्च
होलिया होलाष्टक (यू.पी.)	18–25 मार्च
मेला सावातिल्ला	23 मार्च
होला मेला (आनंदपुर सा.)	26 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	30 मार्च
मे. नवचण्डी (मेरठ)	30 मार्च
मे. वीरमदास, बधौची (पटि.)	30 मार्च
भण्डारा स्वा. संतदास जी, गोपाल नगर, जालन्धर	30 मार्च
शीतलामाता (कुराली) पंजा.	1–2 अप्रै.
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	7 अप्रै.
मे. चीमा (नानकसर)	9 अप्रै.
मेला नवरात्रे (मनसादेवी, हरिद्वार)	9-18 अप्रै.
मनसादेवी (पंचकूला) हरि.	9–18 अप्रै.
गौरी तीज (जयपुर)	11 अप्रै.
मेला वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.
रामथनदास (फाजिल्का)	13 अप्रै.
माईसर खाना (बठिण्डा)	14 अप्रै.
मेला रामनवमी	18 अप्रै.
कांसादेवी (रोपड़) पं. प्रारंभ	23–24 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	24 अप्रै.
श्रीस्वामी स्वरूपानन्द निर्वाणदिवस (भूपतवाला रोड़, हरिद्वार)	26 अप्रै.
मेला पिंजौर (हरियाणा)	8 मई
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	15 मई
मे. भद्रकाली (कपूरथला)	2 जून
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	17 जून
मे. मढाली शरीफ	28 जून
रथयात्रा उत्सव (पुरी)	8 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	21 जुला.
महामण्डेश्व. स्वा. गु. प्रेमानन्द जी जयं. (भूपतवाला रोड़, हरिद्वार)	21 जुला.
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर)	21 जुला.
मे. नाग पंचमी (राज.)	25 जुला.
मे. सिंघारा तीज	8 अग.
गौरी तीज (जयपुर) राज.	8 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी पर्व (मथुरा)	26/27 अ.
गुग्गा नवमी (अम्बाला, पंजा.)	28 अग.
गोगामेड़ी (गंगानगर) राज.	28 अग.
मेला सुथरेशाह (दिल्ली)	3 सितं.
श्रीगुसाईंआणा (कुराली) पं.	5 सितं.
रामदेव–रोणेचा (जोधपुर) राज.	13 सितं.
वामन द्वादशी (पटि., अम्बाला)	15 सितं.
मे. छपार (मलेरकोटला) पं.	17 सितं.
बाबा सोढल (जालंधर) पं.	17 सितं.
मे. गोईंदवाल सा. (अमृतसर)	18 सितं.
गुग्गापीर, लुधियाना	17–18 सितं.
मेला फाल्गू (कुरुक्षेत्र) प्रा.	3 अक्तू.
आशापूर्णी (पठानकोट) पं.	4–12 अक्तू.
मे. हरचोवाल (गुरदासपुर)	11–12 अक्तू.
मे. दशहरा (सर्वत्र)	12 अक्तू.
बाबा बुड्ढा सा., अमृतसर	12 अक्तू.
महा.अग्रसेन, अगरोहाधाम, हिसार	17 अक्तू.
अचलेश्वर (बटाला)	11–12 नवं.
मेला वीर–वैरागी (नकोदर)	14 नवं.
मेला रामतीर्थ (अमृतसर)	15 नवं.
मेला पुष्कर राजस्थान	15 नवं.
मे. कपालमोचन (हरि.)	15 नवं.
मे. गढ़गंगा (यू.पी.)	15 नवं.
वार्षिक भ. संत प्रीतमदास जी गोपाल नगर, जालन्धर	30 नवं.
मेला जोड़ फतेहगढ़ प्रारंभ	26 दिसं.
मे. चमकौर साहिब	26–28 दिसं.
संगीत मे. हरवल्लभ (जालं.)	27–29 दिसं.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	12 जन.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	6–7 अप्रै.
गुप्तगंगा (अखनूर)	7–9 अप्रै.
नवरात्रे पर्व (कटड़ा)	9–17 अप्रै.
गुरुगद्दी 1008 सत्गुरु बा. कांशीगिर जी (सुन्दरबनी)	13–14 अप्रै.
मे. बाहूफोर्ट	17 अप्रै.
मे. रामबन	18 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	22 मई
मे. मानसर	13–14 जून
मे. क्षीर भवानी	15 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	22 जून
जन्म गुरु हरगोबिन्द	23 जून
शहीदी दिवस	13 जुला.
मे. शरीक भवानी	16 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	17–18 जुला.
मे. ज्वालामुखी	20 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणी देसा (डोडा)	21 जुला.
मे. रामबन	16 अग.
दर्शन श्री अमरनाथ गुफा	19 अग.
मेला स्वा. शंकराचार्य	19 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	1–2 सितं.
मेला पात (भद्रवाह)	9–10 सितं.
मेला आशापति, मार्तण्ड	2–3 अक्तू.
मेला झिड़ी बाबा	15 नवं.
मेला पुरमण्डल	30 नवं.

हिमाचल प्रदेश के मेले–सन् 2005 ई.

मेला	तिथि
मे. श्री ब्रह्मा (कुल्लू)	19 जन.
बसन्त पंचमी (बिलासपुर)	13 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	8–17 मार्च
कालेश्वर महादेव (नादौन)	8 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	8–9 मार्च
मे. काठगढ़	8 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	10 मार्च
बाबा बालकनाथ प्रारंभ	14 मार्च
कनिहारा (धर्मशाला) प्रा.	14 मार्च
नलवाड़ (बिलासपुर)	17–22 मार्च
नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22–29 मार्च
वड़भाग सिंह (ऊना)	22–25 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	25–29 मार्च
होला मेला (पौंटा साहिब)	26 मार्च
बाला सुन्दरी (सिरमौर)	9–24 अप्रै.
नयना देवी (बिलासपुर)	9–18 अप्रै.
ललवाड़ (सुन्दरनगर)	11–17 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिलासपुर)	12–15 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा	13 अप्रै.
राजगढ़ (सिरमौर)	13–15 अप्रै.
बिशू	13 अप्रै. से
हिमाचल दिवस	15 अप्रै.
लाहौल (मण्डी)	15 अप्रै.
कशाधा, हुरला (कुल्लू)	15–17 अप्रै.
खुनाणी (शिम, कुल्लू)	19–20 अप्रै.
मेला रोहरू (महासू)	20–21 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू)	28–30 अप्रै.
मे. स्वीटी	30 अप्रै.
ढुंगरी जातर (मनाली)	14–15 मई
घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. कमलाहिया (धर्मपुर)	15 मई से
पशु मेला	16 मई से
मे. बंजार (कुल्लू)	14–18 मई
मे. मनीकरण (कुल्लू)	18–23 मई
मे. शाढ़ी जातर, नगर	18–23 मई
मे. शीतलादेवी (सुंदरनगर)	22–24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24–25 मई
मे. मुरारी देवी (सरकाघाट)	25–27 मई
मे. नारकण्डा (बिलासपुर)	29–30 मई
ग्राम पंचगाई (बिलासपुर)	29–30 मई
श्यामाकाली (सरकाघाट)	30 मई
स्थूल मढोल	1–4 जून
मे. अहल (हमीरपुर)	14 जून
मे. नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
मेला भुन्तर	15-17 जून
मे. पीपलू (हमीरपुर)	18 जून
टौणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
मे. माँशूलिनी (सोलन)	26 जून
मे. त्रिभौणी (सिरमौर)	10 जुला.
मे. नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	17 जुला.
मिंजर (चम्बा) प्रारंभ	24 जुला.
मे. चिन्तपूर्णी (ऊना) प्रा.	6–13 अग.
नयनादेवी (बिलासपुर)	13 अग.
संतोषी माता (लदरौर)	16 अग.
गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	28 अग.
बंद्राल (कुल्लू)	28 अग.
अम्बिकादेवी–सदर (मण्डी)	2 सितं.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	9 सितं.
गणपति उत्सव (मण्डी)	7–17 सितं.
मे. वामन द्वादशी (नाहन)	15 सितं.
मे. नलवाड़ (चिच्चोट)	16–23 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मे. सायर (अर्की)	16 सितं.
मे. चामुण्डा (कांगड़ा)	4–12 अक्तू.
मे. बगुलामुखी (वनखण्डी)	4–12 अक्तू.
मे. रामलीला	4–12 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन)	11 अक्तू.
मे. तारादेवी (शिमला)	11–12 अक्तू.
मे. ज्वालामुखी	11–12 अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू)	12–17 अक्तू.
मे. काली बाड़ी (शिमला)	1–2 नवं.
मे. लावी (रामपुर, चिच्चोट)	11–14 नवं.
मे. रेणुका रिवालसर (सिरमौर)	12–13 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	12–15 नवं.
मे. जोगी पांगा, ऊना	15 नवं.

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2005-06 ई.) (इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

लोहड़ी	12 जन. बु.
मकर संक्रान्ति, माघी	13 जन. गु.
ईदुलजुहा (बकरीद)	21 जन. शु.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. बु.
मुहर्रम (ताजिया)	20 फर. र.
गुरु रविदास जयन्ती	24 फर. गु.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	8 मार्च मं.
होली पर्व	25 मार्च शु.
होला मेला (पंजाब)	26 मार्च श.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै. बु.
अम्बेदकर जयंती	14 अप्रै. गु.
बुद्ध जयंती	23 मई चं.
रथ यात्रा (पुरी)	8 जुला. शु.
शही. सः ऊधम सिंह (पं.)	31 जुला.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. चं.
जन्म श्रीहजरत अली	19 अग. शु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	27 अग. श.
श्रीगणेश चतुर्थी (महारा.)	7 सितं. बु.
महात्मा गाँधी जयंती	2 अक्तू. र.
दशहरा	12 अक्तू. बु.
श्रीबाल्मीकि जयन्ती	17 अक्तू. चं.
जमातुलविदा	28 अक्तू. शु.
दीपावली	1 नवं. मं.
विश्वकर्मा दिवस (पंजाब)	2 नवं. बु.
ईद–उल–फितर	4 नवं. शु.
श्री गुरु नानक जयंती	15 नवं. मं.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. र.

(सन् 2006 ई.)

ईदुलजुला (बकरीद)	11 जन. बु.
लोहड़ी पर्व	13 जन. शु.
मकर संक्रान्ति, माघी	14 जन. श.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. गु.
मुहर्रम (ताजिया)	9 फर. गु.
गुरु रविदास जयंती	13 फर. चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	26 फर. र.
होली	14 मार्च मं.
होली मेला (पंजाब)	15 मार्च बु.

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. श.
गुड फ्राइडे	25 मार्च शु.
ईस्टर सण्डे	27 मार्च र.
लो सण्डे	3 अप्रै. र.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. र.
(2006 ई.)	
नववर्ष प्रारंभ	1 जन. श.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि—2005—06 ई.

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कैलण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति-ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति-ज्योत
1. श्री गुरु नानकदेव जी	15 नवम्बर	जन्म से	27 सितंबर	15 नवम्बर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्री गुरु अंगददेव जी	9 मई	22 सितंबर	12 अप्रैल	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्री गुरु अमरदास जी	22 मई	9 अप्रैल	18 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्री गुरु रामदास जी	19 अक्तूबर	16 सितम्बर	6 सितंबर	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्री गुरु अर्जुनदेव जी	30 अप्रैल	5 सितंबर	11 जून	2 मई	16 सितंबर	16 जून
6. श्री गुरु हरगोबिन्द जी	23 जून	30 मई	13 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्री गुरु हरिराय जी	21 फर. 05 ई. 10 फर. 06 ई.	6 अप्रै. 05 ई. 27 मार्च 06 ई.	26 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्री गुरु हरकिशन जी	29 जुलाई	26 अक्तूबर	23 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्री गुरु तेग़ बहादुर जी	28 अप्रैल	22 अप्रैल	6 दिसम्बर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर
10. श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	16 जन. 05 ई. 6 जन. 06 ई.	4 दिसंबर	6 नवम्बर	5 जनवरी	24 नवंबर	21 अक्तूबर

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	4 सितं., 2005 ई.	17 भादों–1 सितं., 2005 ई.
श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्ति. शुक्ल द्वितीया तदनुसार	3 नवं., 2005 ई.	6 कार्ति.–20 अक्तू. 2005 ई.
खालसा पन्थ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे तदनुसार	13 अप्रै., 2005 ई.	1 वैशाख–14 अप्रै. 2005 ई.

दशमहाविद्या जयन्ती

श्री महातारा जयंती	18 अप्रै. चंद्र
श्रीं मातङ्गी जयंती	11 मई बुध
श्री बगुलामुखी जयंती	17 मई मंगल
श्री छिन्नमस्तिका जयंती	23 मई चंद्र
श्री धूमावती जयंती	15 जून बुध
श्री महाकाली जयंती	26 अग. शुक्र
श्री भुवनेश्वरी जयंती	15 सितं. गुरु
श्री कमला जयंती	20 अक्तू. गुरु
श्री त्रिपुरभैरव जयंती	15 दिसं. गुरु
श्री ललिता जयंती	13 फर. चंद्र

दशावतार जयंतियां

श्री मत्स्यावतार जयंती	11 अप्रै. चंद्र
श्री रामावतार जयंती	18 अप्रै. चंद्र
श्री परशुराम जयंती	10 मई मंगल
श्री नृसिंहावतार जयंती	22 मई रवि
श्री कूर्मावतार जयंती	23 मई चंद्र
श्री बुद्धावतार जयंती	23 मई चंद्र
श्री कल्कि अवतार	11 अग. गुरु
*श्री कृष्णावतार जयंती	26 अग. शुक्र
श्री वाराहावतार जयंती	6 सितं. मंगल
श्री वामनावतार जयंती	15 सितं. गुरु

सन् 2005 ई. में एकादशी व्रत, प्रदोष व्रत, सत्यनारायण व्रत, गणेश चतुर्थी व्रतादि–एक दृष्टि में

पक्ष शुक्ल/कृष्ण	एकादशी व्रत (स्मार्तों के लिए)	प्रदोष व्रत	व्रत श्रीसत्यनारायण	श्री गणेश चौथ	संक्रान्ति	अमावस (स्नानदानार्थ)
पौष कृष्ण	6 जन. (सफला)	8 जन.	———	30 दिसं. (04)	———	10 जन.
पौष शुक्ल	20 जन. (पुत्रदा)	22 जन.	24 जनवरी	———	13 जनवरी	———
माघ कृष्ण	5 फर. (षट्तिला)	6 फर.	———	29 जनवरी	———	8 फर.
माघ शुक्ल	19 फर. (जया)	21 फर.	23 फरवरी	———	12 फरवरी	———
फाल्गुन कृष्ण	6 मार्च (विजया)	8 मार्च	———	27 फरवरी	———	10 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	21 मार्च (आमलकी)	23 मार्च	25 मार्च	———	14 मार्च	———
चैत्र कृष्ण	5 अप्रै. (पापमोचनी)	6 अप्रै.	———	29 मार्च	———	8 अप्रैल
चैत्र शुक्ल	20 अप्रै. (कामदा)	21 अप्रै.	23 अप्रैल	———	13 अप्रैल	———
वैशाख कृष्ण	4 मई (वरुथिनी)	5 मई	———	27 अप्रैल	———	8 मई
वैशाख शुक्ल	20 मई (मोहिनी)	21 मई	23 मई	———	14 मई	———
ज्येष्ठ कृष्ण	2 जून (अपरा)	4 जून	———	26 मई	———	6 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	18 जून (निर्जला)	19 जून	21 जून	———	14 जून	———
आषाढ़ कृष्ण	2 जुला. (योगिनी)	3 जुला.	———	25 जून	———	6 जुलाई
आषाढ़ शुक्ल	18 जुला. (देवशयनी)	19 जुला.	21 जुलाई	———	16 जुलाई	———
श्रावण कृष्ण	31 जुला. (कामिका)	2 अग.	———	24 जुलाई	———	5 अगस्त
श्रावण शुक्ल	16 अग. (पवित्रा)	17 अग.	19 अगस्त	———	16 अगस्त	———
भाद्रपद कृष्ण	30 अग. (अजा)	1 सितं.	———	22 अगस्त	———	3 सितंबर
भाद्रपद शुक्ल	14 सितं. (पद्मा)	15 सितं.	17 सितम्बर	———	16 सितम्बर	———
आश्विन कृष्ण	29 सितं. (इन्दिरा)	30 सितं.	———	21 सितम्बर	———	3 अक्तूबर
आश्विन शुक्ल	13 अक्तू. (पापांकुशा)	15 अक्तू.	16 अक्तूबर	———	17 अक्तूबर	———
कार्तिक कृष्ण	28 अक्तू. (रमा)	30 अक्तू.	———	20 अक्तूबर	———	1 नवम्बर
कार्तिक शुक्ल	12 नवं. (देवप्रबो.)	13 नवं.	15 नवम्बर	———	———	———
मार्ग. कृष्ण	27 नवं. (उत्पन्ना)	29 नवं.	———	19 नवम्बर	16 नवम्बर	1 दिसम्बर
मार्ग. शुक्ल	11 दिसं. (मोक्षदा)	13 दिसं.	15 दिसम्बर	———	———	———
पौष कृष्ण	27 दिसं. (सफला)	28 दिसं.	———	19 दिसम्बर	15 दिसम्बर	31 दिसम्बर

वि. संवत् २०६२ में प्रमुख संवतों का प्रारम्भ

- वि. संवत् (विलम्ब नामक) २०६२ का शुभारम्भ = ९ अप्रै., शनिवार, तन्मध्ये अन्य संवतों (सन् आदि) की प्रारम्भ तिथियाँ=
- कल्पादि से गत वर्ष = १,९७,२९,४९,१०६ वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = १,९५,५८,८५,१०५ वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = १७,२८,००० वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = १२,९६,००० वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = ८,६४,००० वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = ४,३२,००० वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष = ४२६८९४ संवत्
- वि. सं. २०६२ में कलियुग का कल्कि सं. ५१०६=१० अग., बुधवार
- श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२४१ प्रा.=२६ अग., शुक्रवार
- सप्तर्षि संवत् ५०८१ प्रा. = ९ अप्रै., शनिवार
- श्री बुद्ध संवत् २६२९ प्रा. = २३ मई, २००५ ई., सोमवार
- श्रीमहावीर निर्वाण सं. २५३१ प्रा.=१ नवं., २००५ ई., मंगलवार
- सन् ईसवी (क्रिश्चियन) २००६ प्रारम्भ = १ जन., २००६, रविवार
- शाका संवत् १९२८ प्रा. = २२ मार्च, सन् २००६ ई., बुधवार
- मुस्लिम हिजरी सन् १४२७ प्रा. = ३१ जन., २००६ ई., मंगलवार
- फसली सन् १४१३ प्रारम्भ = १८ सितं., २००५ ई. रविवार
- बंगाली सन् १४१२ प्रारम्भ = १५ अप्रै., २००५ ई., शुक्रवार
- नानकशाही संवत् ५३७ प्रा. = १५ मार्च, सन् २००५ ई.,
- खालसा संवत् ३०७ प्रारम्भ = १३ अप्रैल, सन् २००५ ई.
- जय हिन्द संवत् ५९वाँ प्रा. = १५ अग., सन् २००५ ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष, १३०वाँ=९ अप्रै., शनिवार

राजा–मन्त्री तथा सम्वतसर के फल के विस्तृत **विवरण के लिए पढ़ें पृष्ठ नं. 50**

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०६२ वि.

(1 जनवरी, सन् 2005 ई. से 31 मार्च, 2006 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मा.	घं. मिंट	2005	घं. मिंट	2005	घं. मिंट	2005	घं. मिंट	2005	घं. मिंट	2005	घं. मिंट	2005-06	घं. मिंट	2005-06	घं. मिंट
8 जन.	2 39	9 जन.	21 06	24 मई	14 49	26 मई	10 31	8 अक्तू	8 02	10 अक्तू	6 50	6 जन. 06	14 30	8 जन. 06	13 45
16 जन.	5 46	18 जन.	7 26	1 जून	24 31	3 जून	25 16	16 अक्तू	18 48	18 अक्तू	16 04	15 जन.	24 11	18 जन.	6 07
26 जन.	2 09	28 जन.	7 17	11 जून	15 35	13 जून	21 29	25 अक्तू	24 42	28 अक्तू	6 38	25 जन.	18 57	27 जन.	16 04
4 फर.	11 56	6 फर.	7 47	20 जून	24 53	22 जून	19 58	4 नवं.	14 07	6 नवं.	12 16	2 फर.	21 53	4 फर.	19 50
12 फर.	15 05	14 फर.	15 14	29 जून	6 02	1 जुला	6 45	13 नवं.	3 02	14 नवं.	25 15	12 फर.	6 32	14 फर.	12 31
22 फर.	8 42	24 फर.	13 30	8 जुला	22 07	11 जुला	4 09	22 नवं.	8 55	24 नवं.	14 56	22 फर.	3 34	24 फर.	2 12
3 मार्च	18 32	5 मार्च	15 52	18 जुला	11 05	20 जुला	6 35	1 दिसं.	22 22	3 दिसं.	19 21	2 मार्च	7 53	4 मार्च	4 13
12 मार्च	1 34	13 मार्च	24 43	26 जुला	13 01	28 जुला	12 42	10 दिसं.	9 00	12 दिसं.	8 16	11 मार्च	12 35	13 मार्च	18 42
21 मार्च	16 07	23 मार्च	20 53	5 अग.	4 07	7 अग.	10 05	19 दिसं.	16 57	21 दिसं.	22 56	21 मार्च	10 00	23 मार्च	9 57
30 मार्च	23 55	1 अप्रै.	21 40	14 अग.	19 53	16 अग.	16 40	29 दिसं.	8 36	31 दिसं.	5 01	29 मार्च	19 02	31 मार्च	14 35
8 अप्रै.	11 13	10 अप्रै.	10 23	22 अग.	22 08	24 अग.	20 22								
17 अप्रै.	24 10	20 अप्रै.	5 15	1 सितं.	10 13	3 सितं.	16 04								
27 अप्रै.	6 19	29 अप्रै.	3 14	11 सितं.	2 36	12 सितं.	24 49								
5 मई	18 46	7 मई	18 44	19 सितं.	8 37	21 सितं.	5 52								
15 मई	8 12	17 मई	13 44	28 सितं.	17 01	30 सितं.	22 51								

अश्वि., अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला एवं रेवती—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं—इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता–पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान–पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल—सं० २०६२

(1 जन. सं. 2005 ई० से 31 मार्च 2006 ई० तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005	घं. मिं.	2005	घं. मिं.	2005-06	घं. मिं.	2005-06	घं. मिं.
12 जन.	22 30	17 जन.	6 13	16 सितं.	5 11	20 सितं.	6 57
9 फर.	9 47	13 फर.	14 45	13 अक्तू	13 33	17 अक्तू	17 14
8 मार्च	20 10	13 मार्च	0 47	9 नवं.	19 36	14 नवं.	2 01
5 अप्रै.	4 05	9 अप्रै.	10 33	6 दिसं.	25 02	11 दिसं.	8 30
2 मई	9 52	6 मई	18 34	3 जन.	8 22	7 जन.	13 53
29 मई	15 24	2 जून	24 41	30 जन.	18 28	3 फर.	20 32
25 जून	22 36	30 जून	6 06	27 फर.	5 54	3 मार्च	5 46
23 जुला	8 02	27 जुला	12 29	26 मार्च	16 17	30 मार्च	16 36
19 अग.	18 49	23 अग.	20 52				

पंचक नक्षत्र विचार

वासवोत्तर दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेत दाहतृण काष्ठ संचयं शय्यका वितरणं च वर्जयेत्॥

—पंचक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि–दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झोंपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पंचकों में हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुना तथा द्विपुष्कर में दोगुणा लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है।

ध्यान रहे, मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू–प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षा–बन्धन, भैय्या दूज आदि पर्वों में पंचक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

—सम्पादक।

नोट—हमारे कार्यालय से 'ग्रह नक्षत्र–शान्ति रहस्यम्' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं।

ग्रहण विवरण (संवत् २०६२ वि.)

वि. संवत् २०६२ में पृथ्वी पर कुल चार ग्रहण होंगे—

(1) कंकण सूर्यग्रहण	(8/9 अप्रैल, 2005 ई., शुक्र/शनि)
(2) कंकण चन्द्रग्रहण	(3 अक्तूबर, 2005 ई., सोमवार)
(3) खण्डग्रास सूर्यग्रहण	(17 अक्तूबर, 2005 ई., सोमवार)
(4) खग्रास/खण्डग्रास सूर्यग्रहण	(29 मार्च, 2006 ई., बुधवार)

नं. (1) वाला ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा, जबकि शेष तीनों ग्रहण भारत में दृश्य होंगे। इसके अतिरिक्त 24 अप्रैल, 2005 ई. को चन्द्रमा का छाया ग्रहण भी घटित होगा। इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण के समय जप, दानादि का कोई महत्त्व नहीं होगा तथा न ही सूतकादि का विचार रहेगा।

भारत में अदृश्य ग्रहण का संक्षिप्त विवरण

(1) कंकण सूर्यग्रहण (8/9 अप्रैल, 2005 ई., शुक्र/शनि)—यह ग्रहण चैत्र कृष्ण अमावस, शुक्रवार, वि. संवत् २०६१ तदनुसार 8 अप्रैल, 2005 ई. को भा. स्टैं. टा. के अनुसार रात्रि २३ घं. २१ मिं. पर प्रारम्भ 9 अप्रैल की प्रात: 4 घं. 50 मिं. पर समाप्त हो जाएगा। इसका परम ग्रास 8 अप्रैल की रात्रि 25 घं. 46 मिं. पर होगा। यह ग्रहण न्यूज़ीलैण्ड, मध्य एवं दक्षिण अमेरिका, कैरेबियन (वैस्ट इण्डीज़) में दिखाई देगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(1) कंकण सूर्यग्रहण (3 अक्तूबर, 2005 ई., सोमवार)—यह ग्रहण आश्विन कृष्ण अमावस, सोमवार को भारत में कंकण तथा खण्डग्रास के रूप में सारे भारत में अलग-अलग रूप में दिखाई देगा। भा. स्टैं. टा. के अनुसार इसका स्पर्श-मोक्ष इस प्रकार से है—

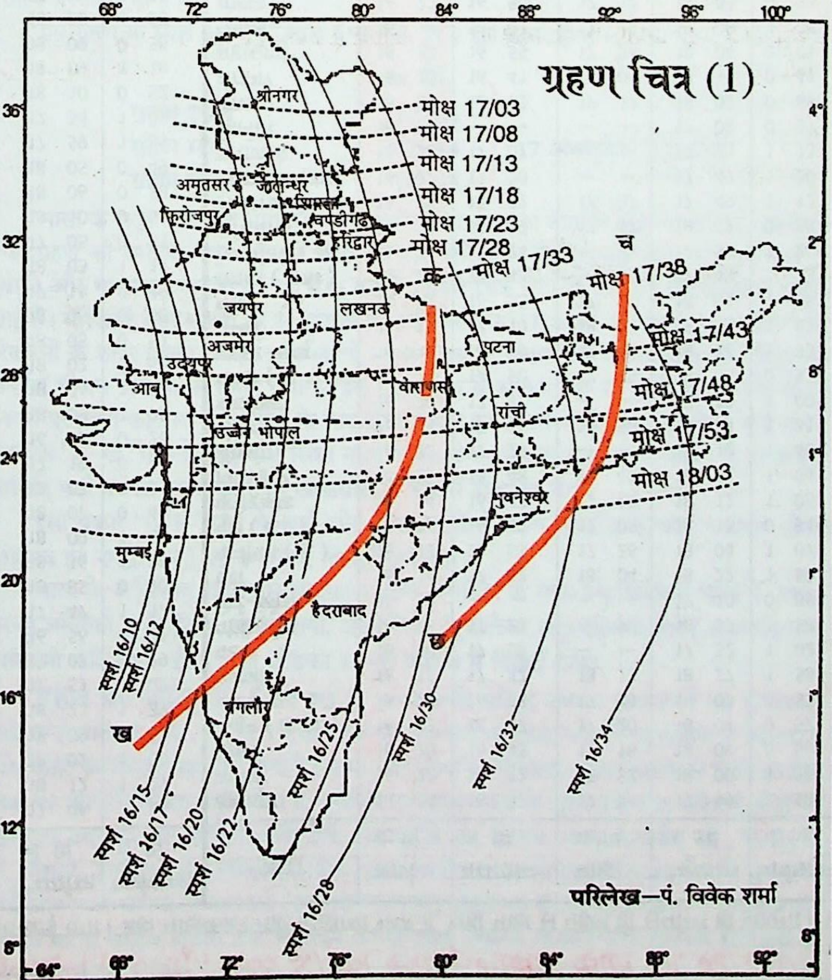
ग्रहण आरम्भ	**13-06**	**घण्टा/मिनट (भा. स्टैं. टा.)**
ग्रास आरम्भ	**14-13**	
परम ग्रास	**16-02**	
ग्रास समाप्त	**17-51**	
ग्रहण समाप्त	**18-58**	
परमग्रास की अवधि	**4 मिं. 26 सैं.**	

यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत के अतिरिक्त पूर्वी ग्रीनलैण्ड, आईसलैण्ड, यूरोप (इंग्लैण्ड सहित), दक्षिण भागों को छोड़कर अफ्रीका, भारत सहित पश्चिमी एशिया में ही दिखाई देगा।

भारत के पूर्वी एवं सदूर दक्षिणी भागों में कंकण सूर्यग्रहण का केवल आरम्भ ही दृश्य होगा। इन क्षेत्रों में सूर्य ग्रस्त ही अस्त होगा अर्थात् ग्रहण समाप्ति से पूर्व ही सूर्य अस्त हो जाएगा। जबकि उत्तर-पश्चिमी, उत्तर भारत में कंकण सूर्यग्रहण की समाप्ति देखी जा सकेगी। ग्रहण चित्र (1) में इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) व मोक्ष (समाप्ति) बतलाने वाली रेखाओं से भारत के किसी भी स्थल पर इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) जाना जा सकता है। आगामी पृष्ठ पर लगभग 80 नगरों में इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्ति काल दिया गया है। इनके साथ ही इन नगरों के 3 अक्तूबर के दिन सूर्यास्तकाल भी दिया गया है। अत: इन नगरों के साथ दिए गए सूर्यास्तकाल से यह ज्ञात किया जा सकता है कि अमुक नगर में ग्रहण का मोक्ष सूर्यास्त से पहले होगा या नहीं। ग्रहण चित्र (1) में स्पर्श तथा मोक्ष रेखाओं के मध्य आप अपने नगर में होने वाले कंकण सूर्यग्रहण का आरम्भ व समाप्ति काल सरलता से जान सकते हैं।

कंकण खण्डग्रास सूर्यग्रहण

3 अक्तू. 2005 ई.

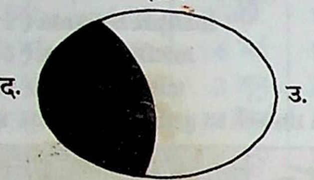


ग्रहण चित्र (1) में दी गई 'क-ख' रेखा से दाईं ओर बसे स्थलों पर सर्वत्र सूर्यग्रस्त ही अस्त हो जाएगा। इस रेखा से बाईं ओर बसे नगरों में ग्रहण समाप्ति के बाद ही सूर्यास्त होगा। इसी चित्र में 'च-छ' रेखा भी दी गई है। इस रेखा से दाईं ओर वाले स्थलों पर इस ग्रहण का मध्य (परमग्रास नहीं दिखाई देगा, क्योंकि वहाँ पर ग्रहण मध्यकाल से पूर्व (पहले) ही सूर्य अस्त हो जाएगा। संक्षिप्त में, भारतीय भूक्षेत्रों पर यह ग्रहण सायं लगभग 4 बजे से सायं 6-20 तक दृश्य रहेगा।

ग्रहण का सूतक—इस खण्डग्रास कंकण सूर्यग्रहण का सूतक 3 अक्तू. 05 ई. को सामान्यतः सूर्योदय के समय से प्रारम्भ हो जाएगा। लेकिन ग्रस्तास्त ग्रहण हो तो सूर्योदयकाल से, अन्यथा स्पर्शकाल से ठीक 12 घण्टे पहिले सूतक का वास्तविक प्रारम्भ काल होता है। क्योंकि पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., जम्मू आदि प्रदेशों में यह ग्रहण कंकण रूप में दिखाई देगा, अतएव अपने स्थानीय नगर के स्पर्शकाल से 12 घण्टे पूर्व सूतक का प्रारम्भकाल जानें। 3 अक्तू. की प्रातः लगभग सबसे पहले द्वारिका में 4-02 से सूतक प्रारम्भ हो जाएगा। जैसे अमृतसर का स्पर्शकाल 16-17 है तो सूतक प्रातः 4-17 से प्रारम्भ होगा।

—कंकण सूर्यग्रहण—

कुरुक्षेत्र में परमग्रास का मान
(१६ घं. ५२ मिं.)



भारत के प्रसिद्ध नगरों में कंकण सूर्यग्रहण (3 अक्तू., 2005 ई.) का स्पर्श, मोक्षादि काल (भा. स्टैं. टा.)

इन नगरों में खण्डग्रास (कंकण) सूर्यग्रहण ही दिखाई देगा। जहाँ मोक्षकाल नहीं दिखाया गया है, वहाँ मोक्ष से पहले ही सूर्यास्त हो जाएगा।

नगर	स्पर्श घं. मि.	परमग्रास घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	**सूर्यास्त घं. मि.	*पर्वकाल घं. मि.
अगरतला	16 33	— —	— —	17 06	0 33
अजमेर	16 16	16 58	17 37	18 12	1 21
अम्बाला	16 21	16 52	17 21	18 02	1 00
अमृतसर	16 17	16 46	17 14	18 09	0 57
अहमदाबाद	16 10	17 02	17 49	18 21	1 39
अलमोड़ा	16 23	16 55	17 25	17 51	1 02
एज़ावल	16 34	— —	— —	17 03	0 29
ईटानगर	16 35	— —	— —	16 56	0 21
इलाहाबाद	16 26	17 06	17 43	17 47	1 17
इम्फाल	16 35	— —	— —	16 55	0 20
उदयपुर (राज.)	16 13	17 00	17 44	18 16	1 31
उज्जैन	16 17	17 05	17 49	18 09	1 32
उधमपुर (का.)	16 19	16 45	17 08	18 07	0 49
कठुआ (का.)	16 20	16 46	17 11	18 07	0 51
कलकत्ता	16 32	17 15	— —	17 19	0 47
कोहिमा	16 35	— —	— —	16 55	0 20
करनाल	16 20	16 53	17 25	18 03	1 05
कुरुक्षेत्र	16 20	16 52	17 23	18 04	1 03
कुल्लू	16 23	16 50	17 15	18 02	0 52
कांगड़ा	16 21	16 47	17 12	18 05	0 51
कुराली	16 20	16 50	17 18	18 06	0 58
गंगटोक	16 33	17 06	— —	17 18	0 45
गुड़गाँव	16 19	16 56	17 30	18 03	1 11
गुआहटी	16 34	— —	— —	17 05	0 31
गुरदासपुर	16 19	16 46	17 12	18 10	0 53
चण्डीगढ़	16 21	16 51	17 19	18 06	0 58
चम्बा (हि. प्र.)	16 22	16 47	17 11	18 05	0 49
चेन्नई	16 25	17 26	— —	17 59	1 34
छपरा (बि.)	16 29	17 03	— —	17 34	1 05
जम्मू	16 18	16 45	17 10	18 10	0 52
जयपुर	16 17	16 57	17 35	18 09	1 18
जालन्धर	16 18	16 48	17 16	18 09	0 58
जोधपुर	16 12	16 55	17 37	18 20	1 25
झांसी (मं. प्र.)	16 23	17 05	17 46	17 59	1 23
थिम्फू (भूटा.)	16 34	17 07	— —	17 16	0 42
द्वारिका	16 02	16 59	17 50	18 38	1 48
दार्जिलिंग	16 33	17 07	— —	17 19	0 46
दिल्ली	16 20	16 55	17 29	18 03	1 09

नगर	स्पर्श घं. मि.	परमग्रास घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	**सूर्यास्त घं. मि.	*पर्वकाल घं. मि.
देहरादून	16 23	16 53	17 21	17 59	0 58
नागपुर	16 22	17 12	17 57	18 00	1 35
नंगल	16 20	16 45	17 18	18 09	0 58
नाहन (हि. प्र.)	16 23	16 47	17 20	18 01	0 57
पंचकूला (ह.)	16 22	16 48	17 19	18 03	0 57
पणजी	16 15	17 17	18 13	18 27	1 58
पटना	16 30	17 08	— —	17 32	1 02
पांडीचेरी	16 25	17 28	— —	18 03	1 38
पोर्ट-ब्लेयर	16 35	— —	— —	17 10	0 35
पूणे	16 14	17 12	18 04	18 22	1 50
पानीपत (ह.)	16 19	16 53	17 26	18 04	1 07
पुंछ (का.)	16 16	16 42	17 05	18 13	0 51
फरीदकोट	16 14	16 47	17 20	18 12	1 06
फिरोज़पुर	16 15	16 48	17 19	18 12	1 04
बैंगलोर	16 22	17 25	— —	18 10	1 48
भोपाल	16 19	17 06	17 50	18 04	1 31
भुवनेश्वर	16 30	17 17	— —	17 30	1 00
मण्डी (हि. प्र.)	16 23	17 50	17 15	18 03	0 52
माऊंट-आबू	16 10	16 59	17 43	18 26	1 33
मुम्बई	16 12	17 10	18 03	18 23	1 51
मेरठ	16 22	16 55	17 27	18 01	1 05
रायपुर (छत्ती)	16 26	17 13	— —	17 48	1 23
राजामुंदरी (आ.)	16 26	17 21	— —	17 52	1 26
लुधियाना	16 19	16 49	17 17	18 07	0 58
लखनऊ	16 25	17 02	17 37	17 49	1 12
विशाखापटनम्	16 27	17 20	— —	17 47	1 20
वाराणसी	16 28	17 07	— —	17 41	1 13
शिलोंग	16 34	— —	— —	17 05	0 31
शिमला	16 22	16 50	17 17	18 02	0 55
श्रीनगर	16 20	16 41	17 01	18 10	0 41
सहारनपुर	16 23	16 55	17 24	18 01	1 01
संगरूर	16 18	16 41	17 22	18 08	1 04
सोलन	16 22	16 50	17 17	18 03	0 53
हरिद्वार	16 23	16 54	17 23	17 59	1 00
हैदराबाद	16 22	17 18	— —	18 04	1 42
हमीरपुर (हि. प्र.)	16 22	16 49	17 15	18 05	0 53
होशियारपुर	16 19	16 48	17 16	18 07	0 57

*स्पर्श से मोक्ष तक का काल 'पर्वकाल' कहलाता है। जहाँ मोक्ष से पूर्व ही अस्त हो जाता है, वहाँ स्पर्श से सूर्यास्त तक के काल को 'पर्वकाल' माना जाता है।

**यहाँ दिया गया सूर्यास्त काल 'किरण वक्रीभवन संस्कार' सहित हैं। जोकि जंत्री/पंचाँग में दिए गए सूर्यास्त समय से लगभग 2 मिनट बाद होंगे।

कृत्य अकृत्य—ग्रहण के सूतक और ग्रहण काल में स्नान-दान, जप-पाठ, मन्त्र-अनुष्ठान, तीर्थ-स्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है।

ध्यान रहे, ग्रस्तास्त ग्रहण (क-ख रेखा के दाईं ओर बसे नगरों में) का पर्वकाल (दान, जपादि का समय) सूर्य के अस्त काल पर ही समाप्त हो जाता है। इसलिए जहाँ सूर्य ग्रस्त ही अस्त होगा, वहाँ इस ग्रहण का पर्वकाल सूर्यास्त पर समाप्त हो जाएगा।

जहाँ यह ग्रहण ग्रस्तास्त होगा, वहाँ के धार्मिक लोगों को सूर्यास्त के बाद स्नान करके सायं सन्ध्या जपादि करना चाहिए, लेकिन उन्हें तब तक खाना नहीं चाहिए जब तक कि वे 4 अक्तू. के सूर्योदय के समय शुद्ध (ग्रहण-मुक्त) सूर्यबिम्ब को नहीं देख लेते। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं। ग्रहण उपरान्त स्नान एवं यथाशक्ति दानादि करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, सोना, तैल, तैलाभ्यंग वर्जित है तथा अन्य निन्दित कार्य करने से परहेज़ करना चाहिए।

पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्ज़ी व फल ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं, उन्हें नहीं खाना चाहिए। लेकिन तेल या घी में पका (तला हुआ) अन्न, घी, तेल, दूध, दही, लस्सी, मक्खन, पनीर, आचार, चटनी, मुरब्बा में तिल या कुशा रख देने से ग्रहणकाल में ये दूषित नहीं होते।

कंकण सूर्यग्रहण पर हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयागादि तीर्थों पर स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है।

कंकण खण्ड सूर्यग्रहण को नंगी आंखों से नहीं देखना चाहिए। वैज्ञानिक ढंग से काले किए हुए शीशे द्वारा देखना ठीक होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण कन्या राशि तथा हस्त नक्षत्र में घटित हो रहा है, इसलिए कन्या राशि और हस्त नक्षत्र वालों के लिए यह ग्रहण विशेष रूप से अशुभफली रहेगा। बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ उन्नति	गुप्त चिंता	सिद्धि शरीर कष्ट	धन लाभ	धन हानि	शरीर कष्ट, चोट	धन हानि	धन लाभ	लाभ तरक्की	विघ्न, धन हानि	हानि कष्ट	स्त्री, पति कष्ट

ग्रहण का अन्य फल—यह ग्रहण आश्विन मास, कन्या राशि एवं हस्त नक्षत्र में घटित हो रहा है। फलस्वरूप कृषकों, कवि, लेखकों, गायकों, पण्डितों, व्यापारी, व्यापार की वस्तुओं, कारीगरों को कष्ट व पीड़ा, स्त्रियों के गर्भों को पीड़ा तथा चावल व औषधियों का नाश होगा। ग्रहण का स्पर्श सन्ध्याकाल में होने से गर्भवती स्त्रियों को पीड़ा, गायों के गर्भों का नाश तथा वर्षा का अभाव रहेगा।

सन्ध्याकाले तु गर्भस्था गृहीतः पीडयेत् प्रजाः।
गावो गर्भ विमुञ्चन्ति न च वर्षेत् पुरन्दरः॥

(2) ग्रस्तोदय (चूड़ामणि) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (17 अक्तूबर, 2005 ई., सोमवार)

सोमवार)—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 17 अक्तूबर, 2005 ई. को भारत के सदूर पश्चिमी भागों को छोड़कर शेष भारत में दिखाई पड़ेगा। यह ग्रहण पश्चिमी बंगाल, मिज़ोरम, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय आदि भागों में चन्द्रोदय के बाद प्रारम्भ होगा। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के सुदूर पश्चिमी भागों को छोड़कर शेष भाग में इस ग्रहण का आरम्भ चन्द्रोदय से पहिले ही हो जाएगा अर्थात् वहाँ यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा।

इस ग्रहण के स्पर्श आदि के काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार हैं—

	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श	17-04	17 अक्तूबर, 2005 ई.
ग्रहण मध्य	17-34	
ग्रहण मोक्ष	18-03	

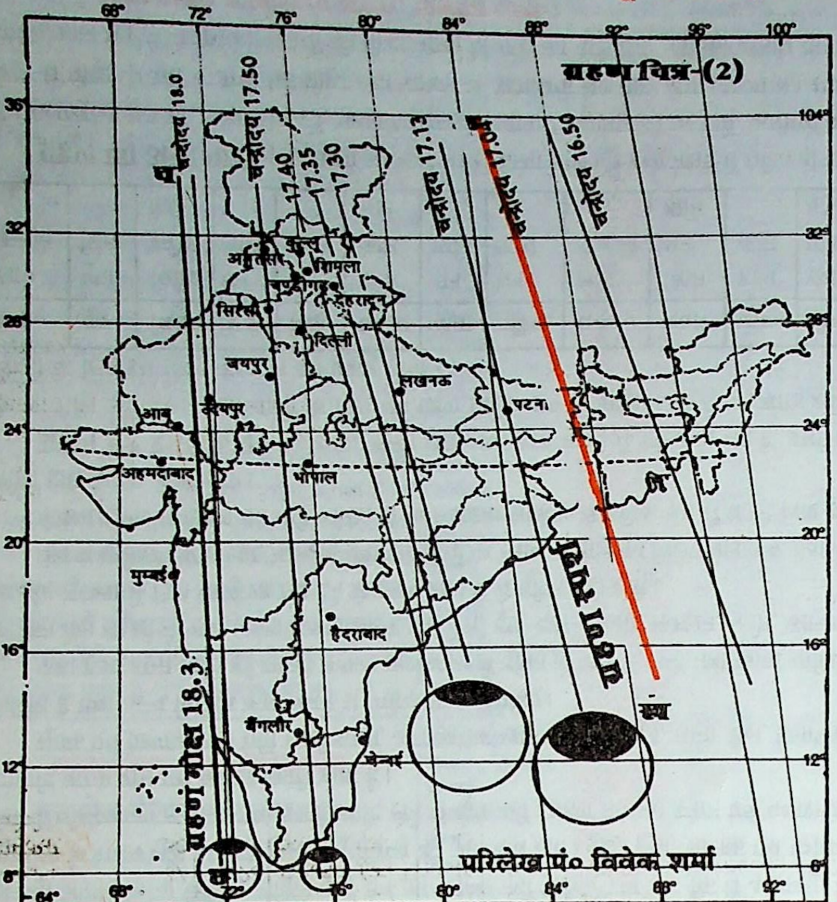
भारत के सदूर उत्तर पूर्वी भागों में ही खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का आरम्भ देखा जा सकेगा। ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण की समाप्ति सदूर पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़ सारे भारत में दिखलाई देगी। आगामी पृष्ठ पर बायीं ओर भारत का मानचित्र (2) दिया गया है। ग्रहण चित्र (2) में नौ (9) तिरछी रेखाएं खींची गई हैं। ये रेखाएं जिन स्थलों पर से गुजरती हैं, उन स्थलों पर 17 अक्तू. को चन्द्रोदय का काल इन रेखाओं के ऊपर लिखा गया है। इन स्थलों पर चन्द्रोदय के समय ग्रास की आकृति और दिशा का निर्देश भी इन रेखाओं पर किया गया है। इस ग्रहण चित्र में अंकित 'क-ख' रेखा से दाईं ओर स्थित नगरों पर ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रोदय के बाद होगा अर्थात् इन प्रदेशों में यह ग्रहण ग्रस्तोदय नहीं होगा। जबकि 'क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों पर ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रोदय से पहिले ही हो जाएगा अर्थात् यहाँ पर यह ग्रहण ग्रस्तोदय खण्डग्रास के रूप में दिखलाई देगा।

इसी प्रकार 'च-छ' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों में ग्रहण समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा। अतएव इन नगरों/स्थलों पर चन्द्रग्रहण दिखाई नहीं देगा।

भारत के अतिरिक्त खण्डग्रास चन्द्रग्रहण उत्तरी अमेरिका के मध्य तथा पश्चिमी भागों में, उत्तर-मध्य अमेरिका, पूर्वी एशिया, इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, सदूर पश्चिमी क्षेत्रों (अफ़गानिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान, ईरान) को छोड़कर सम्पूर्ण एशिया में दिखाई देगा।

ग्रहण का पर्वकाल—आगे पृष्ठ 15 पर भारत के प्रसिद्ध लगभग 200 नगरों का 17 अक्तू. को चन्द्रोदयकाल (भा. स्टैं. टा.) तथा ग्रहण का पर्वकाल भी दिया गया है। चन्द्रग्रहण में स्नानदान, जप आदि का विशेष माहात्म्य होता है। सामान्यतः ग्रहण का पर्वकाल ग्रहण आरम्भ से ग्रहण समाप्ति तक का काल पर्वकाल माना जाता है, क्योंकि यह ग्रहण भारत के सुदूर पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़कर उत्तर व उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों जैसे—पंजाब, हि. प्र., दिल्ली, जम्मू-काश्मीर, हरि., म. प्र., उ. प्र., बिहार, उत्तरांचल में ग्रस्तोदय ही होगा। अतः यहाँ चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक के काल को पर्वकाल माना जाएगा—ध्यान रखें। इन ग्रस्तोदय वाले प्रदेशों की जनता को स्नानारम्भ चन्द्रोदय होने पर ही करना चाहिए अर्थात् उन्हें चन्द्रोदय को ही ग्रहण आरम्भ मानकर सभी धार्मिक क्रियाओं का अनुष्ठान करना चाहिए।

ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 17 अक्तू. 2005 ई.



यह ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण सोमवार के दिन घटित हो रहा है। अतएव यह "चूड़ामणि ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण" कहलाएगा। स्नान-दान आदि का विशेष माहात्म्य होगा।

ग्रहण का सूतक—जहाँ यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा, वहाँ इस ग्रहण का सूतक स्थानीय सूर्योदयकाल से तथा अन्य जगह अर्थात् पूर्वी भारत (आसाम, नागालैण्ड आदि) में प्रातः 8 घं. 04 मिं. (भा. स्टैं. टा.) से प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह चन्द्रग्रहण रेवती व अश्वनी तथा मीन एवं मेष राशि कालीन घटित हो रहा है। अतएव इन नक्षत्र वालों तथा मीन व मेष राशि वालों को ग्रहण का फल विशेष, रूप से अशुभ एवं कष्टकारी हो सकता है। जिस राशि के लिए ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, वह यथाशक्ति जप-पाठ, ग्रहशान्ति एवं दानादि द्वारा ग्रहण के अनिष्ट प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहणोपरान्त औषधि-स्नान करने से भी अनिष्ट की शान्ति होती है। बारह राशियों के लिए इस ग्रहण का शुभाशुभ फल इस प्रकार से होगा—

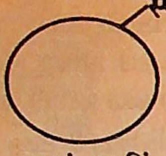
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	तनाव चोटादि शरीर कष्ट	धन हानि, चिंता	धन एवं सुख लाभ	कोई कार्य सिद्धि खर्चे	कष्ट एवं शत्रु भय संघर्ष	कष्ट एवं रोग भय, खर्च हो	स्त्री/ पति संबंधी परेशानी	सुख साधन वृद्धि	गुप्त चिन्ता, संघर्ष	कष्ट, अपव्यय संघर्ष	धन हानि अपव्यय	दुर्घटना शरीर कष्ट

जिस राशि को ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, उन्हें ग्रहण का अवलोकन नहीं करना चाहिए।

ग्रहण का अन्य फल—ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्रग्रहण सोमवार को होने से रूई का संग्रह करने से 2 मास में लाभ होगा। उत्तराभाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र में घटित होने से ब्राह्मण, अधिक वैभव वाले, महादानी, तपस्वी, पाखण्डी, यज्ञ करने वाले, आश्रमी, राजा, व्यापारी वर्ग को पीड़ा होगी। मीन तथा मेष राशि में घटित होने से पंजाब, उ. प्र., म. प्र., आन्ध्र प्रदेश, शस्त्र तथा अग्नि या जल से आजीविका करने वाले, विद्वान, धनवान, समुद्र के किनारे के देशों में रहने वालों को पीड़ा होवे। आश्विन मास में सूर्यग्रहण व चन्द्रग्रहण घटित होने से कुछ मन्त्रीगणों, व्यापारी वर्ग, वैद्यों व सामान्य लोगों के दुःखों व कष्टों में वृद्धि होगी। **राजयुद्धं प्रजानाशं ग्रस्तोऽति ॥** आर्थिक कष्टों के कारण साधारण प्रजा में क्षोभ एवं असन्तोष की भावनाएं व्याप्त होंगी।

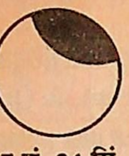
उत्तर

पश्चिम

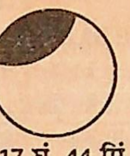


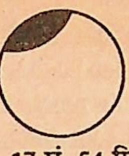
17 घं. 04 मिं.

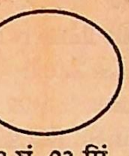

17 घं. 14 मिं.


17 घं. 24 मिं.


17 घं. 34 मिं. ग्रहण मध्य


17 घं. 44 मिं.


17 घं. 54 मिं.



18 घं. 03 मिं.

पूर्व

दक्षिण

भारत के प्रसिद्ध नगरों में 17 अक्तू., 2005 ई. को चन्द्रोदयकाल तथा ग्रहण का पर्वकाल

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल* घं. मिं.
अगरतला	16 50	0 59
अजमेर	17 55	0 08
अनन्तनाग (का.)	17 45	0 18
अमरावती (आ.)	17 48	0 15
अमरोहा	17 37	0 26
अमृतसर	17 50	0 13
अमेठी	17 27	0 36
अम्बाला	17 43	0 20
अयोध्या	17 24	0 39
अलवर	17 45	0 18
अर्की (हि. प्र.)	17 41	0 22
अल्मोड़ा	17 31	0 32
अहमदाबाद**	18 06	— —
अलीगढ़	17 40	0 23
आगरा	17 41	0 22
आजमगढ़ (उ. प्र.)	17 21	0 42
आबू (राज.)**	18 04	— —
इटावा (उ. प्र.)	17 37	0 26
इन्दौर	17 54	0 09
इम्फाल	16 38	0 59
ईटानगर	16 37	0 59
उज्जैन	17 54	0 09
उदयपुर (राज.)	18 00	0 03
उन्नाव (उ. प्र.)	17 31	0 32
उधमपुर (का.)	17 47	0 15
ऊना (हि. प्र.)	17 44	0 19
एटा (उ. प्र.)	17 37	0 26
एज़ावल	16 44	0 59
कटक	17 16	0 47
कटुआ (का.)	17 46	0 17
कन्नौज (उ. प्र.)	17 33	0 30
कपूरथला	17 47	0 16
करनाल	17 42	0 21
कलकत्ता	17 03	0 59

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल* घं. मिं.
कांगड़ा	17 43	0 20
कांचीपुरम्	17 48	0 15
कानपुर	17 33	0 30
कालका (ह.)	17 41	0 22
किश्तवाड़ (का.)	17 44	0 19
कुराली (पंजा.)	17 43	0 20
कुरुक्षेत्र	17 43	0 20
कुल्लू	17 40	0 23
कैथल	17 44	0 19
कोटखाई (हि.प्र.)	17 39	0 24
कोटा (रा.)	17 52	0 11
कोहिमा	16 36	0 59
कोयम्बटूर	17 56	0 07
खन्ना	17 44	0 19
खुर्जा (उ. प्र.)	17 41	0 22
गंगटोक	16 57	0 59
गया	17 15	0 48
गाज़ियाबाद	17 41	0 22
गुड़गांव	17 44	0 19
गुरदासपुर	17 46	0 17
गुवाहाटी	16 46	0 59
गोरखपुर	17 20	0 43
ग्वालियर	17 41	0 22
चण्डीगढ़	17 42	0 21
चम्बा (हि. प्र.)	17 42	0 21
चित्तौड़गढ़	17 56	0 07
चुरू (रा.)	17 52	0 09
चेन्नई	17 46	0 17
छपरा (बि.)	17 15	0 48
जबलपुर (म.प्र.)	17 37	0 26
जम्मू	17 47	0 16
जयपुर	17 50	0 13
जामनगर**	18 18	— —
जालन्धर	17 47	0 16

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल* घं. मिं.
जालौर (रा.)**	18 04	— —
जोरहाट	16 36	0 59
जीन्द (ह.)	17 46	0 17
जैसलमेर**	18 09	— —
जोधपुर	18 02	0 01
झरिया (बि.)	17 10	0 53
झांसी (म. प्र.)	17 41	0 22
झुंझुनूं (रा.)	17 50	0 13
टोंक (रा.)	17 51	0 12
डिब्रूगढ़	16 33	0 59
डीडवाना	17 55	0 08
डूँगरपुर	18 01	0 02
थानेसर (ह.)	17 42	0 21
दरभंगा	17 10	0 53
दार्जिलिंग	17 00	0 59
दिल्ली	17 43	0 20
देवबन्द (उ. प्र.)	17 39	0 24
देवरिया (उ. प्र.)	17 18	0 45
देवास (म. प्र.)	17 53	0 10
देवप्रयाग (उ.प्र.)	17 36	0 27
देहरादून	17 38	0 25
द्वारिका**	18 22	— —
धनबाद	17 10	0 53
धर्मशाला (हि.)	17 43	0 20
धूरी (पंजा.)	17 47	0 16
नवलगढ़ (रा.)	17 51	0 12
नागपुर	17 42	0 21
नागौर (रा.)	17 58	0 05
नाथद्वारा (रा.)	18 00	0 03
नाभा (पंजा.)	17 45	0 18
नारनौल (ह.)	17 47	0 15
नालागढ़ (हि.प्र.)	17 42	0 21
नाहन (हि. प्र.)	17 40	0 23
नासिक (महा.)**	18 05	— —

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल* घं. मिं.
नीमच (म. प्र.)	17 57	0 06
नैनीताल	17 34	0 29
पंचकूला (ह.)	17 42	0 21
पंजिम**	18 10	— —
पटना	17 13	0 50
पठानकोट	17 45	0 18
पटियाला	17 44	0 19
पिहोवा (ह.)	17 44	0 19
पानीपत	17 43	0 20
पालमपुर (हि. प्र.)	17 42	0 21
पाली (रा.)	18 01	0 02
पिलानी	17 50	0 13
पुंछ (का.)	17 50	0 13
पुणे**	18 05	— —
पुरी (उड़ी)	17 17	0 46
पोरबन्दर**	18 19	— —
पोर्ट-ब्लेयर	16 58	0 59
पाण्डेचेरी	17 46	0 17
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	17 26	0 37
प्रयाग	17 27	0 36
फगवाड़ा	17 46	0 17
फरीदकोट	17 50	0 13
फिरोज़पुर	17 50	0 13
फिल्लौर (पं.)	17 46	0 17
फाज़िल्का	17 54	0 09
फरीदाबाद (ह.)	17 43	0 20
बटाला	17 47	0 16
बंगलौर	17 55	0 08
बड़ौदा**	18 05	— —
बदायूं (उ. प्र.)	17 46	0 17
बलिया (उ. प्र.)	17 17	0 46
बाड़मेर (रा.)**	18 08	— —

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल* घं. मिं.
बांसवाड़ा (रा.)	17 58	0 05
बिजनौर (उ.प्र.)	17 49	0 14
बिलासपुर (म.प्र.)	17 29	0 34
बिलासपुर (हि.प्र.)	17 42	0 21
बीकानेर	17 59	0 04
बुलन्दशहर	17 41	0 22
बूंदी (रा.)	17 52	0 11
वाराणसी	17 22	0 41
भटिण्डा	17 50	0 13
भरतपुर (रा.)	17 43	0 20
भिवानी (ह.)	17 46	0 17
भुज (गुज.)**	18 18	— —
भुवनेश्वर	17 15	0 48
भोपाल	17 47	0 16
मण्डी (हि.प्र.)	17 40	0 23
मथुरा	17 41	0 22
मदुरै (ता.)	17 57	0 06
मन्दसौर (म.प्र.)	17 56	0 07
मंसूरी	17 38	0 25
महेन्द्रगढ़ (ह.)	17 47	0 16
मलेरकोटला	17 46	0 17
मिर्ज़ापुर	17 25	0 38
मुंगेर (बि.)	17 09	0 54
मुजफ्फरनगर	17 40	0 23
मुम्बई**	18 09	— —
मुरादाबाद	17 36	0 27
मेरठ	17 40	0 23
मैसूर (कर्ना.)	18 02	0 01
मोगा (पंजाब)	17 48	0 15
मुक्तसर	17 52	0 11
मोहाली	17 42	0 21
रतनगढ़ (राज.)	17 53	0 10

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.	पर्वकाल* घं. मिं.
रतलाम	17 51	0 06
राजकोट**	18 14	— —
रांची (बि.)	17 14	0 49
रामपुरबुशैहर	17 38	0 25
रामेश्वरम्	17 54	0 09
राजामुंदरी	17 35	0 28
रायपुर (छत्ती)	17 32	0 31
रिवाड़ी	17 45	0 18
रोपड़ (पंजाब)	17 43	0 20
रोहतक	17 45	0 18
लखनऊ	17 29	0 34
लुधियाना	17 45	0 18
शिलोंग	16 46	0 59
शिमला	17 41	0 22
श्रीनगर (का.)	17 47	0 16
संगरूर (पंजा.)	17 46	0 17
सरहिन्द	17 44	0 19
सहारनपुर	17 40	0 23
सागर (म. प्र.)	17 41	0 22
सांगानेर (राज.)	17 50	0 13
सिरसा (ह.)	17 50	0 13
सीकर (रा.)	17 51	0 12
सूरत**	18 08	— —
सूरतगढ़ (रा.)	17 55	0 08
सोलन (हि. प्र.)	17 40	0 23
हमीरपुर (हि.प्र.)	17 42	0 21
हरिद्वार	17 38	0 25
हाथरस	17 40	0 23
हापुड़ (उ. प्र.)	17 40	0 23
हांसी (ह.)	17 48	0 15
हैदराबाद	17 48	0 15
होशंगाबाद	17 46	0 17
होशियारपुर	17 44	0 19

* = ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण वाले नगरों में चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक और अन्य नगरों में ग्रहणारम्भ से ग्रहण समाप्ति तक के काल को यहां पर्वकाल लिखा गया है।

** = वाले नगरों में ग्रहण समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा। अतएव इन नगरों में चन्द्रग्रहण दिखाई नहीं देगा।

(3) खग्रास सूर्यग्रहण (29 मार्च, 2006 ई., बुधवार)—यह सूर्यग्रहण भारत में खग्रास, ग्रस्तास्त खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण भारत के उत्तरी, उत्तर-पश्चिमी तथा उत्तर-पूर्वी भागों में दिखाई देगा। भारत के अतिरिक्त यह खग्रास सूर्यग्रहण ब्राज़ील, घाना, लीबिया, टर्की, दक्षिण-पश्चिमी रूस, कज़ाकिस्तान, दक्षिणी रूस तथा उत्तरी मंगोलिया में दिखाई देगा।

भा. स्टैं. टा. के अनुसार इस ग्रहण का स्पर्श, मोक्षादि इस प्रकार होगा—

	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श	13 07	(भा. स्टैं. टा.)
ग्रहण मोक्ष	18 16	

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में जहाँ सूर्यास्त 18 घं. 16 मिं. से पहिले हो जाएगा, वहाँ यह खग्रास सूर्यग्रहण ग्रस्तास्त: खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा जबकि उत्तर व उत्तर-पश्चिमी नगरों में जहाँ 29 मार्च, 2006 ई. को सूर्य 18 घं. 16 मिं. के बाद अस्त होगा, वहाँ सूर्यग्रहण खग्रास रूप में दिखाई देगा।

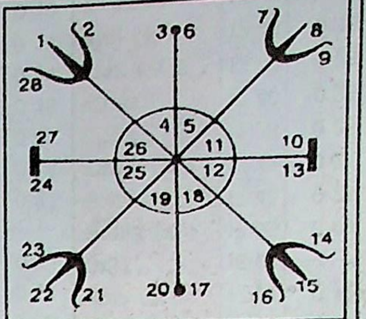
इस ग्रहण के बारे में सविस्तार एवं सचित्र आगामी वर्ष के पंचांगदिवाकर में लेख दिया जाएगा। क्योंकि दो ग्रहणों के बारे में पहिले ही सविस्तार लिख दिया है। स्थानाभाव के कारण इस ग्रहण का विस्तृत विवरण आगामी वर्ष के पंचांग में दिया जाएगा। क्योंकि उत्तर-पश्चिमी राज्यों—पंजाब, हिमाचल, जम्मू-काश., हरियाणा, दिल्ली, राज., उ. प्र. में इसका खग्रास रूप देखने को मिलेगा, इसलिए धार्मिक लोगों के लिए इसका विशेष महत्त्व होगा।

अयोध्या, फैज़ाबाद, प्रतापगढ़ (सभी उ. प्र.) के दायीं ओर के क्षेत्रों में बिहार, आसाम, अरुणांचल प्रदेश, मेघालय आदि में यह खग्रास सूर्यग्रहण ग्रस्त हुआ ही अस्त हो जाएगा अर्थात् ग्रहण समाप्ति से पूर्व ही सूर्य अस्त हो जाएगा। अतएव यहाँ यह ग्रहण ग्रस्तास्त खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। जबकि प्रतापगढ़ के बाईं ओर के क्षेत्रों जैसे—पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी, उ. प्र. (जैसे लखनऊ, बरेली, मथुरा आदि), उत्तरांचल, जम्मू-काश. में ग्रहण समाप्ति के बाद ही सूर्यास्त होगा। अतएव यहाँ यह ग्रहण खग्रास रूप में दिखाई देगा।

सूतक विचार—इस ग्रहण का सूतक 28 मार्च की रात्रि 1 बजकर 07 मिनट से प्रारम्भ हो जाएगा। ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में तीर्थ स्थान-दान, जप-पाठ, मन्त्र-तन्त्र अनुष्ठान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना शुभ होता है। सूतककाल में वृद्ध, बालक, रोगी एवं गर्भवती स्त्री को छोड़कर अन्य लोगों को बार-बार खान-पान, वृथालाप, आलस्य, मूर्ति स्पर्श करना, मैथुन, व्यर्थ भ्रमण सर्वथा निषेध कहा गया है।

ग्रहणकाल में अपने इष्टदेव पूजन, जप-पाठ, तर्पण, मन्त्र-अनुष्ठान, हवन तथा हरिद्वार, इलाहाबाद, कुरुक्षेत्र, काशी आदि तीर्थों पर अथवा नदी, कूपादि में स्नान, भजनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन तथा ग्रहणोपरान्त स्नान, अनाज, वस्त्र, दक्षिणादि का यथाशक्ति दान करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?



जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा** ? तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार २८ नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पूफा आदि २८ नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

——खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?——

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) **अन्धाक्ष**	रोह.	पुष्य.	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) **सुलोचन**	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) **मध्याक्ष**	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) **मन्दाक्ष**	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया विचार *(सन् 2005–06 ई.)*

वर्ष 2005 ई. में जनवरी के प्रारम्भ से ही शनि वक्री अवस्था में कर्क राशि में संचरणशील है। 13 जन. (05 ई.) को वक्री स्थिति में शनि (दुपै. 3 बजकर 2 मिंट से) मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा। 22 मार्च से शनि मार्गी होगा तथा फिर 26 मई गुरूवार की प्रातः को 7 बजकर 26 मिनट से शनि **धनु राशि** के चन्द्रमा कालीन पुनः कर्क राशि में प्रवेश होगा और सम्वत् के अन्त तक **कर्क राशि** में ही संचार करता रहेगा। **शनि का मिथुन** राशि में तथा **कर्क राशि** में संचार के फल यद्यपि हम गतवर्षीय पंचाँग सं. २०६१ में लिख चुके हैं। परन्तु सन् 2005 ई. के दौरान राशि परिवर्तन के समय शनि के सुवर्णादि पाया में परिवर्तन हो जाने से उनके शुभाशुभ फलों में भी न्यूनाधिकेन अन्तर आ जाएँगे। आगे संक्षेप में सन् 2005 ई. में शनि के गोचरफल का प्रभाव लिख रहे हैं–

–मिथुन राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं पाया का फल–

(13 जनवरी 2005 ई. से 25 मई 05 ई. तक)

मिथुन राशि में संचरणकालीन **वृष, मिथुन** और **कर्क** राशि वाले जातकों पर **शनि की साढ़ेसाती** का अशुभ प्रभाव तथा **वृश्चिक और मीन** राशि वालों पर शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव 25 मई (2005 ई.) तक विशेष रूप से रहेगा।

मेष राशि–वर्षारम्भ से शनि इस राशि पर सुवर्ण के पाया पर राशि परिवर्तन करेगा। 24 मार्च तक राहु का संचार भी होने से प्रारम्भ में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। आय कम व खर्च अधिक होंगे। अप्रैल मास से हालात में बेहतरी होगी।

वृष–शनि साढ़ेसति का प्रभाव उतरती हुई अवस्था में 25 मई तक रहेगा। परन्तु इस राशि पर शनि का **पाया ताम्र** होने से विघ्न–बाधाओं एवं परेशानियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मिथुन–इस पर शनि साढ़ेसाती का प्रभाव हृदय पर चढ़ती हुई स्थिति में होगा। मानसिक तनाव एवं आय के साधनों में विघ्न–बाधाएँ पड़ेंगी। शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर भी मिलेंगे।

कर्क–शनि साढ़ेसती मस्तक पर चढ़ती अवस्था में तथा शनि का पाया '**लोह**' होने से परिवारिक लोगों के साथ कलह–क्लेश, रोगभय तथा धन हानि एवं अपव्यय तथा तनाव बढ़ेंगे।

सिंह–वर्ष के आरम्भिक महीनों में शनि की विशेष दृष्टि पड़ने से व्यवसाय सम्बन्धी भाग–दौड़ व खर्च अधिक रहेंगे। निकट बन्धुओं से कलह रहे, परन्तु पाया ताम्र होने से गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कन्या–राशि से शनि का संचार दशमस्थ होने से व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष अधिक करना होगा। शनि का पाया सुवर्ण होने से धन के खर्च अधिक होने से परेशानियाँ बढ़ेंगी।

तुला–नवमस्थ शनि भाग्योन्नति में अड़चनें पैदा करेगा। परन्तु पाया रजत होने से रूकावटों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे।

वृश्चिक–अष्टमस्थ शनि होने से शनि की ढैय्या का अशुभफल रहेगा। बनते कामों में अड़चनें होंगी। शनि का पाया भी लौह होने से घरेलू उलझनें, तनाव व आर्थिक परेशानियाँ होंगी।

धनु–शनि का संचार सप्तमस्थ होने से सहयोगी जनों के साथ मनमुटाव एवं वैमनस्य बढ़ेगा। धनागन के मार्ग में भी रूकावटें पैदा होंगी, परन्तु शनि का पाया ताम्र होने से लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।

मकर–षष्ठ भावस्थ शनि से शत्रुओं पर विजय तथा लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त कराएगा। शनि का पाया भी रजत होना शुभ एवं लाभप्रद रहेगा। परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

कुम्भ–25 मई तक शनि पंचमस्थ होने से व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद ही धन के साधन बनेंगे। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से धन के खर्च एवं घरेलु उलझनें अधिक बढ़ेंगी।

मीन–मीन राशि को शनि चतुर्थस्थ होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। सुख में कमी, धन लाभ में विघ्न बाधाएँ रहें तथा खर्च भी अधिक रहें, शनि का पाया लौह होने से गुप्त चिन्ताएँ भी रहेंगी।

–कर्क राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं पाया विचार–

(26 मई (05 ई.) से वि. संवत् 2062 के अन्त (29 मार्च, 2006 ई.) तक)

✡ मिथुन राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई, अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

✡ कर्क राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई, अर्थात् द्वितीय चरण में होगी।

✡ सिंह राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती मस्तक पर चढ़ती हुई, आरम्भिक अवस्था में होगी।

ढैय्या विचार–26 मई (05 ई.) के बाद **मेष और धनु** राशि के जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। **शनि की ढैय्या** के प्रभावस्वरूप जातक को घरेलु उलझनें, कलह–क्लेश, धन–हानि, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएँ, रोग व शत्रुभय तथा शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का भय होता है।

शनि की साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप जातक को परिवारिक एवं व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें, आकस्मिक खर्चों की अधिकता, निकट बन्धुओं से विरोध, वृथा–दौड़धूप, बनते कामों में विघ्न/बाधाएँ, गुप्त रोग, शत्रुभय, धन–हानि आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। यदि किसी जातक की कुण्डली में शनि उच्चस्थ, मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री अथवा वर्गोत्तम स्थिति में पड़ा हो, तो जातक की जन्म राशि या नाम राशि पर शनि का साढ़ेसाती या ढैय्या के अशुभत्व का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ लग्न की कुण्डली में शनि यदि शुभ स्थिति में हो, तो शनि की दशा व्यवसाय एवं कैरियर की दृष्टि से विशेष शुभ रहती है। अधिक विवरण के लिए **फलित ज्योतिष की ज्योतिष तत्त्व** (द्वितीय खण्ड) का अध्ययन कर सकते हैं।

कर्क राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव (26 मई से संवतान्त तक)

(साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि फल विवरण सहित)

मेष राशि–शनि की ढैय्या के कारण धन सम्बन्धी परेशानियाँ, खर्चाधिक्य, तनाव एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी, बनते कामों में अड़चनें पड़ेंगी, परन्तु शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से धन लाभ एवं उन्नति के साधनों में भी वृद्धि होगी।

वृष—भाग्यवश धन लाभ एवं सुख के साधनों में वृद्धि होगी। प्रयासों में सफलता हों, परन्तु शनि का पाया **लौह** होने से स्वास्थ्य में हानि, उलझनें, लाभ में कमी एवं खर्च अधिक रहें।

मिथुन—शनि–साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा। जिससे अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना रहेगा। बनते कामों में अड़चनें एवं विलम्ब हों। परन्तु शनि का पाया ताम्र होने से येनकेन प्रकारेण गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कर्क—शनि साढ़ेसाती का प्रभाव विशेष रूप से रहेगा। जिससे घरेलू व आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। शनि का पाया सुवर्ण होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे।

सिंह—राशि को शनि साढ़ेसाती मस्तक पर चढ़ती हुई प्रारम्भिक अवस्था में होगी। बनते कामों में विघ्न/बाधाएँ रहेंगी। धन के खर्च भी बहुत अधिक रहें। परन्तु शनि पाया रजत होने से परिश्रम करने पर निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कन्या—राशि पर शनि एकादश स्थान में राशि परिवर्तन होने से इस जातक को मई मास के पश्चात् अकस्मात् धन लाभ, उन्नति एवं सुख–साधनों में वृद्धि के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु शनि का पाया लोहा होने से परिवारिक उलझनें एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियाँ भी रहेंगी।

तुला—राशि को शनि दशमस्थ होने से कैरियर एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष अधिक रहेगा, परन्तु इस पर शनि का पाया ताम्र होने से वर्ष के उत्तरार्ध भाग में निर्वाह योग्य धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

वृश्चिक—भाग्योन्नति में अड़चनें एवं विलम्ब पैदा होंगे। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ अल्प व खर्च अधिक रहेंगे। इस राशि पर शनि रजत का पाया होने से बीच–बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

धनु—राशि से शनि अष्टमस्थ होने से शनि की ढैय्या का अशुभ फल रहेगा। इस पर शनि का पाया भी सुवर्ण होने से व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। घरेलु कलह एवं वृथा खर्च बढ़ेंगे।

मकर—मकर राशि को शनि सप्तमस्थ होने से परिवारिक एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियाँ बढ़ेंगी। इस राशि को शनि लौह के पाया पर संचार होने से स्वास्थ्य में विकार, आय में कमी तथा खर्च अधिक बढ़ेंगे।

कुम्भ—कुम्भ राशि को शनि षष्ठ स्थान में होने से विघ्न/बाधाओं के बावजूद धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। गत किए गए प्रयासों में सफलता होगी। परन्तु इस राशि को शनि का पाया सुवर्ण होने से शरीर कष्ट, शत्रु भय, आकस्मिक खर्च तथा निकटस्थ बन्धुओं के साथ वैमनस्य बढ़ेंगे।

मीन—मीन राशि को शनि पंचम स्थान पर राशि परिवर्तन करने से सोची हुई योजनाओं में अड़चनें रहेंगी। अत्यधिक खर्च व मानसिक तनाव रहेंगे। परन्तु इस राशि को शनि का पाया ताम्र होने से व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर भी प्राप्त होंगे।

शनि साढ़ेसती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23 हजार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। इसके अतिरिक्त शनिवार के दिन का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित शनि यन्त्र धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः॥''

शनि का वैदिक मन्त्र—

''ॐ शंन्नो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्यो रभिस्रवन्तु नः॥''

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र–

''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥'' (धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि–जनित अरिष्टों की शान्ति होती है॥

–गुरु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०६२–

गत सम्वत् २०६१ में 27 अगस्त, सन् 2004 ई. को गुरु उ.षा. नक्षत्र कालीन रात्रि 11 बजकर 36 मिनट पर कन्या राशि में प्रविष्ट हुआ था। सम्वत् २०६२ में **गुरु 27 सितम्बर, 05 ई.** तक कन्या राशि में ही संचार करेगा। **28 सितम्बर, 05 ई.** बुधवार की प्रातः 5 बजकर 35 मिनट पर, पुष्य नक्षत्र एवं कर्क के चन्द्रमा कालीन **तुला राशि में** प्रविष्ट होकर सम्वत् के अन्त तक इसी राशि में संचार करेगा। दोनों राशियों पर संचरण कालीन विभिन्न राशियों पर अलग–अलग प्रभाव रहेंगे। ध्यान रहे, मात्र एक ग्रह (गुरु, शनि, राहु आदि) के गोचर प्रभाव का विचार करते समय अपनी राशि पर अन्य ग्रहों के संचार, दृष्टि आदि की भी समीक्षा कर लेनी चाहिए॥

–कन्या राशिगत गुरु का गोचर फल–

(27 अगस्त, 2004 ई० से 27 सितं., 2005 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रोग व शत्रु भय, खर्च अधिक चिन्ता	कार्यों में सफलता, सुख-साधनों में वृद्धि	वृथा-दौड़-धूप व खर्च अधिक रहें।	विघ्नों के बावजूद कुछ धन लाभ होगा।	लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे, प्रिय मिलन	तनाव एवं खर्च अधिक होंगे, बन्धु से विरोध	प्रिय बन्धु से मन मुटाव, खर्च-अधिक	नवीन कार्य की योजना, धन लाभ अच्छा	धोखा मिलने के संकेत आय कम व खर्च अधिक हों।	धन लाभ व तरक्की के अवसर मिलेंगे, मंगल कार्य भी होगा	अत्यधिक संघर्ष व परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन होंगे	विशेष परिश्रम के बाद कार्यों में सफलता हो।

—तुला राशिगत गुरू का गोचर पल—

(28 सितम्बर, 2005 ई. से सम्वत् के अन्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
विशेष परिश्रम के बाद ही कार्यों में सफलता मिलेगी	रोग व शत्रुभय धन के खर्च अधिक हों।	सुख के साधनों में वृद्धि रूके कार्यों में सफलता मिले।	संघर्ष व वृथा दौड़-धूप बढ़ेंगी खर्च भी अधिक होंगे	विघ्नों के बा-वजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे	किसी प्रिय बन्धु से मिलन लाभ व उन्नति के अ-वसर मिलेंगे	निकट बन्धुओं से विरोध, घरेलु उलझनें खर्च अधिक हों।	किसी प्रिय बन्धु से मतान्तर खर्च अधिक रहेंगे।	अचानक धन-लाभ व उन्नति के अ-वसर प्राप्त होंगे।	किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के चांस आय कम व खर्च अधिक हों।	गृह में कोई मंगल कार्य हो धन लाभ व उन्नति के अ-वसर प्राप्त होंगे।	अत्यधिक संघर्ष के बाद गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति—अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, प्रत्येक अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरू के बीज मन्त्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है॥

गुरु गायत्री मन्त्र—

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्''

गुरु बीज मन्त्र—''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥''

सामान्य मन्त्र— ''ॐ बृं बृहस्पतये नमः॥''

राहु—केतु का शुभाशुभ गोचरफल—संवत् २०६२

25 मार्च सं. 2005 ई. शुक्रवार की प्रातः 5 बजकर 53 से राहु (वक्री अवस्था में) कन्या राशि के चन्द्रमा कालीन मीन राशि में प्रवेश करेगा तथा 25 मार्च की प्रातः 5/53 बजे से ही **केतु कन्या राशि** में प्रविष्ट होगा। इनके गोचर का शुभाशुभ फल इस प्रकार से होगा—

मीन राशिस्थ राहु का गोचरफल

(25 मार्च, 05 से संवत् 2062 के अन्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बनते कार्यों में अ-ड़चनें अप-व्यय	गत किए हुए प्रयासों में सफलता	घर में मांग-लिक कार्य, धन लाभ	गुज़ारे योग्य आय के साधन रहें	शरीर कष्ट संघर्ष अधिक रहे	मान-सिक तनाव आर्थिक समस्या	विगत किए गए प्रयासों में सफलता	रोग भय एवं गुप्त चिन्ता रहे	आय कम, खर्च अधिक, तनाव	धन लाभ रुकावटें दूर होंगी	अचानक लाभ व हानि के योग हैं।	पारिवारिक कलह-क्लेश, वृथा दौड़-धूप

कन्या राशिस्थ केतु का गोचरफल

(25 मार्च, 05 से संवत् के अन्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन लाभ, कार्यों में सफ-लता	परिवार में मत--भेद धन लाभ साधा-रण	घरेलू कलह क्लेश, आर्थिक परेशा-नियां, तनाव	सफ-लता, बिगड़े कार्यों में सुधार	लाभ कम व खर्च अधिक रहे	रुका-वड़ें शरीर कष्ट स्त्री/ पति से तनाव रहे	शत्रु भय, फिज़ूल खर्च, रोग, शोक हो	सुख साधनों में वृद्धि, धन लाभ साधारण	मंगल कार्य हो, लाभ कम खर्च अधिक	शरीर कष्ट, चोट भय, आय में कमी	धन हानि, रोग भय संतान संबंधी चिन्ता	स्त्री/ पति को कष्ट, किसी से धोखा मिले

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण–पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र **'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः'** का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का वैदिक मन्त्र—

'ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूति सदावृधः सखा। कयाशश्चिष्ठया वृता॥'

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल–काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए वैदिक मन्त्र—

'ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। सुमुषद्भिरजायथाः॥'

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाश्य पुस्तक **अनिष्ट ग्रह शान्ति और उपयोगी उपाय** मँगवा कर पढ़ें॥ **—सम्पादक**

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योगः–वि. संवत् २०६२

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी, प्रतियोगिता अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय–विक्रय करना, यात्रा या मुकदमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र–आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग** की उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो '**रवि योग**' अन्य कुयोगों का नाश करके शुभफल प्रदान करता है। **'अयोगः सिद्धियोगश्च, द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्त्तते ॥ राजमार्तण्ड'**

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005 ई.	घं. मिं.	2005 ई.	घं. मिं.
3 अप्रै.	सू. उ.	3 अप्रै.	18 37
4 अप्रै.	सू. उ.	4 अप्रै.	16 56
8 अप्रै.	11 13	9 अप्रै.	सू. उ.
10 अप्रै.	सू. उ.	10 अप्रै.	10 23
12 अप्रै.	सू. उ.	12 अप्रै.	11 52
13 अप्रै.	सू. उ.	14 अप्रै.	सू. उ.
15 अप्रै.	18 23	16 अप्रै.	सू. उ.
17 अप्रै.	सू. उ.	17 अप्रै.	24 10
27 अप्रै.	सू. उ.	27 अप्रै.	6 19
30 अप्रै.	24 01	1 मई	सू. उ.
5 मई	18 46	7 मई	सू. उ.
9 मई	20 25	10 मई	सू. उ.
11 मई	सू. उ.	11 मई	24 01
13 मई	2 29	14 मई	5 16
15 मई	सू. उ.	15 मई	8 12
21 मई	18 22	22 मई	सू. उ.
23 मई	16 32	24 मई	सू. उ.
28 मई	6 07	29 मई	4 13
31 मई	24 48	1 जून	सू. उ.
2 जून	सू. उ.	3 जून	25 16
6 जून	सू. उ.	7 जून	सू. उ.
8 जून	सू. उ.	8 जून	7 27
9 जून	9 54	10 जून	12 39

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005 ई.	घं. मिं.	2005 ई.	घं. मिं.
16 जून	2 05	16 जून	सू. उ.
18 जून	सू. उ.	18 जून	27 42
20 जून	सू. उ.	20 जून	24 53
24 जून	14 22	25 जून	11 46
28 जून	6 36	29 जून	सू. उ.
30 जून	सू. उ.	1 जुला	6 45
4 जुला	सू. उ.	5 जुला	सू. उ.
7 जुला	सू. उ.	8 जुला	सू. उ.
13 जुला	9 24	14 जुला	सू. उ.
16 जुला	सू. उ.	16 जुला	12 50
18 जुला	सू. उ.	18 जुला	11 05
22 जुला	सू. उ.	22 जुला	21 30
26 जुला	सू. उ.	26 जुला	13 01
28 जुला	सू. उ.	28 जुला	12 42
30 जुला	15 07	31 जुला	सू. उ.
1 अग.	सू. उ.	1 अग.	19 34
4 अग.	सू. उ.	5 अग.	4 07
10 अग.	सू. उ.	10 अग.	17 36
19 अग.	सू. उ.	19 अग.	8 20
21 अग.	24 03	22 अग.	सू. उ.
23 अग.	20 52	24 अग.	सू. उ.
27 अग.	सू. उ.	27 अग.	23 23
1 सितं.	सू. उ.	1 सितं.	10 13

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005 ई.	घं. मिं.	2005 ई.	घं. मिं.
4 सितं.	18 44	5 सितं.	सू. उ.
10 सितं.	2 35	10 सितं.	सू. उ.
12 सितं.	2 00	12 सितं.	सू. उ.
18 सितं.	10 46	19 सितं.	सू. उ.
20 सितं.	6 57	21 सितं.	5 52
22 सितं.	5 30	22 सितं.	सू. उ.
24 सितं.	सू. उ.	24 सितं.	7 02
2 अक्तू	सू. उ.	3 अक्तू	सू. उ.
7 अक्तू	8 01	8 अक्तू	सू. उ.
9 अक्तू	7 37	10 अक्तू	सू. उ.
16 अक्तू	सू. उ.	16 अक्तू	18 48
18 अक्तू	सू. उ.	18 अक्तू	16 04
19 अक्तू	15 25	20 अक्तू	सू. उ.
24 अक्तू	21 50	25 अक्तू	सू. उ.
25 अक्तू	24 42	26 अक्तू	सू. उ.
30 अक्तू	सू. उ.	31 अक्तू	सू. उ.
3 नवं.	14 34	4 नवं.	14 07
6 नवं.	सू. उ.	6 नवं.	12 16
13 नवं.	26 01	14 नवं.	सू. उ.
15 नवं.	24 49	17 नवं.	सू. उ.
21 नवं.	6 14	22 नवं.	सू. उ.
22 नवं.	8 55	23 नवं.	सू. उ.
27 नवं.	सू. उ.	27 नवं.	22 03

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005 ई.	घं. मिं.	2005 ई.	घं. मिं.
30 नवं.	23 16	1 दिसं.	22 22
4 दिसं.	17 31	5 दिसं.	सू. उ.
5 दिसं.	15 39	6 दिसं.	सू. उ.
11 दिसं.	8 30	12 दिसं.	सू. उ.
13 दिसं.	8 20	15 दिसं.	सू. उ.
18 दिसं.	14 24	19 दिसं.	16 57
20 दिसं.	सू. उ.	20 दिसं.	19 51
28 दिसं.	9 27	29 दिसं.	8 36
(सन् 2006 ई.)			
1 जन.	सू. उ.	1 जन.	24 06
2 जन.	सू. उ.	2 जन.	21 34
6 जन.	14 30	7 जन.	सू. उ.
8 जन.	सू. उ.	8 जन.	13 45
10 जन.	सू. उ.	10 जन.	14 51
11 जन.	सू. उ.	12 जन.	सू. उ.
13 जन.	19 24	14 जन.	सू. उ.
15 जन.	सू. उ.	15 जन.	24 11
25 जन.	सू. उ.	25 जन.	18 57
29 जन.	सू. उ.	29 जन.	10 55
30 जन.	सू. उ.	30 जन.	7 58
2 फर.	21 53	4 फर.	सू. उ.
6 फर.	20 23	7 फर.	सू. उ.
8 फर.	सू. उ.	8 फर.	23 15

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2006 ई.	घं. मिं.	2006 ई.	घं. मिं.
9 फर.	25 22	11 फर.	3 49
18 फर.	23 54	19 फर.	सू. उ.
21 फर.	3 05	21 फर.	सू. उ.
25 फर.	22 07	26 फर.	सू. उ.
2 मार्च	7 53	4 मार्च	4 13
6 मार्च	सू. उ.	7 मार्च	सू. उ.
9 मार्च	7 18	10 मार्च	9 46
15 मार्च	24 40	16 मार्च	सू. उ.
18 मार्च	सू. उ.	19 मार्च	सू. उ.
20 मार्च	9 06	21 मार्च	सू. उ.
25 मार्च	7 27	26 मार्च	5 26
28 मार्च	21 41	29 मार्च	सू. उ.
30 मार्च	सू. उ.	31 मार्च	14 35

अमृत सिद्धि योग
(2005–06 ई.)

प्रारम्भ	घं. मिं.	समाप्ति	घं. मिं.
8 अप्रै.	11 13	9 अप्रै.	सू. उ.
27 अप्रै.	सू. उ.	27 अप्रै.	6 19
6 मई	सू. उ.	6 मई	18 34
7 जून	5 21	7 जून	सू. उ.
4 जुला	11 31	5 जुला	सू. उ.
7 जुला	19 10	8 जुला	सू. उ.
30 जुला	15 07	31 जुला	सू. उ.

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005 ई.	घं. मिं.	2005 ई.	घं. मिं.
1 अग.	सू. उ.	1 अग.	19 34
4 अग.	सू. उ.	4 अग.	28 07
23 अग.	20 52	24 अग.	सू. उ.
27 अग.	सू. उ.	27 अग.	23 23
1 सितं.	सू. उ.	1 सितं.	10 13
20 सितं.	6 57	21 सितं.	5 52
24 सितं.	सू. उ.	24 सितं.	7 02
3 अक्तू	3 35	3 अक्तू	सू. उ.
18 अक्तू	सू. उ.	18 अक्तू	16 04
30 अक्तू	11 26	31 अक्तू	सू. उ.
27 नवं.	सू. उ.	27 नवं.	22 03
30 नवं.	23 16	1 दिसं.	सू. उ.
24 दिसं.	सू. उ.	24 दिसं.	7 08
28 दिसं.	9 27	29 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2006 ई.)			
6 जन.	14 30	7 जन.	सू. उ.
25 जन.	सू. उ.	25 जन.	18 57
3 फर.	सू. उ.	3 फर.	20 32
7 मार्च	3 57	7 मार्च	सू. उ.

रवि सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
31 मार्च	22 55	1 अप्रै.	21 40
11 अप्रै.	10 49	12 अप्रै.	11 52
13 अप्रै.	13 31	13 अप्रै.	24 09
14 अप्रै.	15 44	15 अप्रै.	18 23
17 अप्रै.	24 10	20 अप्रै.	5 15
22 अप्रै.	8 20	23 अप्रै.	8 57
29 अप्रै.	25 36	30 अप्रै.	24 01
10 मई	21 59	11 मई	10 12
11 मई	24 01	12 मई	26 29
14 मई	5 16	15 मई	8 12
17 मई	13 44	19 मई	17 27

रवि सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005 ई.	घं. मिं.	2005 ई.	घं. मिं.
21 मई	18 22	22 मई	17 45
10 जून	12 39	11 जून	15 35
12 जून	18 36	13 जून	21 29
16 जून	2 05	18 जून	3 59
20 जून	2 38	20 जून	24 53
27 जून	7 47	28 जून	6 36
9 जुला	25 09	11 जुला	4 09
12 जुला	6 58	13 जुला	9 24
15 जुला	12 28	17 जुला	12 21
19 जुला	9 07	20 जुला	2 26
20 जुला	6 35	21 जुला	3 40
26 जुला	13 01	27 जुला	12 29
8 अग.	12 53	9 अग.	15 26
10 अग.	17 36	11 अग.	19 13
13 अग.	20 25	15 अग.	18 36
18 अग.	11 22	19 अग.	8 20
24 अग.	20 22	25 अग.	20 38
6 सितं.	23 10	7 सितं.	24 49
8 सितं.	25 58	9 सितं.	26 35
11 सितं.	26 00	14 सितं.	20 57
16 सितं.	15 52	17 सितं.	13 14
23 सितं.	5 53	24 सितं.	7 02
6 अक्तू	7 34	7 अक्तू	8 01
8 अक्तू	8 02	9 अक्तू	7 37
12 अक्तू	4 13	13 अक्तू	24 35
15 अक्तू	20 38	16 अक्तू	18 48
22 अक्तू	17 21	23 अक्तू	19 19
24 अक्तू	3 45	24 अक्तू	21 50
4 नवं.	14 07	5 नवं.	13 19
6 नवं.	11 49	6 नवं.	12 16
7 नवं.	11 02	8 नवं.	9 42
10 नवं.	6 54	12 नवं.	4 13
14 नवं.	2 01	15 नवं.	1 15

रवि सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005-06	घं. मिं.	2005-06	घं. मिं.
22 नवं.	8 55	23 नवं.	11 53
4 दिसं.	17 31	5 दिसं.	15 39
6 दिसं.	13 52	7 दिसं.	12 16
9 दिसं.	9 49	11 दिसं.	8 30
13 दिसं.	8 20	14 दिसं.	8 44
21 दिसं.	22 56	22 दिसं.	26 01
2 जन.	21 34	3 जन.	19 14
4 जन.	17 13	5 जन.	15 37
7 जन.	13 53	9 जन.	14 05
12 जन.	17 31	13 जन.	19 24
20 जन.	12 18	21 जन.	15 00
1 फर.	2 14	1 फर.	23 49
2 फर.	21 53	3 फर.	20 32
5 फर.	19 47	6 फर.	10 48
6 फर.	20 23	8 फर.	23 15
11 फर.	3 49	12 फर.	6 32
18 फर.	23 54	19 फर.	15 25
19 फर.	25 49	21 फर.	3 05
2 मार्च	7 53	3 मार्च	5 46
4 मार्च	4 13	4 मार्च	21 42
5 मार्च	3 23	6 मार्च	3 17
8 मार्च	5 19	10 मार्च	9 46
12 मार्च	15 36	13 मार्च	18 42
21 मार्च	10 00	22 मार्च	10 17
31 मार्च	14 35	31 मार्च	16 49

ज्वालामुखी योग 2005 ई.

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
16 फर.	18 36	17 फर.	20 39
14 मार्च	8 44	15 मार्च	1 23
18 अप्रै.	11 40	19 अप्रै.	2 54
22 जून	9 44	22 जून	19 58
26 अग.	8 35	26 अग.	21 40
27 अग.	9 15	27 अग.	23 23
21 सितं.	22 43	22 सितं.	5 30
26 अक्तू	22 31	27 अक्तू	3 42

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2005-06 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे—ज़मीन—जायदाद, हीरे—जवाहरात, स्वर्ण—चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय—भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि किसी को हानि हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है।

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005-06	घं. मिं.	2005-06	घं. मिं.
22 जन.	सू. उ.	22 जन.	8 30
1 फर.	सू. उ.	1 फर.	13 27
27 मार्च	सू. उ.	27 मार्च	25 04
5 अप्रै.	10 04	5 अप्रै.	15 15
21 मई	सू. उ.	21 मई	6 43
29 मई	8 33	29 मई	26 40
8 जून	4 52	8 जून	सू. उ.
23 जुला	सू. उ.	23 जुला	8 45
31 जुला	23 46	1 अग.	सू. उ.
24 सितं.	7 02	24 सितं.	23 26
4 अक्तू	16 56	5 अक्तू	सू. उ.
27 नवं.	22 35	28 नवं.	सू. उ.
7 दिसं.	6 12	7 दिसं.	सू. उ.
21 जन.	15 00	22 जन.	8 03
26 मार्च	5 26	26 मार्च	26 08

रवि पुष्य योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
21 फर.	5 53	21 फर.	सू. उ.
20 मार्च	13 16	21 मार्च	सू. उ.
17 अप्रै.	सू. उ.	17 अप्रै.	24 10
15 मई	सू. उ.	15 मई	8 12
21 नवं.	6 14	21 नवं.	सू. उ.
18 दिसं.	14 24	19 दिसं.	सू. उ.
15 जन.	सू. उ.	15 जन.	24 11

गुरु पुष्य योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
7 जुला	19 10	8 जुला	सू. उ.
4 अग.	सू. उ.	5 अग.	4 07
1 सितं.	सू. उ.	1 सितं.	10 13

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2005-06	घं. मिं.	2005-06	घं. मिं.
2 जन.	10 02	3 जन.	5 19
11 जन.	13 38	11 जन.	14 46
15 फर.	16 32	15 फर.	17 06
20 फर.	2 55	21 फर.	4 09
26 फर.	सू. उ.	26 फर.	12 55
7 मार्च	2 42	7 मार्च	सू. उ.
16 अप्रै.	सू. उ.	16 अप्रै.	6 56
26 अप्रै.	सू. उ.	26 अप्रै.	7 34
30 अप्रै.	सू. उ.	30 अप्रै.	24 01
19 जून	3 42	19 जून	18 13
28 जून	सू. उ.	28 जून	6 36
2 जुला	11 27	3 जुला	9 31
21 अग.	2 30	21 अग.	16 15
30 अग.	14 42	31 अग.	सू. उ.
5 सितं.	2 17	5 सितं.	सू. उ.
23 अक्तू	19 19	24 अक्तू	सू. उ.
29 अक्तू	9 15	30 अक्तू	11 26
8 नवं.	सू. उ.	8 नवं.	9 42
17 दिसं.	12 18	17 दिसं.	23 58
27 दिसं.	16 30	28 दिसं.	सू. उ.
1 जन.	2 38	1 जन.	24 06
10 जन.	10 53	10 जन.	14 51
19 फर.	25 49	20 फर.	सू. उ.
25 फर.	सू. उ.	25 फर.	16 55
1 मार्च	2 18	1 मार्च	सू. उ.
5 मार्च	14 05	6 मार्च	3 17

स्त्री जातक विचार

(विवाह, सन्तान आदि सम्बन्धी विशेष योग) ज्योतिष तत्त्व (फलित) भाग दो से उद्धृत

आजकल परिवर्तित परिस्थितियों में लड़कियां भी पुरुषों के समान उच्च विद्या प्राप्त करके लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उच्च पद की नौकरी अथवा व्यवसाय करते हुए अपने परिवार एवं समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस प्रकार परिवारिक एवं आर्थिक, दोनों क्षेत्रों में अपना उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभा रही हैं। इसलिए स्त्री सम्बन्धित ज्योतिष के अनेक प्राचीन योगों को आधुनिक सन्दर्भों में विश्लेषण करके वर्णित करने की विशेष आवश्यकता है। आगे स्त्री जातक सम्बन्धी कुछ विशेष योग दिए जाते हैं। ध्यान रहे, स्त्रियों सम्बन्धी फलादेश जन्म लग्न के अतिरिक्त चन्द्रमा को भी लग्न मानकर करना चाहिए।

(1) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा समराशि में हों, तो स्त्री पतिव्रता, सुन्दर, सुशील, चरित्रवान्, गुणवती एवं रूपवती होती है। यदि समराशिस्थ लग्न व चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो,तो स्त्री अनेक गुणों से युक्त तथा सुवर्ण आभूषण, अलंकारों, भूमि एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होती हैं—

प्रकृतिस्था लग्नेन्द्वोः समभे सच्छोलरूपाढया।
भूषण गुणैरुपेता, शुभवीक्षितयोश्च युवतिः स्यात् ॥ सारावली ॥

(2) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा विषम राशि में हों, तो स्त्री पुरुष की आकृति के समान मुखाकृति वाली एवं पुरुषों जैसे कठोर स्वभाव से युक्त एवं स्वाभिमानी परन्तु परेशानियों से घिरी रहने वाली होगी। यदि विषम राशिस्थ लग्न व चन्द्र पाप (क्रूर) ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो स्त्री कुटिल बुद्धि की, पति से उग्र (क्रोधपूर्ण) व्यवहार करने वाली, नियन्त्रण में न रहने वाली, पर पुरुष में चेष्टा रखने वाली तथा दूसरों से ईर्ष्या व द्वेष करने वाली होती है।

(3) यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हों तथा वह शुभ ग्रह से युक्त व उन्हें शुभ ग्रह देखते हों, तो स्त्री मिश्रित (शुभाशुभ) गुणों वाली, पुरुष-स्त्री मिश्रित आकृति, स्थिर, चाल और मिश्रित बुद्धि वाली होती है।

(4) लग्न व चन्द्रमा में से जो अधिक बली हो, उससे स्त्रियों की देह का शुभाशुभ फल का विचार करे। सप्तम भाव से पति के सुख एवं सौभाग्य का, अष्टम से पति की मृत्यु का तथा पंचम भाव से सन्तति का विचार करें—

वैधव्यं निधने चिन्त्यं शरीरं जन्मलग्नतः। सप्तमे पतिसौभाग्यं पंचमे प्रसवस्तथा॥

(5) यदि 1, 4, 5, 7 एवं 12वें भावों में शुभ ग्रह हों, तो ऐसी स्त्री अपने पति के वश में रहती है तथा उसका पति भी उसके वश में रहता है तथा पति-पत्नी में अच्छा प्रेम रहता है।

6. वैधव्य योग—(क) जिस स्त्री की कुण्डली में सप्तमेश अष्टम स्थान में बैठा हो और अष्टमेश सप्तम स्थान में बैठा हो और वे पापग्रह से युक्त या दृष्ट हों, तो स्त्री को वैधव्य योग होता है।

(ख) जब सप्तमेश तथा अष्टमेश छठे या बारहवें भावों में पापग्रह के साथ पड़े हों, तो ऐसी स्त्री को वैधव्य अथवा पति के सुख में कमी होती है।

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः। पापेक्षणयुताद् वाला वैधव्यं लभते ध्रुवम्।
सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितो। तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः॥

(ग) लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम अथवा अष्टम स्थान में पापग्रह होने से स्त्री को वैधव्य होने की सम्भावना होती है।

(घ) यदि दो पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री काम से पीड़ित, विधवा और कुल का क्षय करने वाली होती है।

(ङ) यदि तीन पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री कुलटा तथा परपुरुष गामिनी एवं पति की घातिनी होती है।

(च) सप्तम स्थान में राहु नित्य अरिष्ट करके स्त्री की हानि करता है।

(छ) लग्न से अष्टम क्रूर ग्रह, नीच, शत्रु या पापवर्गों में हों, तो पति की आयु के लिए अरिष्टकर होता है

क्रूर व्योमचरः स्त्रीणामष्टमस्थो विलग्नतः। नीचारिपाप वर्गेषु पत्युः मृत्यु करः स्मृतः॥

इसके अतिरिक्त 8वें एवं 12वें स्थानों पर पापयुक्त मंगल हो, लग्न में राहु हो, तो भी वैधव्य की सम्भावना होती है. यदि लग्न में सूर्य, मंगल अथवा शनि हो, तो भी दुर्भाग्य युक्त होती है—

व्ययाष्टगे कुजे क्रूरयुते राहौ विलग्नगे। रण्डाथ लग्नगे सूर्ये वा भौमे वा दुर्भगाशनौ।

(झ) चन्द्रमा से सप्तम एवं अष्टम स्थान में पापग्रह हों, अथवा कन्या अमावस्या के दिन उत्पन्न हुई हो, तो पति के सुख में कमी रहती है। यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा पापग्रहों के मध्य में हो, तो भी पति सुख में कमी होती है।

7. यदि लग्न अथवा चद्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह अथवा सप्तमेश हो, तो वैधव्य दोष, सन्तानहीन सम्बन्धी एवं विपकन्या सम्बन्धी दोषों एवं विषकन्या सम्बन्धी दोषों का नाश हो जाता है।

लग्नात् विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च।
धूनस्थितो हन्ति अनपत्यदोषं वैधव्य दोषं च विषांगनाख्यम्॥

8. किसी जातिका के गुरु नवम, पंचम या केन्द्र में स्थित हो अथवा उच्चादि स्थिति में हों, तो जातिका शील से युक्त, (सुशील), साध्वी, सुपुत्र आदि सुखों से युक्त, पति को सुख देनें वाली, गुणवती और निश्चय ही दोनों कुलों का यश बढ़ाने वाली होती है।

वाचस्पतौ नवमपंचम केन्द्र संस्थे तुंगादिके भवति शीलसमन्विता च।
साध्वी सुपुत्र जननी सुखिनी गुणढयां नूनं कुल द्वययशस्कारिणी भवेत्सा॥ जा. पा.

9. यदि कुण्डली में शुभ ग्रह लग्न को देखते हों, तो स्त्री शिल्प, कला, संगीत आदि कलाओं की जानकार, शुद्ध चित्त वाली, स्त्रियोचित लज्जावान्,रमणीय मूर्ति, पुत्रवती, पति की प्रिया, धन-वाहन आदि सुखों से युक्ता, पति के प्रति समर्पित तथा शुभ लक्षणोंसे युक्त होती है।

10. यदि सप्तम भाव में शुभ राशि, शुभ ग्रहों का योग, शुभ ग्रह की दृष्टि एवं शुभ ग्रह का नवांश हो, तो उस स्त्री को आकर्षक व्यक्तित्व वाला, यश, विद्या, धन-सम्पदा आदि से युक्त, उच्चप्रतिष्ठित पति मिलता है। यदि इसका उलटा हो, अर्थात् सप्तम भाव मध्य पर अशुभ राशि, अशुभ नवांश हो, तो कुत्सित शरीर वाला, चालाक तथा साधनहीन पति मिलता है।

11. किसी स्त्री की कुण्डली के सप्तम भाव में सूर्य सिंह राशि में हो अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ही सिंह का नवांश हो, तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, कामुक परन्तु क्रोधी होता है।

12. यदि सप्तम भाव में कर्क राशि का चन्द्रमा हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी कर्क नवांश हो, तो उस जातिका का पति कामुक, सुख साधनों से युक्त परन्तु मृदु स्वभाव का होता है।

13. सप्तम भाव में मंगल मेष या वृश्चिक राशि का हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ग्रह का नवांश हो, तो ऐसी कन्या को सुन्दर, विद्वान, धनी एवं योग्य पति मिलता है।

15. यदि गुरु सप्तम भाव में धनु या मीन राशिगत हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी गुरु का नवांश हो, तो ऐसी कन्या का पति उच्च विद्या प्राप्त, प्रतिष्ठित, विद्वान एवं गुणवान् होता है।

16. यदि शुक्र वृष या तुला राशिगत सप्तम भाव में अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी शुक्र का नवांश हो,तो ऐसी कन्या का पति सुन्दर व्यक्तित्व, रोमांटिक, संगीत, गायन अभिनय आदि कलाओं का शौकीन होता है।

17. यदि शनि सप्तम भाव में मकर या कुम्भ राशिगत हो अथवा नवांश कुण्डली में सप्तम भाव से सम्बन्धित ग्रह की राशि हो, तो ऐसी कन्या का पति अधिक आयु का दिखने वाला, चिन्तनशील एवं सदा परेशानियों से घिरे रहने वाला होता है।

विवाह में विलम्ब योग–

(क) द्वितीय (कुटुम्ब) भाव तथा सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह पड़े हों, तो कन्या के विवाह में विलम्ब एवं विघ्न होते हैं।

(ख) सप्तमेश अष्टम में हो एवं अष्टमेश सप्तम में होकर दोनों में राशि परिवर्तन हो, तो भी विवाह कार्य में अनावश्यक विलम्ब होते हैं।

(ग) चन्द्रमा या राहु सप्तम भाव में हो तथा सप्तमेश ग्रह तथा गुरु का सम्बन्ध दु:स्थानों (6, 8, 12वें) में हो, तो विवाह में विलम्ब होता है।

(घ) सप्तम, अष्टम एवं द्वितीय भावों में पापग्रह पड़े हों तो तथा अष्टमेश पंचम भाव में हो, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब होते हैं।

(ङ) सप्तमेश एवं चन्द्र दोनों पापग्रह से युक्त तथा पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब अथवा कमी रहती है। देखें उदाहरण कुण्डली संख्या नं० 103। 'ज्यो. तत्त्व', फलित भाग-दो

(च) सप्तम भाव पर भौम आदि पाप ग्रह की दृष्टि हो, सप्तमेश एवं लग्नेश पर शनि की क्रूर दृष्टि हो तथा पंचम भाव भी दूषित हो, तो विवाह में विशेष विलम्ब होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका अमावस तिथि को मीन लग्न में उत्पन्न हुई है। कुण्डली में सप्तम भाव पर मंगल की अशुभ दृष्टि है तथा सप्तमेश बुध एवं सूर्य, गुरु आदि पर भी शनि की वक्री दृष्टि पड़ रही है। पंचम भाव में केतु तथा उस पर पुन: शनि की क्रूर दृष्टि और पंचमेश चन्द्र का अष्टम भाव में होना इत्यादि कारणों से 32 वर्ष की आयु तक भी कन्या का विवाह नहीं हो पाया है। इसके अतिरिक्त (क्षीण चन्द्र) अमावस तिथि में उत्पन्न कन्या के विवाह सुख में विलम्ब या विघ्न होते पाए जाते हैं।

उदाहरण कुण्डली
जन्म 17-11-1971 ई.

भाव	राशि	ग्रह
1	12	
2	1	
3	2	श. (व)
4	3	
5	4	के.
6	5	
7	6	
8	7	चं.
9	8	सू. बु. गु.
10	9	
11	10	रा.
12	11	मं.

(छ) विवाह एवं सन्तानकारक ग्रह अकेला सप्तम भाव में हो तथा उस पर मंगल, शनि आदि ग्रहों की अशुभ दृष्टि पड़ती हो, तो भी जातिका का विवाह विलम्ब से होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका जिसका जन्म 29 नवं., 1963 ई. में हुआ—का विवाह 34 वर्ष की आयु में हुआ, उस समय इसको चन्द्र मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी।

उदाहरण कुण्डली
जन्म 29-11-1963 दिल्ली

भाव	राशि	ग्रह
1	6	
2	7	
3	8	सू. बु.
4	9	मं. शु. के.
5	10	श.
6	11	
7	12	गु.
8	1	चं.
9	2	
10	3	रा.
11	4	
12	5	

सन्तान योग–

(क) स्त्री की कुण्डली में उपचय स्थान (3, 6, 10 एवं 11वें) में गोचरवश बलवान् चन्द्र व मंगल आ जावे अथवा स्वराशि या स्वनवांश में आने पर उस मास एवं उस दिन में स्त्री को गर्भ स्थिति होनी सम्भव होती है।

(ख) पंचम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो उस स्त्री को पुत्र सन्तान अधिक होती है।

(ग) पंचम भाव में चन्द्र, शुक्र या शनि हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(घ) पंचम में जितने ग्रह हों और इस स्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उतनी संख्या में सन्तान संख्या जाननी चाहिए। पुरुष ग्रहों के योग और दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों के योग और दृष्टि से कन्या सन्तति की संख्या का अनुमान करना चाहिए।

(ङ) सूर्य, गुरु, मंगल तथा पंचमेश ग्रह—ये चारों पुरुष राशि के नवांश में हों अथवा कुण्डली में पुरुष ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो पुत्रों की संख्या अधिक होती है।

(च) पंचम में स्त्री ग्रह हों अथवा पंचमेश स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, नवम में भी शुक्र हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(छ) पंचम, अष्टम या 12वें भावों में पापग्रह हों, तो सन्तान सुख में कमी होती है।

★ लग्न में चन्द्र-गुरु का योग हो तथा सातवें भाव में शनि या मंगल हो तो सन्तान अभाव का योग होता है।

★ सातवें भाव में बुध-शुक्र, चतुर्थ भाव में पाप ग्रह और पंचम भाव में अकेला गुरु हो, तो पुत्र सन्तान प्रतिबन्धक योग होता है।

★ लग्नेश, पंचमेश और नवमेश—ये तीनों ग्रह शुभग्रह से युक्त होकर 6, 8, या 12वें भाव में पड़े हों, तो विलम्ब से सन्तान होती है।

★ पंचम या पंचमेश द्वारा ग्रहीत राशि का स्वामी, पंचमेश द्वारा अधिष्ठित नवांश राशि का स्वामी अथवा गुरु स्थित राशि के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में पुत्र सन्तान प्राप्ति के योग होते हैं।

नोट—और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए विवाह एवं सन्तान सम्बन्धी हमारी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली ''सुतभाव प्रकाश'' फलित नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

विवाह एवं सन्तान सुख में बाधक अनिष्ट ग्रह और उनके उपाय—

20. (क) सूर्य पंचम या सप्तम भाव में नीच (तुला) राशि का होकर पड़ा हो, तथा नवांश कुण्डली में सूर्य शनि की राशि में होकर पाप पीड़ित हो, अथवा सूर्य अष्टम भाव में, शनि पंचम में तथा पंचमेश राहु से युक्त हो, अथवा गुरु सिंह राशि में हो, पंचम भाव में पाप ग्रह हों तथा पंचमेश सूर्य के साथ हो, तो पितृ श्राप/दोष के कारण विवाह एवं सन्तान सुख में कमी होती है।

(ख) सूर्य, गुरु एवं सप्तमेशया पंचमेश राहु, शनि, केतु आदि पाप ग्रहों से युक्त या आक्रान्त हों, तो भी पितृ दोष के कारण सन्तानाभाव या सुख में कमी होती है।

(ग) सप्तम/सप्तमेश एवं पंचमेश, पंचम या नवम भाव में चन्द्रमा राहु, शनि या मंगल आदि पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मातृ श्राप के कारण विवाह एवं सन्तान सुख में विलम्ब होता है।

(घ) निष्कर्षतः—विवाह या सन्तान बाधाकारक **सूर्य हो**, तो भगवान् शंकर और गरुड़ के क्रोध के कारण अतवा पितरों के श्राप का फल है। यदि विवाह या सन्तान में प्रतिबन्धक **चन्द्रमा** है, तो माता या किसी अन्य स्त्री के चित्त को दुख पहुंचाने के कारण या भगवती का शाप या (अनादर) विवाह या सन्तान सुख में बाधाकारक होता है—

द्रोहात् शंभु सुपर्णयो हि सुतः शापात् पितृणां रवेः,
इन्दोःमातृ सुवासिनी भगवती कोपात् मनोदोषतः।

यदि मंगल विवाह सुख बाधक हो, तो ग्राम देवता, भगवान् कार्तिकेय स्वामी की अवज्ञा करने से अथवा भाई बन्धुओं के श्राप से या गांओं के प्रति दुष्ट व्यवहार से वैवाहिक कष्ट होता है।

यदि बुध विवाह/संतति सुख में बाधक हो, तो बिल्ली को मारने, मछलियों या किसी अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने या छोटे बालक, बालिका के श्राप से या भगवान विष्णु के कोप से विवाह कष्ट होता है। यदि कुण्डली में गुरु (बृहस्पति) विवाह या सन्तान सुख में बाधाकारक हो, तो यह समझना चाहिए कि जातक ने पिछले जन्म अपने कुल गुरु या कुल पुरोहित का अपमान किया है या पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को काटा है।

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र के कारण सन्तान सुख में बाधा हो, तो उस व्यक्ति ने किसी फूलों वाले वृक्षों को कटवाया है, या गाय के प्रति कोई पाप किया है, अथवा किसी साध्वी स्त्री के श्राप से ऐसा हुआ है। ऐसी स्थिति में प्रायः यक्षिणी का श्राप समझना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में विवाह या सन्तान भाव शनि के कारण दूषित हुआ है, तो समझिए कि जातक/जातिका ने पीपल के पेड़ कटवाए हैं और यमराज, प्रेत, पिशाच पितरों आदि के श्राप से विवाह या सन्तान कष्ट हुआ है।

यदि विवाह या पंचम में राहु हो, या वह इन भावों के स्वामी को दूषित करता हो, और उसके कारण विवाह या सन्तान सुख में बाधा हो रही हो, तो सर्प के शाप का प्रभाव समझें। यदि केतु के कारण विवाह आदि सुख में कमी हो, तो उसमें हेतु ब्राह्मण का शाप समझना चाहिए। जिस ग्रह के कारण विवाह / सन्तान आदि सुख में कमी आती हो, उस ग्रह सम्बन्धी जप, दान एवं सम्बन्धित दोष का प्रतिकार करना चाहिए। जैसे सूर्य विवाह या सन्तान सुख में बाधक हो, तो अपने पित्तरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से शीघ्र प्रकाशित होने वाली "**अनिष्ट ग्रह और चमत्कारी उपाय**" नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

विवाह में विलम्ब निवारक विशेष उपाय

हमारे प्राचीन ज्योतिष आचार्यों ने मनुष्य जीवन में मिलने वाले कष्टों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकूलता लाने के लिए अनेक प्रकार के उपायों को ग्रहण करने के परामर्श दिए हैं, जैसे रत्न धारण करना, श्री भगवत् स्तुति, मन्त्र-जाप, तन्त्र, यन्त्र, शुभमुहूर्त एवं औषधि प्रयोग, व्रतोपासना, दान, हवन-यज्ञादि अनुष्ठान, औषधि स्नान इत्यादि। स्थानाभाव के कारण यहाँ पर सभी सम्भव उपायों का वर्णन करना सम्भव नहीं, तथापि कुछेक प्रयोग देंगे। अधिक जानकारी के लिए उपायों सम्बन्धी हमारी शीघ्र प्रकाशिताधीन पुस्तक का अध्ययन करें।

प्रयोग (१): श्री दुर्गा या गौरां के मन्दिर में अथवा अपने घर में किसी पवित्र स्थान पर माता की मूर्ति स्थापित करके उसके सम्मुख शुद्धासन पर बैठकर प्राणायाम, आचमन एवं पवित्रीकरण आदि के मन्त्र पढ़कर शुद्ध चित्त होकर एक माला अथवा कम-से-कम २१ बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें। पाठ करते समय पास में लाल पुष्प, देसी घी ज्योत, नारियल, प्रसाद एवं जल से भरी गड़वी पास रखनी चाहिए।

ॐ सर्व मङ्गल माङ्गल्ये सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥१॥

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र की भी एक माला का पाठ करना चाहिए। ऐसा नियमित रूप से ३१ दिन तक करें—

**मन्त्र—"हे माते ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती।
पतिं देहि गृहं देहि सुतान् देहि नमोऽस्तुते"॥ २॥**

जप का अनुक्रम बीच में ही छोड़ नहीं देना चाहिए। यदि अस्वस्थता आदि के कारण किसी दिन पाठ न कर सकें, तो आपके स्थान पर आपकी माता, बहन आदि कोई निकटस्थ बन्धु भी कर सकता है। ३१ दिन पूर्ण हो जाने पर उद्यापन के रूप में किसी ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन, मिष्ठान्न एवं दक्षिणा सहित खिलाना चाहिए। इसी बीच गौओं को मीठी चापातियाँ, कौओं एवं कुत्तों को तैल से चुपड़ कर चापातियाँ भी डालनी चाहिएं। सब कार्य श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। भगवती माँ की कृपा से विवाह/सन्तान आदि की कामना अवश्य पूरी होगी। यदि किसी कारणवश विलम्ब रहे, तो उपरोक्त उपाय की पुनरावृत्ति करनी चाहिए।

प्रयोग (२): ऊपरलिखित द्वितीय (२) मन्त्र के स्थान पर निम्नलिखित प्रचलित मन्त्रों का पाठ भी किया जा सकता है—

(क) **ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरू ते नमः॥** (भागवत)

(ख) **हे गौरि शंकर अर्धाङ्गि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरू कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥**

इसके अतिरिक्त कई अन्य विशिष्ट उपाय (लड़की या लड़के के विवाह, सन्तान सम्बन्धी विलम्ब एवं विघ्नों के निवारण हेतु) हमारी उपायों सम्बन्धी शीघ्र प्रकाशनाधीन पुस्तक मँगवाकर लाभ उठाएँ।

—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

प्राकृतिक नियमों का प्रदर्शक-वास्तुशास्त्र

ईश्वर ने मनुष्य एवं वनचर आदि प्राणियों के सुखों के लिए अपार प्राकृतिक सम्पदाएँ प्रदान की हैं। यदि मनुष्य ईश्वर-प्रदत प्राकृतिक सम्पदाओं का विवेकशील होकर प्रयोग करें, तो निश्चय ही नीरोग, सुखी एवं सम्पन्न हो सकता है। सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह तथा वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, आकाश आदि पंचमहाभूत मनुष्य को स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं जीवन शक्ति प्रदान करने के लिए परमावश्यक हैं। सूर्य समस्त सृष्टि को ऊर्जा एवं प्रकाश प्रदान करता है। सूर्य के बिना तो मनुष्य-जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश में रोगकारी तत्त्वों को नष्ट करने की विशेष क्षमता होती है। मनुष्य का शरीर भी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश नामक पाँच महाभूत तत्त्वों से बना है। शरीर में जब तक इन पाँचों तत्त्वों का सन्तुलन बना रहता है तब तक मनुष्य मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य एवं नीरोग रहता है, तथा जब शरीर में इन तत्त्वों का सन्तुलन बिगड़ जाता है, तब मनुष्य के स्वास्थ्य में भी विकार उत्पन्न होने लगते हैं और वह रुग्ण होने लगता है।

वास्तुशास्त्र प्राकृतिक तत्त्वों पर आधारित उच्चकोटि का विज्ञान है, जो मानव को पंच महाभौतिक तत्त्वों में सन्तुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है। वास्तुशास्त्र परोक्ष रूप से प्रकृति के नियमों का अनुसरण करता है। गुरुत्वाकर्षण एवं चुम्बकीय शक्ति, विद्युत्-तरंगों का प्रवाह, जल एवं वायु प्रवाह, पर्यावरण का प्रभाव, सूर्य राशियों का प्रवाह, दिशाओं का महत्त्व आदि पर भी यह शास्त्र स्पष्टत: संकेत करता है। चढ़ते हुए सूर्य की किरणें हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं, इसके पीछे पूर्व एवं ईशान को अधिक खुला रखने का नियम काम करता है, जिससे सौर ऊर्जा अधिकतम रूप से गृह और उसके स्वामी को मिल सके। वास्तुशास्त्र में भूमि, जल, अग्नि आदि पाँच महाभूतों के महत्त्व को उसके नियमों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है—

1. भूमि—भूमि का कारक मंगल ग्रह है। किसी जातक की कुण्डली में मंगल, चतुर्थेश चतुर्थ भाव एवं लग्नेश ग्रह बलान्वित हो, तो जातक को मंगल की दशा में भूमि एवं मकान का सुख अवश्य प्राप्त होता है।

भूमि की परीक्षा—ग्रहणीय भूमि की खुदाई के समय पत्थर, ईंट, ताम्र आदि धातु की प्राप्ति होना शुभ माना गया है। जिस भूमि में गड्ढा खोदने पर कोयला, भस्म, हड्डी, भूसा, कपाल, केश, दीमक- (चिंऊटी), अण्डे, जली हुई लकड़ी निकले उस भूमि पर मकान बनाकर रहने से रोग होते हैं तथा आयु का ह्रास होता है। इसके अतिरिक्त चूहों के बिल वाली, बांबी वाली, फटी हुई, ऊबड़-खाबड़ गड्ढों वाली टीलों वाली, भूमि त्याग देनी चाहिए।

गृह का आकार—चौकोर और आयताकार मकान उत्तम होता है। आयताकार मकान में चौड़ाई की दुगुनी से अधिक लम्बाई नहीं होनी चाहिये। तीन या छ: कोन वाला घर आयु का क्षयकारक है। पांच या उससे अधिक कोन वाला घर सन्तान और रोग उत्पन्न करता है। विशेष रूप से घर को किसी एक ही दिशा में आगे नहीं बढ़ाना चाहिए।

1. जल—जल की निकासी व प्रवाह के लिए उत्तर-पूर्व (North-East) की दिशा-कोण सर्वथा उपयुक्त व शुभ होता है। कुआँ, ट्यूबवैल, पम्पिंगसेट, स्विमिंगपूल, नल आदि उत्तर-पूर्व में होना चाहिए। स्नानघर का जल भी उत्तर-पूर्व में गिरना चाहिए। वर्षा के जल का प्रवाह भी उत्तर-पूर्व में होना चाहिए। विशेष रूप से यदि उपयोग में आने वाला स्वच्छ जल दिन में सूर्य की किरणों से एवं रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से प्रभावित होता है तो इस तरह के जल के उपयोग से निरोगता प्राप्त होती है।

अग्नि—हमारे प्राचीन ग्रन्थों में अग्नि को शुभ कार्यों में एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया है। प्रत्येक शुभ कार्य में हवन का प्रावधान है। अग्नि के आविष्कार उपरान्त मानव अपने भोजन को पका कर खाने लगा है। अत: मकान में अग्नि से सम्बन्धित कार्य आग्नेय कोण अर्थात् दक्षिण-पूर्व (South-East) में करना चाहिए। रसोईघर में चूल्हा, फायर-प्लेस आदि आग्नेय कोण में रखना चाहिए। मकान में विद्युत् का मेन-मीटर भी इसी कोण में लगाना चाहिए।

वायु—वायु का प्रवेश भवन में उत्तर-पूर्व (North-East) से होना चाहिये। दरवाज़े, खिड़कियाँ, रोशनदान, कूलर, ए.सी., बरामदा, बालकानी आदि हवा आने के साधन इसी दिशा में होने चाहिये।

आकाश—नैसर्गिक ऊर्जाओं का प्रभाव निर्बाध रूप से मिलने के लिए खुले आकाश का महत्त्व है। अत: मकान में खुला आंगन, लॉन व बगीचे का महत्त्व इसके अन्तर्गत आता है। आंगन या चौक के रूप में खाली जगह रखकर आकाशीय नैसर्गिक ऊर्जाओं का लाभ प्राप्त करना चाहिये।

—गृह निर्माण में वास्तु नियम—

मकान के अन्दर किस-किस स्थान का उपयोग किस-किस प्रयोजन के लिए करना चाहिए। इसका भी वास्तुशास्त्र में निर्देश है।

शयन कक्ष (Bed Room)—गृहस्वामी का शयन कक्ष दक्षिण-पश्चिम में होना चाहिए। पलंग को दक्षिणी दीवार से इस प्रकार लगा हुआ होना चाहिए ताकि शयन के समय सिरहाना दक्षिण की ओर व पैर उत्तर की ओर हो। यह श्रेष्ठ स्थिति है।

स्नानाघर (Bath Room)—स्नानघर को पूर्व दिशा में बनाना चाहिए तथा शौचालय को दक्षिण-पश्चिम में बनाना चाहिए। पूर्व में स्नानघर के साथ

वायव्य	उत्तर	ईशान
अन्न-भण्डार अतिथि गृह, पशुगृह, शौचालय, स्नानाघर	मुख्य द्वार	पूजा-स्थल
भोजन	शयनकक्ष	मुख्यद्वार
शौचालय	शयनकक्ष	रसोई
नैर्ऋत्य	दक्षिण	आग्नेय

(बाएँ: पश्चिम; दाएँ: पूर्व)

शौचालय नहीं होना चाहिए। स्नानघर के जल का बहाव उत्तर-पूर्व में होना चाहिए। गीजर लगाना हो तो दक्षिण-पूर्व कोण में लगाया जा सकता है क्योंकि यह आग्नेय कोण है। गीजर का सम्बन्ध अग्नि से है।

रसोई घर—रसोई के लिए आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) सर्वश्रेष्ठ है। अत: रसोई मकान के दक्षिण-पूर्व कोण में होनी चाहिए। रसोई में भी जो दक्षिण-पूर्व का कोना हो वहाँ गैस-सिलिण्डर या चूल्हा या स्टोव या माइक्रोवेव आदि रखा जाना चाहिए।

भोजन कक्ष—भोजन यदि रसोईघर में न किया जाये तो इसकी व्यवस्था ड्राइंग रूम में की जाती है। अत: डाइनिंग टेबल ड्राईंग रूम के दक्षिण-पूर्व में रखनी चाहिए।

बैठक (Drawing Room)—वर्तमान समय में ड्राईंगरूम का विशेष महत्त्व है। इसमें फर्नीचर दक्षिण और पश्चिम की दिशाओं में ही रखना चाहिए। उत्तर और पूर्व की तरफ खुली जगह छोड़नी चाहिए।

सामान्य कक्ष (General Room)—इसका निर्माण उत्तर-पश्चिम में कराना चाहिए।

अतिथि कक्ष—यदि अतिथि कक्ष का निर्माण किया जाए तो उत्तर-पश्चिम दिशा उपयुक्त है।

सीढ़ी (Staircase)—सीढ़ियाँ उत्तर-पूर्व को छोड़कर अन्य दिशाओं में सुविधानुसार बनाई जा सकती है।

किन्तु पश्चिम या उत्तर दिशा इसके लिए अभीष्ट है। सीढ़ियों का निर्माण विषम संख्या (Odd Numbers) में होना चाहिए एवं चढ़ते समय सीढ़ियाँ हमेशा दाईं ओर मुड़नी चाहिए।

—वास्तु दोष निवारण हेतु चमत्कारी उपाय—

(1) ईशान दिशा में पति-पत्नी को शयन करने से रोग होना अवश्यम्भावी है।

(2) सदा पूर्व या दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिये। उत्तर या पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से शरीर में रोग होते हैं तथा आयु क्षीण होती है।

(3) दिन में उत्तर की ओर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुख करके मल-मूत्र का त्याग करना चाहिये। दिन में पूर्व की ओर तथा रात्रि में पश्चिम की ओर मुख करके मल-मूत्र का त्याग करने से आधासीसी रोग होता है।

(4) दिन के दूसरे और तीसरे पहर यदि किसी वृक्ष, मन्दिर आदि की छाया मकान पर पड़े तो वृद्ध रोग उत्पन्न करती है।

(5) एक दीवार से मिले हुए दो मकान यमराज के समान गृहस्वामी का नाश करने वाले होते हैं।

(6) किसी मार्ग या गली का अन्तिम मकान कष्टदायी होता है।

(7) दीपक (बल्ब आदि) का मुख पूर्व अथवा उत्तर की ओर रहना चाहिये।

(8) रसोईघर, शौचालय तथा पूजा स्थान एक-दूसरे के पास-पास न बनायें।

(9) रसोईघर मुख्य द्वार के ठीक सामने नहीं होना चाहिये।

(10) घर में टूटे हुए दर्पण, खाट, फर्नीचर और अन्य टूटा-फूटा सामान नहीं होना चाहिए।

(11) घर का उत्तर-पूर्वी कोना घर के मुख के समान होता है। अत: उसे सदैव साफ़-सुथरा रखना चाहिए।

(12) विद्यार्थी उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अध्ययन करें।

(13) घर में अखण्ड रूप से श्री रामचरितमानस के नौ पाठ करने से वास्तुजनित दोष दूर हो जाता है।

(14) घर में नौ दिन तक अखण्ड भगवन्नाम-कीर्तन करने से वास्तुजनित दोष का निवारण हो जाता है।

(15) मुख्य द्वार पर गजलक्ष्मी की मूर्ति लगाना, मुख्य द्वार के ऊपर सिन्दूर से स्वस्तिक का चिन्ह बनायें। यह चिन्ह नौ अंगुल लम्बा तथा नौ अंगुल चौड़ा होना चाहिये। घर में जहाँ-जहाँ वास्तुदोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिन्ह बनाया जा सकता है।

(16) अमावस्या को गाय के गोबर से निर्मित कण्डे को पूर्णत: जलाकर हवन कुण्ड या किसी पात्र में रख लें। फिर घर का प्रत्येक सदस्य निम्न 8 पदार्थों के मिश्रण की 5-5 आहुतियां देवें। इस से परिवार में सुख, स्वास्थ्य एवं समृद्धि आती है। घर में ऋणायनों की वृद्धि होती है। घनात्मक परिणाम शीघ्र दिखाई लगते हैं।

सामग्री—देसी गौघृत, चावल, काले तिल, जौं, गुड़, चंदन का चूरा, देसी कपूर, गुग्गल।

विशेष ध्यान दें—आहुतियां देने से पूर्व एवं पश्चात् हाथ जोड़कर वास्तु देवता, स्तान देवता, अपने कुल देवी-देवता को प्रणाम कर कल्याण के लिए प्रार्थना करें।

(17) केला-तुलसी के साथ सभी दिशाओं में शुभ, आम का पेड़ पूर्व दिशा में, पीपल पश्चिम में तथा गुलाब का पौधा ईशान कोण में अशुभ परन्तु अन्य दिशाओं में शुभ होता है।

(18) घर में पूजा-आराधना के लिए ईशान कोण में कक्ष बनाना चाहिए। विश्वकर्मा प्रकाश में कहा गया है—''ईशान्यां देवता गेहम्॥''

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.) पड़ जाएँ, तो **कालसर्प नामक** योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है—

अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषट्के राहुकेत्वो न खेटः।
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥

कालसर्प योग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं—स्वतन्त्र **भारतवर्ष एवं पाकिस्तान की जन्म कुण्डली, पं० जवाहर लाल नेहरू**, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक **जुल्फकार भुट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुश्री लतामंगेशकर** इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेपात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का नक्षत्र भरणी है एवं इसका देवता 'काल' है। केतु का नक्षत्र अश्लेषा है एवं इसके देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएं रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग ही प्रभावित कर रहा हो। कुंडली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएं दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यतः इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्मन की शक्तियों का पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

लक्षण—इस योग के कारण जातक को स्वप्नों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवले की लड़ाई दिखे तो निश्चय ही गृह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से—(१) द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से किसी एक ज्योतिर्लिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतिर्लिंग का ध्यान करते हुए करें।

—कालसर्प दोष शान्ति के लिए उपाय—

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प-दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागवलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे—(१) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र— ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(२) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें—ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(३) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छींटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(४) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(५) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(६) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(७) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए—

अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्।
शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥
एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये।
सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(८) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(९) सोना—७ रत्ती. चाँदी—१२ रत्ती, तांबा—१६ रत्ती—ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(१०) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(११) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(१२) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(१३) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

पर्व-त्यौहारों की तारीखों में मतान्तर क्यों ?

लेखक– पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी, गणितकर्त्ता पंचाँग दिवाकर, जालन्धर

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति की महक वहाँ के लोगों द्वारा परम्परा से मनाए जाने वाले पर्व-त्यौहारों से अवश्य प्रतिभासित होती है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले अधिकांश पर्व-त्यौहारों से भारत की समृद्ध एवं गरिमामयी सभ्यता का इतिहास आज भी अभिव्यंजित होता है। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि **भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की गरिमा के प्रतीक** पर्व-त्यौहारों के सम्बन्ध में कई बार मतान्तर हो जाने से पर्व-त्यौहारों की तिथियों एवं तारीखों के बारे में भ्रान्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। फलस्वरूप, धर्म परायण लोगों के मन में कई प्रकार शकाएँ पैदा होने लगती हैं, जिससे उनकी श्रद्धा एवं आस्था को भी ठेस पहुँचती है।

अधिकांशतः लोगों को पर्व-त्यौहारों एवं छुट्टियों सम्बन्धी जानकारी अलग-अलग प्रान्तों से छपने वाले जन्त्री/पंचाँगों, समाचार-पत्र, मैगज़ीन, कैलेण्डर, डायरियाँ, तिथि-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न आदि संचार-साधनों द्वारा प्राप्त होती है। केन्द्रिय एवं प्रान्तीय सरकारों द्वारा उद्घोषित पर्व-त्यौहारों एवं सरकारी छुट्टियों की घोषणा राष्ट्रीय कैलण्डर समिति (National Calender Committee) द्वारा प्रस्तावित सूचि के अनुसार की जाती है। इनमें राष्ट्रीय स्तर के पर्व-जैसे 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्तूबर आदि छुट्टियों की तारीखों के सम्बन्ध में तो कोई मतभेद नहीं होता है, परन्तु हिन्दुओं के धार्मिक पर्व-त्यौहारों की तारीखों के सम्बन्ध में कई बार मतान्तर एवं भेद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। मेरे विचारानुसार पर्व-त्यौहारों की तारीखों में भिन्नता के कई कारण होते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

(1) देश में छपने वाली विभिन्न जन्त्री पंचाँगों की तिथ्यादि पंचाँग-गणित में अन्तर।
(2) पर्व-त्यौहारों के सम्बन्ध में कतिपय कैलण्डरों, मैगज़ीन आदि में छपने वाली अपुष्ट जानकारी।
(3) प्राचीन आचार्यों के वचनों में एकरूपता का अभाव।
(4) अक्षांश/रेखांश भेद के कारण विभिन्न प्रान्तों के स्थानीय सूर्योदय, चन्द्रोदय, अस्तादि में अन्तर।
(5) कुछ धार्मिक सम्प्रदायों में मतान्तर होना।
(6) सरकारी तन्त्र का प्रभाव।

प्रस्तुत लेख में मैं प्रथम (1) कारण का ही विशेष रूप से विवेचन करना चाहूँगा, अन्य 5 कारण तो प्रत्यक्षतः तथ्याधारित हैं॥

(1) तिथ्यादि पंचाँग-गणित में अन्तर— देश में छपने वाली विभिन्न प्रकार की पंचाँग/जंत्रियों, कैलेण्डरों/डायरियों इत्यादि में तिथ्यादि के मान में कई बार भारी अन्तर पाया जाता है। विशेषकर अप्रमाणिक एवं अस्तरीय पंचाँग-गणित को आधार मानकर छपने वाली जन्त्रियों, पंचाँगों, डायरियों अथवा कैलण्डरों में तिथि/नक्षत्रों एवं पर्व-त्यौहारों सम्बन्धी तिथियों में भारी विसंगतियां एवं अशुद्धियाँ पाई जाती हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारतवर्ष में आजकल प्रतिवर्ष लगभग 150 पंचाँग जंत्री छप रहे हैं। तिथि-कैलण्डरों की संख्या तो इससे भी अधिक ही होगी। इनमें अधिकांश आधुनिक पंचाँगकर्त्ता चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित निरयण पंचाँग को गणना अनुसार पंचाँग गणित करते हैं। यह गणित शास्त्र अनुमोदित होने के साथ-साथ प्रत्यक्षतः दृश्य होने से विज्ञान सम्मत भी है। **आधुनिक सूक्ष्म संस्कारों पर आधारित कम्प्यूटर प्रक्रिया (Computer Programming) द्वारा तैयार किए जाने वाले पंचाँगों के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह के राशि संचार, भोगांश, सूर्य-चन्द्रोदयास्तादि तथा कम्प्यूटरीकृत विस्तृत जन्मपत्री की रचना भी भारतीय दृग्गणित पद्धति द्वारा ही की जाती है।**

परन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि हमारे देश के कतिपय पंचाँगकार तथा रामायण, महाभारत कल्याण आदि उच्चकोटि के धार्मिक साहित्य एवं पुराण, उपनिषद् आदि वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशक (गीता प्रैस, गोरखपुर) भी प्राचीनता के मोहवश अवैज्ञानिक एवं अशुद्ध पंचाँगगणित का ही आश्रय ले रहे हैं। उनके इस कृत्य से पर्व त्यौहारों की तारीखों में प्रतिवर्ष कहीं न कहीं भेद उत्पन्न हो जाता है जिससे सामान्य लोगों में भ्रान्तियाँ पैदा होती हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य— आज से लगभग नब्बे (90) वर्ष पूर्व भारतवर्ष में अधिकांश पंचाँगकर्त्ता पौराणिक सिद्धान्त ग्रन्थों (सूर्य सिद्धान्त, आर्य-सिद्धान्त, मकरन्द सा. ब्रह्म सिद्धान्त शिरोमणि, ग्रह-लाघव आदि) में प्रतिपादित सूत्रों के अनुसार तिथ्यादि पंचाँग-गणित का कष्ट-साध्य कार्य करते थे। विभिन्न स्थानीय पंचाँगों के तिथ्यादि-मान में भी अन्तर रहते थे। परन्तु 19वीं शताब्दी में नाभकीय विज्ञान (Spherical Science) एवं गणितीय क्षेत्रों में उत्तरोतर उन्नति के साथ-साथ सूर्यादि ग्रहों की गत्यादि के सम्बन्ध में भी अनेक संशोधनात्मक प्रयास हुए हैं। **उदाहरणस्वरूप** सूर्य सिद्धान्त द्वारा प्रतिपादित वर्षमान तथा आधुनिक वेधसिद्ध अनुसन्धान द्वारा प्रमाणित वर्षमान में 8 पल एवं 37 विपलों, अर्थात् लगभग साढ़े तीन मिंट, 3-1/2 मिनटों का अन्तर प्रतिवर्ष रहता है, जिस कारण प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष प्रवेश सारिणी तथा आधुनिक वेध सिद्ध सूक्ष्म सारिणी द्वारा वर्ष लग्नों में अन्तर आ जाना स्वाभाविक ही है। आधुनिक कम्पयूटरों द्वारा निर्मित वर्ष कुण्डलियाँ भी नवीन वेध सिद्ध संशोधित सिद्धान्त की परिपुष्टि करती हैं।

मानवकृत ज्ञान-प्रशाखा के प्रत्येक क्षेत्र में युग एवं परिस्थितियों के अनुसार सुधार एवं यथोचित संस्कारों की सम्भावना रहती है। गणित ज्योतिष के क्षेत्र में भी समय के भेद एवं काल-गति के भेद से ग्रहों के गणित में थोड़ा-थोड़ा अन्तर पड़ता जाता है। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर **पाश्चात्य एवं भारतीय वैज्ञानिकों ने आधुनिक कम्प्यूटरीकृत यन्त्रों की सहायता से अन्तरिक्ष एवं ग्रह विज्ञान के क्षेत्रों में जो आश्चर्यजनक प्रगति की है, उसका लाभ पंचाँग-गणित को भी मिला है।** इस सम्बन्ध में भारतीय गणिताचार्य एवं विद्वानों ने भी पंचाँग-गणित की प्रक्रिया में वेध-सिद्ध दृक्-तुल्य संस्कार (संशोधन) करके भारतीय पंचाँग पद्धति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया है। इनमें पं. सुधाकर द्विवेदी, पं. बापूदेव शास्त्री, लोक मान्य तिलक, पं. वैंकटेश केतरकर, पं. केरोपन्त आदि विद्वानों के नाम विशेषतौर पर उल्लेखनीय हैं। उनके मतानुसार भी सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों के संचार, तिथि, नक्षत्र आदि भोग्य काल दृक् तुल्य होना ही श्रेष्ठ और शास्त्र सम्मत हैं। इस सम्बन्ध में शास्त्र प्रमाण की उद्धृत किए जाते हैं, जैसे—

तेभ्यः स्याद् ग्रहणादि दृक्समिमं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मंगल-धर्म निर्णया विधावेषा यतो दृक् समा॥ (ति.चि.) अन्येऽपि—
यास्मिन् पक्षे येन काले दृश्यते गणितैक्यकम्। तेन पक्षेण ते कार्या ग्रहास्तत् समयोद्भवाः॥

(ब्रह्म सि.) सिद्धान्त शिरोमणि, वराहः नारद-विष्णु आदि पुराणों में भी सूर्य, चन्द्रमा को दृक्तुल्य स्पष्ट करके दृक् तिथियों द्वारा ही धार्मिक मुहूर्तों एवं पर्व-त्योहारों का निर्णय करना शास्त्र-सम्मत माना गया है।

आज के वैज्ञानिक युग में पंचाँग-गणित में तिथि, नक्षत्रों एवं सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों की संचार गति के **सम्बन्ध में घण्टों एवं दिनों का अन्तर पड़ना अत्यन्त आश्चर्य की बात है तथा एक नैतिक अपराध भी कहा जा सकता है।** सूर्य-चन्द्रमा के 12 अंशात्मक पूर्वापर अन्तर को ही एक तिथि का मान कहते हैं। पूर्णिमा, प्रतिपदा......चतुर्थी आदि तिथियों के अंशात्मक अन्तर को आधुनिक वेध-सिद्ध यन्त्रों द्वारा घण्टा-मिनटात्मक सूक्ष्म रूप से प्रमाणित किया जा सकता है। इसी कारण सूक्ष्म दृक् गणित द्वारा निर्मित भारत की किसी भी मानक (Standard) पंचाँग में दिए गए पूर्णिमा आदि तिथि के मान, भा. स्टैं. टा. में विश्व के किसी भी देश के स्टैण्डर्ड अन्तर का संस्कार करके तिथि का स्टैण्डर्ड मान अभीष्ट देश के समय में जान सकते हैं। **उदाहरण-स्वरूप** पंचाँग दिवाकर (2061) के पंचाँग में 26 नवंबर, 2004 को पूर्णिमा समा. के घण्टा-मिनट, 25-38 में से यदि 5 घं. 30 मिं. (स्टैण्डर्ड अन्तर) घटा देवें, तो हमें **इंग्लैण्ड के स्टैं. टा.** में 20 घं. 08 मिं. पर पूर्णिमा समाप्ति टाईम प्राप्त होगा। ऐसे हमने Raphael's की Astronomical Ephemeri's 2004 से बहुत सी तिथियों का मिलान करके देखा है। ध्यान रहे यह ऐफिमेरिस Greenwich Observatory के दृक् तुल्य सिद्धान्तों के अनुसार निर्मित होती है। लिखने का तात्पर्य है कि जो पंचाँग-गणित विश्वस्तरीय ग्रहण की जाती है। जिस दृक् तुल्य सूक्ष्मगणित को **भारत सरकार के तत्त्वावधान में 13 भाषाओं में छपने वाली राष्ट्रीय पंचाँग** ने मान्यता दी है। N.C. Lahri (Calcutta), बम्बई (महाराष्ट्र), मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश (वाराणसी), राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि से छपने वाली अनेक मूर्धन्य एवं पंचाँगकारों ने भी जिस दृक्तुल्य पंचाँगगणित को श्रेष्ठ, प्रामाणिक एवं शास्त्रसम्मत स्वीकारा है। इन सभी तथ्यों की अनदेखी करते हुए अब भी कुछ पण्डित महोदय अप्रत्यक्ष एवं स्थूलगणित को आर्षगणित बतलाकर मकरन्द, करणकुतूहल, सूर्य सिद्धान्त, ग्रहलाघव आदि के सूत्रों के आधार पर अज्ञानतावश प्राचीन एवं त्रुटिपूर्ण पंचाँग-गणित से तिथियों एवं पर्व-त्यौहारों का प्रणयन कर रहे हैं। इससे धर्म-परायण लोग भ्रमित एवं गुमराह होते हैं। राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश (वाराणसी, दिल्ली, गोरखपुर आदि) में छपने वाले कतिपय पंचाँग अभी भी प्राचीन एवं त्रुटिपूर्ण पंचाँग-गणित का अनुसरण कर रहे हैं। जैसे कि हमारे सभी सुविज्ञ पाठक जानते ही हैं कि भारतवर्ष के अधिकांश पर्व-त्यौहार चान्द्र-तिथियों एवं नक्षत्रों पर ही आधारित होते हैं। अतएवं जन्त्री / पंचाँगों, कलैण्डरों इत्यादि में वर्णित यदि तिथि, नक्षत्रों की गणित में अन्तर होगा, तो हमारे पर्व-त्यौहारों की तारीखों में भी अन्तर पड़ना स्वाभाविक है।

उदाहरणस्वरूप **गीता प्रैस** गोरखपुर से छपने वाली धार्मिक पत्रिका **''कल्याण''** जिसमें अनेक वर्षों से पर्व-त्यौहारों सम्बन्धी स्थूल एवं त्रुटिपूर्ण पंचाँग-गणित ग्रहण करने से बहुत बार पर्व-त्यौहारों में अन्तर पड़ जाता है। उदाहरणतया सन् 2003 ई० में उनकी पत्रिका एवं दैनन्दिनी डायरी में अन्य बहुत-सी अशुद्ध तिथियों के अतिरिक्त करवा चौथ और आश्विन शुक्ल नवरात्रारम्भ की तारीखों में भी एक दिन का विशेष अन्तर पाया गया था। सन् 2004 ई. में भी **शारदीय नवरात्रारम्भ 14 अक्तूबर, 04,** गुरूवार की बजाए **15 अक्तूबर,** शुक्रवार को दर्शाया गया है। इसका मुख्य कारण है तिथि सम्बन्धी अशुद्ध गणित का प्रणयन।

उदाहरणस्वरूप—प्रस्तुत मासिक 'कल्याण' पत्रिका में तिथि / नक्षत्रों के मान में अनेक स्थलों पर भारत की किसी मानक (Standard) पंचाँग से 2 से 5 घण्टों का अन्तर भी पाया जाता है। जैसे 8 अक्तूबर, 2004 ई. को दशमी तिथि किसी भी मानक पंचाँग में 8.50 घं० मिं० तक विद्यमान है, परन्तु 'कल्याण' के व्रतोत्सव पर्व के पृष्ठ ८७१ पर यह तिथि ६/४१ घं० मिं० तक है। इस प्रकार 2 घण्टे, 9 मिनट का अन्तर है। इसी भान्ति ८ नवंबर को सभी मानक पंचाँगों (पंचाँग दिवाकर, राष्ट्रीय 23.43 पंचाँग आदि) में रमा एका० अर्धरात्रि 26.43 घं० मिं० तक है जबकि 'कल्याण' में रात्रि 23.43 (११.३४) तक होने से दोनों का अन्तर ३ घण्टे, 9 मिनट का अन्तर हुआ। इसी भान्ति नक्षत्रों के मान में भी भारी अन्तर परिलक्षित होता है। जैसे १५ नवंबर, ०४ को **मूला नक्षत्र** के मान में ४ घण्टे, २१ मिनट का, १६ नवं. ०४ को पूषा में **४ घण्टे, ५४** मिं० का, १७ नवं. ०४ को **उषा. में** किसी भी मानक पंचाँग की **५ घण्टे, ९ मिं०** का अन्तर पड़ गया है।

१६ अक्तूबर, २००४ को पड़ने वाली तुला **संक्रान्ति में तो १३ घण्टे, २१ मिनट** का अन्तर पड़ा हुआ है। निरयण तुला संक्रान्ति राष्ट्रीय पंचाँग सहित सभी मानक पंचाँगों ने १६ अक्तूबर को 28 घं०, 34 मिं० तक विद्यमान है, जबकि 'कल्याण' पत्रिका में 17 अक्तूबर को सायं 17 घं० 55 मिं० तक दर्शाई गई है।

ध्यान रहे, तिथि, नक्षत्रों के मान में 5-5 घण्टों के अन्तर होने से एकादशी पूर्णिमा, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, प्रदोष व्रत संक्रान्ति पुण्य आदि की तारीखों में अन्तर तो होता है, साथ में ज्योतिष-शास्त्रीय अन्य महत्त्वपूर्ण अंगों में भी अन्तर हो जाता है। जैसे गण्डमूल नक्षत्र, दशा अन्तर दशाओं में अन्तर, जन्मकुण्डली में ग्रहों का अन्तर, पंचक, भद्रा व्याप्ति अव्याप्ति आदि सभी विषयों में अन्तर आ जाने से धर्म से सम्बद्ध ज्योतिष विद्या भी झूठ और हास्यास्पद लगने लगती है। इस सम्बन्ध में एकजुट होकर सभी सम्प्रदाय समूहों को महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने की आवश्यकता है। पर्व-त्यौहारों के सम्बन्ध में ऐसे ही अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं, जिनमें तिथि, नक्षत्र सम्बन्धी **त्रुटिपूर्ण पंचाँग गणित** के कारण पर्व-त्यौहारों की तिथियों (तारीखों) में भिन्नता एवं मतान्तर पड़ रहा है।

इस धार्मिक संस्थान के सम्बन्ध में हमारे एवं अन्य धार्मिक जनता के मन में विशेष श्रद्धा भाव है, अतएव उनसे अनुरोध है कि वह अशुद्ध, त्रुटिपूर्ण एवं अशास्त्रीय गणित का आश्रय न लें॥ पर्व-त्यौहारों की तारीखों के बारे में मतभेद, लोगों की धर्म-सम्बन्धी खण्डित धारणाओं को प्रकट करता है, दूसरे राष्ट्रीय एकता की भावना को भी ठेस पहुँचती है। इसी भान्ति कई बार सरकारी क्षेत्र द्वारा भी किसी सम्प्रदाय विशेष से प्रभावित होकर किसी पर्व त्यौहार सम्बन्धी छुट्टी कर देने से सामान्य लोग भ्रमित होते हैं॥ उदाहरणस्वरूप **श्री कृष्णाजन्माष्टमी के व्रत, जप** आदि के निमित्त अधिकांश शास्त्रकारों ने अर्द्धरात्रि व्यापिनी भाद्र कृष्ण अष्टमी तिथि, रोहिणी ग्राह्य माना है, परन्तु भारत सरकार प्रायः प्रभाववश उदयकालिक अष्टमी की ही उद्घोषणा करती है। इस प्रकार धर्म पारायण लोग संशय में पड़ जाते हैं। अतएव धार्मिक संस्थाओं से अनुरोध है कि वह उपरोक्त भ्रममूलक परिस्थितियों का निराकरण करने के प्रयास करें जिससे धार्मिक लोगों की पर्व-त्यौहारों की तिथियों के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न न हो॥

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रह अनुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मुत्थरां	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज़	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खश	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मैनशिला	खश	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	तिलपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	इत्यादि	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	—	—
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल				

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वंम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्जयायेन्द्राय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से)—"ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहिवमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्धस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजामानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पतये अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) **ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः** ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) **ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥**

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्‌भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृह राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	वृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पश्चि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरुष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरुष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५,७,९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	वृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शुद्र	धूम्र	वृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
वृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी—स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विशेष विवरण

ज्योतिष शास्त्र में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। यथा सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप, यथासामर्थ्य दान, हवन, जड़ी-बूटी धारण, ग्रह औषधि स्नान, व्रत-जप-तप करना, उचित नग एवं विधिपूर्वक ग्रह यन्त्र को धारण करना इत्यादि शास्त्रोक्त उपायों को अपना करके मनुष्य ग्रह जनित कष्टों का समाधान करके प्रतिकूल परिस्थितियों को भी स्वयं के अनुकूल एवं समृद्ध बना सकते हैं।

सूर्य—क्रूर ग्रह से दृष्ट, युक्त अथवा नीच राशिस्थ (तुला) हो या १, २, ४, ५, ७, ८, ९ या १२वें भावस्थ सूर्य अशुभ माना जाता है। जन्म कुण्डली अथवा वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभकारी हो, तो निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ७ हज़ार से लेकर सवा लाख की संख्या में जाप करना चाहिए। जप का आरम्भ **शुक्ल पक्षीय रविवार** या सूर्य षष्ठी अथवा रवि योग या रविपुष्य योग में करना चाहिए। पाठारम्भ करने से पूर्व लाल पुष्प, अक्षत, नैवेद्य व गंगाजल लेकर पाठ का संकल्प, ध्यान व आवाहनादि करें। जप-पाठ के लिए रूद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। उसके अभाव में चन्दन या तुलसी की माला का प्रयोग भी कर सकते हैं। विधिपूर्वक सूर्य उपासना से पदोन्नति, आत्मशक्ति, तेज बल, राजप्रतिष्ठा एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। प्रतिदिन पाठोपरान्त सूर्य देव को ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन (या पुष्प) डालकर अर्घ्य देना चाहिए तदुपरान्त गायत्री मन्त्र करने का विधान है। सुनिश्चित संख्या में पाठ (जप) की पूर्ति हो जाने पर दशमांश संख्या में हवन कर लेना चाहिए।

पुराणोक्त सूर्य नमस्कार मन्त्र—

जपाकुसुम संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

वेदोक्त सूर्यमन्त्र—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (जप संख्या ७०००)

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (जप संख्या ७०००)

सूर्यार्घ्य मन्त्र—

एहि सूर्य ! सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय ! मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

सूर्यार्घ्य का लघु मन्त्र—"ॐ घृणिः सूर्याय नमः"॥

सूर्य गायत्री मन्त्र जाप, विधिपूर्वक **रविवार का व्रत, सूर्यमणि (मणिक्य)** धारण करना **औषधि स्नान** (मनः शिला, इलायची छोटी, देव दारू, केशर, खस, कनेरादि लाल पुष्प, तथा विधिवत् निर्मित **सूर्ययन्त्र** धारण करना तथा सूर्य देव से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

सूर्य दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, गुड़, लाल वस्त्र, घी, लाल वर्ण, सवत्सा गाय, माणक, ताम्र बर्तन नारियल सहित लाल फल, ब्राह्मण भोजन एवं च सुनिश्चित पाठोपरान्त दशमांश हवन करना शुभ रहता है।

चन्द्रमा—शत्रु एवं क्रूर ग्रह से दृष्ट युत एवं नीच राशि (वृश्चिक), अथवा ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

अशुभ चन्द्र की शान्ति के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र की ११ हज़ार की संख्या में जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना शुभ रहता है। जप का आरम्भ पूर्णमाशी या शुक्ल पक्ष के सोमवार को किसी शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मन्त्र—ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

पुराणोक्त चन्द्र मन्त्र—ह्रीं दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥

चन्द्र अर्घ्य मन्त्र—ॐ सोम् सोमाय नमः॥

चन्द्रमा अशुभ हो, तो मानसिक विकार, नेत्र कष्ट, धन हानि, रक्त दोष, स्त्री कष्ट आदि अशुभ फल घटित होते हैं। चन्द्रमा की शुभता के लिए उपरोक्त मन्त्र-जाप के अतिरिक्त चांदी की अँगूठी में चन्द्रकान्त मणि या श्वेत सुच्चा मोती धारण करना, विधिवत, सोमवार एवं पूर्णमाशी का व्रत करना, चन्द्र मन्त्र मुद्रित करवा कर चाँदी का गोल सिक्का (Coin) गले में धारण करना, घर में श्वेत शंख रखना, औषधि एवं जड़ी-बूटी (पंचगण्य, श्वेत चन्दन आदि), विधिपूर्वक चन्द्र यन्त्र धारण करना, शिवोपासना करना कल्याणकारी रहता है। **चन्द्र शुभता बढ़ाने** के लिए दान योग्य पदार्थ चावल, सफेद चन्दन, शंख कर्पूर, दही, दूध घी, चीनी या मिश्री, क्षीर, श्वेत वस्त्र, सफेद चन्दन, चाँदी या कांसे का पात्र, चाँदी के वर्क लगी बर्फी। **बलान्वित चन्द्रमा** मन, बुद्धि, रक्त, स्त्री एवं माता, धन-सम्पदादि सुखों में वृद्धिकारक होता है।

मंगल ग्रह—१, २, ४, ५, ७, ८, ९, एवं १२वें भावों में स्थित मंगल अथवा शनि आदि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त, या अपनी नीचराशि (कर्क) अशुभ कारक होता है। **जन्म कुण्डली** या वर्ष कुण्डली में मंगल अशुभ एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १० हज़ार की संख्या में, शुभ मुहूर्त्त, मंगलवार को लाल पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत (चावल), गंगाजल लेकर संकल्प पूर्वक पाठारम्भ करें। सुनिश्चित संख्या में पाठोपरान्त पाठ का दशमांश संख्या में हवन करना चाहिए।

तन्त्रोक्त भौम मन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

पुराणोक्त भौम मन्त्र—ह्रीं धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रभम्।
कुमारं-शक्तिं हस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्॥

भौम गायन्त्री मन्त्र—ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्

उपरोक्त मन्त्र जाप के अतिरिक्त अनिष्टकर मंगल की शान्ति के लिए मंगलवार का व्रत रखना, श्री हनुमान उपासना, मंगल स्तोत्र पढ़ना, लाल वर्ण की गाय को चारा डालना, मूँगा पहनना, औषधि स्नान, मांस, मछली, शराब आदि से परहेज़ रखना, विधिपूर्वक बना भौम यन्त्र धारण करना, उद्यापन के दिन ब्राह्मण भोजन कराना शुभ होता है।

भौमशान्ति हेतु दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, मसर की दाल, घी, गुड़, सुवर्ण, कनेर के पुष्प, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, केशर, नारियल, सेब आदि लाल फल, मूंगा, सोना, ताम्र बर्तन, गुड़ से बने मीठे चावल या मीठी चापातियां, ब्राह्मण भोजन आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है। मंगल ग्रह पराक्रम, साहस, भूमि, भाई, पुत्र, रक्त-बलादि का भी कारक है। यदि अशुभ हो तो रक्त दोष, भ्रातृ कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना, वृथा विवाद करवाता है।

बुध ग्रह—कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त बुध अशुभ फलदायक होता है। बुध शुभ हो, तो वाणी, बुद्धि, विद्या, संतान, व्यापार आदि में लाभकारक होता है। अशुभ बुध बुद्धि में विभ्रम, त्वचा रोग, वाणी विकार, सन्तान कष्ट रहता है। बुध की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिएँ।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (जप संख्या ९०००)

पुराणोक्त बुध मन्त्र—ह्रीं प्रियंगु कालिका श्यास रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुध प्रणमाम्यहम्॥

उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम ९००० की संख्या में जाप करना, बुधवार का विधिपूर्वक व्रत रखना, औषधि स्नान, हरे रंग का नग-पन्ना (Emareld) सोने की अंगूठी में धारण करना, विधिवत् तैयार किया गया बुध यन्त्र रखना, हरी वस्तुओं का प्रयोग करना, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा श्री विष्णु उपासना करना, चौपायों को हरा चारा डालना, बुध को कन्या पूजन के उपरान्त हरी वस्तुओं (वस्त्रादि) का दान करना इत्यादि बुध ग्रह जनित अशुभ फल को शान्त करता है।

बुध के दान की वस्तुएँ—मूंगी साबुत, चीनी, छोटी इलायचियाँ, षडरसों से युक्त भोजन, हरी सब्ज़ियां, पन्ना नग, कांस्य पात्र, हरे पुष्प, हरे फल, हाथी दाँत, हरा गर्म अथवा रेशमी वस्त्र, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित दान करना कल्याणप्रद रहता है।

गुरू (बृहस्पति)—कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में ही स्थित हो, अथवा नीच राशिगत (मकर) हो, या शत्रु या अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त ग्रह जातक को अशुभ प्रभाव प्रदान करता है। अशुभ गुरू जातक को विद्या में असफलता अथवा विवाह सुख में अड़चनें, पुत्र-सन्तान एवं स्त्री कष्ट, भ्रातृ विरोध, शरीर कष्ट, बुद्धि में विकार आदि अशुभ फल प्रकट करता है।

गुरु में शुभता लाने के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ११,००० की संख्या में पाठ करना अथवा किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना तथा पाठोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी रहेगा।

तन्त्रोक्त गुरू मन्त्र—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरवे नमः (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरू मंत्र गत पृष्ठों (गुरू गोचर फल) में देखें।

गुरु गायत्री मन्त्र—ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥

संकल्पपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त गुरू सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सुवर्ण या चांदी की अँगूठी में पुखराज पहनना, विधिवत् निर्मित **गुरू यन्त्र** धारण, औषधि स्नान करना, **गुरूवार** का व्रत रखना, पीली वस्तुओं का प्रयोग, पीले वर्ण की गौओं की सेवा करना व गाय दान, पीपल वृक्ष की प्रतिष्ठा, ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन खिलाना, दक्षिणा एवं धार्मिक ग्रन्थों का दान, गायत्री जप इत्यादि करना शुभ है।

गुरू की दान योग्य वस्तुएँ—पीले चावल, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला वस्त्र, पपीता, आम, केले आदि पीले फल, सवत्सा गाय, पीला कम्बल, धर्म ग्रन्थ, बेसन के लड्डू, ताम्र एवं कांस्य पात्र, शक्कर, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथ केशर इत्यादि वस्तुओं का दान शुभ रहता है।

शुक्र ग्रह—जन्म कुण्डली में शुक्र ६, ८ या १२वें भाव में अथवा नीच राशि (कन्या) या शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल प्रदायक होता है।

शुक्र ग्रह स्त्री, धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, वीर्य-भोग एवं वाहनादि सुख-साधनों का कारक माना जाता है। इस ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १६००० की संख्या में जप करना तथा फिर दशांश हवन करना शुभ कारक माना जाता है।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

शुक्र गायत्री मन्त्र—ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप के अतिरिक्त शुक्र सम्बन्धी वस्तुओं का दान तथा स्वयं प्रयोग, हीरा (Diamond) पहनना, शुक्र यन्त्र धारण करना, शुक्र-औषधि स्नान, गोदान, श्वेत एवं क्रीमवर्ण की वस्तुओं का प्रयोग, श्वेत चन्दन का तिलक, **श्री दुर्गा पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती** का पाठ करना तथा पाँच शुक्रवार पाँच कन्याओं का पूजन करके उन्हें श्वेत वस्तुओं की भेंट देने से ग्रह शान्ति होती है।

शुक्र दान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, मिश्री, दूध एवं दूध से निर्मित क्षीर, बर्फी आदि, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थों आदि का दान करने से शुक्र की शुभता में वृद्धि होती है।

शनि ग्रह—किसी जातक की जन्म कुण्डली में जब शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० अथवा १२वें स्थानों में हो, अथवा शत्रु या नीच (मेष) राशिगत हो अथवा सूर्य, मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो शनि अशुभ फलदायक होता है। अशुभ एवं अरिष्टकर शनि धन एवं आय के साधनों में कमी, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में बार-बार अड़चनें पैदा होती रहती है। शनि कृत अरिष्ट निवारण हेतु निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का २३ हज़ार जप तथा जप उपरान्त दशांश संख्या में हवन करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः (जप संख्या २३०००)

वेदोक्त शनि मन्त्र—ॐ शंन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभिरस्त्र वन्तु नः॥

विनियोगः—अस्य मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः,

गायत्री छन्दः शनि देवता-शनि प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

पुराणोक्त शनि मन्त्र—ह्रीं नीलांजन समा भासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

विधिपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त शनि सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सिक्के अथवा पंचधातु की अंगूठी में नीलम धारण करना, शनिवार का व्रत रखना, विधिवत् निर्मित शनि यन्त्र रखना, लोहे की कटोरी में तेल डालकर छाया पात्र करना, औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ठाश्रम में अनाज (उड़द सहित) भोजन खिलाना, मछलियों को गेहूँ एवं उड़द के आटे की गोलियां डालना, शिव स्तोत्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ एवं शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

शनि के दान योग्य वस्तुएँ—उड़द, काले तिल, काले चने, सरसों का तेल, काली गाय, काला वस्त्र, लोहे का बर्तन, काले जूते, भैंस, कुलथी, कस्तूरी, नीलम, नारियल, काले एवं नीले पुष्प, ग़रीब वृद्ध व्यक्ति को भोजन कराना शुभ होता है। शनि का दान सायंकाल को करना प्रशस्त माना जाता है।

राहु—जिस कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० या १२वें भाव में स्थित हो अथवा शत्रु या नीच राशि में या शत्रु ग्रह युक्त, दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शरीर कष्ट, तनाव, धन सम्बन्धी उलझनें, बुद्धि विभ्रम, कलह-क्लेश, वृथा भ्रमण आदि परेशानियों का सामना करना पड़ता है। राहु जनित अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १८ हज़ार की संख्या में जाप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त राहु मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

राहुगायत्री मन्त्र—ॐ शिरो रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त राहु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, शनिवार का व्रत, विधिपूर्वक निर्मित राहु यन्त्र धारण करना, राहु औषधि स्नान, गोमेद नग पहनना, शिव स्तोत्र एवं राहु स्तोत्र का पाठ करना, चलते पानी में नारियल बहाना, श्री दुर्गा पूजा करना, अपाहज एवं कुष्टाश्रम में अनाज, फल, आदि।

राहु दान योग्य वस्तुएँ—सप्तधान्य (सतनाजा), गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तैल, काले पुष्प, नीला वस्त्र, उड़द, खडग (चाकू इत्यादि), कम्बल, बिल पत्र, मौसमी फल कस्तूरी आदि। राहु का दान रात्रि कालीन करना प्रशास्त माना जाता है।

केतु—कुण्डली में १. २, ४, ५, ७, ८, एवं १२वें भाव में हो, अथवा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या नीच राशिगत हो तो जातक / जातिका को शरीर कष्ट, आपसी कलह, व्यवसाय में हानि, घरेलू उलझनों आदि का सामना रहता है। केतु कृत अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १७ हज़ार की संख्या में जाप करना लाभदायक रहता है—

तन्त्रोक्त केतु मन्त्र—ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

केतु गायत्री मन्त्र—ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त केतु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, दुर्गा व गणेश जी की उपासना, कुत्तों को दूध-चपाती डालना, गर्म वस्त्र (कम्बलादि) का दान, केतु औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ट आश्रम में अनाज, दवाईयों, वस्त्रादि का दान, पक्षियों को सतनाजा डालना तथा केतु यंत्र धारण करना कल्याणकारी रहता है।

केतु-दान योग्य, वस्तुएं—लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसे) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह, चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित। केतु का दान रात्रिकालीन प्रशस्त माना जाता है।

नोट—अधिक जानकारी के लिए हमारी '**शिवमन्त्रावली**' पुस्तक का अध्ययन करें।

व्यापारिक वस्तुओं में मन्दा-तेजी का दैनिक विवरण-सन् 2005 ई०

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक निर्देश–व्यापारिक वस्तुओं के उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक उतार-चढ़ाव व तेजी-मन्दी की विशेष लाईनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। ध्यान रहे, हाजर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्मकुण्डली/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन हानि करवा सकती है।

गत संवत् 2061 में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रह स्थिति एवं तेजी-मन्दी के चांसों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, तेल, लोहे, स्टील के अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। ज्योतिष एवं आर्थिक दृष्टि से किसी विशेष जिन्स की स्पैशल दैनिक रिपोर्ट मंगवाने के लिए प्रति जिन्स की मासिक रिपोर्ट 450 रु., 2 महीने की 850 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम भेजें।

—पं. विवेक शर्मा, एम. ए. एल. एल. बी., अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। फोन—2457959 (O)

जनवरी–1 जन. को यूरेनस शतभिषा के द्वितीय चरण में आएगा। तिल, तेल, सोयाबीन, मैंथायल में तेजी बनेगी। 4 जन. को शुक्र धनु राशि में सूर्य के साथ योग करेगा। शेयरों विशेषकर साफ्टवेयर के शेयरों में, सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातु, सूत, रेशमी व ऊनी धागों में तेजी बनेगी। चीनी, सूत, कपास या चाँदी में यद्यपि प्रारम्भ में मन्दी बनेगी परन्तु ता. 5 को बुध भी धनु राशि में सूर्य, शुक्र के साथ योग करके लगभग सभी धातुओं एवं जिन्सों में तेजी को बढ़ावा देगा। अतएव इस आने वाली तेजी के लिए पहले स्टॉक कर रखें।

10 जन. को यद्यपि सोमवती अमावस रूई, चाँदी में थोड़ी मन्दीकारक रहेगी। परन्तु मंगल ज्येष्ठा तथा सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आने से सरसों, उड़द, मूँग, चावल, चने, गेहूँ, गुड़, चीनी, लाल शक्कर, कपास, तेल में तेजी बनेगी। चाँदी, सूत, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बन जाएगी।

11 जन. को मकरस्थ चन्द्र के समय मंगलवार को चन्द्रदर्शन होगा। गुड़, सरसों, मूँगफली, अलसी, अरण्डी, घी, शेयरों में तेजी रहेगी। जबकि रूई, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

13 जन. को सूर्य मकर राशि में नैपच्यून के साथ योग करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी है। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, चीनी, रूई में तेजी रहे। गेहूँ आदि अनाज, बारदाना में मन्दी रहे। इसी दिन शनि वक्री अवस्था में मिथुन राशि में प्रवेश कर रहा है। अलसी, एरण्ड, खाद्य-तेलों, सूत, रूई, मूँगफली, शेयरों में विशेष तेजी बनेगी। सोने-चाँदी में भी काफी घटाबढ़ी होगी।

15 जन. को बुध एवं शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आने से मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, सोना, चाँदी में मन्दी बनेगी। खल, बिनौले में तेजी बने। 21 जन. को राहु अश्वि. (1) तथा केतु चित्रा (3) में आने से गुड़, लाख, कांसी, सरसों, सोने, ताँबे, लोहे में तेजी, रूई में मन्दी बने। 23 जन. को सूर्य श्रवण में आने से गेहूँ, जौं, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चाँदी, गुड़, चीनी, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल में तेजी बने। 24 जन. को बुध उ.षा. में जाने तथा 25 को पूर्व में अस्त होने से रूई में घटाबढ़ी, सोना पहले कुछ मन्दा फिर तेज, दालों, चने, तेल, सोयाबीन में भी घटाबढ़ी रहे। 26 जन. को बुध मकर में सूर्य के साथ मेल करेगा, शुक्र उ.षा. में जाएगा। सोने, चाँदी, अलसी, एरण्ड में तेजी बनेगी। बीच-बीच में मन्दी के झटके भी लगेंगे। घटाबढ़ी में तुरन्त मुनाफा लें। 28 जन. को शुक्र मकर राशि में सूर्य, बुध, नैप. के साथ योग करेगा। शेयरों, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, चना, सरसों, सोयाबीन, गुड़ में अच्छी तेजी बनेगी। रूई, चाँदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 29 जन. को मंगल धनु में आकर वक्री शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। गुड़, चीनी, घी, तेल, तिलहन, सोयाबीन, सोना, चाँदी, चने, मूँग, शक्कर तथा शेयर बाज़ार में अच्छी तेजी बनेगी।

फरवरी–1 फर. को बुध श्रवण में आने से गुड़, चीनी, अलसी, चना, चावल में तेजी बनेगी। 2 फर. को गुरु वक्री (कन्या राशिस्थ) होने से बाज़ार के रुख में एकदम परिवर्तन होगा। गुड़, तिल, तेल, रूई, कपास, चना, चावल, घी में मन्दे का वातावरण बनेगा। सोना, चाँदी आदि धातुओं तथा ऊनी वस्त्रों में तेजी बनेगी।

5 फर. को सूर्य धनिष्ठा में तथा शुक्र श्रवण में आएगा। सोना, चाँदी, मोती, लाल-चन्दन, रूई, कपास, गेहूँ, चावल, सीसा, स्टील, लोहे, जबकि गेहूँ, जौं, चने में मन्दी बनेगी। 8 फर. को प्लूटो धनु राशि में मंगल के साथ योग करके शनि के समसप्तक योग बनाएगा। शेयरों, तेल, कच्चे तेल, मैंथायल, गुड़, चने, सोयाबीन, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी। भौमवती अमावस भी तेजीकारक है। 9 फर. को बुध धनिष्ठा में आने से सोना, चाँदी, धान्य में मन्दी, रूई, सन्, सूत में घटाबढ़ी, चावल, चीनी में तेजी बनेगी। 10 फर. गुरुवार को कुम्भस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। गुड़, चीनी में मन्दा, चाँदी, रूई में पहले मन्दी फिर तेजी, रूई, कपास, रेशमी व ऊनी कपड़ों, घी, तेल, तिलहन में तेजी बनेगी।

12 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। शुक्र भी पूर्व में अस्त हो रहा है। रूई, चाँदी, कपास, चीनी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। अतएव मन्दा बनते ही आने वाली तेजी में लाभ लें। सोना, तांबा, पीतल, जिस्त, हींग, केसर, सूरजमुखी, सोयाबीन, सरसों, अलसी, एरण्डी, खाद्य तेलों में अच्छी तेजी बनेगी। शनिवारी संक्रान्ति भी तेजीकारक है। **सौरिश्चवारे रविसंक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वीसरोगानृपतेः प्रजासुभवेन्महायुद्धभयंतदानीम्॥** 13 फर. को बुध भी कुम्भ राशि में आकर इन जिन्सों में तेजी को बढ़ावा देगा।

16 फर. को शुक्र धनिष्ठा में आने से चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी,

कपास, ग्वार में तेजी बनेगी। 17 फर. को बुध शतभिषा में आने से सोना-चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। पहले मन्दी, फिर तेजी बने। 19 फर. को सूर्य शतभिषा में आने से सोना, चाँदी, सूत, सन, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, लाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गुड़ में तेजी बनेगी।

21 फर. को शुक्र कुम्भ राशि में सूर्य-बुध एवं यूरेनस के साथ मेल करेगा। शेयरों, रूई, चाँदी, गुड़, चीनी, गेहूँ, चना, जौं, मूँग, ज्वार, बाजरा तथा अन्य सफेद वस्तुओं में मन्दा बनकर अगले ही दिन तेजी का रुझान बन जाएगा। अतएव मन्दे से निकलकर तेजी के सौदे करें।

24 फर. को बुध पू.भा. में आने से सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा तथा अनाजों में मन्दी तथा रूई में घटाबढ़ी रहे। 27 फर. को शुक्र शतभिषा में आने से गेहूँ, शेयरों, गुड़, चीनी, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चाँदी में तेजी होगी।

मार्च–1 मार्च को बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा। गुरु की शुभ दृष्टि मन्दीकारक तथा मंगल व शनि की बुध पर दृष्टियां तेजीकारक हैं। बाज़ार के प्रारम्भिक रुख को देखकर आगे चलें। बुध भी पश्चिम से उदय होगा। शेयरों, रूई, गुड़, चीनी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। सोने, चाँदी में पहले तेजी, फिर मन्दी बनेगी। 3 मार्च को बुध उ.भा. में आने से चाँदी में घटाबढ़ी, रूई, चीनी, चावल, गेहूँ के भावों में समता रहे। 4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आने से सोना, चाँदी, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, चीनी, गुग्गल, पीपलामूल, रूई में तेजी बनेगी।

6 मार्च को गुरु वक्री अवस्था में हस्त में प्रवेश करेगा। तेल, सोयाबीन में तेजी रहे, रूई, गुड़, चीनी, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चाँदी, चने, हल्दी में मन्दी बने।

7 मार्च को मंगल उ.षा. में तथा वक्री शनि पुनर्वसु के दूसरे चरण में प्रवेश करेगा। रूई में विशेष तेजी, सोने, तेल, सोयाबीन, धान्य, घी, सरसों, उड़द में भी तेजी बनेगी। 9 मार्च को शुक्र पू.भा. में आने से रूई, तेल, पेट्रोल, कच्चे तेल में तेजी बने। 11 मार्च, शुक्रवार को चन्द्रदर्शन मीनस्थ चन्द्रमा कालीन होगा। सोना, चाँदी, चावल, चना, उड़द में तेजी बने। 12 मार्च को मंगल मकर में यूरेनस के साथ योग करेगा। बुध भी रेवती में प्रवेश करेगा। केसर, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च, गुड़ आदि लाल वस्तुओं में तेजी जबकि रूई, सोना, चाँदी, ताँबा, गुड़, चीनी, घी, तेल, सरसों, तिल, अलसी एवं ऊन में मन्दी बने।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में बुध के साथ योग करेगा। इन पर गुरु की सप्तम तथा शनि की दशम दृष्टि भी है। तिल, तेल, तिलहन, चाँदी, रूई, सोने, गुड़, शक्कर, चीनी, सरसों, सोयाबीन में मामूली तेजी बनकर एक-दो दिन में पुन: मन्दी का वातावरण बनेगा।

17 मार्च को शुक्र मीन राशि में सूर्य, बुध के साथ योग करेगा। चाँदी, अनाज, सरसों, शेयरों, बिनौला, अलसी, एरण्डी, गुड़, रूई में पहले मन्दी फिर तेजी बनेगी। इसी दिन सूर्य भी उ.भा. में आएगा। चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल तेज होंगे। बाज़ार के रुख को देखते हुए काम करें।

20 मार्च को बुध वक्री तथा शुक्र उ.भा. में आने से शेयरों, खाण्ड, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, कपूर, सोने, चाँदी में तेजी बनेगी। 22 मार्च को शनि मार्गी होगा। बुध भी पश्चिम में अस्त होगा। रूई, तिल, सरसों, हींग, मिर्च, सोने में तेजी परन्तु चाँदी, शेयर मार्किट में मन्दी रहेगी।

24 मार्च को राहु मीन में तथा केतु कन्या में प्रवेश करेगा। तिलहन, सरसों, सोना, चाँदी में मन्दी बने। गुड़, चीनी, सोयाबीन में तेजी बने। 26 मार्च को मंगल श्रवण में आने से जौं, चना, तिल, अफीम, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी रहे। 27 मार्च को वक्री बुध उ.भा. में आने से चाँदी में घटाबढ़ी, रूई, गुड़, खाण्ड, चावल, अनाज के भाव सामान्य रहेंगे।

31 मार्च को सूर्य और शुक्र रेवती में आने से अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, चने, चावल, तेज होंगे, रूई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी।

अप्रैल–मासारम्भ से ही मीन राशि में सूर्य, बुध, शुक्र, राहु का चारग्रही योग बना हुआ है। इस पर शनि तथा गुरु की विशेष दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप गेहूँ, चना, सरसों, अलसी, मूँगफली, तिल, तेल में तेजी, चाँदी, गुड़, चीनी, शक्कर में मन्दी का वातावरण रहे। 4 अप्रै. को वक्री गुरु हस्त (3) में आने से रूई, गुड़, चीनी, शक्कर, घी, तेल, सरसों व रसदार वस्तुओं में मन्दीकारक होगा। 5 अप्रै. को शनि पुनर्वसु (3) में आने से तथा बुध पूर्व से उदित होने से रूई, सरसों, खल, बिनौले, गेहूँ, चने, छोटी इलायची, सोयाबीन, सोना, चाँदी में तीन दिनों के भीतर तेजी के योग बनेंगे।

10 अप्रैल रविवार को चन्द्रदर्शन मेष राशिस्थ चन्द्रमाकालीन होगा। रूई में पहले मन्दा, फिर तेजी, घी, तेल, तिल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़ में तेजी बनेगी। 11 अप्रै. को शुक्र अस्त अवस्था में अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, चावल, बाजरा आदि सर्व प्रकार के अनाज तथा रूई, चाँदी के भावों में तेजी के योग बनेंगे। अलसी, सरसों आदि तेलों में घटाबढ़ी होगी।

दैत्यगुरु यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता।

12 अप्रै. को बुध मार्गी होने से गेहूँ, चने, धान्य आदि अनाजों में तेजी बनेगी। खल, बिनौला में घटाबढ़ी परन्तु शेयरों में मन्दी बनेगी।

13 अप्रै. को सूर्य मेष राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। शुक्र पहले से ही अस्तंगत है। इन पर मंगल की दृष्टि भी है। **वैशाख संक्रान्ति** 30 मुहूर्त्ति बुधवार को है। गेहूँ, धान्यादि अनाज, उड़द, अरहर, मूँग, चना, जौं, मटर, खल-बिनौला आदि के भावों में अस्थिरता के बावजूद तेजी का रुझान रहे, स्टील, ताँबा, लोहा, पीतल, सोना, चाँदी में भी ता. 13 से 16 के मध्य तेजी का माहौल करेगा।

(ता. 18 से 20 अप्रै. तक वायदा एवं थोक मार्किट में विशेष परिवर्तन नहीं होंगे।)

21 अप्रै. को शुक्र भरणी में आने से तिल, तेल, सरसों, अलसी, घी, उड़द आदि में मन्दी, गेहूँ, चना, मूंग, मोठ, ज्वार में घटाबढ़ी तथा रूई, पटसन, चाँदी में तेजी रहेगी।

22 अप्रै. को मंगल कुम्भ राशि में प्रवेश कर गुरु की दृष्टि से ओझल होगा। गेहूँ, धान्य, उड़द आदि अनाजों, गुड़, चीनी, खल, बिनौला, सोना, शेयरों में तेजी, रूई व चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। 26 अप्रै. को शुक्र पश्चिम से उदय होने से सोना, चाँदी, तिलहन, धान्य, शेयरों में तेजी परन्तु घी, शक्कर, गुड़ में मन्दी का रुझान रहेगा। 27 अप्रै. को सूर्य भरणी तथा बुध रेवती में आने से 2-3 दिन के भीतर केसर, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं, सोना, चना, चावल, अलसी में तेजी बने जबकि गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी में प्रारम्भ में तेजी बनकर पुन: मन्दी बनेगी। अत: व्यापारी तुरन्त मुनाफा लें।

मई–2 मई की प्रात: को मंगल शतभिषा में आने से गेहूँ, चने, अरहर, लाल मिर्च, जूट-

पटसन, सोना, चाँदी रूई में पहले मन्दी बनकर पुनः कुछ तेजी बने। इसी दिन शुक्र कृतिका तथा वक्री गुरु हस्त (2) में आने से चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई में घटाबढ़ी एवं मन्दी का रुख बने।

5 मई को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करेगा। इस पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। रुई, तेल, कपास, सोयाबीन में मन्दी का रुझान परन्तु सोना, चाँदी, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

8 मई को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में सूर्य के साथ सम्बन्ध करेगा। रूई, कपास, चाँदी में घटाबढ़ी, सोना, दूध-पाउडर, चारा व चौपायों में तेजी, गुड़, घी, चने में मन्दी रहे। रविवारी अमावस अनाज, सोने के दामों में तेजीकारक रहेगी। 9 मई, सोमवार को चन्द्रदर्शन वृष राशिस्थ चन्द्रमा कालीन होगा। मूँग, मोठ, चने, रूई में तेजी, सोने-चाँदी में मन्दी बनेगी। 11 मई को सूर्य कृतिका में आने से गेहूँ, घी, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी। 13 मई को शुक्र रोहिणी में आने से घी, तेल, गुड़, अलसी, सोना, चाँदी, एरण्ड, सरसों, मूँगफली, चीनी, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बने।

14 मई को सूर्य वृष राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा, इन पर मंगल की विशेष चतुर्थ दृष्टि रहेगी। ज्येष्ठ संक्रान्ति 30 मुहूर्ति शनिवार को है। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों, शेयरों में तेजी, जौं, चना, गेहूँ, अरहर, मूंग, चावल में कुछ मन्दी बने।

16 मई को बुध भरणी में आने से गेहूँ, चावल आदि अनाजों में 8 दिनों के भीतर तेजी बने। 20 मई को मंगल पू.भा. में तथा नैपच्यून वक्री होने से तिल, तेल, एरण्डी, अलसी, मूँगफली, खल, बिनौले, सोयाबीन, रूई, सूत, कपास, नारियल, सुपारी, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। 23 मई को बुध कृतिका में आने से अनाज के भाव तेज, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी परन्तु चाँदी में मन्दी रहेगी। 24 मई को शुक्र मृगशिर में आने से गेहूँ, चना, ज्वार, मूँग, अलसी में मन्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। 25 मई को सूर्य रोहिणी में तथा बुध भी वृष राशि में सूर्य, शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि तेजीकारक तथा गुरु की दृष्टि मन्दीकारक है। वायदा बाज़ार में काफी घटाबढ़ी रहेगी। चाँदी, रूई में काफी घटाबढ़ी रहे। गेहूँ, जौं, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बने।

26 मई को शनि कर्क राशि में प्रविष्ट होकर गुरु पर विशेष दृष्टि रखेगा। जिससे सोना, चाँदी, लोहा, लकड़ी, हल्दी, केसर, स्टील, तेल, मैंथायल तथा पैट्रोलियम पदार्थों में तेजी होगी। 29 मई को शुक्र मिथुन में आने से एरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मन्दी, अलसी, गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी, गेहूँ, चना, जौं, चावलों, कपास, रूई में तेजी बने। 30 मई को बुध रोहिणी में आने से तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी रूई में पहले तेजी फिर मन्दी, राई, सन्, ऊनी एवं रेशमी वस्त्रों में मन्दी बने।

जून–3 जून को मंगल मीन राशि में प्रवेश करेगा। इस पर गुरु की दृष्टि रहेगी। चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, सोना, रूई, तृण, काष्ठ, लकड़ी में तेजी बने। 4 जून को शुक्र आर्द्रा में आने से गेहूँ, चना, ज्वार में मन्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। 5 जून को बुध मृगशिर नक्षत्र में आएगा तथा गुरु मार्गी होगा। रूई में पहले मन्दी फिर तेजी, चाँदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी, गेहूँ, तिल, गुड़ में मन्दी, सरसों, चावल, एरण्डी में तेजी बनेगी। 6 जून को सोमवती अमावस भी रूई, सूत, चाँदी, कपास तथा शेयर बाज़ार के लिए मन्दीकारक रहेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिर में, मंगल उ.भा. में तथा बुध मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, सूत, रेशम, सन्, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूंग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी तथा शेयरों में अच्छी तेजी का चांस है।

11 जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ में मन्दी रहे। 14 जून, मंगलवार को सूर्य मिथुन राशि में बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहे, तिल, तेल, गुड़, खल, बिनौला, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूँ, चना, चाँदी, चावल, फलों, शेयरों में तेजी बनेगी। इसी दिन बुध भी पश्चिम से उदय होने से रूई तथा शेयरों में घटाबढ़ी के बाद अगले दिन मन्दी भी सम्भव है। व्यापारी बाज़ार के रुख को देखते हुए आगे बढ़े।

15 जून को शुक्र पुनर्वसु में आने से धान्य, चावल, खल, बिनौला, तेल, सोना, चाँदी, रूई, कपास, सूत में मन्दी बने। 18 जून को बुध पुनर्वसु में आने से चाँदी, रूई, कपास, सूत, सन में अच्छी मन्दी बने। 21 जून को सूर्य आर्द्रा में आने तथा यूरेनस वक्री होने से रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्डी, मोती, गेहूँ, चावल, चने, जौं, चाँदी तेज, सोने में घटाबढ़ी रहेगी।

23 जून को शुक्र कर्क राशि में शनि के साथ मेल करेगा। रूई में पहले अच्छी मन्दी, फिर तेजी, अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी तथा चाँदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में मन्दी बने। तेल कम्पनियों से सम्बन्धित शेयरों में तेजी बनेगी।

24 जून को बुध कर्क राशि में शुक्र एवं शनि के साथ मेल करेगा। शनि भी पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेगा। गुड़, दूध, दुग्ध पाउडर, घी, तेल, शक्कर, मूँगफली, सरसों, सोने में तेजी बनेगी। चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, रूई में मन्दी बने। 26 जून को बुध तथा शुक्र पुष्य नक्षत्र में आने से रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, सोना, चाँदी, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बने, रूई, सूत, सन, रेशम, ऊनी धागों में तेजी बनेगी। 27 जून को मंगल रेवती में आने से गेहूँ, चना, मूंग, मोठ, जौं, ज्वार, बाजरा सोने में मन्दी, चाँदी में अच्छी तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। (मासान्त तक वायदा बाज़ार में मन्दी का वातावरण रहेगा।)

जुलाई–4 जुला. तक घटाबढ़ी के रियेक्शन रहेंगे। मन्दे में खरीद, तेजी में बेचकर तुरन्त मुनाफा लेते रहें। 5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आने तथा शनि पश्चिम में अस्त होने से रूई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारू, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गल आदि करियाना बाज़ार तथा शेयरों में तेजी रहेगी।

6 जुला. को बुध आश्लेषा में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूंगफली में तेजी बने।

7 जुला. गुरुवार को कर्कस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। शुक्र भी आश्लेषा में आने से चावल, गुड़, चीनी में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी, चाँदी, घी, तेल, कपास, रेशमी व

ऊनी धागों में तेजी बनेगी। 9 जुला. को गुरु हस्त (3) में आने से भी रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चाँदी, मोती, गेहूँ, चना, हल्दी में मन्दी बनेगी।

(9 से 15 जुला. तक मन्दे का ही वातावरण रहे, परन्तु बीच-बीच में अचानक तेजी के चाँस अवश्य बनेंगे, तेजी दिखते ही तुरन्त निकाल लें, पुनः मन्दा बनेगा।)

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में बुध, शुक्र तथा शनि के साथ मेल करेगा। शेयरों, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चाँदी, सोना तेज, गेहूँ, चना, जौं, मटर, अरहर, उड़द, मूंग में मन्दी बने।

18 जुला. को शुक्र सिंह राशि में तथा मंगल मेष राशि में आकर कर्कस्थ सूर्य, बुध, शनि पर दृष्टि रखेगा। शेयरों, सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, ऊन, गुड़ में अच्छी तेजी, रूई में पहले मन्दी फिर तेजी, चाँदी में मन्दी बने। 19 जुला. को सूर्य पुष्य में आने से तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

21 जुला. को शनि पुष्य (2) में आने से अनाज, रूई, अलसी, सूत, सन में तेजी रहे। 23 जुला. को बुध वक्री होगा। शेयरों, खाण्ड, बिनौला, तेल, तिल, घी, गुड़, शक्कर, कपूर, चाँदी में तेजी, गेहूँ, जौं, चने, रूई में मन्दी बनेगी। ता. 27 तक तेजी के रुख को ही ध्यान में रखते हुए सौदे करें।

28 जुला. को राहु रेव (2), केतु हस्त (4) में आने से तेल, तिलहन में मन्दा बने। 29 जुला. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में मन्दी बने।

अगस्त–2 अग. को सूर्य आश्लेषा में आने से सोना, चाँदी, रूई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील में 1–2 दिन में तेजी बनेगी। 5 अग. को गुरु हस्त (4) में आने से रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चाँदी, चना, हल्दी में मन्दी बने। 9 अग. को शुक्र उ.फा. में आने से गेहूँ, जौं, मटर, चने, रूई में तेजी सोना-चाँदी में घटाबढ़ी चले। 10 अग. को वक्री बुध पुष्य में तथा शनि पूर्व से उदित होने से सोना, चाँदी, स्टील, लोहे, पीतल तथा अनाज, उड़दादि में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। 12 अग. को शुक्र कन्या राशि में गुरु के साथ मेल करेगा तथा इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, ऊनी, रेशमी वस्त्रों, चावलों में तेजी बनेगी।

16 अग. को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा, बुध भी मार्गी होगा। चाँदी, सोना, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि लाल रंग की वस्तुओं में तेजी, शेयरों, चावल में मन्दी बने।

20 अग. को शुक्र हस्त में आने से रूई, चावल में मन्दी, सोने-चाँदी में तेजी, खाण्ड, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी चले। 21 अग. को बुध आश्ले. में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली में तेजी बनेगी। 25 अग. को गुरु चित्रा में आने से शेयरों, पाट, सूत, सन, चने में तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, चावल, चाँदी में भी मन्दी रहे।

30 अग. को सूर्य पू.फा. में आने से जीरा, सोना, गुड़, सोयाबीन, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, रूई में तेजी रहे। चावलों में घटाबढ़ी रहे। 31 अग. को शुक्र चित्रा में आने से सोना, चाँदी, शेयर बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद भावों में तेजी होगी।

सितम्बर–1 सितं. से बुध सिंह में सूर्य के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, सूत, रूई व ऊनी वस्त्रों में तेजी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, शेयरों, कपूर में मन्दी बने। 3 सितं. को शनिवारी अमावस भी रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी तथा चावल, चाँदी, अनाज में तेजी लाएगी। ता. 4 को बुध पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, चावल, सोने में तेजी, रूई में घटाबढ़ी रहेगी। 5 सितं., सोमवार को कन्या राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। मूंग, मोठ, चने, रूई, खल, बिनौला में तेजी, सोने-चाँदी में घटा बढ़ी होगी। अन्य बहुमूल्य धातुओं में तेजी होगी।

6 सितं. को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करेगा। इस पर मंगल की दृष्टि होने से बाज़ार में तेजी का वातावरण बनेगा। बाज़ार के प्रारम्भिक रुख को देखते हुए ही आगे बढ़ें। रूई, चाँदी, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद तेजी, सोने, गुड़, खाण्ड, बिनौले, लाल मिर्च, इमली में तेजी बनेगी।

8 सितं. को बुध पू.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ आदि अनाज मन्दे होंगे। 11 सितं. को मंगल कृतिका में आने तथा गुरु चित्रा (2) में आने से 10 दिन में गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी, सूत में तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

12 सितं. को शुक्र स्वाती में आने से गेहूँ, मक्का, चना, जौं में मन्दी, चीनी, चावल, गुड़ में तेजी बनेगी। 13 सितं. को सूर्य उ.फा. में आने से रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, बाजरा, मक्की के भावों में तेजी बनेगी। 15 सितं. को बुध उ.फा. में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी, रूई, चाँदी, शेयरों में मन्दी रहे।

16 सितं., शुक्रवार को सूर्य कन्या राशि में गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। आश्विन संक्रांति 15 मुहूर्त्ति शुक्रवार को होने से गेहूँ, चावल, चने, खाद्य तेलों में तेजी का रूझान करेगा। तिल, तेल, मजीठ, नारियल, गुड़, रूई, सोना, चाँदी में तेजी बने। चाँदी, शेयरों में भी घटाबढ़ी अधिक रहेगी। (ता. 16 से 21 सितं. तक बाज़ार में मन्दे-तेजी के रियेक्शन आते रहेंगे, तुरन्त छोटे-छोटे सौदे निपटाएं।)

22 सितं. को बुध हस्त में आने से बाजरा, जौं, मूंग, सोयाबीन में मन्दी बनेगी। 23 सितं. को शुक्र विशाखा में आने से रूई, सूत, सन, धान्य में मन्दी बनेगी। 26 सितं. को सूर्य हस्त में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, चने दालचीनी गर्म मसाले में तेजी बनेगी।

28 सितं. को गुरु तुला राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि यद्यपि तेजीकारक है। गुरु, तुला राशि में घी, तेल, तिल, अलसी, सरसों में मन्दी करता है। परन्तु यहां मन्दी न बनकर 5 दिन के भीतर इनमें तेजी बन सकती है। सोने, चाँदी, नारियल, रूई, मजीठ, सुपारी में भी तेजी बनेगी।

29 सितं. को राहु रेव (1) में तेल, तिलहन में मन्दा करेगा। 30 सितं. को बुध चित्रा में आने से रूई, चाँदी, शेयरों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

अक्तूबर–1 अक्तू. को मंगल वक्री होने से 1-2 दिन में ही गुड़, अलसी, सरसों, सोना, चाँदी, सोयाबीन, पीतल, ताँबा, अनाज, हल्दी, लाल मिर्च में तेजी बनेगी।

2 अक्तू. से शुक्र बृश्चिक राशि में आएगा। इस पर वक्री मंगल की दृष्टि रहेगी। रूई, शेयरों, चाँदी, अफीम, बादाम गिरी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गुड़, जौं, उड़द, मूंग, मोंठ, बाजरा, अलसी सरसों, सोयाबीन, सूरजमुखी में भी तेजी का रूझान बनेगा।

3 अक्टू. को सोमवती अमावस यद्यपि सफेद वस्तुओं चावल, रूई, चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। परन्तु हस्त नक्षत्र कालीन सूर्यग्रहण होने से तिल, तेल, चने में अच्छी तेजी बनेगी। 4 अक्टू. को बुध तुला में गुरु के साथ मेल करेगा। मंगल की दृष्टि भी है। रूई, गुड़, खाण्ड, सोना, लोहा, पीतल अफीम में तेजी, चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दी बनेगी। परन्तु हमारे विचारानुसार यहाँ मन्दी न बनकर अचानक तेजी की लाईन बन सकती है। सावधानीपूर्वक चलें।

5 अक्टू. से शुक्र अनु. में तथा तुला राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। अलसी, एरण्डी में तेजी, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। 6 अक्टू. को बुध पश्चिम से उदय तथा गुरु पश्चिम में अस्त होगा। रुई, शेयरों, सोने में मन्दी, चाँदी में तेजी होगी। 9 अक्टू. को बुध स्वाती में आने से रूई, शेयरों में मन्दी बने। 10 अक्टू. को सूर्य चित्रा में आने से रूई, सूत, सोना, चांदी, मोती, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सन, केसर, कपूर, बादाम आदि में मामुली में तेजी बनेगी। 13 अक्टू. को गुरु चित्रा (4) में आने से चांदी, अनाज, रूई में घटाबढ़ी होगी।

17 अक्टू. को सूर्य तुला राशि में बुध एवं गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। रुई, तिल, चाँदी, तेल में मामूली फिर तेजी होगी। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताँबा, लाल-चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी में तेजी बनेगी।

18 अक्टू. को बुध विशाखा में आने से रूई, कपास आदि में घटाबढ़ी होगी। 21 अक्टू. को वक्री मंगल भरणी (4) में आने से सोना, चाँदी, रूई, चावल, बाजरा, गेहूँ, सरसों, गुड़ में तेजी होगी। 23 अक्टू. को सूर्य स्वाती में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गल में तेजी बनेगी।

25 अक्टू. से बुध बृश्चिक राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि है। घी, तेल, सरसों, रूई, चाँदी, शेयरों में तेजी बने। सोने में विशेष तेजी नहीं होगी। 28 अक्टू. को बुध अनु. में तथा गुरु स्वाती में आने से सूत, सन, रूई, सोना, चाँदी, तिलहन, तेल, सोयाबीन में घटाबढ़ी होगी। 30 अक्टू. से शुक्र धनु में आने से शेयरों, किशमिशादि मेवे, जवाहरात आदि चाँदी, सोना, ताँबा में तेजी, रूई, सूत, कपास, चावल, खाण्ड में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

नवम्बर–ता. 3 नवं., गुरुवार को बृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। रूई, कपास, रेशमी व ऊनी कपड़े, घी, तेल, सोयाबीन, चाँदी में तेजी बने, गुड़, चीनी, चने में कुछ मन्दी बने। ता. 6 नवं. से सूर्य विशाखा में आने से जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, अलसी, चाँदी में तेजी बनेगी। (ता. 6 से 11 नवं. तक बाजार घटाबढ़ी के बावजूद बाद में तेजी होगी।)

12 नवं. को बुध ज्येष्ठा तथा शुक्र पू.षा. में आने से घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी, मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक, सोयाबीन में उतार-चढ़ाव के बाद तेजी होगी। 13 नवं. को गुरु स्वा. (2) में तथा ता. 14 से बुध बृश्चिक में वक्री हो जाने से चीनी, गुड़, शक्कर, हल्दी, लकड़ी, बिनौले तेज भाव होंगे, परन्तु सरसों, अलसी व रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी होगी। ता. 15 मंगलवार को पूर्णिमा का क्षय होने से गेहूँ चावल व लौह आदि धातुएँ तेज भाव होंगी।

कार्तिक शुक्ल में तेरह दिन का पक्ष होने से देश में कहीं उपद्रव, तोड़-फोड़ एवं हिंसा की घटनाएँ बढ़ेंगी। महंगाई बढ़े, कहीं विचित्र रोग एवं दुर्भिक्ष का भय रहेगा। ता. 16 को मार्गशीर्ष संक्रांति 30 मुहूर्त्ति बुधवार को है। छोटी इलायची, जायफल, सुपारी, गेहूँ, धान्य, नारियल, ऊनी वस्त्र, ताँबा आदि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज होंगी। ता. 19 को सूर्य अनु. में जाएगा। इसी दिन बुध पश्चिम में अस्त हो रहा है जिससे गेहूँ, धान्य, किशमिश, चने, ऊन एवं सुवर्ण, चाँदी, पीतल आदि सर्व प्रकार की धातुएँ तेज भाव होंगी। ता. 21 को वक्री मंगल भरणी में आने से गेहूँ, जौं, चने, चावल, खली, मूंगफली, गर्म मसाले, चारा, सोना, चाँदी, लोह आदि धातुएँ तेज होंगी। ता. 22 से शनि कर्क राशि में वक्री होने से सर्व प्रकार अनाज, उड़द, मक्की, धान्य व लोहादि धातुएँ तेजी का रूख करेंगी। ता. 26 को वक्री बुध अनु. में आने से सोना, चाँदी व रूई में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी हो। परन्तु यह मन्दी अस्थाई होगी। ता. 29 को गुरु स्वा. (3) में आने से रूई, कपास व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। ता. 30 को बुध पूर्वोदित होना कपास, रूई, चाँदी एवं चावलों में तेजीकारक रहेगा।

दिसम्बर–ता. 1 से राहु उभा (4) में और केतु हस्त (2) में प्रविष्ट होने से सर्व प्रकार अनाज, किशमिश, गर्म एवं ऊनी वस्त्र तथा ऊन के भाव तेज होंगे। ता. 2 से सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आने से भी गेहूँ, चावल, अलसी, सरसों, एरण्डी, हींग, गुग्गल, सोयाबीन, गुड़, चीनी, सोना व चाँदी में तेजी का रूख होगा। ता. 3 से शुक्र मकर में आकर शनि को सप्तम दृष्टि से देखेगा। गेहूँ, जौं, चने, चावल, उड़द, घृत, गुड़, चीनी आदि में तेजी होगी। रूई व चाँदी में घटा-बढ़ी होकर बाद में तेजी होगी। ता. 4 से बुध बृश्चिक में मार्गी होगा। जिससे एरण्ड, खल-बिनौला, अलसी, सोयाबीन, गुड़, शक्कर, मूँगफली में तेजी होगी। ता. 9/10 को बुध अनुराधा में आने से अनाज के भावों में विशेष परिवर्तन न होंगे, किन्तु रूई, कपास, सोना व चाँदी में मन्दी का रूझान होगा। ता. 10 से मंगल मेष राशि में मार्गी होने से गेहूँ, मक्की, चने, अलसी, तोरिया, ताँबा, सोना, जूट, पटसन, पीतल एवं चाँदी के भावों में घटाबढ़ी एवं अनिश्चितता रहेगी। ता. 12 से 14 दिसं. के मध्य करियाना के थोक एवं वायदा बाज़ार में विशेष परिवर्तन नहीं होंगे। ऐसे योग हैं। ता. 15 से सूर्य धनु राशि में आकर शनि के साथ षडाष्टक योग रहेगा। रूई, कपास, सन-सूत, तिल-तैल, अलसी, सोना-चाँदी में तेजी होगी। गेहूँ, अनाज आदि की मार्कीट मन्दी का रूझान रहेगा। ता. 16 से गुरु स्वाती के चतुर्थ चरण में प्रवेश करने से तैल, सरसों, अलसी, एरण्डी, तैल-मूंगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। 18-19 को तेजी के ही योग हैं। 19 की प्रात: को सरसों, तेल-सूरजमुखी, सोयाबीन, गरी-खोपा, तारपीन, अलसी आदि सर्व प्रकार के खाद्य तैल तेजी में खुलेंगे। यह तेजी की चमक 3 दिन तक छाई रहेगी। ता. 20 को शनि पुष्य (4) में आने से अलसी, रूई, सन, सूत, पटसन, खल-बिनौले, चौपाय व पशुचारा तेज होंगे। ता. 24 से शुक्र मकर राशि में वक्री होगा। जिससे अनेक व्यापारिक वस्तुओं की लाईन बदलने की सम्भावना होगी। खाद्य तैल, मूंगफली, किशमिश, घी, किशमिश, चीनी, चावल, रूई, चाँदी व सुवर्ण के भावों में वृद्धि होगी। ता. 28 से सूर्य पूषा नक्षत्र में आने से गेहूँ, धान्य, चने, गुग्गुल, गुड़, खली, सरसों तेल, अलसी, नारियल, सोयाबिन, सूरजमुखी, मूंगफली एवं मूंगफली के तेलों में तेजी के योग होंगे। ता. 30 से बुध भी मूला नक्षत्र एवं धनु राशि में सूर्य से मेल करेगा। अनाज, रूई, सोना व चाँदी में कुछ घटाबढ़ी के बाद तीन में तेजी होगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह, उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देने वाली शक्ति साधना के भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है—

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः ॥

अर्थात् चाहे कितना ही अधिक जप, होम तथा शरीर-कष्टादि किया जाएँ, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे—गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ-मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी दिसम्बर, २००५ में प्रकाशित होने वाली पुस्तक 'शिव मन्त्रावली' में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षया तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु-पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

—श्री दुर्गा सप्तशती के कुछ सिद्ध मन्त्र—

श्री दुर्गासप्तशती के ७०० श्लोक, सभी मन्त्र स्वरूप हैं। जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों क्षेत्रों में सिद्धि एवं सफलता प्रदान करने वाले हैं, जो व्यक्ति जिस भावना एवं कामना से श्रद्धा एवं विधिपूर्वक मन्त्र का जाप एवं अनुष्ठान करता है तद्नुसार ही उसे फल की प्राप्ति होती है। आगे हम कुछ कांम्य मन्त्र लिख रहे हैं, जिनका विधिपूर्वक अनुष्ठान करने से मनोवाँछित फल की प्राप्ति होगी। **श्री दुर्गा मन्त्र जाप** की सरल एवं बोधगम्य विधि ज्ञात करने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित **श्री दुर्गा सप्तशती** का संशोधित संस्करण मंगवा कर पढ़ें। प्रत्येक मन्त्र का सवा लाख की संख्या में विधिवत् पाठ करके दशमांश के तिल, क्षीर, घृतादि द्वारा हवन, उसका दशांश, तर्पण, मार्जन एवं कन्या पूजन कराने से मनोवाँछित फल अवश्य प्राप्त होता है।

(१) समस्त कार्यों में सिद्धि के लिए—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥ अध्याय ११, श्लोक ९ ॥

(२) सब प्रकार के अरिष्ट की शान्ति के लिए—

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥९ ॥ अर्गला स्तोत्र ॥

(३) विलिष्ट रोग की शान्ति हेतु—

रोगानशेषानपंहसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलान् अभीष्टान्॥
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हि आश्रयतां प्रयान्ति॥

यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष मुहूर्त्त (काल)

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल—प्रथम पृष्ठों पर देखें

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल—प्रथम पृष्ठों पर देखें

क्रान्तिसाम्य काल 2005–06 ई.

यहाँ सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को वर्जित किया गया है। इस समय विवाह के लिए अशुभ परन्तु यंत्र-मंत्र-तंत्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ समय होता है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
7 जन.	4-50	7 जन.	10 -31
19 जन.	9 -21	19 जन.	15-18
2 फर.	8 -02	2 फर.	12-38
14 फर.	4-35	14 फर.	8-47
27 फर.	23-24	28 फर.	3-30
12 मार्च	0-35	12 मार्च	4-14
25 मार्च	14-11	25 मार्च	18-11
6 अप्रै.	21-40	7 अप्रै.	1-20
20 अप्रै.	6-32	20 अप्रै.	11-04
2 मई	17-16	2 मई	21-24
16 मई	1-01	16 मई	6-41
28 मई	18-19	28 मई	23-37
11 जून	5-10	11 जून	12-26
24 जून	9-13	24 जून	15-14
2 जुला.	19 37	3 जुला.	2 42
17 जुला.	2-00	17 जुला.	7-22
29 जुला.	1-05	29 जुला.	6-21
12 अग.	2-29	12 अग.	7-03
23 अग	23-15	24 अग.	3-09
6 सितं.	17-51	6 सितं.	22-00
18 सितं.	22-45	19 सितं.	2-10
2 अक्तू.	7-33	2 अक्तू.	11-44

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
14 अक्तू.	21-47	15 अक्तू.	1-29
27 अक्तू.	22-14	28 अक्तू	2-54
9 नवं.	18-20	9 नवं.	22-41
22 नवं.	15-50	22 नवं.	21-43
5 दिसं	20-34	6 दिसं.	2-13
19 दिसं	1-06	19 दिसं.	8-16
28 दिसं.	7-51	28 दिसं.	13-59
(सन् 2006 ई.)			
9 जन.	15-54	9 जन.	22-05
23 जन.	18-30	23 जन.	23-39
4 फर.	16-11	4 फर.	20-39
18 फर.	11-52	18 फर.	16-23
2 मार्च	14-39	2 मार्च	18-10
16 मार्च	0-09	16 मार्च	4-21
28 मार्च	15-21	28 मार्च	18-40
सूर्यग्रहण			
3 अक्तू.	13-06	2 अक्तू.	18-58
चन्द्रग्रहण			
17 अक्तू.	17-04	17 अक्तू.	18-03

मुकद्दमे में विजय प्राप्ति यन्त्र

इस यंत्र को चांदी के पत्रे अथवा भोजपत्र पर रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन-संक्रान्ति, हस्त, मूला नक्षत्र कालीन अथवा दीपावली, ग्रहण के दिन सू.उ. के पश्चात् तथा सूर्यास्त से पूर्व खुदवाकर प्रतिष्ठित कर प्रतिदिन पूजन करें, तो कोर्ट-कटहरी आदि विषयों में विजय प्राप्त होने की प्रबल सम्भावना होती है। यन्त्र को अपनी जेब में रखें—

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

पूजन मन्त्र— ''ॐ नीली-नीली-महानीली (शत्रु पत्र/जज का नाम) जीभि तालू सर्व खिली, सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा॥''

पुत्र प्राप्ति यन्त्र

जिस स्त्री की कोई सन्तान न हो, उसे रविवार के दिन सर्पाक्षी के फूलों के पत्तों से युक्त डाली लाकर एक वर्ण की गाय के दूध में कुंवारी कन्या के हाथ से पिसवा कर एक कर लें। ऋतुमति होने पर चौथे से छठे दिन तक प्रतिदिन एक-एक तोला की मात्रा में इसका सेवन करें। सेवन से पूर्व निम्न मन्त्र को १०८ बार जाप करें—

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

ॐ नमो भगवते देवाय॥ ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

तदनन्तर इस मन्त्र के साथ ही भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यह यन्त्र लिखकर तावीज़ में भरकर गले या कमर में बांधने से बांझ स्त्री के भी पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

यदि यन्त्र न इस्तेमाल करना चाहें, तो उपर्युक्त मन्त्र का सवा लाख जाप करने के पश्चात् दशांश हवन, तर्पण, ब्राह्मण-भोजन यथाविधि करना चाहिए।

मन्त्र पाठ करने से पूर्व संकल्प, विनियोग, व्यास आदि 'सन्तान गोपाल स्तोत्र' नामक पुस्तक से अवश्य कर लें।

गर्भ रक्षा हेतु यन्त्र

विधि—जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही है अथवा गर्भ की बार-बार हानि होती हो। उस स्त्री की बाँह में अथवा कमर में यह यन्त्र बाँध देने से गर्भ स्थिर हो जाता है। इस यन्त्र को भोजपत्र पर रविवार के दिन मूला नक्षत्र में अनार की कलम से लिखकर किसी तावीज़ में रखकर बाँधना चाहिए।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

टोने-टोटके का दोष निवारण हेतु शावर मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। अपर कोष। बिगड़ कोष। प्रह्लाद राख। पाताल राख। पाँव दे बीज जंघा देवा कालिका। मस्तक राखे महादेव। जो कोई इस पिण्डप्राण को छेदे-छेदे। देव-देवता। भूत-प्रेत। डाकिनी-शाकिनी। कंठमाला, तिजारी। एक पहर। दोपहर। सांझ सवेरे को किये कराये को स्वाहा पड़े। इसकी रक्षा नरसिंह जी करें।

इस मन्त्र का जप दीवाली, ग्रहणकाल, सायन संक्रान्ति पुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य काल में करने से मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र का जाप करते हुए रोगी को २१ बार झाड़ा करें तथा सिर से पांव तक धागा नापकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१ गांठ लगाकर और गुग्गल की धूनी देकर रोगी के कण्ठ में पहना दें। इस प्रकार उपाय करने से किया किराये का सभी दोष समाप्त होकर उल्टे टोना करवाने वाले की हानि होती है।

लक्ष्मी प्रदायक—श्री कनकधारा मन्त्र

प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यन्त्र को स्थापित करके नित्य निम्न कनकधारा मंत्र की स्फुटक माला से एक या तीन माला का पाठ करने से लक्ष्मी देवी प्रसन्न होती है तथा आर्थिक प्रगति होती है।

'ॐ वं श्री वं एं ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा॥''

कनकधारा मन्त्र का एक लाख जप पूरा करें तथा यदि सम्भव हो तो पं० पन्ना लाल कृत 'श्री दुर्गा सप्तशती' (भा. टी.) में से कनकधारा स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करें। जिन साधकों के पास 'श्री-यन्त्र' है, उन्हें भी कनकधारा यंत्र अवश्य रखना चाहिए। दोनों यन्त्रों में परस्पर सामञ्जस्य होने से फल शत गुणा अधिक बढ़ जाता है।

धनप्रदायक सिद्ध बीसा यन्त्र

गुरुपुष्य योग अथवा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से लिखकर मन्त्रोपचार पूजन कर रुद्राक्ष अथवा स्फटिक की माला से २१ हज़ार नवार्ण मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित कर स्वर्ण, चांदी आदि के यन्त्र में भरकर धारण करने से धन, धान्य व सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

	३			
	ॐ	४	ऐं	
१	८	५	६	
	ह्रीं	२	क्लीं	७
		९		

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए

जिन कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएं पड़ती हों, उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में ५१ हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में,

शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी कीकृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है—

ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरु ते नमः॥

इसके साथ प्रति सोमवार का व्रत तथा पार्वती मंगल स्तोत्र का पाठ भी किया जाए, तो मनोवांछित फल की प्राप्ति शीघ्र होती है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक शास्त्रोक्त प्रयोग प्रसंगवश मिलते हैं, जिनका जातिका की ग्रहदशा का अवलोकन करके करना चाहिए।

धन-सम्पदा हेतु श्री अन्नपूर्णा देवी का मन्त्र

धन-धान्य और समृद्धि के लिए अन्नपूर्णा देवी के निम्न मन्त्रों में से किसी एक का जप करके साधक जन लाभान्वित हो सकते हैं। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी अथवा अन्य शुभ मुहूर्त्त में मन्त्र-जाप प्रारम्भ करें—

ध्यान मन्त्र— 'तप्त स्वर्णनिभा शशांक मुकुटा रत्नप्रभा भासुरा,
नानावस्त्र विराजिता त्रिनयना भूमीरमाभ्याम् युता।'
दर्वीहाटक भाजनं च दधती रम्योच्चपीनस्तनी,
नित्यं तं शिवमाकलय्य मुदिता ध्यायेन्नपूर्णेश्वरी॥

जप मन्त्र—✤ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा।
✤ ॐह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ममाभिमतमन्नं देदि देहि अन्नपूर्णे स्वाहा॥
✤ ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति प्रसन्नपारिजातैश्वर्य अन्नपूर्णे स्वाहा।
✤ ॐ ह्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्न वरदे अन्नपूर्णे स्वाहा॥

बिक्री बढ़ाने हेतु मन्त्र

मन्त्र—भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा।
उठे जो डण्डी बिके जो माल, बंवर वीर की सौं नहिं जाय॥

बिक्री बढ़ाने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है। रविवार के दिन प्रातः स्नान करके एक हाथ में काले उड़द लें। १०८ बार मंत्र का जाप करें। मंत्र-जाप के बाद उड़द के दानों को दुकान में चारों ओर बिखेर दें।

"घर से रुठकर गये हुए को बुलाने का मन्त्र"

"ॐ नमो आली कालिका, काकुडी का, अमुखा/अमुखी आकर्षय-आकर्षय बड़े वेग आकर्षय, जिण वाटे जाई सोई वाट खीलूं, ॐ श्रीं ह्रीं आकर्षय-आकर्षय स्वाहा॥"

पताशे या शक्कर से इस मन्त्र की दस हज़ार आहूति देने पर अभीष्ट पुरुष या पशु आकर्षित होकर (यदि जीवत है) तो घर लौट आता है।

अकाल मृत्युनिवारक-महामृत्युञ्जय मन्त्र

(मृत्युतुल्य कठिन रोगों में तथा आयुवृद्धिकारक अचूक मन्त्र)

"ॐ हौं जूँ सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।

अर्थ—हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक है। जैसे—तरबूज़ आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोग कर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि—यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है ; उसी के ऊपर अविच्छिन्न—अनवरत जलधारा के प्रवाहवत् अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय-महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक, देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर, संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ट दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए॥ तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए।

श्री महामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकाल मृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट व असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है॥

महामृत्युञ्जय यन्त्र

इस यन्त्र को दो विभिन्न भोजपत्रों पर अनार की कलम तथा रक्त चंदन से लिखकर एक को धारण करने से विपक्षी के कुचक्र शांत हो जाते हैं। यदि विपक्षी का स्तम्भन करना हो तब दूसरे यन्त्र को किसी शिला के नीचे दबा दें।



महामृत्युञ्जय यन्त्र

श्री बगुलामुखी देवी का मन्त्र

('शत्रुविजयी मन्त्र')

श्री बगला महाविद्या की उपासना गुरु के सानिध्य में रहकर सतर्कता, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्लपूर्वक करते रहना चाहिए।

आपका विरोधी अथवा शत्रु आपको अन्यायपूर्वक तंग कर रहा हो अथवा राजकीय रुकावटों के कारण उपयुक्त प्रमोशन न मिल पा रहा हो अथवा व्यवसाय में गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का यत्न करते हों अथवा आपको अनावश्यक रुपेण, झगड़े आदि में फंसाया जा रहा हो तो निम्न श्री बगुलामुखी मन्त्र विशेष सहायक सिद्ध होता है।

साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक देवीमन्दिर में, पर्वतशिखर पर, शिवालय में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो पीताचार से बगलामहामन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिए। महाविद्या बगुलामुखी का ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है—

''ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं।
स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥''

मन्त्र के जपादि के विषय में बगलापटल (सिद्धेश्वर तन्त्र) में विशेष विधान बताए हैं, जो इस प्रकार हैं—

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया॥
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः। प्रियङ्गु कुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्॥

बगला के जप में पीले रंग का विशेष महत्त्व है। जपकर्त्ता को पीला वस्त्र पहनकर हल्दी की गाँठ की माला से जप करना चाहिए। देवी की पूजा और होम में पीले पुष्पों, प्रियङ्गु, कनेर, गेंदा आदि के पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। शुचिभूंत हो पीले कपड़े पहनकर साधक पूर्वाभिमुख बैठकर ही जप करें। उसे ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्यतः करना चाहिए। जप के पूर्व पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आसनशुद्धि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए। जप संख्या एक लाख बतलाई गई है। विशेष बात यह बताई है कि प्रतिदिन जप के अन्त में दशांश होम पीले पुष्पों से अवश्य करना चाहिए।

महाविद्या बगुलामुखी का ध्यान निम्नलिखित है, जो जप से पूर्व करणीय है—

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्‌गरपाशवज्ररसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः,
व्याप्ताङ्गीं वगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

—''विद्या लाभ के लिए गुडुच्यादि प्रयोग''—

किसी शुभ मुहूर्त्त में गुरुचि, अपामार्ग, बायविडंग, शंखिनी, ब्राह्मी, वच, सोंठ और शतावरी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर उसका चूर्ण करें, तदन्तर गोघृत में मिलाकर उसकी आठ-आठ आने भर की 44 गोलियां बनाकर रख लें और—

'ॐ ऐं ह्रीं ह्रों हयग्रीवाय नमो मां विद्यां देहि देहि बुद्धिं वर्द्धय वर्द्धय हुं फट् स्वाहा॥'

इस मन्त्र को प्रतिदिन 100 बार पढ़कर, मन में विद्या-बुद्धि की प्राप्ति और वृद्धि का विश्वास करके एक गोली खा लें।

कुछ उपयोगी टोटके

(*i*) किये कराये का दोष दूर करने के लिए धूप, गंधक, गुग्गल, लाख, लोबान, हाथी दान्त, साँप की केंचुल, व्यक्ति के मस्तक के बाल लेकर-इन सबको मिलाकर किये-कराये वाले रोगी के पास जलावें और इनका धुआं दें तो किये-कराये का दोष दूर हो जाएगा।

पुत्र-प्राप्ति हेतु कुछ तन्त्र प्रयोग

(*i*) विधिपूर्वक प्राप्त अपामार्ग पौधे की जड़ को भस्म बनाकर दूध के साथ पति-पत्नी दोनों एक महीने तक पीएं, तो सन्तान लाभ होता है।

(*ii*) धुंधची (गुंजा) (लाल रंग की) शुभ मुहूर्त्त में जड़ से उखाड़कर विधिपूर्वक उसकी जड़ को तावीज़ में रखकर कमर में बाँधकर रखने वाली स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है।

(*iii*) नींबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीसकर घी में मिलाकर पीने से स्त्री दीर्घजीवी पुत्र पैदा करती है।

(*iv*) नाग-केसर का चूर्ण सवत्सा नवीन गौ के दूध के साथ सात दिनों तक लेने से तथा घी-दूध का पौष्टिक भोजन करने से भी स्त्री का बन्धत्व दोष मिट जाता है।

परमसुख प्राप्ति के लिए—गायत्री महामन्त्र

लौकिक एवं पारलौकिक सुख प्राप्ति के लिए **गायत्री मन्त्र** जप और गायत्री साधना एक महायोग है। गात्री का अनुष्ठान और पुरश्चरण सर्व सिद्धि दाता कहा जाता है। सन्ध्या वन्दन के साथ नित्य गायत्री मन्त्र जाप एवं उपासना करने से जीवन निष्पाप, सुखी, सम्पन्न और पुष्ट होता है। गायत्री गुरुमन्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। **मन्त्रराज गायत्री की महिमा अकथनीय है।** विधि-विधान के अनुसार गायत्री पाठ करके साधारण मनुष्य भी अपने क्लिष्ट समस्याओं का समाधान कर सकता है।

गायत्री मन्त्र की साधना से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चारों सुलभ हो जाते हैं। मन, बुद्धि-विद्या एवं ज्ञान के विकास के लिए गायत्री मन्त्र-जाप अत्यन्त लाभदायक होता है।

गायत्री-मन्त्र

''ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥''

अर्थ—हम सत् चित् आनन्द स्वरूप, सृष्टिकर्त्ता स्वप्रकाशित परमात्मा के उस वरणीय दिव्य तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करें॥ अर्थपूर्वक गायत्री मन्त्र के जप से मन, बुद्धि एवं हृदय परिष्कृत एवं पवित्र होकर सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होती है।

विधि—नित्य स्नानादि के उपरांत शुद्ध होकर पूर्वाभिमुख होकर प्रातःकाल श्री गायत्री देवी के चित्र (अथवा) मूर्त्ति के आगे धूप, दीप, अक्षत, पुष्प, जलपूरित शुद्ध जलादि द्वारा पूजा करके आचमन करके अपने सामर्थ्यानुसार निश्चित संख्या (१, ३, ५, ७ माला इत्यादि) में नियमित रूप से करने से विद्या, बुद्धि एवं अन्तःकरण में श्रेष्ठपद की प्राप्ति होती है। गायत्री मन्त्र जप के बाद आठ मुद्राएँ गायत्री कवच तथा गायत्री तर्पण करने का विधान है॥

द्वादश राशियों का मासिक एवं वार्षिक राशिफल–सन् 2005 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिख रहे हैं। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण विषयों–विद्या, व्यवसाय, विवाह, सन्तान विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा यदि आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं, तो शास्त्र सम्मत विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म समय, वर्ष, स्थान (Place & Time of Birth), माता–पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। बड़ी विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 501 रु० से 1100 रुपये। **मध्यम जन्मपत्री** 351 रु०, वर्षफल फीस 275 रु०। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 40 डालर होगी। डाक व्यय अतिरिक्त होगा, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम भेजनी अनिवार्य है।

—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर–8

वर्षफल मेष राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली

1 रा., 2, 3, 4 श., 5 चं., 6 गु., 7 के., 8 मं. बु. शु., 9 सू., 10, 11, 12

मेष राशि पर वर्षारम्भ से 12 जनवरी तक शनि की दृष्टि होगी तथा शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा। वर्षारम्भ से 24 मार्च तक राहु भी इसी राशि पर संचार करेगा। राशि स्वामी मंगल भी अष्टम में होगा। जिसके फलस्वरूप मासारम्भ में स्वास्थ्य में खराबी, घेरलू उलझनें तथा बनते कामों में अड़चने रहेंगी। धन का अपव्यय एवं गुप्त चिन्ताएं भी रहेंगी।

12 मार्च से मंगल उच्च राशि (मकर) में आकर मेष पर स्वगृही दृष्टि करेगा तथा 25 मार्च से इस राशि पर से राहु की स्थिति भी हट जाने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। स्वास्थ्य में भी बेहतरी होगी। ता. 14 अप्रैल से सायं 14 मई तक सूर्य के इस राशि पर उच्चस्थिति में संचार करने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

26 मई से शनि कर्क में प्रविष्ट होने से मेष राशि पर शनि की पुन: नीच दृष्टि पड़ेगी। शनि की ढैय्या का प्रभाव होगा। फलस्वरूप वर्ष के उत्तरार्ध भाग में घेरलू कलह-क्लेश, गुप्त चिन्ताएँ, धन का अधिक खर्च एवं विघ्न बाधाओं का सामना रहे। व्यवसाय में दौड़-धूप एवं संघर्ष अधिक रहेगा। 18 जुला. से मेष पर मंगल का संचार होगा तथा **28 सितं. से इस राशि पर गुरु की** दृष्टि पड़ने से शुभ फल भी घटित होंगे। 11 अक्तू. से संघर्ष अधिक रहेगा।

जनवरी—मासारम्भ में आर्थिक उलझनों एवं तनाव के कारण चिन्ता व परेशानियाँ रहेंगी। स्वास्थ्य में विकार एवं कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। उत्तरार्ध में कुछ सुधार की सम्भावनाएं होंगी।

फरवरी—मन में उत्साह एवं गृह में कोई खुशी प्राप्त होगी। आय के साधनों में वृद्धि तथा खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 12 के बाद कोई गुप्त चिन्ता होगी। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे।

मार्च—अत्यधिक संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ नहीं हो पाएगा। व्यवसाय में उलझनें होंगी। ता. 12 के बाद मंगल परिवर्तन होने से धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

अप्रैल—राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ने से धन लाभ व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पदोन्नति एवं श्रेष्ठ जनों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। शुक्र के कारण मनोरंजन/विलास आदि कार्यों पर खर्च भी बढ़ेंगे।

मई—मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, पदोन्नति या धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 26 के बाद विरोधियों के कारण परेशानी एवं आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। विवाद आदि का भी भय होगा।

जून—मंगल 12वें होने से मानसिक तनाव एवं शरीर कष्ट, आकस्मिक खर्च अधिक होंगे। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। शनि उपासना करना शुभ रहेगी।

जुलाई—मंगल व राहु द्वादश भाव में होने से मासारम्भ में विघ्न/बाधाएँ, दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे। ता. 18 के बाद हालात में कुछ सुधार होगा।

अगस्त—मंगल की शुभ स्थिति होने से बिगड़ते कामों में सुधार होगा। गृह में कोई शुभ कार्य होगा। श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। धर्म-कर्म की ओर रूचि बनेगी।

सितम्बर—मंगल व शनि दोनों ग्रहों का प्रभाव होने से इस राशि पर मिश्रित प्रभाव होंगे। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु संघर्ष व खर्च भी अधिक रहेंगे।

अक्तूबर—मासारम्भ ता. 2 से राशिस्वामी मंगल वक्री हो जाने से आर्थिक व परिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। परन्तु गुरु की दृष्टि होने से गुजारे योग्य धन लाभ मिलता रहेगा।

नवम्बर—परिवार में किसी मंगल कार्य पर खर्च होंगे। आय के साधनों में वृद्धि होगी। भूमि, वाहन आदि सुख साधनों पर व्यय होगा।

दिसम्बर—धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात हो, स्त्री व सन्तान की ओर से खुशी का समाचार प्राप्त होगा। धर्म/कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी। मेष राशि पर अशुभ ग्रहों के उपाय हेतु हमारे कार्यालय से प्रकाशित राशिफल 2005 ई. का क्रय करें॥ **—पं० पन्ना लाल ज्योतिषी।**

वर्षफल वृष राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली

1 रा., 2, 3, 4 श., 5 चं., 6 गु., 7 के., 8 मं. बु. शु., 9 सू., 10, 11, 12

वर्षारम्भ में इस राशि पर मंगल, शुक्र, बुध एवं गुरु—इन चारों ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। जिससे अत्यन्त कठिनाईयों एवं संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 5 जन. से 28 जन. तक राशि स्वामी शुक्र अष्टम भाव में होने से बनते कामों में विलम्ब एवं अड़चनें रहेंगी। 13 जन. से 25 मई तक शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। 17 मार्च से 10 अप्रै. के मध्य शुक्र उच्च राशिस्थ (मीन) में होने से धन लाभ व उन्नति के आसार बनेंगे। 22 अप्रैल से 2 जून के मध्य इस राशि पर मंगल की विशेष दृष्टि होने से मानसिक तनाव, उत्तेजना व क्रोधाधिक रहेगा। खर्च भी अधिक रहेंगे। 11 अप्रै. से 4 मई के मध्य द्वादश भाव में शुक्र-राहु का योग होने से वृथा दौड़-धूप एवं तनाव अधिक रहेंगे। 5 मई से शुक्र के इसी राशि में संचार करने से मान-सम्मान, धन लाभ एवं पदोन्नति होने के अवसर प्राप्त होंगे।

12 अग. से राशि स्वामी शुक्र के नीच राशि में संचार करने से मानसिक तनाव एवं विद्या के सम्बन्ध में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे। आर्थिक परेशानियां भी रहें। भाई-बन्धुओं एवं पारिवारिक सदस्यों से

कलह-क्लेश रहे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। 2 अक्तू. से शुक्र की इस राशि पर स्वगृही दृष्टि होने से मान प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा कुछ बिगड़े काम बनेंगे। श्रावण में शिव उपासना करना लाभदायक होगा।

जनवरी—मासारम्भ में शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 5 से शुक्र अष्टम में आने से शरीर कष्ट एवं उलझने बढ़ेंगी।

फरवरी—मासारम्भ में शुक्र भाग्य स्थान में होने से भाग्योन्नति एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। मनोरंजन एवं ऐश्वर्यादि वस्तुओं पर व्यय अधिक रहेगा।

मार्च—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बाद ही धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। ता. 17 के बाद शुक्र उच्चस्थ होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा श्रेष्ठजनों से सम्पर्क बढ़ेंगे।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध भाग शुभ रहेगा। कोई रूका हुआ काम बनेगा। उत्तरार्ध में संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ नहीं हो पाएगा। अनावश्यक खर्च अधिक रहेंगे।

मई—इस राशि पर शुक्र की स्थिति होने से यह सप्ताह शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

जून—आय के साधनों में वृद्धि होगी। कोई नवीन कार्य योजना बनेगी। कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी भाग-दौड़ अधिक रहेगी। मासांत में परिवारिक कलह से अशान्ति हो।

जुलाई—धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं संतान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। गृहस्थ जीवन में तनाव रहेगा।

अगस्त—कारोबार मध्यम रहेगा। अत्यंत कठिनाईयों के बाद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 12 से शुक्र नीच राशिस्थ होने से पेट विकार एवं शरीर कष्ट होने की सम्भावना।

सितम्बर—आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे।

अक्तूबर—ता. 2 से इस राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि पड़ेगी। जिससे यह सप्ताह व्यवसाय की दृष्टि से शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। खर्चों की अधिकता होगी। ता. 26 से रुके हुए कार्यों में सुधार होगा।

दिसम्बर—स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेजी रहेगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। 2005 में इस राशि सम्बन्धी विशेष उपायों के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित वृहद् राशिफल का अध्ययन करें।

वर्षफल मिथुन राशि सन् 2005 ई.

वर्षारम्भ में मिथुन राशि पर सूर्य एवं मंगल की दृष्टियाँ पड़ रही हैं। 13 जन. से 25 मई तक शनि इसी राशि में संचार करेगा। **शनि साढ़ेसति** का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ में क्लिष्ट समस्याओं का सामना रहेगा। जिससे घरेलू एवं आर्थिक उलझनें अधिक रहेंगी। बनते कामों में अड़चने होंगी। 5 जन. से 25 जन. के मध्य राशिस्वामी बुध की दृष्टि रहने से कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 25 मई तक शनि की स्थिति होने से बनते कामों में अड़चने पैदा होंगी। मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। 26 मई से 7 जून तक बुध द्वादश में होने से दौड़-धूप अधिक तथा धन के खर्च भी अधिक होंगे। 8 जून से 23 जून के मध्य बुध इस राशि पर शुभ स्थिति में होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। इसी अवधि में इस राशि पर 15 जुलाई तक सूर्य की स्थिति तथा मंगल की दृष्टि पड़ने से किसी नज़दीकी बन्धु से कलह पैदा होने का भय होगा। मन में तनाव व उत्तेजना भी अधिक रहेगी। 23 जुला. से बुध वक्री होने से, जुलाई-अगस्त में आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। 28 सितं. से वर्षान्त तक गुरु की विशेष (नवम) दृष्टि रहेगी। व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाईयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

4 श.
2
5
चं.
3
1 रा.
6
12
7
गु.
9
11
के.
8
सू.
यूरे.
मं. बु. शु.
10 नैप.

जनवरी—दौड़धूप अधिक रहेगी। आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। नौकरी एवं व्यवसाय में विघ्न उत्पन्न होंगे। परिवार सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होंगी। ता. 13 के बाद लाटरी, सट्टे आदि से अचानक धन लाभ के योग होंगे।

फरवरी—इस राशि पर शनि का संचार और मंगल की दृष्टि होने से परिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। गुजारे लायक धन की प्राप्ति होगी। मासांत में कोई गुप्त परेशानी रहे।

मार्च—परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव व अल्प परेशानियां रहेंगी। स्थान परिवर्तन भी होने के योग हैं।

अप्रैल—मासारंभ में मिश्रित फल प्राप्त होंगे। उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क होंगे। मासान्त में आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण परेशानियां बढ़ेंगी।

मई—मासारम्भ में राशि स्वामी बुध नीच राशि में है, जिससे धन सम्बन्धी कुछ परेशानी उत्पन्न हो। समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। मासान्त में उदर में विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है।

जून—ता. 8 से बुध इसी राशि में संचार करेगा। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। पदोन्नति और धन लाभ के योग हैं। स्त्री व संतान सुख प्राप्त होगा।

जुलाई—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की दृष्टि पड़ने से धन हानि एवं बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। खर्च अधिक होंगे। ता. 18 के बाद लाभ व उन्नति के अवसर होंगे।

अगस्त—व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर खर्च होगा। क्रोध से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के संकेत हैं। ता. 19 के बाद आर्थिक उलझनों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी।

सितम्बर—तनाव व उलझनों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 17 से बुध उच्च राशि में आने से किसी शुभ काम पर खर्च। सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिले। कोई शुभ समाचार मिले।

अक्तूबर—मासारम्भ से ही बुध-गुरु की दृष्टि होने से यह मास शुभ फलदायी रहेगा। कोई बिगड़ा काम बनेगा। गृह में कोई मंगल कार्य आयोजित होगा।

नवम्बर—कठिनाइयों के बावजूद गुजारे योग्य धन के साधन मिलते रहेंगे। यात्रा की योजना बनेगी। अचानक खर्च भी बढ़ेंगे। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी।

दिसम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। किसी निकट सहयोगी की सहायता से कोई बिगड़ा हुआ कार्य बनेगा, खर्च भी अधिक होंगे। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी।

राशि सम्बन्धी अधिक जानकारी व उपायों हेतु हमारे कार्यालय से प्रकाशित वृहद् राशिफल पढ़ें॥

वर्षफल कर्क राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली

5 चं. | 3 | 6 | 4 | गु. 7 | श. | 2 | 1 | मं. बु. 8 | के. | 10 | रा. | 12 | श. | 9 सू. | 11

इस राशि पर शनि की साढ़ेसति का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 12 जन. तक तथा 26 मई से वर्षान्त तक शनि का संचार इसी राशि पर रहेगा। शनि साढ़ेसति के प्रभावस्वरूप वर्ष में संघर्ष अधिक रहेगा तथा लाभ कम होगा।

29 जन. से 21 अप्रैल के मध्य इस राशि पर मंगल की भी नीच दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप कार्य-व्यवसाय में अनेक आर्थिक कठिनाईयों का सामना रहेगा। मानसिक तनाव तथा घरेलू उलझनों का भी सामना रहेगा। किसी के साथ कलह-क्लेश एवं विवाद से बचें। दुर्घटना में चोटादि लगने का भय रहेगा। शत्रु द्वारा धन हानि की भी सम्भावना है। 25 अप्रैल के बाद व्यवसाय में अकस्मात् धन लाभ के भी योग हैं। जुलाई-अगस्त में अत्यन्त परिश्रम करने पर ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। जुलाई से मंगल की नीच दृष्टि पुन: इस राशि पर पड़ने से दुर्घटना या शत्रु द्वारा चोट आदि लगने का भय रहेगा। सावधानी बरतें। स्त्रियों को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

विद्यार्थी एवं स्त्री वर्ग के लिए 26 मई के पश्चात् की समयावधि विशेष संघर्षपूर्ण रहने के संकेत हैं।

जनवरी—मासारम्भ में शनि इस राशि पर होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट हो।

फरवरी—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि पड़ने से व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ तथा आय में कमी होगी। शत्रु हानि पहुँचाने के प्रयास करेंगे। खर्च भी अधिक होंगे।

मार्च—व्यवसाय में संघर्ष व भागदौड़ अधिक होगी। व्यर्थ की चिन्ता और बनते कार्यों में विलम्ब होने के योग हैं। अधिकांश समय मनोरंजन आदि कार्यों में व्यतीत होगा।

अप्रैल—बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ कार्य पर धन खर्च होगा। परन्तु शनि के कारण तनाव रहेगा।

मई—मासारम्भ में सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। परन्तु अधिकांश समय शुभ कार्यों में व्यतीत होगा। ता. 13-14 को किसी प्रिय बन्धु से व्यर्थ का तनाव उत्पन्न हो। खर्च भी अधिक बढ़ेंगे।

जून—शनि-साढ़ेसाति के कारण शरीर कष्ट और खर्च की अधिकता रहे। आराम के साधनों पर व्यय होगा। कार्य व्यवसाय में परेशानी रहे और निकट बन्धुओं से कलह-क्लेश का भय होगा।

जुलाई—मिश्रित फल प्राप्त होगा। नौकरी व व्यापार में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु परिवारिक कारणों से लाभ कम होगा। ता. 26-27 को भाई-बन्धु से तनाव और उलझनें बढ़ेंगी।

अगस्त—अत्यधिक परिश्रम के बाद धन लाभ और सुख साधनों में वृद्धि होगी। धन का दुरुपयोग भी होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और धार्मिक कार्यों पर अधिक खर्च होगा।

सितम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। व्यवसाय में व्यर्थ की परेशानियां और क्रोध की अधिकता से स्वास्थ्य विकार होगा। ता. 26-27 को धन सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहेगी।

अक्तूबर—मासारम्भ में मंगल की दृष्टि होने से परिवारिक परेशानी और कलह होने के योग हैं। समय एवं धन का खर्च व्यर्थ के कामों में होगा।

नवम्बर—व्यवसाय अथवा नौकरी में स्थिति मध्यम रहेगी। अधिकारी वर्ग में मन-मुटाव और व्यर्थ का तनाव रहेगा। असमंजस की स्थिति होने से अशान्ति का माहौल होगा।

दिसम्बर—मिश्रित फल प्राप्त होंगे। 10 दिसं. तक मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनों के कारण चिन्ताएं अधिक रहेंगी। बनते कामों में रुकावटें पैदा होंगी। ता. 12 के बाद बिगड़े कामों में सुधार होगा।

वर्षफल सिंह राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली

6 गु. | 4 श. | 7 | 5 | 3 | के. 8 | चं. | शु. मं. बु. | 2 | 9 | 11 | 1 | सू. | 10 | 12 | रा.

इस राशि को वर्षारम्भ से 12 जन. तक साढ़ेसति तथा 13 जन. से 25 मई तक शनि की दृष्टि रहेगी। फिर 26 मई के पश्चात् वर्षान्त तक शनि की साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। जिसके प्रभावस्वरूप शरीर कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक परेशानियाँ, आय कम व खर्च इत्यादि उलझनें पैदा होंगी। 12 फर. से 13 मार्च तक सूर्य की दृष्टि तथा 12 मार्च से 2 जून के मध्य इस राशि पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। 13 अप्रैल से 13 मई के मध्य राशि स्वामी सूर्य उच्च राशि में संचार करेगा। अतएवं इस अवधि में उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेलजोल बढ़ेगा। पदोन्नति एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। 26 मई के बाद स्वभाव में तेजी एवं क्रोध की भावना बढ़ेगी। अत्यधिक क्रोध एवं उत्तेजना से बचें। जून-जुलाई में व्यर्थ की दौड़-धूप एवं अपव्यय बढ़ेंगे। 16 अग. से 15 सितं. के मध्य राशि स्वामी सूर्य के इसी राशि में संचार करने से मानप्रतिष्ठा में वृद्धि तथा कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। 17 अक्तू. से 15 नवं. के मध्य सूर्य नीच राशि (तुला) में होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। किसी प्रिय व्यक्ति से मन-मुटाव पैदा हो। 16 नवं. के पश्चात् बिगड़े कामों में सुधार, भूमि, वाहन, स्त्री आदि सुखों की प्राप्ति होगी। **महिलाओं के लिए** 26 मई के पश्चात् की अवधि संघर्षपूर्ण होगी उन्हें **श्री दुर्गा सप्तशती** का विधिपूर्वक पाठ करना कल्याणकारी रहेगा। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

जनवरी—कार्य-व्यवसाय में संघर्ष व कठिनाईयों का सामना रहे। आराम कम व भाग-दौड़ अधिक रहे। व्यवसाय एवं घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहे तथा खर्च भी अधिक रहें।

फरवरी—इस राशि पर शनि की दृष्टि के कारण व्यवसाय में भागदौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिजूल खर्ची बढ़ेगी। किसी निकट बन्धु से मनमुटाव पैदा होने का भय होगा।

मार्च—आर्थिक संकट के योग हैं फिर भी प्रयत्न करते रहें। यात्रा में व्यर्थ चिन्ता अथवा धन सम्बन्धी चिन्ता हो। 12 मार्च से इस राशि पर मंगल की शुभ दृष्टि होने से धन लाभ प्राप्ति के योग हैं।

अप्रैल—मासारम्भ से ही शनि की तृतीय दृष्टि होने से स्वभाव में तेजी एवं क्रोध अधिक रहेगा। बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ पड़ेंगी। अपने भी परायों जैसे व्यवहार करेंगे।

मई—पूर्वार्द्ध भाग का फल शुभ रहेगा। किसी मित्र की सहायता से रुका हुआ कार्य बनेगा। परिवारिक सुख में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध भाग में संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पाएगा।

जून—इस राशि पर शनि की साढ़ेसति का अशुभ प्रभाव चल रहा है जिससे घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आय कम व खर्च अधिक होगा। स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

जुलाई—इस मास व्यवसाय में अत्यन्त कठिन हालात का सामना रहेगा। कार्यक्षेत्र में भाग-दौड़ अधिक होने पर भी आय अल्प रहेगी। ता. 10 के पश्चात् परिवार में परेशानियाँ बढ़ेंगी।

अगस्त—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

सितम्बर—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। व्यवस्तताएं बढ़ेंगी। किसी विदेशी सम्बन्धी से मुलाकात होगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक और धन लाभ में विघ्न होंगे। परिवारिक चिन्ता रहेगी।

अक्तूबर—धन लाभ व पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री सुख एवं परिवार में कोई मंगल कार्य आयोजित होगा। वाहनादि सुख साधनों पर व्यय हो। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क पैदा होंगे।

नवम्बर—सप्ताहारम्भ में कार्य व्यवस्तताएं अधिक रहेंगी। गुजारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त रहेंगे। 15 नवं. तक राशि स्वामी सूर्य नीच राशि में होने से बनते कामों में अड़चनें पड़ेंगी।

दिसम्बर—सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी परन्तु धन का खर्च विलास-मनोरंजन आदि कार्य पर अधिक होगा। उत्तरार्ध में अधिकांश समय वृथा कार्यों में व्यतीत होगा।

फलादेश एवं उपायों सम्बन्धी अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित राशिफल का अवलेकिन करें। **प्रकाशक**—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।

वर्षफल कन्या राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली

(कुण्डली: 7 के., 5 चं., मं. 8, 6, 4, बु., गु., श., 9 सू., 3, 10, 12, 2, 11, 1 रा.)

ग्रहगोचर—इस राशि पर गुरु का संचार 27 सितं. तक रहेगा। वर्षारम्भ से 12 जन. तक एवं तदुपरान्त 26 मई से वर्षान्त तक शनि की विशेष दृष्टि इस राशि पर पड़ेगी। **तृतीय स्थान पर मंगल, बुध व शुक्र का सम्बन्ध शुभ** है। फलस्वरूप अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझने बनी रहेंगी। 14 मार्च से 12 अप्रैल के मध्य सूर्य की तथा 22 अप्रैल से 17 जुलाई के बीच मंगल की विशेष दृष्टि पड़ने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहेगी। चोटादि लगने का भय, किसी बन्धु से वृथा तकरार का भय है। कलह-क्लेश से बचें। 25 मई से 23 जून के मध्य राशि स्वामी बुध की स्थिति अच्छी होने से धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। 24 जून से 16 सितं. के मध्य दौड़-धूप अधिक रहेगी। धन का खर्च अधिक रहेगा। स्वास्थ्य भी ठीक न रहेगा। शनि की दृष्टि के कारण मानसिक एवं गुप्त चिन्ताएँ भी रहेंगी। 17 सितं. से 24 अक्तू. के मध्य बुध की स्थिति अच्छी होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। 14 नवं. से बुध वक्री होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों एवं चुनौतियों का सामना रहेगा। इस राशि की **महिलाओं एवं विद्यार्थियों के लिए** 25 मार्च के बाद की समयावधि विशेष संघर्ष व कठिनाईयों से भरी होगी।

जनवरी—मासारम्भ में शनि की दृष्टि पड़ने से अत्यधिक परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बन पाएँगे। परन्तु खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे। उत्तरार्ध भाग में दौड़-धूप अधिक व परेशानियाँ बढ़ेंगी।

फरवरी—पूर्वार्द्ध भाग में विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। इस राशि पर गुरु वक्री होने के कारण घरेलू उलझनें व तनाव बढ़ेगा।

मार्च—सप्ताहारम्भ से बुध की स्वगृही दृष्टि होने से व्यवसाय से धन की प्राप्ति होगी। विदेश से पत्राचार व धन लाभ के योग हैं। विद्या में सफलता मिले। प्रिय बन्धु मित्र से मुलाकात होगी।

अप्रैल—गुरु की स्थिति के कारण गृह में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। नए-नए मित्रों से मेल-मिलाप होगा। पदोन्नति, धन और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी।

मई—राशि स्वामी बुध सप्तम स्थान में राहु युक्त होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। परिवार के बारे में चिन्ता होगी ओर मानसिक तनाव रहेगा। किसी व्यक्ति से अनबन के योग हैं।

जून—सप्ताह के पूर्वार्द्ध भाग में कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहेगा। रोजगार के लिए दौड़-धूप अधिक हो। ता. 13 के बाद किसी प्रियजन की सहायता से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

जुलाई—मासारम्भ में इस राशि पर शनि व मंगल की दृष्टियां पड़ रही हैं, जिसे इस सप्ताह में व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष अधिक रहेगा। आय कम व खर्च अधिक होगा। दुर्घटना से चोट आदि लगने का भय है।

अगस्त—इस मास मिला-जुला फल प्राप्त होगा। व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। विलासादि पदार्थों पर धन का व्यय अधिक होंगे।

सितम्बर—अत्यधिक परिश्रम करने पर भी आय कम रहे, खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के योग हैं। सावधानी बरतें।

अक्तूबर—उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धनागमन के साधनों में बढ़ौत्तरी और शुभ कार्यों पर खर्च होगा। ता. 19 से व्यर्थ की दौड़-धूप रहेगी। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

नवम्बर—आशाओं में सफलता और राजपक्ष से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नए कार्यों की योजना बनेगी, परन्तु केतु की स्थिति कारण कठिनाईयों रहेंगी।

दिसम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। व्यवसाय में उन्नति के साथ-साथ व्यर्थ की परेशानी रहेगी। अधिकांश समय एवं धन वृथा कामों में व्यतीत होगा।

नोट—अधिक जानकारी के लिए अपना जन्म समय, तारीख, मास, स्थान आदि का विवरण भेजकर वर्षफल बनवाएँ॥

वर्षफल तुला राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली

(कुण्डली: मं. बु. शु. 8, 9, 7, 6 गु., 5, सू., के., चं., 10, 4 श., 11, 1, 3, 12, रा., 2)

वर्षारम्भ से 24 मार्च तक इस राशि पर केतु का संचार रहेगा। यद्यपि राशि स्वामी शुक्र दूसरे भाव में मंगल, बुध के साथ योगकारक है। अतएव वर्षारम्भ से लगभग तीन महीनों तक अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। विशेष धन लाभ प्राप्ति में विघ्न/बाधाएं रहेंगी। 18 मार्च के बाद शुक्र उच्चराशि (मीन) में संचार करने से आय के स्रोतों में सुधार होगा। अप्रैल-मई में पदोन्नति अथवा धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। सवारी आदि सुख-साधनों पर व्यय होने के योग हैं। जून-जुलाई में दौड़-धूप अधिक होगी। खर्च की मात्रा बढ़ेगी। 12 अग. से 5 सितं. के मध्य शुक्र नीच राशि में रहने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। यात्रा होने के भी संकेत हैं। 6 सितं. से 1 अक्तू. के मध्य शुक्र के इसी राशि में संचार करने से धन लाभ, शुभ यात्रा, प्रियबन्धुओं से मिलाप आदि शुभ फल प्राप्त होंगे। अक्तू.-नवं. में कारोबार में अस्थिरता के हालात रहने के संकेत हैं। दिसम्बर में आर्थिक परेशानियों के कारण मन चिन्तित व तनावग्रस्त रहेगा। **विद्यार्थियों के लिए** मार्च तक संघर्षपूर्ण हालात रहेंगे।

महिलाओं के लिए—25 मार्च तक की समय अवधि विशेष संघर्ष व चुनौतियों से परिपूर्ण रहेंगी। आर्थिक परेशानियाँ भी रहेंगी।

जनवरी—मासारम्भ में केतु का संचार होने से विघ्न/बाधाओं एवं संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। मन में उचाटता एवं उलझनें रहेंगी। किसी बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं।

फरवरी—इस मास में अत्यधिक भाग-दौड़ करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। मासान्त में धन लाभ के योग हैं।

मार्च—किसी धार्मिक कार्य पर धन का खर्च होगा। अधिकांश समय मनोरंजन में व्यतीत होगा।

25 मार्च के बाद धन लाभ और सुख के साधनों में वृद्धि होगी परन्तु विशेष परिश्रम से कार्यों में सिद्धि होगी।

अप्रैल—मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र उच्चराशि (मीन) में संचार कर रहा है। जिससे उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। ता. 13 के बाद सूर्य की नीच दृष्टि होने से स्वास्थ्य में विकार और बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

मई—रुकावटों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधन बढ़ेंगे। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। माता-पिता का विशेष सहयोग लाभकारी होगा। धार्मिक कार्य करने में प्रवृत्ति होगी। शुभ कार्यों पर व्यय होगा।

जून—परिश्रम व दौड़-धूप अधिक करने पर भी निर्वाह योग्य धन ही प्राप्त होगा। व्यवसाय व कारोबार में उतार-चढ़ाव व परेशानियां उत्पन्न हों। मासान्त में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार और धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

जुलाई—मासारम्भ में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट हो। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे।

अगस्त—उलझनों के बावजूद धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। सोची योजनाओं में आंशिक लाभ प्राप्त होगा। वाहन आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

सितम्बर—शुक्र शुभ स्थिति होने से परिस्थितियों में सुधार होगा। कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। स्वास्थ्य में सुधार और धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

अक्तूबर—धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं संतान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। मासान्त में अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी।

नवम्बर—किसी नए कार्य की योजना बनेगी। निराशा की भावना को त्याग कर कार्य करना शुभ रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे।

दिसम्बर—ता. 16-17 को कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहें। किसी प्रियजन की सहायता से कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। अधिकांश समय व धन मनोरंजन आदि कार्यों पर व्यय होगा।

नोट—अधिक विस्तृत फल के लिए 275/- रूपये भेजकर वर्षफल बनवाएं।

वर्षफल वृश्चिक राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ में इस राशि पर राशि स्वामी मंगल का बुध, शुक्र के साथ सम्बन्ध बना हुआ है। जिससे कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 29 जन. से 11 मार्च तक मंगल द्वितीय स्थान में होने से परिवार में मनमुटाव एवं अशान्ति रहेंगी। 12 मार्च से 21 अप्रै. के मध्य मंगल उच्च राशि में संचार होने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी। भाग्य एवं आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से लाभ होगा। 14 मई से 13 जून के मध्य सूर्य की विशेष दृष्टि पड़ेगी, जिससे स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना अधिक रहेगी। धन का खर्च भी अधिक रहेगा। 14 जून से 16 जुला. के मध्य निकट भाई-बन्धुओं से विवाद या गृह कलह होने की सम्भावना है। सद्व्यवहार बनाए रखें। 18 जुला. से वर्षान्त तक राशि स्वामी मंगल की इस राशि पर स्वगृही दृष्टि रहेगी जिससे संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। खर्च की मात्रा भी बढ़ेगी। मंगल 2 अक्तू. को वक्री होकर 10 दिसं. को मार्गी होगा। इस समयावधि में खर्च अधिक तथा नए कार्यों में निवेश होगा। परन्तु शत्रुओं से विशेष सावधानी बरतें। इस राशि की महिलाओं को क्रोध एवं उत्तेजना से बचना चाहिए अन्यथा स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

जनवरी—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। मन परेशान रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बने। आय कम और धन का अपव्यय होगा।

फरवरी—मासारम्भ वृथा भ्रमण और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। किसी निकटस्थ व्यक्ति द्वारा धोखा मिलने की सम्भावना होगी। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में धन लाभ मध्यम होगा। व्यय भी बढ़ा-चढ़ा रहेगा।

मार्च—मासारम्भ में बिगड़े कामों में कुछ सुधार और उन्नति होने के योग हैं। व्यर्थ की भाग-दौड़ एवं खर्च की अधिकता रहेगी। विघ्नों-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के साधनों में वृद्धि होगी।

अप्रैल—आमदन व धन लाभ के साधन बढ़ेंगे। संतान की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा। नवीन कार्य-सम्बन्धी योजना बनेगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी।

मई—परिवारिक व आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। गुजारे योग्य धन की प्राप्ति होगी। निकट बन्धु से अनबन होगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा होते हुए भी सामाजिक कार्यों में विघ्न रहेंगे।

जून—मासारम्भ में परिश्रम और दौड़धूप अधिक रहेगी। सरकारी विभाग में काम पैंडिंग रहेंगे। नौकरी अथवा व्यापार में कोई समस्या खड़ी होगी। शरीर कष्ट व गुप्त रोग होने के योग हैं।

जुलाई—व्यवसायिक क्षेत्र में व्यस्तताएँ बनी रहेंगी। रुका हुआ धन मिलेगा। विरोधियों पर विजय होगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगस्त—आय की स्थिति में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। अचानक कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा।

सितम्बर—इस मास में ग्रह-स्थिति शुभ रहेगी जिससे बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ व प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

अक्तूबर—राशि स्वामी **मंगल की स्वगृही दृष्टि** होने से धन सम्बन्धी कार्यों में अच्छा फल प्राप्त होगा। दौड़-धूप अधिक रहेगी। विदेशी मित्रों से मेल-जोल और धन लाभ होगा।

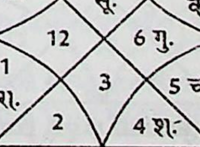
नवम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में कारोवार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहेगा। रोजगार के लिए दौड़धूप अधिक हो। मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। व्यापार-नौकरी में उन्नति के साधन बढ़ेंगे।

दिसम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में शुक्र वक्री होने से उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धन-लाभ की प्राप्ति होगी। शुभ कार्य पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ विशेष मानसिक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा।

इस राशि के जातकों को अरिष्ट निवारण हेतु श्री हनुमान उपासना करना कल्याणकारी रहेगा।

वर्षफल धनु राशि सन् 2005 ई.

वर्ष प्रवेश कुण्डली



वर्षारम्भ से 13 जन. तक इस राशि पर भाग्येश सूर्य का संचार रहने से संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 13 जन. से 25 मई तक इस राशि पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से घरेलू परेशानियों एवं कारोबारी उलझनों का सामना रहेगा। राशिस्वामी गुरु दशम भाव में शत्रु राशिस्थ होने से व्यवसाय में दौड़धूप अधिक तथा आय भी कम रहेगी। 4 जून तक राशिस्वामी गुरु वक्री अवस्था में संचार करने से आर्थिक दृष्टि से विशेष शुभ नहीं है। 26 मई के बाद शनि की दृष्टि हट जाने से बिगड़े कामों में सुधार तथा गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे। परन्तु शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप तनाव भी रहेगा। 28 सितं. से राशिस्वामी गुरु लाभ

स्थान में संचार करने से अकस्मात् धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। इस राशि की **स्त्रियों के लिए** वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों से भरा होगा। उत्तरार्द्ध भाग में परिवारिक खुशियों की उपलब्धि होगी।

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य का संचार होगा। सवारी आदि सुख के साधन मिलने के योग हैं। गृह कार्यों पर धन का व्यय होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति के सहयोग से बिगड़े कार्य बनेंगे।

फरवरी—आय कम और खर्च अधिक होगा। स्त्री व संतान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। ता. 10-11 को अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। अचानक उन्नति व लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग में बनते कामों में बाधाएँ उत्पन्न होंगी। उत्तरार्ध में प्रयास करने पर बिगड़े कार्य बनेंगे। व्यवसाय में आंशिक लाभ होने के योग हैं। घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध भाग में आय कम, परन्तु खर्च अधिक रहेंगे। उत्तरार्ध भाग में भाग्येश सूर्य उच्चराशि में आने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व पदोन्नति के योग हैं।

मई—इस मास धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। राज दरबार में जाने से मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी में उन्नति के साधन बनेंगे। घर की सुख शान्ति में मित्रों द्वारा विघ्न पड़ेगा। थोड़ी सी उत्तेजना से काम बिगड़ सकता है।

जून—शनि की ढैय्या के कारण शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। लाभ कम व खर्च अधिक होगा। विभिन्न उलझनों का सामना रहेगा। मासान्त में कोई बिगड़ा कार्य बनने के योग हैं।

जुलाई—व्यवसाय में आंशिक सफलता एवं विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। ता. 26, 27 को आर्थिक उलझनें पैदा होंगी परन्तु परिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

अगस्त—आर्थिक हालात आगे से बेहतर होंगे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। समाज में मान-इज्जत बढ़ेगी। विदेशों से सम्बन्धित कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होने की सम्भावनाएं हैं। मासान्त में शुभ समाचार और अप्रत्याशित लाभ भी होंगे।

सितम्बर—शनि की ढैय्या होने से व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक रहेगा। ता. 2, 3 को परिश्रम करने पर भी धन प्राप्ति आशा अनुरूप नहीं होगी। ता. 4, 5 को परिवार में तनाव व वैचारिक मतभेद होंगे।

अक्तूबर—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। संतान सम्बन्धी कष्ट एवं चिन्ता बढ़ेगी।

नवम्बर—व्यवसाय व कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय से व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न हो। ता. 18, 19 को प्रयास करने पर धन लाभ के अवसर पहले से बेहतर होंगे।

दिसम्बर—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अकस्मात् धन लाभ भी होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची होगी। विलासादि कार्यों पर व्यय होगा। कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न होंगी।

वर्षफल मकर राशि सन् 2005 ई.

मकर राशि पर वर्षारम्भ से 12 जन. तक तथा उसके बाद 26 मई से वर्ष के अन्त तक राशि स्वामी शनि की स्वगृही दृष्टि रहेगी। इस राशि पर गुरु की नीच दृष्टि 27 सितं. तक रहेगी, जिससे वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों में से गुजरेगा। 13 जन. से 25 मई तक कार्य/व्यवसाय में विशेष परिश्रम करने पर भी समुचित धन लाभ नहीं हो पाएगा। यद्यपि 12 मार्च से 21 अप्रैल के मध्य इस राशि पर मंगल उच्च राशिस्थ होने से अकस्मात् धन लाभ होने के अवसर प्राप्त होंगे। गुरु की दृष्टि के प्रभावस्वरूप शुभ कार्यों पर खर्च भी अधिक रहेंगे। 28 सितं. के बाद अकस्मात् धन लाभ व भाग्योन्नति के योग हैं। कुछ रुके हुए कामों में सफलता मिलेगी। इस राशि की **स्त्रियों के लिए** वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग कैरियर एवं गृहस्थ जीवन के लिए चुनौतियों से भरा रहेगा। **विद्यार्थियों के लिए** भी उत्तरार्द्ध भाग कैरियर की दृष्टि से सफलता प्रदान करने वाला होगा।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

11 | 9 सू. | 8 मं. बु. शु. | 12 | 10 | 1 रा. | 7 के. | 2 | 4 | 6 गु. | 3 | 5 श. चं.

जनवरी—इस मास आकस्मिक धन लाभ होगा। कार्य व्यवसाय में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। भूमि व वाहनादि का लाभ होगा। संतान सम्बन्धी चिंता रहेगी।

फरवरी—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग का फल शुभ रहेगा। किसी मित्र की सहायता से रुका हुआ कार्य बनेगा। उत्तरार्द्ध में संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पाएगा।

अप्रैल—इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। पराक्रम व अपने उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि होगी। उच्चप्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क बनेंगे। सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

मई—गत किए गए प्रयासों में भाग्योन्नति और श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क लाभकारी होगा। भूमि सुख एवं वाहन प्राप्ति भी सम्भव होगी, परन्तु नौकरी में अफसरों से तनाव हो सकता है।

जून—पूर्वार्द्ध भाग में विघ्न/बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। उत्तरार्ध में घरेलू उलझनें व कलह के कारण तनाव होगा।

जुलाई—मासारम्भ में गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप परिवारिक वातावरण में खुशहाली होगी। स्त्री व संतान की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा।

अगस्त—उलझनों के बावजूद धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। सोची योजनाओं में आंशिक लाभ प्राप्त होगा। प्रयास करने पर धन प्राप्ति के साधन बनेंगे।

सितम्बर—विलासिता के कार्यों पर धन का व्यय होगा। आर्थिक कार्य में व्यवधान के योग हैं। विशेष परिश्रम करने पर ही लाभ होगा।

अक्तूबर—कार्य व्यवसाय में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में अड़चनों के कारण परेशानियां बढ़ेंगी।

नवम्बर—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। स्त्री व परिवार से सुखद समाचार मिलेगा। विदेश सम्बन्धी कार्य किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से बन जाएंगे। पुरुषार्थ करने पर लाभ होगा।

दिसम्बर—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। किसी मित्र की सहायता से कोई रुका हुआ कार्य बनेगा। परिवार में खुशी का अवसर बनेगा। शुभ कार्य पर खर्च होगा।

वर्षफल कुम्भ राशि सन् 2005 ई.

वर्ष के आरम्भ से राशि स्वामी शनि छटे भाव में, तदुपरान्त 13 जन. से 25 मई तक वक्री होकर पंचम भाव में संचार करेगा। वर्षारम्भ से 28 जन. तक इस राशि पर मंगल की भी विशेष दृष्टि रहेगी, जिससे प्रारम्भिक मास अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में गुजरेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में भी विघ्न-बाधाएं रहेंगी। 12 फर. से 13 मार्च के मध्य सूर्य का संचार तथा 22 अप्रैल से 2 जून के बीच मंगल

वर्ष प्रवेश कुण्डली

1 रा., 12, 11 यूरेनस, 10 नैप., 9 सू., 8 मं. बु. शु., 7 के., 6 गु., 5 चं., 4 श., 3, 2

कुम्भ राशि पर संचार करेगा। जिससे इस समयावधि में जातक को क्रोध एवं तनाव अधिक रहेंगे। धन का अपव्यय भी अधिक रहेगा। घरेलू व व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। 16 अग. से 15 सितं. के मध्य इस राशि पर सूर्य की दृष्टि होने से परिवारिक परेशानियाँ रहेंगी। 28 सितं. से वर्षान्त तक इस राशि पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। **महिलाएं**—वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन समस्याओं से युक्त रहेगा। 28 सितं. के बाद परिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी।

कुम्भ राशि के विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग चुनौतियों से भरा रहेगा।

जनवरी—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म तथा बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

फरवरी—राशि स्वामी शनि अभी वक्री है जिससे शुभ कार्यों में अड़चनें रहेंगी। उत्साह की भी कमी रहेगी। आय भी कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

मार्च—धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं संतान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। मासान्त में कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी।

अप्रैल—व्यवसाय व कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय से व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न हो। प्रयास करने पर धन लाभ के अवसर पहले से बेहतर होंगे।

मई—आशाओं में सफलता प्राप्त होगी। कुछ रुके हुए कार्यों में सिद्धि प्राप्त होगी। घर में कोई मंगल कार्य होगा व किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्बन्ध बनेगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी।

जून—घरेलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें।

जुलाई—अत्यधिक परिश्रम के बाद धन लाभ और सुख साधनों में वृद्धि होगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ और धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। वाद-विवाद से बचें।

अगस्त—पूर्वार्द्ध में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। उत्तरार्द्ध में रुके हुए कार्यों में सुधार, आय कम-खर्च अधिक होगा।

सितम्बर—अत्यधिक भाग-दौड़ और परिश्रम करने से धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। अचानक किसी मंगल कार्य पर व्यय होगा। मान-सम्मान में वृद्धि और व्यय होगा। रुके कार्यों में प्रगति होगी।

अक्तूबर—अत्यधिक परिश्रम के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। अकस्मात् धन लाभ होगा परन्तु खर्च भी बढ़-चढ़ कर होगा। मासान्त में कुछ अप्रत्याशित लाभ भी होंगे।

नवम्बर—परिश्रम से कोई विशेष रुका हुआ कार्य बनेगा। आय व्यय समान रहेगा। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। स्त्री एवं संतान की तरफ से शुभ सूचना मिलेगी।

दिसम्बर—मासारम्भ में शनि वक्री होने से आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

अधिक विस्तृत फलादेश के लिए जन्म-तारीख आदि का विवरण भेज कर बड़ा वर्षफल बनवाएं।

वर्षफल मीन राशि सन् 2005 ई.

वर्षारम्भ से इस राशि पर गुरु की सप्तम स्वगृही शुभ दृष्टि पड़ रही है जिससे प्रारम्भ में धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। किन्हीं श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। ता. 29 जन. से 11 मार्च के बीच इस राशि पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि पड़ने से व्यवसाय में दौड़धूप अधिक रहेगी। धन का अपव्यय तथा क्रोध की भावना अधिक रहेगी। 12 से 21 मार्च के मध्य भाग्येश मंगल उच्चराशि में प्रवेश होकर धन स्थान को स्वगृही दृष्टि से देखेगा, जिससे आय के साधनों में वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उत्साह व पराक्रम में वृद्धि होगी। गुरु के कारण शुभ कार्यों पर खर्च भी होंगे। 14 मार्च से 12 अप्रैल के मध्य इस राशि पर सूर्य का संचार सूर्य का संचार होने से स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना बढ़ेगी। स्वास्थ्य में खराबी एवं वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। **ता. 25 मार्च से वर्षान्त तक इस राशि पर राहु का संचार होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी,** यद्यपि 27 सितं. तक गुरु की दृष्टि रहने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

रा. 1, 12, 11, 10 नैप., 9 सू., 8 मं. बु. शु., 7 के., 6 गु., चं. 5, 4 श., 3, 2

महिलाएं व विद्यार्थी वर्ग—महिलाओं के लिए वर्ष के प्रारम्भिक तीन महीनों में शुभ एवं लाभदायक काल रहेगा। तदुपरान्त संघर्ष व कठिनाईयों से भरा रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार होने के संकेत हैं। सावधानी बरतें।

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर राशिस्वामी गुरु की शुभ दृष्टि पड़ रही है, जिससे यह मास शुभ फलदायक रहेगा। पदोन्नति व धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ अधूरे कार्य पूर्ण होंगे।

फरवरी—मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। मासान्त में दौड़-धूप तथा फिजूलखर्ची बढ़ेगी।

मार्च—निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि पड़ने से परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेगी। आराम कम व दौड़-धूप अधिक रहेगी।

अप्रैल—विशेष परिश्रम और भाग-दौड़ के उपरान्त सफलता के योग होंगे। मासान्त में कोई शुभ समाचार के मिलने योग हैं। **वैशाख संक्रान्ति** को **वैशाख माहात्म्य का पाठ** व यथाशक्ति दान करना शुभ होगा। उत्तरार्ध भाग में शुभ फल घटित होंगे।

मई—राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि के कारण शुभ कार्यों पर व्यय होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। आय व सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

जून—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। स्त्री-सुख एवं परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। मासान्त में बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

जुलाई—कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। परन्तु खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। शरीर कुछ अस्वस्थ रहे।

अगस्त—इस राशि पर गुरु एवं मंगल की दृष्टि होने से यह सप्ताह शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विघ्नों बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

सितम्बर—मासारम्भ में धन लाभ व सुख के साधनों में वृद्धि होगी। प्रिय बन्धु से मुलाकात और सम्बन्धियों से सहयोग प्राप्त होगा। बिगड़े कार्य बनेंगे।

अक्तूबर—पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। सवारी का सुख मिले। उत्तरार्द्ध भाग में घरेलू उलझन के कारण मन परेशान रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हों।

नवम्बर—आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

दिसम्बर—इस राशि पर राहु के संचार के कारण मानसिक अस्थिरता रहेगी। परन्तु कार्य व्यवसाय में सुधार होगा। अवांछित व्यक्तियों के कारण कार्यों में परेशानी होगी। ता. 20 के पश्चात् बौद्धिक कार्यों में प्रगति होगी।

वि. संवत् २०६२ में सम्वत्सर, राजा, मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय: नम:। अचिन्त्याव्यक्तरुपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नम:। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्। चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालुं स्व प्रपितामहम्। स्मरन् भक्त्या लोकहितार्धाय सुख सम्पत्ति हेतवे। **विलम्ब** नामक विक्रमी नव सम्वत्सरे शुभे त्रिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३०) वर्ष प्रवेशे पं. पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, कुर्वे पंचाँग दिवाकरम्॥

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१०६ के अन्तर्गत श्री विक्रमी संवत् २०६२ कलि (कल्कि) संवत् ५१०६ श्री कृष्ण संवत् ५२४१, सप्तर्षि संवत् ५०८१, श्री बुद्ध संवत् २६२८/२९ श्री महावीर निर्वाण संवत् २५३०/३१, शक संवत् १९२६-२७, हिजरी सन् १४२५-२६, इंग्लिश सन् २००५/०६ ई०, खालसा सम्वत् ३०७, नानकशाही सम्वत् ५३७, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

बार्हस्पत्यमान से विष्णु विंशति का ३२वाँ नया **विलम्ब नामक** सम्वत्सर २०६२ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 9 अप्रैल, सन् 2005 ई., शनिवार से प्रारम्भ होगा। संकल्पादि कार्यों में इसी का प्रयोग रहेगा।

विलम्ब नामक नव सम्वत्सर का फल–

विलम्बिवत्सरे भूपा: परस्पर विरोधिन:।प्रजापीडा तु अनर्थत्वं तथापि सुखिनोजना:॥

नारद संहितानुसार भी

विलम्बिवत्सरे राजविग्रहो भूरिवृष्टय:।आतंक पीडिता लोका: प्रभूतं चापरं फलम्॥

विलम्ब नामक सम्वत्सर के आने पर प्रशासकों में परस्पर विरोध एवं टकराव पैदा होते रहते हैं। सामान्य वर्ग के लोगों को मानसिक, शारीरिक व आर्थिक दुखों, कष्टों एवं परेशानियों का सामना रहेगा। विशेष वर्ग के लोगों में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। समाज में न्याय व उन्नति के अधिकांश कार्यों में अड़चने एवं विलम्ब होंगे।

नारद संहिता के अनुसार विलम्ब नाम का सम्वत्सर आने पर प्रशासकों में परस्पर विग्रह एवं वैमनस्य रहता है। वर्षा प्रचुरता में होती है। सामान्य प्रजा रोग, शोक, महँगाई एवं आतंक आदि कारणों से पीड़ित एवं आतंकित रहती है। तथापि इन विपरीत आपदाओं के होने पर भी कुछ लोगों को ऐश्वर्य, लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

(१) वर्ष के राजा शनि का फल–

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूत रोगै: परिपीड्यते जन:।
युद्धं नृपाणां गद तस्कराद्यै: भ्रमन्ति लोका: क्षुधिताश्च देशान्॥

—अर्थात् वर्ष का राजा शनि हो, तो उस वर्ष अनुपयोगी वर्षा के कारण लोग विविध प्रकार के क्लिष्ट रोगों से पीड़ित रहें। प्रशासकों एवं प्रमुख लीडरों के बीच वैमनस्य, विरोध एवं टकराव की स्थिति रहे। चोरी, ठगी, तस्करी, लूटमार एवं बेईमानी की वारदातें अधिक होंगी। कहीं दुर्भिक्ष, आतंक तथा कहीं बाढ़ादि आपदाओं के कारण लोग रोग, शोक, भूख-कष्टों आदि से व्याकुल होकर अन्य प्रदेशों में जाने के लिए विवश हों।

(२) वर्ष का मन्त्री बुध का फल–

शशि सुते शुभ मन्त्रि समागते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यव-मसूर-चणान्न महर्घताम्॥

—वर्ष का मन्त्री बुध हो तो अधिकांश लोग विशेषतया स्त्रियाँ अपने पतियों के संग भोग-विलासादि विषयों में अधिक आसक्त रहेंगी। धन का प्रसार अधिक हो। वर्षा भी प्रचुर मात्रा में हो, जौं, चने, मसूर, तेल, गेहूँ, धान्यादि तथा पैट्रोलियम वस्तुओं के भाव तेज होंगे। शिल्प-कला सम्बन्धी, खाद्यान्न एवं भोग्य वस्तुओं से सम्बन्धित व्यापारी तथा बुद्धिजीवी लोग व्यवसाय द्वारा विशेष लाभान्वित होंगे। गर्मी-खुश्की एवं त्वचा सम्बन्धी रोग अधिक होंगे॥

(३) सस्येश शनि का फल–

रविसुते यदि धान्यपतौनृपतिभि: परिपीडित विग्रहा:।
गदभयं तुषधान्य हरं सदा दुरित वादविवादयुत नरा:॥

—जिस वर्ष ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी (सस्येश) शनि हो, तो उस वर्ष सामान्य लोग सरकारी तन्त्रों के विचित्र नियमों के कारण दु:खी एवं पीड़ित रहें। क्लिष्ट रोगों का भय भी हो। जौं, गेहूँ, मक्का आदि की फसलें खराब हों। अधिकांश लोग वृथा वाद-विवाद और वृथा झगड़ों में संलिप्त रहें।

(४) धान्येश गुरु का फल–

गुरौ धान्यपतौ याते यवगोधूमशालय:।पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादय:॥

—वर्ष में धान्यपति गुरु हो, तो ग्रीष्मकालीन फसलें—गेहूँ, जौं, बाजरा, धान्य आदि की कृषि अच्छी होगी। ब्राह्मण आदि विद्वान् एवं धर्म परायण लोग यजन-याजन आदि धार्मिक कृत्यों में प्रवृत्त होंगे।

(५) मेघेश मंगल का फल–

अवनिजे जलदस्यपतौ भुविश्रुति विचार विहीन धरामरा:।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्॥

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) मंगल हो, तो ब्राह्मणादि उच्च वर्ण के लोग अपने धर्म-कर्म से च्युत अर्थात् शास्त्र मर्यादा के कर्त्तव्यों से च्युत होंगे। कहीं वर्षा बहुत कम और कहीं बहुत

अधिक होगी। कहीं भूस्खलन एवं बाढ़ादि तथा कहीं पेय पानी की कमी के कारण दुर्भिक्ष आदि का भय होगा।

(६) रसेश चन्द्र का फल—

यदि विधौरसपे भुविमानवो नव नवांयुवती बुभुजे प्रियाम्।
जलधरा बहुवारिधि धायका रसवती धन-धान्यवती मही॥

—रसों का स्वामी चन्द्र होने पर युवक युवतियों के नए-नए रूपों से आकर्षित होकर विलासमय-जीवन यापन करने लगते हैं। बादल वर्षा बहुत अधिक करें। ईख, गुड़, चीनी, दूध, तैलादि रसदार वस्तुओं का उत्पादन अधिक मात्रा में हो। पृथ्वी पर गेहूँ, धान्यादि अनाज एवं लोगों में धन-सम्पदा का प्रसार बढ़ेगा।

(७) नीरसेश शनि का फल—

अयः-पिण्डादि लोहानां कृष्णवस्त्रादि वस्तुनाम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरसनायके॥

—नीरसेश (धातुओं का स्वामी) शनि होने से स्टील-लोहा एवं लौह निर्मित कलपुर्जे, कच्चा लोहा एवं काले वर्ण की वस्तुएँ जैसे—कोयला, लोहा-स्टील आदि धातुएँ, पैट्रोल, ऊनी व गर्म वस्त्रों के भावों में तेजी हो।

(८) फलों के स्वामी मंगल का फल—

फलपतिर्यदि भूतनयो भवेत्र बहु पुष्प फलान्वित पादपाः।
गदभयान्वित देश जनस्तदा नृपतयो बहु विग्रहकारकाः॥

—अर्थात् फलों का स्वामी मंगल हो, तो वृक्षों पर फल-फूल, वनस्पतियों, औषधियों की पैदावार कम हो। लोगों में अनेक प्रकार के (नानाविध) क्लिष्ट रोगों से कष्ट एवं भय हों। देशाध्यक्षों (प्रशासकों) में परस्पर विग्रह, टकराव एवं युद्ध का भय रहे।

(९) धनेश शुक्र का फल—

द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युताः समधना सकला ननु मानवाः।
समसुखा क्रय-विक्रय जीविनो नृपतयो जनपालन पत्पराः॥

—शुक्र धनेश (कोशपति) हो तो सामान्य लोग भी सरकारी क्षेत्रों द्वारा लाभान्वित होने में सफल होते हैं। अर्थात् सरकारी नीतियों से निम्न वर्ग के लोग भी लाभ प्राप्त करने में सफल होते हैं। क्रय-विक्रय करने वाले व्यापारी लोग लाभ व उन्नति में समान रूप से सुख ऐश्वर्य एवं लाभ के भागी होंगे। प्रशासक वर्ग लोक हितकारी योजनाओं एवं कार्यों में तत्पर होंगे।

(१०) दुर्गेश (सेनापति) मंगल का फल—

अवनिजो गढ़नायकतां गतो विविध दुख वियोग समन्विताः।
जनपदेषु जनाः क्रय-विक्रये मय विशेषतया न फलं क्वचित्॥

—दुर्गेश (सेना का स्वामी) मंगल होने पर सामान्य लोग (रोग, महँगाई, आवश्यक वस्तुओं की कमी, महँगाई, असुरक्षा एवं कठोर सरकारी नियमों आदि) अनेक प्रकार के दुखों से परेशान रहें। क्रय-विक्रय में लगे व्यापारी लोग (पेचीदा सरकारी नीतियों के कारण) व्यापार में विशेष रूप से लाभान्वित न हो पाएँगे।

✪ **रोहिणी का वास**—रोहिणी का वास '**तट**' पर है। **फल—"तटे वृष्टि सुशोभना"**—अर्थात् तट पर रोहिणी का वास हो, तो उस वर्ष उत्तम (अच्छी) वर्षा होने के योग बनते हैं। फलस्वरूप धान्य, चावल, गेहूँ, चने, गन्ना, वृक्ष, घास एवं अन्य पौधों की पैदावार अच्छी होगी।

✪ **समय—अर्थात् सम्वत्** का वास इस वर्ष भी "**धोबी**" के घर पर होने से वर्षा विपुल मात्रा में होगी। "**रजके वृष्टिरूत्तमा**" कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बावड़ियाँ, दरिया आदि जल से आपूरित होंगे। धान्य, चने, चावल, ईख, गेहूँ, मक्की, हरी सब्जियाँ, वृक्षों व फलों की पैदावार अच्छी होगी। लोगों में सुख व ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे।

✪ **सम्वत् का वाहन महिष (भैंसा)** होगा इसके प्रभावस्वरूप वर्ष में विषम (असमान) वर्षा होती है—अर्थात् कहीं अतिवर्षा से बाढ़, भूस्खलन, फसलों को हानि, तो कहीं वर्षा की कमी से पेयजल की कमी, दुर्भिक्ष, अकाल आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय हो। सर्व-साधारण जनोपयोगी वस्तुओं की कमी एवं मूल्य वृद्धि हो। राजनीतिक क्षेत्रों में भी परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक रहें।

✪ **चतुर्मेघों में संवर्त** नाम का मेघ होगा। **संवर्ताख्योनरिदः** इस मेघ के प्रभावस्वरूप लोगों में सात्विक धर्म-कार्यों की कमी रहे। लोग काम वासनाओं में अधिक आसक्त रहें। वर्षा प्रचुर मात्रा में हो। पूर्वी हवाएँ अधिक चलें।

✪ **नवमेघों में वायु** नाम का मेघ रहेगा। इसका फल शुभ नहीं कहा गया। उपयोगी वर्षा की कमी रहे। अधिकांश धान्यों का नाश हो।

✪ **द्वादश** नागों में '**हेममाली**' नाम का नाग होगा। इसका फल शुभ माना गया है—"**समस्त धान्य सम्पूर्ण प्रभूत जल वृष्टितः**"—अर्थात् हेममाली नामक नाग होने से सम्वत् में वर्षा विपुल मात्रा में होने से शीतकालीन फसलें धान्य, चावल, मक्की, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, ईख, जूट, कपास, पटसन आदि की उपज अच्छी होगी।

शनि की दृष्टि

—वि. सम्वत् २०६२ के प्रारम्भ (9 अप्रैल, 2005 ई.) से 25 मई, 05 ई. तक शनि **मिथुन राशि** में ही संचार करेगा। तदुपरान्त 26 मई से वर्षान्त तक **कर्क राशि** में संचार करेगा।

मिथुन राशि में संचारकालीन शनि की क्रूर दृष्टि सिंह, धनु एवं मीन राशियों पर रहेगी। फलस्वरूप शनि की क्रूर दृष्टि का प्रभाव पूर्व तथा उत्तर दिशाओं पर और सिंह, धनु व मीन राशियों के व्यक्तियों तथा उनके प्रभाव क्षेत्र में पड़ने वाले देशों पर विशेष रूप से रहेगा।

26 मई के पश्चात् शनि की विशेष दृष्टि क्रमशः कन्या, मकर एवं मेष राशियों पर पड़ने से पूर्व (मेष) के अतिरिक्त दक्षिण दिशा पर पड़ने वाले भूभागों व प्रदेशों पर विशेष अधिक प्रभाव रहेगा। इसी भान्ति मेष, कन्या व मकर राशियों से सम्बन्धित व्यक्तियों के जीवन पर भी विशेष अधिक

प्रभाव रहेगा। शनि की क्रूर दृष्टि के प्रभावस्वरूप पूर्व व दक्षिणी प्रान्तों एवं गोलार्ध में किन्हीं देशों में राजनीतिक उथल-पुथल, परिवर्तन, आतंक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। भारत के भी दक्षिण-पूर्वी दिशाओं में राजनीतिक अस्थिरता, दुर्भिक्ष, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों का भय रहेगा।

वर्षा आदि चार स्तम्भों का फल

(1) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क मात्र ३७ प्रतिशत है। फलस्वरूप आगामी वर्ष भी खण्ड वर्षा के योग हैं अर्थात् कहीं अधिक एवं कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कहीं पेयजल की समस्याएं उत्पन्न होंगी, भूमिगत जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। कहीं बाढ़ एवं कहीं सूखे, दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी।

(2) तृणस्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क २१ प्रतिशत है। फलस्वरूप तिनके, बांस, घास, पुष्पों, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों के उत्पादन में कमी रहेगी। पशुओं के लिए चारे का अभाव रहे। फलस्वरूप गौं, भैंस आदि चौपाय पशुओं द्वारा दुग्ध-उत्पादन में भी कमी रहे।

(3) वायु-स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क ९२.४% है। फलस्वरूप देश के कुछ प्रान्तों में भयंकर तूफान तथा वायु वेग से भयंकर जन-धन हानि तथा खड़ी फसलों को नुकसान पहुँचेगा।

(4) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क ९८% है। फलस्वरूप हाड़ी-सौणी की फसलों की अच्छी पैदावार होने से किसानों को विशेष लाभ होगा। गेहूँ, गन्ने, चावल तथा दालवाना का उत्पादन विशेष होगा।

संवत् के शुभाशुभ विचार में इन स्तम्भों का विशेष विचार किया जाता है।

आर्द्रा कुण्डली से वर्षा-कृषि आदि विचार—संवत् २०६२

आर्द्रा प्रवेश कुं. ५४/४३

बु. ३ सू. शु.
१
रा. १२ मं.
४ श.
२
५
११
६ गु. के
८
१०
७
९ चं.

वि. संवत् २०६२ में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी तिथि, मंगलवार ५४/४३ घट्यादि अर्थात् २१ जून की रात्रि ३ बजकर २० मिनट पर मूला नक्षत्र तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा कालीन वृष लग्न में प्रविष्ट होगा।

फल—आर्द्रा प्रवेश लग्न (वृष) पृथिवी तत्त्व राशि में हुआ है। लग्नेश शुक्र धन भाव में सूर्य, बुध के साथ शुभ है। मंगल की इन पर विशेष चतुर्थ दृष्टि भी है। खण्ड वर्षा के योग बनेंगे। मंगल-राहु योग भी अनाज के उत्पादन में अवरोधक रहेगा। लग्न भाव पर गुरु की शत्रु दृष्टि पड़ने से भी अनुकूल वर्षा की कमी के कारण दुर्भिक्ष, सूखा, अकाल हो तथा कहीं तूफान, बाढ़ादि के कारण जन-धन की हानि होगी। जलस्तम्भ भी ३७% है। फलस्वरूप खण्ड एवं विषम वर्षा के योग हैं।

आर्द्रा लग्न प्रवेश के समय मंगलवार को चतुर्दशी तिथि तथा मूला नक्षत्र होने से धान्य महंगे होंगे, राजा (किसी प्रधाननेता) की शस्त्राघात से मृत्यु होगी। पुरुषों को कई प्रकार के भय हों, रोग वृद्धि तथा दुबलापन रहे।

चंद्रक्रांते निर्ऋतिभेयदार्द्रारविसंयुता। भयंनानाविधंपुंसांकृशत्वंरोग वृद्धिदा॥

ब्रह्मकालीन योग में आर्द्रा प्रवेश होने से जल तथा धान्य आदि उत्पादन मध्यम स्तरीय ही रहेगा।

ब्रह्माभिधानयोगेचेन्नलिनीशः शिवर्क्षगः। जलंचसकलंधान्यंमध्यमंत हिंजायते॥

आर्द्रा प्रवेश वृष लग्न में होने से पश्चिम में काल, पूर्व में राजविग्रह, उत्तर में आधी उपज और दक्षिण में काल पड़े।—**वृषेपि पश्चिमेकालः पूर्वस्यांराजविग्रहः। उदग्धान्यार्द्धनिष्पत्ति-र्दक्षिणस्यांविकालतः॥** मध्यरात्रि (आधी रात) में आर्द्रा प्रवेश होने से लोगों में भोग-विलास अधिक रहे,—**भोगप्रदत्ते खलुमध्यरात्रेः।**

—आर्षमान द्वारा रक्षा फल विचार—

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले) एवं सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

(१) प्रथम आर्ष—गतवर्ष की पौष अमावस्या का मूला नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूला नक्षत्र का स्पर्श का अभाव है।

(२) द्वितीय आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र २६% है।

(३) तृतीय आर्ष—श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र २५% है।

(४) चतुर्थ आर्ष—कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र २५% है।

फल—इस वर्ष रक्षा के प्रथम दुर्ग का अभाव तथा शेष तीनों दुर्ग भी अल्प बली है। फलस्वरूप सुरक्षा, समृद्धि एवं राजनैतिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष उलझन एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय, आर्थिक एवं रक्षा के क्षेत्र में प्रगति में बाधाएं रहेंगी। कहीं भयंकर विस्फोट एवं युद्धादि से अशान्ति का वातावरण बने। कहीं राजनैतिक षड्यन्त्र, हत्याकाण्ड हों, तूफान, भूकम्प, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि हो।

—वर्षादि के विश्वामान—

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा १ से २० अंकों के मध्य जितने अधिक (२० अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०६२ में धान्य के विश्वे १३ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन मध्यम से कुछ अधिक होगा।

वर्षा १७, धान्य १३, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ५, तृषा ५, निद्रा ९, आलस्य ५, उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, निष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १७, पाप १५, पुण्य १, व्याधि १५, व्याधिनाश ११, आचार ९, अनाचार १३, मृत्यु ९, जन्म १७, उपद्रव ५, स्वास्थ्य ९, चोरभय १५, चोरनाश ७, अग्नि ३, अग्निशान्त ५, उद्भिज ९, जरायुज ३, अंडज ११, स्वेदज ५, टिड्डी १७, तोता ५, मूषक ५, सोना १५, तांबा १३, स्वचक्र ११, पराचक्र १३, वृष्टि १५, अनावृष्टि ५॥

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियाँ संवत् २०६२ वि. (2005-06 ई.)

- नए 'विलम्ब' नामक सम्वत् होने से भारत का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण अशान्त, विक्षुब्ध व अनिश्चित रहेगा। राजनेताओं में परस्पर विरोध, टकराव एवं विग्रह पैदा होंगे। सामान्य वर्ग के लोग आर्थिक, मानसिक एवं क्लिष्ट व पेचीदा रोगों और कष्टों के कारण परेशान रहें।
- राजा शनि तथा मन्त्री बुध व धनेश शुक्रादि के प्रभावस्वरूप सामान्य लोगों और राजनेताओं के टकराव एवं असंतोष की भावना व्याप्त हो। लोगों में भोग-विलास की प्रवृत्तियाँ, स्वार्थपरता और व्यापारिक बुद्धि बढ़ेगी। भ्रष्टाचार, जनसंख्या, चोरी, ठगी, बेईमानी एवं लूटमार की वारदातें बढ़ेंगी।
- भारत के उत्तरी क्षेत्रों में कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, जनांदोलन, जल एवं विद्युत संकट आदि उत्पन्न होगा। कहीं असमय वर्षा के कारण दुर्भिक्ष, कृषि की हानि अथवा बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने के संकेत हैं। कहीं पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा, बिहार, उ. प्र. आदि में कहीं दुर्भिक्ष, सूखे/खाद्यान्नों एवं पेयजल में कमी आदि का भय होगा।
- वामपंथी दलों की वैशाखियों पर टिकी सत्तारूढ़ यू.पी.ए. सरकार लड़खड़ाती हुई प्रस्तुत वर्ष की अवधि कठिनता से किसी भान्ति पूरी कर लेगी। सरकारी तन्त्र में अस्थिरता के कारण लोगों में असंतोष एवं संशय के भाव रहेंगे। डॉ. मनमोहन सिंह की अधिक शक्ति वामपंथी दलों की मांगों को पूरा करने में ही लगी रहेगी।
- पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, तामिलनाडू, बिहार आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन की प्रबल सम्भावना है।
- 29 जन. से 11 मार्च तक शनि-मंगल के समसप्तक योग के कारण अनाज व उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से लोगों में असन्तोष, कहीं उच्च पद रिक्त व सत्ता परिवर्तन के योग बनेंगे।
- आश्विन मास में (3 व 17 अक्तू. को) सूर्य एवं चंद्रग्रहण घटित होना तथा खप्पर योग होने से केन्द्रिय सरकार के लिए अग्नि परीक्षा एवं कठिन चुनौतियों से भरी अवधि होगी।
- 2 नवं. से 15 नवं. के मध्य कार्तिक शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने से भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना से अथवा भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जानी-माली के नुकसान का भय है।
- नीरसेश शनि के कारण कोयला, लोहा, लकड़ी, पैट्रोलियम पदार्थ तथा अन्य उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि होने से सामान्य प्रजा में क्षोभ एवं असंतोष की भावनाएँ बढ़ेंगी।
- भारत और पाकिस्तान के बीच दोस्ती और शान्ति वार्ताओं के नए आयाम स्थापित होंगे। काश्मीर समस्या को लेकर दोनों देशों के बीच गतिरोध बना रहेगा।

ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल की साकार कहानी है। मनुष्य के संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण (वर्तमान) कर्मों एवं उनके शुभाशुभत्व का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य के भूत–भविष्य सम्बन्धी शुभाशुभ घटनाएँ, सुख–दुःख, सफलता–असफलता, लाभ–हानि, मान–अपमान, भाग्योदय के कालादि का ज्ञान भी इसी शास्त्र द्वारा किया जा सकता है। जातक के जन्म समय सौर–मण्डल एवं जन्मकुण्डली में जिस प्रकार के ग्रहों की स्थिति होती है, उन्हीं के अनुरूप मनुष्य (जीव) का ब्राह्य एवं अभ्यान्तरिक जीवन प्रभावित होता रहता है–

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः। सृष्टि रक्षण–संहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः॥बृह.

प्रकृति के त्रिगुणात्मक गुणों की भान्ति ग्रहों में भी सत्त्व, रज एवं तमादि गुणों की न्यूनाधिकता होती है। गुरु, चन्द्रादि सत्त्वगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक के हृदय में करुणा, दया, परोपकारिता, उदारता, सत्यनिष्ठता आदि धार्मिक रूचियों की बहुलता होती है, जबकि शनि, मंगल, राहु, केतु आदि पाप ग्रहों के प्रभाव से प्राणी में तामसिक प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, मनुष्य के अन्तःकरण की सूक्ष्म प्रवृत्तियों के अनुसार भी ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति मन, वचन व कर्म से किसी की हिंसा नहीं करता है, धर्म मर्यादानुसार धन का अर्जन करता है। दानपूर्वक शास्त्र नियमों का पालन करता है–ऐसे व्यक्ति पर ग्रह कुछ अनिष्ट नहीं करते। अर्थात् अपना अनुग्रह बनाए रखते हैं–**'अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जित धनस्य च। सदा नियमस्थस्य, सदा सानुग्रहाः॥'**

सभी ग्रह मनुष्य को अपने शुभ–अशुभ कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्रदान करते हैं। इस प्रकार ज्योतिष ग्रह–नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ विशेष शास्त्रीय सिद्धान्त देता है जिनके द्वारा हम अपने पूर्व एवं इस लोक के कर्मों के प्रतिफल को जानकर अपने जीवन को

उच्चतर स्थिति की ओर ले जा सकते हैं।

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **''पंचांगदिवाकर'', 'मुफ़ीद आलम जन्त्री'** (उर्दू–हिन्दी–पंजाबी) **एवं तिथ पत्रिका** (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०६२ (२००५–०६ ई.) में **गौरवशाली १३० वर्ष** हो जाएंगें। इस पंचांग समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात **मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी** (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई–वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में **हमारी पंचांग, जन्त्री** एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर कुछ दुष्ट प्रकृति के धन लोलुप एवं लालची प्रकाशक हमारे टाईटल से मिलता जुलता टाईटल–नाम रखकर विषय–सामग्री को तोड़–मरोड़ कर छापते हैं। इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा करते रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक **पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका, मुफ़ीद आलम जन्त्री तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग'** (संवत् २००१ से २०६० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए., पं. विवेक शर्मा व पंकज शर्मा, जालन्धर के नाम अवश्य पढ़ लिया करें।

गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में चामत्कारिक भविष्यवाणियां

ईश्वर की कृपा से हमारी गत वर्षों की पंचांगों एवं जन्त्रियों से उल्लिखित **अनेकशः भविष्यवाणियां** ठीक निकलती आ रही हैं। **उदाहरणस्वरूप** जैसे–भारत का स्वतन्त्र होना, (सं. 1947 ई.) बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, कांग्रेस (ई) की पराजय, पुनः सत्ता में आना, ईरान–ईराक युद्ध (२०३९), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४१), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४८), सन् १९९८ में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि आगे संवत् २०५६ से २०६० तक की कुछ प्रमुख भविष्यवाणियां ही उद्धृत हैं, जो ईश्वर कृपावश चामत्कारिक रूप से सत्य एवं सही निकली हैं। **उदाहरणार्थ–**

''जेहाद के नाम पर जम्मू–कश्मीर में भारत के विरुद्ध प्रशिक्षित सैनिक एवं आतंकवादी भेजना'' तथा जम्मू–कश्मीर के सीमावर्ती भागों में पाकिस्तानी सेना द्वारा गोलाबारी करना संवत् २०५६, पृष्ठ 49, का. II. तथा हरियाणा में श्रीबंसी लाल की सरकार के बर्खास्त होना एवं दिल्ली प्रान्तीय विधानसभा चुनावों में भाजपा सरकार का गिरना और कांग्रेस सरकार का आना पृष्ठ 5 कालम I.

संवत् २०५७ के पंचांग में–पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलट तथा मार्शल लॉ या आपात् स्थिति का लगना एवं शासन परिवर्तन, छत्रभंग, उपद्रव, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना (पृष्ठ 51 –कालम I व II)

सं. २०५८ के पंचांग दिवाकर पृष्ठ 56 (कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन से धनु राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी जैसा कि **अमरीका में दुखद त्रासदी घटी। २०५९ में पृष्ठ ५६ (कालम I)** में पढ़ें–**''अफ़गानिस्तान में नया राजनैतिक ग्रुप उभर कर सामने आएगा तथा तालिबान अमरीकी युद्ध शक्ति के सामने अधिक देर तक टिक नहीं पाएँगे।''** पृष्ठ ६० (कालम I) **पर पंजाब के शीर्षक** के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें–**''आगामी विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ बादल सरकार को काफ़ी कम सीटें मिलना तथा कांग्रेस पार्टी का मुख्य पार्टी के रूप में उभरकर आना।''** फर. २००३ में **खप्पर योग** होने से अमेरिका व ईराक युद्ध होना पृष्ठ 58–I.

संवत् २०६० के भाद्रमास में पाँच मंगलवार होने के फलस्वरूप उ. प्र., म. प्र., कश्मीर आदि प्रदेशों में छत्रभंग (सत्ता–परिवर्तन) एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होना (पृष्ठ 65 का. I, II) जैसा कि उत्तर प्रदेश एवं **कश्मीर घाटी** में हुआ। **ईराक में सत्ता परिवर्तन** के योग के बारे में स्पष्टतः पढ़ें पृष्ठ 63 कालम II पर।

सम्वत् २०६१ की पंचांग दिवाकर में स्पष्टतः पढ़ें–''कि वर्ष के प्रारम्भिक महीनों में भारत के राजनैतिक क्षेत्रों में विशेष उतार–चढ़ाव देखने को मिलेंगे।'' पृष्ठ (61, 63 का. I), **छत्र–भंग (सत्ता–परिवर्तन पृष्ठ 63, 66 का. II)** राजनीतिक **उथल–पुथल** के बाद नए राजनैतिक गठजोड़ उभर कर आना (पृष्ठ 65 का. II) व कांग्रेस पार्टी के अन्तर्गत लिखे गए–**आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गाँधी तथा कांग्रेस पार्टी के सदस्य भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेंगी।** प्रधानमन्त्री बनने की सम्भावना भी होगी। पृष्ठ 68 का. I **''चुनावों में कुछ प्रदेशों में भाजपा की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुँचेगी। उन्हें आशा के विपरीत कम सीटें मिलेंगी।''** पृष्ठ 67 कालम I, राजस्थान के संदर्भ में पृष्ठ 68 का. II पर पढ़ें। विधानसभा के चुनावों में कांग्रेस को हार का सामना रहेगा। (पृष्ठ 68 का. II)

''पंजाब लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की हार होना–पृष्ठ 68 का. I)'' पंजाब, राजस्थान, हरियाणा आदि प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी रहना.........**सोना, ताँबा, लोहा, पैट्रोलियम** आदि उपभोग्य **वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होना** (पृष्ठ 63 का. I) इत्यादि अनेक भविष्यवाणियाँ अपनी सत्यता की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इस सम्बन्ध में जिन पाठकों के बधाई के पत्र प्राप्त हुए हैं–उनके प्रति **हम आभार प्रकट करते हुए अनुग्रहीत हैं।**

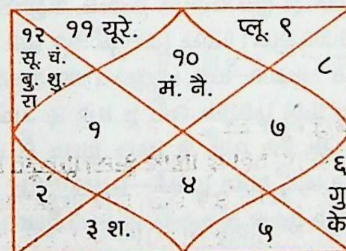
सम्वत् २०६२ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

संवत् २०६२ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह–परिषद्) के दश अधिकारों में से छः अधिकार क्रूर ग्रहों को तथा चार अधिकार शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। **राजा, सस्य (कृषि) और धातुओं** के महत्त्वपूर्ण अधिकार **शनि** को प्राप्त हुए हैं। जबकि वर्षा, फल और सेना के अधिकार क्रूर ग्रह **मंगल** को प्राप्त हुए हैं। मन्त्री का पद **बुध** को, धान्यपति **गुरू**, रसों का स्वामी चन्द्र हुआ है तथा कोश (धन) का स्वामी स्त्री ग्रह **शुक्र** को प्राप्त हुआ है। **ग्रहों** के प्रस्तुत अधिकार–विभाजन के फलस्वरूप **भारत एवं विश्व का सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण अशान्त, विक्षुब्ध व अनिश्चित रहेगा।**

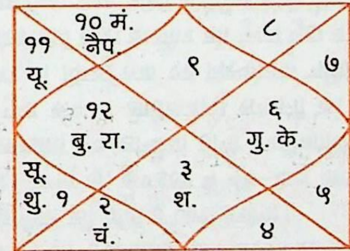
राजा शनि, मन्त्री बुध एवं विलम्ब नामक सम्वत् के प्रभावस्वरूप विभिन्न देशों के अध्यक्ष गुप्त रूप में कुटिल नीतियों का प्रयोग करेंगे। देश में भी प्रमुख पार्टी लीडरों के मध्य विरोध एवं टकराव के हालात होंगे। सामान्य प्रजा को आर्थिक कष्टों एवं परेशानियों का सामना रहे। बुध एवं शुक्र के प्रभाव के कारण लोगों में व्यापारिक बुद्धि तथा स्वार्थ एवं भोग–विलास की प्रवृत्तियों में वृद्धि होगी। विशेष वर्ग के लोगों में सुख–साधनों एवं स्वार्थपरता की वृद्धि होगी। चोरी, ठगी, बेईमानी एवं लूटमार की वारदातें बढ़ेंगी। अधिकांश लोग कष्टों के कारण अन्य देशों में जाने के लिए प्रयत्नशील रहें। मेघेश मंगल के कारण देश में उपयोगी वर्षा की कमी होगी। कहीं बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन–धन की हानि की आशंका रहेगी तथा कहीं कम एवं खण्ड वर्षा के कारण अकाल, कृषि योग्य जल में कमी, पेयजल एवं विद्युत् उत्पादन में कमी रहेगी। धनेश शुक्र के कारण विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ सर्व साधारण लोगों तक नहीं पहुँच पाएगी। अधिकांश लोग नई–नई उपभोग्य वस्तुओं एवं सुख सुविधाओं को पाने के लिए दौड़–धूप में लगेंगे। धर्म, राजनीति, परिवारिक सम्बन्धों आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रदर्शन एवं दिखावे की प्रकृत्ति बढ़ेगी। नीरसेश शनि एवं फलेश मंगल के कारण सब्जियों, दालों एवं अन्य अनाजादि की कृषि के उत्पादन अपेक्षाकृत कम होंगे, जिससे दैनिक उपभोग्य वस्तुओं तथा कोयला, लोहा, सोना, तेल, पेट्रोल, डीजल आदि पदार्थों की कीमतों में जबरदस्त तेजी होने से सामान्य लोग परेशान होंगे। उदर, श्वास, त्वचा, हृदय, मधुमेह एवं मानसिक रोगों में वृद्धि होगी।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल

नववर्ष प्रवेश कुं. ४९/३५ ई.



जगत् लग्न कुण्डली ४५/०८ ई.



वि. संवत् २०६२ में नववर्ष का प्रवेश ८ अप्रैल शुक्रवार की अर्धरात्रि के बाद २ बजकर ०२ मिनट पर रेवती नक्षत्र कालीन, **मकर लग्न** में प्रविष्ट हो रहा है। ध्यान रहे, भारत की प्रभाव राशि भी मकर ही है। लग्नभाव में सेनापति मंगल उच्च राशि का होकर चतुर्थ स्थान को स्वगृही दृष्टि से देख रहा है। वर्ष का राजा शनि छटे भाव में पड़कर केन्द्रस्थ मंगल के साथ षडाष्टक योग बना रहा है। इन ग्रहों के प्रभावस्वरूप विश्व के बहुत से पश्चिमी एवं एशियाई देशों में आश्चर्यजनक विस्फोटक एवं आतंकवादी घटनाएं घटित होंगी। भारत, पाकिस्तान के साथ–साथ अफगानिस्तान, चिच्वेनिया, रूस, नेपाल, सीरिया, अमरीका, ईराक आदि देशों में भी कट्टर आतंकवाद की अग्नि का धूआँ फैलने लगेगा। लग्न पर गुरू की दृष्टि होने से विश्व के प्रमुख देशों के मध्य बाह्य तौर पर नए–नए शान्ति प्रस्ताव लाए जाएँगे, परन्तु आन्तरिक तौर पर अधिकांश देश अत्याधुनिक संहारक हथियारों की दौड़ में अपना वर्चस्व बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे। विकसित एवं विकासशील देशों में कहीं नए गठजोड़ एवं समीकरण बनेंगे। भारत के उत्तरी क्षेत्रों में कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव, जनांदोलन, जल एवं विद्युत् संकट आदि उत्पन्न होने का भय होगा। मध्यभारत में कहीं असमय वर्षा के कारण दुर्भिक्ष, कृषि की हानि अथवा बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने के संकेत हैं। धान्य, अनाज आदि का व्यापार करने वाले व्यापारी विशेष लाभान्वित होंगे।

जगत् लग्न (वर्षेश) का वर्ष प्रवेश १३, अप्रैल, सन् २००५ ई. मृगशिर नक्षत्र कालीन, बुधवार को रात्रि १२ बजकर ९ मिनट पर धनु लग्न में होगा। लग्नाधिपति गुरू संसद् एवं (अधिकारी वर्ग) के भाव में केतु के साथ पड़ा है। सूर्य पंचम भाव में उच्चराशिस्थ होने पर भी षष्ठेश शुक्र के साथ होकर मंगल की केन्द्रिय (चतुर्थ) दृष्टि में है। ग्रह स्थिति के अनुसार विश्व का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध, तनावपूर्ण एवं अशान्त रहेगा। सेनापति मंगल पर गुरू की शुभ दृष्टि पड़ने से विश्व के प्रमुख देश यद्यपि विश्व–शान्ति के

लिए प्रयत्नशील रहेंगे। जगत् लग्न कुण्डली में बुध–राहु, गुरु–केतु एवं सूर्य–शुक्र परस्पर विरूद्ध ग्रह–योगों के कारण अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, जर्मनी, चीन, भारत–पाक आदि प्रमुख देश अत्याधुनिक हथियार एवं अपनी परमणु शक्ति बढ़ाने की कोशिश करेंगे। विश्व–राजनीति में कुछ नए समीकरण उभर कर आएँगे। बुध–राहु के योग पर शनि की विशेष दृष्टि होने से कुछ मुस्लिम राष्ट्र इस्लामी जेहाद के नाम पर नए समीकरण (गठ–जोड़) बनाने के प्रयास करेंगे तथा भारत, नेपाल जैसे शान्तिप्रिय देशों में आतंक फैलाने की फिराक में रहेंगे। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ व मीन राशि वाले देश एवं नगर विशेष प्रभावित रहेंगे॥ विश्व के अधिकांश प्रमुख देश विकासशील देशों के प्रति पक्षपातपूर्ण दोगली नीति का पालन करेंगे। **मकर लग्न** में वर्ष प्रवेश होने से उत्तरी भागों में उत्पात, उपद्रव, राजनीतिक संकट एवं छत्रभंग (राज्य परिवर्तन) होने के योग होंगे–

मकरे च महोत्पातमुत्तरस्यां नृपक्षयः।

सन् २००५ ई. में ग्रह-गोचर एवं विश्व के हालात

सम्वत् के प्रारम्भ में ही नवप्रवेश कुण्डली में तृतीय भाव में चतुर्थ एवं पंचग्रही योग बना हुआ है, जिससे कुछ देशों में राजनीतिक टकराव, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं–

एक राशौ यदा चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥

ईराक, फिलीस्तीन, इज़रायल, रूस, चिच्येन, नेपाल, बंगलादेश, अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान आदि देशों में कहीं साम्प्रदायिकता एवं अलगवाद को लेकर विस्फोटजनक घटनाएँ घटित होंगी।

चान्द्र चैत्रमास (मार्च–अप्रैल) में पाँच शनिवार एवं पांच रविवार होने से पाक, अफ़गानिस्तान, बंगलादेश, ईराक आदि देशों में विशेषकर पूर्वी एशियाई देशों में अस्थिरता, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), अग्निकाण्ड आदि विस्फोटक घटनाएँ होंगी–

शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणी:। ईशान देश भंगश्च वह्णि दाहो महर्घता॥

25 मार्च से 12 अप्रैल के मध्य **सूर्य–राहु** का योग तथा **चान्द्र ज्येष्ठ** (२४ मई से २२ जून) में पाँच मंगलवार पड़ने से उपरोक्त देशों में कहीं युद्ध भय, सत्ता परिवर्तन, उपद्रव, आतंक, अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी–

यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥

३ जून से १७ जुलाई के मध्य मंगल–राहु का योग होने से पश्चिमी देशों तथा ईराक, अफगानिस्तान, बंगलादेश, भारत आदि मुस्लिम देशों में कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड, जनसंहार, युद्ध, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक दुर्घटनाएँ होंगी, कहीं राजनीतिक टकराव, छत्रभंग आदि घटित होंगे–

चांद्र भाद्रपद मास (२० अग. से १८ सितंबर के मध्य) पाँच शनिवार और पांच रविवार होने से प. अमरीका, मैक्सीको, जापान, कोरिया, रूस, चीन, भारत, पाक, अफगानिस्तान, बंगलादेश आदि देशों में कहीं बाढ़, भूकम्प, दुर्भिक्ष, यान–दुर्घटना, अग्निकाण्ड, उपद्रव, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने की आशंकाएं होंगी।

१७ सितम्बर से कन्या राशि पर **चारग्रही** योग बनने से पाक, अफ़गानिस्तान, बंगलादेश आदि मुस्लिम राष्ट्रों के लिए अशुभ रहेंगे। कुछ देशों में आन्तरिक विद्रोह तथा कट्टरवादी उपद्रवियों द्वारा अग्निकाण्ड एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित करने की चेष्टा करेंगे।

१८ जुला. से ४ फर. (०६) की अवधि में शनि–मंगल के मध्य चतुर्थ–दशम दृष्टि होना तथा भाद्रपद (२० अग.) से कार्तिक मास (१ नवम्बर) के मध्य **खप्पर योग** तथा पौष से चांद्र **फाल्गुन मासों** (१६ दिसं. से १४ मार्च ०६) के मध्य पुनः **खप्पर योगों** का बनना विश्व शान्ति के लिए चुनौतियां उपस्थित करेंगे। विश्व के किसी मूर्धन्य नेता के अपदस्थ या आकस्मिक निधन होने के संकेत हैं।

–विश्व के कुछ अन्य देश–

अमेरिका—इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। इस पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव अभी वर्षभर रहेगा। गतवर्ष इसी कालम में पढ़ें कि ''ईराक पर हमले के कारण बुश सरकार की प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुँचेगी।'' इत्यादि भविष्योक्ति पृष्ठ 64–65 पर स्पष्ट तौर पर पढ़ें॥ गतवर्ष की भान्ति आगामी वर्ष भी अमरीकी फौज को प्रछन्न–छापामार युद्ध के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ेगा। नए चुनावों में जार्ज बुश को अपनी नीतियों के कारण, विरोध का सामना करना पड़ेगा तथा उसकी प्रतिष्ठा को गहरा धक्का पहुँचेगा। चुनावों में बुश प्रशासन की पराजय होगी। नई कैरी सरकार भी आतंकवाद को मुख्य मुद्दा बनाकर फिलीस्तीन, सूडान, ईरान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों के ऊपर अपनी नीतियों के द्वारा इन देशों में तथा विश्व–शान्ति में तनाव उत्पन्न करने का राजनैतिक खेल खेलता रहेगा। भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध में अपनी दोगली कूटनीति की प्रक्रिया जारी रखेगा।

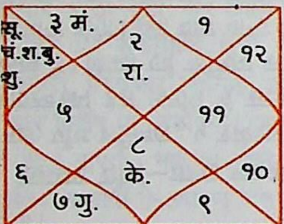
पाकिस्तान—इसकी प्रभाव राशि कन्या है। जगत् ल. कुण्डली में गुरु–केतु का संचार होने से यद्यपि भारत के साथ कई मुद्दों पर समझौते एवं सन्धियां होंगी तथा आर्थिक एवं व्यापार के क्षेत्र में कुछ बढ़ौत्तरी होगी परन्तु गुप्त रूप से आतंकवादी संगठनों को अपनी सहायता जारी रखेगा। जम्मू–काश्मीर एवं भारत में विघ्वंहसक एवं विस्फोटक गतिविधियों का क्रम यथापूर्व जारी रखेगा। पाकिस्तान के प्रशासकों द्वारा कश्मीर को मुख्य मुद्दा बनाने से पारस्परिक सम्बन्ध सामान्य नहीं हो पाएँगे। अमरीका तथा अन्य यूरोपीय देशों से आर्थिक एवं अत्याधुनिक हथियारों की सहायता प्राप्त करता रहेगा। पाक के बिलोचिस्तान, सिन्ध आदि प्रान्तों में उपद्रव, अग्निकाण्ड, विस्फोट आदि हिंसक घटनाएँ घटित होती रहेंगी। यद्यपि भारत के साथ दोस्ती एवं शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ेंगे।



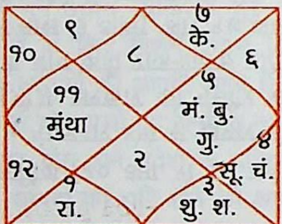
सम्वत् २०६२ में ग्रहों की स्थिति और भारतवर्ष



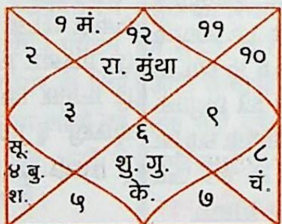
कुण्डली स्वतन्त्र भारत 15 अग. 1947 ई.



स्वतंत्र भारत ५८वां वर्ष 15 अग. 2004 ई.



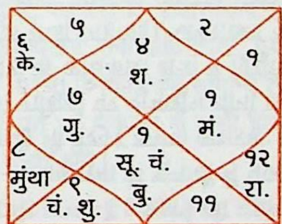
स्वतंत्र भारत 59वां वर्ष 15 अग. 2005 ई.



गणतन्त्र दि. ५६वां वर्ष 26-01-2005 ई.



गणतन्त्र दि. 57वां वर्ष 26 जन., 2006 ई.



२६ जनवरी, २००५ ई. को भारतवर्ष अपने ५६वें गणतन्त्र दिवस की कुण्डली अनुसार **वृष लग्न** में प्रवेश करेगा। (ध्यान रहे, ५६वें वर्ष की कुण्डली का प्रवेश मेष लग्न के अन्तिम अंश (२९) तथा वृष के प्रारम्भिक अंश होने से सन्धि लग्न भी कहा जा सकता है।) वृष लग्न भारतीय गणतन्त्र के जन्म लग्न (मीन) का तृतीय भाव उदित हुआ है। वर्ष कुण्डली में वर्षेश (शुक्र) अष्टम भाव में बुध के साथ पड़ा है, उस पर शनि की प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि पड़ रही है। अष्टमस्थ बुध–शुक्र पर गुरू की भी गुप्त शत्रु दृष्टि पड़ रही है। पंचम भावस्थ गुरू की सूर्य पर शुभ दृष्टि है, परन्तु वर्ष लग्नेश एवं मुंथेश शुक्र पर अशुभ दृष्टि पड़ रही है। ग्रह स्थिति के अनुसार सत्तारूढ़ केन्द्रिय सरकार को राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। पंचमस्थ गुरू के कारण केन्द्रिय एवं राज्य सरकारें सामान्य लोगों के हित के लिए बहुत सी जन–उपयोगी योजनाएँ तैयार करेगी, परन्तु पंचमस्थ गुरू पर शनि की शत्रु दृष्टि पड़ना तथा बुध अष्टम में होने से विभिन्न योजनाएँ क्रियान्वित करने में विपक्षी दल तथा कुछ सहयोगी दल ही विघ्न पैदा करेंगे। छटे भाव में केतु युक्त मुंथा का होने से भारत में गुप्त शत्रुओं की घुसपैठ बढ़ेगी तथा पाकिस्तान, चीन, बंगलादेश आदि पड़ोसी देश भारत की सीमाओं पर विध्वंसक गतिविधियाँ जारी रखेंगे। द्वितीय भाव में शनि का सप्तमस्थ मंगल के साथ षडाष्टक योग होने से आर्थिक क्षेत्र में आपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त होंगे।

१५ अग. २००४ ई. की स्वतन्त्र भारत की ५८वें वर्ष की कुण्डली में **वृश्चिक लग्न उदित है**। चतुर्थ भावस्थ मुंथा पर मंगल, गुरू ग्रहों के मिश्रित प्रभाव रहेंगे, परन्तु अष्टम भाव में मुंथेश शनि एवं शुक्र का होने से समाज एवं सरकार के बहुत से जनोपयोगी कार्यक्रमों में विघ्न/बाधाएँ एवं विलम्ब उत्पन्न होंगे। अत्यधिक महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पेयजल एवं बिजली–आपूर्ति में कमी, विभिन्न प्रकार के टैक्सों में वृद्धि, दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, आतंकवादी गतिविधियों एवं राजनीतिक अस्थिरताओं के कारण सामान्य लोगों में वर्तमान सरकार के प्रति भी गहन असंतोष व विक्षोभ पैदा होगा। कुछ राज्यों जैसे–असम, कश्मीर, उ. प्रदेश, आन्ध्र आदि प्रदेशों में कहीं हिंसक व विस्फोटक घटनाओं का क्रम रहेगा।

सन् २००५ ई. में गोचर ग्रहों अनुसार भारत का घटनाक्रम

वर्ष के प्रारम्भ में ही चान्द्र पौष मास एवं माघ मास (२७ दिसं. से २४ फर. ०५) में **पाँच मंगलवार** पड़ने से यह अवधि देश के किसी विशिष्ट नेता के लिए अशुभ होगी। कश्मीर, असम आदि कुछ राज्यों में हिंसक व आतंकवादी घटनाएं घटित होंगी। कहीं छत्र–भंग (सत्ता परिवर्तन) भी होने के संकेत हैं–

यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदाभवेत्॥

१३ जन. को वक्री शनि पुनः मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा, उस पर मंगल की आठवीं दृष्टि रहेगी। जिससे जन. के बाद फरवरी से अप्रैल के महीनों के मध्य देश के उत्तर–पश्चिम भागों (जैसे–जम्मू–कश्मीर, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर–प्रदेश आदि) में हिंसक घटनाएं घटित होंगी–कहीं दुर्भिक्ष, अनाज में कमी, सूखा आदि का भय होगा–

मिथुने च यदा सौरि वक्रभूतो, दुर्भिक्षं तत्र रौखम्।
पश्चिम देशे दारूणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥

२९ जनवरी से ११ मार्च के मध्य शनि–मंगल के बीच **सम–सप्तक योग** होना, तदुपरान्त २१ अप्रैल तक **षडाष्टक योग** पड़ना तथा **चैत्र मास** (२६ मार्च से २४ अप्रैल तक) पाँच शनिवार एवं पांच रविवार होने से कहीं दुर्भिक्ष, सूखा, उपद्रव, अग्निकाण्ड, जातीय दंगे व राजनैतिक टकराव होंगे। अनाज व उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण लोगों में असंतोष फैलेगा–

शनिवारा यदा पंचजायते रवि पंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी॥

कहीं उच्च पद रिक्त होगा अथवा छत्र–भंग (सत्ता परिवर्तन) के योग बनेंगे।

गुरु–शुक्र का समसप्तक–१८ मार्च से १० अप्रैल तक सप्तक योग तथा १२ अग. से ५ सितं. के मध्य एक राशिस्थ योग होने से उत्तर–प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, गुजरात, असम, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रदेशों में जनांदोलन, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। कहीं कानून व्यवस्था एवं शान्ति भंग होती दिखाई देगी। कहीं बाढ़ तो कहीं दुर्भिक्ष आदि के कारण अकाल जैसी स्थिति बनेगी।

फरवरी–मार्च में शनि–मंगल के मध्य **सम–सप्तक** योग तथा १८ जुला. से ४ फर. ०६ के मध्य पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध होने से भारत की केन्द्रिय यू.पी.ए. सरकार एवं कहीं राज्य सरकारों में अस्थिरता के बादल मंडराएंगे–

यदा सौरि भौमे–सुरराज मन्त्री, भार्गवश्च यदैकराशौ–समसप्तके वा। अयोध्या मध्यदेशे, लंकापुरे, पूर्वस्यां क्षुधाभयं शस्त्रं करोति॥

ज्येष्ठ मास (मई–जून) में पुनः **पाँच मंगलवार** होना तथा ३ जून से १७ जुला. के मध्य **मंगल–राहु** का योग होने से इस अवधि में कही उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, विद्युत् एवं पेय जल की कमी, महंगाई, छत्र–भंग (सत्ता–परिवर्तन), राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव के हालात पैदा होंगे–

मंगल–राहु च यद्यैक राशि स्थितौ। परस्पर नृपे युद्धं रूधिरैः पूरिता मही॥

ज्येष्ठ, श्रावण, माघ मास की संक्रान्तियाँ **शनिवार** को तथा **आषाढ़, भाद्रपद व चैत्र मास** की संक्रान्तियाँ **मंगलवार** को पड़ रही हैं। फलस्वरूप इन कालावधियों में सामाजिक अव्यवस्था, धान्य, अनाज, खल–बिनौले, घृत, तैल आदि वनस्पतियाँ, सोना–चाँदी व उपभोग्य वस्तुएँ तेज भाव होंगी। लोगों में दुखजन्य घटनाएँ अधिक घटित होंगी–

भौमस्यवारे यदि संक्रमश्चकरोति पृथ्व्यामसुखं महर्घता।
क्षारं रसंवै घृत तैल संयुतं कर्पूरस्यैव महर्घता च॥

महँगाई एवं आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण लोगों में रोग, शोक एवं परेशानियाँ बढ़ेंगी।

खप्पर योग–चान्द्र भाद्रपद से कार्तिक (२० अग. से १५ नवं.) तक की अवधि में क्रमशः पाँच शनिवार, ५ रविवार और ५ मंगलवार होने से **खप्पर योग** बनता है, जिसके प्रभावस्वरूप इस अवधि में सत्तारूढ़ यू.पी.ए. सरकार को गम्भीर संकटों का सामना हो सकता है। विपक्ष एवं केन्द्रिय सरकार के बीच कहीं राजनीतिक गतिरोध एवं टकराव की सम्भावना होगी। इसी बीच चान्द्र **आश्विन मास** (३ अक्तू. और १७ अक्तू.) में क्रमशः कंकण **सूर्यग्रहण** एवं **ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण** घटित होने से सत्तारूढ़ यू.पी.ए. केन्द्रिय सरकार के अक्तूबर का महीना विशेष अग्नि परीक्षा का समय होगा। सीमाओं पर आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं का भय रहेगा। किसी राज्य में सत्ता परिवर्तन होने के भी संकेत हैं। इसी मास कन्या राशि पर **चारग्रही** योग बनने राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विशेष परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

तेरह दिन का पक्ष–आगे २ नवम्बर से १५ नवं. के मध्य, **कार्तिक शुक्ल पक्ष तेरह दिन** का होने से कुछ राज्यों जैसे–कश्मीर, असम, आन्ध्र प्रदेश आदि में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना से जानी–माली नुकसान हो सकता है। पाक के साथ शान्तिवार्ताओं के बावजूद, सम्बन्धों में कड़वड़ाहट रहेगी। सीमावर्ती क्षेत्रों पर आतंकवादियों के साथ सैनिक मुठभेड़ एवं हिंसक घटनाएँ होंगी। देश का राजनैतिक व सामाजिक वातावरण भी अशान्त होगा–

अनेक युग साहस्रयां दैव योगात्प्रजायते।
त्रयादेश दिने पक्षः तदा संहरते जगत्॥

मार्गशीर्ष मास (१६ नवं. से १५ दिसं. तक) में पाँच गुरुवार होने से देश के पश्चिमी क्षेत्रों में आतंकवादी कार्यवाहियों द्वारा हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी–

यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥

दैनिक जनोपयोगी वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक तेजी से लोगों में विक्षोभ की भावना रहेगी। **पौष मास से फाल्गुण मास** तक (१६ दिसं. से १४ मार्च ०६ के मध्य) क्रमशः **५ शनिवार, ५ रविवार** और **५ मंगलवार** पड़ने से पुनः **खप्पर नामक योग** का निर्माण हो रहा है, जिससे भारत के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक हालात पुनः अस्थिर होंगे।

सत्तारूढ़ यू.पी.ए. केन्द्रिय सरकार और विपक्षी नेताओं की खींचातानी के बावजूद भारतवर्ष आर्थिक क्षेत्रों एवं वैज्ञानिक अनुसन्धानों तथा विदेश नीति के सम्बन्ध में विशेष उन्नति करेगा। भारत के राजनीतिक सम्बन्ध ब्रिटेन, अमरीका, जर्मनी, कैनेडा, फ्रांस, फिलीस्तीन, इसरायल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों के साथ बेहतर होंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.) में स्थायी सदस्यता प्राप्त करने में अन्ततः सफलता प्राप्त कर लेगा।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

पंजाब–इसकी प्रभावराशि मीन और प्रसिद्ध नाम राशि कन्या है। गतवर्ष की पंचाँग के पृष्ठ 68 पर पंजाब के सन्दर्भ में ही स्पष्ट रूप से पढ़ें–''**लोकसभा के चुनावों में पंजाब–कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ेगा।**'' यह भविष्यवाणी भी ईश्वर कृपया अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई है। नव्य गणतन्त्र दि. की कुण्डली में इसकी राशियों पर शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों के प्रभाव पड़ रहे हैं। जिसके फलस्वरूप इस प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में विद्युत् एवं पेयजल की कमी, उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी (महँगाई), जनसंख्या वृद्धि, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, सड़क एवं परिवहन, कानून–व्यवस्था सम्बन्धी समस्या, लघु एवं मध्यम स्तरीय उद्योगों की समस्याएँ गम्भीर रूप धारण करेंगी। राज्य सरकार एवं विपक्ष के मध्य भी टकराव रहेगा। उपरोक्त ज्वलन्त समस्याओं के बावजूद राज्य में तकनीकी व साइंस शिक्षा, विकास, दूरसंचार, परिवहन, कम्पयूटर टैक्नौलजी आदि क्षेत्रों में विशेष उन्नति होगी। राज्य के मुख्यमंत्री के लिए भी समय अशुभ रहेगा।

हिमाचल प्रदेश—इसकी प्रभाव राशि मीन है। ५६वें गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि लाभ स्थान में है तथा उस पर गुरू की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। ग्रह स्थिति के अनुसार राज्य सरकार राज्य की उन्नति के लिए बहुमुखी उपयोगी योजनाएँ बनाएगी। जैसे—पर्यटन—परिवहन, कृषि—विद्युत्, कृषि, जल, पेयजल, विद्युत् आदि समस्याओं में सुधार, जड़ी—बूटी, सेब आदि फल एवं वन उद्योग, चिकित्सा, दूर—संचार, इंजीनियरिंग, कम्पयूटर एवं तकनीकि क्षेत्रों में विकास के लिए विशेष प्रयास किए जाएँगे। पर्यटन, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महँगाई, आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति आदि क्षेत्रों में सुधार के लिए सरकार विशेष पग उठाएगी। परन्तु विकास योजनाओं का समुचित लाभ सामान्य लोगों को नहीं मिल पाएगा। भाद्रपद मास से खप्पर योग होने प्रदेश के पश्चिमोत्तर—पूर्वी भागों में प्राकृतिक प्रकोपों के कारण जन व धन—सम्पदा की हानि होने की आशंका होगी।

जम्मू—कश्मीर—५६वें वर्ष की गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि (तुला) छटें स्थान में आई है। उस पर मुंथा एवं केतु का योग बना हुआ है तथा राशि स्वामी शुक्र अष्टम भाव में है। जिससे भारत और पाकिस्तान दोनों देशों की राजनीति का मुख्य ध्रुविकरण कश्मीर ही बना रहेगा। दोनों देशों के मध्य शान्तिवार्ताओं का कोई ठोस परिणाम नहीं निकलेगा। विदेशी आतंकवादी संगठन शान्तिवार्ताओं को विफल बनाने के लिए घाटी में विस्फोटक कार्यवाहियों का क्रम जारी रखेंगे। सरकार प्रान्त की उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित करेंगी, परन्तु सामान्य लोगों तक उनका विशेष लाभ नहीं मिल पाएगा। काश्मीरी पण्डितों एवं अन्य पीड़ितों के प्रति प्रान्तीय सरकार उपेक्षा का व्यवहार रखेगी। उत्तरार्ध भाग में असामायिक वर्षा, ओलावृष्टि, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने के संकेत हैं। काश्मीर समस्या को लेकर भारत और पाक के बीच गतिरोध यथावत् बनें रहेंगे।

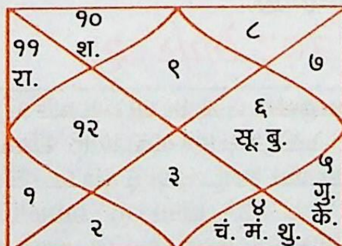
राजस्थान—इसकी प्रभाव राशि कर्क है। गणतन्त्र दिवस कुं. में इसकी राशि पर गुरू की शुभ मित्र दृष्टि पड़ रही है। जबकि मंगल की भी मैत्री दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप आगामी वर्ष राज्य सरकार के लिए सड़क—परिवहन, पेय—जलापूर्ति की समस्या, महँगाई, बेरोजगारी, विद्युत् सप्लाई, कृषि एवं लघु उद्योगों के स्तर को सुधारने के लिए राज्य सरकार विशेष कदम उठाएगी। यद्यपि सर्वसाधारण लोगों को आशानुकूल लाभ नहीं मिल पाएँगे। जिसके कारण लोगों में असंतोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी।

हरियाणा—इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। गणतन्त्र दि. कुण्डली में इसकी राशि पर शनि स्थित होने से आगामी वर्ष प्रान्तीय सरकार के लिए चुनौतियों से भरा वर्ष होगा। विपक्षी पार्टियां राज्य के विकास कार्यों में अवरोध पैदा करने के प्रयास करेंगी। बेरोजगारी, महँगाई, विद्युत्, समस्या, कृषि एवं पेयजल की समस्या भ्रष्टाचार एवं उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों एवं टैक्सों में अत्यधिक वृद्धि आदि समस्याओं के कारण चौटाला सरकार की लोकप्रियता को गहरी ठेस पहुँचेगी। सरकार लघु एवं मध्यम स्तरीय उद्योगों के विकास हेतु भी विशेष ध्यान देगी, जिनका लाभ विशिष्ट वर्ग तक ही पहुँचेगा।

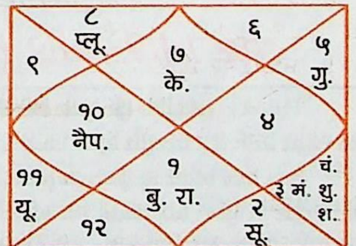
दिल्ली—गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी राशि (मकर) भाग्य स्थान में है। उसमें सूर्य की स्थिति भी है तथा उस पर गुरू की विशेष शुभ दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप राज्य में सड़क, परिवहन, विद्युत्, पेय—जल, मैडीकल शिक्षा, कम्पयूटर्ज, तकनीकी शिक्षा, पर्यटन आदि सम्बन्धी अनेक विकासकारी योजनाएँ बनाई जाएँगी, परन्तु उनका लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महँगाई, विद्युत् एवं पेयजल में कमी इत्यादि समस्याओं के कारण सर्व—साधारण व्यक्ति परेशान एवं दुःखी होंगे।

कांग्रेस गठित यू० पी० ए० सरकार का भविष्यफल

कुंडली वर्तमान प्रधानमन्त्री
डॉ. मनमोहन सिंह
26 सितं. 1932 ई. 2:00 PM



यू. पी. ए. सरकार द्वारा
शपथकालीन कुंडली
22 मई, 2004 ई. 17.42 PM



नई कांग्रेस गठबन्धन यू. पी. ए. सरकार ने 22 मई 2004 ई. शनिवार को आर्द्रा नक्षत्र एवं शूल योग कालीन सायं 5 बजकर 42 मिनट पर तुला लग्न में शपथ ग्रहण की है। शपथ कालीन चर लग्न है। लग्न भाव में केतु का होना तथा उस पर भाग्येश एवं व्ययेश बुध की दृष्टि भी पड़ रही है, जिसके फलस्वरूप नवनिर्वाचित डॉ. मनमोहन की गठबन्धन सरकार को अत्यन्त अस्थिरताओं के दौर में से गुजरना पड़ेगा। शपथकाल से लगभग तीन वर्ष की अवधि पर्यन्त अर्थात् 7 फरवरी सन् 2007 ई. तक डॉ. मनमोहन को राहु मध्ये बुध की अन्तर्दशा तक की अवधि तक तो यू. पी. ए. सरकार चलने के प्रबल योग हैं। इस काल के दौरान गोचर ग्रहों के प्रभावस्वरूप कांग्रेस गठबन्धन सरकार जोकि वामपंथी दलों की वैशाखियों पर ही टिकी हुई है, विपक्ष तथा वामपंथी दल सरकार की कार्यनीतियों में अनेक बार बाधाएँ पहुँचाने के प्रयास करेंगे। **शपथ ग्रहण काल** में भद्रा एवं शूल आदि अशुभ

योगों का होना, इसके अतिरिक्त आर्द्रा (राहु का) नक्षत्र, चर लग्न तथा लग्न में केतु, सप्तम में राहु आदि अशुभ ग्रहों के होने से सत्तारूढ़ सरकार को अपने शासन काल में अत्यन्त कठिन समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना रहेगा। सरकारी तन्त्र में अस्थिरता के कारण लोगों में असंतोष एवं संशय के भाव रहेंगे।

नव निर्वाचित प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह के यथोपलब्ध विवरण के अनुसार उनका जन्म 26 सितम्बर, 1932 ई. को कस्बा जेहलम (पाक.) के एक गाँव में धनु लग्न एवं सिंह के नवांश में हुआ। लग्नेश गुरु भाग्यस्थान में पड़कर लग्नभाव को स्वगृही दृष्टि से तथा पंचम भाव को मित्र दृष्टि से देख रहा है। फलस्वरूप डॉ. मनमोहन सिंह तीव्र बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, प्रसिद्ध, भाग्यशाली, उदार-हृदय, गम्भीर विचारक, प्राध्यापक एवं प्रोफैसर, बैंकिंग एवं फाइनैंस आदि कार्यों में कुशल, परोपकारी, उच्च-प्रतिष्ठित एवं अपने कार्य क्षेत्र में विद्वान् बनता है। गुरू पाप ग्रह युक्त है तथा जन्मकालीन आश्लेषा (गण्डमूल) नक्षत्र होने से मातृ सुख में कमी तथा जीवन की प्रारम्भिक अवस्था अत्यन्त संघर्षपूर्ण रही। कार्येश एवं केन्द्रेश बुध दशम भाव में स्वोच्च राशि में भाग्येश सूर्य के साथ होने से भद्र नामक **पंचमहापुरुष** योग बना है। इसको **बुधादित्य** योग भी कहा जाता है। दोनों योगों के फलस्वरूप जातक अत्यन्त बुद्धिमान, प्रसिद्ध, लोकप्रिय, उच्च-शिक्षित, सौम्य प्रकृति, गम्भीरवाणी, मन्त्रित्व आदि उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है। डॉ. सिंह की कुण्डली में बुध नवांश कुण्डली में भी उच्चस्थ होने से वर्गोत्तम स्थिति में तथा सूर्य भी उच्चस्थ हुआ है, फलस्वरूप डॉ. सिंह केन्द्रिय भन्त्री मण्डल में सर्वोच्च स्थान पाने में सफल हुए हैं। ध्यान रहे, स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री —— बहादुर शास्त्री की कुण्डली में भी यही योग विद्यमान् था। शपथकालीन डॉ. मनमोहन मध्ये शनि की अन्तर्दशा लगी हुई थी (कुण्डली में शनि भी स्वराशिगत होकर स्वोच्च दृष्ट स लाभ स्थान को देख रहा है।), आजकल राहु मध्ये बुध की अन्तर्दशा चल रही है, जोकि 7 फरवरी 2007 ई. तक रहेगी। ग्रह दशानुसार इस कालावधि तक तो डॉ. मनमोहन का प्रधानमन्त्री पद पर बने रहने के प्रबल योग पाए जाते है। विदेशी सम्बन्धों में बेहतरी के बारे में मनमोहन सरकार को विशेष सफलता मिलेगी। पाकिस्तान के साथ दोस्ती एवं शान्तिवार्ताओं के नए आयाम खुलेंगे। उपरोक्त भविष्यवाणियाँ गोचर ग्रहों के अनुशीलन के आधार पर अपनी अल्पमत्यनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वोत्तम भविष्य नेता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं विधाता (ईश्वर) ही हैं—

फलानि ग्रहसंचरेण सूचयन्ति। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना॥

लिपिब्द्धम्: **निवेदक:**

भाद्र शुक्ल एका:, शुक्रवार, **पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी (पंचाँगदिवाकर कर्ता)**

दिनांक २४ सितं., २००४ ई.

गुर्रफल विचार-सन् 1426 हिजरी

यवन मतानुसार वर्ष कुं.

5, गु. 6, 4, श. 3, 2, 7 के., 1 रा., 8, 9 मं. प्लू., नै. 10 सू. बु. शु., 11 चं. यू., 12

सन् 2005 ईसवी में मुहर्रम की प्रथम तारीख एवं हिजरी सन् 1426, 11 फरवरी शुक्रवार सन् 2005 ई. को प्रथम (यकम) मुहर्रम का प्रारम्भ होने से नवीम वर्ष हिजरी सन् 1426 का आग़ाज (प्रारम्भ) माना जाएगा। तदुपरान्त यवन मतानुसार नए साल का राजा (बादशाह) शुक्र (ज़ोहरा) होगा। नई वर्ष कुण्डली में पड़े ग्रहों के अनुसार आयन्दा साल गतवर्ष की अपेक्षा शुभ रहेगा। लेकिन वर्ष कुण्डली में शनि-मंगल की आपसी दृष्टि और दसवें गृह में राहु होने से वर्तमान सत्तारूढ़ मुस्लिम राष्ट्रों को ज़बरदस्त राजनीतिक (स्यासी), सामाजिक व आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। पाकिस्तान सहित अनेक मुस्लिम राष्ट्रों के नेता निजी स्वार्थपूर्ति और अपनी खुशहाली के लिए प्रयासरत रहेंगे। समाज में ऐश-इशरत, सुख-साधन एवं विलासमय प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी। यद्यपि कुछ मुस्लिम देशों में भी स्त्रियों की स्वतन्त्रता बढ़ेगी। वर्ष कुण्डली के सातवें भाव में सू., बु., शुक्र व नैपच्यून-चारग्रही योग होने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देश भारत सहित पड़ौसी देशों के साथ बाह्य तौर पर शान्ति प्रस्तावों को क्रियान्वित करने की कोशिशों में लगेंगे।

वि: संवत् 2062 में लाभ-हानि चक्र

(विंशोतरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा अंक में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएँ सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचे तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लाटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च होगा। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियां भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
हानि	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त घण्टे-मिन्टों में (सन् 2005-06 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	5/42
12 फर.	कुम्भ	18/42
14 मार्च	मीन	15/37
13 अप्रै.	मेष	24/09
14 मई	वृष	21/04
14 जून	मिथुन	27/40
16 जुला.	कर्क	14/34
16 अग.	सिंह	22/57
16 सितं.	कन्या	22/51
17 अक्तू.	तुला	10/47
16 नवं.	वृश्चि.	10/32
15 दिसं.	धनु	25/09
14 जन.(06)	मकर	11/55
12 फर.	कुम्भ	24/55
14 मार्च	मीन	21/49

मंगल राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मकर में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
22 अप्रै.	कुम्भ	23/42
3 जून	मीन	16/26
18 जुला.	मेष	9/13
1 अक्तू	वक्री	27/40
10 दिसं.	मार्गी	9/30
5 फर. (06)	वृष	10/58

बुध राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मीन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
8 मई	मेष	15/15
25 मई	वृष	18/11
8 जून	मिथुन	15/51
24 जून	कर्क	10/16
23 जुला.	वक्री	8/32
16 अग.	मार्गी	9/18

बुध राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
1 सितं.	सिंह	13/22
17 सितं.	कन्या	14/37
4 अक्तू	तुला	25/40
25 अक्तू	बृश्चिक	17/11
14 नवं.	वक्री	11/10
4 दिसं.	मार्गी	7/58
30 दिसं.	धनु	25/46
19 जन.(06)	मकर	9/46
5 फर.	कुम्भ	21/53
24 फर.	मीन	21/34
2 मार्च	वक्री	26/06
9 मार्च	व कुम्भे	13/04
25 मार्च	मार्गी	19/18

गुरु राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में कन्या में वक्री)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
5 जून	मार्गी	12/58
28 सितं.	तुला	5/35
4 मार्च (06)	वक्री	23/32

शुक्र राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मीन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
11 अप्रै.	मेष	4/27
5 मई	वृष	11/23
29 मई	मिथुन	21/45
23 जून	कर्क	11/35
18 जुला.	सिंह	5/41
12 अग.	कन्या	6/08
6 सितं.	तुला	16/37
2 अक्तू.	बृश्चि.	20/18
30 अक्तू.	धनु	13/35
3 दिसं.	मकर	17/37
24 दिसं.	वक्री	15/09

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
13 जन.(06)	धनु	18/50
3 फर.	मार्गी	14/52
25 फर.	मकर	6/16
31 मार्च	कुम्भ	10/40

शनि राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में मिथुन में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
26 मई	कर्क	7/26
22 नवं.	वक्री	14/27

(संवतान्त तक वक्री रहेगा।)

राहु
(संवतारम्भ में मीन में)

पूरा संवत् मीन में संचार करेगा।

केतु
(संवतारम्भ में कन्या में)

पूरा संवत् कन्या में संचार करेगा।

केतु

पूरा संवत् कुम्भ में संचार करेगा।

यूरेनस

पूरा संवत् कुम्भ में संचार करेगा।

नैपच्यून

पूरा संवत् मकर में संचार करेगा।

प्लूटो
(संवतारम्भ में धनु में वक्री)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 मई व.	बृश्चिक	25/25
2 सितं.	मार्गी	16/08
5 दिसं.	धनु	17/08
29 मार्च 06	वक्री	18/09

ग्रहों का वक्री–मार्गी

मंगल

ता. मास		घं. मिं.
1 अक्तू.	वक्री	27/40
10 दिसं.	मार्गी	9/30

बुध
(संवतारम्भ में वक्री)

ता. मास		घं. मिं.
12 अप्रै.	मार्गी	13/19
23 जुला.	वक्री	8/32
16 अग.	मार्गी	9/18
14 नवं.	वक्री	11/10
4 दिसं.	मार्गी	7/58
2 मार्च (06)	वक्री	26/06
25 मार्च	मार्गी	19/18

गुरु
(संवतारम्भ में वक्री)

ता. मास		घं. मिं.
5 जून	मार्गी	12/58
4 फर.(06)	वक्री	23/32

शुक्र
(संवतारम्भ में मार्गी)

ता. मास		घं. मिं.
24 दिसं.	वक्री	15/09
3 फर.(06)	मार्गी	14/52

शनि
(संवतारम्भ में मार्गी)

ता. मास		घं. मिं.
22 नवं.	वक्री	14/27

यूरेनस
(संवतारम्भ में मार्गी)

ता. मास		घं. मिं.
14 जून	वक्री	28/10
15 नवं.	मार्गी	29/42

नैपच्यून
(संवतारम्भ में मार्गी)

ता. मास		घं. मिं.
19 मई	वक्री	29/05
26 अक्तू.	मार्गी	28/50

प्लूटो
(संवतारम्भ में वक्री)

ता. मास		घं. मिं.
27 मार्च	वक्री	8/02
2 सितं.	मार्गी	16/08
29 मार्च (06)	वक्री	18/09

ग्रहों का उदय–अस्त

मंगल वर्ष भर उदित अवस्था में ही संचार करेगा।

बुध

ता. मास		घं. मिं.
22 मार्च	पश्चिमऽस्त	9/28
6 अप्रै.	व पूर्वोदय	9/37
24 मई	पूर्वेऽस्त	4/32
14 जून	पश्चिमोदित	23/29
29 जुला.	पश्चिमेऽस्त	17/32
14 अग.	पूर्वोदय	5/10
4 सितं.	पूर्वेऽस्त	5/23
6 अक्तू	पश्चिमोदय	6/15
19 नवं.	पश्चिमेऽस्तं	5/48
30 नवं.	पूर्वोदय	15/42
4 जन.(06)	बुधास्तपूर्वे	11/45
13 फर.	पश्चिमोदय	8/27
5 मार्च	पश्चिमास्त	27/36
19 मार्च	पूर्वोदय	26/43

गुर्वस्तोदय

ता. मास		घं. मिं.
6 अक्तू.	पश्चिमास्त	10/45
3 नवं.	पूर्वोदय	6/15

शुक्र

ता. मास		घं. मिं.
24 अप्रै.	पश्चिमोदयः	5/12
11 जन. (06)	पश्चिमेऽस्त	3/48
17 जन.	पूर्वोदयः	8/25

शनि

ता. मास		घं. मिं.
5 जुला.	पश्चिमेऽस्त	15/27
10 अग.	पूर्वोदय	25/43

2005 ई. में ग्रहों के विशेष योग

बुध-शुक्र (धनु) = 6 जन. से 25 जन.
सूर्य-शुक्र (मीने) = 14 मार्च से 10 अप्रै.
सूर्य-राहु (मीने) = 25 मार्च से 12 अप्रै.
बुध-राहु (मीने) = 25 मार्च से 7 मई
गुरू-केतु (कन्या) = 25 मार्च से 27 सितं.
बुध-शुक्र (मीने) = 1 अप्रै. 10 अप्रै.
सूर्य-शुक्र (मेष) = 13 अप्रै. से 5 मई
सूर्य-बुध (मेष) = 8 मई से 14 मई
सूर्य-शुक्र (वृष) = 14 मई से 29 मई
बुध-शुक्र (वृष) = 26 मई से 29 मई
सूर्य-बुध (वृष) = 25 मई से 8 जून
मंगल-राहु (मीने) = 3 जून से 17 जुला.
शनि-बुध (कर्के) = 24 जून से 31 अग.
सूर्य-शनि (कर्के) = 16 जुला. से 16 अग.
गुरू-शुक्र (कन्या) = 12 अग. से 5 सितं. तक
शुक्र-केतु (कन्या) = 12 अग. से 5 सितं.
सूर्य-केतु (कन्या) = 17 सितं. से 16 अक्तू.
बुध-गुरू (तुला) = 6 अक्तू. से 25 अक्तू.
सूर्य-गुरू (तुला) = 17 अक्तू. से 15 नवं.
सूर्य-बुध (वृश्चि.) = 16 नवं. से 15 दिसं.
सूर्य-बुध (धनु) = 31 दिसं. से 13 जन. (06)
बुध-शुक्र (धनु) = 14 जन. से 19 जन.

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०६२ वि.

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
31 मार्च	रेव (1)	10/53
3 अप्रै.	रेव (2)	
7 अप्रै.	रेव (3)	5/13
10 अप्रै.	रेव (4)	
13 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	24/09
17 अप्रै.	अश्वि (2)	
20 अप्रै.	अश्वि (3)	
24 अप्रै.	अश्वि (4)	
27 अप्रै.	भर. (1)	16/04
1 मई	भर. (2)	
4 मई	भर. (3)	
7 मई	भर. (4)	
11 मई	कृति (1)	10/12
14 मई	कृति 2 वृष	21/04
18 मई	कृति (3)	
21 मई	कृति (4)	
25 मई	रोहि (1)	6/27
28 मई	रोहि (2)	
1 जून	रोहि (3)	
4 जून	रोहि (4)	
8 जून	मृग (1)	4/18
11 जून	मृग (2)	
14 जून	मृग 3 मिथु.	27/40
18 जून	मृग (4)	
21 जून	आर्द्रा (1)	27/20
25 जून	आर्द्रा (2)	
29 जून	आर्द्रा (3)	
2 जुला.	आर्द्रा (4)	
5 जुला.	पुर्न (1)	26/55
9 जुला.	पुर्न (2)	
13 जुला.	पुर्न (3)	
16 जुला	पुर्न4 कर्क	14/34

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
19 जुला	पुष्य (1)	26/26
23 जुला	पुष्य (2)	
26 जुला	पुष्य (3)	
30 जुला	पुष्य (4)	
2 अग.	आश्ले (1)	25/20
6 अग.	आश्ले (2)	
9 अग.	आश्ले (3)	
13 अग.	आश्ले (4)	
16 अग.	मघा 1 सिंह	22/57
20 अग.	मघा (2)	
23 अग.	मघा (3)	
27 अग.	मघा (4)	
30 अग.	पू.फा.(1)	18/58
3 सितं.	पू.फा. (2)	5/37
6 सितं.	पू.फा. (3)	
10 सितं.	पू.फा. (4)	
13 सितं.	उफा.(1)	12/46
16 सितं.	उ.फा.2 कन्या	22/51
20 सितं.	उ.फा. (3)	
23 सितं.	उ.फा. (4)	
27 सितं.	हस्त (1)	4/17
30 सितं.	हस्त (2)	
3 अक्तू.	हस्त (3)	
7 अक्तू.	हस्त (4)	
10 अक्तू.	चित्रा (1)	17/10
14 अक्तू.	चित्रा (2)	
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	10/47
20 अक्तू.	चित्रा (4)	
23 अक्तू.	स्वा.(1)	27/45
27 अक्तू.	स्वा. (2)	
30 अक्तू.	स्वा. (3)	
3 नवं.	स्वा. (4)	
6 नवं.	विशा(1)	11/49

2005-06 ई.	नक्षत्र	चरण
9 नवं.	विशा (2)	
13 नवं.	विशा (3)	
16 नवं.	विशा 4 वृश्चि.	10/32
19 नवं.	अनु. (1)	17/54
22 नवं.	अनु. (2)	
26 नवं.	अनु. (3)	
29 नवं.	अनु. (4)	
2 दिसं.	ज्ये. (1)	22/09
6 दिसं.	ज्ये. (2)	
9 दिसं.	ज्ये. (3)	
12 दिसं.	ज्ये. (4)	
15 दिसं.	मूला 1धनु	25/09
19 दिसं.	मूला (2)	
22 दिसं.	मूला (3)	
25 दिसं.	मूला (4)	
28 दिसं.	पू.षा (1)	27/24
1 जन.	पू.षा. (2)	
4 जन.	पू.षा. (3)	
7 जन.	पू.षा. (4)	
11 जन.	उ.षा. (1)	5/21
14 जन.	उ.षा 2 मक.	11/55
17 जन.	उ.षा (3)	
20 जन.	उ.षा (4)	
24 जन.	श्रव (1)	7/44
27 जन.	श्रव. (2)	
30 जन.	श्रव. (3)	
3 फर.	श्रव. (4)	
6 फर.	धनि (1)	10/48
9 फर.	धनि. (2)	
12 फर.	धनि 3 कुंभ	24/55
16 फर.	धनि (4)	

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2006 ई.	नक्षत्र	चरण
19 फर.	शत (1)	15/25
22 फर.	शत. (2)	
26 फर.	शत. (3)	
1 मार्च	शत. (4)	
4 मार्च	पू.भा.(1)	21/41
8 मार्च	पू.भा. (2)	
11 मार्च	पू.भा. (3)	
14 मार्च	पूभा 4 मीन	21/50
18 मार्च	उ.भा (1)	6/10
21 मार्च	उ.भा. (2)	
24 मार्च	उ.भा. (3)	
28 मार्च	उ.भा. (4)	
31 मार्च	रेव. (1)	16/49

मंगल नक्षत्र प्रवेश

तिथि	नक्षत्र	चरण
4 अप्रै.	श्रव (3)	
9 अप्रै.	श्रव (4)	
13 अप्रै.	धनि (1)	19/18
18 अप्रै.	धनि (2)	
22 अप्रै.	धनि3 कुंभ	23/42
27 अप्रै.	धनि (4)	
1 मई	शत (1)	28/11
6 मई	शत (2)	
11 मई	शत (3)	
15 मई	शत (4)	
20 मई	पू.भा.1	15/36
25 मई	पू.भा. (2)	
29 मई	पू.भा. (3)	
3 जून	पूभा 4 मीन	16/26
8 जून	उ.भा.1	10/05
13 जून	उ.भा. (2)	
17 जून	उ.भा. (3)	
22 जून	उ.भा. (4)	
27 जून	रेव (1)	19/22

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2004-05 ई.	नक्षत्र	चरण
2 जुला.	रेव (2)	
7 जुला.	रेव (3)	
12 जुला.	रेव (4)	
18 जुला.	अश्वि (1)	9/13
23 जुला.	अश्वि (2)	
29 जुला.	अश्वि (3)	
4 अग.	अश्वि (4)	
10 अग.	भर (1)	12/51
16 अग.	भर (2)	
24 अग.	भर (3)	
1 सितं.	भर (4)	
11 सितं.	कृति.1	27/43
1 अक्तू.	वक्री	27/40
21 अक्तू.	भर (4)	16/20
1 नवं.	भर (3)	4/30
10 नवं.	भर (2)	
21 नवं.	भर (1)	17/35
10 दिसं.	मार्गी	9/30
30 दिसं.	भर (2)	5/57
11 जन.	भर (3)	5/40
20 जन.	भर (4)	15/13
28 जन.	कृति.1	21/16
5 फर.	कृति 2 वृष	10/58
12 फर.	कृति (3)	
19 फर.	कृति (4)	
25 फर.	रोहि (4)	23/44
4 मार्च	रोहि (2)	
10 मार्च	रोहि (3)	
17 मार्च	रोहि (4)	
22 मार्च	मृग (1)	20/01
28 मार्च	मृग (2)	19/03

बुध नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
5 अप्रै.	व उभा (2)	
12 अप्रै.	मार्गी	13/19
19 अप्रै.	उ.भा. (3)	
24 अप्रै.	उ.भा. (4)	
27 अप्रै.	रेव (1)	24/15
30 अप्रै.	रेव (2)	
3 मई	रेव (3)	
6 मई	रेव (4)	
8 मई	अश्वि 1 मेष	15/15
10 मई	अश्वि (2)	
13 मई	अश्वि (3)	
14 मई	अश्वि (4)	
16 मई	भर (1)	23/02
18 मई	भर (2)	
20 मई	भर (3)	
22 मई	भर (4)	
23 मई	कृति (1)	26/27
25 मई	कृति 2 वृष	18/11
27 मई	कृति (3)	
28 मई	कृति (4)	
30 मई	रोहि (1)	12/17
31 मई	रोहि (2)	
2 जून	रोहि (3)	
3 जून	रोहि (4)	
5 जून	मृग (1)	14/23
6 जून	मृग (2)	
8 जून	मृग 3 मिथुन	15/51
10 जून	मृग (4)	
11 जून	आर्द्रा (1)	19/28
13 जून	आर्द्रा (2)	
15 जून	आर्द्रा (3)	
16 जून	आर्द्रा (4)	
18 जून	पुर्न (1)	14/52
20 जून	पुर्न (2)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2004 ई.	नक्षत्र	चरण
22 जून	पुर्न (3)	
24 जून	पुर्न 4 कर्क	10/16
26 जून	पुष्य (1)	13/23
28 जून	पुष्य (2)	
1 जुला	पुष्य (3)	
3 जुला	पुष्य (4)	
6 जुला.	आश्ले(1)	17/36
9 जुला	आश्ले (2)	
14 जुला	आश्ले (3)	
23 जुला	वक्री	8/32
1 अग.	आश्ले (2)	
5 अग.	आश्ले (1)	19/26
10 अग.	पुष्य (4)	13/10
16 अग.	मार्गी	9/18
21 अग.	श्ले (1)	20/10
25 अग.	आश्ले (2)	
28 अग.	आश्ले (3)	
30 अग.	आश्ले (4)	
1 सितं.	मघा 1 सिंह	13/22
3 सितं.	मघा (2)	
5 सितं.	मघा (3)	
6 सितं.	मघा (4)	
8 सितं.	पूफा (1)	19/55
10 सितं.	पूफा (2)	
12 सितं.	पूफा (3)	
13 सितं.	पूफा (4)	
15 सितं.	उफा (1)	19/43
17 सितं.	उफा2 कन्या	14/37
19 सितं.	उफा (3)	
21 सितं.	उफा (4)	
22 सितं.	हस्त (1)	27/05
24 सितं.	हस्त (2)	
26 सितं.	हस्त (3)	
28 सितं.	हस्त (4)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
30 सितं.	चित्रा (1)	22/43
2 अक्तू.	चित्रा (2)	
4 अक्तू	चित्रा 3 तुला	25/40
7 अक्तू	चित्रा (4)	
9 अक्तू	स्वा. (1)	8/11
11 अक्तू	स्वा. (2)	
13 अक्तू	स्वा. (3)	
15 अक्तू	स्वा. (4)	
18 अक्तू	विशा (1)	8/55
20 अक्तू	विशा. (2)	
23 अक्तू	विशा. (3)	
25 अक्तू	विशा 4 वृश्चि	17/11
28 अक्तू	अनु (1)	8/14
30 अक्तू	अनु. (2)	
3 नवं.	अनु. (3)	
6 नवं.	अनु. (4)	
12 नवं.	ज्ये. (1)	7/50
14 नवं.	वक्री	11/10
16 नवं.	अनु. (4)	11/16
20 नवं.	अनु (3)	
23 नवं.	अनु (2)	
26 नवं.	अनु (1)	6/15
28 नवं.	विशा (4)	27/00
4 दिसं.	मार्गी	7/58
9 दिसं.	अनु. (1)	27/34
13 दिसं.	अनु. (2)	
16 दिसं.	अनु. (3)	
19 दिसं.	अनु. (4)	
21 दिसं.	ज्ये. (1)	18/07
24 दिसं.	ज्ये. (2)	
26 दिसं.	ज्ये. (3)	
28 दिसं.	ज्ये. (4)	
30 दिसं.	मूला 1 धनु	25/46

बुध नक्षत्र प्रवेश

2006 ई.	नक्षत्र	चरण
2 जन.	मूला (2)	
4 जन.	मूला (3)	
6 जन.	मूला (4)	
8 जन.	पूषा (1)	21/11
10 जन.	पूषा (2)	
13 जन.	पूषा (3)	
15 जन.	पूषा (4)	
17 जन.	उषा.(1)	8/20
19 जन.	उषा 2 मक.	9/46
21 जन.	उषा (3)	
23 जन.	उषा (4)	
25 जन.	श्रवण (1)	10/40
27 जन.	श्रवण (2)	
29 जन.	श्रवण (3)	
31 जन.	श्रवण (4)	
1 फर.	धनि (1)	28/00
3 फर.	धनि (2)	
5 फर.	धनि 3 कुंभे	21/53
7 फर.	धनि (4)	
9 फर.	शत (1)	15/01
11 फर.	शत. (2)	
13 फर.	शत. (3)	
15 फर.	शत. (4)	
17 फर.	पूभा. (1)	7/42
19 फर.	पूभा. (2)	
21 फर.	पूभा. (3)	
24 फर.	पूभा 4 मीन	21/34
2 मार्च	वक्री	26/06
9 मार्च	पूभा 3 कुंभे	13/04
12 मार्च	पू.भा. (2)	
16 मार्च	पू.भा.1	16/52
21 मार्च	शत (4)	22/06
25 मार्च	मार्गी	19/18
29 मार्च	पूभा. (1)	20/28

गुरु नक्षत्र प्रवेश

2005-06 ई.	नक्षत्र	चरण
4 अप्रै.	व हस्त (3)	4/52
2 मई	व हस्त (2)	14/12
5 जून	मार्गी	12/58
9 जुला.	हस्त (3)	13/01
5 अग.	हस्त (4)	12/18
25 अग.	चित्रा (1)	12/27
11 सितं.	चित्रा (2)	24/15
28 सितं	चित्रा 3 तुला	5/35
13 अक्तू.	चित्रा (4)	19/01
28 अक्तू	स्वा. (1)	26/54
13 नवं.	स्वा. (2)	13/37
29 नवं.	स्वा. (3)	13/25
16 दिसं.	स्वा. (4)	16/59
5 जन.	विशा (1)	6/45
31 जन.	विशा. (2)	15/50
4 मार्च	वक्री	23/32

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

31 मार्च	रेव (1)	10/29
3 अप्रै.	रेव (2)	
5 अप्रै.	रेव (3)	
8 अप्रै.	रेव (4)	
11 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	4/27
13 अप्रै.	अश्वि (2)	
16 अप्रै.	अश्वि (3)	
19 अप्रै.	अश्वि (4)	
21 अप्रै.	भर. (1)	23/04
24 अप्रै.	भर. (2)	
27 अप्रै.	भर. (3)	
29 अप्रै.	भर. (4)	
2 मई	कृति (1)	18/27
5 मई	कृति 2 वृष	11/23
8 मई	कृति (3)	
10 मई	कृति (4)	
13 मई	रोहि (1)	14/27
16 मई	रोहि (2)	
18 मई	रोहि (3)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
21 मई	रोहि (4)	
24 मई	मृग (1)	11/08
27 मई	मृग (2)	
29 मई	मृग 3 मिथु	21/45
1 जून	मृग (4)	
4 जून	आर्द्रा (1)	8/32
6 जून	आर्द्रा (2)	
9 जून	आर्द्रा (3)	
12 जून	आर्द्रा (4)	
15 जून	पुर्न (1)	6/33
17 जून	पुर्न (2)	
20 जून	पुर्न (3)	
23 जून	पुर्न 4 कर्क	11/35
26 जून	पुष्य (1)	5/22
28 जून	पुष्य (2)	
1 जुला.	पुष्य (3)	
4 जुला.	पुष्य (4)	
7 जुला.	श्ले. (1)	5/02
9 जुला.	आश्ले (2)	
12 जुला.	श्ले. (3)	
15 जुला.	श्ले. (4)	
18 जुला.	मघा 1 सिंह	5/41
20 जुला.	मघा (2)	
23 जुला.	मघा (3)	
26 जुला.	मघा (4)	
29 जुला.	पू.फा. (1)	7/38
31 जुला.	पू.फा. (2)	
3 अग.	पू.फा. (3)	
9 अग.	पू.फा. (4)	
6 अग.	उ.फा. (1)	11/01
12 अग.	उफा 2 कन्या	6/08
14 अग.	उफा (3)	
17 अग.	उफा (4)	
20 अग.	हस्त (1)	16/16
23 अग.	हस्त (2)	
26 अग.	हस्त (3)	
29 अग.	हस्त (4)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2005 ई.	नक्षत्र	चरण
31 अग.	चित्रा (1)	23/50
3 सितं.	चित्रा (2)	
6 सितं.	चित्रा 3 तुला	16/37
9 सितं.	चित्रा (4)	
12 सितं.	स्वा. (1)	10/12
15 सितं.	स्वा. (2)	
18 सितं.	स्वा. (3)	
20 सितं.	स्वा. (4)	
23 सितं.	विशा (1)	24/24
26 सितं.	विशा. (2)	
30 सितं.	विशा. (3)	
2अक्तू	विशा 4 वृश्चि.	20/18
5 अक्तू	अनु. (1)	19/42
8 अक्तू	अनु. (2)	
11 अक्तू	अनु. (3)	
14 अक्तू	अनु. (4)	
17 अक्तू	ज्ये. (1)	22/28
20 अक्तू	ज्ये. (2)	
24 अक्तू	ज्ये. (3)	
27 अक्तू	ज्ये. (4)	
30 अक्तू.	मूला 1 धनु	13/35
2 नवं.	मूला (2)	
6 नवं.	मूला (3)	
9 नवं.	मूला (4)	
12 नवं.	पूषा. (1)	26/50
16 नवं.	पूषा. (2)	
20 नवं.	पूषा. (3)	
24 नवं.	पूषा. (4)	
28 नवं.	उषा. (1)	22/02
3 दिसं.	उषा 2 मक.	17/37
9 दिसं.	उ.षा. (3)	
17 दिसं.	उ.षा. (4)	
24 दिसं.	वक्री	15/09
30 दिसं.	व उषा (3)	25/54
7 जन.	व उषा (2)	27/07
13 जन.	उषा 1 धनु	18/50
19 जन.	पूषा (4)	8/46

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2005-06 ई.	नक्षत्र	चरण
26 जन.	पूषा. (3)	
3 फर.	मार्गी	14/52
11 फर.	पूषा. (4)	17/26
19 फर.	उ.षा. (1)	15/31
25 फर.	उषा 2 मक.	6/16
1 मार्च	उ.षा. (3)	
6 मार्च	उ.षा. (4)	
10 मार्च	श्रव (1)	9/00
14 मार्च	श्रव (2)	
17 मार्च	श्रव (3)	
21 मार्च	श्रव (4)	
24 मार्च	धनि (1)	19/15
28 मार्च	धनि (2)	
31 मार्च	धनि 3 कुंभ	10/40

शनि नक्षत्र प्रवेश

22 मार्च	मार्गी	9/29
5 अप्रै.	पुर्न (3)	27/18
26 मई	पुर्न 4 कर्क	7/26
24 जून	पुष्य (1)	25/40
21 जुला.	पुष्य (2)	9/30
16 अग.	पुष्य (3)	11/47
14 सितं.	पुष्य (4)	6/47
25 अक्तू	श्ले. (1)	21/09
22 नवं.	वक्री	14/27
20 दिसं.	व पुष्य (4)	8/45
4 फर.	व पुष्य (3)	9/05

शनि संवतान्त तक वक्री रहेगा।

राहु नक्षत्र प्रवेश

25 मार्च	रेव 4 मीन	5/54
26 मई	रेव (3)	26/30
28 जुला.	रेव. (2)	22/45

राहु नक्षत्र प्रवेश

2005-06 ई.	नक्षत्र	चरण
29 सितं.	रेव (1)	20/07
1 दिसं.	उ.भा. (4)	17/22
2 फर.	उ.भा. (3)	15/00

केतु नक्षत्र प्रवेश

25 मार्च	चित्रा 2 कन्या	5/54
26 मई	चित्रा (1)	26/30
28 जुला.	हस्त (4)	22/45
29 सितं.	हस्त (3)	20/07
1 दिसं.	हस्त (2)	17/22
2 फर.	हस्त (1)	15/00

यूरेनस

25 मई	शत (4)	22/34
14 जून	वक्री	28/10
5 जुला.	व शत (3)	15/50
14 अक्तू.	व शत (2)	17/31
16 नवं.	मार्गी	5/42
17 दिसं.	शत.(3)	26/26
27 फर.06	शत (4)	18/35

नेपच्यून

14 अप्रै.	धनि.(4)	18/20
20 मई	वक्री	5/05
25 जून	व श्रव.(4)	14/55
26 अक्तू.	मार्गी	28/50
6 फर.06	धनि.(1)	4/40

प्लूटो

27 मार्च	वक्री	8/02
14 मई	ज्ये.(4)	25/25
2 सितं.	मार्गी	16/08
5 दिसं.	मूला (1)	17/08
29 मार्च06	वक्री	18/09

सन् 2005-06 में ग्रहों का दृष्टि सम्बन्ध

* शनि की गुरु पर 3री दृष्टि = वर्षारम्भ से 12 जनवरी तक
* मंगल की शनि पर 8वीं दृष्टि = 13 जन. से 28 जन. तक
* शनि की शुक्र पर समसप्तक दृष्टि = 13 जन. से 27 जन. तक
* गुरू की सूर्य पर पंचम दृष्टि = 13 जन. से 11 फर. तक
* शनि-मंगल में समसप्तक दृष्टि = 29 जन. से 11 मार्च तक
* गुरू की मंगल पर पंचम दृष्टि = 12 मार्च से 21 अप्रैल तक
* मंगल की राहु पर चतुर्थ दृष्टि = 12 मार्च से 24 मार्च तक
* गुरु की सूर्य पर सातवीं दृष्टि = 14 मार्च से 12 अप्रैल तक
* गुरू-शुक्र मध्ये समसप्तक दृष्टि = 18 मार्च से 10 अप्रैल तक
* मंगल की शुक्र पर चतुर्थ दृष्टि = 11 अप्रैल से 22 अप्रैल तक
* मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 13 अप्रैल से 22 अप्रैल तक
* गुरु की शुक्र पर नवम् दृष्टि = 5 मई से 29 मई तक
* मंगल की शुक्र पर चतुर्थ दृष्टि = 5 मई से 28 मई तक
* मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 14 मई से 2 जून तक
* शनि की केतु पर तृतीय दृष्टि = 26 मई से 29 मार्च (2006) तक
* मंगल की शुक्र पर चतुर्थ दृष्टि = 3 जून से 22 जून तक
* मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 15 जून से 15 जुला. तक
* मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 18 जुला. से 15 अग. तक
* मंगल-शनि के मध्य (4-10) दृष्टि = 18 जुला. से 4 फर. (06) तक
* मंगल-शुक्र मध्ये समसप्तक दृष्टि = 6 सितं. से 2 अक्तू. तक
* मंगल-गुरु मध्य समसप्तक दृष्टि = 28 सितं. से 4 फर. (06) तक
* शुक्र-शनि मध्ये समसप्तक दृष्टि = 3 दिसं. से 13 जन. (06) तक
* सूर्य-शनि मध्ये समसप्तक दृष्टि = 14 जन. से 12 फर. (06) तक
* बुध-शनि मध्ये समसप्तक दृष्टि = 20 जन. से 5 फर. (06) तक

षडाष्टक योग—

* शनि-मंगल में षडाष्टक = 1 जन. से 28 जनवरी
* शनि-सूर्य में षडाष्टक = 1 जन. से 13 जनवरी
* सूर्य-शनि षडाष्टक = 14 जन. से 11 फरवरी
* मंगल-शनि में षडाष्टक = 12 मार्च से 21 अप्रैल
* मंगल-शनि में षडाष्टक = 26 मई से 2 जून
* **चारग्रही योग** = (सू., बु., शु. रा.) 1 अप्रैल से 10 अप्रैल
* **तीनग्रही योग (कर्के)** = (बु., शु., श.) 21 जून से 17 जुलाई
* **चारग्रही योग (कन्या में)**=(सू., बु., गु., के.) 17 सितं. से 27 सितं. तक
* **कालसर्प योग** = 29 जून से 13 जुलाई तक
* **कालसर्प योग** = 27 जुलाई से 9 अगस्त तक

ग्रहों की अंशात्मक युतियाँ २०६२ संवत्

14 जन. = बुध, शुक्र (धनु)
14 फर. = सूर्य, बुध (कुम्भ)
29 मार्च = बुध, शुक्र (मीने)
31 मार्च = सूर्य, शुक्र (मीने)
12 अप्रै. = सूर्य, राहु (मीने)
6 मई = बुध, राहु (मीने)
3 जून = सूर्य, बुध (वृष)
26 जून = शुक्र, शनि (कर्के)
26 जून = बुध, शुक्र (कर्के)
26 जून = बुध, शनि (कर्के)
28 जून = बुध, शुक्र (कर्के)
9 जुला. = मंगल, राहु (मीने)
9 जुला. = बुध, शुक्र (कर्क)
23 जुला. = सूर्य, शनि (कर्क)
6 अग. = सूर्य, बुध (कर्क)
19 अग. = गुरू, केतु (कन्या)
30 अग. = शुक्र, केतु (कन्या)
2 सितं. = गुरू, शुक्र (कन्या)
18 सितं. = सूर्य, बुध (कन्या)
28 सितं. = बुध, केतु (कन्या)
6 अक्तू. = सूर्य, केतु (कन्या)
6 अक्तू. = बुध, गुरु (तुला)
22 अक्तू. = सूर्य, गुरु (तुला)
24 नवं. = सूर्य, बुध (बृश्चिके)
14 जन. (06) = सूर्य, शुक्र (मकरे)
17 जन. = बुध, शुक्र (धनु)
26 जन. = सूर्य, बुध (मकरे)
12 मार्च = सूर्य, बुध (कुम्भ)
25 मार्च = सूर्य, राहु (मीने)

पंचकों के सम्बन्ध में वृथा भ्रमित न हों

कुम्भ व मीनस्थ चन्द्रमा कालीन पड़ने वाले नक्षत्र—धनि. (अन्तिम २ चरण), शत, पू.भा, उ.भा. एवं रेवती—पाँच नक्षत्र **पंचक** कहलाते हैं। इन नक्षत्रों के समय **शव को** जलाना, खाट, पलंग, शय्या, चटाई, कुर्सी आदि का बुनना, मकान, दुकान आदि की छत डालना, स्तम्भारोपित करना, दक्षिण दिशा की यात्रा, घास, लकड़ी को तोड़ना तथा इनका संग्रह करना आदि कृत्यों को करने का निषेध माना गया है—

प्रेतज्वालन शय्यकावितनने स्तम्भोच्छ्रयं याम्यादि यानम्।
काष्ठ तृणोच्चयं परिहरे कुम्भ द्वयस्थे विधौ॥ मुहूर्त मार्तण्ड॥

अन्येऽपि—**प्रेतस्यदाहं यम दिग्गमं त्यजेत् शय्या वितानं गृहगोपनादि च॥**
मु. चिन्तामणि पीयूष॥

पंचक नक्षत्रों में किए गए कृत्यों का फल भी पांच गुणा माना गया है—

पंचके पंचगुणितं त्रिगुणं च त्रिपुष्करे।
यमले द्विगुणं सर्घं हानीष्ट व्याधिक भवेत॥ ज्यो. तत्त्व प्रकाश

अर्थात् पंचक नक्षत्रों में धन आदि की हानि, लाभ, व्याधि आदि अनिष्ट की अथवा लड़का-लड़की की संख्या की संभावना पाँचगुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुणा तथा द्विपुष्कर में दो गुणा हो जाती है।

ध्यान रहे, पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, वधु-प्रवेश, उपनयन, विपणि आदि मुहूर्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना है।

रक्षा बन्धन, भैय्या दूज, महालक्ष्मी पूजन, नवरात्र पूजन, जप-व्रतानुष्ठान आदि पर्वों में तथा भूमि, मकान, स्कूटर, कार आदि वस्तुओं के क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में **पंचकों** का विचार नहीं किया जाता। ध्यान रहे, विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, उपनयन, विपणि (व्यवसाय), वधू-प्रवेश आदि मुहूर्तों में पंचक नक्षत्रों को शुभ एवं ग्राह्य माना जाता है। बृहद् ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धिप्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि कारक माने गए हैं—

रोहिण्यश्वि मृगाः पुण्यो हस्तचित्रोत्तरा त्रयम्।
.....धनिष्ठा च पुनर्वसु....सर्वेकार्येषु सिद्धिदा।
पूर्वात्रयं....शतताराभिमतेषु कृत्यं साधारणं स्मृतम॥ वृ. ज्योतिसार॥

इस प्रकार पंचक नक्षत्रों को उपरोक्त वर्णित पांचों कार्यों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में प्रशस्त मानना ही शास्त्र सम्मत होगा।

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय

श्री दुर्गाष्टमी (भवान्युत्पत्ति) (17 अप्रैल, रविवार)

चैत्र शुक्ल अष्टमी तिथि को श्रीदुर्गा भवानी का प्रादुर्भाव हुआ माना जाता है। शास्त्रकारों ने श्री दुर्गाष्टमी पर्व में नवमी युता अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है—

चैत्र शुक्लाष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः। तत्र नवमी युता ग्राह्या॥ —धर्मसिन्धु॥

अन्येऽपि— अष्टम्या नवमी विद्धा कर्त्तव्या फलाकांक्षिभिः।

सदुर्गा (९) वा सनन्दा वा कर्त्तव्या दशमी सदा॥ ज्योतिर्निबन्ध॥

सम्वत् २०६२ में १६ अप्रैल, शनि और १७ अप्रैल रविवार, दोनों दिन अष्टमी का समावेश हो रहा है, परन्तु १६ अप्रैल को सप्तमी विद्ध अष्टमी होने से वह व्रत, पूजादि के लिए ग्राह्य नहीं होगी—''**वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तमीसंयुताष्टमी**'' अग्नि पुराण॥

१७ अप्रैल रविवार को अष्टमी सूर्योदय काल में विद्यमान् है तथा नवमी युक्त होने के कारण रविवार (१७ अप्रैल) को ही श्री दुर्गाष्टमी का पर्व मनाना उचित होगा।

श्रीराम नवमी (18 अप्रैल, सोमवार)

श्रीभगवान् राम का जन्म (अवतार) चैत्र शुक्ल नवमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र मध्यान्ह काल में हुआ था। शास्त्र वचनानुसार यदि दो दिन मध्यान्ह हो या न हो तो भी परली ग्रहण करें। अष्टमी विद्धा नवमी का निषेध कहा गया है। अष्टमी युक्ता तो मध्यान्ह एवं पुनर्वसु नक्षत्र युता भी छोड़ देनी चाहिए—

दिन द्वये मध्यान्ह व्याप्तावव्याप्तो वा परा॥ अष्टमी विद्धाया निषेधात्॥.........धर्म सिन्धु

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार भी अष्टमी युक्ता नवमी का त्याग करके दशमी युक्त नवमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है—

नवमी चाष्टमी विद्धा त्याज्या रामपरायणैः।

उपोषणं नवम्यां तु दशम्यामेव पारणम्॥ ब्रह्मवैवर्त पु.

संवत् २०६२ में नवमी तिथि का समावेश 17 अप्रैल एवं 18 अप्रैल दोनों दिनों में विद्यमान् है, परन्तु 17 अप्रैल को नवमी अष्टमी संयुक्ता होने के कारण व्रतोपासना हेतु त्याज्य मानी जाएगी, **18 अप्रैल, सोमवार को नवमी दशमी युक्ता होनें से व्रतोपासना आदि हेतु ग्राह्य होगी॥**

श्री परशुराम जयन्ती

श्रीपरशुराम का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि में **रात्रि के प्रथम** प्रहर में हुआ था—

इयमेव तृतीया परशुराम जयंती। इयं रात्रि प्रथम याम व्यापिनी ग्राह्या—धर्मसिन्धु॥

प्रस्तुत वर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया की रात्रि का प्रथम प्रहर 10 मई, मंगलवार की रात को 9 बजकर 16 मिनट से रात्रि का प्रथम प्रहर शुरु होगा, उस समय रोहिणी नक्षत्र और भी प्रशस्त होगा। व्रत के दिन प्रातः स्नानानन्तर ''**मम ब्रह्मत्व प्राप्ति कामनया श्री परशुराम पूजनमहं करिष्ये॥**'' यह संकल्प करके सूर्यास्त तक मौन रखे और सायंकाल को स्नानादि से शुद्ध होकर श्रीपरशुराम का पूजन करे तथा चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने के पश्चात् एवं भोजनादि करने के पश्चात् रात्रिभर **श्रीराम मन्त्र** का जाप करें॥

अक्षया तृतीया व्रत

वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को अक्षय तृतीया का व्रत, पर्व होता है। इस दिन दिए हुए दान और किए हुए स्नान, होम, जप आदि सभी कर्मों का फल अनन्तगुणा होता है। यह मध्यान्ह व्यापिनी ग्राह्य होती है। यदि बुधवार को हो तो और भी महापुण्यप्रदा मानी जाती है।

वैशाख शुक्ल तृतीया एषा तु मध्यान्ह–व्यापिनी ग्राह्या।

इयं रोहिणी वा मृगशिरे बुध योगे महापुण्या॥ धर्मसिन्धु॥

प्रस्तुत वर्ष अक्षय तृतीया २७/३३ (17/17 घं. मिं.) तक, मध्यान्ह–व्यापिनी, ता. 11 मई, बुधवार को होने से महापुण्य प्रदायिनी होगी। यद्यपि रोहिणी नक्षत्र का अभाव है, फिर भी **बुधवार के योग से** विशेष पुण्यप्रदा रहेगी।

रक्षा बन्धन (19 अग., शुक्रवार)

रक्षा बन्धन का पवित्र कार्य **भद्रा शून्य (रहित)** अपरान्ह काल में करने का शास्त्र विधान है—

भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनीति॥

परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश यदि भद्रा काल में ही रक्षा बन्धन आदि शुभ कार्य करना पड़े, तो शास्त्रकारों ने **भद्रा मुख** काल को छोड़ कर **भद्रा पुच्छकाल में** रक्षा बन्धनादि शुभ कार्य करने की आज्ञा दी है। भविष्य पुराणानुसार भद्रा के पुच्छकाल में किए गए कृत्य में सिद्धि एवं विजय प्राप्त होती है, जबकि भद्रा मुख में कार्य का नाश होता है—

''मुच्छे जयावहाः, मुखे कार्य विनाशाय...........''

विक्रमी संवत २०६२ में रक्षा बन्धन का पर्व १९ अगस्त, शुक्रवार को पड़ता है तथा भद्रा दुपैहर 1 बजकर 19 मिनट तक व्याप्त रहेगी। यदि सम्भव हो तो 1 बजकर 19 मिनट के बाद ही अपरान्ह काल में रक्षाबन्धन का शुभ कार्य करना प्रशस्त होगा, परन्तु यदि **परिस्थितिवश** पहले आवश्यक हो तो **प्रातः 9 बजकर 48 मिंट से 10 घं. 47 मिं. तक-भद्रा पुच्छ काल** में यह शुभ-कार्य किया जा सकता है तथा प्रातः 10:48 से लेकर दुपैहर 12 बजकर 29 मिनट तक-भद्रा **मुखकाल का** (रक्षा बन्धन आदि कृत्य में) त्याग करें। प्रातः 9.48 से 10.47 तक की अवधि का समय अपेक्षाकृत शुभ एवं ग्राह्य रहेगा।

अपरान्हकाल दुपैहर 1.49 से सायं 4.25 तक व्याप्त रहेगा।

रक्षा सूत्र (राखी) बान्धते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना चाहिए—

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामनुबध्नासि रक्षे मा चल मा चल।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत

सिद्धान्त रूप में भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र में, अर्ध रात्रि के समय वृष के चन्द्रमा कालीन हुआ माना जाता है। श्रीमद्भागवत, भविष्य, अग्नि आदि पुराणों में अर्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशिस्थ चन्द्रमा के मत को ही मान्यता दी है। भविष्य पुराण अनुसार—

''मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्द्धरात्रके, वृष राशि स्थिते चन्द्रे नक्षत्रे रोहिणी युते।''

सिद्धान्त ग्रन्थ धर्म सिन्धु में भी पूर्व विद्धा (सप्तमी युता) अर्ध रात्रि कालीन भाद्र. अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है—

''कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथ व्यापिनी ग्राह्या। पूर्व दिन एव निशीथ योगे पूर्वा ॥ धर्मसिन्धु

स्मार्त्त धर्मावलम्बी (जिसके अन्तर्गत प्रायः सभी धर्म परायण गृहस्थी लोग आ जाते हैं) चन्द्रोदय व्यापिनी अर्द्धकालीन रहने वाली अष्टमी को भगवान कृष्ण जन्माष्टमी के व्रत, पूजन आदि के लिए श्रेष्ठ एवं ग्राह्य मानते हैं। धर्मसिन्धु अनुसार—

''स्मार्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, यतिर्भि निष्काम-वनस्थे विधवाभिः वैष्णवैश्च परे वो पोष्या।''

ऋषि व्यास, नारद आदि ऋषियों के मतानुसार सप्तमी युक्त अष्टमी ही व्रत, पूजन आदि हेतु ग्रहण करनी चाहिए—

कार्या विद्धाऽपि सप्तम्या रोहिणी सहिताष्टमी। तत्रोपवासं कुर्वीत तिथिमान्ते पारणम्॥ नारदः

वैष्णव विशेष सम्प्रदाय से जुड़े लोग उदय कालिक एवं नवमी संयुक्त कृष्ण जन्माष्टमी को मान्यता देते हैं। तिथिनिर्णय अनुसार—

''वैष्णवास्तु अर्धरात्रि व्यापिनीमपि रोहिणी युतामपि सप्तमी विद्धां परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या॥''

सम्वत् २०६२ में **26 अगस्त, शुक्रवार** को भाद्र. कृष्ण **सप्तमी** प्रातः केवल 8 बजकर 32 मिनट तक है, तदुपरान्त **अष्टमी अर्धरात्रि** को व्याप्त होकर आगामी दिन 27 अग., शनिवार को प्रातः 9.15 तक विद्यमान है।

शुक्रवार (26 अग) को अर्धरात्रि में **अष्टमी** के अतिरिक्त रात्रि 9.40 बजे के बाद **रोहिणी नक्षत्र** और **वृष का चन्द्रमा** भी रहेगा। इस प्रकार **26 अगस्त, शुक्रवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के व्रत, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मन्त्र** का जप, उपासना, अर्घ्य आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा।

27 अग. शनिवार की अर्धरात्रि को यद्यपि अष्टमी तिथि, एवं रोहिणी नक्षत्र का अभाव रहेगा। तथापि **वैष्णव सम्प्रदाय** से सम्बन्धित श्रद्धालु लोग नवमी विद्धा उदयकालिक अष्टमी को ग्रहण करेंगे।

दूर्वाष्टमी व्रत— भाद्र शुक्ल अष्टमी को सन्तान सुख एवं वंश वृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। धर्मसिन्धु अनुसार—

दूर्वाष्टमी व्रतं पुण्यं यः करोतीह मानवः। न तस्य क्षयमाप्नोति सन्तानं साप्तपौरूषम्।
नन्दते वर्द्धते नित्यं यथा दूर्वा तथा कुलम्॥ भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाष्टमी सा च पूर्वा ग्राह्या॥

परन्तु जिस किसी वर्ष में भाद्र शुक्लाष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए तो उस स्थिति में भाद्र शुक्ल अष्टमी की अपेक्षा भाद्र कृष्णाष्टमी में इस व्रत का पालन करना चाहिए। यह पूर्वा विद्धा लेना चाहिए—

इदं दूर्वा पूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्। धर्मसिन्धु

भाद्र शुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनी सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात् = हेमाद्रि।

प्रस्तुत संवत् २०६२ में यद्यपि भाद्र शुक्लाष्टमी ११ सितंबर को पड़ती है, परन्तु **अगस्त्योदय** ३ सितंबर को हो जाने से दूर्वाष्टमी का व्रतादि, उससे पूर्ववर्ती भाद्रकृष्ण की सप्तमी विद्धा अष्टमी अर्थात् २६ अगस्त, शुक्रवार को करना शुभ एवं शास्त्र सम्मत होगा।

''भीष्मपंचक व्रत''

सामान्यतः यह व्रत कार्तिक शुक्ल एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक **पाँच दिनों का व्रत/पर्व** कहा जाता है। यदि किसी स्थिति में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि में किसी तिथि का क्षय हो जाने से एकाः से पूर्णिमा तक, दिनों की संख्या चार रह जाए तो उस स्थिति में **दशमी विद्धा** एकादशी से इस व्रत का प्रारम्भ करके पूर्णिमा तक पाँच दिनों तक **भीष्म पंचकों** के व्रत-नियमादि का पालन करना चाहिए—

''एकादश्यादि दिन पंचके भीष्मपंचक व्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक-पौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारम्भे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक व्रत समाप्ति र्न घटते तदा विद्धैकादश्यामप्यारम्भः॥'' —धर्मसिन्धु

प्रस्तुत वर्ष सं० २०६२ में कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा का क्षय हो जाने से **भीष्म पंचक** (शुद्ध का० एकादशी से प्रारम्भ करने पर) की संख्या केवल चार दिन रह जाती है, इस स्थिति में दशमी विद्धा एकादशी, अर्थात् ११ नवंबर से **भीष्मपंचक** प्रारंभ करने से उनकी **संख्या पाँच होगी।** अतएव **भीष्मपंचक** ११ से १५ नवंबर तक ही शास्त्रसम्मत होंगे।

तुलसी विवाह— कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियों में विवाह नक्षत्र कालीन करने विधान हैं—

एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापि दिने कार्तिकशुक्लान्तर्गत विवाहनक्षत्रेषु वा....धर्मसिंधु।

कुछ लोग कार्तिक शुक्ल एकादशी को यह पर्व करना शुभ मानते हैं—**कार्तिक शुक्लैकादश्यां क्वचिदुक्तः —धर्म सिंधु** परन्तु कार्तिक की द्वादशी तिथि और रेवती नक्षत्र दोनों का संयोग हो, तो विशेष शुभ एवं प्रशस्त माना जाता है और जो द्वादशी एवं रेवती दोनों का योग रात्रि में न हो, तो दिन में ही द्वादशी एवं रेवती काल में करें—

''तत्रापि द्वादश्या रेवत्यन्तपादयोगो रात्रि प्रथमभागे प्रशस्तः, तदभावे रात्रौ रेवती नक्षत्र मात्र योगेऽपि॥ द्वादशीरेवत्योरूभयोरपि रात्रावभावे दिवैव द्वादशी मध्ये कार्य इति कौस्तुभे॥'' धर्मसिन्धु

वि. संवत् २०६२ में कार्तिक शुक्ल **द्वादशी, 13 नवम्बर, रविवार को** प्रातः 10 बजकर 26 मिनट तक है, जबकि रेवती नक्षत्र अर्धरात्रि 2 बजकर 1 मिनट तक व्याप्त है। प्रातः 10 बजकर 25 मिनट तक द्वादशी एवं रेवती नक्षत्र, दोनों का योग होने से, इस समय तक की अवधि श्रेष्ठ रहेगी। रात्रिकाल में द्वादशी तिथि का अभाव होने पर भी केवल रेवती नक्षत्र एवं त्रयोदशी तिथि काल में भी यह पवित्र कार्य किया जा सकता है।

विशेष—कार्तिक मास में तुलसी विवाह अर्थात् तुलसी माता का विधिपूर्वक विवाह करने से जातक/जातिका के विवाह सम्बन्धी बाधाएँ दूर हो जाती हैं, ऐसे माना जाता है।

'करवाचौथ' (20 अक्तूबर, 2005 ई.) को मुख्य नगरों का चन्द्रोदयकाल

भारतीय स्त्रियों के लिए 'करवाचौथ' का व्रत अखण्ड सुहाग को देने वाला माना जाता है। विवाहित स्त्रियां इस दिन अपने **पति की दीर्घ आयु** एवं स्वास्थ्य की मंगलकामना करके भगवान रजनीश (चन्द्रमा) को अर्घ्य अर्पित कर व्रत को पूर्ण करती हैं। क्योंकि 'पंचांगदिवाकर' के पाठक सम्पूर्ण भारत में हैं। तथा ग्रहस्पष्ट तथा पक्ष वाले पृष्ठों पर केवल जालन्धर के चन्द्रोदयास्त दिए रहते हैं। 'पंचांगदिवाकर' के पाठकों के लिए भारत के प्रमुख नगरों के करवाचौथ (20 अक्तूबर, 2005 ई०) के दिन का चन्द्रोदय दे रहे हैं। ध्यान रहे, यह समय पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब का है अर्थात् चन्द्रोदय के 2-3 मिनट बाद पूर्ण चन्द्रमा होने पर ही अर्घ्य देना चाहिए।

नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं. मिं.
अमृतसर	19-43	चण्डीगढ़	19-37	फिरोज़पुर	19-44
अम्बाला	19-39	चम्बा (हि.प्र.)	19-34	फाज़िल्का	19-50
अर्की (हि.प्र.)	19-35	चेन्नई	20-05	फरीदाबाद	19-42
अहमदाबाद	20-16	जम्मू	19-38	बटाला	19-39
आगरा	19-43	जयपुर	19-52	बेंगलौर	20-16
इलाहाबाद	19-30	जालन्धर	19-43	बिलासपुर (हि.प्र.)	19-36
इटावा (उ.प्र.)	19-39	जीन्द (ह.)	19-44	भटिण्डा	19-46
इन्दौर	20-04	जोधपुर	19-42	मण्डी (हि.प्र.)	19-32
उज्जैन	20-04	दार्जिलिंग	19-30	मलेरकोटला	19-41
उधमपुर (का.)	19-37	दिल्ली	19-41	मुम्बई	20-23
ऊना (हि.प्र.)	19-38	देहरादून	19-35	मेरठ	19-38
कठुआ (का.)	19-38	धर्मशाला	19-35	मोगा	19-42
कपूरथला (पं.)	19-41	धूरी (पं.)	19-43	मुक्तसर	19-48
करतारपुर	19-41	नागपुर	19-56	मोहाली	19-36
कलकत्ता	19-10	नाभा	19-42	रामपुरबुशैहर	19-33
कांगड़ा	19-35	नारनौल	19-47	रिवाड़ी (ह.)	19-45
कालका (ह.)	19-35	नालागढ़ (हि.प्र.)	19-36	रोपड़ (पं.)	19-37
किश्तवाड़ (का.)	19-34	नाहन (हि.प्र.)	19-35	रोहतक	19-42
कुराली (पं.)	19-37	नैनीताल	19-31	लखनऊ	19-31
कुरुक्षेत्र	19-39	पंचकूला	19-36	लुधियाना	19-40
कुल्लू	19-32	पटना	19-16	शिमला	19-35
कैथल	19-40	पटियाला	19-40	श्रीनगर	19-36
कोटखाई (हि.प्र.)	19-33	पठानकोट	19-37	संगरूर	19-42
खन्ना	19-38	पिहोवा	19-40	सहारनपुर	19-36
गाजियाबाद	19-39	पानीपत	19-41	सोलन (हि.प्र.)	19-34
गुड़गांव	19-44	पालमपुर	19-34	हमीरपुर (हि.प्र.)	19-34
गुरदासपुर	19-38	पुंछ (का.)	19-34	हरिद्वार	19-33
गुवाहाटी	18-48	फगवाड़ा	19-40	हैदराबाद	20-03
		फरीदकोट	19-44	होशियारपुर	19-38

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली)

(1 नवम्बर, 2005 ई०, मंगलवार) (दीपावली में ग्राह्य विशेष प्रशस्त पुण्यकाल)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस में प्रदोष काल एवं अर्धरात्रि व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकस्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निद्रां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ता: सर्वकल्याणरूपिणि—ज्योतिर्निबन्ध
कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत् देवीं भोगमोक्ष प्रदायिनीम्॥ भविष्य पु.

प्रस्तुत वर्ष 1 नवम्बर, 2005 ई० मंगलवार को दीपावली **स्वाती नक्षत्र, प्रीति योग कालीन प्रदोष** एवं अर्धरात्रि व्यापिनी **अमावस्या** युक्त होने से विशेषत: **प्रशस्त** एवं श्लाघ्य रहेगी। **मंगलवार** की दीवाली मन्त्र-जाप, सिद्धि एवं तान्त्रिक प्रयोगों के लिए विशेष रूप से ग्राह्य मानी जाती है। **दीपावली** में **स्वाती नक्षत्र, अमावस तिथि, प्रदोष काल, निशीथ काल** एवं **महानिशीथकाल** विशेष महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

प्रदोषकाल—स्थानिक सूर्यास्त से अर्थात् सायं 5 बजकर, 36 मिनट से रात्रि 8 बजकर 14 मिनट तक रहेगा। इसमें भी **स्थिर लग्न (वृष)** सायं 6.23 से रात 8.17 तक रहेगा तथा **लाभ की चौघड़िया** सायं 7.15 से 8.54 बजे तक तथा गुरु की होरा 7.47 से 8.47 तक होगी।

इस प्रकार सायं **7.47 से रात 8.47** बजे तक का समय श्री गणेश, **महालक्ष्मी पूजन,** पंचदेव नवग्रह, कुबेर आदि पूजन, बही खातों (बसना) का पूजन, मन्त्र-जाप, पाठ, दीपदान, ब्राह्मण भोजन, अनाज, वस्त्र, मिष्टान्न, धनादि का दान, व्यवसायिक व अन्य सांसारिक उन्नति के लिए **श्रेष्ठ रहेगा।**

निशीथ काल—रात्रि 8 बजकर 14 मिनट से लेकर रात्रि 10.52 तक **निशीथ काल** रहेगा। इस काल के दौरान **मंगल एवं सूर्य** को होराएँ होंगी। अधिकांशत: मिथुन लग्न व्याप्त रहेगा। इस अवधि के मध्य भी **श्रीमहालक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजा,** काम्य अनुष्ठान, मन्त्र-जाप, यथाशक्ति वस्त्र, अनाज, फलों आदि का दान करना चाहिए।

महानिशीथ काल—रात्रि 10.52 बजे से लेकर अर्द्ध-रात्रि 1 बजकर, 30 मिनट तक की अवधि में **महानिशीथ** काल **मन्त्रोपासना,** विशेषकर अनुष्ठान, ध्यान, समाधि, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सिद्धि आदि क्रियाओं के लिए विशेष प्रशस्त रहेगा। इस बीच में रात्रि 10.33 बजे से रात 12 बजकर, 12 मिनट तक क्रमश: **शुभ** तदुपरान्त रात्रि 1.52 तक **अमृत** की चौघड़िया रहेगी। रात्रि 12.54 से रात 3.15 तक की अवधि में **स्थिर लग्न** (सिंह) तथा रात 12.47 से 1.47 के बीच चन्द्रमा की शुभ होरा रहेगी। यह समयावधि **मन्त्र-अनुष्ठान, जप, ध्यान आदि कृत्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगी।**

ज्ञातव्य रहे कि **मंगलवासरी दीपावली** सत्ता-वर्ग के लिए शुभ नहीं मानी जाती। शासक वर्ग एवं राजनेताओं के लिए इसका फल शुभ नहीं रहेगा। राजनेताओं में परस्पर टकराव, विरोध हो, कहीं हिंसक घटनाएँ, जनादोलन एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित हों। कार्तिक पक्ष के ही शुक्ल **पक्ष तेरह दिन का** होने का फल भी शुभ नहीं होगा। उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक मूल्य-वृद्धि के कारण लोगों में असन्तोष की भावना रहे। अनाज भी महंगा हो, व्यापारी वर्ग को अपेक्षाकृत लाभ कम मिले, विशिष्ट वर्ग के कृषकों को समुचित लाभ प्राप्त हो—

''मंगलवारी पड़े दिवाली, हँसे किसान रोवे व्यापारी''

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ संस्कारों (विवाह–मुण्डनादि) एवं मन्त्र–जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से लिया जाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। ''**चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि शुक्ल पक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति॥ (ब्रह्मपुराण)।**'' सम्भवतः इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप–दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन–सम्पदा एवं सुख–शान्ति बनी रहती है।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रातः तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप–दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट–स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत–मिट्टी में जौं–गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा–इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका '**पंचांगदिवाकर**', सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म–विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। इस प्रकार अन्य देवताओं की भी (यथा समय) प्रार्थना मन्त्र पढ़ें–

''भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्ष क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।''

ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः। आदि नाम–मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों आदि का दान करें। संवत्सर की मूर्त्ति बनाकर उसकी ''**चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः**'' आदि से भी पूजा करनी चाहिए।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र–पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम**, सम्वत् **का वास, सवारी राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्–विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अ़जवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

संवत् २०६२ में त्रयोदशी (१३) दिनात्मक पक्ष का फल

विक्रमी सम्वत् २०६२ में तिथियों की प्रत्यक्षगणित की गणना के कारण **कार्तिक शुक्ल पक्ष** (२ नवंबर से १५ नवबंर, २००५ ई.) के मध्य तेरह दिन का पक्ष आ रहा है। इसका फल अशुभ माना गया है।

सामान्यतः सूर्य और चन्द्रमा की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण भारतीय पंचांगों में कृष्ण अथवा शुक्ल पक्षों के अन्तर्गत प्रतिवर्ष पक्ष के दिन १४, १५ अथवा १६ दिन आ जाते हैं– अर्थात् पक्ष में कोई तिथि क्षय हो जाने की स्थिति में १४ दिन, तिथि वृद्धि होने पर १६ दिन तथा तिथि क्षय या वृद्धि न होने की स्थिति में १५ दिन ही होते हैं। कई बार चन्द्र और सूर्य **की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण** किसी पक्ष में दो बार तिथि का क्षय हो जाने से १३ दिन का पक्ष भी आ जाता है। इसको **विश्वघस्र** पक्ष भी कहते हैं। **महाभारत में भी तेरह दिन के** पक्ष के अशुभत्व के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। अन्य शास्त्रकारों ने भी त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के अशुभत्व के विषय में अनेकत्र प्रमाण मिलते हैं, यथा–

अनेक युग साहस्र्यां दैवयोगात् प्रजायते। त्रयोदश दिने पक्षः तदा संहरते जगत्॥

अर्थात् कई एक युगों में प्रजा का नाश करने के निमित्त तेरह दिन का पक्ष आता है, अर्थात् जिस पक्ष में तेरह दिन हों, वह पक्ष लोगों में क्लिष्ट रोग उत्पादक, महँगाई, विग्रह, उपद्रव एवं हिंसा आदि अशुभ फलकारक होता है। समाज में सर्वत्र अशान्ति का वातावरण फैलता है। अन्यत्र भी इसके सम्बन्ध में अशुभ फल कहे गए हैं–

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः।
भवेल्लोक क्षयो–घोरो रूण्डमुण्डमाला युतामही।
त्रयोदश दिनः पक्षस्तदा संहरते जगत्।
अपि वर्ष सहस्रेण कालयोगः प्रकीर्तितः॥

इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के प्रभावस्वरूप भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अस्थिर होंगी। राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं बिखराव पैदा होंगे। कहीं तोड़–फोड़, हिंसा, विस्फोटक घटनाएँ एवं छत्रभंग की आशंका होगी। कहीं भूस्खलन, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप घटित होंगे। दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं में जबरदस्त तेजी होने के योग बनेंगे। **तेरह दिन** के पक्ष में शास्त्र में विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कार्यों का निषेध माना गया है। ज्योतिर्निबन्धानुसार–

उपनयनं परिणयनं त्वेशमारम्भादि कर्माणि।
यात्रा द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरुषः॥

इसी कारण शास्त्र वचनानुसार संवत् २०६२ के अन्तर्गत कार्तिक शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने से विवाह, मुण्डन, गृह–प्रवेश, विपणि आदि शुभ मुहूर्त्त नहीं लगाए गए हैं।

वि. संवत् २०६२, चैत्र शुक्ल पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 9 से 24 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, बसन्त-ग्रीष्म ऋतु — भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल, बुध पूर्व में दृश्य, सायं शनि याम्योत्तरवृत्त तथा गुरु पूर्व में दृश्य, शुक्र भी ता. 24 अप्रै. से उदित होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	शक वैशा.	सफर मु.	अप्रैल	चैत्र प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३१/३५	१	शनि	४७	००	रेव	१०	५५	वैधृ	२९	२८	किं	१८	१८	१९	२९	9	२७	मे. १०/५५	**चैत्र नवरात्र प्रा., विलम्ब नाम संवत्सर** प्रारम्भ, **पंचक समाप्त A**	११	२५	२०	२३	६	११	१८	४९
३१/४०	२	रवि	४५	५०	अश्वि	१०	३५	विष्क	२५	२५	बा	१६	२५	२०	३०	10	२८	मेष	चन्द्रदर्शन मु. १५, **शुक्र अश्वि. १ मेष में** ५५/४५, गंडमूल	११	२६	१९	१५	६	०९	१८	४९
३१/४३	३	चंद्र	४६	१३	भर.	११	४३	प्रीति	२२	३३	तै	१६	०२	२१	रबि	11	२९	वृ. २७/१३	**गणगौरी तीज**, मत्स्य जयंती, शिवशक्ति पूजा, रबि उल्लावल १ मु.	११	२७	१८	०८	६	०८	१८	५०
३१/४८	४	मंग	४८	१३	कृति	१४	२३	आयु	२०	५५	व	१७	१३	२२	२	12	३०	वृष	भद्रा १७/१३ से ४८/१३ तक, **बुध मार्गी** १८/००, स. सि. योगः	११	२८	१६	५९	६	०७	१८	५१
३१/५३	५	बुध	५१	४३	रोहि	१८	३३	सौभ	२०	३३	ब	१९	५८	२३	३	13	वैशा	मि. ५१/१०	**सूर्य अश्वि. १ मेष में** ४५/०८, **वैशाख संक्रांति** ३० मु., मंगल **B**	११	२९	१५	४७	६	०६	१८	५१
३१/५८	६	गुरू	५६	३०	मृग	२४	०८	शोभ	२१	१३	कौ	१४	०७	२४	४	14	२	मिथुन	**स्कन्द षष्ठी** — **B** धनि १ में ३३/००, लक्ष्मी ५,	०	००	१४	३३	६	०५	१८	५२
३२/०३	७	शुक्र	६०	००	आर्द्रा	३०	४८	अति	२२	४८	ग	२९	२२	२५	५	15	३	मिथुन	शुक्रोदय पश्चिमे 24 अप्रैल	०	०१	१३	१७	६	०४	१८	५३
३२/०५	७	शनि	२	१३	पुर्न	३८	०३	सुक	२४	५३	व	२	१३	२६	६	16	४	क. २१/१३	भद्रा २/१३ से ३५/२१ तक	०	०२	११	५८	६	०३	१८	५४
३२/१३	८	रवि	८	२८	पुष्य	४५	२३	धृति	२७	१०	ब	८	२८	२७	७	17	५	कर्क	**श्रीदुर्गाष्टमी**, भवान्युत्पत्ति, **मे. चिंतपूर्णी**-कांगड़ा, **बाहूफोर्ट**-जम्मू	०	०३	१०	३५	६	०१	१८	५४
३२/२०	९	चंद्र	१४	१०	श्ले.	५२	१५	शूल	२९	०८	कौ	१४	१०	२८	८	18	६	सिं. ५२/१५	**श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त**, गण्डमूल	०	०४	०९	१२	६	००	१८	५६
३२/२५	१०	संग	१८	५५	मघा	५८	१०	गंड	३०	३०	ग	१८	५५	२९	९	19	७	सिंह	भद्रा ५५/१३ से प्रा., सूर्य सायन वृष में २९/०८, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ	०	०५	०७	४७	५	५९	१८	५७
३२/२७	११	बुध	२३	२०	पूफा	६०	००	वृद्धि	३०	५८	वि	२३	२०	३०	१०	20	८	सिंह	भद्रा २३/२० तक, **कामदा एकादशी व्रतम्**	०	०६	०६	१८	५	५८	१८	५७
३२/३३	१२	गुरू	२५	५५	पूफा	२	५०	ध्रुव	३०	१८	बा	२५	५५	वैशा	११	21	९	कं. १८/४५	**प्रदोष व्रत**, शुक्र भरणी में ४२/४८, शक वैशाख प्रा., **अगस्त्यास्त**	०	०७	०४	४९	५	५७	१८	५८
३२/३८	१३	शुक्र	२६	५३	उफा	६	००	व्या.	२८	२३	तै	२६	५३	२	१२	22	१०	कन्या	**श्रीमहावीर जयंती, मंगल कुम्भ में** ४४/२५, अनंग १३	०	०८	०३	१७	५	५६	१८	५९
३२/४०	१४	शनि	२६	१८	हस्त	७	३५	हर्ष	२५	१८	व	२६	१८	३	१३	23	११	तु. ३७/४८	भद्रा २६/१८ से ५५/१३ तक	०	०९	०१	४३	५	५५	१८	५९
३२/४५	१५	रवि	२४	१८	चित्रा	७	४३	वज्र	२१	००	ब	२४	१८	४	१४	24	१२	तुला	**चैत्र पूर्णिमा**, वैशाख स्नान प्रारंभ, श्री हनुमान जयंती **C**	०	१०	००	०८	५	५४	१९	००

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

A (१०/३३ घं.) कलश स्थापन, संवत्सर फल श्रवण **C** शुक्रोदयः पश्चिमे 5/12 स्टैं. टाईम

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 17 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	९	११	५	०	२	११	५
०३	०७	२५	०८	१८	०७	२७	२८	२८
०९	२४	४९	४४	२१	२८	०४	४६	४६
१९	५४	१२	३०	२०	५९	२७	५७	५७
५८ ४०	७१४ ५	४३ ३२	२५ २१	७ १२	७४ १३	२ ४९	३ ११	३ ११
अश्वि १	पुष्य २	धनि १	उभा २	हस्त ३	अश्वि ३	पुर्न ३	रेव ४	चित्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ सू. शु.
२
३ श.
४ चं.
५
६ गु. के.
७
८
९
१० मं.
११
१२ बु. रा.

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 24 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१०	११	५	०	२	११	५
९	०४	००	१३	१७	१६	२७	२८	२८
५९	४२	५४	०६	३२	०८	२६	२४	२४
१०	५८	०५	५४	३१	०१	१६	४०	४०
५८ २५	८१४ २१	४३ ३४	५२ ००	६ ३७	७४ ४	३ ३०	३ ११	३ ११
अश्वि ३	चित्रा ४	धनि ३	उभा ३	हस्त ३	भर. १	पुर्न ३	रेव ४	चित्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१ सू. शु.
२
३ श.
४
५
६ गु. के.
७ चं.
८
९
१०
११ मं.
१२ बु. रा.

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

प्रतिपदा से बार्हस्पत्यमानानुसार ''विलम्ब'' नाम का नया सम्वत्सर २०६२ प्रारम्भ होगा। अतः वर्ष के अन्त तक संध्या--संकल्पादि शुभ कार्यों में इसी नाम का प्रयोग रहेगा। सम्वत् का राजा शनि तथा मन्त्री बुध है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण-मुख द्वारा नवसम्वत्सर का नाम, वास-सवारी आदि का फल-श्रवण, पूजन, कलश स्थापन करवा कर उस पर देवी की मूर्ति स्थापित करे। तदनन्तर **श्री दुर्गा-सप्तशती** का पाठ करने का विधान है। प्रतिपदा से नवमी तक पाठ/पूजा के समय प्रतिदिन घृत का दीपक भी जलाना चाहिए। सम्वत्सर राजा-मन्त्री आदि के प्रभावस्वरूप आगामी वर्ष साधारण लोगों को सरकारी नीतियों के कारण मानसिक व आर्थिक कष्टों का सामना होगा। विशेष वर्ग के लोगों में सुख साधनों की वृद्धि होगी। प्रशासकों व राजनीतिज्ञों के मध्य विरोध एवं वैमनस्य रहे। अधिकांश लोग रोग, शोक, बेईमानी, महँगाई एवं आर्थिक अस्थिरता के कारण परेशान रहें। लोगों में भोग-विलास व प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़े। **व्यापारिक रुख**—ता. 13 अप्रैल को मेष संक्रांति 30 मुहूर्त्ति बुधवार को है। जिससे गेहूँ, उड़द, धान्य, अरहर, मूंग, चने, खल, बिनौले, पशु-चारा, दूध आदि के भावों में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। ता. 22 से कुम्भ राशि का मंगल भी सर्व प्रकार के अनाज, धान्य आदि में तेजीकारक होगा। **राशिफल**—वैशाख संक्रांति मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, मकर व मीन राशि वालों को लाभदायक रहेगी। मेष संक्रांति के स्नानदान आदि का पुण्यकाल 14 अप्रैल की प्रातः सूर्योदय से होगा। चैत्र मास में 5 शनिवार एवं 5 रविवार होने से विश्व में कहीं उपद्रव, आतंकवादी व हिंसा की घटनाएँ होंगी। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होने से सामान्य लोगों में असंतोष व्याप्त हो। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में हि.प्र., हरियाणा, पंजाब, ज. का. के उत्तरी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, वैशाख कृष्ण पक्ष शाकः १९२७ — सन् 2005 ई. (ता. 25 अप्रै. से 8 मई तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल, बुध पूर्व में दृश्य, सायं शनि याम्योत्तरवृत्त तथा गुरु पूर्व में दृश्य, 25 अप्रै. से शुक्र भी इसी समय पश्चिम में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	वैशा. शक	राशि मं.	अंग्रेज़ी	वैशा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ए. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२/५०	१	चंद्र	२०	५८	स्वा.	६	३३	सिद्धि	१५	४३	कौ	२०	५८	५	१५	25	१३	वृ. ४९/५३	**वैशाख कृष्ण पक्षारम्भ,** श्रीविष्णु पूजा, श्रीकच्छपावतार जयं.	०	१०	५८	३१	५	५३	१९	०१
३२/५३	२	मंग	१६	३८	विशा	४	१५	व्य.	९	३३	गर	१६	३८	६	१६	26	१४	वृश्चिक	भद्रा ४८/०४ से प्रारम्भ,	०	११	५६	५२	५	५२	१९	०१
३२/५८	३	बुध	११	३०	अनु. ज्ये.	१ ५७	१० २८	वरी. परि.	२ ५५	४५ २५	वि	११	३०	७	१७	27	१५	ध. ५७/२८	भ. ११/३० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (चन्द्रोदय रात्रि 10/39 पर) **A**	०	१२	५५	११	५	५१	१९	०२
३३/०३	४	गुरु	५	५३	मूला	५३	३०	शिव	४७	५५	बा	५	५३	८	१८	28	१६	धनु	गंडमूलविचार	०	१३	५३	२८	५	५०	१९	०३
अवम्	५	गुरु	५९	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पंचमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३/०५	६	शुक्र	५३	५८	पूषा.	४९	२८	सिद्ध	४०	१८	गर	२६	५६	९	१९	29	१७	धनु	भद्रा ५३/५८ से प्रारम्भ	०	१४	५१	४४	५	४९	१९	०३
३३/१०	७	शनि	४८	०५	उषा	४५	३३	साध्य	३२	४८	वि	२१	०२	१०	२०	30	१८	म. ३/३०	भद्रा २१/०२ तक	०	१५	४९	५८	५	४८	१९	०४
३३/१३	८	रवि	४२	३०	श्रव	४१	५०	शुभ	२५	२५	बा	१५	१८	११	२१	मई	१९	मकर	ता. १ मई, **श्रम दिवस,** मंगल शतभिषा में ५५/५७	०	१६	४८	११	५	४८	१९	०५
३३/१५	९	चंद्र	३७	२३	धनि	३८	३८	शुक्ल	१८	२५	तै	९	५७	१२	२२	2	२०	कुं. १०/१३	**पंचकारम्भः** 9/52 घं. मिं., शुक्र कृतिका में ३१/४०, वक्री **B**	०	१७	४६	२३	५	४७	१९	०५
३३/२०	१०	मंग	३२	४८	शत	३५	५५	ब्रह्म	११	४८	व	५	०६	१३	२३	3	२१	कुम्भ	भद्रा ५/०६ से ३२/४८ तक **B** गुरु हस्त २ में २१/०३	०	१८	४४	३२	५	४६	१९	०६
३३/२५	११	बुध	२८	५०	पूभा	३३	५३	ऐंद्र	५	४३	ब	००	४९	१४	२४	4	२२	मी. १९/२०	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** वल्लभाचार्य जयंती	०	१९	४२	४१	५	४५	१९	०७
३३/२८	१२	गुरु	२५	३८	उभा	३२	३५	वैधृ. विष्क.	० ५५	१० १३	तै	२५	३८	१५	२५	5	२३	मीन	प्रदोष व्रत, **शुक्र वृष राशि में १४/०८** (11/23 स्टैं. टा.)	०	२०	४०	४८	५	४४	१९	०७
३३/३५	१३	शुक्र	२३	१८	रेव	३२	१०	प्रीति	५१	०३	व	२३	१८	१६	२६	6	२४	मे. ३२/१०	भद्रा २३/१८ से ५०/३४ तक, **पंचक समाप्त** (18/34 घं. मिं.), गं.मू.	०	२१	३८	५४	५	४२	१९	०८
३३/३८	१४	शनि	२१	५०	अश्वि	३२	३८	आयु	४७	४०	श	२१	५०	१७	२७	7	२५	मेष	**टैगोर जयन्ती** ✣ (15/15 स्टैं. टा.)	०	२२	३६	५८	५	४१	१९	०८
३३/४०	३०	रवि	२१	२५	भर	३४	१०	सौभा	४५	०८	ना	२१	२५	१८	२८	8	२६	वृ. ४९/४३	**वैशाख अमावस** स्नानदान आदि, **बुध अश्वि. १ मेष में** २३/५५✣	०	२३	३५	०३	५	४१	१९	०९

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

A सूर्य भरणी में २५/३३, बुध रेवती में ४६/००, गंडमूलादि

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 1 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१०	११	५	०	२	११	५
१६	१३	०५	२०	१६	२४	२७	२८	२८
४७	१५	५८	१३	४८	४६	५२	०२	०२
३२	३०	५३	१५	३७	१०	३९	२३	२३
५८ २२	८१५ ४४	४३ २९	७१ ४४	५ ४९	७३ ५८	४ ८	३ ११	३ ११
भर २	श्रव १	धनि ४	रेव २	हस्त ३	भर ४	पुन ३	रेव ४	चित्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ सू. शु. | २ | ३ श. | ४ | ५ | ६ गु. के. | ७ | ८ | ९ | १० चं. | ११ मं. | १२ बु. रा.

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 8 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	१०	११	५	१	२	११	५
२३	१९	११	२९	१६	०३	२८	२७	२७
३४	११	०३	२४	१०	२३	२३	४०	४०
३६	४१	०७	२९	५६	३२	२०	०७	०७
५८ ३	७७४ १४	४३ २३	८७ ३७	४ ४८	७३ ५१	४ ४३	३ ११	३ ११
भर ४	भर २	शत २	रेव ४	हस्त २	कृति ३	पुन ३	रेव ४	चित्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

१ सू. चं. | २ शु. | ३ श. | ४ | ५ | ६ गु. के. | ७ | ८ | ९ | १० | ११ मं. | १२ बु. रा.

वैशाख कृष्ण पक्षफल—

वैशाख मास में प्रतिदिन (चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक) प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थ स्थान, नदी या कुआँ या बावली पर अथवा अपने घर पर ही तीर्थ जल मिश्रित जल से स्नानादि करके तुलसी दल सहित भगवान् श्री विष्णु की नियमित पूजा (३१ दिन तक) करके एक सुनिश्चित संख्या में '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का नियमित पाठ करने के बाद ब्राह्मण को भोजन करावे तथा स्वयं एक भुक्त भोजन करने से अनेक प्रकार के रोग, शोक एवं संताप दूर होते हैं और सौभाग्य बढ़ता है॥ इस पक्ष में **वरूथिनी एकादशी** (४ मई) का व्रत रखने से पापों का क्षय होता है। वैशाख मास में तेल लगाना, दिन में सोना, कांस्य पात्र में भोजन करना, निषिद्ध वस्तु को खाना, बार-बार खाना—ये बातें त्याग देनी चाहिएँ॥ **स्कंद पुराण। बाज़ार का रुख**—पक्षारम्भ से 1 दिन पूर्व ही शुक्र भरणी नक्षत्र एवं मेष राशि में **पश्चिम से उदित** हो रहा है, जिससे घी, तिल, तैल, अलसी, मूँग, उड़द, चावल, सरसों में तेजी का रूझान बनेगा। ता. 27 को सूर्य भरणी में आने से चीनी, गुड़, शक्कर, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि में तेज़ी का रुख बनेगा। 2 मई प्रातः से मंगल शतभिषा में आने से रूई, कपास, सोना, चाँदी, चीनी एवं अनाज के भाव पहले मन्दे होकर बाद में पुनः तेज हों। **वैशाख मास में पाँच सोमवार** होने से इस मास में गेहूँ, चने आदि की कृषि में वृद्धि तथा प्रजा में सुख-साधनों का प्रसार होगा—"**सोमस्य पंचवारा स्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन-धान्य समृद्धिंश्च सुख भवति सर्वदा॥**" **आकाश-लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर पूर्वो क्षेत्रों में तीव्र वायुयोग के साथ वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार—पक्षारम्भ में शुक्रोदय के समय बूंदा-बांदी हो, तो आयन्दा अच्छी फसल के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६२, वैशाख शुक्ल पक्ष									शाकः १९२७						तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	वैशा. शु.	रवि प्र.	मई	वैशा. प्र.	घटी पल
३३/४३	१	चंद्र	२२	१३	कृति	३६	५०	शोभ	४३	३३	ब	२२	१३	१९	२९	9	२७	वृष
३३/४८	२	मंग	२४	१५	रोहि	४०	४८	अति	४३	००	कौ	२४	१५	२०	रवि	10	२८	वृष
३३/५०	३	बुध	२७	३३	मृग	४५	५५	सुक	४३	२३	ग	२७	३३	२१	२	11	२९	मि. १३/१३
३३/५३	४	गुरू	३१	५८	आर्द्रा	५२	०५	धृति	४४	३५	वि	३१	५८	२२	३	12	३०	मिथुन
३३/५८	५	शुक्र	३७	२०	पुर्न	५९	०५	शूल	४६	३०	ब	०४	३९	२३	४	13	३१	क. ४२/१८
३४/००	६	शनि	४३	१५	पुष्य	६०	००	गंड	४८	४८	कौ	१०	१८	२४	५	14	ज्ये	कर्क
३४/०५	७	रवि	४९	१५	पुष्य	६	३०	वृद्धि	५१	०८	ग	१६	१५	२५	६	15	२	कर्क
३४/०८	८	चंद्र	५४	४८	श्ले.	१३	४८	ध्रुव	५३	०५	वि	२२	०२	२६	७	16	३	सिं. १३/४८
३४/१३	९	मंग	५९	१८	मघा	२०	२५	व्या.	५४	१५	बा	२७	०३	२७	८	17	४	सिंह
३४/१५	१०	बुध	६०	००	पूफा	२५	५३	हर्ष	५४	१८	तै	३०	५१	२८	९	18	५	कं. ४२/००
३४/२०	१०	गुरू	२	२३	उफा	२९	४५	वज्र	५३	०३	गर	२	२३	२९	१०	19	६	कन्या
३४/२३	११	शुक्र	३	३५	हस्त	३१	५०	सिद्धि	५०	१५	वि	३	३५	३०	११	20	७	कन्या
३४/२५	१२	शनि	२	५८	चित्रा	३२	०५	व्य.	४६	०३	बा	२	५८	३१	१२	21	८	तु. २/१३
३४/२८	१३	रवि	०	२८	स्वा.	३०	३३	वरी	४०	२३	तै	०	२८	ज्ये	१३	22	९	तुला
अवम्	१४	रवि	५६	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	00	००	००
३४/३०	पूर्णि	चंद्र	५०	४३	विशा	२७	३३	परि	३३	३०	वि	२३	३१	२	१४	23	१०	वृ. १३/२५

सन् 2005 ई. (ता. 9 से 23 मई तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल पश्चिम कपाल में, बुध पूर्व में दृश्य, पक्षांत में बुधास्त, सायं शुक्र, शनि पश्चिम में तथा गुरु पूर्व में दिखाई देगा।	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **चन्द्रदर्शन** ३० मुहूर्त्ती	०	२४	३३	०३	५	४१	१९	१०
शिवाजी जयंती, **श्रीपरशुराम जयंती,** १ रबिउल्सानी मुस्लिम	०	२५	३१	०३	५	४०	१९	११
भ. ५९/४५ से, **अक्षय तृतीया**, सूर्य कृतिका में ११/२३, श्री **A**	०	२६	२८	५९	५	३९	१९	११
भद्रा ३१/५८ तक **A** बदरी-केदार यात्रा प्रारंभ, स. सि. योग:	०	२७	२६	५८	५	३९	१९	१२
आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती, शुक्र रोहिणी में २२/०३, स. सि. यो.	०	२८	२४	५२	५	३८	१९	१३
सूर्य वृष में ३८/०८, ज्येष्ठ संक्रांति ३० मुहूर्त्ति, पुण्य मध्यान्ह **B**	०	२९	२२	५४	५	३७	१९	१३
भद्रा ४९/१५ से, **श्री गंगा जयन्ती,** रविपुष्य योग, गं. मू.	१	००	२०	३७	५	३६	१९	१४
भद्रा २२/०२ तक, बुध भरणी में ४३/०८, गंडमूलादि	१	०१	१८	२६	५	३५	१९	१४
बगुलामुखी जयंती, सीता नवमी, गंडमूल (13/44 तक)	१	०२	१६	१४	५	३४	१९	१५
	१	०३	१३	५८	५	३४	१९	१६
भद्रा ३२/५९ से प्रारम्भ, नैपच्यून वक्री 29/05 घं. मिं.	१	०४	११	४५	५	३३	१९	१७
भद्रा ३/३५ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत,** मंगल पूभा में २५/०८ **C**	१	०५	०९	२९	५	३३	१९	१८
शनि प्रदोष व्रतम् **C** सूर्य सायन मिथुन में २८/१८ घं. मिं.	१	०६	०७	१०	५	३२	१९	१८
भद्रा ५६/१८ से प्रारम्भ, **नृसिंह जयंती,** शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	१	०७	०४	४९	५	३२	१९	१९
चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
भद्रा २३/३१ तक, **बुद्ध पूर्णिमा व्रत, बुद्ध जयंती,** कूर्म जयंती, **D**	१	०८	०२	२८	५	३१	१९	१९

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

B उपरांत, वक्री प्लूटो बृश्चिक में 25/25 घं. मिं.

D बुध कृतिका में ५२/२०, वैशाख स्नान समाप्त, **बुधास्त पूर्वे** ५७/३३

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 16 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	१०	०	५	१	२	११	५
०१	२७	१६	१२	१५	१३	२९	२७	२७
१८	१३	४९	०३	३६	१३	०३	१४	१४
१४	००	२७	५२	५७	४५	१६	४०	४०
५७ ५०	७१८ २३	४३ ११	१०४ १२	३ ३०	७३ ४२	५ १९	३ ११	३ ११
कृति २	श्ले. ४	मूल ४	आश्ले ४	हस्त २	रोह १	पुर्न ३	रेव ४	चित्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

श. ३ | ९ बु. | १२ रा. | ४ चं. | २ सू. शु. | ११ मं. | ५ | ८ | ६ गु. के. | १० | ७ | ९

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 23 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	१०	०	५	१	२	११	५
०८	२६	२१	२४	१५	२१	२९	२६	२६
०२	५०	५०	५६	१५	४९	४२	५२	५२
२६	१३	५५	३४	५९	१२	००	२४	२४
५७ ३९	८५३ ४७	४२ ५४	११८ २९	२ १८	७३ ३२	५ ४७	३ ११	३ ११
कृति ४	विशा ३	पूभा १	भर ४	हस्त २	रोह ४	पुर्न ३	रेव ४	चित्रा २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमायां, प्रातः 5.30

श. ३ | ९ बु. | रा. १२ | ४ | २ सू. शु. | ११ मं. | ५ | ८ | गु. के. ६ | १० | ७ चं. | ९

वैशाख शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष की रात्रि व्यापिनी तृतीया के प्रथम प्रहर में भगवान् श्रीविष्णु के अंशावतार श्री परशुराम की जयन्ती 10 मई को होगी। 11 मई को **अक्षय तृतीया** के दिन बुधवार होने से, इस दिन को व्रत, दानादि करना अत्यन्त शुभ एवं पुण्य प्रदायक माना गया है। इसको स्वयं सिद्ध मुहूर्त भी माना जाता है। ता. 14 को **ज्येष्ठ संक्रांति** के स्नान-दान आदि का पुण्यकाल दुपै. पश्चात् से प्रारम्भ होगा। ता. 15 को **श्री गंगा सप्तमी** को रवि-पुष्य योग होने से श्री हरिद्वार (गंगा जी) में स्नान, दान, पूजार्चन करने का विशेष माहात्म्य होगा। ता. 17 को शक्तिस्वरूपा बगुलामुखी व सीता जी की पूजार्चना करने से ऋण, रोग एवं शत्रुओं का भय नहीं रहता। ता. 20 को **मोहिनी एकादशी,** 21 मई को **शनि प्रदोष,** 22 मई को **नृसिंह** चौदश एवं 23 मई को **बुद्ध पूर्णिमा** का व्रत और भगवान् श्रीविष्णु की पूजार्चन करने से मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है। **लोक भविष्य—ज्येष्ठ संक्रान्ति** (14 मई) शनिवार को 30 मुहूर्त्ति है। सूर्य-शुक्र के योग पर मंगल की दृष्टि होगी। राजनीतिक पार्टियों के बीच विरोध एवं टकराव पैदा होंगे। किसी प्रधाननेता का पद रिक्त हो अथवा केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में विशेष परिवर्तन हों—**सौरेश्चवारे रविसंक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वीसरोगानृपतेः प्रजासुभवेन्महायुद्धभयं तदानीम्॥** लोगों में रोग व शोक की वृद्धि तथा युद्धभय हो। **बाज़ार का रुख**—गेहूँ, उड़द, चने, काली मिर्च, खाद्य तेल, सोना, चाँदी, कच्चा लोहा आदि धातुएँ भी तेज भाव होंगी। **ज्येष्ठ संक्रां.** का फल मेष, वृष, कर्क, कन्या, तुला, बृश्चिक, कुम्भ राशि वाले जातकों को लाभदायक रहेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में गर्मी का प्रकोप बढ़ जाएगा, पक्षान्त में कहीं तेज़ गर्म हवाओं के साथ बौछारें भी पड़ेंगी।

शकुन—वै. शु. 3 को बूँदा-बाँदी हो, तो अनाज का स्टाक करने से चार मास बाद डेढ़ गुणा लाभ होगा।

वि. संवत् २०६२, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 24 मई से 6 जून तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें भा. शक.	प्रवि.	मई	ज्येष्ठ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
३४/३३	१	मंग	४४	०३	अनु	२३	१५	शिव	२५	४०	बा	१७	१८	३	१५	24	११	बृश्चिक
३४/३५	२	बुध	३६	४५	ज्ये.	१८	०८	सिद्ध	१७	१०	तै	१०	२४	४	१६	25	१२	ध. १८/०८
३४/३८	३	गुरू	२९	०५	मूला	१२	३३	साध्य शुभ	८ ५९	१५ १८	व	२	५५	५	१७	26	१३	धनु
३४/४३	४	शुक्र	२१	३०	पूषा	६	५८	शुक्ल	५०	३३	बा	२१	३०	६	१८	27	१४	म. २०/३५
३४/४५	५	शनि	१४	१५	उषा श्रव	१ ५६	३५ ५०	ब्रह्म	४२	१३	तै	१४	१५	७	१९	28	१५	मकर
३४/४५	६	रवि	७	४०	धनि	५२	५८	ऐंद्र	३४	३३	व	७	४०	८	२०	29	१६	कुं. २४/४८
३४/४८	७	चंद्र	२	००	शत	५०	०५	वैधृ	२७	४०	ब	२	००	९	२१	30	१७	कुम्भ
अवम्	८	चंद्र	५७	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३४/५०	९	मंग	५३	४८	पूभा	४८	२०	विष्क	२१	४३	तै	२५	३४	१०	२२	31	१८	मी. ३३/४०
३४/५०	१०	बुध	५१	२३	उभा	४७	३८	प्रीति	१६	३८	व	२२	३६	११	२३	जून	१९	मीन
३४/५३	११	गुरू	५०	०३	रेव	४८	०३	आयु	१२	२८	ब	२०	४३	१२	२४	2	२०	मे. ४८/०३
३४/५५	१२	शुक्र	४९	४८	अश्वि	४९	३३	सौभा	९	१०	कौ	१९	५६	१३	२५	3	२१	मेष
३४/५८	१३	शनि	५०	३३	भर	५२	००	शोभ	६	४०	ग	२०	११	१४	२६	4	२२	मेष
३५/००	१४	रवि	५२	१५	कृति	५५	२५	अति	५	००	वि	२१	२४	१५	२७	5	२३	वृ. ७/४५
३५/००	अमा	चंद्र	५४	५५	रोह	५९	४५	सुक	४	०३	च	२३	३५	१६	२८	6	२४	वृष

तिथि	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न, 24 मई से बुध पूर्व में अस्त होगा, सायं शुक्र पश्चिम में तथा शनि उससे ऊपर दिखेगा। गुरु पूर्व में चमकता हुआ नजर आएगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
१	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, शुक्र मृगशिर में १४/०३, **बुधास्त पूर्वे** 4/32 स्टैं. टा.	१	०९	००	०५	५	३१	१९	२०
२	**नारद जयंती,** सूर्य रोहिणी में २/२०, **बुध वृष में ३१/४३,** गं.मू.	१	०९	५७	४२	५	३०	१९	२०
३	भ. २/५५ से २९/०५ तक, **शनि पुन. ४ कर्क में ४/५०, श्रीगणेश B**	१	१०	५५	१७	५	३०	१९	२१
४		१	११	५२	५२	५	२९	१९	२२
५	सर्वार्थ सिद्ध योगः **B** चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि 10/32 पर	१	१२	५०	२६	५	२९	१९	२३
६	भ. ७/४० से ३४/५० तक, **पंचक प्रारंभ** १५/२४ घं. मिं., **शुक्र C**	१	१३	४७	५९	५	२९	१९	२३
७	बुध रोहिणी में १७/००	१	१४	४५	२९	५	२९	१९	२४
८	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
९	**C मिथुन में** ४०/४० (21/45 घं. मिं.), द्विपुष्कर योग	१	१५	४३	०१	५	२८	१९	२४
१०	भद्रा २२/३६ से ५१/२३ तक, **जून मासारम्भः**	१	१६	४०	३१	५	२८	१९	२४
११	**पंचक समाप्त** २४/४१ घं. मिं., **अपरा एकादशी, भद्रकाली D**	१	१७	३८	००	५	२८	१९	२५
१२	**मंगल मीन राशि में** २७/२७, गण्डमूलादि **D** ११, स. सि. योगः	१	१८	३५	२९	५	२७	१९	२५
१३	भद्रा ५०/३३ से, **शनि प्रदोष व्रत,** शुक्र आर्द्रा में ७/४३	१	१९	३२	५८	५	२७	१९	२६
१४	भद्रा २१/२४ तक, मृगे १ बुधः २२/२०, **गुरु मार्गी १८/४८**	१	२०	३०	२५	५	२७	१९	२७
अमा	**सोमवती अमावस, भावुक अमा., शनैश्चर जयं.,** वट सावित्री **E**	१	२१	२७	५३	५	२७	१९	२७

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

E पूजा, व्रत (अमावस पक्षे, राज.), स्नानदान, स. सि. योगः

चन्द्रे सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 30 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१०	१	५	२	३	११	५
१४	०८	२६	०९	१५	००	००	२६	२६
४५	२०	५०	२३	०३	२३	२३	३०	३०
३४	०७	३१	१३	३६	४३	५२	०७	०७
५७ ३२	८३८ ९	४२ ३९	१२९ ४४	१ ३	७३ २६	६ १३	३ ११	३ ११
रोह २	शत १	पूभा ३	कृति ४	हस्त २	मृग ३	पुन ४	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

शु. ३ | २ सू. बु. | १ | १२ रा. | ११ चं. मं. | १० | ९ | ८ | ७ | ६ गु. के. | ५ | ४ श.

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 6 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	११	१	५	२	३	११	५
२१	१०	०१	२४	१५	०८	०१	२६	२६
२८	५९	४७	४२	००	५७	०८	०७	०७
००	१०	४०	५४	०१	२९	३४	५०	५०
५७ २५	७४५ ३६	४२ १२	१३१ ६	० १३	७३ २१	६ ३७	३ १०	३ १०
रोह ४	रोह १	पूभा ४	मृग १	हस्त २	आर्द्रा १	पुन ४	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

३ शु. | २ सू. चं. बु. | १ | १२ मं. रा. | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ गु. के. | ५ | ४ श.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में **अपरा एकादशी** एवं भद्रकाली एका. (2 जून) का व्रत रखने से अज्ञानतावश किए हुए अनेक पापों से मुक्ति मिलती है। 6 जून को **सोमवती अमावस** के दिन हरिद्वार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थ पर स्नान-दान करना अत्यन्त पुण्यकारक माना जाता है। इसी दिन वैधव्य दोष की शान्ति हेतु स्त्रियों को वटसावित्री का व्रत रखना कल्याणकारी होता है। व्रतारम्भ करने से पूर्व स्त्री शुभासन पर पूर्वाभिमुख बैठकर यह संकल्प करे—**''वैधव्यादि सकलदोष परिहारार्थं ब्रह्मसावित्री-प्रीत्यर्थं च सावित्री व्रतमहं करिष्ये।''** किसी कन्या की जन्मकुण्डली में यदि वैधव्य योग या विवाहारिष्ट योग पड़ा हो, उसे भी यह व्रत (विधिपूर्वक) रखवाया जा सकता है।

व्यापार-रुख—पक्षारम्भ से बुध पूर्व में अस्त हुआ है। चावल, दालें, छोटी इलायची, खल-बिनौले, रूई, कपास, चांदी आदि तेज होंगी। इसी दिन शुक्र मृगशिर में गेहूँ, चने, ज्वार में मन्दी परन्तु चीनी, शक्कर में तेजीकारक होगा। ता. 25 को सूर्य रोहिणी में आने से अन्य करियाना वस्तुओं के साथ अरण्डी, अलसी में भी तेजी होगी। चाँदी में मन्दी का रुख होगा। ता. 27 को शनि कर्क में आकर गुरु पर दृष्टि रखेगा। जिससे सोना, चाँदी, लकड़ी, लोहा, हल्दी, केशर, कच्चा लोहा, तैल, शेयरों, मैंथायल व पैट्रो-कैमीकल्ज़ वस्तुओं में तेजी होगी। **ज्येष्ठ मास में पाँच मंगलवार** होने से कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएँ व छत्रभंग होने के संकेत हैं। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या निधन होने के योग हैं॥

आकाश लक्षण—इस पक्ष में गर्मी एवं तेज गर्म हवाओं का प्रकोप बढ़ेगा। कहीं कृषि व जन हानि के भी योग हैं।

वि. संवत् २०६२,	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष							शाकः १९२७							तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी.	पल	नक्षत्र	घड़ी.	पल	योग	घड़ी.	पल	करण	घड़ी.	पल	शुक्र ज्ये.	रबि. मं.	जून	ज्येष्ठ प्र.	
३५/००	१	मंग	५८	३३	मृग	६०	००	धृति	३	५३	किं	२६	४४	१७	२९	7	२५	मि. ३२/१५
३५/०३	२	बुध	६०	००	मृग	५	००	शूल	४	२५	बा	३०	४९	१८	३०	8	२६	मिथुन
३५/०४	२	गुरू	३	०५	आर्द्रा	११	०८	गंड	५	४३	कौ	३	०५	१९	जमा	9	२७	मिथुन
३५/०५	३	शुक्र	८	२५	पुर्न	१८	०३	वृद्धि	७	३३	गर	८	२५	२०	२	10	२८	क. १/१५
३५/०८	४	शनि	१४	१८	पुष्य	२५	२३	ध्रुव	९	५०	वि	१४	१८	२१	३	11	२९	कर्क
३५/०८	५	रवि	२०	२५	श्ले	३२	५५	व्या.	१२	२०	बा	२०	२५	२२	४	12	३०	सिं. ३२/५५
३५/१०	६	चंद्र	२६	१८	मघा	४०	०८	हर्ष	१४	४३	तै	२६	१८	२३	५	13	३१	सिंह
३५/१०	७	मंग	३१	२८	पूफा	४६	३३	वज्र	१६	३५	व	३१	२८	२४	६	14	आ.	सिंह
३५/१०	८	बुध	३५	२३	उफा	५१	३८	सिद्धि	१७	३५	वि	३	२६	२५	७	15	२	कं. २/५८
३५/१०	९	गुरू	३७	३३	हस्त	५५	००	व्य.	१७	२३	बा	६	२८	२६	८	16	३	कन्या
३५/१३	१०	शुक्र	३७	४८	चित्रा	५६	२३	वरी	१५	४०	तै	७	४१	२७	९	17	४	तु. २५/५५
३५/१३	११	शनि	३५	५३	स्वा	५५	४०	परि	१२	१८	व	६	५१	२८	१०	18	५	तुला
३५/१३	१२	रवि	३१	५५	विशा	५२	५८	शिव	७	१३	ब	३	५४	२९	११	19	६	वृ. ३८/४८
३५/१३	१३	चंद्र	२६	१३	अनु	४८	३५	सिद्ध साध्य	० ५२	३८ ४०	तै	२६	१३	३०	१२	20	७	वृश्चिक
३५/१३	१४	मंग	१९	००	ज्ये	४२	५३	शुभ	४३	३८	व	१९	००	३१	१३	21	८	ध. ४२/५३
३५/१३	१५	बुध	१०	४३	मूला	३६	१८	शुक्ल	३३	५०	ब	१०	४३	आ.	१४	22	९	धनु

सन् 2005 ई. (ता. 7 जून से 22 जून तक)

सूर्य उत्तर-दक्षिणायने, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न, 14 जून से बुध सायं पश्चिम में, सायं शुक्र पश्चिम में तथा शनि उससे कुछ ऊपर दृश्य। इस समय गुरु याम्योत्तरवृत्त में होगा।

व्रत-पर्व	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ए. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
ज्येष्ठ शुक्ल पक्षारम्भ, सूर्य मृगशिर में ५७/०८	१	२२	२५	१८	५	२७	१९	२७
चंद्रदर्शन १५ मु., **बुधमिथुन में २६/००** (15/51 स्टै. टा.) **A**	१	२३	२३	४१	५	२७	१९	२८
रम्भा तीज व्रतादि, १ जमादि उलावल (मु.) **A** मंगल उ.भा. में ११/३५	१	२४	२०	०५	५	२७	१९	२८
भद्रा ४१/२२ से प्रारम्भ, **राणा प्रताप जयंती**	१	२५	१७	२८	५	२६	१९	२८
भद्रा १४/१८ तक, बुध आर्द्रा में ३५/०५	१	२६	१५	५१	५	२६	१९	२९
गण्डमूल विचार	१	२७	१२	१२	५	२६	१९	२९
गण्डमूल विचार **C मेला क्षीर भवानी कश्मीर**	१	२८	०९	३३	५	२६	१९	३०
भ. ३१/२८ से, **सूर्य मिथुन में ५५/३५, आषाढ़ संक्रांति, B**	१	२९	०६	५३	५	२६	१९	३०
भद्रा ३/२६ तक, शुक्र पुनर्वसु में, **दुर्गाष्टमी,** धूमावती जंयंती, **C**	२	००	०४	११	५	२६	१९	३०
B ४५ मु. पुण्य अगले दिन, **बुधोदय पश्चि., यूरेनस वक्री**	२	०१	०१	२९	५	२६	१९	३०
श्रीगंगा दशहरा पर्व (हरिद्वार)	२	०१	५८	४६	५	२६	१९	३१
भद्रा ६/५१ से ३५/५३ तक, **निर्जला एकादशी व्रत,** बुध पुर्न. १ **D**	२	०२	५६	०२	५	२६	१९	३१
प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी **D** में २३/३५, स. सि. योगः	२	०३	५३	२१	५	२७	१९	३२
सर्वार्थ सिद्ध योगः, वट सावित्री पर्वारम्भ	२	०४	५०	३५	५	२७	१९	३२
भ. १९/०० से ४४/५१ तक, **सूर्य आर्द्रा में ५४/४३,** सूर्य सायन कर्क **E**	२	०५	४७	४९	५	२७	१९	३२
ज्येष्ठ पूर्णिमा, संत कबीर जयन्ती, स्नानदानादि	२	०६	४५	०३	५	२७	१९	३२

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें। **E** में १२/१७ घं. मिं., **वर्षाऋतुः प्रारम्भ,** गं.मू., वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्षे), व्रत श्रीसत्यनारायण

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 15 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	११	२	५	२	३	११	५
००	२९	०८	१३	१५	१९	०२	२५	२५
०४	२५	०४	३४	०८	५६	०९	३९	३९
२१	५०	४६	०४	२४	५०	३६	१३	१३
५७/१८	७४०/३०	४१/३०	११६/३३	६/५०	७३/१०	७/००	३/११	३/११
मृ. ३	उफा १	उभा २	आर्द्रा ३	हस्त २	आर्द्रा ४	पुन ४	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

श. ४ | ३ सू. बु. शु. | २ | १ | ५ चं. | ६ गु. के. | १२ मं. रा. | ७ | ८ | ९ | १० | ११

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 22 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	११	२	५	२	३	११	५
०६	०४	१२	२६	१५	२८	०२	२५	२५
४५	१६	५३	२२	२४	२८	५९	१६	१६
१०	५९	२४	२०	४७	२९	२२	५६	५६
५७/१३	९०२/२७	४०/५१	४०/४८	३/१	७३/००	७/१५	३/११	३/११
आर्द्रा १	मूल २	उभा ३	पुन २	हस्त २	पुन ३	पुन ४	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

श. ४ | ३ सू. बु. शु. | २ | १ | ५ | ६ गु. के. | १२ मं. रा. | ७ | ८ | ९ चं. | १० | ११

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल—ता. 14 जून को **आषाढ़ संक्रान्ति** मंगलवार को 45 मुहूर्त्ति है। यह अर्द्ध रात्रि को 3 बजकर 40 मिनट से प्रारम्भ होगी। इसके स्नान, दान आदि का विशेष माहात्म्य अगले दिन अर्थात् 15 जून सू.उ. से प्रातः 11 बजे तक रहेगा। इसी दिन (अष्टमी) को जम्मू-कश्मीर में देवी के मन्दिर पर माता क्षीर **भवानी** का मेला सभी सम्प्रदायों में बड़ी श्रद्धा भावना से मनाया जाता है। **श्री गंगा दशहरा** (17 जून) के पर्व पर गंगा स्नान एवं श्रीगङ्गा जी का पूजा-अर्चन एवं दानादि कर्म करने से मनुष्य के दस प्रकार के पापों (3 कायिक, 4 वाचिक तथा 3 मानसिक) का नाश होता है, इसीलिए इसे दशहरा कहा

जाता है। निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें—**"ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः ॥"** ता. 18 को **निर्जला एकादशी** को निराहार व्रत रखकर भगवान् श्री विष्णु उपासना तथा यथाशक्ति दान करने से वर्षभर की सभी एकादशियों के पुण्य फल प्राप्त हो जाते हैं। **बाज़ार का रुख**—पक्षारम्भ में सूर्य मृगशिर में प्रविष्ट होने से मूंग, उड़द, मोंठ, धान्य, चावल, खल-बिनौले, लोहा, सोना व चाँदी में तेजी होगी। ता. 8 को बुध मिथुन में रूई, कपास, कस्तूरी, चन्दन, मूंग, उड़द, चने, अलसी व शेयरों में तेजी करेगा। ता. 11 को आर्द्रा का बुध गेहूँ, तिल, जौं, मूंग, मोठादि में तेजी बरकरार रखेगा। ता. 14 को मंगलवार को आषाढ़ संक्रान्ति 45 मुहूर्त्ति है, सूर्य पर मंगल की दृष्टि भी होगी। घी, तैल, गेहूँ, चना, चाँदी, चावल, चीनी, खल, बिनौले, ईलायची, मक्की, मसूर, पीतल, सोना, ताँबा आदि के भावों में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। **ज्येष्ठ मास** में पाँच मंगलवार होने से कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव एवं राजनीतिक षड्यन्त्र होंगे। राजनीतिक एवं शेयरों के हालात अस्थिर रहेंगे।

आकाश लक्षण—उत्तरार्ध में भारत के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों जैसे—महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक, गोवा व असम के क्षेत्रों में वर्षा का प्रारम्भ हो जाएगा।

वि. संवत् २०६२, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 23 जून से 6 जुलाई तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आषा. शक	ज्ये. मा.	जून	आषा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
३५/१२	१	गुरू	१	४५	पूषा	२९	१८	ब्रह्म	२३	४०	कौ	१	४५	२	१५	23	१०	म. ४२/३०
अवम्	२	गुरू	५२	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३५/११	३	शुक्र	४३	४०	उषा	२२	१५	ऐंद्र	१३	२८	व	१८	०९	३	१६	24	११	मकर
३५/१०	४	शनि	३५	२५	श्रव	१५	४५	वैधृ विष्क	३ ५४	४० ३३	ब	९	३३	४	१७	25	१२	कुं. ४२/५०
३५/१०	५	रवि	२८	०८	धनि	१०	०८	प्रीति	४६	१५	कौ	१	५७	५	१८	26	१३	कुम्भ
३५/१०	६	चंद्र	२२	१०	शत	५	४५	आयु	३९	१०	व	२२	१०	६	१९	27	१४	मी. ४८/२३
३५/१०	७	मंग	१७	४०	पूभा	२	४८	सौभा	३३	२०	ब	१७	४०	७	२०	28	१५	मीन
३५/१०	८	बुध	१४	४५	उभा	१	२३	शोभ	२८	४८	कौ	१४	४५	८	२१	29	१६	मीन
३५/०९	९	गुरू	१३	२३	रेव	१	३०	अति	२५	२५	ग	१३	२३	९	२२	30	१७	मे. १/३०
३५/०८	१०	शुक्र	१३	३०	अश्वि	३	०८	सुक	२३	१५	वि	१३	३०	१०	२३	जु.	१८	मेष
३५/०७	११	शनि	१४	५३	भर	६	०३	धृति	२२	०५	बा	१४	५३	११	२४	2	१९	वृ. २१/५८
३५/०५	१२	रवि	१७	२३	कृति	१०	००	शूल	२१	४३	तै	१७	२३	१२	२५	3	२०	वृष
३५/०४	१३	चंद्र	२०	५०	रोहि	१५	००	गंड	२२	०८	व	२०	५०	१३	२६	4	२१	मि. ४७/४५
३५/०३	१४	मंग	२५	०५	मृग	२०	४३	वृद्धि	२३	०५	श	२५	०५	१४	२७	5	२२	मिथुन
३५/०२	अमा	बुध	३०	०३	आर्द्रा	२७	०८	ध्रुव	२४	३८	ना	३०	०३	१५	२८	6	२३	मिथुन

ग्रह लोपदर्शन—सायं बुध, शुक्र, शनि पश्चिम कपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त में दिखाई देंगे, 5 जुला. से शनि पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः मंगल पश्चिम कपाल में होगा।

तिथि	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ए. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
१	**आषाढ़ कृष्ण पक्षारम्भः, शुक्र कर्क राशि में १५/२०**	२	०७	४२	१६	५	२७	१९	३२
२	द्वितीया तिथि का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०
३	भ. १८/०९ से ४३/४० तक, **बुध कर्क में १२/००**, शनि पुष्य में **B**	२	०८	३९	३१	५	२८	१९	३२
४	**पंचकारम्भः** २२/३६ घं. मिं., **श्रीगणेश चतुर्थी व्रतम्** (चंद्रोदय 22/49 पर)	२	०९	३६	४३	५	२८	१९	३२
५	बुध पुष्य में १९/४५, शुक्र पुष्य में ५/२२ घं. मिं. **B** ५०/३०	२	१०	३३	५९	५	२९	१९	३३
६	भद्रा २२/१० से ४९/५५ तक, मंगल रेवती में ३४/४३	२	११	३१	१२	५	२९	१९	३३
७	सर्वार्थ सिद्ध योगः	२	१२	२८	२४	५	२९	१९	३३
८	गण्डमूल प्रातः ६/०२ उप.	२	१३	२५	३७	५	२९	१९	३३
९	भद्रा ४३/२८ से, **पंचक समाप्त** (६/०६ घं. मिं.), स. सि. योगः	२	१४	२२	५१	५	३०	१९	३३
१०	भद्रा १३/३० तक, ता. १ जुलाई, **२००५ ई. प्रारम्भ**	२	१५	२०	०४	५	३०	१९	३३
११	**योगिनी एकादशी व्रतम्**	२	१६	१७	१४	५	३०	१९	३३
१२	**प्रदोष व्रतम्**	२	१७	१४	३१	५	३१	१९	३३
१३	भद्रा २०/५० से ५२/५८ तक, स. सि. योगः	२	१८	११	४४	५	३१	१९	३३
१४	सूर्य पुनर्वसु में ५३/२८, **शन्यस्त पश्चिमे** १५/२७ घं. मिं.	२	१९	०९	००	५	३२	१९	३३
अमा	**अमावस स्नानदानादि**, बुध आश्लेषा में ३०/१०, शुक्र अश्ले. **C**	२	२०	०६	१६	५	३२	१९	३३

C में ५८/४५

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 29 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	११	३	५	३	३	११	५
१३	१६	१७	०७	१५	०६	०३	२४	२४
२५	२१	३७	१५	४९	५९	५०	५४	५४
३९	५६	१५	३४	२२	०४	४३	४०	४०
५७ १२	७९८ २३	४० ६	८३ ३८	४ ८	७२ ५२	७ २७	३ ११	३ ११
आर्द्रा ३	उभा ४	रेव १	पुष्य २	हस्त २	पुष्य २	पुष्य १	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

बु. शु. श. ४; २; ३ सू.; १; ५; १२ चं. मं. रा.; ६ गु. के.; ११; ७; ९; ८; १०

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 6 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	११	३	५	३	३	११	५
२०	१४	२२	१६	१६	१५	०४	२४	२४
०६	३३	१५	०६	२१	२८	४३	३२	३२
०९	२३	१२	५२	४५	४२	२२	२४	२४
५७ १३	७१९ १६	३९ ९	६५ ४	५ १५	७२ ४३	७ ३५	३ ११	३ ११
पुन १	आर्द्रा ३	रेव २	पुष्य ४	हस्त २	पुष्य ४	पुष्य १	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

बु. शु. श. ४; २; ३ सू. चं.; १; ५; १२ मं. रा.; ६ गु. के.; ११; ७; ९; ८; १०

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल—

आषाढ़ मास में भगवान् श्री विष्णु की प्रीति के लिए स्नान एवं नित्यकर्म उपरान्त लक्ष्मी सहित भगवान् श्री विष्णु की पूजार्चना के पश्चात् किसी ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति वस्त्र, धन, जूते, आँवले, आम्र, खरबूजे, आड़ू आदि ऋतु फल का दान करना तथा स्वयं भी एकभुक्त भोजन करना इत्यादि कृत्यों से जातक को अक्षय पुण्यों की प्राप्ति होती है।

स्वास्थ्य विचार—आषाढ़ में स्वयं को अधिक धूप व गर्मी से बचाना चाहिए, इस मास में सादा भोजन, शीतल व स्वच्छ जल तथा मौसमी फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहता है॥

ब्रह्मपुराणानुसार इस पक्ष में **योगिनी एकादशी** का व्रत करके भगवान् विष्णु की यथाविधि पूजा करके रात्रि में जागरण करने तथा दूसरे दिन अन्न, वस्त्रादि का दान करने से कुष्ठादि त्वचा रोगों की शान्ति होती है॥ **बाज़ार का रुख**—पक्षारम्भ में प्रतिपदा को शुक्र कर्क राशि में शनि के साथ योग करेगा। बुध ग्रह अभी अनुगामी है, फलतः समाज में धन-धान्य एवं सुख के साधनों में विस्तार होगा—**''गच्छत:श्चेत् शुक्रशनी बुधः पृष्ठे समाश्रितः। धन धान्याकुला पृथ्वी प्रजा नन्दति सर्वशः॥''** 5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु में आने से गुड़, चीनी, रूई, कपास, अरण्डी, खल, बिनौले, अलसी, मोंठ, मजीठ, सूरजमुखी, सोयाबीन आदि तेलों में तेजी का रूख होगा। इसी दिन **शनि अस्त** होने से सोना, चाँदी, कच्चे लोहे में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। आषाढ़ मास में पाँच बृहस्पतिवार होने से देश में कहीं उपद्रव, बाढ़, हिंसा आदि की घटनाएँ होंगी। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा—**'यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥ दैनिक जन-उपयोगी वस्तुओं, तेलादि की कीमतों में वृद्धि के कारण सामान्य वर्ग में** गहरा असन्तोष रहेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में असम, बंगाल, त्रिपुरा, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, गोआ, केरल प्रदेशों में मानसून की वर्षा होगी।

वि. संवत् २०६२,	आषाढ़ शुक्ल पक्ष	शाकः १९२७												तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2005 ई. (ता. 7 जुलाई से 21 जुलाई तक) सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु					भा. स्टैं. टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आषा. श.	जमा. मु.	जुलाई	आषा. प्र.	घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—सायं बुध, शुक्र पश्चिम में तथा गुरु पश्चिमी कपाल में काफी ऊपर होगा। प्रातः मंगल पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। शनि अस्त है।	दे. रा.	सू. अ.	स. क.	ह. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५/००	१	गुरू	३५	३०	पुर्न	३४	०३	व्या.	२६	३५	किं	२	४७	१६	२९	7	२४	क. १७/१५	आषाढ़ शुक्ल पक्षारंभः, **चन्द्रदर्शन** ३० मु., शुक्र आश्लेषा में **A**	२	२१	०३	३१	५	३३	१९	३३
३४/५६	२	शुक्र	४१	२५	पुष्य	४१	२३	हर्ष	२८	५३	बा	८	२८	१७	जमा	8	२५	कर्क	**रथयात्रा उत्सव,** श्रीजगन्ननाथ पुरी, 1 जमादिउल्सानी (मु.)	२	२२	००	४५	५	३४	१९	३२
३४/५५	३	शनि	४७	३५	श्ले.	४८	५८	वज	३१	२५	तै	१४	३०	१८	२	9	२६	सिं. ४८/५८	गुरु हस्त (३) में १८/३८, गण्डमूलादि	२	२२	५७	५८	५	३४	१९	३२
३४/५३	४	रवि	५३	३५	मघा	५६	२५	सिद्धि	३३	५३	व	२०	३५	१९	३	10	२७	सिंह	भद्रा २०/३५ से ५३/३५ तक, गण्डमूल विचार	२	२३	५५	१२	५	३५	१९	३२
३४/५२	५	चंद्र	५९	१३	पूफा	६०	००	व्य.	३६	०८	ब	२६	२४	२०	४	11	२८	सिंह	**A** ५/०२ घं. मिं., स. सि. योगः	२	२४	५२	२८	५	३५	१९	३२
३४/४८	६	मंग	६०	००	पूफा	३	२५	वरी	३७	४८	कौ	३१	३१	२१	५	12	२९	कं. २०/०३	**स्कन्द षष्ठी,** कुमार षष्ठी	२	२५	४९	४१	५	३६	१९	३१
३४/४५	६	बुध	३	४८	उफा	९	२८	परि	३८	२८	तै	३	४८	२२	६	13	३०	कन्या	विवस्वत सप्तमी, स. सि. योगः	२	२६	४६	५७	५	३७	१९	३१
३४/४५	७	गुरू	७	०३	हस्त	१४	१०	शिव	३७	५०	व	७	०३	२३	७	14	३१	तु. ४५/५३	भद्रा ७/०३ से ३७/४७ तक	२	२७	४४	१३	५	३७	१९	३१
३४/४०	८	शुक्र	८	३०	चित्रा	१७	०५	सिद्ध	३५	५३	ब	८	३०	२४	८	15	३२	तुला	**श्री दुर्गाष्टमी, B** 8/10 बजे से, भढली ९, मे. शरीक भवानी (का.)	२	२८	४१	२६	५	३८	१९	३०
३४/४०	९	शनि	७	५८	स्वा.	१८	००	साध्य	३२	१३	कौ	७	५८	२५	९	16	श्रा	तुला	**सूर्य कर्क में २२/२०, श्रावण संक्रांति** ४५ मुहू., पुण्य प्रातः **B**	२	२९	३८	४१	५	३८	१९	३०
३४/३५	१०	रवि	५	१५	विशा	१६	४५	शुभ	२६	४५	ग	५	१५	२६	१०	17	२	वृ. २/१५	भ. ३२/५४ से, देवशयनी एकादशी व्रत (स्मार्त्त)	३	००	३५	५६	५	३९	१९	२९
३४/३५	११	चंद्र	०	३३	अनु	१३	३५	शुक्ल	१९	४३	वि	०	३३	२७	११	18	३	वृश्चिक	भ. ००/३३ तक, देवशयनी एकादशी वैष्ण., **शुक्र मघा १ सिंह में ०/०५, C**	३	०१	३३	१०	५	३९	१९	२९
अवम	१२	चंद्र	५४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४/३३	१३	मंग	४५	५५	ज्ये.	८	३८	ब्रह्म	११	१५	कौ	१९	५८	२८	१२	19	४	ध. ८/३८	**भौम प्रदोष व्रत,** सूर्य पुष्य में ५१/५५, गंडमूलादि	३	०२	३०	२६	५	४०	१९	२९
३४/३०	१४	बुध	३६	४८	मूला पूषा	२ ५५	१८ ००	ऐंद्र वैधृ	१ ५१	४० १८	ग	११	२२	२९	१३	20	५	धनु	भद्रा ३६/४८ से प्रारम्भ, **मेला ज्वालामुखी कश्मीर**	३	०३	२७	४२	५	४०	१९	२८
३४/२८	१५	गुरू	२७	०३	उषा	४७	१५	विष्क	४०	२८	वि	१	५६	३०	१४	21	६	म. ८/०३	भद्रा १/५६ तक, **आषाढ़ पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, ब्यास पूजा, E**	३	०४	२४	५८	५	४१	१९	२८

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

C मंगल अश्वि. १ मेष में ८/५५, चातुर्मास्य व्रत नियम प्रारंभ संन्यासिनां

E वायु परीक्षा, शनि पुष्य (२) में ९/३३, कोकिला व्रत, चातुर्मास्यारंभ

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 15 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	६	११	३	५	३	३	११	५
२८	०२	२८	२३	१७	२६	०५	२४	२४
४१	५६	०१	५७	१४	२२	५२	०३	०३
०९	२२	४७	४६	१२	१०	१८	४५	४५
५७ १५	७८० ६	३७ ४०	३४ ३३	६ ३३	७२ २८	७ ४३	३ ११	३ ११
पुन ३	चित्रा ३	रेव ४	श्ले. ३	हस्त ३	श्ले. ३	पुष्य १	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

बु. शु. श. ४ | २ | ३ सू. | १ | ५ | ६ गु. के. | १२ मं. रा. | ७ चं. | ९ | ११ | ८ | १०

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 21 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	०	३	५	४	३	११	५
०४	२७	०१	२६	१७	०३	०६	२३	२३
२४	५०	४५	२१	५५	३६	३८	४४	४४
३४	०३	०१	०७	२४	२६	४२	३९	३९
५७ १५	९१८ ३३	३६ ३३	७ ५७	७ १९	७२ १६	७ ४५	३ ११	३ ११
पुष्य १	उषा. १	अश्वि १	श्ले. ३	हस्त ३	मघा २	पुष्य १	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

६ गु. के. | ५ शु. | ४ सू. बु. श. | ३ | २ | ७ | १ मं. | ८ | १० | १२ रा. | ९ चं. | ११

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष की द्वितीया तिथि (8 जुला.) को भगवान् श्री जगन्ननाथ की रथ यात्रा का उत्सव पुरी (उड़ीसा) में बड़ी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इसमें अरुणोदयी द्वितीया को भगवान् श्रीविष्णु की विधिवत् पूजा का विधान है। इस वर्ष द्वितीया पुष्य नक्षत्र युक्त होने से पूजोत्सव विशेष पुण्यप्रद होगा। **श्रावण संक्रान्ति** (16 जुला.) शनिवार को दुपै. 2 बजकर 34 मिंट स्टै. टा. से होगी। इसके स्नानदान आदि का पुण्यकाल प्रातः 8/10 बजे से प्रारम्भ होगा। इस पक्ष में **देवशयनी एकादशी** से धर्मपरायण तपस्वी लोग चातुर्मास्यादि व्रत नियमों आदि का पालन करते हुए कार्तिक शुक्ला ११ तक चार मासों तक भगवान् विष्णु एवं अपने इष्टदेव का पूजन करके एक ही बार भोजन करते हुए तीर्थों आदि पर जाकर जप-तपादि सत्कार्यों में लगे रहते हैं। **गुरू पूर्णिमा** (21 जुला.) ज्ञान, ध्यान एवं गुरू भक्ति की तरफ़ ले जाने वाली होती है। इस दिन परब्रह्म ईश्वर का ध्यान करते हुए ऋषि व्यास, शुकदेव आदि ऋषियों का आवाहन-पूजनादि करके अपने इष्ट गुरु की पुष्पाक्षत, मिष्ठान्न, वस्त्र, दक्षिणा द्वारा सम्मान करना चाहिए।। **संक्रांति फल**—श्रावण संक्रांति 16 जुला. शनिवार 45 मुहूर्त्ति है, कर्क राशि पर सूर्य, शनि व बुध का सम्बन्ध होगा। जिससे गेहूँ, मूँग, चना, जौं, मटर, अरहर, रूई व कपास, तिल, तैल आदि में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। सोना व चाँदी में कुछ मन्दी होकर ता. 18 से शुक्र सिंह में और मंगल मेष में आने से सोना, ताँबा, चने, गेहूँ, खली, लाल मिर्च, पशुचारा, मजीठ, गुड़ आदि तेज भाव होंगे। **श्रावण संक्रांति** मेष, मिथुन, कन्या, तुला, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि वालों के लिए संक्रांति का फल शुभ रहेगा। श्रावण संक्रांति शनिवार को होने से सब प्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। कहीं उपद्रव एवं जनांदोलन होंगे। **आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्द्ध में देश के उत्तरी, पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्रों में मानसून की व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, श्रावण कृष्ण पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 22 जुलाई से 5 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं बुध-शुक्र पश्चिम में, उनसे कुछ ऊपर गुरु होगा। प्रातः मंगल याम्योत्तर से पश्चिम की ओर नत। 29 जुला. को बुध पश्चिम में अस्त, शनि पहले ही अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आषा. शक	जमा. मु	जुलाई	श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३४/२७	१	शुक्र	१७	१३	श्रव	३९	३३	प्रीति	२९	४०	कौ	१७	१३	३१	१५	22	७	मकर	**श्रावण कृष्ण पक्षारम्भः**, सूर्य सायन सिंह में २३/११ घं. मिं., स. सि. यो.	३	०५	२२	१५	५	४१	१९	२८
३४/३३	२	शनि	७	४८	धनि	३२	२३	आयु	१९	१३	ग	७	४८	श्रा.	१६	23	८	कुं. ५/५०	भ. ३३/२१ से ५८/५३ तक, **पंचकारम्भः** ८/०२ घं. मिं., **बुध वक्री B**	३	०६	१९	३२	५	४२	१९	२७
अवम्	३	शनि	५८	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया तिथि का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०
३४/२०	४	रवि	५१	१८	शत	२६	१३	सौभा	९	३३	व	२५	०६	२	१७	24	९	कुम्भ	**श्री गणेश चतुर्थी व्रतम्**	३	०७	१६	४९	५	४२	१९	२६
३४/१५	५	चंद्र	४५	०८	पूभा	२१	२३	शोभ अति	० ५३	५० ३०	कौ	१८	१३	३	१८	25	१०	मी. ७/३३	नाग पंचमी (बंगाल व मरुस्थले)	३	०८	१४	०९	५	४३	१९	२५
३४/१३	६	मंग	४०	४८	उभा	१८	१५	सुक	४७	३५	ग	१२	५८	४	१९	26	११	मीन	भद्रा ४०/४८ से प्रारम्भ, स. सि. योगः	३	०९	११	२७	५	४३	१९	२४
३४/१०	७	बुध	३८	१५	रेव	१६	५३	धृति	४३	०८	वि	९	३२	५	२०	27	१२	मे. १६/५३	भद्रा ९/३२ तक, **पंचक समा.** १२/२९ घं. मिं., गण्डमूल	३	१०	०८	४८	५	४४	१९	२४
३४/०५	८	गुरू	३७	३५	अश्वि	१७	२३	शूल	४०	१०	वा	७	५५	६	२१	28	१३	मेष	राहु रेव. २, केतु हस्त ४ में ४२/३०, गंडमूल १२/४२ तक **C**	३	११	०६	११	५	४५	१९	२३
३४/०३	९	शुक्र	३८	३८	भर	१९	३५	गंड	३८	३३	तै	८	०७	७	२२	29	१४	वृ. ३५/२५	शुक्र पू.फा. १ में ४/४०, **बुधास्त पश्चिमे** १७/३२ घं. मिं.	३	१२	०३	३४	५	४६	१९	२३
३४/००	१०	शनि	४१	१३	कृति	२३	२३	वृद्धि	३८	०८	व	९	५६	८	२३	30	१५	वृष	भद्रा ९/५६ से ४१/१३ तक **C** स. सि. योगः	३	१३	००	५६	५	४६	१९	२२
३३/५५	११	रवि	४४	५८	रोहि	२८	२५	धुव	३८	४०	ब	१३	०६	९	२४	31	१६	वृष	**कामिका एकादशी व्रतम्**	३	१३	५८	२०	५	४७	१९	२१
३३/५३	१२	चंद्र	४९	४३	मृग	३४	२८	व्या.	३९	५८	कौ	१७	२१	१०	२५	अग	१७	मि. १/२०	**ता. १ अग., २००५ ई. प्रा.**, श्रीतिलक पुण्य तिथि, स. सि. यो.	३	१४	५५	४५	५	४७	१९	२०
३३/५०	१३	मंग	५५	०५	आर्द्रा	४१	१०	हर्ष	४१	४५	ग	२२	२४	११	२६	2	१८	मिथुन	भद्रा ५५/०५ से प्रा., **भौम प्रदोष व्रत,** सूर्य अश्लेषा में ४८/५०	३	१५	५३	१३	५	४८	१९	१९
३३/४५	१४	बुध	६०	००	पुर्न	४८	१८	वज्र	४३	५३	वि	२७	५८	१२	२७	3	१९	क. ३१/२८	भद्रा २७/५८ तक	३	१६	५०	४१	५	४९	१९	१९
३३/४३	१४	गुरू	०	५०	पुष्य	५५	४५	सिद्धि	४६	१५	श	०	५०	१३	२८	4	२०	कर्क	**अमावस** पितृ तर्पणादि कार्येषु, स. सि. योगः	३	१७	४८	०८	५	४९	१९	१८
३३/४०	३०	शुक्र	६	५३	श्ले.	६०	००	व्य.	४८	४०	ना	६	५३	१४	२९	5	२१	कर्क	**हरियाली अमावस,** स्नान, दानादि, गुरु हस्त (४) में १६/१०, **गंडमूल**	३	१८	४५	३९	५	५०	१९	१८

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

B 8/32 घं. मिं., अशून्यशयन व्रत, शक श्रावण प्रा., द्विपुष्कर योग

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 28 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	०	३	५	४	३	११	५
११	०९	०५	२५	१८	१२	०७	२३	२३
०५	२४	५६	३३	४९	०१	३२	२२	२२
३५	५३	२२	०९	१३	३५	५६	२२	२२
५७ २१	७७७ २१	३५ ०१	२६ १४	८ १०	७२ १	७ ४५	३ ११	३ ११
पुष्य ३	अश्वि ३	अश्वि २	श्ले. ३	हस्त ३	मघा ४	पुष्य २	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

५ शु.
४ सू. बु. श.
३
२
६ गु. के.
७
१ चं. मं.
८
१०
१२ रा.
९
११

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 5 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	०	३	५	४	३	११	५
१८	१७	१०	२०	१९	२१	०८	२२	२२
४४	२१	२९	२७	५७	३६	३४	५६	५६
५२	०५	१०	०२	४४	५०	४०	५४	५४
५७ २९	७१० ५६	३२ ५१	४६ २६	९ ४	७१ ४५	७ ४१	३ ११	३ ११
श्ले. १	श्ले. १	अश्वि ४	श्ले. २	हस्त ३	पूफा ३	पुष्य २	रेव. २	हस्त ४
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

५ शु.
४ सू. चं. बु. श.
३
२
६ गु. के.
७
१ मं.
८
१०
१२ रा.
९
११

श्रावण कृष्ण पक्षफल—

श्रावण मास में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को **भगवान् शिव-पार्वती** की पूजा बिल्वपत्र, दूध, दही, ताण्डुल, चीनी, पुष्प आदि सहित विधिपूर्वक करने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की पूर्ति होती है। **कामिका एकादशी** (31 जुला.) को उपवास करके भगवान् विष्णु (या श्री कृष्ण) का तुलसीदल व मंजरी सहित पूजन करें। घी का दीपक प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करे, तो अनन्त शुभफल होता है। इसी मास के प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजनादि करने से स्त्रियों को गृहस्थ सुख प्राप्ति एवं उनके सौभाग्य में वृद्धि होती है। **बाज़ार का रुख**—23 जुला. को बुध कर्क राशि में वक्री होगा। चीनी, चावल, खल, बिनौले, घी, तिल, तैल, गुड़-शक्कर, हल्दी, दालें, प्याज़ एवं चौपायों में तेजी होगी। 29 ता. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, रूई-कपास में घटा-बढ़ी के बाद मन्दी रहेगी। 2 अग. को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रूई, बिनौले, गेहूँ, मक्की, चावल, चने, उड़द, गुड़, शक्कर, एरण्डी, मिर्च लाल व काली, छोटी इलायची, सोयाबीन के बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा॥ श्रावण मास में **पाँच शुक्रवार** होने से अनाज आदि के मूल्यों में वृद्धि होगी। धन का प्रसार बढ़ेगा सुख-साधनों में भी वृद्धि होगी। जनसंख्या में वृद्धि के कारण कुछ गम्भीर समस्याएँ बढ़ेंगी—"**शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥**"

आकाश लक्षण—इस पक्ष में पश्चिमोत्तरी क्षेत्रों—हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि में व्यापक वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, श्रावण शुक्ल पक्ष शाकः १९२७ — सन् 2005 ई. (ता. 6 अग. से 19 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	श्राव. शक	जमा. मु.	अगस्त	श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल पश्चिम कपाल में, 10 अग. से शनि पूर्व में उदित तथा ता. १४ अग. से बुध भी पूर्व में दृश्य। सायं गुरु, शुक्र पश्चिम में दीखेंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३३/३८	१	शनि	१२	५८	श्ले.	३	१३	वरी	५१	०५	ब	१२	५८	१५	३०	6	२२	सिं. ३/१३	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रा., **चन्द्रदर्शन** ३० मु., **मेला चिन्तपूर्णी प्रा., गं.मू.**	३	१९	४३	०८	५	५०	१९	१७
३३/३३	२	रवि	१८	५३	मघा	१०	३५	परि	५३	१३	कौ	१८	५३	१६	रज	7	२३	सिंह	गण्डमूल प्रातः १०/०५ तक, १ रज्जब (मुस्लिम)	३	२०	४०	४२	५	५१	१९	१६
३३/२८	३	चंद्र	२४	२३	पूफा	१७	३३	शिव	५४	५५	ग	२४	२३	१७	२	8	२४	कं. ३४/१३	भद्रा ५६/४८ से प्रा., **हरियाली तीज, मधुस्रवा-सिंघारा तीज**	३	२१	३८	१५	५	५२	१९	१५
३३/२५	४	मंग	२९	१३	उफा	२३	५५	सिद्ध	५६	००	वि	२९	१३	१८	३	9	२५	कन्या	भ. २९/१३ तक, वरद् चतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत, शुक्र उफा में १२/५३	३	२२	३५	४७	५	५२	१९	१४
३३/२०	५	बुध	३२	५५	हस्त	२९	१८	साध्य	५६	०८	ब	१	०४	१९	४	10	२६	कन्या	**नाग पंचमी**, मंगल भरणी में १७/२५, वक्री बुध पुष्य ४ में **A**	३	२३	३३	२३	५	५३	१९	१३
३३/१५	६	गुरु	३५	१५	चित्रा	३३	१८	शुभ	५५	०३	कौ	४	०५	२०	५	11	२७	तु. १/२८	**श्रीकल्की जयन्ती A** १८/१३, शन्युदय पूर्वे 16/10, स.सि.योगः	३	२४	३१	००	५	५४	१९	१२
३३/१२	७	शुक्र	३५	५८	स्वा.	३५	४३	शुक्ल	५२	३८	ग	५	३७	२१	६	12	२८	तुला	भ. ३५/५८ से, **शुक्र कन्या में ०/३५, गो० तुलसीदास जयंती**	३	२५	२८	३४	५	५४	१९	११
३३/०७	८	शनि	३४	४५	विशा	३६	१५	ब्रह्म	४८	४०	वि	५	२२	२२	७	13	२९	वृ. २१/१८	भद्रा ५/२२ तक, **श्री दुर्गाष्टमी**, मेला चिन्तपूर्णी, चामुण्डा-कांगड़ा	३	२६	२६	१०	५	५५	१९	१०
३३/०२	९	रवि	३१	३५	अनु	३४	५५	ऐंद्र	४३	१०	बा	३	१०	२३	८	14	३०	वृश्चिक	**बुध पूर्वोदयः** (५/१० घं. मिं.)	३	२७	२३	४७	५	५५	१९	०८
३२/५७	१०	चंद्र	२६	३३	ज्ये.	३१	४०	वैधृ	३६	०८	ग	२६	३३	२४	९	15	३१	ध. ३१/४०	भद्रा ५३/१२ से प्रा., **भारत स्वतन्त्रता दिवस**, गण्डमूल	३	२८	२१	२७	५	५६	१९	०७
३२/५३	११	मंग	१९	५०	मूला	२६	४८	विष्क	२७	४५	वि	१९	५०	२५	१०	16	भा.	धनु	भ. १९/५० तक, **सूर्य मघा १ सिंह में ४२/३०, भाद्रपद संक्रांति, B**	३	२९	१९	०८	५	५७	१९	०६
३२/५०	१२	बुध	११	५०	पूषा	२०	३८	प्रीति	१८	२०	बा	११	५०	२६	११	17	२	म. ३३/५५	प्रदोष व्रतम्	४	००	१६	४८	५	५७	१९	०५
३२/४५	१३	गुरू	२	४८	उषा	१३	३०	आयु सौभा	८ ५७	०५ २८	तै	२	४८	२७	१२	18	३	मकर	भद्रा ५३/१३ से प्रा.	४	०१	१४	३१	५	५८	१९	०४
अवम्	१४	गुरू	५३	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०
३२/४३	१५	शुक्र	४३	३३	श्रव धनि	५ ५८	५५ २३	शोभ	४६	४५	वि	१८	२३	२८	१३	19	४	कुं. ३२/०८	भ. १३/१९ घं. मिं. तक, **श्रा. पूर्णिमा, रक्षाबन्धन** भद्रोत्तरे, पंचक **D**	४	०२	१२	१३	५	५८	१९	०३

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

B ३० मु., **पवित्रा एकादशी व्रत, बुध मार्गी** 9/18, शनि पुष्य (३) में १४/३५

D शुरु १८/४९ घं. मिं., ऋषि तर्पणादि उपाकर्म, श्रीअमरनाथ गुफा दर्शन, **गायत्री जयंती,**

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 13 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	०	३	५	५	३	११	५
२६	२५	१४	१५	२१	०१	०९	२२	२२
२५	०४	४३	२३	१३	०९	३५	३१	३१
११	३०	१६	१९	०१	३४	३४	२६	२६
५७ ३७	८०२ ६	३० १७	१७ ५९	९ ५१	७१ २३	७ ३१	३ ११	३ ११
श्ले. ३	विशा २	भर. १	पुष्य ४	हस्त ४	उफा २	पुष्य २	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

५ — ४ सू. बु. श. — ३ — २ — ६ गु. शु. के. — ७ चं. — १ मं. — ८ — १० — १२ रा. — ९ — ११

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 19 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	०	३	५	५	३	११	५
०२	२१	१७	१५	२२	०८	१०	२२	२२
११	३१	३९	१८	१३	१७	२०	१२	१२
०५	३८	३६	४०	२६	०६	२२	२१	२१
५७ ४३	९१५ १८	२८ ४	२४ ४४	१० २२	७१ ३	७ २२	३ ११	३ ११
मघा १	श्रव. ४	भर. २	पुष्य ४	हस्त ४	उफा ४	पुष्य ३	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

के. ६ शु. गु. — ५ सू. — ४ श. बु. — ३ — ७ — ८ — २ — ११ — ९ — १० चं. — १२ रा. — १ मं.

श्रावण शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष में सिंघारा तीज (8 अग.) के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर लौटकर, हाथों में मेहँदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग पंचमी** (10 अग.) को अपने गृह द्वार का दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, अक्षत, पुष्प, लड्डूओं आदि से पूजा करने से घर में सर्पों का भय नहीं रहता। **''ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा''** मन्त्र के जप से भी सर्प विष का भय नहीं होता। श्रा. शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी (13 अग.) पर्यन्त माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) और चामुण्डा देवी (कांगड़ा) पर भव्य एवं पावन मेला मनाया जाता है। **श्रावण पूर्णिमा** (19 अग.) को भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक **'रक्षा बन्धन'** का पर्व मनाया जाता है। यह पर्व दुपैहर 1/19 के बाद-भद्रा उपरान्त प्रशस्त होगा। इसी दिन **श्री अमरनाथ** (कश्मीर) में स्थित पवित्र गुफा में **शिवलिंग** के दर्शन करके श्रद्धालु जन कतार्थ होते हैं। **लोक भविष्य**—पक्ष के आरम्भ में गोचर ग्रहों में कालसर्प योग बना हुआ है, जिससे राजनीतिक वातावरण में अनिश्चितता का माहौल बना रहेगा। 16 अग. को **भाद्रपद संक्रांति** 30 मुहूर्ति **मंगलवार** को है। जिससे विश्व में कहीं छत्र-भंग, सत्ता-परिवर्तन, उपद्रव-तोड़-फोड़ एवं हिंसक घटनाएँ अधिक हों। ईराक, पाक, भारत, रूस आदि देशों में कहीं राजनैतिक स्थितियों में विशेष परिवर्तन हों। सर्वजनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हो। विशेषकर गेहूँ, धान्य, घृत, तेल, चावल, मक्की, खल-बिनौले, सोयाबीन, चने तेज भाव होंगे। **संक्रान्ति फल**—यह संक्रान्ति मेष, मिथुन, सिंह, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर व मीन राशि वाले जातकों को लाभदायक रहेगी, जबकि अन्य राशि वालों को सामान्य फल देगी। **शकुन—श्रा. शु.** सप्तमी को स्वाती नक्षत्र में बूँदा-बाँदी हो तो आयन्दा सुभिक्ष के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, श्रावण कृष्ण पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 22 जुलाई से 5 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	आषा. शक	जमा. मु	जुलाई	श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
३४/२७	१	शुक्र	१७	१३	श्रव	३९	३३	प्रीति	२९	४०	कौ	१७	१३	३१	१५	22	७	मकर
३४/३३	२	शनि	७	४८	धनि	३२	२३	आयु	१९	१३	ग	७	४८	श्रा.	१६	23	८	कुं. ५/५०
अवम्	३	शनि	५८	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३४/२०	४	रवि	५१	१८	शत	२६	१३	सौभा	९	३३	व	२५	०६	२	१७	24	९	कुम्भ
३४/१५	५	चंद्र	४५	०८	पूभा	२१	२३	शोभ अति	० ५३	५० ३०	कौ	१८	१३	३	१८	25	१०	मी. ७/३३
३४/१३	६	मंग	४०	४८	उभा	१८	१५	सुक	४७	३५	ग	१२	५८	४	१९	26	११	मीन
३४/१०	७	बुध	३८	१५	रेव	१६	५३	धृति	४३	०८	वि	९	३२	५	२०	27	१२	मे. १६/५३
३४/०५	८	गुरू	३७	३५	अश्वि	१७	२३	शूल	४०	१०	वा	७	५५	६	२१	28	१३	मेष
३४/०३	९	शुक्र	३८	३८	भर	१९	३५	गंड	३८	३३	तै	८	०७	७	२२	29	१४	वृ. ३५/२५
३४/००	१०	शनि	४१	१३	कृति	२३	२३	वृद्धि	३८	०८	व	९	५६	८	२३	30	१५	वृष
३३/५५	११	रवि	४४	५८	रोहि	२८	२५	ध्रुव	३८	४०	ब	१३	०६	९	२४	31	१६	वृष
३३/५३	१२	चंद्र	४९	४३	मृग	३४	२८	व्या.	३९	५८	कौ	१७	२१	१०	२५	अग	१७	मि. १/२०
३३/५०	१३	मंग	५५	०५	आर्द्रा	४१	१०	हर्ष	४१	४५	ग	२२	२४	११	२६	2	१८	मिथुन
३३/४५	१४	बुध	६०	००	पुर्न	४८	१८	वज्र	४३	५३	वि	२७	५८	१२	२७	3	१९	क. ३१/२८
३३/४३	१४	गुरू	०	५०	पुष्य	५५	४५	सिद्धि	४६	१५	श	०	५०	१३	२८	4	२०	कर्क
३३/४०	३०	शुक्र	६	५३	श्ले.	६०	००	व्य.	४८	४०	ना	६	५३	१४	२९	5	२१	कर्क

ग्रह दर्शन—सायं बुध-शुक्र पश्चिम में, उनसे कुछ ऊपर गुरु होगा। प्रातः मंगल याम्योत्तर से पश्चिम की ओर नत। 29 जुला. को बुध पश्चिम में अस्त, शनि पहले ही अस्त है।

विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
श्रावण कृष्ण पक्षारम्भः, सूर्य सायन सिंह में २३/११ घं. मिं., स. सि. यो.	३	०५	२२	१५	५	४१	१९	२८
भ. ३३/२१ से ५८/५३ तक, **पंचकारम्भः** ८/०२ घं. मिं., **बुध वक्री B**	३	०६	१९	३२	५	४२	१९	२७
तृतीया तिथि का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०
श्री गणेश चतुर्थी व्रतम्	३	०७	१६	४९	५	४२	१९	२६
नाग पंचमी (बंगाल व मरुस्थले)	३	०८	१४	०९	५	४३	१९	२५
भद्रा ४०/४८ से प्रारम्भ, स. सि. योगः	३	०९	११	२७	५	४३	१९	२४
भद्रा ९/३२ तक, **पंचक समा.** १२/२९ घं. मिं., गण्डमूल	३	१०	०८	४८	५	४४	१९	२४
राहु रेव. २, केतु हस्त ४ में ४२/३०, गंडमूल १२/४२ तक **C**	३	११	०६	११	५	४५	१९	२३
शुक्र पू.फा. १ में ४/४०, **बुधास्त पश्चिमे** १७/३२ घं. मिं.	३	१२	०३	३४	५	४६	१९	२३
भद्रा ९/५६ से ४१/१३ तक **C** स. सि. योगः	३	१३	००	५६	५	४६	१९	२२
कामिका एकादशी व्रतम्	३	१३	५८	२०	५	४७	१९	२१
ता. १ अग., २००५ ई. प्रा., श्रीतिलक पुण्य तिथि, स. सि. यो.	३	१४	५५	४५	५	४७	१९	२०
भद्रा ५५/०५ से प्रा., **भौम प्रदोष व्रत**, सूर्य अश्लेषा में ४८/५०	३	१५	५३	१३	५	४८	१९	१९
भद्रा २७/५८ तक	३	१६	५०	४१	५	४९	१९	१९
अमावस पितृ तर्पणादि कार्येषु, स. सि. योगः	३	१७	४८	०८	५	४९	१९	१८
हरियाली अमावस, स्नान, दानादि, गुरु हस्त (४) में १६/१०, **गंडमूल**	३	१८	४५	३९	५	५०	१९	१८

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

B 8/32 घं. मिं., अशून्यशयन व्रत, शक श्रावण प्रा., द्विपुष्कर योग

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 28 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	०	३	५	४	३	११	५
११	०९	०५	२५	१८	१२	०७	२३	२३
०५	२४	५६	३३	४९	०१	३२	२२	२२
३५	५३	२२	०९	१३	३५	५६	२२	२२
५७ २१	७७७ २१	३५ ०१	२६ १४	८ १०	७२ १	७ ४५	३ ११	३ ११
पुष्य ३	अश्वि ३	अश्वि २	श्ले. ३	हस्त ३	मघा ४	पुष्य २	रेव ३	चित्रा १
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

५ शु. | ४ सू. बु. श. | ३ | २ | १ चं. मं. | १२ रा. | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ गु. के.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 5 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	०	३	५	४	३	११	५
१८	१७	१०	२०	१९	२१	०८	२२	२२
४४	२१	२९	२७	५७	३६	३४	५६	५६
५२	०५	१०	०२	४४	५०	४०	५४	५४
५७ २९	७१० ५६	३२ ५१	४६ २६	९ ४	७१ ४५	७ ४१	३ ११	३ ११
श्ले. १	श्ले. १	अश्वि ४	श्ले. २	हस्त ३	पूफा ३	पुष्य २	रेव. २	हस्त ४
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

५ शु. | ४ सू. चं. बु. श. | ३ | २ | १ मं. | १२ रा. | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ गु. के.

श्रावण कृष्ण पक्षफल—

श्रावण मास में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को **भगवान् शिव-पार्वती** की पूजा बिल्वपत्र, दूध, दही, ताण्डुल, चीनी, पुष्प आदि सहित विधिपूर्वक करने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की पूर्ति होती है। **कामिका एकादशी** (31 जुला.) को उपवास करके भगवान् विष्णु (या श्री कृष्ण) का तुलसीदल व मंजरी सहित पूजन करें। घी का दीपक प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करे, तो अनन्त शुभफल होता है। इसी मास के प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजनादि करने से स्त्रियों को गृहस्थ सुख प्राप्ति एवं उनके सौभाग्य में वृद्धि होती है। **बाज़ार का रुख**—23 जुला. को बुध कर्क राशि में वक्री होगा। चीनी, चावल, खल, बिनौले, घी, तिल, तैल, गुड़-शक्कर, हल्दी, दालें, प्याज़ एवं चौपायों में तेजी होगी। 29 ता. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, रूई-कपास में घटा-बढ़ी के बाद मन्दी रहेगी। 2 अग. को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रूई, बिनौले, गेहूँ, मक्की, चावल, चने, उड़द, गुड़, शक्कर, एरण्डी, मिर्च लाल व काली, छोटी इलायची, सोयाबीन के बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा॥ श्रावण मास में **पाँच शुक्रवार** होने से अनाज आदि के मूल्यों में वृद्धि होगी। धन का प्रसार बढ़ेगा सुख-साधनों में भी वृद्धि होगी। जनसंख्या में वृद्धि के कारण कुछ गम्भीर समस्याएँ बढ़ेंगी—**''शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥''**

आकाश लक्षण—इस पक्ष में पश्चिमोत्तरी क्षेत्रों—हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि में व्यापक वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, श्रावण शुक्ल पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 6 अग. से 19 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	श्राव. शक	क्रमा. मु.	अगस्त	श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल पश्चिम कपाल में, 10 अग. से शनि पूर्व में उदित तथा ता. १४ अग. से बुध भी पूर्व में दृश्य। सायं गुरु, शुक्र पश्चिम में दीखेंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ए. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३३/३८	१	शनि	१२	५८	श्ले.	३	१३	वरी	५१	०५	ब	१२	५८	१५	३०	6	२२	सिं. ३/१३	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रा., **चन्द्रदर्शन** ३० मु., **मेला चिन्तपूर्णी प्रा., गं.मू.**	३	१९	४३	०८	५	५०	१९	१७
३३/३३	२	रवि	१८	५३	मघा	१०	३५	परि	५३	१३	कौ	१८	५३	१६	रज	7	२३	सिंह	गण्डमूल प्रातः १०/०५ तक, १ रज्जब (मुस्लिम)	३	२०	४०	४२	५	५१	१९	१६
३३/२८	३	चंद्र	२४	२३	पूफा	१७	३३	शिव	५४	५५	ग	२४	२३	१७	२	8	२४	कं. ३४/१३	भद्रा ५६/४८ से प्रा., **हरियाली तीज, मधुस्रवा-सिंघारा तीज**	३	२१	३८	१५	५	५२	१९	१५
३३/२५	४	मंग	२९	१३	उफा	२३	५५	सिद्ध	५६	००	वि	२९	१३	१८	३	9	२५	कन्या	भ. २९/१३ तक, वरद् चतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत, शुक्र उफा में १२/५३	३	२२	३५	४७	५	५२	१९	१४
३३/२०	५	बुध	३२	५५	हस्त	२९	१८	साध्य	५६	०८	ब	१	०४	१९	४	10	२६	कन्या	**नाग पंचमी,** मंगल भरणी में १७/२५, वक्री बुध पुष्य ४ में **A**	३	२३	३३	२३	५	५३	१९	१३
३३/१५	६	गुरु	३५	१५	चित्रा	३३	१८	शुभ	५५	०३	कौ	४	०५	२०	५	11	२७	तु. १/२८	**श्रीकल्की जयन्ती A** १८/१३, शन्युदय पूर्वे 16/10, स.सि.योगः	३	२४	३१	००	५	५४	१९	१२
३३/१२	७	शुक्र	३५	५८	स्वा.	३५	४३	शुक्ल	५२	३८	ग	५	३७	२१	६	12	२८	तुला	भ. ३५/५८ से, **शुक्र कन्या में ०/३५, गो० तुलसीदास जयंती**	३	२५	२८	३४	५	५४	१९	११
३३/०७	८	शनि	३४	४५	विशा	३६	१५	ब्रह्म	४८	४०	वि	५	२२	२२	७	13	२९	वृ. २१/१८	भद्रा ५/२२ तक, **श्री दुर्गाष्टमी,** मेला चिन्तपूर्णी, चामुण्डा-कांगड़ा	३	२६	२६	१०	५	५५	१९	१०
३३/०२	९	रवि	३१	३५	अनु	३४	५५	ऐंद्र	४३	१०	बा	३	१०	२३	८	14	३०	वृश्चिक	**बुध पूर्वोदयः** (५/१० घं. मिं.)	३	२७	२३	४७	५	५५	१९	०८
३२/५७	१०	चंद्र	२६	३३	ज्ये.	३१	४०	वैधृ	३६	०८	ग	२६	३३	२४	९	15	३१	ध. ३१/४०	भद्रा ५३/१२ से प्रा., **भारत स्वतन्त्रता दिवस,** गण्डमूल	३	२८	२१	२७	५	५६	१९	०७
३२/५३	११	मंग	१९	५०	मूला	२६	४८	विष्क	२७	४५	वि	१९	५०	२५	१०	16	भा.	धनु	भ. १९/५० तक, **सूर्य मघा १ सिंह में ४२/३०, भाद्रपद संक्रांति, B**	३	२९	१९	०८	५	५७	१९	०६
३२/५०	१२	बुध	११	५०	पूषा	२०	३८	प्रीति	१८	२०	बा	११	५०	२६	११	17	२	म. ३३/५५	प्रदोष व्रतम्	४	००	१६	४८	५	५७	१९	०५
३२/४५	१३	गुरू	२	४८	उषा	१३	३०	आयु सौभा	८ ५७	०५ २८	तै	२	४८	२७	१२	18	३	मकर	भद्रा ५३/१३ से प्रा.	४	०१	१४	३१	५	५८	१९	०४
अवम्	१४	गुरू	५३	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०
३२/४३	१५	शुक्र	४३	३३	श्रव धनि	५ ५८	५५ २३	शोभ	४६	४५	वि	१८	२३	२८	१३	19	४	कुं. ३२/०८	भ. १३/१९ घं. मिं. तक, **श्रा. पूर्णिमा, रक्षाबन्धन** भद्रोत्तरे, पंचक **D**	४	०२	१२	१३	५	५८	१९	०३

B ३० मु., **पवित्रा एकादशी व्रत, बुध मार्गी** 9/18, शनि पुष्य (३) में १४/३५

D शुरु १८/४९ घं. मिं., ऋषि तर्पणादि उपाकर्म, श्रीअमरनाथ गुफा दर्शन, **गायत्री जयंती,**

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 13 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	०	३	५	५	३	११	५
२६	२५	१४	१५	२१	०१	०९	२२	२२
२५	०४	४३	२३	१३	०९	३५	३१	३१
११	३०	१६	१९	०१	३४	३४	२६	२६
५७ ३७	८०२ ६	३० १७	१७ ५९	९ ५१	७१ २३	७ ३१	३ ११	३ ११
श्ले. ३	विशा २	भर. १	पुष्य ४	हस्त ४	उफा २	पुष्य २	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४ सू. बु. श. — ५ — ३ — ६ गु. शु. के. — २ — ७ चं. — १ मं. — ८ — १० — १२ रा. — ९ — ११

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 19 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	०	३	५	५	३	११	५
०२	२१	१७	१५	२२	०८	१०	२२	२२
११	३१	३९	१८	१३	१७	२०	१२	१२
०५	३८	३६	४०	२६	०६	२२	२१	२१
५७ ४३	९१५ १८	२८ ४	२४ ४४	१० २२	७१ ३	७ २२	३ ११	३ ११
मघा १	श्रव. ४	भर. २	पुष्य ४	हस्त ४	उफा ४	पुष्य ३	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

५ सू. — के. ६ शु. गु. — ४ श. बु. — ३ — ७ — ८ — २ — ११ — ९ — १ मं. — १० चं. — १२ रा.

श्रावण शुक्ल पक्षफल—इस पक्ष में सिंघारा तीज (8 अग.) के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर लौटकर, हाथों में मेहँदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग पंचमी** (10 अग.) को अपने गृह द्वार का दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, अक्षत, पुष्प, लड्डूओं आदि से पूजा करने से घर में सर्पों का भय नहीं रहता। **"ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा"** मन्त्र के जप से भी सर्प विष का भय नहीं होता। श्रा. शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी (13 अग.) पर्यन्त माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) और चामुण्डा देवी (कांगड़ा) पर भव्य एवं पावन मेला मनाया जाता है। **श्रावण पूर्णिमा** (19 अग.) को भाई-बहन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक **'रक्षा बन्धन'** का पर्व मनाया जाता है। यह पर्व दुपैहर 1/19 के बाद-भद्रा उपरान्त प्रशस्त होगा। इसी दिन **श्री अमरनाथ** (कश्मीर) में स्थित पवित्र गुफा में **शिवलिंग** के दर्शन करके श्रद्धालु जन कतार्थ होते हैं। **लोक भविष्य**—पक्ष के आरम्भ में गोचर ग्रहों में कालसर्प योग बना हुआ है, जिससे राजनीतिक वातावरण में अनिश्चितता का माहौल बना रहेगा। 16 अग. को **भाद्रपद संक्रांति** 30 मुहूर्त्ति **मंगलवार** को है। जिससे विश्व में कहीं छत्र-भंग, सत्ता-परिवर्तन, उपद्रव-तोड़-फोड़ एवं हिंसक घटनाएँ अधिक हों। ईराक, पाक, भारत, रूस आदि देशों में कहीं राजनैतिक स्थितियों में विशेष परिवर्तन हों। सर्वजनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हो। विशेषकर गेहूँ, धान्य, घृत, तेल, चावल, मक्की, खल-बिनौले, सोयाबीन, चने तेज भाव होंगे। **संक्रान्ति फल**—यह संक्रान्ति मेष, मिथुन, सिंह, तुला, बृश्चिक, धनु, मकर व मीन राशि वाले जातकों को लाभदायक रहेगी, जबकि अन्य राशि वालों को सामान्य फल देगी। **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा होने के योग हैं। **शकुन—श्रा. शु.** सप्तमी को स्वाती नक्षत्र में बूँदा-बाँदी हो तो आयन्दा सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६२, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 20 अग. से 3 सितं. तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, वर्षा-शरद् ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल पश्चिम में, शनि–बुध पूर्व में दृश्य होंगे। सायं गुरु–शुक्र आसपास ही पश्चिम में दृश्य होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	श्राव. शक (तारीखें)	राजव मं. (तारीखें)	अगस्त (तारीखें)	भाद्र. प्र. (तारीखें)	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अं.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३२/३७	१	शनि	३४	१०	शत	५१	१८	अति	३६	२०	बा	८	५२	२९	१४	20	५	कुम्भ	**भाद्रपद कृष्ण पक्षारम्भः**, शुक्र हस्त १ में २५/४३	४	०३	०९	५८	५	५९	१९	०२
३२/३५	२	रवि	२५	४०	पूभा	४५	१०	सुक	२६	३८	गर	२५	४०	३०	१५	21	६	मी. ३१/३५	भद्रा ५२/५७ से प्रा., बुध आश्लेषा में ३५/२८ **A** चं. उ. रात 8/53	४	०४	०७	४२	५	५९	१९	०१
३२/३३	३	चंद्र	१८	१५	उभा	४०	२०	धृति	१७	५३	वि	१८	१५	३१	१६	22	७	मीन	भ. १८/१५ तक, **कज्जली तीज, गणेश बहुला चौथ व्रत, A**	४	०५	०५	३०	६	००	१९	०१
३२/२८	४	मंग	१२	२५	रेव	३७	०८	शूल	१०	२३	बा	१२	२५	भा.	१७	23	८	मे. ३७/०८	**पंचक समाप्त** २०/५२ घं. मिं., गण्डमूल, सूर्य सायन कन्या में **B**	४	०६	०३	२०	६	०१	१९	००
३२/२३	५	बुध	८	२३	अश्वि	३५	५०	गंड वृद्धि	४ ५९	२० ५८	तै	८	२३	२	१८	24	९	मेष	चन्दन षष्ठी (चंद्रोदय व्या.), **हल षष्ठी B** 6/16 प्रातः स्टै. टा.	४	०७	०१	१२	६	०२	१८	५९
३२/१८	६	गुरू	६	२०	भर	३६	२०	ध्रुव	५७	०८	व	६	२०	३	१९	25	१०	वृ. ५२/००	भ. ६/२० से ३६/१७ तक, गुरु चित्रा १ में १६/०३	४	०७	५९	०२	६	०२	१८	५७
३२/१३	७	शुक्र	६	१३	कृति	३९	०३	व्या.	५५	४३	ब	६	१३	४	२०	26	११	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** स्मार्त., दूर्वाष्टमी व्रतादौ	४	०८	५६	५८	६	०३	१८	५६
३२/०८	८	शनि	७	५८	रोहि	४३	१८	हर्ष	५५	३८	कौ	७	५८	५	२१	27	१२	वृष	**श्री कृष्ण जन्माष्टमी** व्र. वैष्णव., गोकुलाष्टमी, स. सि. यो.	४	०९	५४	५४	६	०४	१८	५५
३२/०५	९	रवि	११	२३	मृग	४८	५८	वज्र	५६	३८	ग	११	२३	६	२२	28	१३	मि. १५/५८	भद्रा ४३/४२ से प्रा., **श्री गुग्गा नवमी**	४	१०	५२	५१	६	०४	१८	५४
३२/००	१०	चंद्र	१६	००	आर्द्रा	५५	३३	सिद्धि	५८	१८	वि	१६	००	७	२३	29	१४	मिथुन	भद्रा १६/०० तक	४	११	५०	५१	६	०५	१८	५३
३१/५५	११	मंग	२१	३३	पुर्न	६०	००	व्य.	६०	००	बा	२१	३३	८	२४	30	१५	क. ४५/५८	पू.फा. (१) सूर्यः ३२/१३, **अजा एकादशी व्रतम्**	४	१२	४८	५०	६	०५	१८	५१
३१/५०	१२	बुध	२७	३३	पुर्न	२	४८	व्य.	०	२८	तै	२७	३३	९	२५	31	१६	कर्क	**वत्स द्वादशी**, शुक्र चित्रा में ४४/२०	४	१३	४६	५५	६	०६	१८	५०
३१/४५	१३	गुरू	३३	४०	पुष्य	१०	१५	वरी	२	५०	ग	०	३७	१०	२६	सितं	१७	कर्क	भद्रा ३३/४० से, **बुध मघा १ सिंह में** १८/०८, **प्रदोष व्रत**, १ सितं.	४	१४	४५	००	६	०७	१८	४९
३१/४०	१४	शुक्र	३९	४०	श्ले.	१७	४०	परि	५	१०	वि	६	४०	११	२७	2	१८	सिं. १७/४०	भद्रा ६/४० तक, गण्डमूलादि, **प्लूटो मार्गी** 16/08 घं. मिं.	४	१५	४३	०८	६	०८	१८	४८
३१/३७	अमा	शनि	४५	१५	मघा	२४	४८	शिव	७	२०	च	१२	२८	१२	२८	3	१९	सिंह	**कुशोत्पाटिनी पिठौरी अमावस, शनैश्चरी अमावस, "ॐ हूं E**	४	१६	४५	१८	६	०९	१८	४७

E फट् स्वाहा"—इह मन्त्रेण कुशोत्पाटनम्, अगस्त्योदयः

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 27 अग.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	०	३	५	५	३	११	५
०९	१४	२१	२१	२३	१७	११	२१	२१
५३	०५	१२	५८	३८	४४	१८	४६	४६
३२	४२	३५	२३	४०	०३	३०	५४	५४
५७ ५७	७४२ ४	२४ ३७	७९ ३६	११ ००	७० ३८	७ ८	३ ११	३ ११
मघा ४	रोहि. २	भर. ३	श्ले. २	चित्रा १	हस्त ३	पुष्य ३	रेव. २	हस्त ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

के. ६ शु. गु.
श. ४ बु.
५ सू.
७
३
८
२ चं.
९
११
१ मं.
१०
१२ रा.

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 3 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	०	४	५	५	३	११	५
१६	०८	२३	०२	२४	२५	१२	२१	२१
३९	०४	५४	५४	५७	५७	०७	२४	२४
४४	५९	१२	०५	०८	११	३१	३८	३८
५८ ०८	७१७ २३	२० ५७	१०७ ५८	११ २९	७० १२	६ ४९	३ १०	३ १०
पूफा १	मघा ३	भर. ४	मघा १	चित्रा १	चित्रा १	पुष्य ३	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

के. ६ शु. गु.
४ श.
५ सू. चं. बु.
७
३
८
२
९
११
१ मं.
१०
१२ रा.

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में चतुर्थी (**बहुला चौथ**) 22 अग. को व्रत रखकर सायंकाल को स्नान करके श्रीगणेश जी का लड्डू सहित पूजन करे और चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने से अभीष्ट की प्राप्ति होती है। **चन्दन (या चन्द्र ६) षष्ठी का** व्रत रखकर सूर्य व चन्द्रमा की पूजा, व्रत करने से धन, सन्तति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** का **व्रतोत्सव** अर्धरात्रि चन्द्रोदय व्यापिनी एवं अर्ध रात्रि में रोहिणी नक्षत्र जयन्ती योग होने से 26 अग. शुक्रवार को मनाना प्रशस्त होगा। शनिवार 27 अग. को सूर्योदय कालिक अष्टमी मात्र प्रातः 9 बजकर 15 मिनट तक होगी। अर्ध रात्रि चन्द्रोदय अष्टमी एवं रोहिणी का भी अभाव होगा। इसी दिन मथुरा में गोकुलाष्टमी का पर्व होगा। **गुग्गा नवमी** (28 अग.) को शिवालय में शिव एवं नाग पूजा की जाती है। 3 सितं. अमा. के दिन "**ॐ हूँ फट् स्वाहा**"—इस मन्त्र द्वारा कुशोत्पाटन करके देव-पितृ आदि कार्यों हेतु कुशा संग्रह करना चाहिए। **लोक भविष्य**—भाद्रपद मास में **पाँच शनिवार** और **पाँच रविवार** होने से प्रजा में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति, गेहूँ, धान्य आदि अनाज के मूल्यों में आशातीत वृद्धि, तनाव एवं हिंसक घटनाएँ अधिक घटित होंगी। सत्तारूढ़ केन्द्रिय सरकार से कुछ घटक दल अलग होने की धमकी देंगे। नेताओं में परस्पर विरोध व टकराव रहेंगे—"**शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते रोगशोक आकुला पृथिवी॥**" पक्षारम्भ में प्रतिपदा को शुक्र हस्त नक्षत्र में आकर रूई, कपास, चावल एवं ऊन में मन्दी होगी। ता. 21 से बुध आश्लेषा में आने से तिल, तैल, गुड़, चीनी, सरसों, मूंग, मूंगफली, उड़द, काली मिर्चों में तेज़ी होगी। ता. 25 को गुरु चित्रा में आने से ऊन, सूत, पटसन, रूई व शेयरों में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। ता. 30 को सूर्य पूफा में आने से जीरा, गुड़, सोयाबीन, तिल, तैल, घी, गेहूँ व रूई-कपास में तेजी होगी। 1 सितं. को बुध मघा (सिंह) में आने से गेहूँ, चने, धान्य, चावल, रूई, लकड़ी व कच्चे लोहे में तेजी होगी।

आकाश लक्षण—पक्ष में उत्तरी भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में रुक-रुक वर्षा का क्रम रहेगा। **शकुन**—लाल एवं काली मिर्च, हल्दी, छोटी इलायची का संग्रह आगे लाभप्रद होगा।

वि. संवत् २०६२, भाद्रपद शुक्ल पक्ष														शाकः १९२७	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	भा. शक	रजब मु.	सितंबर	भाद्र. प्र.	घटी पल
३१/३०	१	रवि	५०	२०	पूफा	३१	२८	सिद्ध	९	१०	किं	१७	४७	१३	२९	4	२०	कं. ४८/००
३१/२८	२	चंद्र	५४	३८	उफा	३७	२३	साध्य	१०	२८	बा	२२	२९	१४	३०	5	२१	कन्या
३१/२३	३	मंग	५८	००	हस्त	४२	२८	शुभ	११	०८	तै	२६	१९	१५	श.	6	२२	कन्या
३१/१८	४	बुध	६०	००	चित्रा	४६	३५	शुक्ल	११	०५	व	२९	००	१६	२	7	२३	तु. १४/४०
३१/१५	४	गुरू	०	१३	स्वा.	४९	२५	ब्रह्म	१०	०५	वि	०	१३	१७	३	8	२४	तुला
३१/१०	५	शुक्र	१	१३	विशा	५०	५८	ऐंद्र	८	०८	बा	१	१३	१८	४	9	२५	वृ. ३५/४३
३१/०७	६	शनि	०	४५	अनु	५०	५८	वैधृ	५	००	तै	०	४५	१९	५	10	२६	वृश्चिक
००	७	शनि	५८	४८	०	०	०	०	०	०	०	—	०	०	०	०	०	००
३१/००	८	रवि	५५	१८	ज्ये.	४९	२८	विष्क प्रीति	० ५५	४३ ०८	वि	२७	०१	२०	६	11	२७	ध. ४९/२८
३०/५५	९	चंद्र	५०	२०	मूला	४६	३०	आयु	४८	२५	बा	२२	४९	२१	७	12	२८	धनु
३०/५०	१०	मंग	४४	००	पूषा	४२	१०	सौभा.	४०	२८	तै	१७	१०	२२	८	13	२९	म. ५५/५५
३०/४५	११	बुध	३६	३८	उषा	३६	४५	शोभ	३१	४५	व	१०	१९	२३	९	14	३०	मकर
३०/४३	१२	गुरू	२८	३०	श्रव	३०	३८	अति	२२	२३	ब	२	३४	२४	१०	15	३१	कुं. ५७/२०
३०/३८	१३	शुक्र	१९	५८	धनि	२४	००	सुक	१२	३३	तै	१९	५८	२५	११	16	आ.	कुम्भ
३०/३३	१४	शनि	११	२३	शत	१७	२५	धृति शूल	२ ५२	४० ५८	व	११	२३	२६	१२	17	२	मी. ५७/४५
३०/२८	१५	रवि	३	०५	पूभा	११	१३	गंड	४३	५५	ब	३	०५	२७	१३	18	३	मीन

सन् 2005 ई. (ता. 4 सितं. से 18 सितं. तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोल, शरद् ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल पश्चिम में, शनि पूर्व में दृश्य होंगे। ४ सितं. से बुध पूर्व में अस्त होगा। सायं गुरु, शुक्र पश्चिम में दृश्य होंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ए. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
भाद्र-शुक्ल पक्षारम्भः, **बुध पूर्व में अस्त** ५/२३ घं. मिं.	४	१७	३९	२६	६	०९	१८	४५
चन्द्रदर्शन ४५ मुहू. **A** राशि में २६/०५ (16/37 स्टैं. टा.)	४	१८	३७	४०	६	१०	१८	४४
शब्वान (मुस्लि.), **हरितालिका तृतीया**, गौरी तीज, **शुक्र तुला A**	४	१९	३५	५४	६	११	१८	४३
भ. २९/०७ से, **सिद्धि विनायक गणेश व्रत**, कलंक चतुर्थी **B**	४	२०	३४	०७	६	११	१८	४२
भ. ०/१३ तक, बुध पूफा में ३४/१८, **ऋषि पंचमी**, संवत्सरी पर्व	४	२१	३२	२४	६	१२	१८	४१
B (पत्थर चौथ), चंद्रदर्शन निषेध (चन्द्रास्त रात 20/34 पर)	४	२२	३०	४२	६	१२	१८	४०
भद्रा ५८/४८ से, सूर्य षष्ठी, **सन्तान सप्तमी**, मुक्ताभरण ७	४	२३	२९	०३	६	१३	१८	३८
सप्तमी तिथि का क्षय **D** गुरू चित्रा (२) में ४५/०५, राधाष्टमी,	०	०	०	०	०	०	०	०
भद्रा २७/०१ तक, **महालक्ष्मी व्रतारंभ**, मंगल कृतिका में ५३/४५ **D**	४	२४	२७	२२	६	१३	१८	३७
श्रीचन्द्र नवमी (जयं.) उदासीन सम्प्रदाय, शुक्र स्वाती में ९/५७ **E**	४	२५	२५	४४	६	१३	१८	३५
सूर्य उ.फा. में १६/२०, **E** गं. मू., **श्रीभागवत सप्ताह प्रारंभ**	४	२६	२४	०९	६	१४	१८	३४
भ. १०/१९ से ३६/३८ तक, **पद्मा एकादशी व्रतम्** **F** उफा में ३३/४०	४	२७	२२	३७	६	१५	१८	३३
पंचकारम्भः २९/११ घं. मिं., **वामन जयंती**, प्रदोष व्रत, बुध **F**	४	२८	२१	०३	६	१५	१८	३२
सूर्य कन्या में ४१/२८, **आश्विन संक्रां. १५** मुहू. पुण्य बाद दुपै. से	४	२९	१९	३३	६	१६	१८	३१
बुध कन्या में २०/५३ (१४/३७ घं.) **अनन्त १४ व्रत G**	५	००	१८	०२	६	१६	१८	२९
भाद्रपदी पूर्णिमा स्नानदान, **श्राद्ध पक्षारंभ, प्रतिपदा का श्राद्ध H**	५	०१	१६	३७	६	१७	१८	२८

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें। **G मेला सोढल जालंधर**, व्रत श्रीसत्यनारायण, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध प्रातः 10/50 के बाद, कदली व्रत **H** प्रातः 7/32 उपरांत

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 11 सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	०	४	५	६	३	११	५
२४	१८	२६	१७	२६	०५	१३	२०	२०
२५	१८	२५	५५	३०	१६	००	५९	५९
३८	२०	०८	५६	४०	४७	४९	१२	१२
५८ २२	८२३ १८	१६ ०३	११४ ५६	११ ५७	६९ ३७	६ २६	३ ११	३ ११
पूफा ४	ज्ये. १	भर. ४	पूफा २	चित्रा १	चित्रा ४	पुष्य ३	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

५ सू. बु. | ६ के. | ४ श. | ३ | २ | १ | १२ मं. रा. | ११ | १० | ९ | ८ चं. | ७ गु. शु.

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 18 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	०	५	५	६	३	११	५
०१	००	२८	०१	२७	१३	१३	२०	२०
१४	०५	०३	०८	५५	२२	४३	३६	३६
४२	०७	१२	५८	२०	११	४१	५६	५६
५८ ३३	८८१ ३८	११ १०	११० १५	१२ १७	६८ ५९	७ २	३ ११	३ ११
उफा २	पूभा ४	कृति १	उफा २	चित्रा २	स्वा. ३	पुष्य ४	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

६ सू. बु. गु. के. | ७ शु. | ५ | ४ श. | ३ | २ | १ मं. | १२ चं. रा. | ११ | १० | ९ | ८

इस पक्ष की तृतीया को सौभाग्य में वृद्धि एवं अखण्ड सुहाग की कामना से गौरी तृतीया (हरितालिका तीज) का व्रत (6 सितं.) विशेषकर सुहागिन स्त्रियाँ करती हैं। 7 सितं. को कलंक चतुर्थी (पत्थर चौथ) को चन्द्रदर्शन करने से व्यक्ति को मिथ्या कलंक लगने का भय होता है। इसी दिन सिद्धि विनायक श्री गणेश जी का व्रत रखकर लड्डुओं आदि का भोग लगाने का महात्म्य है। इसी दिन श्री गणेश जी का अवतार हुआ था। अनन्त चौदश (17 सितं.) को रेशम की पीली एवं 14 ग्रन्थि युक्त डोरी सहित भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करने का विधान है। इसी दिन जालन्धर नगर में (शिव मन्दिर में) बाबा सोढल का भव्य मेला आयोजित होता है। प्रौष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध भी इसी दिन (17 सितं.) को प्रातः 10/50 के बाद होगा। रविवार 18 ता. को प्रातः 8/31 के बाद मध्यान्ह काल में प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध होगा। ***बाज़ार का रूख—*** पक्षारम्भ में प्रतिपदा को बुध पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, मैदा, मक्की, चावल, उड़द, चने, उड़द व मूंग की दालें आदि माल पंसारी तेज भाव होगा॥ द्वितीया सोमवार को चन्द्रदर्शन होने से मूंग, मोठ, चने, खल-बिनौला में तेजी व सोना-चाँदी में घटा-बढ़ी रहेगी। 16 सितंबर, शुक्रवार को आश्विन संक्रान्ति 15 मुहूर्त्ति होने से गेहूँ, जौं, चावल, चने, सरसों, अलसी, सूरजमुखी, गुड़, चीनी आदि खाद्य तेलों तथा सोना, चाँदी व लोहे में तेजी का वातावरण बनेगा। शेयरों में घटा-बढ़ी होगी। सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि होने से राजनीतिक वातावरण अस्थिर रहेगा। बेरोज़गारी एवं महँगाई के कारण लोगों में विक्षोभ रहेगा। **संक्रांति फल**—मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर व मीन राशि वालों को संक्रांति फल शुभ रहेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष के पूर्वार्ध भाग में भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में कहीं-कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, आश्विन कृष्ण पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 18 सितं. से 3 अक्तू. तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतु

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	भाद्र. शाके	मुस्लिम	सितंबर	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
अवम्	१	रवि	५५	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	18	०	००
३०/२५	२	चंद्र	४९	१३	उभा	५	५०	वृद्धि	३५	४०	तै	२२	२४	२८	१४	19	४	मीन
३०/१८	३	मंग	४४	१५	रेव / अश्वि	१ / ५८	३८ / ५५	ध्रुव	२८	३०	व	१६	४४	२९	१५	20	५	मे. १/३८
३०/१३	४	बुध	४१	०३	भर	५८	००	व्या.	२२	४५	ब	१२	३९	३०	१६	21	६	मेष
३०/०५	५	गुरू	३९	४०	कृति	५८	५५	हर्ष	१८	२३	कौ	१०	२२	३१	१७	22	७	वृ. १३/०३
३०/००	६	शुक्र	४०	१५	रोहि	६०	००	वज्र	१५	३५	ग	९	५८	आ.	१८	23	८	वृष
२९/५५	७	शनि	४२	४३	रोहि	१	४३	सिद्धि	१४	१५	वि	११	२९	२	१९	24	९	मि. ३३/४८
२९/५३	८	रवि	४६	४८	मृग	६	१५	व्य.	१४	२०	बा	१४	४६	३	२०	25	१०	मिथुन
२९/५०	९	चंद्र	५२	०५	आर्द्रा	१२	१५	वरी	१५	२८	तै	१९	२७	४	२१	26	११	मिथुन
२९/४५	१०	मंग	५८	०५	पुर्न	१९	१०	परि	१७	१८	व	२५	०५	५	२२	27	१२	क. २/२०
२९/४३	११	बुध	६०	००	पुष्य	२६	३८	शिव	१९	३५	ब	३१	१२	६	२३	28	१३	कर्क
२९/३५	११	गुरू	४	१८	श्ले.	३४	०३	सिद्ध	२१	५३	बा	४	१८	७	२४	29	१४	सिं. ३४/०३
२९/३०	१२	शुक्र	१०	२०	मघा	४१	०८	साध्य	२३	५५	तै	१०	२०	८	२५	30	१५	सिंह
२९/२५	१३	शनि	१५	४३	पूफा	४७	२८	शुभ	२५	२८	व	१५	४३	९	२६	अक्तू	१६	सिंह
२९/२०	१४	रवि	२०	२०	उफा	५२	५५	शुक्ल	२६	२३	श	२०	२०	१०	२७	२	१७	कं. ३/५५
२९/१५	३०	चंद्र	२३	५०	हस्त	५७	२०	ब्रह्म	२६	२५	ना	२३	५०	११	२८	३	१८	कन्या

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः मंगल पश्चिम में तथा शनि पूर्व कपाल में होंगे, बुध अभी अस्त है। सायं गुरु, शुक्र पश्चिम में दृश्य होंगे।

- प्रतिपदा का क्षय
- द्वितीया का श्राद्ध, गण्डमूल ८/३७ घं. के बाद **A** श्राद्ध, गण्डमूल
- भ. १६/४४ से ४४/१५ तक, **पंचक समाप्त** 6/57 घं., तृतीया का **A**
- **श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध**
- बुध हस्त १ में ५१/५५, पंचमी का श्राद्ध, सूर्य सायन तुला **B**
- भद्रा ४०/१५ से प्रा., शुक्र विशाखा में ४५/१०, षष्ठी का श्राद्ध
- भद्रा ११/२९ तक, सप्तमी का श्राद्ध — **B** में 27/54 स्टैं. टा.
- **श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,** अष्टमी का श्राद्ध, **जीवित्पुत्रिका व्रत**
- **मातृ ९,** सूर्य हस्त में ५४/५०, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध
- भद्रा २५/०५ से ५८/०५ तक, दशमी का श्राद्ध
- गुरू चित्रा (३) तुला में ५/३५ घं. मिं., एकादशी का श्राद्ध
- **इंदिरा एकादशी व्रत,** द्वादशी का श्राद्ध 8/06 उप., राहु रेव १, **C**
- प्रदोष व्रतं, त्रयो. का श्राद्ध 10/32 उप., बुध चित्रा में ४०/४८, **गजछाया**
- भ. १५/४३ से ४८/०२ तक, शस्त्र विष दुर्घटनादि से मृतों का **D**
- **गाँधी जयंती, शुक्र बृश्चिक में ३३/२८,** स. सि. योगः
- **सोमवती अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध-स्नानदान, कंकण सूर्यग्रहण E**

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
०	०	०	०	०	०	०	०
५	०२	१५	०९	६	१७	१८	२७
५	०३	१३	४७	६	१८	१८	२५
५	०४	१२	२६	६	१८	१८	२३
५	०५	११	०९	६	१९	१८	२१
५	०६	०९	५१	६	२०	१८	२०
५	०७	०८	३७	६	२१	१८	१९
५	०८	०७	२३	६	२१	१८	१८
५	०९	०६	१२	६	२१	१८	१७
५	१०	०५	०५	६	२२	१८	१६
५	११	०३	५८	६	२२	१८	१५
५	१२	०२	५५	६	२३	१८	१३
५	१३	०१	५५	६	२४	१८	१२
५	१४	००	५६	६	२५	१८	१०
५	१४	५९	५८	६	२५	१८	१०
५	१५	५९	०५	६	२६	१८	०८

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

C केतु हस्त ३ में ३४/२० — **D** श्राद्ध, मंगल वक्री ५३/०८

E (देखें पृष्ठ 11) मेला फाल्गु. व कपालमोचन कुरूक्षेत्र व तीर्थस्नान हरिद्वार आदि

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 25 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	०	५	५	६	३	११	५
०८	०४	२९	१३	२९	२१	१४	२०	२०
०५	५७	०५	४०	२२	२२	२५	१४	१४
१८	१३	०६	३९	१२	५६	३५	४०	४०
५८ / ४९	७२९ / ५४	५ / ३५	१०३ / ३१	१२ / ३३	६८ / १५	५ / ३४	३ / ११	३ / ११
उफा ४	मृग ४	कृति १	हस्त २	चित्रा २	विशा १	पुष्य ४	रेव २	हस्त ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ शु. | ६ | ५ | ४ श. | ३ चं. | २ | १ मं. | १२ रा. | ११ | १० | ९ | ८ | सू. बु. गु. के.

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 3 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	०	५	६	७	३	११	५
१५	१०	२९	२७	०१	००	१५	१९	१९
५६	५८	२५	०३	०३	२५	०८	४९	४९
४७	५७	३९	१६	३७	५३	११	१३	१३
५९ / ६	७४५ / ३१	१ / २५	९६ / २५	१२ / ४९	७ / १८	४ / ५९	३ / १०	३ / १०
हस्त २	हस्त १	कृति १	चित्रा २	चित्रा ३	विशा ४	पुष्य ४	रेव १	हस्त ३
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

७ गु. | ६ | ५ | ४ श. | ३ | २ | १ मं. | १२ रा. | ११ | १० | ९ | ८ शु. | सू. चं. बु. के.

आश्विन कृष्ण पक्षफल—श्राद्ध पक्ष में अपने दिवंगत पितरों के निमित्त जो व्यक्ति तिल, जौं, अक्षत, कुशा एवं गंगा जल सहित पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्र आदि का दान, दक्षिणा सहित करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश-सम्पदा, मोक्ष आदि सुख प्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं—**''आयु पुत्रान् यशः स्वर्ग कीर्ति पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥''** जो व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्धकर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं दुःखों से पीड़ित रहता है। इस पक्ष की अष्टमी तिथि को **जीवितपुत्रिका** व्रत सन्तान की आयुरारोग्यादि सुख लाभ की कामना से प्रायः स्त्रियों द्वारा यह व्रत किया जाता है। दिवंगत ज्ञात अथवा अज्ञात तिथि वाले सर्व प्रकार के पितरों का श्राद्ध आश्विन **अमावस (3 अक्तू.)** को होगा। इस दिन **सोमवती अमावस** एवं सायंकाल **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** लगने से तीर्थादि स्थानों पर स्नानदान आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा। **बाज़ार का रुख**—प्रतिपदा का क्षय हुआ है, जिससे करियाना बाज़ार में अस्थिरता का वातावरण रहेगा। ता. 22 को बुध हस्त में मूंग, सोयाबीन, रूई, कपास में मन्दी करेगा। परन्तु 26 ता. से सूर्य हस्त में गेहूँ, ज्वार, चीनी, गुड़, शक्कर, रूई व चाँदी में तेज़ीकारक होगा। 28 ता. से गुरु तुला में आने से सोना, चाँदी, लकड़ी, लोहा, ताम्र, जील आदि धातुओं में तेजी करेगा। **आश्विन में पाँच रविवार** तथा कन्या राशि पर **चार ग्रही** योग होने से कहीं युद्ध एवं हिंसक घटनाएं बढ़ेंगी। राजनीति के क्षेत्र में भी अस्थिरता होगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, आश्विन शुक्ल पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 4 अक्तू. से 17 अक्तूबर तक)

सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल पश्चिम में व शनि पूर्व कपाल में, ६ अक्तू. से बुध सायं पश्चिम से उदय होगा, उससे ऊपर शुक्र दृश्य होगा। ६ अक्तू. से ही गुरु पश्चिम में अस्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	आश्वि. श्रु.	शाबा मुं.	अक्तूबर	आश्विन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
२९/१३	१	मंग	२६	१५	चित्रा	६०	००	ऐंद्र	२५	४०	ब	२६	१५	१२	२९	4	१९	तु. २९/०८
२९/०८	२	बुध	२७	३०	चित्रा	०	३५	वैधृ	२३	५८	कौ	२७	३०	१३	३०	5	२०	तुला
२९/०३	३	गुरू	२७	४०	स्वा.	२	४८	विष्क	२१	२५	ग	२७	४०	१४	रम	6	२१	बृ. ४८/४५
२८/५८	४	शुक्र	२६	४०	विशा	३	५३	प्रीति	१७	५८	वि	२६	४०	१५	२	7	२२	वृश्चिक
२८/५३	५	शनि	२४	३५	अनु	३	५३	आयु	१३	३८	बा	२४	३५	१६	३	8	२३	वृश्चिक
२८/५०	६	रवि	२१	३०	ज्ये.	२	५०	सौभा	८	३०	तै	२१	३०	१७	४	9	२४	ध. २/५०
२८/४३	७	चंद्र	१७	२३	मूला पूषा	० ५७	५० ५८	शोभ अति	२ ५५	३३ ५५	व	१७	२३	१८	५	10	२५	धनु
२८/३८	८	मंग	१२	२५	उषा	५४	१५	सुक	४८	३५	ब	१२	२५	१९	६	11	२६	म. १२/०३
२८/३३	९	बुध	६	४३	श्रव	४९	५३	धृति	४०	४३	कौ	६	४३	२०	७	12	२७	मकर
२८/२८	१०	गुरू	०	२३	धनि	४५	०५	शूल	३२	२५	ग	०	२३	२१	८	13	२८	कुं. १७/३०
अवम्	११	गुरू	५३	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
२८/२३	१२	शुक्र	४६	५०	शत	४०	०८	गंड	२३	४८	ब	२०	१५	२२	९	14	२९	कुम्भ
२८/१८	१३	शनि	४०	००	पूभा	३५	१०	वृद्धि	१५	२८	कौ	१३	२५	२३	१०	15	३०	मी. २१/२३
२८/१३	१४	रवि	३३	३५	उभा	३०	३३	ध्रुव व्या.	७ ५९	०८ १५	ग	६	४८	२४	११	16	३१	मीने
२८/१०	१५	चंद्र	२७	५३	रेव	२६	३८	हर्ष	५२	०५	वि	०	४४	२५	१२	17	का.	मे. २६/३८

व्रत / पर्व	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
शरद् नवरात्रारम्भ, घटस्थापनं, बुध तुला में ४८/०५, श्रीदुर्गापूजन, **A**	५	१६	५८	११	६	२६	१८	०७
चन्द्रदर्शन १५ मुहू., शुक्र अनु. १ में ३३/०८	५	१७	५७	२०	६	२७	१८	०६
भ. ५७/१० से, बुध पश्चिमोदय ६/१५, **गुरु पश्चिमेऽस्तं** 10/45 स्टैं. टा. **B**	५	१८	५६	३०	६	२७	१८	०४
भ. २६/४० तक, स. सि. योगः **A** अग्रसेन जयं., **मातामह** (नाना) का श्राद्ध	५	१९	५५	४५	६	२८	१८	०३
उपांङ्ग ललिता व्रत, गण्डमूल ८/०२ उपरान्त	५	२०	५५	००	६	२९	१८	०२
बुध स्वाती में ४/१५, स. सि. योगः **B** रमज़ान १ मुस्लि. प्रा.	५	२१	५४	१५	६	२९	१८	०१
भद्रा १७/२३ से २७/५४ तक, सूर्य चित्रा में २६/४०, श्री सरस्वती **C**	५	२२	५३	३५	६	३०	१७	५९
महाष्टमी, श्री दुर्गा ८, भद्रकाली जयं. **C** आवाहन पूजनं च मूले-पूषा	५	२३	५२	५५	६	३१	१७	५८
महानवमी, नवरात्र समा., विजयादशमी (दशहरा) सरस्वती विसर्जन **D**	५	२४	५२	२०	६	३२	१७	५७
भ. २७/०२ से ५३/४० तक, **पंचक शुरु** 13/33 घं., पापांकुशा **E**	५	२५	५१	४४	६	३३	१७	५६
एकादशी तिथि का क्षय **E** एका. स्मार्त, भरत मिलाप, गुरु चित्रा (४) में ३१/००	०	०	०	०	०	०	०	०
पापांकुशा एकादशी वैष्णवानां (सन्यासियों के लिए)	५	२६	५१	०८	६	३३	१७	५४
शनि प्रदोष व्रत	५	२७	५०	३७	६	३४	१७	५३
भद्रा ३३/३५ से, **शरद् पूर्णिमा** की रात्रि, कोजागर व्रत, स.सि.यो.	५	२८	४९	०६	६	३५	१७	५२
भ. ०/४४ तक, **कार्तिक (तुला) संक्रांति** १०/३० मु. ३०, व्रत **F**	५	२९	४९	३६	६	३५	१७	५१

(भा. स्टैं. टा. — जालन्धर)

D अपराजिता पूजन, आयुधपूजा, बलिदान दिन **F** शरद् पूर्णिमा, पंचक समा. १७/१४ घं. मिं., **बाल्मीकि जयं.,** शुक्र ज्येष्ठा में ३९/४३, **ग्रस्तोदय खण्डग्रास चंद्रग्रहण** (देखें पृष्ठ 13)

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 11 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	०	६	६	७	३	११	५
२३	२६	२८	०९	०२	०९	१५	१९	१९
५०	३३	४९	३२	४६	२०	४५	२३	२३
२६	४३	०८	२६	४४	२१	४८	४७	४७
५९ २१	८५२ २३	८ ३३	९० ११	१२ ५७	६६ ५	४ १८	३ ११	३ ११
चित्रा १	पूषा ४	कृति १	स्वा. १	चित्रा ३	अनु. २	पुष्य ४	रेव १	हस्त ३
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

६ सू. के. | ७ गु. | ८ बु. शु. | ९ चं. | १० | ११ | १२ रा. | १ मं. | २ | ३ | ४ श. | ५

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 17 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	०	६	६	७	३	११	५
२९	२३	२७	१८	०४	१५	१६	१९	१९
४६	०२	४५	२२	०४	५४	१०	०४	०४
५६	५८	२३	१७	४४	०४	२४	४२	४२
५९ ३१	८४८ ३६	१३ २६	८५ ३६	१३ ३	६४ ५५	३ ४७	३ ११	३ ११
चित्रा २	रेव २	कृति १	स्वा. ४	चित्रा ४	अनु. ४	पुष्य ४	रेव १	हस्त ३
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

६ सू. के. | ७ गु. | ८ बु. शु. | ९ | १० | ११ | १२ चं. रा. | १ मं. | २ | ३ | ४ श. | ५

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा ४ अक्तू. से शारदीय **नवरात्रारम्भ** होंगे। प्रतिपदा को घटस्थापन, षोडशोपचार सहित श्री दुर्गापूजन करें। पूजा मन्त्र—'' **ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते। आगच्छ वरदे देवी। पूजां गृहाण समुखि नमस्ते शंकरप्रिये॥**'' नवरात्रों में श्री दुर्गा पूजा एवं कुमारी कन्या पूजन, दानादि का विशेष महत्त्व है। **विजयादशमी** (12 अक्तू.) को सायंकाले रावणदाह श्री रामचन्द्रजी की पूजा एवं अपराजिता पूजन करना चाहिए। **शरद् पूर्णिमा** 16 अक्तू. की रात्रि को खीर (मेवा-किशमिश युक्त) छिटकती चांदनी में रात भर सुरक्षित रखकर दूसरे दिन 17 अक्तू. सोमवार के दिन सेवन करने से अनेक प्रकार के मानसिक एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति होती है। **कार्तिक संक्रान्ति** भी 17 अक्तू. शरद् पूर्णिमा सोमवार होगी। इस दिन की रात्रि को ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होने से तीर्थों पर स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। ***लोक भविष्य***—आश्विन मास में पाँच सोमवार होने से आगामी फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। धान्य, चावल आदि सस्ते होंगे। कार्तिक संक्रान्ति भी सोमवार को है। परन्तु आश्विन में सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण का समावेश होने से देश में कहीं प्राकृतिक आपदा, जन-धन हानि, महंगाई के कारण आक्रोश रहे। 6 अक्तू. से गुरु अस्त होने में प्रधान नेता के लिए अरिष्टकर तथा केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन के भी संकेत हैं। **व्यापारिक रुख**—6 अक्तू. को गुरु अस्त व बुध उदय होने से रूई, शेयरों, सोने, अनाज में मन्दी, चाँदी में तेजी बनेगी। कार्तिक संक्रान्ति 17 अक्तू., सोमवार को 30 मुहूर्त्ति की है। तुला राशि में सूर्य, बुध व गुरु का सम्बन्ध बनेगा व इन पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। इसी दिन ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होने से गुड़, चना, सोना, चाँदी, शक्कर, कोयला, चावल, चाँदी सस्ती होकर तेज होगी। बाजरा, तिल, तेल में मन्दी बनेगी। ***आकाश लक्षण***—आश्विन मास में सूर्य एवं चन्द्रग्रहण घटित होने से उत्तर-पश्चिमी भारत में मौसम में विशेष परिवर्तन होंगे। कहीं आर्द्रता, कहीं प्रतिकूल वर्षा, कहीं शुष्कता रहें। **शकुन विचार**—आश्विन शुक्ल १० (12 अक्तू.) को दक्षिण की वायु चले तो आगे वर्षा अच्छी हो, चावल, हल्दी, घी का स्टॉक, घी का स्टॉक करने से लाभ होगा।

वि. संवत् २०६२, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 18 अक्तू. से 2 नवं. तक)

सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आश्वि. शक	रमजा. मु	अक्टूबर	कार्तिक	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
२८/०५	१	मंग	२३	०८	अश्वि	२३	४०	वज्र	४५	४८	कौ	२३	०८	२६	१३	18	२	मेष
२८/००	२	बुध	१९	४०	भर	२२	००	सिद्धि	४०	३८	ग	१९	४०	२७	१४	19	३	वृ. ३६/५०
२७/५८	३	गुरू	१७	५०	कृति	२१	५५	व्य.	३६	४५	वि	१७	५०	२८	१५	20	४	वृष
२७/५३	४	शुक्र	१७	४०	रोहि	२३	२८	वरी	३४	१५	बा	१७	४०	२९	१६	21	५	मि. ५४/५५
२७/४८	५	शनि	१९	१८	मृग	२६	४५	परि	३३	०८	तै	१९	१८	३०	१७	22	६	मिथुन
२७/४३	६	रवि	२२	३८	आर्द्रा	३१	३८	शिव	३३	१५	व	२२	३८	का	१८	23	७	मिथुन
२७/४०	७	चंद्र	२७	२८	पुर्न	३७	५५	सिद्ध	३४	२८	ब	२७	२८	२	१९	24	८	क. २१/१५
२७/३५	८	मंग	३३	१५	पुष्य	४५	०३	साध्य	३६	२०	बा	०	२२	३	२०	25	९	कर्क
२७/३०	९	बुध	३९	३३	श्ले.	५२	३०	शुभ	३८	३३	तै	६	२४	४	२१	26	१०	सिं. ५२/३०
२७/२५	१०	गुरू	४५	४३	मघा	५९	४८	शुक्ल	४०	४३	व	१२	३८	५	२२	27	११	सिंह
२७/२३	११	शुक्र	५१	१५	पूफा	६०	००	ब्रह्म	४२	२५	ब	१८	२९	६	२३	28	१२	सिंह
२७/१८	१२	शनि	५५	४०	पूफा	६	१८	ऐंद्र	४३	१५	कौ	२३	२८	७	२४	29	१३	कं. २२/४५
२७/१३	१३	रवि	५८	४३	उफा	११	४३	वैधृ	४३	०८	ग	२७	१२	८	२५	30	१४	कन्या
२७/०८	१४	चंद्र	६०	००	हस्त	१५	४३	विष्क	४१	५०	वि	२९	२८	९	२६	31	१५	तु. ४७/१३
२७/०३	१४	मंग	०	१३	चित्रा	१८	१८	प्रीति	३९	२५	श	०	१३	१०	२७	नवं	१६	तुला
२७/००	अमा	बुध	०	२०	स्वा.	१९	३०	आयु	३५	५५	ना	०	२०	११	२८	2	१७	तुला

ग्रह लोपदर्शन—गुरु अदृश्य है। सायं बुध व शुक्र पश्चिम में दृश्य होंगे। प्रातः मंगल पश्चिम में तथा शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न में होगा।

कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रा., बुध विशाखा में ५/४८, कार्तिक में A
भ. ४८/४५ से A श्रीतुलसीदल सहित भगवान् विष्णु पूजा करें
भ. १७/५० तक, **व्रत करक चतुर्थी (करवा चौथ)**, श्रीगणेश-गौरी पूजा #
वक्री मंगल भरणी ४ में २४/१५ # चंद्रोदय रात्रि लगभग 7/44 पर

भ. २२/३८ से ५५/०३ तक, **स्कन्द षष्ठी**, सूर्य स्वाती में ५२/४३ B
B शाकः कार्तिक प्रा., सूर्य सायन बृश्चिक में 13/12, हेमन्त ऋतु प्रा.
व्रत अहोई अष्टमी, राधाष्टमी, **बुध बृश्चिक में २६/१५**, +
गण्डमूलादि विचार, **नैपचून मार्गी ५५/२०**
भद्रा १२/३८ से ४५/४३ तक + शनि आश्ले. में ३६/१०
रमा एकादशी व्रत, बुध अनु. १ में ३/४७, गुरु स्वाती में ५०/२८
गोवत्स द्वादशी C धनवन्तरी जंयती, स. सि. योगः
भ. ५८/४३ से, प्रदोष व्रत, **धन त्र्योदशी, शुक्र धनु में १७/०५** C
भद्रा २९/२८ तक, **नरक चौदश, श्री हनुमान जयंती**, यम दीपदान
भौमवासरी **अमावस, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपावली**, कुबेर D
का. अमावस 6/55 तक, का. शु. प्रतिपदा, **गोवर्धन पूजा** अन्नकूट, E

दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	द्दृ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
६	००	४९	१०	६	३६	१७	५०
६	०१	४८	४६	६	३७	१७	४९
६	०२	४८	२२	६	३७	१७	४८
६	०३	४८	०३	६	३८	१७	४७
६	०४	४७	४७	६	३९	१७	४६
६	०५	४७	३२	६	४०	१७	४५
६	०६	४७	१६	६	४०	१७	४४
६	०७	४७	०५	६	४१	१७	४३
६	०८	४६	५७	६	४२	१७	४२
६	०९	४६	५०	६	४३	१७	४१
६	१०	४६	४४	६	४३	१७	४०
६	११	४६	४२	६	४४	१७	३९
६	१२	४६	४२	६	४५	१७	३८
६	१३	४६	४५	६	४६	१७	३७
६	१४	४६	४८	६	४७	१७	३६
६	१५	४६	५२	६	४७	१७	३५

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

E बली एवं विश्वकर्मा पूजा   D पूजा, श्री महावीर निर्वाण

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 25 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	०	६	६	७	३	११	५
०७	०७	२५	२९	०५	२४	१६	१८	१८
४४	०९	३८	२२	४९	२७	३८	३९	३९
०८	१३	२४	०५	११	०२	०३	१५	१५
५९ ४९	७१३ ११	१८ ३८	७७ ५०	१३ ४	६२ ४१	३ २	३ १०	३ १०
स्वा. २	पुष्य २	भर. ४	विशा ३	चित्रा ४	ज्ये. ३	पुष्य ४	रेव. १	हस्त ३
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ सू. बु. गु. · ८ शु. · ६ के. · ९ · ५ · १० · ४ चं. श. · १ मं. · ११ · ३ · १२ रा. · २

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 2 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	०	७	६	८	३	११	५
१५	१५	२२	०९	०७	०२	१६	१८	१८
४३	००	५८	०१	३३	४२	५९	१३	१३
४०	५८	०२	१०	३४	५७	२१	४९	४९
६० ६	७९४ ४०	२१ १५	६३ १८	१३ ००	६० ३३	२ ११	३ ११	३ ११
स्वा. ३	स्वा. ३	भर. ३	अनु. २	स्वा. १	मूल १	श्ले. १	रेव. १	हस्त ३
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

७ सू. चं. गु. · ८ बु. · ६ के. · ९ शु. · ५ · १० · ४ श. · १ मं. · ११ · ३ · १२ रा. · २

इस पक्ष में करक चतुर्थी अर्थात् करवा चौथ (20 अक्तू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। व्रती को चाहिए कि उस दिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके **''मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादिसुस्थिर श्रीप्राप्तये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।''** यह संकल्प करें तथा सायं श्रीगणेश जी एवं गौरी की कथा सुनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (25 अक्तू.) का व्रत, पूजन भी सन्तान व पति की रक्षा हेतु किया जाता है। **30 अक्तू.** त्रयोदशी को **धनवन्तरी** का जन्मोत्सव व औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय किया जाता है। 1 नवं. को **श्री महालक्ष्मी** का पूजन व **दीपमाला** का शुभ पर्व है। इस रात्रि को किए गए जप, तप, अनुष्ठानादि का अनेक गुणा अधिक फल प्राप्त होता है। इसी पंचांग में **'संदिग्ध व्रत-पर्व'** शीर्षक के अन्तर्गत पूजन का समय एवं विधि पढ़ें। **लोक-भविष्य**—कार्तिक मास में पाँच मंगलवार होने से देश में अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। सत्तारूढ़ शासक वर्ग के लिए यह अवधि अशुभ होगी। कहीं छत्रभंग (या सत्ता-परिवर्तन) की स्थिति बनेगी। **''यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा॥''** विश्व में भी कहीं हवाई दुर्घटनाएं तथा आतंकवादी एवं युद्धन्मोदी घटनाएँ अधिक घटित होंगी। **बाज़ार का रुख**—23 अक्तू. को सूर्य स्वाती में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गल में तेजी बनेगी। 25 अक्तू. को बुध बृश्चिक राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी है। घी, तेल, सरसों, रूई, चाँदी, शेयरों में तेजी बने। 1 नवं. को भौमवती अमावस लगभग सभी करियाना वस्तुओं में तेजी लाएगी। यह दिन देवी सिद्धि एवं तांत्रिक प्रयोगों के लिए विशेष प्रशस्त माना जाता है।

आकाश लक्षण—23 अक्तू. के बाद उत्तर भारत में कहीं बादल चाल रहे। परन्तु वर्षा का अभाव रहे। कहीं खण्ड वृष्टि हो। तापमान में धीरे-धीरे ही कमी आएगी।

विशेष—20 अक्तूबर को जालन्धर के अतिरिक्त भारत के अन्य नगरों का चन्द्रोदय जानने के लिए देखे पृष्ठ संख्या 67।

वि. संवत् २०६२, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९२७														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	सन् 2005 ई. (ता. 2 नवं. से 15 नवं. तक) सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु	भा. स्टैं. टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	का. शाके	रमजान	नवंबर	कार्ति. प्र.		ग्रह लोपदर्शन—३ नवं. से प्रातः गुरु पूर्व से दृश्य, शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा सायं मंगल पूर्व में, बुध, शुक्र पश्चिम में दृश्य होंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
अवम्	१	बुध	५९	०५	०	त्रयोदश दिनात्मक पक्ष						००	०	०	०	2	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय; गुरू उदय 3 नवंबर	०	०	०	०	०	०	०	०
२६/५८	२	गुरू	५६	३५	विशा	१९	२५	सौभा	३१	२३	बा	२७	५०	१२	२९	3	१८	वृ. ४/३३	**भाई दूज** (भ्रातृ २), **यम द्वितीया,** विश्वकर्मा पूजन, **गुरोदय A**	६	१६	४७	०१	६	४८	१७	३५
२६/५३	३	शुक्र	५३	१०	अनु.	१८	१५	शोभ	२६	०३	तै	२४	५३	१३	शव	4	१९	वृश्चिक	शव्वाल १ (मुस्लिम), ईद-उल-फित्र **A** पूर्वे 6/15, चंद्रदर्शन ३० मुहू.	६	१७	४७	१०	६	४९	१७	३४
२६/४८	४	शनि	४९	००	ज्ये.	१६	१३	अति	२०	००	व	२१	०५	१४	२	5	२०	ध. १६/१३	भ. २१/०५ से ४९/०० तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूलादि	६	१८	४७	२२	६	५०	१७	३३
२६/४५	५	रवि	४४	२३	मूला	१३	३५	सुक	१३	३०	ब	१६	४२	१५	३	6	२१	धनु	सूर्य विशाखा में १२/२७, ज्ञान पंचमी, गण्डमूल १२/१६ घं. तक **B**	६	१९	४७	३३	६	५०	१७	३२
२६/४३	६	चंद्र	३९	२०	पूषा	१०	२८	धृति शूल	६ ५९	३५ ३०	कौ	११	५२	१६	४	7	२२	म. २४/४०	**सूर्य षष्ठी** **B** स. सि. योगः	६	२०	४७	४७	६	५१	१७	३२
२६/३८	७	मंग	३४	०५	उषा	७	०५	गंड	५२	१५	ग	६	४३	१७	५	8	२३	मकर	भ. ३४/०५ से प्रा.	६	२१	४८	०४	६	५२	१७	३१
२६/३५	८	बुध	२८	५०	श्रव	३	३५	वृद्धि	४५	००	वि	१	२८	१८	६	9	२४	कुं. ३१/५०	भद्रा १/२८ तक, **गोपाष्टमी, पंचकारम्भः** 19/36 घं. मिं. से	६	२२	४८	१९	६	५२	१७	३०
२६/३३	९	गुरू	२३	३३	धनि शत	० ५६	०५ ३८	ध्रुव	३७	४८	कौ	२३	३३	१९	७	10	२५	कुम्भ	**अक्षय नवमी, कूष्माण्ड ९, आरोग्य व्रत**	६	२३	४८	३६	६	५२	१७	२९
२६/३०	१०	शुक्र	१८	२३	पूभा	५३	२०	व्या.	३०	३८	ग	१८	२३	२०	८	11	२६	मी. ३९/०८	भद्रा ४५/५४ से, **भीष्म पंचकारम्भ** (देखें संदिग्ध पर्व पृ 66)	६	२४	४८	५६	६	५३	१७	२९
२६/२५	११	शनि	१३	२५	उभा	५०	२०	हर्ष	२३	४०	वि	१३	२५	२१	९	12	२७	मीन	भ. १३/२५ तक, **देवप्रबोधिनी एकादशी,** चातुर्मास्य व्रतादि **C**	६	२५	४९	१८	६	५४	१७	२८
२६/२३	१२	रवि	८	५०	रेव	४७	४८	वज्र	१७	०३	बा	८	५०	२२	१०	13	२८	मे. ४७/४८	**पंचक समा.** 26/01 घं., प्रदोष व्रत, गुरू स्वा. (२) में १६/४७**F**	६	२६	४९	३९	६	५४	१७	२८
२८/१८	१३	चंद्र	४	४०	अश्वि	४५	४८	सिद्धि	१०	४८	तै	४	४०	२३	११	14	२९	मेष	**बैकुण्ठ चौदश.,** बालदिवस, नेहरू जयं., बुध वक्री १०/३५	६	२७	५०	०६	६	५६	१७	२७
२६/१३	१४	मंग	१	१३	भर	४४	३८	व्य.	५	०३	व	१	१३	२४	१२	15	३०	वृ. ५९/३०	भ. १/१३ से २९/५९ तक, **का० पूर्णिमा, भीष्मपंचक समाप्त, D**	६	२८	५०	३५	६	५८	१७	२७
अवम्	१५	मंग	५८	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पूर्णिमा तिथि का क्षय; **F तुलसी विवाह,** रेवती नक्षत्रे	०	०	०	०	०	०	०	०

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

D श्रीगुरुनानक जयंती, कार्तिक स्नान समा., मेला पुष्कर व रामतीर्थ, **यूरेनस मार्गी 29/42**

C नियम समाप्त, बुध ज्ये. में २/२०,

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 9 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	०	७	६	८	३	११	५
२२	२१	२०	१५	०९	०९	१७	१७	१७
४४	४०	२९	१२	०४	३८	१२	५१	५१
५४	४४	१६	१५	१८	३६	२६	३३	३३
६० १७	८४९ ४५	२० ४६	३५ ६	१२ ५२	५७ ३९	१ २४	३ ११	३ ११
विशा १	श्रव ४	भर ३	अनु. ४	स्वा. १	मूल ३	श्ले. १	रेव १	हस्त ३
०	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

७ सू. गु.; ८ बु.; ९ शु.; १० चं.; ११; १२ रा.; १ मं.; २; ३; ४ श.; ५; ६ के.

भौमे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 15 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	०	७	६	८	३	११	५
२८	१५	१८	१६	१०	१५	१७	१७	१७
४६	४५	२९	५७	२१	१६	१९	३२	३२
५५	२४	४७	१६	१२	५२	२२	२८	२८
६० २५	८१२ १२	१८ २६	११ ५९	१२ ४४	५४ २६	० ४७	३ ११	३ ११
विशा ३	भर. १	भर. २	ज्ये. १	स्वा. २	पूषा १	श्ले. १	रेव १	हस्त ३
०	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30

७ सू. गु.; ८ बु.; ९ शु.; १०; ११; १२ रा.; १ चं. मं.; २; ३; ४ श.; ५; ६ के.

कार्तिक शुक्ल पक्षफल—द्वितीया (3 नवं) को **भाई दूज** के दिन स्नान, शिव-पार्वती एवं यम पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल कामना हेतु उसे तिलक लगाती है। भाई अपनी बहन को श्रद्धानुसार वस्त्राभूषण आदि का उपहार देता है। **देवप्रबोधिनी एकादशी** को श्री विष्णु पूजा एवं चातुर्मास्य व्रत आदि नियमों का उद्यापन किया जाता है॥ इसी दिन भीष्म पंचकारम्भ होकर कार्तिक पूर्णिमा के दिन समाप्ति होती है। ***त्रयोदश दिनात्मक (13 दिन) का पक्ष होने के कारण विवाह, उपनयनादि शुभ कृत्यों के लिए 2 नवं. से 15 नवं. तक का समय त्याज्य रहेगा।*** **लोक भविष्य**—चान्द्र कार्तिक मास में पाँच मंगलवार तथा का. शुक्ल 13 दिन का पक्ष होना—**दोनों अशुभफल कारक** रहेंगे। विश्व में कहीं तोड़-फोड़, उपद्रव, हिंसक घटनाएं एवं कहीं महामारी का संकेत है। कहीं युद्ध, अग्निकाण्ड, दुर्भिक्ष, छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) व प्राकृतिक आपदाओं के समाचार मिलेंगे।—**''यदा जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः। भवेत् लोक क्षयो घोरो रुण्डमालयुता मही॥''** सूर्य-मंगल का सम-सप्तक योग भी सामाजिक एवं राजनैतिक वातावरण में विशेष परिवर्तन व उथल-पुथल का संकेत है।

व्यापारिक रुख—3 नवं. को गुरु उदय होने से रूई, कपास, रेशमी व ऊनी कपड़ों, घी, तेल, सोयाबीन, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गुड़, चने में मन्दी बने। 12 नवं. को बुध ज्येष्ठा तथा शुक्र पूषा. में आने से घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी। मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक, सोयाबीन में मन्दी बने। तेरह दिन का पक्ष होने से कहीं विचित्र रोग, फसल की हानि व दुर्भिक्ष का भय रहेगा। 14 नवं. से बुध वक्री होने से शेयरों, सोने, गुड़, चीनी, हल्दी तेज होंगे। **आकाश लक्षण**—उत्तर भारत में असामयिक एवं खण्ड वर्षा के कारण तापमान में कमी आएगी।

वि. संवत् २०६२, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाकः १९२७														तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2005 ई. (ता. 16 नवं. से 1 दिसंबर तक) सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु					भा. स्टै. टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	कार्ति. प्र.	शव्वाल	नवंबर	मार्ग. प्र.	प्रवेश घटी पल	ग्रहदर्शन—प्रातः गुरु पूर्व में, शनि पश्चिम में दृश्य, सायं मंगल पूर्व में तथा बुध-शुक्र पश्चिम में दीखेंगे, १९ नवं. से बुध पश्चिम में अस्त होकर ३० नवं. को उदय होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२६/०८	१	बुध	५७	२०	कृति	४४	३३	वरी परि	०/५६	०८/०५	बा	२८	०३	२५	१३	16	मा.	वृष	**सूर्य वृश्चिक में ८/५३, मार्गशीर्ष संक्रांति ३० मुहू., पुण्य A**	६	२९	५१	०२	६	५९	१७	२६
२६/०३	२	गुरू	५७	२०	रोहि	४५	४५	शिव	५३	०५	तै	२७	२०	२६	१४	17	२	वृष	A उषाकाल से, वक्री बुध अनु. (४) में १०/४३	७	००	५१	३३	७	००	१७	२५
२६/००	३	शुक्र	५८	४८	मृग	४८	२०	सिद्ध	५१	१३	व	२८	०४	२७	१५	18	३	मि. १६/५०	भद्रा २८/०४ से ५८/४८ तक, **सौभाग्य सुन्दरी व्रत**	७	०१	५२	०३	७	०१	१७	२५
२५/५५	४	शनि	६०	००	आर्द्रा	५२	२८	साध्य	५०	३३	ब	३०	१७	२८	१६	19	४	मिथुन	**श्री गणेश चतुर्थी व्रत**, सूर्य अनु. १ में २७/१०, **बुधास्त पश्चिमे #**	७	०२	५२	३७	७	०२	१७	२४
२५/५३	४	रवि	१	४५	पुर्न	५७	५८	शुभ	५०	५८	बा	१	४५	२९	१७	20	५	क. ४१/२८	# 5/48 स्टै. टा.	७	०३	५३	१२	७	०३	१७	२४
२५/५१	५	चंद	६	१५	पुष्य	६०	००	शुक्ल	५२	२३	तै	६	१५	३०	१८	21	६	कर्क	वक्री मंगल भरणी १ में २६/२०	७	०४	५३	४६	७	०३	१७	२४
२५/४८	६	मंग	११	५३	पुष्य	४	३८	ब्रह्म	५४	२३	व	११	५३	मा.	१९	22	७	कर्क	भद्रा ११/५३ से ४५/०४ तक, **शनि वक्री 14/27**, सूर्य सायन B	७	०५	५४	२३	७	०४	१७	२३
२५/४५	७	बुध	१८	१५	श्ले.	१२	००	ऐंद्र	५६	३८	ब	१८	१५	२	२०	23	८	सिं. १२/००	**गण्डमूलादि, कालभैरव अष्टमी**, गण्डमूलादि विचार	७	०६	५५	०३	७	०५	१७	२३
२५/४३	८	गुरू	२४	४३	मघा	१९	३५	वैधृ	५८	४०	कौ	२४	४३	३	२१	24	९	सिंह	**गण्डमूलादि** विचार (१४/५६) तक, गंडमूलादि	७	०७	५५	४४	७	०६	१७	२३
२५/४०	९	शुक्र	३०	३८	पूफा	२६	४०	विष्क	६०	००	ग	३०	३८	४	२२	25	१०	कं. ४३/१८	B धनु में (10/45), शाकः मार्ग. प्रारम्भ	७	०८	५६	२८	७	०७	१७	२३
२५/३८	१०	शनि	३५	२५	उफा	३२	४३	विष्क	०	०३	व	३	०२	५	२३	26	११	कन्या	भद्रा ३/०२ से ३५/२५ तक, वक्री बुध अनु. १ में ६/१५ घं. मिं.	७	०९	५७	१४	७	०८	१७	२३
२५/३३	११	रवि	३८	३५	हस्त	३७	१५	प्रीति आयु	०/५९	२८/३५	ब	७	००	६	२४	27	१२	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रतम्**	७	१०	५८	००	७	०९	१७	२२
२५/३०	१२	चंद	३९	५८	चित्रा	४०	००	सौभा	५७	१३	कौ	९	१७	७	२५	28	१३	तु. ८/५०	शुक्र उ.षा. में ३७/१०, वक्री बुध विशा. (४) ४९/३५	७	११	५८	४८	७	१०	१७	२२
२५/२९	१३	मंग	३९	२८	स्वा.	४१	००	शोभ	५३	२८	ग	९	४३	८	२६	29	१४	तुला	भद्रा ३९/२८ से प्रा., **भौम प्रदोष** व्रत, गुरु स्वा. ३ में १५/३७	७	१२	५९	३५	७	१०	१७	२२
२५/२८	१४	बुध	३७	०८	विशा	४०	१३	अति	४८	१८	वि	८	१८	९	२७	30	१५	वृ. २५/३३	भद्रा ८/१८ तक, **बुध पूर्व से उदय** (15/45 घं.), मेला पुरमंडल, C	७	१४	००	२५	७	११	१७	२२
२५/२५	३०	गुरू	३३	१५	अनु.	३७	५३	सुक	४१	५५	च	५	१२	१०	२८	दिसं	१६	वृश्चिक	**अमावस स्नानदानादि, दिसंबर प्रा.**, राहु उभा ४, केतु हस्त D	७	१५	०१	१४	७	१३	१७	२२

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें। C देविका स्नान, श्रीबालाजी जयन्ती D (२) में २५/२३

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 24 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	०	७	६	८	३	११	५
०७	०८	१६	०९	१२	२३	१७	१७	१७
५१	४०	०५	२५	१४	०२	२२	०३	०३
४३	४७	०३	१०	३०	४२	१४	५१	५१
६० ४१	७१२ १०	१२ ४४	८२ ४	१२ २४	४८ ००	० १५	३ ११	३ ११
अनु २	मघा ३	भर १	अनु २	स्वा. २	पूषा ३	पूभा १	रेव १	हस्त ३
०	मा	व	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

९ शु. | ८ सू. बु. | ७ गु. | ६ के. | ५ चं. | ४ श. | ३ | २ | १ मं. | १२ रा. | ११ | १०

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 1 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	०	७	६	८	३	११	५
१४	०६	१४	०१	१३	२८	१७	१६	१६
५६	५४	५२	४१	४०	१९	१८	४१	४१
५९	०२	२०	१७	१९	१८	०९	३५	३५
६० ५०	८३६ १४	७ ९	२९ १०	१२ ४	४१ ९	१ १	३ १०	३ १०
अनु ४	अनु २	भर. १	विशा ४	स्वा. ३	उषा १	पूभा १	रेव १	हस्त ३
०	मा	व	व	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

९ शु. | ८ सू. चं. बु. | ७ गु. | ६ के. | ५ | ४ श. | ३ | २ | १ मं. | १२ रा. | ११ | १०

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की अष्टमी को **शिव मन्दिर** में जाकर श्रीमहाकाल भैरव के रूप में **भगवान् शंकर** की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। **उत्पन्ना एका.** (27 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट **मेला पुरमण्डल** तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। गुरुवार को मार्गशीर्ष अमावस होने से हरिद्वार आदि तीर्थों पर विशेष मेला होगा। **लोक-भविष्य**—मार्गशीर्ष मास में **पाँच गुरुवार** होने से पश्चिमी देशों—अमरीका, ईराक, ईज़रायल-फिलीस्तीन आदि देशों में कहीं युद्ध एवं फौजी टकराव होने के आसार बनेंगे। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा—''**यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥**'' दैनिक जन-उपयोगी वस्तुओं, तेलादि की कीमतों में तेजी के कारण सामान्य लोगों में गहरा असंतोष व्याप्त रहेगा। केन्द्रिय मंत्रीमंडल में परिवर्तन के संकेत हैं। **बाज़ार का रुख—मार्गशीर्ष संक्रान्ति** बुधवार को (16 नवं.) 30 मुहूर्त्ति की है। छोटी इलायची, जायफल, सुपारी, गेहूँ, धान्य, नारियल, ऊनी-वस्त्र, ताँबा, गुड़, घी में तेज़ी बनेगी। 19 नवं. को सूर्य अनु. में तथा बुध पश्चिम में अस्त होने से किशमिश, चने, सोने, चाँदी, पीपल, गुड़, लाल-चन्दन आदि में तेजी बने। 22 नवं. को **शनि वक्री** होने से राजनीतिक पार्टियों में टकराव एवं गतिरोध होगा। सत्तारूढ़ गठबन्धन की विभिन्न पार्टियों में आपसी सामंजस्य में कमी व तनाव रहे। विश्व में कहीं दुर्भिक्ष एवं युद्ध भय होगा—''**शनि वक्रे दुर्भिक्षं राजा युद्धम् परस्परम्॥**'' शेयरों में भी तेजी बनेगी। 30 नवं. को बुध पूर्व से उदित होने से चाँदी, चावलों, रूई, कपास में तेजी बने। **आकाश लक्षण**—22 नवं. के बाद उत्तर-पश्चिमी भारत में तापमान में अचानक गिरावट आएगी। कहीं-कहीं बादलचाल तथा कहीं खण्ड वर्षा होगी। **शकुन**—चतुर्दशी या अमावस्या को सूर्य बादलों से ढक जावे तो आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं। रूई, गुड़ सस्ते होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६२, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 2 दिसं. से 15 दिसं. तक)

सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः बुध, गुरु पूर्व में, शनि पश्चिम में दृश्य, सायं मंगल पूर्व में तथा शुक्र पश्चिम में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी.	पल	नक्षत्र	घड़ी.	पल	योग	घड़ी.	पल	करण	घड़ी.	पल	मार्ग. शक	प्रविष्टे मु.	दिसंबर	मार्ग. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. क्रि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५/२३	१	शुक्र	२८	१५	ज्ये.	३४	३०	धृति	३४	४३	किं	००	४५	११	२९	2	१७	ध. ३४/३०	**मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष** प्रा., सूर्य ज्येष्ठा में ३७/२०, गण्डमूलादि	७	१६	०२	१०	७	१३	१७	२२
२५/२२	२	शनि	२२	२३	मूला	३०	२०	शूल	२६	५०	कौ	२२	२३	१२	३०	3	१८	धनु	**चन्द्रदर्शन** ३० मुहू., **शुक्र मकर में** २६/०० (17/37 घं.), गण्डमूलादि	७	१७	०३	०२	७	१३	१७	२२
२५/२०	३	रवि	१६	०३	पूषा	२५	४३	गंड	१८	३५	ग	१६	०३	१३	जि.	4	१९	म. ३९/३०	भद्रा ४२/४८ से प्रा., **बुध मार्गी** (७/५८ घं. मिं.)	७	१८	०३	५७	७	१४	१७	२२
२५/१८	४	चंद्र	९	३३	उषा	२१	००	वृद्धि	१०	१५	वि	९	३३	१४	२	5	२०	मकर	भद्रा ९/३३ तक, प्लूटो धनु में 17/08 घं. मिं.	७	१९	०४	५१	७	१५	१७	२२
२५/१५	५	मंग	३	१३	श्रव	१६	३०	ध्रुव व्या.	२ ५४	०३ १०	बा	३	१३	१५	३	6	२१	कुं. ४४/२५	**पंचकारम्भः** 25/02 घं. मिं., **स्कन्द षष्ठी**, चम्पा ६	७	२०	०५	४८	७	१६	१७	२२
क्षय	६	मंग	५७	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५/१४	७	बुध	५२	००	धनि	१२	३०	हर्ष	४६	४८	ग	२४	४०	१६	४	7	२२	कुम्भ	भद्रा ५२/०० से, मित्र सप्तमी	७	२१	०६	४६	७	१६	१७	२२
२५/१३	८	गुरू	४७	२०	शत	९	०३	वज्र	३९	५३	वि	१९	४०	१७	५	8	२३	मी. ५१/५५	भद्रा १९/४० तक, **श्री दुर्गाष्टमी**	७	२२	०७	४४	७	१७	१७	२२
२५/१०	९	शुक्र	४३	२३	पूभा	६	१८	सिद्धि	३३	३३	बा	१५	२२	१८	६	9	२४	मीन	बुध अनु. १ में ५०/४०	७	२३	०८	४३	७	१८	१७	२२
२५/०९	१०	शनि	४०	०८	उभा	४	१३	व्य.	२७	४८	तै	११	४६	१९	७	10	२५	मीन	**मंगल मार्गी** होगा (9/30 घं. मिं.)	७	२४	०९	४४	७	१९	१७	२२
२५/०८	११	रवि	३७	४०	रेव	२	५५	वरी	२२	३५	व	८	५४	२०	८	11	२६	मे. २/५५	भ. ८/५४ से ३७/४० तक, **पंचक समाप्त** 8/30 घं., **मोक्षदा ११ A**	७	२५	१०	४४	७	२०	१७	२३
२५/०६	१२	चंद्र	३५	५५	अश्वि	२	१८	परि	१८	००	ब	६	४८	२१	९	12	२७	मेष	अखण्ड द्वादशी, गण्डमूल ८/१६ तक **A** व्रत, **गीता जयंती**, गंडमूल	७	२६	११	४५	७	२१	१७	२३
२५/०४	१३	मंग	३५	००	भर	२	२८	शिव	१४	०५	कौ	५	२८	२२	१०	13	२८	वृ. १७/३८	**भौम प्रदोष व्रतम्**, स. सि. योगः	७	२७	१२	४४	७	२१	१७	२३
२५/०३	१४	बुध	३४	५८	कृति	३	२५	सिद्ध	१०	४५	ग	४	५९	२३	११	14	२९	वृष	भद्रा ३४/५८ से प्रा., **पिशाचमोचन श्राद्ध**, स. सि. योगः	७	२८	१३	४६	७	२२	१७	२३
२५/०३	१५	गुरू	३६	००	रोहि	५	२०	साध्य	८	१३	वि	५	२९	२४	१२	15	पौष	मि. ३६/४०	भ. ५/२९ तक, **सूर्य धनु** में ४४/२८, **पौष संक्रांति** ३० मु., **व्रत B**	७	२९	१४	४९	७	२२	१७	२४

B श्रीसत्यनारायण, श्रीदत्तात्रेय जयंती, त्रिपुरभैरव जयंती

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 8 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	०	७	६	९	३	११	५
२२	१६	१४	०२	१५	०२	१७	१६	१६
०३	५०	१९	००	०३	४०	०८	१९	१९
१३	०६	४१	२१	३२	५०	३८	२०	२०
६० ५६	८४० ११	१ २१	३८ २९	११ ३८	३२ २६	१ ४८	३ ११	३ ११
ज्ये. २	श्रुत. ४	भर. १	विशा. ४	स्वा. ३	उषा २	मूल. १	उभा ४	हस्त २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

९
७ गु.
१० शु.
८ सू. बु.
६ के.
११ चं.
५
१२ रा.
२
४ श.
१ मं.
३

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 15 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०७	१	०	७	६	९	३	११	५
२९	२१	१४	०८	१६	०५	१६	१५	१५
१०	११	२६	२२	२३	५०	५३	५७	५७
०२	४७	५६	०७	३५	१७	५८	०५	०५
६१ १	७६५ २	४ ६	७० २५	११ १०	१९ ४७	४ ३०	३ ११	३ ११
ज्ये. ४	रोहि ४	भर. १	अनु. २	स्वा. ३	उषा. ३	मूल. १	उभा ४	हस्त २
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

९
७ गु.
१० शु.
८ सू. बु.
६ के.
११
५
१२ रा.
२ चं.
४ श.
१ मं.
३

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में **मोक्षदा एकादशी** का व्रत (11 दिसं.) विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन **गीता जयन्ती** के उपलक्ष्य में श्री **मद्भगवद्गीता** की सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। 15 दिसं. **मार्ग. पूर्णिमा** को **ब्रह्मा, विष्णु, महेश** के अंश अवतार **श्रीदत्तात्रेय** की बालरूप में पूजा की जाती है।

लोक भविष्य—इस वर्ष भी मार्गशीर्ष मास में **पौष संक्रान्ति** का प्रवेश होने से राजनैतिक क्षेत्रों में विशेष उथल-पुथल एवं परिवर्तन होने के संकेत हैं। कहीं अनाज, धान्य एवं आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण दुर्भिक्ष एवं महंगाई आदि के कारण अराजकता व्याप्त हो। ''मार्गशीर्षे धनुषि हि यदाऽयाति दिवाकरः। तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयः विपरीत सुखं भवेत्॥'' अत्यधिक महंगाई के कारण सामान्य लोगों में सुख की कमी रहेगी। **बाज़ार का रुख**—2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से गुड़, चीनी, सोयाबीन, चावल, अलसी, सरसों,एरण्डी, हींग, गुग्गल, सोना व चाँदी में तेजी बने। 3 दिसं. को शुक्र मकर राशि में आकर शनि की दृष्टि में रहेगा। गेहूँ, चावल, चाँदी, घी, गुड़, चीनी, उड़द, रूई में तेजी बनेगी। 4 दिसं. को बुध मार्गी होने से एरण्ड, खल-बिनौला, अलसी, सोयाबीन, गुड़, शक्कर, मूँगफली में तेजी बनेगी। 10 दिसं. को मंगल मार्गी होने से चाँदी, गुड़, सोने, ताँबा, चने आदि के भावों में घटाबढ़ी के बाद मन्दे का रुझान रहे। 15 दिसं. को पौष संक्रान्ति गुरुवार एवं 30 मुहूर्त्ति की होने से घी, उड़द, मूँग, मटर, नमक, मिर्च, हल्दी, तेल, तिल, अलसी, कपास, ताँबा, लोहे में तेजी, सोना, चाँदी, नारियल, केसर, चने, गुड़, चीनी, सरसों में मन्दी रहे। इस संक्रान्ति को खरीदकर अगली संक्रान्ति को बेचने से व्यापारी लाभ में रहेंगे।

आकाश लक्षण—उत्तर भारत में मौसम शुष्क रहेगा। तापमान में गिरावट आएगी।

शकुन—मार्ग. शु. 2 (3 दिसं.) को दक्षिण की वायु चले तो लोकों को कष्ट रहेंगे—''**मार्गशीर्षसितेपक्षेद्वितीयाशनिवासरा। दक्षिणे वहते वातोलोकानां कष्टदोभवेत्॥**''

वि. संवत् २०६२, पौष कृष्ण पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005 ई. (ता. 16 से 31 दिसंबर तक)

सूर्य दक्षिण-उत्तरायणे, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः शनि पश्चिम में, बुध, गुरु पूर्व में दृश्य, सायं मंगल भी पूर्व से दृश्य, शुक्र पश्चिम में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मार्ग. शक	जिल्कद	दिसंबर	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५/०३	१	शुक्र	३८	०५	मृग	८	१३	शुभ	६	२८	बा	७	०३	२५	१३	16	२	मिथुन	पौष कृष्ण पक्षारम्भः, गुरु स्वाती (४) में २४/००	८	००	१५	५०	७	२३	१७	२४
२५/०२	२	शनि	४१	२८	आर्दा	१२	१८	शुक्ल	५	३८	तै	९	४७	२६	१४	17	३	मिथुन		८	०१	१६	५४	७	२३	१७	२४
२५/०२	३	रवि	४६	००	पुर्न	१७	३०	ब्रह्म	५	४३	व	१३	४४	२७	१५	18	४	क. १/०५	भद्रा १३/४४ से ४६/०० तक	८	०२	१७	५६	७	२४	१७	२५
२५/०१	४	चंद्र	५१	४०	पुष्य	२३	५३	ऐंद्र	६	४३	ब	१८	५०	२८	१६	19	५	कर्क	**श्री गणेश चतुर्थी व्रत** (चन्द्रोदय रात्रि लगभग ८/५८ पर)	८	०३	१९	०३	७	२४	१७	२६
२५/००	५	मंग	५८	०५	श्ले.	३१	०५	वैधृ	८	२५	कौ	२४	५३	२९	१७	20	६	सिं. ३१/०५	वक्री शनि पुष्य (४) में ३/२०, स. सि. योगः, गंडमूलादि	८	०४	२०	०९	७	२५	१७	२६
२५/००	६	बुध	६०	००	मघा	३८	४५	विष्क	१०	३८	ग	२९	०३	३०	१८	21	७	सिंह	बुध ज्येष्ठा में २६/४३, सूर्य सायन मकर में २४/०५, सायन **A**	८	०५	२१	१३	७	२६	१७	२६
२५/०१	६	गुरू	४	४८	पूफा	४६	२८	प्रीति	१३	०३	व	४	४८	पौ.	१९	22	८	सिंह	भद्रा ४/४८ से ३८/०१ तक, **शक पौष प्रारम्भ**	८	०६	२२	२२	७	२६	१७	२७
२५/०१	७	शुक्र	११	१३	उफा	५३	२५	आयु	१५	०८	ब	११	१३	२	२०	23	९	कं. ३/१५		८	०७	२३	२८	७	२७	१७	२७
२५/०२	८	शनि	१६	४८	हस्त	५९	१३	सौभा	१६	३०	कौ	१६	४८	३	२१	24	१०	कन्या	रूक्मणी अष्टमी, **शुक्र वक्री** 15/09 घं. मिंट	८	०८	२४	३५	७	२७	१७	२८
२५/०२	९	रवि	२०	४५	चित्रा	६०	००	शोभ	१६	४५	ग	२०	४५	४	२२	25	११	तु. ३१/२५	भद्रा ५१/४७ से, **क्रिसमिस डे** (क्रिश्चियन)	८	०९	२५	४२	७	२७	१७	२८
२५/०३	१०	चंद्र	२२	४८	चित्रा	३	१०	अति	१५	३३	वि	२२	४८	५	२३	26	१२	तुला	भ. २२/४८ तक, **श्री पार्श्वनाथ जयंती** (जैन), मेला जोड़ **B**	८	१०	२६	५२	७	२७	१७	२९
२५/०३	११	मंग	२२	३५	स्वा.	५	०५	सुक	१२	३८	बा	२२	३५	६	२४	27	१३	वृ. ५०/१०	**सफला एकादशी व्रतम्**	८	११	२८	०१	७	२८	१७	२९
२५/०३	१२	बुध	२०	१५	विशा	४	५५	धृति	८	०३	तै	२०	१५	७	२५	28	१४	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत,** सूर्य पू.षा. में २४/४७	८	१२	२९	१३	७	२९	१७	३०
२५/०५	१३	गुरू	१६	०३	अनु. ज्ये.	२ ५८	४८ ५८	शूल गंड	१ ५४	५५ २५	व	१६	०३	८	२६	29	१५	ध. ५८/५८	भद्रा १६/०३ से ४३/०७ तक, गण्डमूलादि ८/३६ घं. उपरान्त	८	१३	३०	२३	७	२९	१७	३१
२५/०५	१४	शुक्र	१०	१०	मूला	५३	५०	वृद्धि	४५	४८	श	१०	१०	९	२७	30	१६	धनु	**बुध मूले १ धनु में** ४५/४३ (२५/४६ घं. मिं.), गंडमूलादि, **C**	८	१४	३१	३३	७	२९	१७	३१
२५/०६	३०	शनि	३	०३	पूषा	४७	५०	ध्रुव	३६	२५	ना	३	०३	१०	२८	31	१७	धनु	**शनैश्चरी अमावस,** स्नानदानादि	८	१५	३२	४६	७	३०	१७	३२

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

A उत्तरायण व शिशिर ऋतु प्रारंभ, गण्डमूल **B** फतेहगढ़ प्रारंभ **C** अमावस-पितृ कार्येषु

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 24 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	०	७	६	९	३	११	५
०८	१०	१५	२०	१८	०७	१६	१५	१५
१९	२०	२९	०५	०१	३१	२७	२८	२८
३८	३९	१३	३५	०५	२६	५६	२७	२७
६१ ७	७२९ ४७	१० १६	८४ ४८	१० २५	० १५	३ २०	३ १०	३ १०
मूल ३	हस्त १	भर. १	ज्ये. २	स्वा. ४	उषा ४	पुष्य ४	उभा ४	हस्त २
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

शु. १० | ९ सू. | ८ बु. | ७ गु. | ११ | २ रा. | ६ चं.के. | १ मं. | ३ | २ | ४ श. | ५

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 31 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	०	८	६	९	३	११	५
१५	१३	१६	००	१९	०६	१६	१५	१५
२७	३८	५३	१३	११	३७	०२	०६	०६
४१	११	४४	५०	५७	४५	४९	१२	१२
६१ ११	८८९ ६	१४ २५	८९ ११	९ ४४	१७ ३१	३ ५३	३ ११	३ ११
पूषा १	पूषा १	भर. २	मूल १	स्वा. ४	उषा ३	पुष्य ४	उभा ४	हस्त २
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

१० शु. | ९ सू. चं. बु. | ८ | ७ गु. | ११ | १२ रा. | ६ के. | १ मं. | ३ | २ | ४ श. | ५

पौष कृष्ण पक्षफल—

पौष मास में गेहूँ, धान्यादि, अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। पौष संक्रान्ति को अनाज से पूरित ताम्र-पात्र (कलश-गड़वा आदि) का गुड़ सहित दान करने से क्लिष्ट रोग की शान्ति होती है। 27 दिसं. को **सफला एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्व प्रकार के पापों का क्षय होता है। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन, दक्षिणा आदि का दान करने का विशेष फल होता है। **शनैश्चरी अमावस** (31 दिसं.) को हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नानदान आदि करने का विशेष माहात्म्य होता है। **लोक-भविष्य**—पौष मास में पाँच शुक्रवार एवं पाँच शनिवार होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। पाँच शुक्रवारों के प्रभावस्वरूप कुछ विशेष वर्ग के लोगों में ही सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी। सामान्यतः जनसंख्या में बहुत वृद्धि होगी। पाँच शनिवारों के कारण जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत महंगाई, देश में कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकांड, युद्धादि का भय, कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) हो—**''शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणीः। ईशान देश भंगश्च वह्णि दाहो महर्घता।''** सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडराएंगे। **बाज़ार का रुख़**—24 दिसं. को शुक्र वक्री होने से चाँदी, रूई, चीनी, घी, चावल व सोने की लाईन में परिवर्तन होगा। यदि पहले मन्दी हुई तो तेजी अन्यथा उल्ट। 30 दिसं. को बुध धनु राशि में सूर्य के साथ **मेल करेगा**। रूई, कपास, वस्त्र, चाँदी, सोने में तेजी करेगा। 31 दिसं. को शनैश्चरी अमावस भी तिल, तेल, लोहे, चने, सरसों, सोयाबीन, एरण्डी के बाज़ार में तेजीकारक रहेगी। **आकाश लक्षण**—उत्तर-पश्चिमी **भारत में** शीत लहर में तेजी रहेगी। धुंध, कोहरे आदि के कारण जनजीवन प्रभावित रहेगा। **पौष कृष्ण** पक्ष से पुनः खप्पर योग का प्रारम्भ हो रहा है, जिसका फल अशुभ माना गया है।

शकुन—पौष कृ. पंचमी मंगलवार से युक्त होने से वर्षा अधिक होगी तथा कृषि उत्पादन भी बढ़ेगा। **पौषस्यपंचमी कृष्णाभौमवारो-यदाभवेत्। भवेत्तुवर्षणंवृष्टेः कृषिनिष्पत्तिरुत्तमा॥**

वि. संवत् २०६२, पौष शुक्ल पक्ष शाकः १९२७

सन् 2005-06 ई. (ता. 31 दिसं. से 14 जन. 06 तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन–प्रातः शनि पश्चिम में, गुरु–बुध पूर्व में दृश्य। ४ जन. से बुध पूर्व में ही अस्त होगा। सायं शुक्र पश्चिम में, १० जन. से शुक्र भी पश्चिम में अस्त, मंगल पूर्व में दृश्य।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	पौष शक	जिलहिज्ज मु.	दिसंबर	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
क्षय	१	शनि	५५	१०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	31	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५/०८	२	रवि	४६	५८	उषा	४१	३०	व्या.	२६	४०	बा	२१	०४	११	२९	जन	१८	म. १/१५	**चन्द्रदर्शन** ४५ मुहूर्त्ति, **जनवरी सं. 2006 ई.** प्रा., स. सि. योगः	८	१६	३३	५७	७	३०	१७	३३
२५/१०	३	चंद्र	३८	५३	श्रव	३५	१०	हर्ष	१६	५३	तै	१२	५६	१२	ज़ि	2	१९	मकर	**जिल्हेज १** (मुस्लिम), स. सि. योगः	८	१७	३५	१०	७	३०	१७	३४
२५/११	४	मंग	३१	१३	धनि	२९	२०	वज्र / सिद्धि	७ / ५८	२० / २३	व	५	०३	१३	२	3	२०	कुं. २/१०	भद्रा ५/०३ से ३१/१३ तक, **पंचकारम्भः** ८/२२ घं. मिं.	८	१८	३६	२१	७	३०	१७	३४
२५/१३	५	बुध	२४	२८	शत	२४	१८	व्य.	५०	१०	बा	२४	२८	१४	३	4	२१	कुम्भ	**बुध पूर्व में अस्त** ११/४५ घं. मिं.	८	१९	३७	३१	७	३०	१७	३५
२५/१५	६	गुरू	१८	४३	पूभा	२०	१८	वरी	४२	५३	तै	१८	४३	१५	४	5	२२	मी. ६/१०	गुरु विशाखा १ में ६/४५ घं. मिं., **गुरु गोबिन्द सिंह** जयं. (नानकशाही)	८	२०	३८	४१	७	३०	१७	३६
२५/१७	७	शुक्र	१४	१०	उभा	१७	३०	परि	३६	३५	व	१४	१०	१६	५	6	२३	मीन	भद्रा १४/१० से ४२/३१ तक, **गु. गोबिन्द सिंह जयं.** प्राचीन परम्परया	८	२१	३९	५०	७	३०	१७	३७
२५/१८	८	शनि	१०	५३	रेव	१५	५५	शिव	३१	१५	ब	१०	५३	१७	६	7	२४	मे. १५/५५	**पंचक समाप्त** १३/५३ घं. मिं., गंडमूलादि, **श्री दुर्गाष्टमी**	८	२२	४०	५९	७	३१	१७	३८
२५/२०	९	रवि	८	५५	अश्वि	१५	३५	सिद्ध	२६	५८	कौ	८	५५	१८	७	8	२५	मेष	बुध पूषा १ में ३४/१०, गण्डमूलादि 13/45 तक, स. सि. योगः	८	२३	४२	०८	७	३१	१७	३९
२५/२१	१०	चंद्र	८	०८	भर	१६	२५	साध्य	२३	३३	ग	८	०८	१९	८	9	२६	वृ. ३१/४८	भद्रा ३८/१७ से प्रारम्भ **शुक्रास्त पश्चिमे 10 जन.**	८	२४	४३	१६	७	३१	१७	३९
२५/२३	११	मंग	८	२५	कृति	१८	२०	शुभ	२१	००	वि	८	२५	२०	९	10	२७	वृष	भद्रा ८/२५ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत, शुक्र पश्चिम में** अस्त २७/४८	८	२५	४४	२४	७	३१	१७	४०
२५/२५	१२	बुध	९	४८	रोहि	२१	१३	शुक्ल	१९	१३	बा	९	४८	२१	१०	11	२८	मि. ५३/००	**प्रदोष व्रत,** सूर्य उषा. में ५/२१ घं. मिं., स. सि. योगः	८	२६	४५	३१	७	३१	१७	४१
२५/२८	१३	गुरू	१२	०५	मृग	२५	००	ब्रह्म	१८	१०	तै	१२	०५	२२	११	12	२९	मिथुन	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती **B लोहड़ी पर्व,** व्रत श्रीसत्यनारायण	८	२७	४६	३८	७	३१	१७	४२
२५/३२	१४	शुक्र	१५	२०	आर्द्रा	२९	४३	ऐंद्र	१७	५०	व	१५	२०	२३	१२	13	३०	मिथुन	भ. १५/२० से ४७/२७ तक, **वक्री शुक्र धनु में २८/१८ (18/50) B**	८	२८	४७	४४	७	३१	१७	४३
२५/३३	१५	शनि	१९	३३	पुर्न	३५	४८	वैधृ	१८	१५	ब	१९	३३	२४	१३	14	मा.	क. १८/५०	**पौष पूर्णिमा, सूर्य मकर में ११/०३, माघ संक्रांति,** ४५ मुहू. **C**	८	२९	४८	४७	७	३०	१७	४३

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

C पुण्य प्रातः ५/३१ से प्रारंभ, **माघ स्नानदानादि** प्रारम्भ, निरयन उत्तरायण आरंभ

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 7 जन. 06 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	०	८	६	९	३	११	५
२२	२५	१८	१०	२०	०३	१५	१४	१४
३५	१५	४५	४७	१७	४८	३४	४३	४३
५१	५७	२८	१९	४८	४०	०९	५६	५६
६१ / ९	८०९ / ५६	१७ / ५६	९२ / १०	८ / ५८	३१ / ५१	४ / २१	३ / ११	३ / ११
पूषा ३	रेव ३	भर. २	मूल ४	विशा १	उषा ३	पुष्य ४	उभा ४	हस्त २
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१० शु., ९ सू. बु., ८, ७ गु., ११, १२ चं. रा., ६ के., ३, १ मं., २, ४ श., ५

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 14 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	०	८	६	८	३	११	५
२९	२५	२१	२१	२१	२९	१५	१४	१४
४३	१०	००	४१	१८	४३	०२	२१	२१
४२	०२	०७	२४	०२	३६	४३	४१	४१
६१ / ६	७२८ / ४६	२० / ५२	९५ / १५	८ / ७	३६ / ५५	४ / ४०	३ / ११	३ / ११
उषा १	पुर्न २	भर. ३	पूषा ३	विशा १	उषा १	पुष्य ४	उभा ४	हस्त २
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१०, ९ सू. बु. शु., ८, ७ गु., ११, १२ रा., ६ के., ३ चं., १ मं., २, ४ श., ५

पौष शुक्ल पक्ष—

इस पक्ष में माघ संक्रान्ति से एक दिन पूर्व लोहड़ी पर्व (13 जन.) सारे पंजाब, हि. प्र., दिल्ली, हरियाणा व जम्मू आदि में लकड़ियां, समिधा, रेवड़ियां, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके अग्नि पूजा के रूप में मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति** (14 जन.) को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान व **भगवान् विष्णु** व सूर्यदेव की उपासना का विधान है। इस दिन तीर्थों पर स्नानदानादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। स्नान के लिए हरिद्वार, काशी और प्रयाग उत्तम माने गये हैं। वहाँ न जा सके तो गृह में ही श्रद्धापूर्वक स्नान करें, वहीं उनका स्मरण करें अथवा ''**गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥**'' का उच्चारण करें। **पुत्रदा एकादशी** (10 जन.) का व्रत विधिपूर्वक करने से **मनोवांछित पुत्र संतान** की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (14 जन.) से हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयागादि तीर्थों पर माघ स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है। **लोक-भविष्य**–14 जन. को माघ संक्रान्ति 45 मुहूर्त्ति तथा शनिवार को है तथा सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग होने से राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। लोगों में रोग-शोक आदि दुःखों की बहुलता होगी। **बाज़ार का रुख**–4 जन. को बुध पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, चावल, सोने, चाँदी में तेजी, रूई में घटाबढ़ी रहेगी। 5 जन. को गुरु विशा. में आने से रूई, चाँदी में मन्दी, अनाज, चने, मटर, गेहूँ में तेजी बने। 8 जन. को बुध पूषा. में आने से सोना, चाँदी, अनाज, रूई में मन्दी, खल, बिनौले, एरण्डी में तेजी बने। 10 जन. को शुक्र पश्चिम में अस्त होने से रूई, तेल, घी, मूँगफली, अलसी, बिनौला में मन्दी, चाँदी, चने, गेहूँ, चावल, चीनी, बाजरा, अरहर, राजमा आदि सभी अनाजों में तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण–उत्तर भारत में बादल चाल रहे। कहीं-कहीं खण्ड वर्षा के भी योग हैं। **शकुन**–पौ. शु. ९ या ११ को बादल चाल हो तो सब धान्य महंगे होंगे।

वि. संवत् २०६२, माघ कृष्ण पक्ष, शाकः १९२७

सन् 2006 ई. (ता. 15 जन. से 29 जन. तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—१७ जन. से प्रातः शुक्र पूर्व से, गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा शनि पश्चिम में दृश्य, बुध अदृश्य है। सायं मंगल याम्योत्तरवृत्तासन्न में दीखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	पौष शाके	विक्रम मुं.	जनवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५/३५	१	रवि	२४	३८	पुष्य	४१	४३	विष्क	१९	१५	कौ	२४	३८	२५	१४	15	२	कर्क	माघ कृष्ण पक्षारम्भ, स. सि. योग: एवं रविपुष्य योग:	९	००	४९	५३	७	३०	१७	४४
२५/३८	२	चंद्र	३०	३०	श्ले.	४८	५३	प्रीति	२०	५५	ग	३०	३०	२६	१५	16	३	सिं. ४८/५३	गण्डमूलादि विचार A 8/25, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	९	०१	५०	५८	७	३०	१७	४५
२५/४०	३	मंग	३७	०३	मघा	५६	३३	आयु	२३	०३	व	३	५०	२७	१६	17	४	सिंह	भ. ३/५० से ३७/०३ तक, बुध उषा १ में २/०५, **शुक्र पूर्व से उदय** A	९	०२	५२	०३	७	३०	१७	४६
२५/४३	४	बुध	४३	५३	पूफा	६०	००	सौभा	२५	२८	ब	१०	२८	२८	१७	18	५	सिंह	**श्रीगणेश संकट चौथ व्रत** (चन्द्रोदय रात्रि लगभग 9/26 पर)	९	०३	५३	०४	७	३०	१७	४७
२५/५०	५	गुरू	५०	३५	पूफा	४	२८	शोभ	२७	५८	कौ	१७	१४	२९	१८	19	६	कं. २१/२३	**बुध मकर राशि में** ५/५३ (९.४६ घं.), शुक्र (व) पूषा ४ में ३/१३	९	०४	५४	०८	७	२९	१७	४९
२५/५३	६	शुक्र	५६	३८	उफा	१२	०३	अति	३०	०३	ग	२३	३७	३०	१९	20	७	कन्या	भद्रा ५६/३८ से प्रा., सूर्य सायन कुम्भ में 10/46 घं. मिं.	९	०५	५५	१२	७	२९	१७	५०
२५/५५	७	शनि	६०	००	हस्त	१८	४८	सुक	३१	२०	वि	२९	०३	मा.	२०	21	८	तु. ५१/४३	भद्रा २९/०३ तक	९	०६	५६	१५	७	२९	१७	५१
२६/०३	७	रवि	१	२८	चित्रा	२४	१५	धृति	३१	३३	ब	१	२८	२	२१	22	९	तुला	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (मतान्तरे)	९	०७	५७	१५	७	२८	१७	५३
२६/०३	८	चंद्र	४	२८	स्वा.	२७	५३	शूल	३०	१८	कौ	४	२८	३	२२	23	१०	तुला	नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती	९	०८	५८	१७	७	२८	१७	५३
२६/०५	९	मंग	५	२५	विशा	२९	२३	गंड	२७	२०	ग	५	२५	४	२३	24	११	वृ. १४/१३	भद्रा ३४/४६ से, सूर्य श्रवण १ में ०/४०	९	०९	५९	१९	७	२८	१७	५४
२६/०८	१०	बुध	४	०८	अनु	२८	४५	वृद्धि	२२	४३	वि	४	०८	५	२४	25	१२	वृश्चिक	भद्रा ४/०८ तक, बुध श्रवण १ में ८/०३, **षट्तिला ११ स्मार्त्त** B	९	११	००	१८	७	२७	१७	५४
२६/१०	११	गुरू	०	४०	ज्ये.	२६	०३	ध्रुव	१६	१८	बा	०	४०	६	२५	26	१३	ध. २६/०३	**गणतन्त्र दिवस, षट्तिला एकादशी** व्रत वैष्णव, गंडमूलादि	९	१२	०१	१९	७	२७	१७	५५
क्षय	१२	गुरू	५५	१३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय	०	०	०	०	०	०	०	०
२६/१०	१३	शुक्र	४८	०८	मूला	२१	३३	व्या. हर्ष	८ ५९	२५ १८	ग	२१	४१	७	२६	27	१४	धनु	भद्रा ४८/०८ से प्रा., प्रदोष व्रत, गण्डमूलादि, मेरू त्र्यो० (जैन)	९	१३	०२	२०	७	२७	१७	५५
२६/१५	१४	शनि	३९	५३	पूषा	१५	३८	वज्र	४९	२०	वि	१४	०१	८	२७	28	१५	म. २८/५८	भ. १४/०१ तक, मंगल कृतिका में ३४/३५, लाला लाजपतराय जयंती	९	१४	०३	१६	७	२६	१७	५६
२६/१८	३०	रवि	३०	५०	उषा	८	४३	सिद्धि	३८	४५	च	५	२२	९	२८	29	१६	मकर	**मौनी (माघ) अमावस**, स्नान दानादि, स. सि. योग:, तीर्थों D	९	१५	०४	१५	७	२६	१७	५७

शुक्र उदय 17 जन.

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें। **B** (गृहस्थियों के लिए), स. सि. योग: **D** पर स्नानदानादि का विशेष माहात्म्य, महोदय योग:

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5/30 बजे, 23 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	०	९	६	८	३	११	५
०८	१३	२४	०६	२२	२४	१४	१३	१३
५३	०५	२०	१७	२६	४२	१९	५३	५३
१८	१०	४२	१७	२०	२५	३९	०३	०३
६१ २	७६५ ५३	२३ ५७	१०० ९	६ ५४	२५ ५७	४ ५४	३ १०	३ १०
उषा ४	स्वा. २	भर. ४	उषा ३	विशा १	पूषा ४	पुष्य ४	उभा ४	हस्त २
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30 — १२ रा., ११, १० सू. बु., ९ शु., ८, ७ चं. गु., ६ के., ५, ४ श., ३, २, १ मं.

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5/30 बजे, 29 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	०	९	६	८	३	११	५
१४	०६	२६	१६	२३	२२	१३	१३	१३
५९	३५	४८	२७	०५	४०	५०	३३	३३
२१	२८	४७	२८	३३	२१	०७	५९	५९
६० ५८	९९९ २२	३४ २०	१०३ ५४	६ १	१२ १	४ ५५	३ ११	३ ११
श्रव. २	उषा ३	कृति १	श्रव. २	विशा १	पूषा ३	पुष्य ४	उभा ४	हस्त २
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रात: 5.30 — १२ रा., ११, १० सू. चं. बु., ९ शु., ८, ७ गु., ६ के., ५, ४ श., ३, २, १ मं.

माघ कृष्ण पक्ष—

इस पक्ष की चतर्थी (8 जन.) को श्री गणेश संकट चौथ के व्रत का संकल्प **''गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये''** मन्त्र द्वारा प्रात: स्नानादि के उपरान्त करके रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर **''ॐ सोम् सोमाय नम:''** द्वारा अर्घ्य देने से भगवान् गणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। **षट्तिला एकादशी** (26 जन.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्री विष्णु पूजा एवं हवन करें। फिर तिलों से निर्मित मोदक, बर्फी आदि का दान करें तथा स्वयं उनका सेवन करें तो अनेक पापों का नाश होता है। 29 जन. को माघ (मौनी) अमावस को महोदय योग भी होने से तीर्थों पर स्नानदानादि का विशेष माहात्म्य होगा। **लोक-भविष्य**—माघ मास में पाँच रविवार एवं पाँच सोमवार आ रहे हैं। पाँच रविवार होने से शासन परिवर्तन (छत्रभंग), दुर्भिक्ष, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि एवं कहीं युद्ध का भय होगा। **''माघ मासे रविवारा: जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दास्ते च महद् भयम्॥''** माघ अमावस भी रविवासरी होने से अनाजादि महंगे होंगे। पाँच सोमवार होने समर्धता कारक एवं प्रशासन की ओर से लोक भलाई के लिए नई नीतियों की घोषणा होगी। **बाज़ार का रुख**—17 जन. को बुध उ.षा. में तथा धनुस्थ शुक्र पूर्व से उदित होगा। वर्षा कम होगी। अनाज, घी, चने, सोयाबीन, एरण्डी में तेजी बने। 19 जन. को बुध मकर राशि में सूर्य के साथ आएगा। इन पर शनि की दृष्टि भी है। तेल, पेट्रोल, सरसों, सोयाबीन, एरण्डी में उथल-पुथल के बाद तेजी बने। **आकाश लक्षण**—शीत लहर में कुछ ठहराव आएगा तथा जलवायु अनुकूल रहेगी। **शकुन**—19 जन. को यदि वर्षा हो तो, भाद्रपद मास में अनाज आदि सस्ते होंगे।

वि. संवत् २०६२, माघ शुक्ल पक्ष								शाकः १९२७						तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2006 ई. (ता. 30 जन. से 13 फर. तक) सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु					भा. स्टैं. टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ	जिल्हिज्ज	जनवरी	माघ प्र.	घटी पल	ग्रह लोपदर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व में, १३ फर. से बुध भी पूर्व में तथा गुरु पश्चिमी कपाल में दृश्य। सायं शनि पूर्व में, मंगल याम्योत्तरवृत्त में होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६/२३	१	चंद्र	२१	३३	श्रव धनि	१ ५४	२३ ००	व्य.	२८	०३	ब	२१	३३	१०	२९	30	१७	कुं. २७/३८	माघ शुक्ल पक्षारंभ, **पंचक शुरु 18/28** घं. मिं., चंद्रदर्शन **A**	९	१६	०५	११	७	२५	१७	५८
२६/२८	२	मंग	१२	२८	शत	४७	०५	वरी	१७	३५	कौ	१२	२८	११	मो.	31	१८	कुम्भ	गुरु विशाखा (२) में २१/०५, मुहर्रम १ (१४२७ हिजरी प्रा.) **B**	९	१७	०६	०८	७	२४	१७	५९
२६/३०	३	बुध	३	५५	पूभा	४१	०३	परि शिव	७ ५८	३३ २३	ग	३	५५	१२	२	फर	१९	मी. २७/२८	भद्रा ३०/९ से ५६/२३ तक, गौरी तृतीया व्रत, **तिल चौथ,** वरद **C**	९	१८	०७	०१	७	२४	१८	००
क्षय	४	बुध	५६	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय **A** ३० मु., शहीदी दिन महात्मा गाँधी	०	०	०	०	०	०	०	०
२६/३३	५	गुरू	५०	०८	उभा	३६	१३	सिद्ध	५०	१८	ब	२३	१६	१३	३	2	२०	मीन	श्री ५, **बसन्त पंचमी, सरस्वती** जयं. पूजा, राहु उभा ३, केतु **D**	९	१९	०७	५६	७	२४	१८	०१
२६/३५	६	शुक्र	४५	२८	रेव	३२	५३	साध्य	४३	२८	कौ	१७	४८	१४	४	3	२१	मे. ३२/५३	**पंचक समा.** २०/३२ घं. मिं., शुक्र मार्गी १४/५२	९	२०	०८	४७	७	२३	१८	०१
२६/३८	७	शनि	४२	२५	अश्वि	३१	०८	शुभ	३७	५५	ग	१३	५७	१५	५	4	२२	मेष	भ. ४२/२५ से, रथ-आरोग्य-अचला ७, वक्री शनि पुष्य ३ में ४/१५	९	२१	०८	३९	७	२३	१८	०२
२६/४३	८	रवि	४१	०८	भर	३१	०३	शुक्ल	३३	४५	वि	११	४७	१६	६	5	२३	वृ. ४६/१८	भद्रा ११/४७ तक, **मंगल वृष में 10/58** घं. मिं., **बुध कुम्भ में F**	९	२२	१०	२५	७	२२	१८	०३
२६/४८	९	चंद्र	४१	२५	कृति	३२	३५	ब्रह्म	३०	५०	बा	११	१७	१७	७	6	२४	वृष	सूर्य धनिष्ठा में ८/३८ **F** ३६/१७, भीष्माष्टमी	९	२३	१०	१४	७	२१	१८	०४
२६/५३	१०	मंग	४३	१३	रोहि	३५	३५	ऐंद्र	२९	०८	तै	१२	१९	१८	८	7	२५	वृष		९	२४	११	५९	७	२०	१८	०५
२६/५८	११	बुध	४६	१८	मृग	३९	५०	वैधृ	२८	२५	व	१४	४६	१९	९	8	२६	मि. ७/३५	भद्रा १४/४६ से ४६/१८ तक, **जया एकादशी व्रत,** स. सि. योगः	९	२५	१२	४१	७	१९	१८	०६
२७/०३	१२	गुरू	५०	२८	आर्द्रा	४५	१०	विष्क	२८	३३	ब	१८	२३	२०	१०	9	२७	मिथुन	बुध शतभिषा में १९/१८, **भीष्म द्वादशी**	९	२६	१३	२३	७	१८	१८	०७
२७/०५	१३	शुक्र	५५	२८	पुर्न	५१	१८	प्रीति	२९	२३	कौ	२२	५८	२१	११	10	२८	क. ३४/४०	प्रदोष व्रत, मेला जैसलमेर (राज.) प्रा., स. सि. योगः	९	२७	१३	०६	७	१८	१८	०८
२७/०७	१४	शनि	६०	००	पुष्य	५८	०८	आयु	३०	५०	ग	२८	२२	२२	१२	11	२९	कर्क		९	२८	१४	४५	७	१७	१८	०८
२७/१३	१४	रवि	१	१५	श्ले.	६०	००	सौभा	३२	४५	व	१	१५	२३	१३	12	फा.	कर्क	भ. १/१५ से ३४/२३ तक, **सूर्य कुम्भ में ४४/०७,** फाल्गुण **G**	९	२९	१५	२२	७	१६	१८	०९
२७/१८	१५	चंद्र	७	३०	श्ले.	५	३०	शोभ	३४	५८	ब	७	३०	२४	१४	13	२	सिं. ५/३०	**माघ पूर्णिमा,** स्नानदानादि, **गुरू रविदास जयंती,** बुध पश्चिमोदय **H**	१०	००	१५	५९	७	१५	१८	१०

B बाबा लाल जयंती **C** चौथ, कुन्द चतुर्थी, बुध धनि. में ५१/३० **D** हस्त (१) में १९/०० **G** संक्रां. १५ मुहू., पुण्य संक्रां. अगले दिन (७/१९) तक, **व्रत श्रीसत्यनारायण,** गं. मू.

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 5 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	०	९	६	८	३	११	५
२२	१८	२९	२८	२३	२२	१३	१३	१३
०५	४६	५३	४६	४४	०७	१५	११	११
४४	०७	४८	३६	२०	५४	५३	४३	४३
६० ४८	७९२ ३७	२७ २३	१०७ २६	४ ५३	५ २	४ ४९	३ ११	३ ११
श्रव. ४	भर. २	कृति १	धनि २	विशा २	पूषा ३	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ | १० सू. बु. | ९ शु. | ८ | १२ रा. | १ चं. मं. | ७ गु. | २ | ४ श. | ६ के. | ३ | ५

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 13 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	१	१०	६	८	३	११	५
००	२८	०३	१३	२४	२३	१२	१२	१२
११	०३	३८	०४	१८	४९	३८	४६	४६
३५	१४	३५	३४	४७	२२	१२	१७	१७
६० ३७	७१० ७	२८ ५७	१०४ २९	३ ३३	२१ ५१	४ ३३	३ ११	३ ११
धनि ३	श्ले. ४	कृति ३	शत २	विशा २	पूषा ४	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१२ रा. | ११ सू. बु. | १० | ९ शु. | १ | २ मं. | ८ | ३ | ५ | ७ गु. | ४ चं. श. | ६ के.

H 8/27 घं., माघ स्नान समा., गं. मू.

माघ शुक्ल पक्षफल–1 फर. को श्रीगणेश **तिल चतुर्थी** को **श्री गणेश जी** का व्रत एवं पूजन, तिल, फल व गुड़, लड्डुओं सहित करने का विधान है। **बसन्त पंचमी** (2 फर.) को भगवान् **श्री विष्णु व सरस्वती** की धूप, दीप, नैवेद्य व गुलाल के साथ पूजा करनी चाहिए तथा पीले एवं मीठे चावलों का भोग लगाने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** को सूर्य भगवान् की **'ॐ घृणिः सूर्याय नमः'** इस मन्त्र से अर्घ्य तथा षोडशोपचार सहित पूजन करने से स्वास्थ्य एवं आरोग्यता बनी रहती है। **माघ पूर्णिमा** को गंगा आदि तीर्थों पर स्नान दानादि करने का विशेष माहात्म्य होगा। **लोक-भविष्य**–सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग बना हुआ है। माघ मास से चैत्र मास तक खप्पर योग का भी प्रभाव रहेगा। राजनेताओं में परस्पर विग्रह, टकराव एवं अस्थिरता का माहौल बने। अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। सत्तारूढ़ शासक वर्ग के लिए यह अवधि अशुभ होगी। वामपंथी दलों की ओर से खींचतान रहेगी। रविवारी फागुन संक्रान्ति राजनेताओं में परस्पर युद्ध एवं विग्रहकारक होगी। सामान्य प्रजा दुःखी एवं परेशान रहेगी। **संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ताकरोति युद्धं नृपतेरतीव धान्यं महर्घं प्रतिरौद्रवार्ता प्रजा भवेद् दुखित हीन दीना॥** विचित्र प्रकार के रोग उत्पन्न हों। **बाज़ार का रुख**–3 फर. को शुक्र मार्गी होने से रूई, घी, गुड़ में मन्दी, सोने-चाँदी में तेजी बनेगी। 5 फर. को मंगल वृष में तथा बुध कुम्भ में जाने से लाल चन्दन, लाल रंग की वस्तुएं, रूई, कपास, सूत, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, सोना, चाँदी, ताँबा, शेयरों में तेजी बने। 12 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में बुध के साथ मेल करेगा। घी, तेल, लवण, सरसों, मूँगफली, राई में तेजी तथा रूई, पाट, अलसी, एरण्ड, गुड़, शक्कर, चीनी में मन्दी बनेगी।

आकाश लक्षण–3 से 6 फर. के मध्य उत्तर-पश्चिम भारत में कहीं-कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, फाल्गुन कृष्ण पक्ष										शाकः १९२७					तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2006 ई. (ता. 14 से 27 फर. तक) सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर-बसन्त ऋतु					भा. स्टैं. टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ शक	मोह. मु.	फरवरी	फागुन	प्रवेश घटी पल	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, गुरु पश्चिम में दृश्य, सायं शनि पूर्व में, मंगल याम्योत्तरवृत्त तथा बुध पश्चिम में दीखेंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२७/२३	१	मंग	१४	०८	मघा	१३	१३	अति	३७	२५	कौ	१४	०८	२५	१५	14	३	सिंह	फाल्गुण कृष्ण पक्षारम्भ, गण्डमूल १२/३१ तक	१०	०१	१६	३४	७	१४	१८	११
२७/२८	२	बुध	२०	५०	पूफा	२१	००	सुक	३९	५०	ग	२०	५०	२६	१६	15	४	कं. ३७/५५	भद्रा ५४/०७ से प्रारम्भ	१०	०२	१७	०८	७	१३	१८	१२
२७/३३	३	गुरू	२७	२३	उफा	२८	३५	धृति	४२	०३	वि	२७	२३	२७	१७	16	५	कन्या	भद्रा २७/२३ तक, **श्री गणेश चतुर्थी व्रत** चं. उ. रात्रि 9/10 पर	१०	०३	१७	४०	७	१२	१८	१३
२७/३८	४	शुक्र	३३	२०	हस्त	३५	४०	शूल	४३	४८	ब	०	२२	२८	१८	17	६	कन्या	बुध पूभा १ में १/१८	१०	०४	१८	११	७	११	१८	१४
२७/४३	५	शनि	३८	२०	चित्रा	४१	५०	गंड	४४	४८	कौ	५	५०	२९	१९	18	७	तु. ८/५५	सूर्य सायन मीन में २४/५६ घं. मिं., बसन्त ऋतुः प्रारम्भ	१०	०५	१८	४०	७	१०	१८	१५
२७/४८	६	रवि	४२	००	स्वा.	४६	४०	वृद्धि	४४	४५	ग	१०	१०	३०	२०	19	८	तुला	भ. ४२/०० से, सूर्य शते १ में २०/४०, शुक्र उषा. में 15/31 घं.मिं.	१०	०६	१९	०९	७	०९	१८	१६
२७/५३	७	चंद्र	४३	५५	विशा	४९	५३	ध्रुव	४३	२३	वि	१२	२८	फा	२१	20	९	वृ. ३४/१५	भद्रा १२/२८ तक, शाकः फाल्गुन प्रारंभ	१०	०७	१९	३६	७	०८	१८	१७
२७/५५	८	मंग	४३	५५	अनु.	५१	०८	व्या.	४०	३०	बा	१३	५५	२	२२	21	१०	वृश्चिक	**स्वा. दयानन्द जयन्ती**, जानकी जयंती, गण्डमूलादि	१०	०८	२०	०३	७	०७	१८	१७
२८/००	९	बुध	४१	५३	ज्ये.	५०	२५	हर्ष	३६	०३	तै	१२	५४	३	२३	22	११	ध. ५०/२५	गण्डमूलादि विचार	१०	०९	२०	२५	७	०६	१८	१८
२८/०५	१०	गुरू	३७	५०	मूला	४७	४८	वज्र	३०	००	व	९	५१	४	२४	23	१२	धनु	भद्रा ९/५१ से ३७/५० तक,	१०	१०	२०	४८	७	०५	१८	१९
२८/०८	११	शुक्र	३१	५८	पूषा	४३	२५	सिद्धि	२२	३०	ब	४	५४	५	२५	24	१३	म. ५७/०५	**बुध मीन में** ३६/१५ (21/34 घं.), **विजया एकादशी व्रतम्**	१०	११	२१	१०	७	०४	१८	१९
२८/१३	१२	शनि	२४	४०	उषा	३७	४०	व्य.	१३	४५	तै	२४	४०	६	२६	25	१४	मकर	मंगल रोहिणी में ४१/४३, **शुक्र मकर में 6/16 घं. मिं.**	१०	१२	२१	३०	७	०३	१८	२०
२८/१८	१३	रवि	१६	१३	श्रव	३०	५३	वरी परि	४ ५३	०० ३३	व	१६	१३	७	२७	26	१५	कुं. ५७/१०	भद्रा १६/१३ से ४१/३७ तक, **श्री महाशिवरात्रि व्रतम्**,	१०	१३	२१	५०	७	०२	१८	२१
२८/२३	१४	चंद्र	७	००	धनि	२३	२८	शिव	४२	४८	श	७	००	८	२८	27	१६	कुम्भे	**सोमवती अमावस**, स्नानदानादि तीर्थेषु, **पंचकारंभ 5/54 घं.मिं.**	१०	१४	२२	०६	७	०१	१८	२२
क्षय	३०	चंद्र	५७	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	अमावस तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 21 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१	१०	६	८	३	११	५
०८	०४	०७	२५	२४	२७	१२	१२	१२
१५	३८	३४	४८	४२	३१	०३	२०	२०
५९	३५	५०	४५	०९	५२	२१	५०	५०
६० २५	७८६ ३	३० १४	७७ १९	२ ५	३४ ४५	४ ९	३ ११	३ ११
शत. १	अनु. १	कृति ४	पूभा २	विशा २	उषा. १	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२ रा.
१० ९ शु.
१ ११ सू. बु.
२ मं.
८ चं.
५
३ ४ श.
६ के. ७ गु.

चन्द्रे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 27 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	१	११	६	९	३	११	५
१४	२९	१०	०१	२४	०१	११	१२	१२
१८	४५	३८	४८	५२	१९	३९	०१	०१
१८	०६	२३	२९	००	२६	४२	४६	४६
६० १८	९१५ १६	३१ ४	३१ ४०	१ ००	४२ २	३ ४१	३ ११	३ ११
शत. ३	धनि. २	रोह. १	पूभा ४	विशा २	उषा २	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30

१२ रा. बु.
१० शु. चं.
१ ११ सू. ९
२ मं.
८
५
३ ४ श.
६ के. ७ गु.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष—

निशीथ व्यापिनी चतुर्दशी (26 फर.) को **श्री महाशिवरात्रि** का सर्वकल्याणकारी **व्रत** रखने से **अश्वमेघ यज्ञ** के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस **दिन काले** तिलों सहित स्नानकर व व्रत धारणकर रात्रि में भगवान् शिव शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजा सामग्री में बिल्वपत्र, कनेर, पुष्प, धतूरा रखना चाहिए। पूजा के उपरान्त **शिवरात्रि** कथा तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन मिष्ठान्नादि सहित भोजन एवं दानादि के बाद स्वयं भोजन करना चाहिए। 27 फर. को मध्याह्न व्या. अमावस को रूद्र, अग्नि और ब्राह्मणों का पूजन करके उन्हें क्षीर, दही और पूरी आदि सहित भोजन कराएं। **लोक-भविष्य**—फाल्गुन मास में **पाँच मंगलवार** होने से आवश्यक वस्तुओं में अत्यधिक तेजी होगी। प्रजा में असंतोष एवं उपद्रव की घटनाएँ अधिक रहें। कहीं छत्रभंग एवं देश में शासन परिवर्तन होने के संकेत हैं। सीमाओं पर युद्ध के बादल मण्डराएँगे—**''यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभंग॥''** देश के किसी प्रमुख नेता का निधन होने के योग हैं। **व्यापारिक भविष्य—** ता. 24 फर. को बुध मीन में आने से रूई, गुड़, चीनी, शक्कर में मन्दी, सोने-चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, बिनौले में तेजी रहे। 25 फर. को शुक्र मकर राशि में तथा मंगल रोहिणी में आने से शेयरों, अफीम, गुड़, चीनी, घी, रुई, चाँदी, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग में भी तेजी बनेगी। 27 फर. को सोमवती अमावस रूई, चाँदी में तेजी परन्तु शेष धान्य सस्ते होंगे।

आकाश लक्षण—14 से 26 फर. के मध्य उत्तर भारत में कहीं-कहीं खण्ड वर्षा सम्भव है। उ. भारत में सर्दी का प्रभाव क्षीण होगा तथा जलवायु में परिवर्तन अनुभव होगा।

शकुन विचार—यदि फाल्गुन अमावस को बादल चाल रहे तो चावल, अन्न, सरसों संग्रह करने से छठे मास लाभ प्राप्त होता है।

वि. संवत् २०६२, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाकः १९२७

सन् 2006 ई. (ता. 28 फर. से 14 मार्च तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, बसन्त ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घं.	मि.	नक्षत्र	घं.	मि.	योग	घं.	मि.	करण	घं.	मि.	तारीखें फागु. शक	मोहर्रम मु.	फरवरी	फागुन	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
२८/२७	१	मंग	४८	१५	शत	१५	५८	सिद्ध	३२	०५	किं	२२	५४	९	२९	28	१७	मी. ५५/२८
२८/३३	२	बुध	३९	३५	पूभा	८	४८	साध्य	२१	४८	बा	१३	५५	१०	३०	मा	१८	मीन
२८/३८	३	गुरू	३१	५५	उभा / रेव	२ / ५७	२० / ०३	शुभ	१२	१०	तै	५	४५	११	सफ	2	१९	मे. ५७/०३
२८/४३	४	शुक्र	२५	३३	अश्वि	५३	१३	शुक्ल / ब्रह्म	३ / ५६	३३ / ०८	वि	२५	३३	१२	२	3	२०	मेष
२८/४५	५	शनि	२०	५०	भर	५१	१०	ऐंद्र	५०	१०	बा	२०	५०	१३	३	4	२१	मेष
२८/५०	६	रवि	१७	५८	कृति	५०	५८	वैधृ	४५	४५	तै	१७	५८	१४	४	5	२२	वृ. ५/५८
२८/५८	७	चंद्र	१७	००	रोहि	५२	४०	विष्क	४२	५०	व	१७	००	१५	५	6	२३	वृष
२९/००	८	मंग	१७	५८	मृग	५६	०८	प्रीति	४१	२०	ब	१७	५८	१६	६	7	२४	मि. २४/१३
२९/०५	९	बुध	२०	४३	आर्द्रा	६०	००	आयु	४१	१०	कौ	२०	४३	१७	७	8	२५	मिथुन
२९/१०	१०	गुरू	२४	५५	आर्द्रा	१	१३	सौभा	४२	००	ग	२४	५५	१८	८	9	२६	क. ५०/४३
२९/१३	११	शुक्र	३०	१५	पुर्न	७	२५	शोभ	४३	३८	वि	३०	१५	१९	९	10	२७	कर्क
२९/१८	१२	शनि	३६	२०	पुष्य	१४	३०	अति	४५	४८	ब	३	१८	२०	१०	11	२८	कर्क
२९/२३	१३	रवि	४२	५५	श्ले.	२२	०८	सुक	४८	१८	कौ	९	३८	२१	११	12	२९	सिं. २२/०८
२९/२८	१४	चंद्र	४९	३३	मघा	२९	५५	धृति	५०	४८	ग	१६	१४	२२	१२	13	३०	सिंह
२९/३०	१५	मंग	५५	५८	पूफा	३७	३५	शूल	५३	१०	वि	२२	४६	२३	१३	14	चैत्र	कं. ५४/२८

तिथि	ग्रह लोपदर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, गुरु पश्चिम में दृश्य, सायं बुध पश्चिम में, ५ मार्च से पश्चिम में अस्त, मंगल याम्योत्तरवृत्त तथा शनि पूर्व में दृश्य होंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ए. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
१	फाल्गुण शुक्ल पक्षारम्भः	१०	१५	२२	२२	७	००	१८	२३
२	**चन्द्रदर्शन** ४५ मु., मार्च सं. २००६ ई० प्रा., **रामकृष्ण परमहंस जयं.**	१०	१६	२२	३२	६	५८	१८	२३
३	भद्रा ५८/४४ से, **पंचक समा.** २९/४६ घं.मिं., बुध वक्री, सफर १ मु.	१०	१७	२२	४४	६	५७	१८	२४
४	भद्रा २५/३३ तक, गण्डमूलादि, स. सि. योगः	१०	१८	२२	५५	६	५६	१८	२५
५	सूर्य पूभा. १ में ३६/५५, **गुरू वक्री** (२३/३२ घं. मिं.)	१०	१९	२३	०२	६	५५	१८	२५
६	**बुध पश्चिम** में अस्त (२७/३६ घं. मिं.)	१०	२०	२३	०९	६	५४	१८	२६
७	भद्रा १७/०० से ४७/२९ तक, स. सि. योगः	१०	२१	२३	१०	६	५३	१८	२७
८	**होलाष्टक प्रारम्भः**, अन्नपूर्णाष्टमी **B** स. सि. योगः	१०	२२	२३	१२	६	५२	१८	२७
९		१०	२३	२३	१२	६	५०	१८	२८
१०	भ. ५७/३५ से, **वक्री बुध कुम्भ में** १५/३७ (१३/०४ घं. मिं.), **B**	१०	२४	२३	०९	६	४९	१८	२९
११	भद्रा ३०/१५ तक, **आमलकी एकादशी व्रत,** शुक्र श्रवण में ५/३०	१०	२५	२३	०५	६	४८	१८	२९
१२	**गोविन्द द्वादशी,** गण्डमूल १२/३५ उप.	१०	२६	२२	५८	६	४७	१८	३०
१३	प्रदोष व्रतं, गण्डमूलादि	१०	२७	२२	४६	६	४५	१८	३०
१४	भद्रा ४९/३३ से प्रा., महेश्वर व्रत	१०	२८	२२	३६	६	४४	१८	३१
१५	भ. २२/४६ तक, **फा. पूर्णिमा व्रत, सूर्य मीन में ३७/४५, C**	१०	२९	२२	२३	६	४३	१८	३१

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें। **C होली पर्व,** चैत्र संक्रांति ३० मु., पुण्य दुपै. १५/२५ उप., **होलिका दहन** सायं ६/३२ उप., चैतन्य महाप्रभु जयं.

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 7 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१	११	६	९	३	११	५
२२	२४	१४	०१	२४	०७	११	११	११
१९	१०	५०	४१	५४	२२	१२	३६	३६
५०	०२	२४	१५	३८	३०	३३	१९	१९
६० २	७५६ १२	३१ ५०	३९ २८	० ३१	४९ १५	३ २	३ १०	३ १०
पूभा १	मृगा १	रोहि २	पूभा ४	विशा २	उषा ४	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

बु.रा. १२ | ११ सू. | १० शु. | ९ | ८ | ७ गु. | ६ के. | ५ | ४ श. | ३ | २ चं. मं. | १

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 14 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	१	१०	६	९	३	११	५
२९	१८	१८	२५	२४	१३	१०	११	११
१९	३९	३६	३६	४७	२२	५३	१४	१४
२१	३९	३०	००	०५	१८	२६	०४	०४
५९ ४७	७१० ४०	३२ ४०	५७ १०	१ ४९	५४ ००	२ २१	३ ११	३ ११
पूभा ३	पूफा २	रोहि ३	पूभा २	विशा २	श्रव २	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१२ रा. | ११ सू. बु. | १० शु. | ९ | ८ | ७ गु. | ६ के. | ५ चं. | ४ श. | ३ | २ मं. | १

पक्षफल (फाल्गुण शुक्ल)

फाल्गुन शुक्लाष्टमी (7 मार्च) से **होलाष्टक** प्रारम्भ होंगे। इनमें शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। **आमलकी एकादशी** के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति-पूजा करनी चाहिए तथा पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। **फा० पूर्णिमा** (14 मार्च) को होली का शुभ उल्लासमय पर्व होगा। सायं भद्रा रहित काल में **होलिका दहन** होगा। भद्रा दुपै. 3/49 तक होगी। **लोक भविष्य**–4 मार्च को तुला राशिगत गुरु वक्री होने से अनाज आदि की पैदावार अच्छी होगी। दूध, घी आदि तथा सुख के साधन बढ़ेंगे। **''वक्रभूत यदा जीवः सुभिक्षं भूतले भवेत्। जनभूपाल सौख्यं स्यात् समर्घं गोरसं घृतम्॥''** 14 मार्च को चैत्र संक्रान्ति मंगलवार को होने से देश में रोग, शोक, दुःखद घटनाएं अधिक होंगी। सर्व जनोपयोगी वस्तुएं अत्यधिक महंगी होंगी। **व्यापारिक भविष्य**–2 मार्च को बुध वक्री होने से शेयरों, चीनी, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, चाँदी, रूई में तेजी होगी। 5 मार्च को बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी, शेयरों, तिल, गुड़, चीनी, गुड़ में तेजी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी रहेगी। 9 मार्च को वक्री बुध कुम्भ में आने से अलसी, रूई में कुछ मन्दी, घी, तेल, चाँदी, गुड़, चीनी में तेजी रहेगी। ता. 14 को भौमवारी संक्रान्ति किन्हीं राजनेताओं के लिए अनिष्टकारी होगी। विभिन्न राजनेताओं के मध्य विरोध एवं टकराव पैदा होंगे। राजनीतिक स्थिति अस्थिर होगी। माल पँसारी के मूल्यों में मज़बूती रहेगी। लोगों में रोग-शोक व दुःखद घटनाएँ अधिक होंगी। **''भौमस्यवारे सं क्रमश्च करोति पृथ्व्यामसुखं महर्घता। क्षारंरसंवै घृततैल संयुत कर्पूरकस्यैव महर्घता च॥''** घी, तैल, रसादि आदि सभी स्निग्ध पदार्थ महँगे होंगे। **संक्रान्ति फल**–यह संक्रान्ति मेष, वृष, मिथुन, तुला, बृश्चिक, धन, मकर व कुम्भ राशि वालों के लिए लाभदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**–उत्तरी भारत में कहीं धूल भरी आँधी एवं कहीं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६२, चैत्र कृष्ण पक्ष शाकः १९२७-२८

सन् 2006 ई. (ता. 15 मार्च से 29 मार्च तक)

सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण-उत्तर गोल, बसन्त ऋतु

भा. स्टै. टा. — जालन्धर

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में, १९ मार्च से बुध भी पूर्व से उदय, गुरु पश्चिम में, सायं शनि पूर्व में तथा मंगल पश्चिम में दृश्य होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फा. शाकं	[illegible]	मार्च	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इ. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२९/३५	१	बुध	६०	००	उफा	४४	५८	गंड	५५	१५	बा	२९	०१	२४	१४	15	२	कन्या	चैत्र कृष्ण पक्षारम्भ, धुलण्डी, **होला मेला** (आनन्दपुर व पांओंटा) **A**	११	००	२२	०५	६	४१	१८	३१
२९/४०	१	गुरू	२	०३	हस्त	५१	४०	वृद्धि	५६	४८	कौ	२	०३	२५	१५	16	३	कन्या	बसन्तोत्सवः **A** वसन्तोत्सव प्रारम्भ	११	०१	२१	४९	६	४०	१८	३२
२९/४५	२	शुक्र	७	२३	चित्रा	५७	३८	ध्रुव	५७	४३	ग	७	२३	२६	१६	17	४	तु. २४/४८	भ. ३९/३४ से, **सन्त तुकाराम जयंती**, सूर्य उभा १ में ५८/४८	११	०२	२१	३०	६	३९	१८	३३
२९/४८	३	शनि	११	४५	स्वा.	६०	००	व्या.	५७	४८	वि	११	४५	२७	१७	18	५	तुला	भद्रा ११/४५ तक, **श्री गणेश चतुर्थी व्रत** (चं.उ. रात ९/४७ पर) **B**	११	०३	२१	०७	६	३८	१८	३३
२९/५३	४	रवि	१५	०३	स्वा.	२	३५	हर्ष	५६	५८	बा	१५	०३	२८	१८	19	६	वृ. ५०/२५	**बुध पूर्व से उदय** 15/47 घं. मिं. **B** भगवत् श्रीनारायण जयं., स.सि.यो.	११	०४	२०	४४	६	३७	१८	३४
२९/५७	५	चंद्र	१७	०३	विशा	६	१५	वज्र	५५	००	तै	१७	०३	२९	१९	20	७	बृश्चिक	**श्री रंग पंचमी**, मेला नवचण्डी (मेरठ), **सूर्य सा. मेष में C**	११	०५	२०	१७	६	३६	१८	३४
३०/००	६	मंग	१७	३३	अनु	८	३३	सिद्धि	५१	५३	व	१७	३३	३०	२०	21	८	बृश्चिक	भद्रा १७/३३ से ४७/०१ तक, वक्री बुध शत. ४ में 22/06 घं.मिं.	११	०६	१९	५३	६	३५	१८	३५
३०/०५	७	बुध	१६	२८	ज्ये.	९	१८	व्य.	४७	२८	ब	१६	२८	चैत्र	२१	22	९	ध. ९/१८	मंगल मृगा १ में ३३/३८ (२०/०१ घं.), गण्डमूलादि, शक चैत्र १९२८ प्रा.	११	०७	१९	२६	६	३४	१८	३६
३०/१०	८	गुरू	१३	५०	मूला	८	३३	वरी	४१	४८	कौ	१३	५०	२	२२	23	१०	धनु	**शीतलाष्टमी व्रत**, गण्डमूल ९/५७ तक	११	०८	१८	५४	६	३२	१८	३७
३०/१७	९	शुक्र	९	३५	पूषा	६	१०	परि	३४	५५	ग	९	३५	३	२३	24	११	म. २०/२०	भद्रा ३६/४७ से प्रा., शुक्र धनि. १ में ३१/५०	११	०९	१८	२२	६	३१	१८	३८
३०/२५	१०	शनि	३	५८	उषा श्रव	२ ५७	२५ २३	शिव	२७	००	वि	३	५८	४	२४	25	१२	मकर	भ. ३/५८ तक, **पापमोचनी एका. व्रत** स्मार्त्त, **बुध मार्गी D**	११	१०	१७	४८	६	२९	१८	३९
क्षय	११	शनि	५७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय **D** 19/18 स्टै. टा., स. सि. योगः	०	०	०	०	०	०	०	०
३०/२७	१२	रवि	४९	१०	धनि	५१	२८	सिद्ध	१८	०५	कौ	२३	०५	५	२५	26	१३	कुं. २४/३३	**पंचकारम्भः** १६/१७ स्टै. टा., **पापमोचनी एका. वैष्ण**, वारूणी **E**	११	११	१७	१४	६	२८	१८	३९
३०/३२	१३	चंद्र	४०	४३	शत	४४	५३	साध्य शुभ	८ ५८	३३ ३३	ग	१४	५७	६	२६	27	१४	कुम्भ	भ. ४०/४३ से, **सोम प्रदोष व्रत**, वारूणी योग सू.उ. से २२/४४ तक	११	१२	१६	३७	६	२७	१८	४०
३०/३५	१४	मंग	३१	५८	पूभा	३८	०८	शुक्ल	४८	३०	वि	६	२१	७	२७	28	१५	मी. २४/५०	भद्रा ६/२१ तक, मेला पृथूदक, पिहोवा तीर्थ (हरि.)	११	१३	१५	५९	६	२६	१८	४०
३०/४२	अमा	बुध	२३	२५	उभा	३१	३५	ब्रह्म	३८	४३	ना	२३	२५	८	२८	29	१६	मीन	**चैत्र अमावस**, स्नानदानादि, **खग्रास सूर्यग्रहणं**, बुध पूभा १ **G**	११	१४	१५	१६	६	२४	१८	४१

C 23/56, **महाविषुव** दिवस, उत्तर गोल प्रा. **E** योग २७/०३ उप. **G** में ३५/१०, वि. सं. २०६२ पूर्ति., **प्लूटो वक्री** १८/१० घं. मिं.

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 23 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१	१०	६	९	३	११	५
०८	१०	२३	१९	२४	२१	१०	१०	१०
१६	४८	३३	३३	२४	४७	३५	४५	४५
२२	३१	२१	५१	०८	४१	५७	२७	२७
५९/३१	८२९/३८	३३/२३	१२/२०	३/२६	५८/३३	१/२४	३/११	३/११
उभा २	मूल ४	मृगा १	शत ४	विशा २	श्रव. ४	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	आ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

- १
- १२ सू. रा.
- ११ बु.
- १० शु.
- २ मं.
- ३
- ९ चं.
- ४ श.
- ६ के.
- ५
- ७ गु.
- ८

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 29 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१	१०	६	९	३	११	५
१४	०८	२६	१९	२४	२७	१०	१०	१०
१३	१४	५४	४६	००	४४	२९	२६	२६
०३	१९	३७	५२	५८	५३	०१	२२	२२
५९/२०	८९६/६	३३/४७	२१/२	४/२७	६०/४९	०/४७	३/१०	३/१०
उभा ४	उभा २	मृगा २	शत ४	विशा २	धनि २	पुष्य ३	उभा ३	हस्त १
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30

- १
- १२ सू. चं. रा.
- ११ बु.
- १० शु.
- २ मं.
- ३
- ९
- ४ श.
- ६ के.
- ५
- ७ गु.
- ८

चैत्र कृष्ण पक्षफल—

चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (15 मार्च) को होला मेला का पर्व पंजाब, **हिमाचल प्रदेशों** में मनाया जाता है। इस पक्ष में **पापमोचनी एकादशी** व्रत, **वारुणी पर्व** एवं प्रदोष के दिन तीर्थादि स्थल पर स्नान दानादि का विशेष महत्त्व होता है। चतुर्दशी को **पिहोवा (कुरुक्षेत्र)** पर **मेला पृथदक्** बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। अमा. (29 मार्च) को विक्रमी सम्वत् 2062 की पूर्ति होगी। इसी दिन सायं को **सूर्यग्रहण** लगने से तीर्थों आदि स्नान, दानादि करने का विशेष माहात्म्य रहेगा।

बाज़ार का रुख—ता. 17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आने से गुड़, शक्कर, चीनी, चावल (धान्य), खल-बिनौले, मूंग व सोने में तेजी होगी। ता. 19 को बुध पूर्व से उदित होने से बाज़ार में करियाना बाज़ार के रूख में घटा-बढ़ी के बाद अचानक परिवर्तन होगा। परन्तु यह परिवर्तन अस्थायी होगी। ता. 22 को मंगल मृगशिर में आने से रूई, कपास, जूट, पटसन में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। गेहूँ, चने, धान्य आदि में मन्दी का रूझान होगा। ता. 24 को शुक्र धनिष्टा में आने से चावल, मूंग, मोंठ, उड़द, छोटी व मोटी इलायची, ज्वार बाजरा, रूई-कपास व सोना, चाँदी व लोहे में तेजी होगी तथा गेहूँ व चने में मन्दी रहेगी। ता. 25 को **बुध मार्गी** होने से रसादि वस्तुओं में तेजी होने के बाद अकस्मात् मन्दी होगी। परन्तु एकादशी तिथि का क्षय होने से लौह, सोना, चाँदी में मज़बूती का क्रम रहेगा। ता. 29 को खण्ड-सूर्यग्रहण आगामी दिनों में सर्व प्रकार के अनाज एवं तेलों में तेजी का सूचक होगा।

आकाश लक्षण—देश के उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ वर्षा होने के योग हैं॥

वि. संवत् 2061-62, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टे. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	7	शुक्र	19 24	मूला	21 40	वरी	19 24	धनु	भद्रा 8/23 तक, शीतला सप्तमी, अप्रैल मास प्रारम्भ	6/24	18/45	6/15	18/35	6/15	18/37	6/36	18/49
	2	8	शनि	17 14	पू.षा.	20 13	परि	16 30	म. 25/49	शीतला अष्टमी	6/23	18/45	6/14	18/36	6/14	18/37	6/35	18/49
	3	9	रवि	14 55	उ.षा.	18 37	शिव	13 28	मकर	भद्रा 25/43 से, वक्री गुरु हस्त (3) में 28/50	6/21	18/46	6/13	18/36	6/13	18/38	6/34	18/49
	4	10	चंद्र	12 30	श्रव.	16 56	सिद्ध	10 22	कुं. 28/05	भद्रा 12/30 तक, **पंचक प्रारम्भ 28/05**	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	11	मंग	10 04	धनि	15 15	साध्य शुभ	7 15 28 11	कुम्भ	शनि पुनर्वसु 3 में 27/18, पापमोचिनी एकादशी व्रत, बुध पूर्व से **A**	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	12/	बुध	7 42	शत	13 41	शुक्ल	25 14	कुम्भ	भद्रा 29/30 से, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व 7/42 से 13/41 तक	6/17	18/49	6/10	18/38	6/09	18/40	6/32	18/49
		13	०	29 30	००	० ०	००	० ०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००
	7	14	गुरु	27 35	पू.भा.	12 18	ब्रह्म	22 29	मी. 6/37	भद्रा 16/33 तक,	6/16	18/50	6/09	18/39	6/08	18/41	6/31	18/49
	8	30	शुक्र	26 02	उ.भा.	11 13	ऐंद्र	20 03	मीन	**चैत्र अमावस**, चान्द्र वि. संवत् 2061 पूर्ण, मंगल श्रव 4 में 29/07	6/15	18/51	6/08	18/39	6/07	18/42	6/30	18/50
चैत्र शुक्ल पक्ष	9	चै.शु.	शनि	24 59	रेव	10 33	वैधृ	17 58	मे. 10/33	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, वि. संवत् 2062 प्रा., **चैत्र नवरात्रे प्रारंभ B**	6/14	18/52	6/07	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
	10	2	रवि	24 29	अश्वि	10 23	विष्क	16 19	मेष	चन्द्रदर्शन 15 मु., **शुक्र** अश्वि. 1, **मेष में 28/27**	6/12	18/52	6/05	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
	11	3	चंद्र	24 37	भर	10 49	प्रीति	15 09	वृ. 17/01	मत्स्य जयन्ती, गणगौरी तीज	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
	12	4	मंग	25 24	कृति	11 52	आयु	14 29	वृष	भद्रा 13/01 से 25/24 तक, बुध मार्गी 13/19	6/10	18/54	6/03	18/41	6/02	18/45	6/28	18/51
	13	5	बुध	26 47	रोहि	13 31	सौभा	14 19	मि. 26/34	सूर्य मेष में 24/09, **वैशाख संक्रांति**, 30 मुहूर्ति, मंगल धनिष्ठा में**C**	6/08	18/54	6/02	18/42	6/01	18/45	6/27	18/51
	14	6	गुरु	28 41	मृग	15 44	शोभ	14 34	मिथुन	स्कन्द षष्ठी	6/07	18/55	6/01	18/43	6/00	18/46	6/26	18/51
	15	7	शुक्र	पूरा दिन	आर्द्रा	18 23	अति	15 11	मिथुन		6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
	16	7	शनि	6 56	पुर्न	21 16	सुक	16 00	क. 14/32	भद्रा 6/56 से 14/05 तक	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
	17	8	रवि	9 20	पुष्य	24 10	धृति	16 53	कर्क	**श्री दुर्गाष्टमी**, मेला कांगड़ा-चिन्तपूर्णी (हि.प्र.), बाहूफोर्ट (जम्मू)	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
	18	9	चंद्र	11 40	आश्ले	26 54	शूल	17 39	सिं. 26/54	**श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त**	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
	19	10	मंग	13 43	मघा	29 15	गंड	18 11	सिंह	भद्रा 26/31 से, सायन सूर्य वृष में 29/07, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
	20	11	बुध	15 18	पू.फा.	पूरा दिन	वृद्धि	18 21	सिंह	भद्रा 15/18 तक, कामदा एकादशी व्रत	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
	21	12	गुरु	16 19	पू.फा.	7 05	ध्रुव	18 04	कं. 13/27	प्रदोष व्रत, शुक्र भरणी में 23/04	5/59	19/00	5/54	18/46	5/52	18/50	6/21	18/53
	22	13	शुक्र	16 41	उ.फा.	8 20	व्या.	17 17	कन्या	**महावीर जयन्ती, मंगल कुम्भ में 23/42**, अनंग त्रयोदशी	5/58	19/00	5/53	18/47	5/51	18/51	6/20	18/54
	23	14	शनि	16 26	हस्त	8 57	हर्ष	16 02	तु. 21/02	भद्रा 16/26 से 28/02 तक, दमनक चतुर्दशी, श्रीसत्यनारायण व्रत	5/57	19/01	5/52	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
	24	पू.	रवि	15 37	चित्रा	8 59	वज्र	14 18	तुला	**चैत्र पूर्णिमा**, वैशाख स्नान प्रारम्भ, **शुक्र पश्चिम से उदय 5/12**	5/55	19/02	5/51	18/48	5/49	18/52	6/19	18/54
वैशाख कृष्ण पक्ष	25	वै.कृ.	चंद्र	14 16	स्वा.	8 30	सिद्धि	12 10	बृ. 25/50	वैशाख कृष्ण पक्षारम्भ (शुक्र उदय 24 अप्रैल)	5/54	19/02	5/50	18/49	5/48	18/53	6/18	18/54
	26	2	मंग	12 31	विशा	7 34	व्या.	9 41	वृश्चिक	भद्रा 23/31 से,	5/53	19/03	5/49	18/49	5/47	18/54	6/17	18/55
	27	5	बुध	10 27	अनु.	6 19	वरी	6 57	ध. 28/50	भद्रा 10/27 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय जालं. में रात्रि **D**	5/52	19/04	5/48	18/50	5/46	18/54	6/17	18/55
	००	०	००	०० ००	ज्ये.	28 50	परि	28 01	००	००								
	28	4	गुरु	8 11	मूला	27 14	शिव	25 00	धनु	अनुसूया जयंती, गण्डमूल 27/14 तक,	5/51	19/05	5/47	18/50	5/45	18/55	6/16	18/56
	००	5	गुरु	29 48	००	०० ००	००	०० ००	००	पंचमी तिथि का क्षय ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००
	29	6	शुक्र	27 24	पू.षा.	25 36	सिद्ध	21 56	धनु	भद्रा 27/24 से प्रारम्भ	5/50	19/06	5/46	18/51	5/44	18/55	6/16	18/56
	30	7	शनि	25 02	उ.षा.	24 01	साध्य	18 55	म. 7/12	भद्रा 14/13 तक	5/49	19/07	5/45	18/51	5/43	18/56	6/15	18/56

A उदित 27/52 **B** घटस्थापन, नव संवत्सर फल श्रवण, पंचक समाप्त 10/33, **C** 19/18, **वैशाखी पर्व**, पुण्य संक्रान्ति सायं 5/45 से, श्रीलक्ष्मी पंचमी **D** 10/39 पर), सूर्य भरणी में 16/04, बुध रेवती में 24/15

वि. संवत् 2062, मई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
वैशाख कृष्ण पक्ष	1	8	रवि	22	48	श्रव	22	32	शुभ	15	58	मकर	मई मास प्रारम्भ, मंगल शतभिषा में 28/11, श्रम दिवस	5/48	19/08	5/45	18/53	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	9	चंद्र	20	44	धनि	21	14	शुक्ल	13	09	कुं. 9/52	पंचक प्रा. 9/52, शुक्र कृतिका में 18/27, वक्री गुरु हस्त (2) में 14/12	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
	3	10	मंग	18	53	शत	20	08	ब्रह्म	10	29	कुम्भ	भद्रा 7/49 से 18/53 तक,	5/46	19/09	5/46	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
	4	11	बुध	17	17	पू.भा.	19	18	ऐंद्र	8	02	मी. 13/29	वरूथिनी एकादशी व्रत,	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
	5	12	गुरु	15	59	उ.भा.	18	46	वैधृ विष्क	5 27	48 49	मीन	प्रदोष व्रत, शुक्र वृष में 11/23, गण्डमूल 18/46 से प्रा.	5/44	19/10	5/41	18/55	5/39	18/59	6/13	18/58
	6	13	शुक्र	15	01	रेव	18	34	प्रीति	26	07	मे. 18/34	भद्रा 15/01 से 26/43 तक, पंचक समाप्त 18/34, गण्डमूल	5/43	19/11	5/41	18/55	5/38	19/00	6/12	18/58
	7	14	शनि	14	25	अश्वि	18	44	आयु	24	45	मेष	रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती, गण्डमूल 18/44 तक,	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
	8	30	रवि	14	15	भर	19	21	सौभा	23	44	वृ. 25/34	वैशाख अमावस, बुध मेष में 15/15,	5/42	19/12	5/39	18/57	5/37	19/01	6/12	18/59
वैशाख शुक्ल पक्ष	9	1	चंद्र	14	34	कृति	20	25	शोभ	23	06	वृष	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन 30 मुहूर्त्ति	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
	10	2	मंग	15	22	रोहि	21	59	अति	22	52	वृष	शिवाजी जयन्ती, श्री परशुराम जयंती	5/41	19/14	5/38	18/58	5/35	19/03	6/11	18/59
	11	3	बुध	16	40	मृग	24	01	सुक	23	00	मि. 10/56	अक्षया तृतीया, सूर्य कृतिका में 10/12	5/40	19/15	5/37	18/59	5/34	19/03	6/10	19/01
	12	4	गुरु	18	26	आर्द्रा	26	29	धृति	23	29	मिथुन	भद्रा 5/33 से 18/26 तक,	5/39	19/16	5/36	18/59	5/33	19/04	6/10	19/01
	13	5	शुक्र	20	34	पुर्न	29	16	शूल	24	14	क. 22/33	आद्य गुरु शंकराचार्य जयन्ती, शुक्र रोहिणी में 14/27	5/39	19/17	5/36	19/00	5/33	19/05	6/09	19/01
	14	6	शनि	22	55	पुष्य	पूरा	दिन	गंड	25	08	कर्क	सूर्य वृष में 21/04, ज्येष्ठ संक्रान्ति 30 मुहूर्त्ति, पुण्यकाल संक्रांति A	5/38	19/17	5/35	19/00	5/32	19/05	6/09	19/02
	15	7	रवि	25	18	पुष्य	8	12	वृद्धि	26	03	कर्क	भद्रा 25/18 से, श्री गंगा जयंती, गण्डमूल 8/12 के बाद	5/37	19/18	5/34	19/01	5/32	19/06	6/09	19/02
	16	8	चंद्र	27	30	श्ले.	11	06	ध्रुव	26	49	सिं. 11/06	भद्रा 14/20 तक, बुध भरणी में 23/02, गण्डमूल विचार	5/36	19/18	5/34	19/01	5/31	19/07	6/09	19/02
	17	9	मंग	29	17	मघा	13	44	व्या.	27	16	सिंह	गण्डमूल 13/44 तक, सीता नवमी, वगुलामुखी जयन्ती	5/36	19/11	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
	18	10	बुध	पू.	दि.	पू.फा.	15	55	हर्ष	27	17	कं. 22/22		5/35	19/20	5/32	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
	19	10	गुरु	6	30	उ.फा.	17	27	वज्र	26	46	कन्या	भद्रा 18/45 से, नैपच्यून वक्री 29/05	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
	20	11	शुक्र	6	59	हस्त	18	17	सिद्धि	25	39	कन्या	भद्रा 6/59 तक, मोहिनी एकादशी व्रत, मंगल पू.भा. में 15/36, B	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
	21	12	शनि	6	43	चित्रा	18	22	व्य.	23	57	तु. 6/25	शनि प्रदोष व्रत	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
	22	13	रवि	5	43	स्वा.	17	45	वरी	21	41	तुला	भद्रा 28/03 से, नृसिंह जयन्ती, ०० ००	5/33	19/23	5/31	19/04	5/28	19/11	6/07	19/04
	००	14	रवि	28	03	००	००	००	००	००	००	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय								
	23	15	चंद्र	25	48	विशा	16	32	परि	18	55	वृ. 10/53	भद्रा 14/56 तक, बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयंती, श्रीसत्यनारायण व्रत C	5/32	19/24	5/31	19/05	5/27	19/11	6/06	19/05
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	24	1	मंग	23	08	अनु.	14	49	शिव	15	47	वृश्चिक	शुक्र मृगशिर में 11/08, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारंभ, बुधास्त पूर्वे 4/32	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	25	2	बुध	20	12	ज्ये.	12	45	सिद्ध	12	22	ध. 12/45	सूर्य रोहिणी में 6/27, बुध वृष में 18/11, नारद जयंती, गण्डमूल	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	26	3	गुरु	17	08	मूला	10	31	साध्य शुभ	8 29	48 13	धनु	भ. 6/40 से 17/08 तक, शनि कर्क में 7/26, श्री गणेश चतुर्थी व्रत D	5/30	19/25	5/30	19/06	5/26	19/13	6/06	19/06
	27	4	शुक्र	14	05	पू.षा.	8	16	शुक्ल	25	42	म. 13/43		5/30	19/26	5/30	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	28	5	शनि	11	11	उ.षा.	6	07	ब्रह्म	22	22	मकर	सर्वार्थ सिद्ध योगः ००	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
	००	००	००	००	००	श्रव	28	13	००	००	००	००	०० ००								
	29	6	रवि	8	33	धनि	26	40	ऐंद्र	19	18	कुं. 15/24	भ. 8/33 से 19/25 तक, शुक्र मिथुन में 21/45, पंचक प्रारम्भ 15/24	5/29	19/27	5/29	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
	30	7	चंद्र	6	17	शत	25	31	वैधृ	16	33	कुम्भ	बुध रोहिणी में 12/17	5/29	19/28	5/29	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
	००	8	चंद्र	28	25	००	००	००	००	००	००	००	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ००								
	31	9	मंग	26	59	पू.भा.	24	48	विष्क	14	09	मी. 18/56		5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

A दोपहर 2/40 से, वक्री प्लूटो बृश्चिक में 25/25, **B** सूर्य सायन मिथुन में 28/17 **C** वैशाख स्नान समाप्त, बुद्ध जयंती, बुध कृति. में 26/27 **D** (जालन्धर में चन्द्रोदय रात्रि 10/32 पर)

वि. संवत् 2062, जून मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं मिं	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	1	10	बुध	26 01	उ.भा.	24 31	प्रीति	12 07	मीन	भद्रा 14/30 से 26/01 तक, जून मास प्रारम्भ	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/26	6/05	19/08
	2	11	गुरु	25 29	रेव	24 41	आयु	10 27	मे. 24/41	**पंचक समाप्त 24/41,** अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी (पंजाब)	5/28	19/29	5/28	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	3	12	शुक्र	25 22	अश्वि	25 16	सौभा	9 07	मेष	**मंगल मीन में 16/26,** गण्डमूल 25/16 तक,	5/28	19/30	5/28	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	4	13	शनि	25 40	भर	26 15	शोभ	8 07	मेष	भ. 25/40 से, शनि प्रदोष व्रत, शुक्र आर्द्रा में 8/32	5/28	19/30	5/28	19/11	5/24	19/18	6/05	19/09
	5	14	रवि	26 21	कृति	27 37	अति	7 27	वृ. 8/33	भद्रा 14/01 तक, बुध मृगशिर में 14/23, गुरु मार्गी 12/58	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	6	30	चंद्र	27 25	रोहि	29 21	सुक	7 04	वृष	**सोमवती भावुका अमावस,** वट सावित्री पूजन (अमा. पक्ष), शनैश्चरी जयंती	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/19	6/05	19/10
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	7	ज्ये.	मंग	28 52	मृग	पूरा दिन	धृति	7 00	मि. 18/21	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य मृगशिर में 28/18	5/27	19/32	5/27	19/13	5/24	19/19	6/05	19/10
	8	2	बुध	पूरा दि.	मृग	7 27	शूल	7 13	मिथुन	बुध मिथुन में 15/51, मंगल उ.भा. में 10/05,	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/20	6/05	19/11
	9	2	गुरु	6 41	आर्द्रा	9 54	गंड	7 43	मिथुन	रम्भा तृतीया	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	10	3	शुक्र	8 48	पुर्न	12 39	वृद्धि	8 27	क. 5/56	भद्रा 21/59 से, राणा प्रताप जयंती	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	11	4	शनि	11 09	पुष्य	15 35	ध्रुव	9 22	कर्क	भद्रा 11/09 तक, बुध आर्द्रा में 19/28	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/11
	12	5	रवि	13 36	आश्ले	18 36	व्या.	10 22	सिं. 18/36	गण्डमूल विचार	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	13	6	चंद्र	15 57	मघा	21 29	हर्ष	11 19	सिंह	गण्डमूल 21/29 तक,	5/26	19/34	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	14	7	मंग	18 01	पू.फा.	24 03	वज्र	12 04	सिंह	भ. 18/01 से, सूर्य मिथुन में 27/40, **आषाढ़ संक्रान्ति,** 45 मुहू., **A**	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	15	8	बुध	19 35	उ.फा.	26 05	सिद्धि	12 28	कं. 6/37	भद्रा 6/48 तक, शुक्र पुनर्वसु में 6/33, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, **B**	5/26	19/35	5/27	19/16	5/24	19/22	6/05	19/12
	16	9	गुरु	20 27	हस्त	27 26	व्य.	12 23	कन्या		5/26	19/35	5/27	19/17	5/24	19/23	6/05	19/13
	17	10	शुक्र	20 33	चित्रा	27 59	वरी	11 42	तु. 15/48	**श्री गंगा दशहरा (हरिद्वार)**	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	18	11	शनि	19 47	स्वा.	27 42	परि	10 21	तुला	भ. 8/10 से 19/47 तक, **निर्जला एकादशी व्रत,** बुध पुनर्वसु में 14/52	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	19	12	रवि	18 13	विशा	26 38	शिव	8 20	बृ. 20/58	प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ, चम्पक द्वादशी	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/13
	20	13	चंद्र	15 56	अनु.	24 53	सिद्ध साध्य	5 42 26 31	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्ध योगः	5/27	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	21	14	मंग	13 03	ज्ये.	22 36	शुभ	22 54	ध. 22/36	भ. 13/03 से 23/24 तक, सूर्य आर्द्रा में 27/20, सूर्य सायन कर्क **C**	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/06	19/14
	22	15	बुध	9 44	मूला	19 58	शुक्ल	18 59	धनु	ज्येष्ठ पूर्णिमा, **कबीर जयंती,** गण्डमूल	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	23	1	गुरु	6 09	पू.षा.	17 10	ब्रह्म	14 55	म. 22/27	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **शुक्र कर्क में 11/35**	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	∞	2	गुरु	26 30	∞	∞ ∞	∞	∞ ∞	∞	द्वितीया तिथि का क्षय ∞ ∞								
	24	3	शुक्र	22 56	उ.षा.	14 22	ऐंद्र	10 51	मकर	भ. 12/43 से 22/56 तक, **बुध कर्क में 10/16,** शनि पुष्य में 25/40	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	25	4	शनि	19 38	श्रव	11 46	वैधृ विष्क	6 56 27 16	कुं. 22/36	**पंचक प्रारंभ 22/36,** श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 10/49 पर)	5/29	19/37	5/29	19/18	5/26	19/25	6/07	19/15
	26	5	रवि	16 44	धनि	9 32	प्रीति	23 59	कुम्भ	बुध पुष्य में 13/23, शुक्र पुष्य में 5/22	5/29	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	27	6	चंद्र	14 21	शत	7 47	आयु	21 09	मी. 24/50	भद्रा 14/21 से 25/27 तक, मंगल रेवती में 19/22,	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	28	7	मंग	12 33	पू.भा.	6 36	सौभा	18 49	मीन		5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	29	8	बुध	11 23	उ.भा.	6 02	शोभ	17 00	मीन	गण्डमूल प्रातः 6/02 बाद	5/30	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16
	30	9	गुरु	10 51	रेव	6 06	अति	15 40	मे. 6/06	भद्रा 22/53 से, **पंचक समाप्त 6/06,** गण्डमूल	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

A पुण्यकाल संक्रां. अगले दिन, बुध पश्चिम से उदय 23/39, यूरेनस वक्री 28/10 **B** मेला क्षीर भवानी (का.) **C** में 12/16, सूर्य दक्षिणायन में, वर्षा ऋतु प्रा., व्रत श्रीसत्यनारायण, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)

वि. संवत् 2062, जुलाई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आषाढ़ कृष्ण	1	10	शुक्र	10 54	अश्वि	6 45	सुक	14 48	मेष	भद्रा 10/54 तक, जुलाई मास प्रारम्भ	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
	2	11	शनि	11 27	भर	7 55	धृति	14 20	वृ. 14/17	योगिनी एकादशी व्रत	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
	3	12	रवि	12 28	कृति	9 31	शूल	14 12	वृष	प्रदोष व्रत	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
	4	13	चंद्र	13 51	रोहि	11 31	गंड	14 22	मि. 24/37	भद्रा 13/51 से 26/43 तक,	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	5	14	मंग	15 34	मृग	13 49	वृद्धि	14 46	मिथुन	सूर्य पुनर्वसु में 26/55, शनि पश्चिम में अस्त 15/27	5/32	19/38	5/33	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	6	30	बुध	17 33	आर्द्रा	16 23	ध्रुव	15 23	मिथुन	अमावस, बुध आश्लेषा में 17/36	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/25	6/11	19/16
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	7	1	गुरु	19 45	पुर्न	19 10	व्या.	16 11	क. 12/27	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, शुक्र आश्लेषा में 5/02,	5/33	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
	8	2	शुक्र	22 08	पुष्य	22 07	हर्ष	17 07	कर्क	श्री रथयात्रा (पुरी)	5/34	19/38	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	9	3	शनि	24 36	आश्ले	25 09	वज्र	18 08	सिं. 25/09	गुरु हस्त (3) में 13/01, गण्डमूल विचार	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	10	4	रवि	27 01	मघा	28 09	सिद्धि	19 08	सिंह	भद्रा 13/49 से 27/01 तक, गण्डमूल 28/09 तक,	5/35	19/37	5/35	19/18	5/32	19/24	6/12	19/16
	11	5	चंद्र	29 16	पू.फा.	पूरा दिन	व्य.	20 02	सिंह		5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
	12	6	मंग	पू. दि.	पू.फा.	6 58	वरी	20 43	कं. 13/37	स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी	5/36	19/37	5/36	19/18	5/33	19/23	6/13	19/16
	13	6	बुध	7 08	उ.फा.	9 24	परि	21 00	कन्या	विवस्वत सप्तमी	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/15
	14	7	गुरु	8 26	हस्त	11 17	शिव	20 48	तु. 23/58	भद्रा 8/26 से 20/44 तक,	5/37	19/36	5/37	19/17	5/34	19/23	6/14	19/15
	15	8	शुक्र	9 02	चित्रा	12 28	सिद्ध	19 59	तुला		5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/15
	16	9	शनि	8 49	स्वा.	12 50	साध्य	18 31	तुला	सूर्य कर्क राशि में 14/34, श्रावण संक्रां. 45 मुहू., पुण्यकाल प्रातः 8/10 से,	5/38	19/36	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
	17	10	रवि	7 45	विशा.	12 21	शुभ	16 21	वृ. 6/33	भद्रा 18/49 से, देवशयनी एकादशी (स्मार्तों के लिए)	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
	18	11	चंद्र	5 52	अनु.	11 05	शुक्ल	13 32	वृश्चिक	भ. 5/52 तक, देवशयनी एकादशी व्रत (वैष्णव), शुक्र सिंह में 5/41, **A**	5/39	19/35	5/38	19/16	5/36	19/21	6/15	19/14
	00	12	चंद्र	27 15	∞	00 00	∞	00 00	∞	द्वादशी तिथि का क्षय ∞ ∞								
	19	13	मंग	24 02	ज्ये.	9 07	ब्रह्म	10 10	ध. 9/07	भौम प्रदोष व्रत, सूर्य पुष्य में 26/26	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/14
	20	14	बुध	20 23	मूला	6 35	ऐंद्र	6 20	धनु	भद्रा 20/23 से,	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
	∞	∞	∞	00 00	पू.षा.	27 40	वैधृ	26 11	∞	∞ ∞ ∞								
	21	15	गुरु	16 30	उ.षा.	24 35	विष्क	21 52	म. 8/54	भ. 6/27 तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, ब्यास पूजा, कोकिला **B**	5/41	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
श्रावण कृष्ण पक्ष	22	1	शुक्र	12 34	श्रव.	21 30	प्रीति	17 33	मकर	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन सिंह में 23/11,	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
	23	2	शनि	8 45	धनि.	18 39	आयु	13 23	कुं. 8/02	भद्रा 19/00 से 29/15 तक, पंचक प्रारम्भ 8/02, बुध वक्री 8/32, ∞	5/42	19/33	5/42	19/13	5/39	19/19	6/16	19/13
	00	3	शनि	29 15	∞	00 00	∞	00 00	∞	तृतीया तिथि का क्षय ∞								
	24	4	रवि	26 13	शत	16 11	सौभा	9 31	कुम्भ	श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 9/53 पर)	5/43	19/32	5/42	19/13	5/40	19/19	6/17	19/13
	25	5	चंद्र	23 46	पू.भा.	14 16	शोभ अति	6 03 27 07	मी. 8/44	नागपंचमी (मरुस्थले)	5/44	19/32	5/43	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
	26	6	मंग	22 02	उ.भा.	13 01	सुक	24 45	मीन	भद्रा 22/02 से,	5/45	19/31	5/43	19/12	5/41	19/18	6/17	19/12
	27	7	बुध	21 02	रेव	12 29	धृति	22 59	मे. 12/29	भद्रा 9/32 तक, पंचक समाप्त 12/29, गण्डमूल विचार	5/45	19/30	5/44	19/11	5/42	19/17	6/18	19/12
	28	8	गुरु	20 47	अश्वि	12 42	शूल	21 49	मेष	राहु रेवती (2), केतु हस्त (4) में 22/45, गण्डमूल 12/42 तक	5/46	19/30	5/44	19/11	5/42	19/17	6/18	19/12
	29	9	शुक्र	21 13	भर	13 36	गंड	21 11	वृ. 19/56	शुक्र पू.फा. (1) में 7/38, बुधास्त पश्चिमे 17/32 घं. मिं.	5/47	19/29	5/44	19/10	5/43	19/17	6/18	19/11
	30	10	शनि	22 15	कृति	15 07	वृद्धि	21 01	वृष	भद्रा 9/44 से 22/15 तक	5/47	19/27	5/45	19/09	5/43	19/16	6/19	19/11
	31	11	रवि	23 46	रोहि	17 09	ध्रुव	21 15	वृष	कामिका एकादशी व्रत	5/48	19/27	5/46	19/09	5/44	19/15	6/19	19/10

A चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रारंभ, मंगल मेष में 9/13 **B** व्रत, शिवशयनोत्सव, शनि पुष्य (2) में 9/30, चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ

वि. संवत् 2062, अगस्त मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
श्रावण कृष्ण	1	12	चंद्र	25 40	मृग	19 34	व्या.	21 46	मि. 6/19	अगस्त मास प्रारम्भ, तिलक पुण्य तिथि	5/48	19/25	5/46	19/08	5/45	19/13	6/20	19/10
	2	13	मंग	27 50	आर्द्रा	22 16	हर्ष	22 30	मिथुन	भद्रा 27/50 से, भौम प्रदोष व्रत, सूर्य आश्लेष में 25/20	5/49	19/25	5/47	19/07	5/45	19/12	6/20	19/09
	3	14	बुध	पूरा दिन	पुर्न	25 08	वज्र	23 22	क. 18/24	भद्रा 17/00 तक,	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
	4	14	गुरु	6 09	पुष्य	28 07	सिद्धि	24 19	कर्क	अमावस पितृ कार्येषु	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
	5	अमा	शुक्र	8 35	आश्ले	पूरा दिन	व्य.	25 18	कर्क	हरियाली अमावस स्नानदानादि, गुरु हस्त (4) में 12/18, गण्डमूल	5/51	19/23	5/49	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
श्रावण शुक्ल पक्ष	6	1	शनि	11 01	आश्ले	7 07	वरी	26 16	सिं. 7/07	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारंभ, चन्द्रदर्शन, मेला चिन्तपूर्णी (हि. प्र.) प्रारम्भ	5/52	19/22	5/49	19/04	5/47	19/09	6/21	19/07
	7	2	रवि	13 24	मघा	10 05	परि	27 08	सिंह	गण्डमूल 10/05 तक,	5/52	19/21	5/50	19/03	5/48	19/08	6/22	19/07
	8	3	चंद्र	15 37	पू.फा.	12 53	शिव	27 50	कं. 19/33	भद्रा 28/35 से, मधुस्रवा (सिंघारा) तीज, हरियाली तीज,	5/53	19/20	5/51	19/02	5/49	19/07	6/22	19/06
	9	4	मंग	17 33	उ.फा.	15 26	सिद्ध	28 16	कन्या	भ. 17/33 तक, वरद् चतुर्थी, दूर्वा गणपति व्रत, शुक्र उ.फा. में 11/01	5/53	19/19	5/51	19/01	5/49	19/06	6/22	19/05
	10	5	बुध	19 03	हस्त	17 36	साध्य	28 20	कन्या	नाग पंचमी, मंगल भरणी में 12/51, वक्री बुध पुष्य (4) में 13/10, **A**	5/54	19/18	5/52	19/00	5/50	19/05	6/22	19/05
	11	6	गुरु	20 00	चित्रा	19 13	शुभ	27 55	तु. 6/29	कल्की जयंती	5/55	19/17	5/52	18/59	5/50	19/04	6/22	19/04
	12	7	शुक्र	20 17	स्वा.	20 11	शुक्ल	26 57	तुला	भद्रा 20/17 से, शुक्र कन्या में 6/08, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती	5/56	19/16	5/53	18/58	5/51	19/03	6/23	19/03
	13	8	शनि	19 49	विशा.	20 25	ब्रह्म	25 23	वृ. 14/26	भद्रा 8/03 तक, श्री दुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी	5/57	19/15	5/54	18/58	5/52	19/02	6/23	19/03
	14	9	रवि	18 33	अनु.	19 53	ऐंद्र	23 11	बृश्चिक	बुध पूर्व से उदय 5/10	5/57	19/13	5/54	18/57	5/52	19/02	6/23	19/02
	15	10	चंद्र	16 33	ज्ये.	18 36	वैधृ	20 23	ध. 18/36	भद्रा 27/13 से, भारत स्वतन्त्रता दिवस, गण्डमूल	5/58	19/12	5/55	18/56	5/53	19/01	6/23	19/02
	16	11	मंग	13 53	मूला	16 40	विष्क	17 03	धनु	भ. 13/53 तक, सूर्य सिंह में 22/57, भाद्रपद संक्रान्ति, पुण्यकाल **B**	5/59	19/11	5/55	18/55	5/53	19/00	6/24	19/01
	17	12	बुध	10 41	पू.षा.	14 12	प्रीति	13 17	म. 19/31	प्रदोष व्रत,	5/59	19/10	5/56	18/54	5/54	18/59	6/24	19/01
	18	13/	गुरु	7 05	उ.षा.	11 22	आयु	9 12	मकर	भद्रा 27/15 से,	6/00	19/09	5/56	18/53	5/55	18/58	6/24	19/00
	oo	14	गुरु	27 15	oo	oo oo	सौभा	28 57	oo	चतुर्दशी तिथि का क्षय oo oo								
	19	15	शुक्र	23 23	श्रव	8 20	शोभ	24 40	कुं. 18/49	भ. 13/19 तक, श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (भद्रा विचार देखें पृष्ठ 65), **C**	6/00	19/08	5/57	18/52	5/55	18/56	6/24	19/00
		0	oo	oo oo	धनि	29 19	oo	oo oo	oo	oo oo oo								
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	20	1	शनि	19 39	शत	26 30	अति	20 31	कुम्भ	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र हस्त (1) में 16/16,	6/01	19/06	5/57	18/51	5/56	18/55	6/24	19/00
	21	2	रवि	16 15	पू.भा.	24 03	सुक	16 38	मी. 18/37	भद्रा 26/47 से, बुध आश्ले. में 20/10	6/01	19/05	5/58	18/50	5/56	18/54	6/25	18/59
	22	3	चंद्र	13 18	उ.भा.	22 08	धृति	13 09	मीन	भद्रा 13/18 तक, कज्जली तीज, श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत, बहुला- **D**	6/02	19/04	5/58	18/49	5/57	18/53	6/25	18/58
	23	4	मंग	10 59	रेव	20 52	शूल	10 10	मे. 20/52	पंचक समाप्त 20/52, सूर्य सायन कन्या में 6/15, शरद् ऋतु प्रारंभ, गंडमूल	6/02	19/03	5/59	18/48	5/58	18/52	6/25	18/57
	24	5	बुध	9 23	अश्वि	20 22	गंड / वृद्धि	7 46 / 30 01	मेष	चन्दन षष्ठी, हल षष्ठी, गण्डमूल	6/03	19/02	5/59	18/47	5/58	18/51	6/25	18/56
	25	6	गुरु	8 34	भर	20 38	ध्रुव	28 53	वृ. 26/50	भद्रा 8/34 से 20/33 तक, गुरु चित्रा (1) में 12/27,	6/04	19/01	5/59	18/46	5/59	18/50	6/26	18/55
	26	7	शुक्र	8 32	कृति	21 40	व्या.	28 20	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त (चन्द्रोदय जालं. में 23/12 घं. मिं. **E**	6/04	19/00	6/00	18/45	5/59	18/49	6/26	18/54
	27	8	शनि	9 15	रोह.	23 23	हर्ष	28 19	वृष	श्री कृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव, गोकुलाष्टमी,	6/05	18/59	6/00	18/44	6/00	18/47	6/26	18/53
	28	9	रवि	10 37	मृग	25 39	वज्र	28 43	मि. 12/27	भद्रा 23/33 से, गुग्गा नवमी	6/06	18/57	6/01	18/43	6/00	18/46	6/27	18/52
	29	10	चंद्र	12 29	आर्द्रा	28 18	सिद्धि	29 24	मिथुन	भद्रा 12/29 तक,	6/07	18/55	6/01	18/42	6/01	18/45	6/27	18/51
	30	11	मंग	14 42	पुर्न	पूरा दिन	व्य.	पूरा दिन	क. 24/28	सूर्य पू.फा. में 18/58, अजा एकादशी व्रत	6/07	18/54	6/02	18/40	6/02	18/44	6/28	18/50
	31	12	बुध	17 07	पुर्न	7 13	व्य.	6 17	कर्क	शुक्र चित्रा में 23/50, वत्स द्वादशी	6/08	18/53	6/02	18/39	6/02	18/43	6/28	18/49

A शनि पूर्व से उदय 25/43 **B** संक्रांति सायं 4/33 से, पवित्रा एकादशी व्रत, बुध मार्गी 9/18, शनि पुष्य (3) में 11/47 **C** पंचक प्रारंभ 18/49, ऋषि तर्पण, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, ऋग्-अथर्व, युर्ज-उपाक्रम **D** चतुर्थी (चंद्रोदय जालंधर में घं. 8 मिं. 53 पर) **E** पर) दूर्वाष्टमी व्रत

वि. संवत् 2062, सितम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
भा. कृ.	1	13	गुरु	19 35	पुष्य	10 13	वरी	7 15	कर्क	भद्रा 19/35 से, बुध सिंह में 13/22, प्रदोष व्रत, सितम्बर मास प्रारंभ	6/08	18/52	6/03	18/39	6/03	18/42	6/29	18/48
	2	14	शुक्र	22 00	आश्ले	13 12	परि	8 12	सिं. 13/12	भ. 8/48 तक, गण्डमूल विचार, प्लूटो मार्गी 16/08	6/09	18/51	6/04	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	30	शनि	24 15	मघा	16 04	शिव	9 05	सिंह	कुशाग्रहणी पिठौरी अमावस, गण्डमूल, अगस्त्योदय	6/10	18/50	6/04	18/36	6/04	18/40	6/29	18/46
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	4	1	रवि	26 17	पू.फा.	18 44	सिद्धि	9 49	कं. 25/21	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध पूर्व में अस्त 5/23,	6/11	18/49	6/05	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	5	2	चंद्र	28 01	उ.फा.	21 07	साध्य	10 21	कन्या	चन्द्रदर्शन, 45 मुहूर्त्ती	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
	6	3	मंग	29 23	हस्त	23 10	शुभ	10 38	कन्या	हरितालिका तृतीया, गौरी तीज, शुक्र तुला में 16/37, वराह जयंती, सामवेदि उपाकर्म,	6/12	18/47	6/06	18/33	6/06	18/35	6/29	18/44
	7	4	बुध	पू. दि.	चित्रा	24 49	शुक्ल	10 37	तु. 12/03	भ. 17/50 से, सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी, पत्थर चौथ **A**	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	4	गुरु	6 17	स्वा.	25 58	ब्रह्म	10 14	तुला	भद्रा 6/17 तक, बुध पू.फा. में 19/55, ऋषि पंचमी	6/13	18/43	6/06	18/31	6/07	18/33	6/30	18/43
	9	5	शुक्र	6 41	विशा.	26 35	ऐंद्र	9 27	वृ. 20/29		6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
	10	6/	शनि	6 31	अनु.	26 36	वैधृ	8 13	वृश्चिक	भद्रा 29/44 से, सूर्य षष्ठी, मुक्ताभरण सप्तमी, सन्तान सप्तमी	6/14	18/40	6/07	18/28	6/08	18/30	6/30	18/41
		7	शनि	29 44	००	00 00	००	00 00	००	सप्तमी का क्षय ०० ००								
	11	8	रवि	28 20	ज्ये.	26 00	विष्क प्रीति	6 30 / 28 16	ध. 26/00	भ. 17/02 तक, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रां., मंगल कृतिका में 27/43, **B**	6/15	18/38	6/08	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
	12	9	चंद्र	26 21	मूला	24 49	आयु	25 35	धनु	श्रीचन्द नवमी (उदासीन), शुक्र स्वाती में 10/12, श्री भागवत् सप्ताहारम्भ	6/16	18/37	6/08	18/26	6/09	18/28	6/30	18/40
	13	10	मंग	23 50	पू.षा.	23 06	सौभा	22 27	म. 28/36	सूर्य उ.फा. में 12/46,	6/16	18/37	6/09	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
	14	11	बुध	20 54	उ.षा.	20 57	शोभ	18 57	मकर	भद्रा 10/22 से 20/54 तक, पद्मा एकादशी व्रत, शनि पुष्य (4) में 6/47	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
	15	12	गुरु	17 39	श्रव	18 30	अति	15 12	कुं. 29/11	पंचकारम्भ 29/11, वामन द्वादशी, प्रदोष व्रत, बुध उ.फा. में 19/43, **E**	6/17	18/35	6/10	18/22	6/11	18/24	6/30	18/37
	16	13	शुक्र	14 15	धनि	15 52	सुक	11 17	कुम्भ	सूर्य कन्या में 22/51, आश्विन संक्रान्ति, पुण्यकाल संक्रां. सायं 4/27 से,	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
	17	14	शनि	10 49	शत	13 14	धृति शूल	7 20 / 27 29	मी. 29/22	भ. 10/49 से 21/10 तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, श्रीसत्यनारायण **C**	6/18	18/31	6/11	18/20	6/12	18/22	6/31	18/35
	18	15	रवि	7 31	पू.भा.	10 46	गंड	23 51	मीन	भाद्रपद पूर्णिमा स्नानदान, **श्राद्ध (पितृ) पक्ष प्रारंभ**, प्रतिपदा का श्राद्ध, **D**	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
		1	रवि	28 31	००	00 00	००	00 00	००	प्रतिपदा का क्षय								
आश्विन कृष्ण पक्ष	19	2	चंद्र	25 58	उ.भा.	8 37	वृद्धि	20 33	मीन	द्वितीया का श्राद्ध, गण्डमूल 8/37 बाद	6/20	18/28	6/12	18/17	6/13	18/19	6/31	18/34
	20	3	मंग	24 00	रेव	6 57	ध्रुव	17 42	मे. 6/57	भ. 12/59 से 24/00 तक, तृतीया का श्राद्ध, पंचक समाप्त 6/57,	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
		0	००	00 00	अश्वि	29 52	००	00 00	००	०० ०० ००								
	21	4	बुध	22 43	भर	29 30	व्या.	15 24	मेष	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय रात्रि 8 घं. 28 मिं. पर) चतुर्थी का श्राद्ध	6/22	18/26	6/13	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	5	गुरु	22 11	कृति	29 53	हर्ष	13 40	वृ. 11/32	पंचमी का श्राद्ध, बुध हस्त में 27/05, सूर्य सायन तुला में 27/53, **F**	6/22	18/25	6/13	18/14	6/15	18/15	6/32	18/31
	23	6	शुक्र	22 26	रोह.	पू. दि.	वज्र	12 34	वृष	भद्रा 22/26 से, शुक्र विशाखा में 24/24, षष्ठी का श्राद्ध	6/23	18/24	6/14	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
	24	7	शनि	23 26	रोह.	7 02	सिद्धि	12 03	मि. 19/52	भद्रा 10/56 तक, सप्तमी श्राद्ध	6/24	18/23	6/14	18/12	6/16	18/13	6/32	18/29
	25	8	रवि	25 04	मृग	8 51	व्य.	12 05	मिथुन	श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, अष्टमी का श्राद्ध	6/24	18/21	6/15	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	26	9	चंद्र	27 11	आर्द्रा	11 15	वरी	12 32	मिथुन	नवमी श्राद्ध, मातृ नवमी, सूर्य हस्त में 28/17, सौभाग्यवती श्राद्ध	6/25	18/20	6/15	18/09	6/17	18/10	6/33	18/27
	27	10	मंग	29 36	पुर्न	14 02	परि	13 17	क. 7/18	भद्रा 16/24 से 29/36 तक, दशमी का श्राद्ध	6/25	18/18	6/16	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
	28	11	बुध	पू. दि.	पुष्य	17 01	शिव	14 12	कर्क	गुरु चित्रा 3 तुला में 5/35, एकादशी श्राद्ध	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
	29	11	गुरु	8 06	आश्ले	20 00	सिद्ध	15 08	सिं. 20/00	इंदिरा एकादशी व्रत, द्वादशी का श्राद्ध 8/06 उप., राहु रेव (1) केतु **G**	6/26	18/15	6/17	18/06	6/19	18/06	6/33	18/24
	30	12	शुक्र	10 32	मघा	22 51	साध्य	15 58	सिंह	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध 10/32 बाद, गजच्छाया योग 10/32 **H**	6/27	18/14	6/18	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

A (चन्द्रदर्शन निषेध) (चन्द्रास्त घं. 20 मिं. 34 पर) संवत्सरी पर्व (जैन) **B** गुरु चित्रा (2) में 24/15, राधाष्टमी **C** व्रत, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा का श्राद्ध 10/50 के बाद, मेला सोढल (जालंधर), बुध कन्या में 14/37 **D** आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ **E** श्रवण द्वादशी व्रत **F** दक्षिण गोल प्रारम्भ, **G** हस्त (3) में 20/07 **H** उप., बुध चित्रा में 22/43

वि. संवत् 2062, अक्तूबर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टे. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आ. कृ.	1	13	शनि	12 42	पू.फा.	25 24	शुभ	16 36	सिंह	भ. 12/42 से 25/38 तक, शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृत का श्राद्ध, A	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
	2	14	रवि	14 33	उ.फा.	27 35	शुक्ल	16 58	कं. 7/58	शुक्र वृश्चिक में 20/18, चतुर्दशी का श्राद्ध दुपै. 14/33 तक, गांधी जयं.	6/28	18/10	6/19	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
	3	30	चंद्र	15 58	हस्त	29 22	ब्रह्म	17 00	कन्या	सोमवती अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, स्नानदानादि, सूर्यग्रहण (देखें पृष्ठ नं 11)	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
आश्विन शुक्ल पक्ष	4	1	मंग	16 56	चित्रा	पू. दि.	ऐंद्र	16 42	तु. 18/05	शरद् नवरात्र प्रारंभ, आश्विन शुक्ल पक्ष प्रा., घटस्थापन, दुर्गा पूजन, B	6/30	18/08	6/20	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
	5	2	बुध	17 27	चित्रा	6 41	वैधृ	16 02	तुला	चन्द्रदर्शन, 15 मुहूर्ति, शुक्र अनु. में 19/42,	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
	6	3	गुरु	17 31	स्वा.	7 34	विष्क	15 01	वृ. 25/57	भद्रा 29/20 से, बुध पश्चिम से उदय 6/15, गुरु पश्चिम में अस्त 10/45	6/31	18/06	6/21	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
	7	4	शुक्र	17 08	विशा	8 01	प्रीति	13 39	वृश्चिक	भद्रा 17/08 तक,	6/31	18/05	6/21	17/56	6/24	17/56	6/35	18/19
	8	5	शनि	16 19	अनु.	8 02	आयु	11 56	वृश्चिक	उपांङ्ग ललिता व्रत, गण्डमूल 8/02 उप.	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
	9	6	रवि	15 05	ज्ये.	7 37	सौभा	9 53	ध. 7/37	बुध स्वाती में 8/11,	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
	10	7	चंद्र	13 27	मूला	6 50	शोभ	7 31	धनु	भ. 13/27 से 24/28 तक, सूर्य चित्रा में 17/10, श्रीसरस्वती आवाहन C	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
		0	oo	oo oo	पूषा	29 41	अति	28 52	oo	oo oo oo								
	11	8	मंग	11 29	उषा.	28 13	सुक	25 57	म. 11/20	श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, शस्त्रादि पूजा	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
	12	9	बुध	9 13	श्रव.	26 29	धृति	22 49	मकर	महानवमी, नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा), सरस्वती D	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
	13	10	गुरु	6 42	धनि.	24 35	शूल	19 31	कुं. 13/33	भद्रा 17/22 से 28/01 तक, पंचक प्रारम्भ 13/33, गुरु चित्रा (4) E	6/36	17/57	6/25	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
	oo	11	गुरु	28 01	oo	oo oo	oo	oo oo	oo	एकादशी तिथि का क्षय								
	14	12	शुक्र	25 17	शत.	22 36	गंड	16 08	कुम्भ	पापांकुशा एकादशी व्रत वैष्णव	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
	15	13	शनि	22 34	पू.भा.	20 38	वृद्धि	12 45	मी. 15/07	शनि प्रदोष व्रत	6/38	17/54	6/26	17/47	6/28	17/47	6/37	18/12
	16	14	रवि	20 01	उ.भा.	18 48	ध्रुव व्या.	9 26 30 17	मीन	भद्रा 20/01 से, कोजागर व्रत, व्रत शरद् पूर्णिमा,	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
	17	15	चंद्र	17 44	रेव	17 14	हर्ष	27 25	मे. 17/14	भ. 6/53 तक, सूर्य तुला में 10/47, कार्तिक संक्रान्ति, शरद् पूर्णिमा F	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
कार्तिक कृष्ण पक्ष	18	1	मंग	15 51	अश्वि	16 04	वज्र	24 55	मेष	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध विशा में 8/55,	6/40	17/51	6/28	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
	19	2	बुध	14 29	भर	15 25	सिद्धि	22 52	वृ. 21/21	भ. 26/07 से,	6/41	17/50	6/28	17/43	6/32	17/43	6/38	18/08
	20	3	गुरु	13 45	कृति	15 23	व्य.	21 19	वृष	व्रत करवा चौथ (करक चतुर्थी) चंद्रोदय जालं. में रात्रि लगभग 7/43 पर G	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
	21	4	शुक्र	13 42	रोह.	16 01	वरी	20 20	मि. 28/36	वक्री मंगल भरणी (4) में 16/20,	6/42	17/48	6/30	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
	22	5	शनि	14 22	मृग	17 21	परि	19 54	मिथुन		6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
	23	6	रवि	15 43	आर्द्रा	19 19	शिव	19 58	मिथुन	भ. 15/43 से 28/41 तक, सूर्य स्वाती 27/45, स्कन्द षष्ठी, सूर्य H	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
	24	7	चंद्र	17 39	पुर्न	21 50	सिद्ध	20 27	क. 15/10		6/44	17/45	6/32	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
	25	8	मंग	19 59	पुष्य	24 42	साध्य	21 13	कर्क	व्रत अहोई अष्टमी, बुध वृश्चिक में 17/11, राधाष्टमी, शनि आश्ले. में 21/09	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
	26	9	बुध	22 31	आश्ले	27 42	शुभ	22 07	सिं. 27/42	गण्डमूल विचार, नैपच्यून मार्गी 28/50	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
	27	10	गुरु	25 00	मघा	30 38	शुक्ल	23 00	सिंह	भद्रा 11/46 से 25/00 तक,	6/47	17/42	6/34	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
	28	11	शुक्र	27 13	पू.फा.	पू. दि.	ब्रह्म	23 41	सिंह	रमा एकादशी व्रत, बुध अनु. में 8/14, गुरु स्वाती में 26/54,	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
	29	12	शनि	29 00	पू.फा.	9 15	ऐंद्र	24 02	कं. 15/50	गोवत्स द्वादशी	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
	30	13	रवि	30 14	उ.फा.	11 26	वैधृ	24 00	कन्या	भद्रा 30/14 से, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, शुक्र धनु में 13/35, J	6/50	17/38	6/36	17/33	6/40	17/32	6/42	18/03
	31	14	चंद्र	पूरा दिन	हस्त	13 03	विष्क	23 30	तु. 25/39	भ. 18/33 तक, श्री हनुमान जयंती, नरक चौदश, दीपदानं	6/51	17/38	6/37	17/33	6/41	17/31	6/43	18/02

गुरु अस्त 6 अक्टू.

A मंगल वक्री 27/40 **B** बुध तुला में 25/40, अग्रसेन जयंती, मातामह (नाना) का श्राद्ध **C** पूजनं (मूले पूषा च) **D** विसर्जन, अपराजिता पूजन, बलिदान दिवस **E** में 19/01, पापांकुशा एका. व्रत स्मा. (गृहस्थियों के लिए) **F** स्नानदानादि, ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, पंचक समाप्त 17/14, शुक्र ज्ये. में 22/28, ऋषि बाल्मीकि जयं., कार्तिक स्नान प्रा., **G** श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, भ. 13/45 तक **H** सायन वृश्चिक में 13/12, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **J** यमाय दीपदान, धनवन्तरी जयन्ती

वि. संवत् 2062, नवम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
का. कृ.	1	14	मंग	6 52	चित्रा	14 06	प्रीति	22 33	तुला	भौमवती अमावस, महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कुबेर पूजा, महावीर निर्वाण	6/51	17/35	6/38	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	30	बुध	6 55	स्वा	14 35	आयु	21 09	तुला	अमावस स्नानदानादौ, कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारंभ, अन्नकूट-गोवर्धन A	6/52	17/34	6/39	17/34	6/42	17/30	6/44	18/01
	o	/1	बुध	30 25	००	00 00	००	00 00	००	प्रतिपदा का क्षय								
कार्तिक शुक्ल पक्ष	3	2	गुरु	29 26	विशा	14 34	सौभा	19 21	वृ. 8/37	चंद्रदर्शन, 30 मुहू., भातृ (भाई) दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा जयंती, B	6/53	17/33	6/39	17/33	6/43	17/29	6/44	18/01
	4	3	शुक्र	28 05	अनु.	14 07	शोभ	17 14	वृश्चिक	ईद-उल-फितर	6/54	17/32	6/40	17/32	6/44	17/28	6/45	18/00
	5	4	शनि	26 26	ज्ये.	13 19	अति	14 50	ध. 13/19	भद्रा 15/16 से 26/26 तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल	6/54	17/31	6/41	17/31	6/45	17/27	6/45	18/00
	6	5	रवि	24 35	मूला	12 16	सुक	12 14	धनु	सूर्य विशाखा में 11/49, गण्डमूल 12/16 तक, ज्ञान पंचमी	6/55	17/30	6/42	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
	7	6	चंद्र	22 35	पू.षा.	11 02	धृति शूल	9 29 30 39	म. 16/43	सूर्य षष्ठी — गुरु उदय 3 नवं.	6/56	17/30	6/42	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	8	7	मंग	20 30	उ.षा.	9 42	गंड	27 46	मकर	भद्रा 20/30 से,	6/57	17/29	6/43	17/29	6/47	17/25	6/46	17/58
	9	8	बुध	18 24	श्रव	8 18	वृद्धि	24 52	कुं. 19/36	भद्रा 7/27 तक, पंचक प्रारम्भ 19/36, गोपाष्टमी	6/58	17/28	6/44	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
	10	9	गुरु	16 17	धनि.	6 54	ध्रुव	21 59	कुम्भ	अक्षय नवमी, कुष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत	6/59	17/28	6/44	17/28	6/49	17/24	6/47	17/58
	००	००	००	००	शत.	29 31	००	00 00	००	०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००
	11	10	शुक्र	14 14	पू.भा.	28 13	व्या.	19 08	मी. 22/32	भद्रा 25/15 से, भीष्मपंचक प्रारम्भ	7/00	17/27	6/45	17/27	6/50	17/23	6/48	17/57
	12	11	शनि	12 16	उ.भा.	27 02	हर्ष	16 22	मीन	भद्रा 12/16 तक, बुध ज्ये. में 7/50, देवप्रबोधिनी एकादशी, शुक्र C	7/01	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	13	12	रवि	10 26	रेव	26 01	वज्र	13 43	मे. 26/01	पंचक समा. 26/01, तुलसी विवाह, प्रदोष व्रत, गुरु स्वा. (2) में 13/37	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	13	चंद्र	8 48	अश्वि	25 15	सिद्धि	11 15	मेष	बैकुण्ठ चौदश, बुध वक्री 11/10, बाल दिवस	7/03	17/26	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
	15	14/	मंग	7 27	भर	24 49	व्य.	8 59	वृ. 30/46	भ. 7/27 से 18/58 तक, कार्तिक पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती, D	7/04	17/25	6/48	17/25	6/53	17/21	6/50	17/56
	o	15	मंग	30 28	००	00 00	००	00 00	००	पूर्णिमा का क्षय ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	16	मा.कृ	बुध	29 55	कृति	24 48	वरी परि	7 02 29 25	वृष	सूर्य वृश्चिक में 10/32, मार्गशीर्ष संक्रांति, 30 मुहू., पुण्यकाल E	7/05	17/25	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/56
	17	2	गुरु	29 56	रोह.	25 18	शिव	28 14	वृष		7/06	17/24	6/50	17/24	6/55	17/20	6/51	17/55
	18	3	शुक्र	30 32	मृग.	26 21	सिद्ध	27 30	मि. 13/45	भद्रा 18/14 से 30/32 तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	7/07	17/23	6/51	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	19	4	शनि	पू. दि.	आर्द्रा	28 01	साध्य	27 15	मिथुन	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चंद्रोदय रात्रि घं. 20 मिं. 03 पर), सूर्य अनु. में F	7/08	17/23	6/51	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	4	रवि	7 45	पुर्न	30 14	शुभ	27 26	क. 23/38		7/09	17/23	6/52	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	5	चंद्र	9 33	पुष्य	पू. दि.	शुक्ल	28 00	कर्क	वक्री मंगल भर (1) में 17/35,	7/10	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
	22	6	मंग	11 49	पुष्य	8 55	ब्रह्म	28 49	कर्क	भद्रा 11/49 से 25/06 तक, शनि वक्री 14/27, सूर्य सायन धनु में 10/45,	7/11	17/22	6/54	17/22	6/59	17/18	6/54	17/55
	23	7	बुध	14 23	आश्ले	11 53	ऐंद्र	29 44	सिं. 11/53	काल भैरवाष्टमी, गण्डमूलादि	7/12	17/22	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	24	8	गुरु	16 59	मघा	14 56	वैधृ	30 34	सिंह	गण्डमूल 14/56 तक	7/13	17/21	6/55	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	25	9	शुक्र	19 22	पू.फा.	17 47	विष्क	पू. दि.	कं. 24/26		7/14	17/21	6/56	17/21	7/02	17/17	6/56	17/55
	26	10	शनि	21 18	उ.फा.	20 13	विष्क	7 09	कन्या	भद्रा 8/15 से 21/18 तक, वक्री बुध अनु. (1) में 6/15	7/15	17/21	6/57	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
	27	11	रवि	22 35	हस्त	22 03	प्रीति आयु	7 20 30 59	कन्या	उत्पन्ना एकादशी व्रत	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	28	12	चंद्र	23 09	चित्रा	23 10	सौभा	30 03	तु. 10/42	शुक्र उ.षा. में 22/02, वक्री बुध विशा. (4) में 27/00,	7/16	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/57	17/55
	29	13	मंग	22 57	स्वा.	23 34	शोभ	28 33	तुला	भद्रा 22/57 से, भौम प्रदोष व्रत, गुरु स्वा. (3) में 13/25	7/17	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/58	17/55
	30	14	बुध	22 02	विशा.	23 16	अति	26 30	वृ. 17/24	भद्रा 10/30 तक, बुध पूर्व से उदय 26/43,	7/18	17/20	7/00	17/20	7/06	17/17	6/59	17/55

A पूजा, विश्वकर्मा व बली पूजा **B** गुरु उदय पूर्वे 6/15 **C** पू.षा. में 26/50, चातुर्मास्य व्रत नियमादि समाप्त, **D** भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, मेला पुष्कर व रामतीर्थ, यूरेनस मार्गी 29/42
E संक्रांति प्रातः सूर्योदय से, वक्री बुध अनु (4) में 11/16 **F** 17/54, बुध पश्चिम में अस्त

वि. संवत् 2062, दिसम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
	1	30	गुरु	20 31	अनु.	22 22	सुक	23 59	वृश्चिक	अमावस (पितृकार्य, स्नानदानादि), राहु उ.भा. (4) केतु हस्त (2) में 17/22	7/19	17/20	7/00	17/20	7/07	17/16	6/59	17/56
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	2	मा.शु	शुक्र	18 31	ज्ये.	21 01	धृति	21 06	ध. 21/01	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य ज्ये. में 22/09, गण्डमूलादि	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
	3	2	शनि	16 10	मूला	19 21	शूल	17 57	धनु	चन्द्रदर्शन, 30 मुहू., शुक्र मकर में 17/37, गण्डमूल 19/21 तक	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	4	3	रवि	13 39	पू.षा.	17 31	गंड	14 40	म. 23/02	भद्रा 24/22 से, बुध मार्गी 7/58	7/21	17/20	7/02	17/20	7/09	17/16	7/01	17/56
	5	4	चंद्र	11 04	उ.षा.	15 39	वृद्धि	11 21	मकर	भद्रा 11/04 तक, प्लूटो धनु में 17/08	7/22	17/20	7/03	17/20	7/10	17/16	7/02	17/57
	6	5	मंग	8 33	श्रव	13 52	ध्रुव व्या.	8 05 28 56	कुं. 25/02	पंचक प्रारम्भ 25/02, स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी	7/23	17/20	7/04	17/20	7/11	17/16	7/03	17/57
	∞	6	मंग	30 12	∞	∞ ∞	∞	∞ ∞	∞	षष्ठी तिथि का क्षय ∞ ∞	∞	∞	∞	∞	∞	∞	∞	∞
	7	7	बुध	28 04	धनि	12 16	हर्ष	25 59	कुम्भ	भद्रा 28/04 से, मित्र सप्तमी	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
	8	8	गुरु	26 13	शत	10 54	वज्र	23 14	मी. 28/03	भद्रा 15/09 तक, श्री दुर्गाष्टमी	7/24	17/20	7/06	17/20	7/12	17/17	7/04	17/57
	9	9	शुक्र	24 39	पू.भा.	9 49	सिद्धि	20 43	मीन	बुध अनु. में 27/34	7/25	17/20	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	10	10	शनि	23 22	उ.भा.	9 00	व्य.	18 26	मीन	मंगल मार्गी 9/30,	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	11	11	रवि	22 24	रेव	8 30	वरी	16 22	मे. 8/30	भ. 11/03 से 22/24 तक, पंचक समाप्त 8/30, गीता जयन्ती, A	7/27	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
	12	12	चंद्र	21 43	अश्वि	8 16	परि	14 33	मेष	गण्डमूल 8/16 तक, अखण्ड द्वादशी	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/17	7/07	17/59
	13	13	मंग	21 21	भर	8 20	शिव	12 59	वृ. 14/24	भौम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी व्रत,	7/28	17/21	7/09	17/21	7/16	17/18	7/07	17/59
	14	14	बुध	21 21	कृति	8 44	सिद्ध	11 40	वृष	भद्रा 21/21 से प्रा., पिशाचमोचन श्राद्ध	7/29	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	15	15	गुरु	21 46	रोह	9 30	साध्य	10 39	मि. 22/02	भ. 9/34 तक, सूर्य धनु में 25/09, पौष संक्रान्ति, पुण्यकाल B	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/18	7/08	17/59
पौष कृष्ण पक्ष	16	प्रति.	शुक्र	22 37	मृग	10 40	शुभ	9 58	मिथुन	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु स्वा. (4) में 16/59,	7/30	17/22	7/12	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
	17	2	शनि	23 58	आर्द्रा	12 18	शुक्ल	9 38	मिथुन		7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
	18	3	रवि	25 48	पुर्न	14 24	ब्रह्म	9 41	क. 7/50	भद्रा 12/53 से 25/48 तक,	7/31	17/23	7/13	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	19	4	चंद्र	28 04	पुष्य	16 57	ऐंद्र	10 05	कर्क	श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 8/47 पर)	7/32	17/23	7/13	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	20	5	मंग	30 39	आश्ले	19 51	वैधृ	10 47	सिं. 19/51	वक्री शनि पुष्य (4) में 8/45, गण्डमूल विचार	7/32	17/23	7/14	17/24	7/20	17/20	7/11	18/02
	21	6	बुध	पू. दि.	मघा	22 56	विष्क	11 41	सिंह	बुध ज्ये. में 18/07, सूर्य सायन मकर में 24/05, सा. उत्तरायण C	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
	22	6	गुरु	9 21	पू.फा.	26 01	प्रीति	12 39	सिंह	भद्रा 9/21 से 22/39 तक,	7/33	17/24	7/15	17/25	7/21	17/21	7/12	18/03
	23	7	शुक्र	11 56	उ.फा.	28 49	आयु	13 30	कं. 8/45		7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
	24	8	शनि	14 10	हस्त	31 08	सौभा	14 03	कन्या	शुक्र वक्री 15/09, रुक्मणि अष्टमी	7/34	17/26	7/15	17/26	7/22	17/23	7/13	18/04
	25	9	रवि	15 45	चित्रा	पू. दि.	शोभ	14 09	तु. 20/01	भद्रा 28/10 से, किसमिस दिवस	7/35	17/26	7/16	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
	26	10	चंद्र	16 34	चित्रा	8 43	अति	13 40	तुला	भद्रा 16/34 तक, पार्श्वनाथ जयंती	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
	27	11	मंग	16 30	स्वा.	9 30	सुक	12 31	बृ. 27/32	सफला एकादशी व्रत	7/36	17/27	7/17	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
	28	12	बुध	15 35	विशा	9 27	धृति	10 42	बृश्चिक	सूर्य पू.षा. में 27/24, प्रदोष व्रतम्	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
	29	13	गुरु	13 54	अनु.	8 36	शूल	8 15	ध. 31/04	भद्रा 13/54 से 24/44 तक, गण्डमूल विचार	7/36	17/29	7/17	17/29	7/24	17/26	7/15	18/06
	∞	∞	∞	∞ ∞	ज्ये.	31 04	गंड	29 15	∞	∞ ∞								
	30	14	शुक्र	11 33	मूला	29 01	वृद्धि	25 48	धनु	बुध मूला (1) धनु में 25/46, गण्डमूल 29/01 तक, अमावस (पितृकार्येषु)	7/37	17/30	7/18	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
	31	30	शनि	8 43	पू.षा.	26 38	ध्रुव	22 04	धनु	शनिवारी पौष अमावस, स्नानदानादि, पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, ∞	7/37	17/31	7/18	17/31	7/25	17/27	7/15	18/07
		/1	शनि	29 34	∞	∞ ∞	∞	∞ ∞	∞	प्रतिपदा का क्षय ∞	∞	∞	∞	∞	∞	∞	∞	∞

A मोक्षदा एकादशी व्रत, गण्डमूल B अगले दिन 7/33 तक, व्रत पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयन्ती, त्रिपुरभैरव जयन्ती C प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ

वि. संवत् 2062, जनवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2006 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
पौष शुक्ल पक्ष	1	2	रवि	26 17	उ.षा.	24 06	व्या.	18 10	म. 8/00	जनवरी, सन् 2006 ई. प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, 45 मुहू., स. सि. योगः	7/37	17/29	7/18	17/31	7/25	17/28	7/16	18/08
	2	3	चंद्र	23 03	श्रव	21 34	हर्ष	14 15	मकर	ता. 1 जिल्हेज (मु.) प्रारम्भ ; स. सि. योगः	7/37	17/30	7/19	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
	3	4	मंग	20 00	धनि	19 14	वज्र सिद्धि	10 26 / 30 51	कुं. 8/22	भद्रा 9/32 से 20/00 तक, पंचक प्रारम्भ 8/22,	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
	4	5	बुध	17 17	शत	17 13	व्य.	27 34	कुम्भ	बुध पूर्व में अस्त 11/45,	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
	5	6	गुरु	14 59	पू.भा.	15 37	वरी	24 39	मी. 9/58	गुरु विशा. (1) में 6/45, गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती (ना. शा.)	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	6	7	शुक्र	13 10	उ.भा.	14 30	परि	22 08	मीन	भद्रा 13/10 से 24/31 तक, गुरु गोबिन्द सिंह जयं. (प्राचीन परम्परा अनुसार)	7/38	17/33	7/19	17/35	7/26	17/31	7/17	18/11
	7	8	शनि	11 52	रेव	13 53	शिव	20 01	मे. 13/53	पंचक समाप्त 13/53, गण्डमूल विचार	7/38	17/34	7/19	17/36	7/26	17/32	7/17	18/12
	8	9	रवि	11 05	अश्वि	13 45	सिद्ध	18 18	मेष	बुध पू.षा. में 21/11, गण्डमूलादि (शुक्र अस्त 10 जन.)	7/38	17/36	7/19	17/36	7/26	17/33	7/17	18/12
	9	10	चंद्र	10 46	भर	14 05	साध्य	16 56	वृ. 20/14	भद्रा 22/50 से,	7/39	17/37	7/19	17/37	7/26	17/34	7/17	18/13
	10	11	मंग	10 53	कृति	14 51	शुभ	15 55	वृष	भद्रा 10/53 तक, **शुक्र पश्चिम में अस्त 27/48**, पुत्रदा एकादशी व्रत,	7/39	17/38	7/19	17/38	7/26	17/35	7/18	18/14
	11	12	बुध	11 26	रोह.	16 00	शुक्ल	15 12	मि. 28/43	प्रदोष व्रत, सूर्य उ.षा. में 5/21,	7/39	17/38	7/20	17/39	7/26	17/36	7/18	18/14
	12	13	गुरु	12 21	मृग	17 31	ब्रह्म	14 47	मिथुन	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	7/38	17/39	7/20	17/40	7/26	17/36	7/18	18/15
	13	14	शुक्र	13 39	आर्द्रा	19 24	ऐंद्र	14 39	मिथुन	भ. 13/39 से 26/29 तक, **वक्री शुक्र धनु में 18/50, लोहड़ी पर्व, A**	7/38	17/39	7/19	17/40	7/26	17/37	7/19	18/16
	14	15	शनि	15 19	पुर्न	21 37	वैधृ	14 48	क. 15/02	पौष पूर्णिमा स्नानदानादि, **सूर्य मकर में 11/55, माघ संक्रान्ति, B**	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
माघ कृष्ण पक्ष	15	मा.कृ	रवि	17 21	पुष्य	24 11	विष्क	15 12	कर्क	माघ कृष्ण पक्षारम्भ, स. सि. योगः एवं रवि पुष्य योगः	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
	16	2	चंद्र	19 42	आश्ले	27 03	प्रीति	15 52	सिं. 27/03	गण्डमूलादि विचार	7/37	17/43	7/19	17/43	7/25	17/40	7/19	18/18
	17	3	मंग	22 19	मघा	30 07	आयु	16 43	सिंह	भ. 9/01 से 22/19 तक, **शुक्र पूर्व से उदय 8/25**, बुध उ.षा. में **C**	7/37	17/43	7/19	17/44	7/25	17/41	7/19	18/18
	18	4	बुध	25 03	पू.फा.	पू. दि.	सौभा	17 41	सिंह	**श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत** (चन्द्रोदय घं. 9 मिं. 26)	7/37	17/44	7/19	17/45	7/25	17/42	7/19	18/19
	19	5	गुरु	27 43	पू.फा.	9 16	शोभ	18 40	कं. 16/02	**बुध मकर में 9/46**, वक्री शुक्र पू.षा. (4) में 8/46,	7/36	17/45	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
	20	6	शुक्र	30 08	उ.फा.	12 18	अति	19 30	कन्या	भद्रा 30/08 से प्रारम्भ, सूर्य सायन कुम्भ में 10/45,	7/36	17/46	7/18	17/47	7/24	17/43	7/19	18/20
	21	7	शनि	पू. दि.	हस्त	15 00	सुक	20 01	तु. 28/10	भद्रा 19/06 तक, (शुक्र उदय 17 जन.)	7/36	17/47	7/18	17/48	7/24	17/44	7/19	18/21
	22	7	रवि	8 03	चित्रा	17 10	धृति	20 05	तुला	स्वामी विवेकानन्द जयंती (मतान्तरे)	7/35	17/48	7/17	17/49	7/24	17/45	7/19	18/22
	23	8	चंद्र	9 15	स्वा.	18 37	शूल	19 35	तुला	नेताजी जयन्ती,	7/35	17/49	7/17	17/50	7/23	17/46	7/19	18/22
	24	9	मंग	9 38	विशा	19 13	गंड	18 24	बृ. 13/09	भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44,	7/35	17/50	7/17	17/50	7/23	17/47	7/19	18/23
	25	10	बुध	9 06	अनु.	18 57	वृद्धि	16 32	बृश्चिक	भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्तिला एका. स्मार्त्त	7/35	17/51	7/17	17/51	7/23	17/48	7/19	18/23
	26	11	गुरु	7 43	ज्ये.	17 52	ध्रुव	13 58	ध. 17/52	षट्तिला एकादशी व्रत वैष्णव, **गणतन्त्र दिवस** भारत, गण्डमूलादि	7/34	17/52	7/16	17/52	7/22	17/49	7/18	18/24
	००	12	गुरु	29 32	००	०० ००	००	०० ००	००	द्वादशी का क्षय ०० ००								
	27	13	शुक्र	26 42	मूला	16 04	व्या. हर्ष	10 49 / 31 10	धनु	भद्रा 26/42 से, प्रदोष व्रत, गण्डमूलादि, मेरु त्रयो.	7/33	17/53	7/16	17/53	7/21	17/50	7/18	18/24
	28	14	शनि	23 23	पू.षा.	13 41	वज्र	27 10	म. 19/01	भद्रा 13/03 तक, मंगल कृतिका में 21/16, लाला लाजपतराय जयंती	7/32	17/54	7/15	17/53	7/21	17/51	7/18	18/25
	29	30	रवि	19 46	उ.षा.	10 55	सिद्धि	22 56	मकर	**माघ (मौनी) अमावस**, तीर्थस्नान दानादि का विशेष माहात्म्य, **D**	7/32	17/55	7/15	17/54	7/20	17/52	7/18	18/25
मा. शु.	30	मा.शु	चंद्र	16 02	श्रव.	7 52	व्य.	18 38	कुं. 18/28	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, 30 मुहू., पंचक प्रारंभ 18/28, **E**	7/31	17/56	7/15	17/55	7/20	17/53	7/18	18/26
	००	००	००	०० ००	धनि.	29 01	००	०० ००	००	०० ०० ००								
	31	2	मंग	12 23	शत	26 14	वरी	14 26	कुम्भ	गुरु विशा (2) में 15/50, 1 मोहर्रम, सन् हिजरी 1427 प्रारम्भ	7/31	17/57	7/15	17/56	7/19	17/54	7/18	18/27

A व्रत श्रीसत्यनारायण **B** पुण्यकाल प्रात: 5/31 से, माघ स्नानारम्भ, **C** 8/20, सौभाग्य सुन्दरी व्रत **D** स. सि. योग:, महोदय योग **E** शहीदी दिन महात्मा गाँधी

वि. संवत् 2062, फरवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2006 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
माघ शुक्ल पक्ष	1	3	बुध	8 58	पू.भा.	23 49	परि शिव	10 25 30 45	मी. 18/23	भ. 19/28 से 29/57 तक, गौरी तृतीया व्रत, तिल चतुर्थी, वरद्-कुन्द चतुर्थी,0	7/30	17/57	7/13	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	0	4	बुध	29 57	oo	00 00	oo	00 00	oo	चतुर्थी तिथि का क्षय oo oo								
	2	5	गुरु	27 27	उ.भा.	21 53	सिद्ध	27 31	मीन	बसन्त पंचमी, श्री पंचमी, सरस्वती जयंती, राहु उभा (3), केतु हस्त A	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	6	शुक्र	25 34	रेव	20 32	साध्य	24 46	मे. 20/32	पंचक समाप्त 20/32, शुक्र मार्गी 14/52,	7/29	17/58	7/12	17/58	7/17	17/56	7/17	18/29
	4	7	शनि	24 21	अश्वि	19 50	शुभ	22 33	मेष	भद्रा 24/21 से, पुत्र सप्तमी व्रत, रथ सप्तमी, आरोग्य-अचला B	7/28	17/59	7/12	17/59	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	8	रवि	23 49	भर	19 47	शुक्ल	20 52	वृ. 25/53	भ. 12/05 तक, मंगल वृष में 10/58, बुध कुम्भ में 21/53, भीष्माष्टमी	7/28	18/00	7/11	18/00	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	9	चंद्र	23 55	कृति	20 23	ब्रह्म	19 41	वृष	सूर्य धनि. में 10/48,	7/27	18/02	7/10	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	7	10	मंग	24 37	रोह.	21 34	ऐंद्र	18 59	वृष		7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
	8	11	बुध	25 50	मृग	23 15	वैधृ	18 41	मि. 10/21	भद्रा 13/14 से 25/50 तक, जया एकादशी व्रत, स. सि. योगः	7/25	18/04	7/09	18/02	7/14	18/00	7/15	18/31
	9	12	गुरु	27 29	आर्द्रा	25 22	विष्क	18 43	मिथुन	बुध शत. में 15/01, भीष्म-द्वादशी	7/24	18/05	7/08	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
	10	13	शुक्र	29 29	पुर्न	27 49	प्रीति	19 03	क. 21/10	प्रदोष व्रत, मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ, स. सि. योगः	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	11	14	शनि	पू. दि.	पुष्य	30 32	आयु	19 37	कर्क		7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
	12	14	रवि	7 46	आश्ले	पू. दि.	सौभा	20 22	कर्क	भ. 7/46 से 21/01 तक, सूर्य कुम्भ में 24/55, फाल्गुन संक्रान्ति, C	7/22	18/07	7/06	18/05	7/10	18/04	7/13	18/33
	13	15	चंद्र	10 15	आश्ले	9 27	शोभ	21 14	सिं. 9/27	माघ पूर्णिमा, स्नानदान, गुरु रविदास जयंती, बुध पश्चिम से उदय D	7/21	18/08	7/05	18/06	7/09	18/04	7/12	18/34
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	14	1	मंग	12 53	मघा	12 31	अति	22 12	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 12/31 तक	7/20	18/09	7/04	18/07	7/08	18/05	7/12	18/34
	15	2	बुध	15 33	पू.फा.	15 37	सुक	23 09	कं. 22/23	भद्रा 28/51 से प्रारम्भ	7/19	18/09	7/03	18/08	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	3	गुरु	18 09	उ.फा.	18 38	धृति	24 01	कन्या	भद्रा 18/09 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि घं. 9 मिं. 08)	7/18	18/10	7/03	18/09	7/07	18/07	7/11	18/35
	17	4	शुक्र	20 31	हस्त	21 27	शूल	24 42	कन्या	बुध पूभा (1) में 7/42	7/17	18/11	7/02	18/10	7/06	18/08	7/10	18/36
	18	5	शनि	22 30	चित्रा	23 54	गंड	25 05	तु. 10/44	सूर्य सायन मीन में 24/56, बसन्त ऋतु प्रारम्भ	7/16	18/12	7/01	18/10	7/05	18/09	7/09	18/36
	19	6	रवि	23 57	स्वा.	25 49	वृद्धि	25 03	तुला	भद्रा 23/57 से, सूर्य शत. में 15/25, शुक्र उ.षा. में 15/31,	7/15	18/13	7/00	18/11	7/04	18/09	7/09	18/37
	20	7	चंद्र	24 42	विशा.	27 05	ध्रुव	24 29	वृ. 20/50	भद्रा 12/20 तक,	7/14	18/14	6/59	18/12	7/03	18/10	7/08	18/37
	21	8	मंग	24 41	अनु.	27 34	व्या.	23 19	वृश्चिक	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, जानकी जयंती	7/13	18/15	6/58	18/12	7/02	18/11	7/08	18/37
	22	9	बुध	23 51	ज्ये.	27 16	हर्ष	21 31	ध. 27/16		7/12	18/16	6/57	18/13	7/01	18/12	7/07	18/38
	23	10	गुरु	22 13	मूला	26 12	वज्र	19 05	धनु	भद्रा 11/02 से 22/13 तक,	7/11	18/17	6/56	18/14	7/00	18/13	7/06	18/38
	24	11	शुक्र	19 51	पू.षा.	24 26	सिद्धि	16 04	म. 29/54	बुध मीन में 21/34, विजया एकादशी व्रत	7/10	18/17	6/55	18/14	6/59	18/14	7/06	18/38
	25	12	शनि	16 55	उ.षा.	22 07	व्य.	12 33	मकर	मंगल रोहि. में 23/44, शुक्र मकर में 6/16,	7/09	18/18	6/54	18/15	6/58	18/15	7/05	18/39
	26	13	रवि	13 31	श्रव	19 23	वरी परि	8 38 28 27	कुं. 29/54	भद्रा 13/31 से 23/40 तक, श्री महाशिवरात्रि व्रत	7/07	18/19	6/53	18/16	6/57	18/15	7/04	18/39
	27	14	चंद्र	9 49	धनि	16 24	शिव	24 08	कुम्भ	सोमवती फाल्गुन अमावस, स्नानदानादि, पंचकारम्भ 5/54 oo	7/06	18/20	6/52	18/17	6/55	18/16	7/03	18/39
		30	चंद्र	30 02	oo	00 00	oo	00 00	oo	अमावस का क्षय oo								
	28	1	मंग	26 18	शत	13 23	सिद्ध	19 50	मी. 29/11	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,	7/04	18/21	6/51	18/17	6/54	18/16	7/03	18/40

0 बुध धनि. में 28/00, चं.उ. रात्रि 9/21 पर A (1) में 15/00 B सप्तमी, वक्री शनि पुष्य (3) में 9/05, C पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 7/19 तक, व्रत श्रीसत्यनारायण, गण्डमूलादि D 8/27, गण्डमूल

वि. संवत् 2062, मार्च मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2006 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	2	बुध	22 48	पू.भा.	10 29	साध्य	15 41	मीन	मार्च मास प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, 45 मुहू., श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
	2	3	गुरु	19 43	उ.भा.	7 53	शुभ	11 49	मे. 29/46	भ. 30/26 से, पंचक समा. 29/46, बुध वक्री 26/06, गं.मू. 7/53 बाद	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/02	18/40
	00	00	00	00 00	रेव	29 46	00	00 00	00	00 00 00								
	3	4	शुक्र	17 09	अश्वि	28 13	शुक्ल ब्रह्म	8 21 / 28 23	मेष	भद्रा 17/09 तक, गण्डमूलादि, स. सि. योगः	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
	4	5	शनि	15 15	भर.	27 23	ऐंद्र	26 59	मेष	सूर्य पू.भा. में 21/41, गुरु वक्री 23/32	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
	5	6	रवि	14 05	कृति	27 17	वैधृ	25 12	वृ. 9/17	बुध पश्चिम में अस्त 27/36	6/58	18/26	6/46	18/20	6/49	18/19	7/00	18/42
	6	7	चंद्र	13 41	रोह.	27 57	विष्क	24 01	वृष	भद्रा 13/41 से 25/52 तक, स. सि. योगः	6/57	18/27	6/45	18/20	6/47	18/20	6/59	18/42
	7	8	मंग	14 03	मृग.	29 19	प्रीति	23 24	मि. 16/33	होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा अष्टमी	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	9	बुध	15 07	आर्द्रा	पू. दि.	आयु	23 18	मिथुन		6/54	18/29	6/43	18/22	6/45	18/21	6/57	18/43
	9	10	गुरु	16 47	आर्द्रा	7 18	सौभा	23 37	क. 27/06	भद्रा 29/51 से, वक्री बुध कुम्भ में 13/04, स. सि. योगः	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	11	शुक्र	18 54	पुर्न	9 46	शोभ	24 15	कर्क	भद्रा 18/54 तक, शुक्र श्रवण में 9/00, आमलकी एकादशी व्रत	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
	11	12	शनि	21 19	पुष्य	12 35	अति	25 06	कर्क	गोबिन्द द्वादशी, गण्डमूल 12/35 उप.	6/50	18/32	6/40	18/23	6/41	18/23	6/54	18/44
	12	13	रवि	23 55	आश्ले	15 36	सुक	26 04	सिं. 15/36	प्रदोष व्रत, गण्डमूल आदि	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
	13	14	चंद्र	26 33	मघा	18 42	धृति	27 03	सिंह	भद्रा 26/33 से प्रारम्भ, महेश्वर व्रत	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	15	मंग	29 06	पू.फा.	21 45	शूल	27 59	कं. 28/30	भ. 15/50 तक, फाल्गुन पूर्णिमा व्रतादि, होली पर्व, सूर्य मीन में A	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/25	6/52	18/44
चैत्र कृष्ण पक्ष	15	चै.कृ.	बुध	पू. दि.	उ.फा.	24 40	गंड	28 47	कन्या	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, धुलण्डी, होला मेला (आनन्दपुर व पांओंटा), B	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	1	गुरु	7 29	हस्त	27 20	वृद्धि	29 23	कन्या	बसन्तोत्सव	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
	17	2	शुक्र	9 36	चित्रा	29 42	ध्रुव	29 44	तु. 16/34	भद्रा 22/28 से, सूर्य उ.भा. में 30/10, सन्त तुकाराम जयन्ती	6/43	18/34	6/33	18/26	6/34	18/27	6/50	18/44
	18	3	शनि	11 20	स्वा.	पू. दि.	व्या.	29 45	तुला	भद्रा 11/20 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय घं. 9 मिं. 53 पर)	6/42	18/35	6/31	18/27	6/33	18/27	6/49	18/45
	19	4	रवि	12 38	स्वा.	7 39	हर्ष	29 24	बृ. 26/47	बुध पूर्व से उदय 15/47	6/41	18/36	6/30	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
	20	5	चंद्र	13 25	विशा.	9 06	वज्र	28 36	बृश्चिक	श्री रंग 5, मेला नवचण्डी (मेरठ), सूर्य सायन मेष में 23/56, C	6/40	18/36	6/29	18/28	6/30	18/29	6/47	18/45
	21	6	मंग	13 36	अनु.	10 00	सिद्धि	27 20	बृश्चिक	भ. 13/36 से 25-23 तक, वक्री बुध शत (4) में 22/06, गण्डमूल D	6/39	18/37	6/28	18/29	6/29	18/30	6/46	18/45
	22	7	बुध	13 09	ज्ये.	10 17	व्य.	25 33	ध. 10/17	मंगल मृग में 20/01, गण्डमूलादि, शक चैत्र सं. 1928 प्रारम्भ	6/38	18/38	6/27	18/29	6/28	18/30	6/45	18/46
	23	8	गुरु	12 04	मूला	9 57	वरी	23 15	धनु	श्रीशीतलाष्टमी व्रत, गण्डमूल 9/57 तक	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	9	शुक्र	10 21	पू.षा.	8 59	परि	20 29	म. 14/39	भद्रा 21/13 से, शुक्र धनि. में 19/15	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	25	10/	शनि	8 04	उ.षा.	7 27	शिव	17 17	मकर	भद्रा 8/04 तक, बुध मार्गी 19/18, पापमोचनी एका. व्रत स्मा.	6/34	18/40	6/24	18/31	6/24	18/32	6/44	18/47
	00	11	शनि	29 17	श्रव	29 26	00	00 00	00	एकादशी का क्षय								
	26	12	रवि	26 08	धनि	27 03	सिद्ध	13 42	कुं. 16/17	पंचक प्रारम्भ 16/17, पापमोचनी एका. व्रत वैष्णव, वारुणी योग E	6/33	18/41	6/23	18/31	6/23	18/33	6/43	18/47
	27	13	चंद्र	22 44	शत	24 24	साध्य शुभ	9 52 / 29 52	कुम्भ	भद्रा 22/44 से, प्रदोष व्रत, वारुणी योग सू. उ. से 22/44 तक	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
	28	14	मंग	19 13	पू.भा.	21 41	शुक्ल	25 50	मी. 16/22	भद्रा 8/59 तक, मेला पृथूदक पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	29	30	बुध	15 47	उ.भा.	19 02	ब्रह्म	21 53	मीन	चैत्र अमावस, खग्रास सूर्यग्रहण, बुध पू.भा. में 20/28, वि. संवत् 2062 F	6/28	18/42	6/19	18/33	6/19	18/35	6/40	18/48

A 21/49, चैत्र संक्रान्ति, पुण्यकाल संक्रां. दुपै. 15/25 से प्रारम्भ, होलिका दहन (सायं भद्रा के बाद) चैतन्य महाप्रभु जयन्ती **B** बसन्तोत्सव प्रारम्भ **C** महाविषुव दिवस, उत्तरगोल प्रारंभ

D 10/00 के बाद **E** 27/03 से सू. उ. तक **F** पूर्ण, प्लूटो वक्री 18/09

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2062 (सन् 2005–06 ई.)

आगे लिखे चन्द्र प्रवेश का समय घण्टों-मिंटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है, अर्थात् भारतीय रेलवे समय सारिणी के अनुसार रात्रि बारह बजे को (0) घण्टा से संकेत देकर, आगामी दिवस की तारीख का आरम्भ किया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया **चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल॥** इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी/पलों, भयात-भभोग की प्रक्रिया से निकालने की आवश्यकता नहीं होगी। उदाहरणस्वरूप मान लीजिए, हमने सन् 2005 ई. में 16 अप्रैल को पुष्य नक्षत्र के प्रथमादि चरण जानने हैं, तो 16 अप्रैल की रात्रि 21-16 से प्रारम्भ होगा, द्वितीय चरण 17 अप्रैल को प्रात: 4 बजे, तृतीय 10-43 से तथा चौथा चरण सायं 17-27 बजे शुरू होगा। इसी आधार पर दशा अन्तरदशा का भोग्य काल जान सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से प्रकाशित **ज्योतिष तत्त्व** फलित (द्वितीय भाग) का अध्ययन करे। ध्यान रहे, जहाँ तारीख वाले कालम में दो तारीखें लिखी गई है, वहाँ उस नक्षत्र का प्रारम्भिक चरण पहली तारीख में और शेष चरण दूसरी तारीख में प्रारम्भ हुआ समझें॥ धन्यवाद।

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
अप्रै. 2005	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
मा. 31/1 अप्रै	मूला	22 55	4 36	10 18	15 59
1–2 अप्रै.	पूषा	21 40	3 13	8 57	14 35
2–3	उषा	20 13	1 49	7 25	13 01
3–4	श्रवण	18 37	0 12	5 47	11 21
4–5	धनिष्ठा	16 56	22 31	4 05	9 40
5–6	शतभिषा	15 15	20 52	2 28	8 05
6–7	पूभा	13 41	19 20	1 00	6 37
7–8	उभा	12 18	18 02	23 45	5 29
8–9	रेवती	11 13	17 03	22 53	4 43
9–10	अश्वि	10 33	16 31	22 28	4 25
10–11	भरणी	10 23	16 30	22 36	4 42
11–12	कृतिका	10 49	17 01	23 19	5 36
12–13	रोहिणी	11 52	18 17	0 42	7 07
13–14	मृग	13 31	20 04	2 34	9 10
14–15	आर्द्रा	15 44	22 24	5 03	11 43
15–16	पुर्न	18 23	1 06	7 50	14 32
16–17	पुष्य	21 16	4 00	10 43	17 27
18 अप्रैल	अश्ले.	0 10	6 51	13 32	20 13
19 अप्रैल	मघा	2 54	9 29	16 04	22 40
20–21	पूफा.	5 15	11 43	18 10	0 37
21–22	उफा.	7 05	13 27	19 44	2 02
22–23	हस्त	8 20	14 29	20 38	2 48
23–24	चित्रा	8 57	14 59	21 02	3 00
24–25	स्वा.	8 59	14 52	20 44	2 37
25–26	विशा.	8 30	14 16	20 03	1 50
26–27	अनु.	7 34	13 15	18 56	0 38
27 अप्रैल	ज्ये.	6 19	11 57	17 35	23 13
28 अप्रैल	मूला	4 50	10 26	16 02	21 38
29 अप्रैल	पू.षा	3 14	8 50	14 25	20 01
30 अप्रैल	उ.षा.	1 36	7 12	12 49	18 25

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
मई 2005	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 मई	श्रवण	0 01	5 39	11 16	16 54
1–2	धनिष्ठा	22 32	4 13	9 52	15 34
2–3	शत.	21 14	2 57	8 41	14 25
3–4	पू.भा.	20 08	1 56	7 43	13 29
4–5	उ.भा.	19 18	1 10	7 02	12 54
5–6	रेवती	18 46	0 43	6 40	12 37
6–7	अश्वि.	18 34	0 36	6 38	12 41
7–8	भरणी	18 44	0 53	7 02	13 12
8–9	कृतिका	19 21	1 34	7 52	14 08
9–10	रोहिणी	20 25	2 49	9 12	15 36
10–11	मृग.	21 59	4 27	10 56	17 28
12 मई	आर्द्रा	0 01	6 38	13 15	19 52
13 मई	पुर्न.	2 29	9 11	15 53	22 33
14–15	पुष्य	5 16	12 00	18 44	1 28
15–16	अश्ले.	8 12	14 56	21 39	4 22
16–17	मघा	11 06	17 45	0 25	7 05
17–18	पू.फा.	13 44	20 17	2 49	9 22
18–19	उफा	15 55	22 22	4 44	11 06
19–20	हस्त	17 27	23 40	5 52	12 05
20–21	चित्रा	18 17	0 18	6 25	12 24
21–22	स्वा.	18 22	0 13	6 04	11 54
22–23	विशा.	17 45	23 28	5 10	10 53
23–24	अनु.	16 32	22 06	3 41	9 15
24–25	ज्ये.	14 49	20 18	1 47	7 16
25–26	मूला	12 45	18 11	23 38	5 04
26–27	पूषा	10 31	15 57	21 24	2 50
27–28	उषा.	8 16	13 43	19 11	0 39
28 मई	श्रव.	6 07	11 39	17 10	22 42
29 मई	धनि.	4 13	9 49	15 24	21 02
30 मई	शत.	2 40	8 23	14 05	19 48
31 मई	पू.भा.	1 31	7 19	13 08	18 56

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
जून 2005	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जून	उ.भा.	0 48	6 44	12 39	18 35
2 जून	रेवती	0 31	6 33	12 36	18 38
3 जून	अश्वि.	0 41	6 50	12 58	19 07
4 जून	भरणी	1 16	7 31	13 46	20 00
5 जून	कृतिका	2 15	8 33	14 54	21 16
6 जून	रोहिणी	3 37	10 03	16 29	22 55
7–8	मृगशिर	5 21	11 51	18 21	0 54
8–9	आर्द्रा	7 27	14 04	20 40	3 17
9–10	पुनर्वसु	9 54	16 35	23 15	5 56
10–11	पुष्य	12 39	19 23	2 07	8 51
11–12	अश्ले.	15 35	22 20	5 06	11 51
12–13	मघा	18 36	1 19	8 03	14 46
13–14	पू.फा.	21 29	4 08	10 46	17 24
15 जून	उ.फा.	0 03	6 37	13 07	19 37
16 जून	हस्त	2 05	8 25	14 46	21 06
17 जून	चित्रा	3 26	9 36	15 48	21 54
18 जून	स्वाती	3 59	9 55	15 50	21 46
19 जून	विशा.	3 42	9 28	15 12	20 58
20 जून	अनु.	2 38	8 12	13 46	19 19
21 जून	ज्ये.	0 53	6 19	11 45	17 10
21–22	मूला	22 36	3 57	9 17	14 38
22–23	पू.षा.	19 58	1 16	6 34	11 52
23–24	उ.षा.	17 10	22 27	3 46	9 04
24–25	श्रवण	14 22	19 43	1 04	6 25
25–26	धनि.	11 46	17 10	22 36	4 03
26–27	शत.	9 32	15 06	20 39	2 13
27–28	पू.भा.	7 47	13 28	19 10	0 50
28–29	उ.भा.	6 36	12 28	18 19	0 11
29–30	रेवती	6 02	12 03	18 04	0 05
30/1 जुला.	अश्वि	6 06	12 16	18 25	0 35

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
जुलाई 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1–2	भरणी	6 45	12 16	18 25	0 35
2–3	कृतिका	7 55	14 17	20 41	3 06
3–4	रोहिणी	9 31	16 01	22 31	5 01
4–5	मृगशिर	11 31	18 04	0 37	7 14
5–6	आर्द्रा	13 49	20 27	3 06	9 44
6–7	पुर्न	16 23	23 05	5 46	12 27
7–8	पुष्य	19 10	1 54	8 39	15 23
8–9	अश्लेषा	22 07	4 53	11 38	18 24
10 जुला.	मघा	1 09	7 54	14 39	21 24
11–12	पू.फा.	4 09	10 51	17 34	0 16
12–13	उ.फा.	6 58	13 37	20 12	2 48
13–14	हस्त	9 24	15 52	22 21	4 49
14–15	चित्रा	11 17	17 38	23 58	6 12
15–16	स्वाती	12 28	18 34	0 39	6 45
16–17	विशाखा	12 50	18 44	0 38	6 33
17–18	अनुराधा	12 21	18 02	23 43	5 24
18–19	ज्येष्ठा	11 05	16 36	22 06	3 37
19–20	मूला	9 07	14 29	19 51	1 13
20 जुला.	पू.षा.	6 35	11 51	17 08	22 24
21 जुला.	उ.षा.	3 40	8 54	14 07	19 21
22 जुला.	श्रवण	0 35	5 49	11 02	16 16
22–23	धनिष्ठा	21 30	2 45	8 02	13 22
23–24	शत	18 39	0 02	5 25	10 48
24–25	पूभा	16 11	21 42	3 14	8 44
25–26	उभा	14 16	19 57	1 39	7 20
26–27	रेवती	13 01	18 53	0 45	6 37
27–28	अश्वि.	12 29	18 32	0 36	6 39
28–29	भरणी	12 42	18 55	1 09	7 23
29–30	कृतिका	13 36	19 56	2 20	8 44
30–31	रोहिणी	15 07	6 30	21 37	4 28

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
अगस्त 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
31 जुला./1 अग.	मृगशिर	17 09	23 44	6 19	12 58
1–2	आर्द्रा	19 34	2 15	8 55	15 36
2–3	पुर्न	22 16	4 59	11 42	18 24
4 जुला.	पुष्य	1 08	7 53	14 37	21 22
5–6	अश्ले.	4 07	10 52	17 37	0 22
6–7	मघा	7 07	13 52	20 36	3 21
7–8	पू.फा.	10 05	16 47	23 29	6 11
8–9	उ.फा.	12 53	19 33	2 10	8 48
9–10	हस्त	15 26	21 59	4 31	11 03
10–11	चित्रा	17 36	0 03	6 29	12 49
11–12	स्वाती	19 13	1 28	7 42	13 57
12–13	विशाखा	20 11	2 16	8 21	14 26
13–14	अनुराधा	20 25	2 17	8 09	14 01
14–15	ज्येष्ठा	19 53	1 34	7 41	12 55
15–16	मूला	18 36	0 07	5 38	11 09
16–17	पू.षा.	16 40	22 03	3 26	8 49
17–18	उ.षा.	14 12	19 31	0 47	6 05
18–19	श्रवण	11 22	16 36	21 51	3 05
19–20	धनिष्ठा	8 20	13 35	18 49	0 04
20 जुला.	शत	5 19	10 37	15 54	21 12
21 जुला.	पू.भा.	2 30	7 52	13 16	18 37
22 जुला.	उ.भा.	0 03	5 34	11 06	16 37
22–23	रेवती	22 08	3 49	9 30	15 11
23–24	अश्वि.	20 52	2 45	8 37	14 29
24–25	भरणी	20 22	2 26	8 30	14 34
25–26	कृतिका	20 36	2 50	9 07	15 24
26–27	रोहिणी	21 40	4 06	10 31	16 57
27–28	मृगशिर	23 23	5 56	12 27	19 05
29 जुला.	आर्द्रा	1 39	8 19	14 58	21 38
30–31	पुर्न	4 18	11 02	17 45	0 28

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
सितम्बर 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
31 अग./1 सितं.	पुष्य	7 13	13 58	20 43	3 28
1–2	अश्लेषा	10 13	16 58	23 42	6 27
2–3	मघा	13 12	19 55	2 38	9 21
3–4	पू.फा.	16 04	22 44	5 24	12 04
4–5	उ.फा.	18 44	1 21	7 55	14 31
5–6	हस्त	21 07	3 38	10 08	16 39
6–7	चित्रा	23 10	5 38	12 03	18 24
8 सितं.	स्वाती	0 49	7 06	13 24	19 41
9 सितं.	विशाखा	1 58	8 07	14 18	20 29
10 सितं.	अनुराधा	2 35	8 35	14 36	20 36
11 सितं.	ज्येष्ठा	2 36	8 27	14 18	20 09
12 सितं.	मूला	2 00	7 42	13 25	19 07
13 सितं.	पू.षा.	0 49	6 23	11 58	7 32
13–14	उ.षा.	23 06	4 36	10 02	15 29
14–15	श्रवण	20 57	2 20	7 44	13 07
15–16	धनिष्ठा	18 30	23 51	5 11	10 32
16–17	शत	15 52	21 13	2 33	7 53
17–18	पू.भा.	13 14	18 37	0 01	5 22
18–19	उ.भा.	10 46	16 14	21 41	3 09
19–20	रेवती	8 37	14 12	19 47	1 22
20–21	अश्विनी	6 57	12 41	18 24	0 08
21 सितं.	भरणी	5 52	11 47	17 41	23 55
22 सितं.	कृतिका	5 30	11 32	17 40	23 46
23 सितं.	रोहिणी	5 53	12 10	18 28	0 45
24–25	मृगशिर	7 02	13 26	19 52	2 22
25–26	आर्द्रा	8 51	15 27	22 03	4 39
26–27	पुर्न	11 15	17 57	0 38	7 18
27–28	पुष्य	14 02	20 47	3 31	10 16
28–29	अश्लेषा	17 01	23 46	6 30	13 15
29–30	मघा	20 00	2 43	9 25	16 08

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
अक्तूबर 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
30 सितं./1 अक्तू.	पू.फा.	22 51	5 29	12 07	18 46
2 अक्तू.	उ.फा.	1 24	7 59	14 30	21 03
3 अक्तू.	हस्त	3 35	10 02	16 28	22 55
4–5	चित्रा	5 22	11 43	18 05	0 24
5–6	स्वाती	6 41	12 54	19 07	1 20
6–7	विशाखा	7 34	13 42	19 49	1 57
7–8	अनुराधा	8 01	14 01	20 01	2 02
8–9	ज्येष्ठा	8 02	13 56	19 49	1 43
9–10	मूला	7 37	13 25	19 14	1 02
10 अक्तू.	पू.षा.	6 50	12 33	18 15	23 58
11 अक्तू.	उ.षा.	5 41	11 20	16 57	22 35
12 अक्तू.	श्रवण	4 13	9 47	15 21	20 55
13 अक्तू.	धनिष्ठा	2 29	8 01	13 33	19 04
14 अक्तू.	शत	0 35	6 05	11 36	17 06
14–15	पू.भा.	22 36	4 06	9 37	15 07
15–16	उ.भा.	20 38	2 11	7 43	13 16
16–17	रेवती	18 48	0 25	6 01	11 38
17–18	अश्वि.	17 14	22 57	4 39	10 21
18–19	भरणी	16 04	21 54	3 45	9 35
19–20	कृतिका	15 25	21 21	3 22	9 22
20–21	रोहिणी	15 23	21 32	3 42	9 52
21–22	मृग	16 01	22 17	4 36	10 59
22–23	आर्द्रा	17 21	23 50	6 20	12 49
23–24	पुर्न	19 19	1 57	8 34	15 10
24–25	पुष्य	21 50	4 33	11 16	17 59
26 अक्तू.	अश्लेषा	0 42	7 27	14 12	20 57
27 अक्तू.	मघा	3 42	10 26	17 10	23 54
28–29	पू.फा.	6 38	13 17	19 57	2 36
29–30	उ.फा.	9 15	15 50	22 21	4 53
30–31	हस्त	11 26	17 50	0 15	6 39

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
नवम्बर 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
31 अक्तू./1 नवं.	चित्रा	13 03	19 21	1 39	7 52
1–2	स्वाती	14 06	20 13	2 20	8 28
2–3	विशाखा	14 35	20 35	2 36	8 39
3–4	अनुराधा	14 34	20 27	2 21	8 14
4–5	ज्येष्ठा	14 07	19 55	1 43	7 31
5–6	मूला	13 19	19 03	0 47	6 32
6–7	पू.षा.	12 16	17 58	23 39	5 21
7–8	उ.षा.	11 02	16 43	22 22	4 02
8–9	श्रवण	9 42	15 21	21 00	2 39
9–10	धनिष्ठा	8 18	13 57	19 36	1 15
10 नवं.	शत	6 54	12 33	18 13	23 52
11 नवं.	पू.भा.	5 31	11 11	16 52	22 32
12 नवं.	उ.भा.	4 13	8 55	13 38	18 20
13 नवं.	रेवती	23 02	5 47	12 31	19 16
14 नवं.	अश्विनी	2 01	7 50	13 38	19 27
15 नवं.	भरणी	1 15	7 09	13 02	18 55
16 नवं.	कृतिका	0 49	6 46	12 47	18 48
17 नवं.	रोहिणी	0 48	6 56	13 03	19 11
18 नवं.	मृग	1 18	7 32	13 45	20 03
19 नवं.	आर्द्रा	2 21	8 46	15 11	21 36
20 नवं.	पुर्न	4 01	10 34	17 06	23 38
21–22	पुष्य	6 14	12 54	19 35	2 15
22–23	अश्ले.	8 55	15 39	22 24	5 09
23–24	मघा	11 53	18 39	1 25	8 10
24–25	पू.फा.	14 56	21 39	4 21	11 04
25–26	उ.फा.	17 47	0 26	7 02	13 39
26–27	हस्त	20 13	2 41	9 08	15 35
27–28	चित्रा	22 03	4 22	10 42	16 58
28–29	स्वाती	23 10	5 16	11 22	17 28
29–30	विशाखा	23 34	5 30	11 26	17 24

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
दिसम्बर 2005 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
30 नवं./1 दिसं.	अनुराधा	23 16	5 03	10 49	16 36
1–2	ज्येष्ठा	22 22	4 02	9 42	15 21
2–3	मूला	21 01	2 36	8 11	13 46
3–4	पू.षा.	19 21	0 54	6 26	11 59
4–5	उ.षा.	17 31	23 02	4 35	10 07
5–6	श्रव	15 39	21 12	2 46	8 19
6–7	धनिष्ठा	13 52	19 28	1 02	6 40
7–8	शत	12 16	17 55	23 35	5 14
8–9	पू.भा.	10 54	16 38	22 21	4 03
9–10	उ.भा.	9 49	15 37	21 24	3 12
10–11	रेवती	9 00	14 53	20 45	2 37
11–12	अश्विनी	8 30	14 27	20 23	2 20
12–13	भरणी	8 16	14 17	20 18	2 19
13–14	कृतिका	8 20	14 24	20 31	2 38
14–15	रोहिणी	8 44	14 56	21 07	3 18
15–16	मृग	9 30	15 48	22 02	4 21
16–17	आर्द्रा	10 40	17 04	23 29	5 54
17–18	पुर्न	12 18	18 50	1 20	7 50
18–19	पुष्य	14 24	21 02	3 40	10 19
19–20	अश्लेषा	16 57	23 41	6 24	13 08
20–21	मघा	19 51	2 37	9 24	16 10
21–22	पू.फा.	22 56	5 42	12 29	19 15
23 दिसं.	उ.फा.	2 01	8 45	15 26	22 08
24–25	हस्त	4 49	11 24	17 59	0 33
25–26	चित्रा	7 08	13 34	20 01	2 22
26–27	स्वाती	8 43	14 55	21 06	3 18
27–28	विशाखा	9 30	15 29	21 29	3 32
28–29	अनुराधा	9 27	15 14	21 02	2 49
29–30	ज्येष्ठा	8 36	14 13	19 50	1 27
30 दिसं.	मूला	7 04	12 33	18 03	23 32
31 दिसं.	पू.षा.	5 01	10 25	15 50	21 14

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
जनवरी 2006 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन.	उ.षा.	2 38	8 00	13 22	18 44
2 जन.	श्रवण	0 06	5 28	10 50	16 12
2–3	धनिष्ठा	21 34	2 59	8 22	13 48
3–4	शत	19 14	0 44	6 13	11 43
4–5	पू.भा.	17 13	22 49	4 25	09 58
5–6	उ.भा.	15 37	21 20	3 04	8 47
6–7	रेवती	14 30	20 21	2 11	8 02
7–8	अश्विनी	13 53	19 51	1 49	7 47
8–9	भरणी	13 45	19 50	1 55	8 00
9–10	कृतिका	14 05	20 14	2 28	8 40
10–11	रोहिणी	14 51	21 08	3 26	9 43
11–12	मृग	16 00	22 23	4 43	11 07
12–13	आर्द्रा	17 31	23 59	6 28	12 56
13–14	पुर्न	19 24	1 57	8 30	15 02
14–15	पुष्य	21 37	4 15	10 54	17 32
16 जन.	अश्लेषा	0 11	6 54	13 37	20 20
17 जन.	मघा	3 03	9 49	16 35	23 21
18–19	पू.फा.	6 07	12 54	19 42	2 29
19–20	उ.फा.	9 16	16 02	22 47	5 33
20–21	हस्त	12 18	18 59	1 39	8 20
21–22	चित्रा	15 00	21 35	4 10	10 39
22–23	स्वाती	17 10	23 32	5 53	12 15
23–24	विशा.	18 37	0 48	6 58	13 09
24–25	अनुराधा	19 13	1 09	7 05	13 01
25–26	ज्येष्ठा	18 57	0 41	6 24	12 08
26–27	मूला	17 52	23 25	4 58	10 31
27–28	पू.षा.	16 04	21 28	2 53	8 17
28–29	उ.षा.	13 41	19 01	0 19	5 38
29–30	श्रव	10 55	16 11	21 26	2 42
30 जन.	धनि	7 58	13 14	18 28	23 45
31 जन.	शत	5 01	10 19	15 38	20 56

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
फरवरी 2006 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 फर.	पू.भा.	2 14	7 38	13 00	18 23
1–2	उ.भा.	23 49	5 20	10 51	16 22
2–3	रेवती	21 53	3 33	9 13	14 52
3–4	अश्विनी	20 32	2 22	8 11	14 01
4–5	भरणी	19 50	1 49	7 48	13 48
5–6	कृतिका	19 47	1 53	8 04	14 14
6–7	रोहिणी	20 23	2 41	8 59	15 16
7–8	मृग	21 34	3 58	10 21	16 48
8–9	आर्द्रा	23 15	5 47	12 18	18 50
10 फर.	पुर्न	1 22	7 59	14 35	21 10
11 फर.	पुष्य	3 49	10 30	17 10	23 51
12–13	अश्लेषा	6 32	13 16	19 59	2 43
13–14	मघा	9 27	16 13	22 59	5 45
14–15	पू.फा.	12 31	19 17	2 04	8 50
15–16	उ.फा.	15 37	22 23	5 08	11 53
16–17	हस्त	18 38	1 20	8 03	14 45
17–18	चित्रा	21 27	4 04	10 44	17 18
18–19	स्वाती	23 54	6 23	12 51	19 20
20 फर.	विशाखा	1 49	8 08	14 29	20 50
21 फर.	अनुराधा	3 05	9 12	15 20	21 27
22 फर.	ज्येष्ठा	3 34	9 30	15 25	21 21
23 फर.	मूला	3 16	9 00	14 44	20 28
24 फर.	पू.षा.	2 12	7 46	13 19	18 53
25 फर.	उ.षा.	0 26	5 54	11 17	16 43
25–26	श्रवण	22 07	3 26	8 45	14 04
26–27	धनिष्ठा	19 23	0 38	5 54	11 09
27–28	शत	16 24	21 39	2 53	8 08
28–1 मा.	पू.भा.	13 23	18 40	23 55	5 11

चन्द्र नक्षत्र चरण☞		1	2	3	4
मार्च 2006 ई.	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1–2	उ.भा.	10 29	15 50	21 11	2 32
2–3	रेवती	7 53	13 21	18 50	0 18
3 मार्च	अश्विनी	5 46	11 23	17 00	22 36
4 मार्च	भरणी	4 13	10 00	15 47	21 35
5 मार्च	कृतिका	3 23	9 17	15 17	21 18
6 मार्च	रोहिणी	3 17	9 27	15 37	21 47
7 मार्च	मृग	3 57	10 16	16 33	22 56
8–9	आर्द्रा	5 19	11 49	18 18	0 48
9–10	पुर्न	7 18	13 55	20 30	3 06
10–11	पुष्य	9 46	16 28	23 11	5 53
11–12	अश्लेषा	12 35	19 20	2 06	8 51
12–13	मघा	15 36	22 23	5 09	11 56
13–14	पू.फा.	18 42	1 28	8 13	14 59
14–15	उ.फा.	21 45	4 30	11 12	17 56
16 मार्च	हस्त	0 40	7 20	14 00	20 40
17 मार्च	चित्रा	3 20	9 56	16 34	23 08
18–19	स्वाती	5 42	12 11	18 41	1 10
19–20	विशाखा	7 39	14 02	20 24	2 47
20–21	अनु.	9 06	15 19	21 33	3 47
21–22	ज्येष्ठा	10 00	16 04	22 09	4 13
22–23	मूला	10 17	16 12	22 07	4 02
23–24	पू.षा.	9 57	15 43	21 28	3 13
24–25	उ.षा.	8 59	14 39	20 15	1 51
25 मार्च	श्रवण	7 27	12 57	18 26	23 56
26 मार्च	धनिष्ठा	5 26	10 50	16 17	21 41
27 मार्च	शत	3 03	8 17	13 32	18 46
28 मार्च	पू.भा.	0 01	5 28	10 54	16 22
28–29	उ.भा.	21 41	3 01	8 22	13 42
29–30	रेवती	19 02	0 26	5 49	11 13
30–31	अश्विनी	16 36	22 06	3 35	9 05

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से किसी अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करें

यदि आपको प्रात: साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं—मान लीजिए, आपको 5 अप्रैल, 2005 ई. की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में 5 अप्रैल के सामने सूर्य स्पष्ट 11-21-22-36 राशि-अंशादि लिखे गए हैं। जो कि प्रात: साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। इस प्रकार अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा। (6) अप्रै. से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59'.05") प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17.12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। इस प्रकार साढ़े सात घण्टे की गति (18'.26) कलादि को 5 अप्रैल के सूर्य स्पष्ट में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11.21.41.02) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिषी तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा.स्टैं.टा.) वि. संवत् 2062 (सन् 2005–06 ई.)

(1 अप्रै. से 4 मई तक)   1 अप्रैल, 2005 ई. को अयनांश 23°/55′/42″   1 मई, 2005 ई. को अयनांश 23°/55′/46″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अप्रैल
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	11 17 25 59	08 03 50 51	09 14 12 29	11 13 10 26	5 20 22 57	11 17 39 02	2 26 33 21	11 29 37 50	+4 30	−28 12	0 46	10 32	1
2	11 18 25 11	08 17 57 27	09 14 55 59	11 12 21 29	5 20 15 14	11 18 53 32	2 26 34 29	11 29 34 39	+4 53	−28 04	1 49	11 38	2
3	11 19 24 21	09 02 11 24	09 15 39 29	11 11 34 49	5 20 07 31	11 20 08 00	2 26 35 44	11 29 31 28	+5 16	−26 06	2 45	12 46	3
4	11 20 23 29	09 16 30 13	09 16 23 00	11 10 51 15	5 19 59 47	11 21 22 28	2 26 37 06	11 29 28 17	+5 39	−22 28	3 33	13 57	4
5	11 21 22 36	10 00 50 43	09 17 06 32	11 10 11 25	5 19 52 03	11 22 36 55	2 26 38 35	11 29 25 07	+6 02	−17 29	4 14	15 06	5
6	11 22 21 41	10 15 09 05	09 17 50 04	11 09 35 52	5 19 44 20	11 23 51 22	2 26 40 08	11 29 21 56	+6 24	−11 33	4 49	16 14	6
7	11 23 20 43	10 29 20 56	09 18 33 36	11 09 05 02	5 19 36 37	11 25 05 47	2 26 41 50	11 29 18 45	+6 47	−05 04	5 21	17 20	7
8	11 24 19 44	11 13 22 03	09 19 17 09	11 08 39 14	5 19 28 55	11 26 20 11	2 26 43 36	11 29 15 34	+7 10	+01 36	5 51	18 23	8
9	11 25 18 43	11 27 08 33	09 20 00 42	11 08 18 40	5 19 21 15	11 27 34 34	2 26 45 30	11 29 12 24	+7 32	+08 04	6 21	19 27	9
10	11 26 17 40	00 10 37 42	09 20 44 15	11 08 03 28	5 19 13 36	11 28 48 56	2 26 47 31	11 29 09 13	+7 54	+14 03	6 53	20 30	10
11	11 27 16 35	00 23 47 53	09 21 27 49	11 07 53 40	5 19 05 59	00 00 03 17	2 26 49 37	11 29 06 02	+8 17	+19 16	7 26	21 33	11
12	11 28 15 28	01 06 38 56	09 22 11 22	11 07 49 18	5 18 58 25	0 01 17 37	2 26 51 50	11 29 02 51	+8 38	+23 26	8 06	22 35	12
13	11 29 14 19	01 19 11 58	09 22 54 56	11 07 50 13	5 18 50 53	0 02 31 56	2 26 54 10	11 28 59 40	+9 01	+26 25	8 47	23 34	13
14	00 00 13 07	02 01 29 26	09 23 38 30	11 07 56 21	5 18 43 25	0 03 46 13	2 26 56 34	11 28 56 30	+9 22	+28 03	9 34	-- --	14
15	00 01 11 54	02 13 34 40	09 24 22 05	11 08 07 33	5 18 35 59	0 05 00 30	2 26 59 05	11 28 53 19	+9 44	+28 19	10 27	0 30	15
16	00 02 10 37	02 25 31 41	09 25 05 38	11 08 23 40	5 18 28 38	0 06 14 45	2 27 01 43	11 28 50 08	+10 05	+27 15	11 21	1 25	16
17	00 03 09 19	03 07 24 54	09 25 49 12	11 08 44 30	5 18 21 20	0 07 28 59	2 27 04 27	11 28 46 57	+10 27	+24 57	12 16	2 08	17
18	00 04 07 59	03 19 18 59	09 26 32 44	11 09 09 51	5 18 14 08	0 08 43 12	2 27 07 16	11 28 43 46	+10 47	+21 35	13 14	2 44	18
19	00 05 06 36	04 01 18 31	09 27 16 19	11 09 39 35	5 18 06 58	0 09 57 23	2 27 10 11	11 28 40 35	+11 09	+17 18	14 12	3 18	19
20	00 06 05 10	04 13 27 45	09 27 59 53	11 10 13 25	5 17 59 53	0 11 11 33	2 27 13 12	11 28 37 24	+11 29	+12 17	15 10	3 46	20
21	00 07 03 43	04 25 50 27	09 28 43 26	11 10 51 17	5 17 52 55	0 12 25 43	2 27 16 20	11 28 34 13	+11 49	+06 42	16 07	4 13	21
22	00 08 02 14	05 08 29 31	09 29 26 59	11 11 32 54	5 17 46 01	0 13 39 49	2 27 19 33	11 28 31 02	+12 09	+00 44	17 06	4 40	22
23	00 09 00 43	05 21 26 48	10 00 10 33	11 12 18 11	5 17 39 13	0 14 53 55	2 27 22 52	11 28 27 51	+12 30	−05 25	18 07	5 07	23
24	00 09 59 10	06 04 42 58	10 00 54 05	11 13 06 54	5 17 32 31	0 16 08 01	2 27 26 16	11 28 24 40	+12 50	−11 29	19 11	5 38	24
25	00 10 57 35	06 18 17 19	10 01 37 39	11 13 58 54	5 17 25 54	0 17 22 05	2 27 29 46	11 28 21 29	+13 10	−17 10	20 18	6 10	25
26	00 11 55 59	07 02 07 45	10 02 21 12	11 14 54 06	5 17 19 24	0 18 36 09	2 27 33 21	11 28 18 18	+13 29	−22 05	21 28	6 49	26
27	00 12 54 20	07 16 11 10	10 03 04 44	11 15 52 19	5 17 13 01	0 19 50 13	2 27 37 02	11 28 15 07	+13 49	−25 48	22 37	7 35	27
28	00 13 52 40	08 00 23 42	10 03 48 17	11 16 53 29	5 17 06 43	0 21 04 12	2 27 40 47	11 28 11 56	+14 07	−27 56	23 43	8 29	28
29	00 14 50 58	08 14 41 09	10 04 31 48	11 17 57 24	5 17 00 33	0 22 18 12	2 27 44 40	11 28 08 45	+14 26	−28 15	-- --	9 32	29
30	00 15 49 15	08 28 59 33	10 05 15 21	11 19 04 00	5 16 54 31	0 23 32 12	2 27 48 37	11 28 05 34	+14 44	−26 40	0 09	10 41	30
मई	0 16 47 32	9 13 15 30	10 05 58 53	11 20 13 15	5 16 48 37	0 24 46 10	2 27 52 39	11 28 02 23	+15 02	−23 24	1 50	11 51	मई
2	0 17 45 44	9 27 26 14	10 06 42 22	11 21 24 59	5 16 42 48	0 26 00 08	2 27 56 47	11 27 59 13	+15 20	−18 45	2 12	13 00	2
3	0 18 43 56	10 11 29 42	10 07 25 52	11 22 39 11	5 16 37 09	0 27 14 05	2 28 01 00	11 27 56 02	+15 38	−13 07	2 48	14 07	3
4	0 19 42 07	10 25 24 22	10 08 09 22	11 23 55 42	5 16 31 37	0 28 27 59	2 28 05 18	11 27 52 51	+15 56	−06 53	3 20	15 13	4

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रात: 5 घंटे 30 मिंट (5 मई से 10 जून 2005 ई. तक) 5 मई, 2005 ई. को अयनांश 23°/54′/51″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	जून
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	+अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
5	0 20 40 17	11 09 08 59	10 08 52 50	11 25 14 34	5 16 26 14	0 29 41 53	2 28 09 41	11 27 49 40	+16 14	-00 24	3 49	16 14	5
6	0 21 38 25	11 22 42 25	10 09 36 16	11 26 35 40	5 16 21 00	1 00 55 47	2 28 14 09	11 27 46 29	+16 31	+06 01	4 19	17 17	6
7	0 22 36 31	0 06 03 38	10 10 19 42	11 27 58 59	5 16 15 54	1 02 09 41	2 28 18 42	11 27 43 18	+16 48	+12 05	4 49	18 19	7
8	0 23 34 36	0 19 11 41	10 11 03 07	11 29 24 29	5 16 10 56	1 03 23 32	2 28 23 20	11 27 40 07	+17 04	+17 31	5 21	19 23	8
9	0 24 32 39	1 02 05 55	10 11 46 30	0 00 52 06	5 16 06 08	1 04 37 23	2 28 28 03	11 27 36 56	+17 20	+22 03	5 56	20 26	9
10	0 25 30 41	1 14 46 06	10 12 29 52	0 02 21 50	5 16 01 30	1 05 51 11	2 28 32 51	11 27 33 45	+17 36	+25 28	6 37	21 27	10
11	0 26 28 40	1 27 12 39	10 13 13 11	0 03 53 40	5 15 56 59	1 07 05 00	2 28 37 44	11 27 30 34	+17 52	+27 35	7 19	22 25	11
12	0 27 26 39	2 09 26 49	10 13 56 31	0 05 27 35	5 15 52 40	1 08 18 48	2 28 42 41	11 27 27 23	+18 07	+28 19	8 13	23 16	12
13	0 28 24 35	2 21 30 41	10 14 39 47	0 07 03 35	5 15 48 29	1 09 32 34	2 28 47 43	11 27 24 12	+18 22	+27 41	9 08	-- --	13
14	0 29 22 30	3 03 27 07	10 15 23 02	0 08 41 35	5 15 44 29	1 10 46 19	2 28 52 49	11 27 21 02	+18 37	+25 46	10 05	0 02	14
15	1 00 20 23	3 15 19 49	10 16 06 15	0 10 21 42	5 15 40 37	1 12 00 04	2 28 58 01	11 27 17 51	+18 51	+22 44	11 03	0 39	15
16	1 01 18 14	3 27 13 00	10 16 49 27	0 12 03 52	5 15 36 57	1 13 13 45	2 29 03 16	11 27 14 40	+19 05	+18 46	12 00	1 14	16
17	1 02 16 04	4 09 11 23	10 17 32 38	0 13 48 04	5 15 33 27	1 14 27 27	2 29 08 35	11 27 11 29	+19 19	+14 02	12 57	1 44	17
18	1 03 13 51	4 21 19 47	10 18 15 44	0 15 34 22	5 15 30 05	1 15 41 09	2 29 14 00	11 27 08 18	+19 32	+08 42	13 54	2 12	18
19	1 04 11 38	5 03 42 56	10 18 58 50	0 17 22 42	5 15 26 55	1 16 54 46	2 29 19 27	11 27 05 07	+19 45	+02 56	14 51	2 40	19
20	1 05 09 22	5 16 25 02	10 19 41 55	0 19 13 08	5 15 23 56	1 18 08 25	2 29 25 00	11 27 01 56	+19 58	-03 06	15 50	3 06	20
21	1 06 07 05	5 29 29 25	10 20 24 56	0 21 05 35	5 15 21 06	1 19 22 03	2 29 30 35	11 26 58 45	+20 10	-09 11	16 53	3 34	21
22	1 07 04 47	6 12 57 52	10 21 07 56	0 23 00 04	5 15 18 28	1 20 35 37	2 29 36 15	11 26 55 34	+20 22	-15 02	17 59	4 06	22
23	1 08 02 26	6 26 50 13	10 21 50 55	0 24 56 34	5 15 15 59	1 21 49 12	2 29 42 00	11 26 52 24	+20 34	-20 19	19 05	4 42	23
24	1 09 00 05	7 11 04 00	10 22 33 49	0 26 55 03	5 15 13 41	1 23 02 44	2 29 47 47	11 26 49 13	+20 45	-24 35	20 16	5 25	24
25	1 09 57 42	7 25 34 32	10 23 16 43	0 28 55 28	5 15 11 34	1 24 16 17	2 29 53 39	11 26 46 02	+20 56	-27 21	21 27	6 18	25
26	1 10 55 19	8 10 15 10	10 23 59 33	1 00 57 44	5 15 09 37	1 25 29 50	2 29 59 33	11 26 42 51	+21 07	-28 16	22 30	7 19	26
27	1 11 52 54	8 24 58 29	10 24 42 23	1 03 01 44	5 15 07 51	1 26 43 20	3 00 05 32	11 26 39 40	+21 17	-27 11	23 25	8 30	27
28	1 12 50 28	9 09 37 19	10 25 25 08	1 05 07 27	5 15 06 15	1 27 56 49	3 00 11 35	11 26 36 29	+21 27	-24 15	-- --	9 41	28
29	1 13 48 01	9 24 05 50	10 26 07 51	1 07 14 39	5 15 04 50	1 29 10 16	3 00 17 41	11 26 33 18	+21 36	-19 49	0 10	10 51	29
30	1 14 45 34	10 08 20 07	10 26 50 31	1 09 23 13	5 15 03 36	2 00 23 43	3 00 23 52	11 26 30 07	+21 46	-14 19	0 49	12 00	30
31	1 15 43 06	10 22 18 16	10 27 33 10	1 11 32 57	5 15 02 33	2 01 37 09	3 00 30 05	11 26 26 56	+21 54	-08 12	1 22	13 04	31
जून	1 16 40 36	11 05 59 56	10 28 15 42	1 13 43 40	5 15 01 39	2 02 50 35	3 00 36 22	11 26 23 45	+22 02	-01 47	1 52	14 10	जून
2	1 17 38 07	11 19 25 58	10 28 58 13	1 15 55 07	5 15 00 59	2 04 04 01	3 00 42 41	11 26 20 34	+22 10	+04 35	2 22	15 09	2
3	1 18 35 36	0 02 37 39	10 29 40 42	1 18 07 00	5 15 00 28	2 05 17 25	3 00 49 04	11 26 17 23	+22 18	+10 38	2 51	16 12	3
4	1 19 33 05	0 15 36 21	11 00 23 05	1 20 19 08	5 15 00 08	2 06 30 46	3 00 55 32	11 26 14 12	+22 25	+16 09	3 21	17 15	4
5	1 20 30 32	0 28 23 15	11 01 05 24	1 22 31 11	5 14 59 59	2 07 44 08	3 01 02 02	11 26 11 01	+22 32	+20 52	3 56	18 16	5
6	1 21 28 00	1 10 59 10	11 01 47 40	1 24 42 54	5 15 00 01	2 08 57 29	3 01 08 34	11 26 07 50	+22 38	+24 33	4 34	19 16	6
7	1 22 25 25	1 23 24 46	11 02 29 52	1 26 54 00	5 15 00 14	2 10 10 50	3 01 15 11	11 26 04 40	+22 44	+27 02	5 18	20 17	7
8	1 23 22 51	2 05 40 38	11 03 11 59	1 29 04 13	5 15 00 37	2 11 24 08	3 01 21 50	11 26 01 29	+22 50	+28 09	6 07	21 08	8
9	1 24 20 15	2 17 47 40	11 03 54 04	2 01 13 20	5 15 01 12	2 12 37 26	3 01 28 31	11 25 58 18	+22 55	+27 54	7 01	21 56	9
10	1 25 17 38	2 29 47 08	11 04 36 03	2 03 21 07	5 15 01 57	2 13 50 43	3 01 35 15	11 25 55 07	-23 00	+26 21	7 56	22 37	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (11 जून से 17 जुला. तक)

1 जुलाई, 2005 ई. को अयनांश 23°/55'/57''

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	+अं. क.	घं. मि.	घं. मि.	11
11	1 26 15 01	3 11 41 00	11 05 17 58	2 05 27 23	5 15 02 54	2 15 03 59	3 01 42 02	11 25 51 56	-23 04	+23 37	8 53	23 12	12
12	1 27 12 22	3 23 31 59	11 05 59 46	2 07 31 55	5 15 04 00	2 16 17 13	3 01 48 51	11 25 48 46	-23 08	+19 55	9 51	23 44	13
13	1 28 09 43	4 05 23 34	11 06 41 32	2 09 34 38	5 15 05 17	2 17 30 27	3 01 55 44	11 25 45 35	-23 12	+15 25	10 48	-- --	14
14	1 29 07 03	4 17 19 56	11 07 23 12	2 11 35 24	5 15 06 46	2 18 43 39	3 02 02 39	11 25 42 24	-23 15	+10 19	11 42	0 12	15
15	2 00 04 21	4 29 25 50	11 08 04 46	2 13 34 04	5 15 08 24	2 19 56 50	3 02 09 36	11 25 39 13	-23 18	+04 46	12 38	0 39	16
16	2 01 01 39	5 11 46 20	11 08 46 16	2 15 30 37	5 15 10 14	2 21 10 00	3 02 16 36	11 25 36 02	-23 20	-01 04	13 35	1 05	17
17	2 01 58 56	5 24 26 26	11 09 27 41	2 17 24 57	5 15 12 14	2 22 23 08	3 02 23 38	11 25 32 51	-23 22	-07 01	14 34	1 33	18
18	2 02 56 12	6 07 30 37	11 10 09 01	2 19 17 03	5 15 14 24	2 23 36 15	3 02 30 43	11 25 29 40	-23 24	-12 52	15 36	2 02	19
19	2 03 53 28	6 21 02 02	11 10 50 15	2 21 06 51	5 15 16 45	2 24 49 21	3 02 37 49	11 25 26 29	-23 25	-18 20	16 42	2 35	20
20	2 04 50 42	7 05 01 54	11 11 31 23	2 22 54 20	5 15 19 15	2 26 02 24	3 02 44 57	11 25 23 18	-23 26	-23 00	17 55	3 15	21
21	2 05 47 56	7 19 28 30	11 12 12 26	2 24 39 31	5 15 21 56	2 27 15 27	3 02 52 09	11 25 20 07	-23 26	-26 25	19 04	4 03	22
22	2 06 45 10	8 04 16 59	11 12 53 24	2 26 22 20	5 15 24 47	2 28 28 29	3 02 59 22	11 25 16 56	-23 26	-28 06	20 15	5 01	23
23	2 07 42 23	8 19 19 26	11 13 34 15	2 27 02 48	5 15 27 48	2 29 41 29	3 03 06 37	11 25 13 45	-23 25	-27 45	21 13	6 09	24
24	2 08 39 36	9 04 26 02	11 14 15 01	2 29 40 54	5 15 30 59	3 00 54 28	3 03 13 53	11 25 10 35	-23 24	-25 21	22 05	7 22	25
25	2 09 36 48	9 19 26 43	11 14 55 41	3 01 16 39	5 15 34 20	3 02 07 26	3 03 21 12	11 25 07 24	-23 23	-21 13	22 47	8 37	26
26	2 10 34 01	10 04 13 00	11 15 36 15	3 02 50 00	5 15 37 51	3 03 20 23	3 03 28 32	11 25 04 13	-23 21	-15 49	23 22	9 48	27
27	2 11 31 14	10 18 39 03	11 16 16 42	3 04 20 56	5 15 41 32	3 04 33 18	3 03 35 54	11 25 01 02	-23 19	-09 39	23 54	10 56	28
28	2 12 28 26	11 02 42 04	11 16 57 01	3 05 49 28	5 15 45 21	3 05 46 11	3 03 43 17	11 24 57 51	-23 17	-03 09	-- --	12 01	29
29	2 13 25 39	11 16 21 56	11 17 37 15	3 07 15 34	5 15 49 22	3 01 59 04	3 03 50 43	11 24 54 40	-23 14	+03 20	0 25	13 03	30
30	2 14 22 51	11 29 40 19	11 18 17 21	3 08 39 12	5 15 53 30	3 08 11 56	3 03 58 10	11 24 51 29	-23 10	+09 30	0 53	14 04	जुला
जुला	2 15 20 04	0 12 40 00	11 18 57 20	3 10 00 20	5 15 57 49	3 09 24 47	3 04 05 38	11 24 48 18	+23 07	+15 07	1 24	15 06	2
2	2 16 17 16	0 25 24 01	11 19 37 11	3 11 18 56	5 16 02 18	3 10 37 37	3 04 13 08	11 24 45 08	+23 03	+19 59	1 57	16 08	3
3	2 17 14 29	1 07 55 12	11 20 16 54	3 12 34 57	5 16 06 56	3 11 50 25	3 04 20 40	11 24 41 57	+22 58	+23 51	2 33	17 09	4
4	2 18 11 42	1 20 15 57	11 20 56 29	3 13 48 20	5 16 11 44	3 13 03 12	3 04 28 13	11 24 38 46	+22 53	+26 35	3 14	18 09	5
5	2 19 08 55	2 02 28 13	11 21 35 54	3 14 58 59	5 16 16 39	3 14 15 57	3 04 35 46	11 24 35 35	+22 48	+28 00	4 02	19 04	6
6	2 20 06 09	2 14 33 23	11 22 15 12	3 16 06 52	5 16 21 45	3 15 28 42	3 04 43 22	11 24 32 24	+22 42	+28 04	4 53	19 55	7
7	2 21 03 22	2 26 32 39	11 22 54 21	3 17 11 56	5 16 27 00	3 16 41 25	3 04 50 57	11 24 29 13	+22 36	+26 49	5 49	20 38	8
8	2 22 00 36	3 08 27 13	11 23 33 20	3 18 14 03	5 16 32 24	3 17 54 06	3 04 58 35	11 24 26 02	+22 29	+24 21	6 46	21 15	9
9	2 22 57 49	3 20 18 33	11 24 12 11	3 19 13 08	5 16 37 55	3 19 06 45	3 05 06 12	11 24 22 51	+22 22	+20 51	7 43	21 47	10
10	2 23 55 03	4 02 08 35	11 24 50 52	3 20 09 05	5 16 43 37	3 20 19 24	3 05 13 51	11 24 19 40	+22 15	+16 32	8 40	22 16	11
11	2 24 52 16	4 14 00 01	11 25 29 23	3 21 01 48	5 16 49 27	3 21 32 00	3 05 21 31	11 24 16 29	+22 07	+11 35	9 35	22 43	12
12	2 25 49 29	4 25 56 11	11 26 07 45	3 21 51 10	5 16 55 26	3 22 44 36	3 05 29 12	11 24 13 18	+21 59	+06 11	10 31	23 08	13
13	2 26 46 43	5 08 01 07	11 26 45 56	3 22 37 02	5 17 01 33	3 23 57 09	3 05 36 53	11 24 10 07	+21 51	+00 29	11 27	23 34	14
14	2 27 43 56	5 20 19 31	11 27 23 56	3 23 19 17	5 17 07 49	3 25 09 41	3 05 44 36	11 24 06 56	+21 42	-05 20	12 22	-- --	15
15	2 28 41 09	6 02 56 22	11 28 01 47	3 23 57 46	5 17 14 12	3 26 22 10	3 05 52 18	11 24 03 45	+21 33	-11 06	13 20	0 01	16
16	2 29 38 24	6 15 56 28	11 28 39 27	3 24 32 19	5 17 20 45	3 27 34 38	3 06 00 01	11 24 00 34	+21 23	-16 35	14 24	0 31	17
17	3 00 35 37	6 29 23 54	11 29 16 56	3 25 02 48	5 17 27 24	3 28 47 03	3 06 07 44	11 23 57 23	+21 13	-21 27	15 31	1 06	

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (18 जुला. से 23 अग. तक) 1 अगस्त, 2005 ई. को अयनांश 23°/56′/02″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
18	3 01 32 51	7 13 20 57	11 29 54 15	3 25 29 04	5 17 34 12	3 29 59 27	3 06 15 28	11 23 54 12	+21 03	-25 18	16 41	1 48	18
19	3 02 30 05	7 27 47 25	0 00 31 22	3 25 50 59	5 17 41 09	4 01 11 49	3 06 23 13	11 23 51 01	+20 52	-27 42	17 51	2 40	19
20	3 03 27 19	8 12 39 32	0 01 08 19	3 26 08 23	5 17 48 13	4 02 24 09	3 06 30 58	11 23 47 50	+20 41	-28 12	18 56	3 43	20
21	3 04 24 34	8 27 50 03	0 01 45 01	3 26 21 07	5 17 55 24	4 03 36 26	3 06 38 42	11 23 44 39	+20 30	-26 37	19 51	4 53	21
22	3 05 21 49	9 13 08 36	0 02 21 34	3 26 29 04	5 18 02 43	4 04 48 42	3 06 46 27	11 23 41 28	+20 18	-23 04	20 38	6 09	22
23	3 06 19 04	9 28 23 53	0 02 57 54	3 26 32 09	5 18 10 10	4 06 00 56	3 06 54 13	11 23 38 17	+20 06	-17 56	21 19	7 25	23
24	3 07 16 21	10 13 25 19	0 03 34 02	3 26 30 16	5 18 17 44	4 07 13 08	3 07 01 56	11 23 35 06	+19 54	-11 47	21 53	8 37	24
25	3 08 13 38	10 28 05 00	0 04 09 58	3 26 23 24	5 18 25 26	4 08 25 17	3 07 09 42	11 23 31 55	+19 41	-05 06	22 24	9 47	25
26	3 09 10 56	11 12 18 30	0 04 45 39	3 26 11 32	5 18 33 13	4 09 37 24	3 07 17 26	11 23 28 44	+19 28	+01 38	22 54	10 53	26
27	3 10 08 15	11 26 04 39	0 05 21 09	3 25 54 46	5 18 41 09	4 10 49 30	3 07 25 11	11 23 25 33	+19 14	+08 06	23 25	11 57	27
28	3 11 05 35	0 09 24 53	0 05 56 22	3 25 33 09	5 18 49 13	4 12 01 35	3 07 32 56	11 23 22 22	+19 01	+14 00	23 57	13 00	28
29	3 12 02 56	0 22 22 14	0 06 31 23	3 25 06 55	5 18 57 23	4 13 13 36	3 07 40 41	11 23 19 11	+18 47	+19 07	-- --	14 03	29
30	3 13 00 18	1 05 00 29	0 07 06 08	3 24 36 19	5 19 05 40	4 14 25 35	3 07 48 25	11 23 16 00	+18 32	+23 15	0 34	15 04	30
31	3 13 57 40	1 17 23 37	0 07 40 39	3 24 01 43	5 19 14 05	4 15 37 33	3 07 56 09	11 23 12 49	+18 18	+26 14	1 13	16 04	31
अग	3 14 55 05	1 29 35 13	0 08 14 54	3 23 23 33	5 19 22 35	4 16 49 29	3 08 03 53	11 23 09 38	+18 03	+27 55	1 58	17 01	अग
2	3 15 52 30	2 11 38 30	0 08 48 52	3 22 42 19	5 19 31 12	4 18 01 22	3 08 11 36	11 23 06 27	+17 48	+28 16	2 48	17 50	2
3	3 16 49 56	2 23 35 56	0 09 22 35	3 21 58 41	5 19 39 56	4 19 13 14	3 08 19 17	11 23 03 16	+17 32	+27 17	3 43	18 37	3
4	3 17 47 23	3 05 29 34	0 09 56 01	3 21 13 20	5 19 48 47	4 20 25 03	3 08 26 59	11 23 00 05	+17 16	+25 04	4 40	19 16	4
5	3 18 44 52	3 17 21 05	0 10 29 10	3 20 27 02	5 19 57 44	4 21 36 50	3 08 34 40	11 22 56 54	+17 00	+21 46	5 38	19 50	5
6	3 19 42 21	3 29 12 01	0 11 02 01	3 19 40 36	5 20 06 48	4 22 48 35	3 08 42 21	11 22 53 43	+16 44	+17 35	6 34	20 19	6
7	3 20 39 51	4 11 03 59	0 11 34 34	3 18 54 53	5 20 15 57	4 24 00 16	3 08 49 59	11 22 50 32	+16 27	+12 44	7 31	20 46	7
8	3 21 37 22	4 22 58 57	0 12 06 49	3 18 10 49	5 20 25 13	4 25 11 56	3 08 57 38	11 22 47 21	+16 10	+07 24	8 25	21 12	8
9	3 22 34 54	5 04 59 22	0 12 38 45	3 17 29 12	5 20 34 35	4 26 23 33	3 09 05 15	11 22 44 10	+15 53	+01 44	9 20	21 37	9
10	3 23 32 27	5 17 08 17	0 13 10 22	3 16 50 54	5 20 44 03	4 27 35 07	3 09 12 52	11 22 40 59	+15 36	-04 03	10 15	22 03	10
11	3 24 30 02	5 29 29 22	0 13 41 40	3 16 16 42	5 20 53 37	4 28 46 39	3 09 20 27	11 22 37 48	+15 18	-09 47	11 12	22 31	11
12	3 25 27 36	6 12 06 42	0 14 12 38	3 15 47 17	5 21 03 16	4 29 58 08	3 09 28 01	11 22 34 37	+15 00	-15 16	12 12	22 03	12
13	3 26 25 11	6 25 04 30	0 14 43 16	3 15 23 19	5 21 13 01	5 01 09 34	3 09 35 34	11 22 31 26	+14 42	-20 13	13 17	22 31	13
14	3 27 22 48	7 08 26 36	0 15 13 33	3 15 05 20	5 21 22 52	5 02 20 57	3 09 43 05	11 22 28 15	+14 24	-24 19	14 23	23 03	14
15	3 28 20 25	7 22 15 41	0 15 43 29	3 14 53 50	5 21 32 48	5 03 32 18	3 09 50 35	11 22 25 04	+14 05	-27 11	15 31	23 41	15
16	3 29 18 03	8 06 32 30	0 16 13 04	3 14 49 10	5 21 42 50	5 04 43 34	3 09 58 05	11 22 21 53	+13 46	-28 23	16 36	-- --	16
17	4 00 15 43	8 21 14 54	0 16 42 17	3 14 51 38	5 21 52 57	5 05 54 48	3 10 05 32	11 22 18 43	+13 27	-27 39	17 36	0 28	17
18	4 01 13 23	9 06 17 29	0 17 11 08	3 15 01 25	5 22 03 19	5 07 05 58	3 10 12 58	11 22 15 32	+13 08	-24 55	18 27	1 24	18
19	4 02 11 05	9 21 31 38	0 17 39 36	3 15 18 40	5 22 13 26	5 08 17 06	3 10 20 22	11 22 12 21	+12 49	-20 24	19 10	2 30	19
20	4 03 08 48	10 06 46 56	0 18 07 41	3 15 43 24	5 22 23 48	5 09 28 09	3 10 27 44	11 22 09 10	+12 29	-14 33	19 47	3 44	20
21	4 04 06 32	10 21 52 40	0 18 35 22	3 16 15 38	5 22 34 16	5 10 39 09	3 10 35 05	11 22 05 59	+12 09	-07 53	20 20	5 00	21
22	4 05 04 18	11 06 39 48	0 19 02 39	3 16 55 18	5 22 44 48	5 11 50 07	3 10 42 24	11 22 02 48	+11 49	-00 54	20 51	6 15	22
23	4 06 02 05	11 21 02 14	0 19 29 31	3 17 42 14	5 22 55 25	5 13 01 00	3 10 49 41	11 21 59 38	+11 29	+05 56	21 24	7 27	23

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (24 अग. से 30 सितं. तक)

1 सितंबर, 2005 ई. को अयनांश 23°/56′/07″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टें. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अगस्त
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
24	4 06 59 55	0 04 57 03	0 19 55 57	3 18 36 16	5 23 06 06	5 14 11 51	3 10 56 56	11 21 56 27	+11 09	+12 17	21 56	10 48	24
25	4 07 57 45	0 18 24 13	0 20 21 57	3 19 37 11	5 23 16 53	5 15 22 38	3 11 04 10	11 21 53 16	+10 48	+17 51	22 31	11 53	25
26	4 08 55 38	1 01 25 56	0 20 47 30	3 20 44 40	5 23 27 44	5 16 33 23	3 11 11 21	11 21 50 05	+10 27	+22 24	23 10	12 57	26
27	4 09 53 32	1 14 05 42	0 21 12 35	3 21 58 23	5 23 49 40	5 17 44 03	3 11 18 30	11 21 46 54	+10 06	+25 45	23 53	13 57	27
28	4 10 51 29	1 26 27 46	0 21 37 12	3 23 17 59	5 23 49 40	5 18 54 41	3 11 25 38	11 21 43 43	+9 45	+27 48	-- --	14 56	28
29	4 11 49 27	2 08 36 24	0 22 01 20	3 24 43 03	5 24 00 44	5 20 05 15	3 11 32 43	11 21 40 33	+9 24	+28 29	0 43	15 49	29
30	4 12 47 26	2 20 35 44	0 22 24 57	3 26 13 06	5 24 11 52	5 21 15 45	3 11 39 44	11 21 37 22	+9 03	+27 47	1 37	16 35	30
31	4 13 45 28	3 02 29 22	0 22 48 03	3 27 47 45	5 24 23 05	5 22 26 12	3 11 46 45	11 21 34 11	+8 41	+25 50	2 33	17 14	31
सितं	4 14 43 31	3 14 20 28	0 23 10 39	3 29 26 25	5 24 34 22	5 23 36 35	3 11 53 43	11 21 31 00	+8 19	+22 45	3 30	17 52	सितं
2	4 15 41 37	3 26 11 38	0 23 32 42	4 01 08 44	5 24 45 43	5 24 46 55	3 12 00 38	11 21 27 49	+7 58	+18 45	4 29	18 23	2
3	4 16 39 44	4 08 04 59	0 23 54 12	4 02 54 05	5 24 57 08	5 25 57 11	3 12 07 31	11 21 24 38	+7 36	+14 00	5 26	18 50	3
4	4 17 37 52	4 20 02 22	0 24 15 09	4 04 42 03	5 25 08 37	5 27 07 23	3 12 14 20	11 21 21 28	+7 14	+08 42	6 20	19 15	4
5	4 18 36 03	5 02 05 31	0 24 35 32	4 06 32 10	5 25 20 10	5 28 17 30	3 12 21 08	11 21 18 17	+6 51	+03 03	7 17	19 10	5
6	4 19 34 15	5 14 16 06	0 24 55 19	4 08 24 00	5 25 31 46	5 29 27 34	3 12 27 52	11 21 15 06	+6 29	-02 47	8 09	20 06	6
7	4 20 32 28	5 26 36 08	0 25 14 31	4 10 17 07	5 25 43 26	6 00 37 34	3 12 34 34	11 21 11 55	+6 07	-08 35	9 07	20 34	7
8	4 21 30 43	6 09 07 47	0 25 33 07	4 12 11 12	5 25 55 10	6 01 47 29	3 12 41 12	11 21 08 44	+5 44	-14 09	10 07	21 05	8
9	4 22 29 01	6 21 53 38	0 25 51 05	4 14 05 53	5 26 06 57	6 02 57 20	3 12 47 48	11 21 05 33	+5 22	-19 14	11 09	21 40	9
10	4 23 27 19	7 04 56 18	0 26 08 26	4 16 00 53	5 26 18 47	6 04 07 06	3 12 54 20	11 21 02 23	+4 59	-23 32	12 13	22 22	10
11	4 24 25 38	7 18 18 20	0 26 25 08	4 17 55 56	5 26 30 40	6 05 16 47	3 13 00 49	11 20 59 12	+4 36	-26 41	13 20	23 13	11
12	4 25 24 00	8 02 01 38	0 26 41 11	4 19 50 52	5 26 42 37	6 06 26 24	3 13 07 15	11 20 56 01	+4 13	-28 22	14 25	-- --	12
13	4 26 22 23	8 16 06 54	0 26 56 35	4 21 45 28	5 26 54 37	6 07 35 55	3 13 13 28	11 20 52 50	+3 50	-28 17	15 25	0 14	13
14	4 27 20 47	9 00 32 57	0 27 11 18	4 23 39 35	5 27 06 40	6 08 45 22	3 13 19 38	11 20 49 39	+3 27	-26 18	16 17	1 20	14
15	4 28 19 13	9 15 16 27	0 27 25 20	4 25 33 04	5 27 18 46	6 09 54 42	3 13 26 23	11 20 46 28	+3 04	-22 31	17 03	2 34	15
16	4 29 17 41	10 00 11 34	0 27 38 40	4 27 25 51	5 27 30 54	6 11 03 57	3 13 32 26	11 20 43 18	+2 41	-17 15	17 43	3 48	16
17	5 00 16 10	10 15 10 39	0 27 51 18	4 29 17 50	5 27 43 06	6 12 13 07	3 13 38 35	11 20 40 07	+2 18	-10 55	18 16	5 01	17
18	5 01 14 42	11 00 05 07	0 28 03 12	5 01 08 58	5 27 55 20	6 13 22 11	3 13 43 41	11 20 36 56	+1 55	-04 00	18 49	6 10	18
19	5 02 13 15	11 14 46 45	0 28 14 22	5 02 59 13	5 28 07 37	6 14 31 10	3 13 50 43	11 20 33 45	+1 32	+03 02	19 20	7 20	19
20	5 03 11 50	11 29 08 54	0 28 24 48	5 04 48 31	5 28 19 57	6 15 40 02	3 13 56 41	11 20 30 34	+1 08	+09 46	19 52	8 26	20
21	5 04 10 27	0 13 07 15	0 28 34 27	5 06 36 53	5 28 32 19	6 16 48 49	3 14 02 35	11 20 27 23	+0 45	+15 51	20 26	9 32	21
22	5 05 09 07	0 26 39 59	0 28 43 19	5 08 24 17	5 28 44 43	6 17 57 30	3 14 08 26	11 20 24 13	+0 22	+20 57	21 05	10 40	22
23	5 06 07 48	1 09 47 30	0 28 51 24	5 10 10 42	5 28 57 11	6 19 06 05	3 14 14 13	11 20 21 02	-0 02	+24 52	21 47	11 43	23
24	5 07 06 32	1 22 32 05	0 28 58 39	5 11 56 09	5 29 09 40	6 20 14 33	3 14 19 56	11 20 17 51	-0 25	+27 25	22 35	12 44	24
25	5 08 05 18	2 04 57 13	0 29 05 06	5 13 40 39	5 29 22 12	6 21 22 56	3 14 25 35	11 20 14 40	-0 48	+28 32	23 27	13 40	25
26	5 09 04 07	2 17 07 07	0 29 10 41	5 15 24 10	5 29 34 45	6 22 31 11	3 14 31 09	11 20 11 29	-1 12	+28 14	-- --	14 32	26
27	5 10 02 57	2 29 06 15	0 29 15 27	5 17 06 45	5 29 47 21	6 23 39 21	3 14 36 40	11 20 08 18	-1 35	+26 36	0 23	15 15	27
28	5 11 01 50	3 10 59 08	0 29 19 21	5 18 48 23	5 29 59 57	6 24 47 24	3 14 42 06	11 20 05 08	-1 58	+23 49	1 20	15 53	28
29	5 12 00 45	3 22 49 55	0 29 22 23	5 20 29 08	6 00 12 39	6 25 55 19	3 14 47 28	11 20 01 57	-2 22	+20 02	2 20	16 24	29
30	5 12 59 42	4 04 42 22	0 29 24 33	5 22 08 58	6 00 25 21	6 27 03 09	3 14 52 45	11 19 58 46	-2 45	+15 27	3 17	16 53	30

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (1 अक्तू. से 5 नवं. तक)

1 अक्तू., 2005 ई. को अयनांश 23°/56′/14″

जालन्धर (भा. स्टैं. टा.)

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चंद्रोदय	चंद्रास्त	
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
अक्तू	5 13 58 41	4 16 39 40	0 29 25 49	5 23 47 56	6 00 38 05	6 28 10 51	3 14 57 59	11 19 55 35	-3 08	+10 16	4 14	17 20	अक्तू
2	5 14 57 43	4 28 44 32	0 29 26 11	5 25 26 01	6 00 50 50	6 29 18 25	3 15 03 07	11 19 52 24	-3 32	+04 39	5 09	17 15	2
3	5 15 56 47	5 10 58 57	0 29 25 39	5 27 03 16	6 01 03 37	7 00 25 53	3 15 08 11	11 19 49 13	-3 55	-01 13	6 05	18 10	3
4	5 16 55 53	5 23 24 28	0 29 24 14	5 28 39 41	6 01 16 26	7 01 33 11	3 15 13 10	11 19 46 03	-4 18	-07 07	7 02	18 37	4
5	5 17 55 00	6 06 02 12	0 29 21 54	6 00 15 17	6 01 29 16	7 02 40 12	3 15 18 05	11 19 42 52	-4 41	-12 51	7 59	19 07	5
6	5 18 54 10	6 18 52 54	0 29 18 41	6 01 50 05	6 01 42 08	7 03 47 25	3 15 22 54	11 19 39 41	-5 04	-18 09	9 03	19 41	6
7	5 19 53 22	7 01 57 07	0 29 14 33	6 03 24 05	6 01 55 01	7 04 54 19	3 15 27 38	11 19 36 30	-5 27	-22 41	10 08	20 21	7
8	5 20 52 35	7 15 15 13	0 29 09 31	6 04 57 18	6 02 07 54	7 06 01 03	3 15 32 18	11 19 33 19	-5 50	-26 08	11 14	21 09	8
9	5 21 51 50	7 28 47 27	0 29 03 36	6 06 29 46	6 02 20 50	7 07 07 39	3 15 36 53	11 19 30 08	-6 13	-28 10	12 18	22 06	9
10	5 22 51 07	8 12 33 47	0 28 56 48	6 08 01 29	6 02 33 46	7 08 14 05	3 15 41 23	11 19 26 58	-6 36	-28 31	13 21	23 10	10
11	5 23 50 26	8 26 33 43	0 28 49 08	6 09 32 26	6 02 46 44	7 09 20 21	3 15 45 48	11 19 23 47	-6 59	-27 04	14 13	-- --	11
12	5 24 49 47	9 10 46 06	0 28 40 35	6 11 02 37	6 02 59 41	7 10 26 26	3 15 50 06	11 19 20 36	-7 21	-23 53	15 00	0 20	12
13	5 25 49 09	9 25 08 47	0 28 31 11	6 12 32 04	6 03 12 41	7 11 32 21	3 15 54 21	11 19 17 25	-7 43	-19 12	15 39	1 31	13
14	5 26 48 33	10 09 38 34	0 28 20 57	6 14 00 46	6 03 25 41	7 12 38 04	3 15 58 30	11 19 14 14	-8 06	-13 22	16 14	2 43	14
15	5 27 47 59	10 24 11 02	0 28 09 54	6 15 28 42	6 03 38 41	7 13 43 36	3 16 02 33	11 19 11 03	-8 28	-06 48	16 46	3 52	15
16	5 28 47 26	11 08 41 02	0 27 58 02	6 16 55 53	6 03 51 42	7 14 48 56	3 16 06 31	11 19 07 53	-8 50	+00 06	17 15	4 57	16
17	5 29 46 56	11 23 02 58	0 27 45 23	6 18 22 17	6 04 04 44	7 15 54 04	3 16 10 24	11 19 04 42	-9 12	+06 57	17 48	6 05	17
18	6 00 46 27	0 07 11 34	0 27 31 57	6 19 47 53	6 04 17 47	7 16 58 59	3 16 14 11	11 19 01 31	-9 34	+13 21	18 21	7 12	18
19	6 01 46 01	0 21 02 30	0 27 17 47	6 21 12 40	6 04 30 49	7 18 03 41	3 16 17 53	11 18 58 20	-9 56	+18 57	18 57	8 21	19
20	6 02 45 37	1 04 32 49	0 27 02 52	6 22 36 36	6 04 43 53	7 19 08 10	3 16 21 29	11 18 55 09	-10 18	+23 27	19 40	9 27	20
21	6 03 45 15	1 17 41 23	0 26 47 16	6 23 59 40	6 04 56 56	7 20 12 26	3 16 26 00	11 18 51 59	-10 39	+26 36	20 26	10 31	21
22	6 04 44 55	2 00 28 39	0 26 30 58	6 25 21 47	6 05 09 59	7 21 16 26	3 16 28 24	11 18 48 48	-11 00	+28 17	21 17	11 30	22
23	6 05 44 37	2 12 56 45	0 26 14 03	6 26 42 56	6 05 23 03	7 22 20 13	3 16 31 43	11 18 45 37	-11 22	+28 29	22 13	12 24	23
24	6 06 44 21	2 25 08 53	0 25 56 31	6 28 03 04	6 05 36 07	7 23 23 45	3 16 34 56	11 18 42 26	-11 43	+27 16	23 12	13 10	24
25	6 07 44 08	3 07 09 13	0 25 38 24	6 29 22 05	6 05 49 11	7 24 27 02	3 16 38 03	11 18 39 15	-12 03	+24 49	-- --	13 50	25
26	6 08 43 57	3 19 02 24	0 25 19 46	7 00 39 55	6 06 02 15	7 25 29 43	3 16 41 05	11 18 36 05	-12 24	+21 19	0 10	14 24	26
27	6 09 43 48	4 00 53 12	0 25 00 38	7 01 56 27	6 06 15 19	7 26 32 48	3 16 44 00	11 18 32 54	-12 44	+16 59	1 07	14 54	27
28	6 10 43 42	4 12 46 28	0 24 41 01	7 03 11 35	6 06 28 22	7 27 35 14	3 16 46 48	11 18 29 43	-13 05	+11 59	2 03	15 17	28
29	6 11 43 37	4 24 46 36	0 24 21 02	7 04 25 13	6 06 41 25	7 28 37 24	3 16 49 31	11 18 26 32	-13 25	+06 30	2 58	15 45	29
30	6 12 43 35	5 06 57 30	0 24 00 41	7 05 37 10	6 06 54 28	7 29 39 16	3 16 52 08	11 18 23 21	-13 44	+00 43	3 54	16 12	30
31	6 13 43 35	5 19 22 19	0 23 40 02	7 06 47 16	6 07 07 30	8 00 40 50	3 16 54 38	11 18 20 11	-14 04	-05 14	4 50	16 39	31
नवं.	6 14 43 36	6 02 03 09	0 23 19 08	7 07 55 21	6 07 20 32	8 01 42 04	3 16 57 03	11 18 17 00	-14 23	-11 05	5 49	17 08	नवं.
2	6 15 43 40	6 15 00 58	0 22 58 02	7 09 01 10	6 07 33 34	8 02 42 57	3 16 59 21	11 18 13 49	-14 43	-16 36	6 51	17 41	2
3	6 16 43 46	6 28 15 38	0 22 36 47	7 10 04 28	6 07 46 34	8 03 43 30	3 17 01 32	11 18 10 38	-15 01	-21 28	7 56	18 20	3
4	6 17 43 53	7 11 45 50	0 22 15 26	7 11 04 58	6 07 59 34	8 04 43 41	3 17 03 38	11 18 07 27	-15 20	-25 19	9 02	19 06	4
5	6 18 44 02	7 25 29 19	0 21 54 04	7 12 02 20	6 08 12 33	8 05 43 29	3 17 05 37	11 18 04 16	-15 39	-27 46	10 10	20 01	5

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट (6 नवं. से 12 दिसं. तक)

1 दिसंबर, 2005 ई. को अयनांश 23°/56′/18″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
6	6 19 44 13	8 09 23 22	0 21 32 41	7 12 56 11	6 08 25 30	8 06 42 53	3 17 07 28	11 18 01 06	-15 57	-28 31	11 12	21 03	6
7	6 20 44 25	8 23 25 02	0 21 11 24	7 13 46 07	6 08 38 27	8 07 41 54	3 17 09 14	11 17 57 55	-16 15	-27 28	12 08	22 12	7
8	6 21 44 39	9 07 31 36	0 20 50 15	7 14 31 38	6 08 51 23	8 08 40 28	3 17 10 53	11 17 54 44	-16 32	-24 39	12 56	23 23	8
9	6 22 44 54	9 21 40 44	0 20 29 16	7 15 12 15	6 09 04 18	8 09 38 36	3 17 12 26	11 17 51 33	-16 49	-20 21	13 37	-- --	9
10	6 23 45 11	10 05 50 29	0 20 08 30	7 15 47 21	6 09 17 10	8 10 36 15	3 17 13 50	11 17 48 22	-17 07	-14 54	14 13	0 33	10
11	6 24 45 29	10 19 59 12	0 19 48 02	7 16 16 21	6 09 30 01	8 11 33 25	3 17 15 10	11 17 45 11	-17 23	-08 49	14 45	1 41	11
12	6 25 45 48	11 04 05 11	0 19 27 53	7 16 38 33	6 09 42 52	8 12 30 05	3 17 16 23	11 17 42 01	-17 40	-02 03	15 15	2 47	12
13	6 26 46 09	11 18 06 29	0 19 08 06	7 16 53 15	6 09 55 40	8 13 26 14	3 17 17 30	11 17 38 50	-17 56	+04 39	15 45	3 52	13
14	6 27 46 31	0 02 00 46	0 18 48 43	7 16 59 43	6 10 08 27	8 14 21 50	3 17 18 29	11 17 35 39	-18 12	+11 05	16 17	4 57	14
15	6 28 46 55	0 15 45 24	0 18 29 47	7 16 57 16	6 10 21 12	8 15 16 52	3 17 19 22	11 17 32 28	-18 27	+16 54	16 52	6 00	15
16	6 29 47 20	0 29 17 36	0 18 11 21	7 16 45 17	6 10 33 56	8 16 11 18	3 17 20 09	11 17 29 17	-18 42	+21 48	17 31	7 08	16
17	7 00 47 48	1 12 34 56	0 17 53 25	7 16 23 14	6 10 46 38	8 17 05 08	3 17 20 48	11 17 26 07	-18 57	+25 29	18 16	8 13	17
18	7 01 48 16	1 25 35 37	0 17 36 02	7 15 50 49	6 10 59 17	8 17 58 19	3 17 21 21	11 17 22 56	-19 12	+27 44	19 07	9 16	18
19	7 02 48 46	2 08 19 02	0 17 19 15	7 15 07 57	6 11 11 54	8 18 50 51	3 17 21 47	11 17 19 45	-19 26	+28 28	20 01	10 13	19
20	7 03 49 18	2 20 45 48	0 17 03 05	7 14 15 00	6 11 24 30	8 19 42 42	3 17 22 06	11 17 16 34	-19 40	+27 44	21 00	11 04	20
21	7 04 49 52	3 02 57 49	0 16 47 33	7 13 12 44	6 11 37 04	8 20 36 51	3 17 22 18	11 17 13 23	-19 53	+25 40	21 58	11 46	21
22	7 05 50 27	3 14 58 10	0 16 32 40	7 12 02 23	6 11 49 34	8 21 24 08	3 17 22 22	11 17 10 13	-20 06	+22 43	22 56	12 24	22
23	7 06 51 04	3 26 50 55	0 16 18 30	7 10 45 47	6 12 02 03	8 22 13 52	3 17 22 21	11 17 07 02	-20 19	+18 44	23 52	12 55	23
24	7 07 51 43	4 08 40 47	0 16 05 03	7 09 25 10	6 12 14 30	8 23 02 42	3 17 22 14	11 17 03 51	-20 31	+13 54	-- --	13 23	24
25	7 08 52 24	4 20 32 57	0 15 52 19	7 08 03 06	6 12 26 54	8 23 50 42	3 17 21 59	11 17 00 40	-20 43	+08 23	0 47	13 49	25
26	7 09 53 06	5 02 32 44	0 15 40 21	7 06 42 21	6 12 39 15	8 24 37 51	3 17 21 38	11 16 57 29	-20 55	+02 24	1 42	14 14	26
27	7 10 53 49	5 14 45 14	0 15 29 10	7 05 25 39	6 12 51 34	8 25 24 05	3 17 21 10	11 16 54 19	-21 06	-03 52	2 37	14 39	27
28	7 11 54 34	5 27 14 55	0 15 18 46	7 04 15 24	6 13 03 50	8 26 09 23	3 17 20 35	11 16 51 08	-21 17	-10 13	3 34	15 07	28
29	7 12 55 21	6 10 05 19	0 15 09 09	7 03 13 40	6 13 16 03	8 26 53 43	3 17 19 53	11 16 47 57	-21 27	-16 15	4 35	15 38	29
30	7 13 56 09	6 23 18 20	0 15 00 20	7 02 21 59	6 13 28 13	8 27 37 03	3 17 19 05	11 16 44 46	-21 37	-21 24	5 38	16 14	30
दिसं	7 14 56 59	7 06 54 02	0 14 52 20	7 01 41 17	6 13 40 19	8 28 19 18	3 17 18 09	11 16 41 35	-21 47	-25 22	6 45	16 58	दिसं.
2	7 15 57 49	7 20 50 16	0 14 45 11	7 01 12 07	6 13 52 23	8 29 00 27	3 17 17 08	11 16 38 25	-21 56	-27 35	7 54	17 51	2
3	7 16 58 41	8 05 02 51	0 14 38 51	7 00 54 27	6 14 04 24	8 29 40 27	3 17 16 00	11 16 35 14	-22 05	-27 50	9 01	18 53	3
4	7 17 59 33	8 19 26 03	0 14 33 21	7 00 47 59	6 14 16 20	9 00 19 15	3 17 14 44	11 16 32 03	-22 13	-26 09	10 01	20 02	4
5	7 19 00 27	9 03 53 34	0 14 28 41	7 00 52 08	6 14 28 14	9 00 56 48	3 17 13 22	11 16 28 52	-22 21	-22 46	10 53	21 14	5
6	7 20 01 22	9 18 19 33	0 14 24 52	7 01 06 09	6 14 40 04	9 01 33 02	3 17 11 53	11 16 25 41	-22 29	-18 06	11 37	22 24	6
7	7 21 02 17	10 02 39 23	0 14 21 52	7 01 29 10	6 14 51 50	9 02 07 54	3 17 10 20	11 16 22 31	-22 36	-12 35	12 15	23 32	7
8	7 22 03 13	10 16 50 06	0 14 19 41	7 02 00 21	6 15 03 32	9 02 40 50	3 17 08 38	11 16 19 20	-22 42	-06 40	12 47	-- --	8
9	7 23 04 09	11 00 50 17	0 14 18 20	7 02 38 50	6 15 15 10	9 03 13 16	3 17 06 50	11 16 16 09	-22 48	-00 31	13 17	0 39	9
10	7 24 05 07	11 14 39 42	0 14 17 48	7 03 23 50	6 15 26 45	9 03 43 41	3 17 04 56	11 16 12 59	-22 54	+05 32	13 47	1 44	10
11	7 25 06 05	11 28 18 38	0 14 18 05	7 04 14 35	6 15 38 15	9 04 12 29	3 17 02 57	11 16 09 48	-22 59	+11 15	14 18	2 46	11
12	7 26 07 03	0 11 47 29	0 14 19 08	7 05 10 22	6 15 49 42	9 04 39 36	3 17 00 51	11 16 06 37	-23 04	+16 25	14 50	3 49	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट [13 दिसं., 05 से 18 जन., 06 तक] 1 जन., 2006 ई. को अयनांश 23°/56′/25″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	दिसं.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
13	7 27 08 02	0 25 06 16	0 14 20 58	7 06 10 36	6 16 01 04	9 05 04 59	3 16 58 37	11 16 03 26	-23 08	+20 55	15 27	4 54	13
14	7 28 09 02	1 08 14 38	0 14 23 35	7 07 14 41	6 16 12 22	9 05 28 35	3 16 56 21	11 16 00 15	-23 12	+24 23	16 08	6 00	14
15	7 29 10 02	1 21 11 47	0 14 26 56	7 08 22 07	6 16 23 35	9 05 50 17	3 16 53 54	11 15 57 05	-23 16	+26 45	16 56	7 04	15
16	8 00 11 03	2 03 56 49	0 14 31 02	7 09 32 32	6 16 34 45	9 06 10 04	3 16 49 24	11 15 53 54	-23 19	+27 52	17 50	8 03	16
17	8 01 12 05	2 16 29 06	0 14 35 53	7 10 45 30	6 16 45 49	9 06 27 51	3 16 48 48	11 15 50 43	-23 21	+27 40	18 48	8 55	17
18	8 02 13 07	2 28 48 43	0 14 41 26	7 12 00 43	6 16 56 50	9 06 43 35	3 16 46 07	11 15 47 32	-23 23	+26 12	19 46	9 41	18
19	8 03 14 11	3 10 56 32	0 14 47 42	7 13 17 53	6 17 07 44	9 06 57 11	3 16 43 17	11 15 44 21	-23 25	+23 33	20 45	10 20	19
20	8 04 15 15	3 22 54 27	0 14 54 39	7 14 36 46	6 17 18 34	9 07 08 37	3 16 40 23	11 15 41 11	-23 25	+19 57	21 42	10 53	20
21	8 05 16 19	4 04 45 31	0 15 02 18	7 15 57 09	6 17 29 20	9 07 17 48	3 16 37 25	11 15 38 00	-23 26	+15 30	22 37	11 22	21
22	8 06 17 25	4 16 33 38	0 15 10 37	7 17 18 51	6 17 39 59	9 07 24 42	3 16 34 21	11 15 34 49	-23 26	+10 18	23 31	11 49	22
23	8 07 18 31	4 28 23 35	0 15 19 36	7 18 41 42	6 17 50 35	9 07 29 16	3 16 31 11	11 15 31 38	-23 26	+04 36	-- --	12 14	23
24	8 08 19 38	5 10 20 39	0 15 29 13	7 20 05 35	6 18 01 05	9 07 31 26	3 16 27 56	11 15 28 27	-23 25	-01 22	0 25	12 39	24
25	8 09 20 45	5 22 30 26	0 15 39 29	7 21 30 23	6 18 11 30	9 07 31 11	3 16 24 36	11 15 25 17	-23 24	-07 35	1 21	13 04	25
26	8 10 21 53	6 04 58 24	0 15 50 21	7 22 55 58	6 18 21 48	9 07 28 28	3 16 21 09	11 15 22 06	-23 22	-13 42	2 18	13 33	26
27	8 11 23 02	6 17 49 20	0 16 01 51	7 24 22 19	6 18 32 02	9 07 23 17	3 16 17 39	11 15 18 55	-23 20	-19 12	3 19	14 07	27
28	8 12 24 11	7 01 06 46	0 16 13 57	7 25 49 20	6 18 42 09	9 07 15 38	3 16 14 04	11 15 15 44	-23 17	-23 46	4 24	14 47	28
29	8 13 25 21	7 14 52 07	0 16 26 38	7 27 16 57	6 18 52 12	9 07 05 29	3 16 10 25	11 15 12 33	-23 14	-25 49	5 34	15 35	29
30	8 14 26 31	7 29 04 03	0 16 39 54	7 28 45 07	6 19 02 07	9 06 52 50	3 16 06 38	11 15 09 23	-23 11	-26 55	6 43	16 33	30
31	8 15 27 41	8 13 38 11	0 16 53 44	8 00 13 50	6 19 11 57	9 06 37 45	3 16 02 49	11 15 06 12	-23 06	-27 55	7 48	17 41	31
जन.	8 16 28 52	8 28 27 17	0 17 08 09	8 01 43 01	6 19 21 41	9 06 20 14	3 15 58 56	11 15 03 01	-23 02	-26 23	8 43	18 54	जन.
2	8 17 30 02	9 13 22 26	0 17 23 04	8 03 12 39	6 19 31 18	9 06 00 20	3 15 54 57	11 14 59 50	-22 57	-22 42	9 32	20 07	2
3	8 18 31 13	9 28 14 34	0 17 38 32	8 04 42 44	6 19 40 49	9 05 38 11	3 15 50 55	11 14 56 39	-22 51	-17 33	10 12	21 20	3
4	8 19 32 23	10 12 55 59	0 17 54 31	8 06 13 16	6 19 50 14	9 05 13 47	3 15 46 49	11 14 53 29	-22 46	-11 26	10 48	22 29	4
5	8 20 33 33	10 27 21 23	0 18 11 01	8 07 44 13	6 19 59 32	9 04 47 19	3 15 42 40	11 14 50 18	-22 39	-04 48	11 20	23 36	5
6	8 21 34 42	11 11 28 10	0 18 28 00	8 09 15 33	6 20 08 43	9 04 18 54	3 15 38 25	11 14 47 07	-22 32	+01 55	11 51	-- --	6
7	8 22 35 51	11 25 15 57	0 18 45 28	8 10 47 19	6 20 17 48	9 03 48 40	3 15 34 09	11 14 43 56	-22 25	+08 24	12 21	0 40	7
8	8 23 37 00	0 08 45 53	0 19 03 24	8 12 19 29	6 20 26 46	9 03 16 49	3 15 29 48	11 14 40 45	-22 17	+14 22	12 52	1 14	8
9	8 24 38 08	0 21 59 52	0 19 21 46	8 13 52 03	6 20 35 36	9 02 43 31	3 15 25 23	11 14 37 35	-22 09	+19 33	13 27	2 48	9
10	8 25 39 16	1 04 59 59	0 19 40 37	8 15 25 03	6 20 44 20	9 02 09 01	3 15 20 57	11 14 34 24	-22 01	+23 43	14 07	3 51	10
11	8 26 40 23	1 17 47 58	0 19 59 52	8 16 58 29	6 20 52 56	9 01 33 31	3 15 16 27	11 14 31 13	-21 52	+26 39	14 52	4 55	11
12	8 27 41 30	2 00 25 10	0 20 19 33	8 18 32 21	6 21 01 26	9 00 57 17	3 15 11 56	11 14 28 02	-21 42	+28 11	15 43	5 55	12
13	8 28 42 36	2 12 52 20	0 20 39 38	8 20 06 38	6 21 09 47	9 00 20 33	3 15 07 20	11 14 24 51	-21 32	+28 16	16 38	6 49	13
14	8 29 43 42	2 25 10 02	0 21 00 07	8 21 41 24	6 21 18 02	8 29 43 36	3 15 02 43	11 14 21 41	-21 22	+26 56	17 37	7 36	14
15	9 00 44 48	3 07 18 48	0 21 20 59	8 23 16 39	6 21 26 09	8 29 06 41	3 14 58 03	11 14 18 30	-21 11	+24 21	18 36	8 17	15
16	9 01 45 53	3 19 19 25	0 21 42 14	8 24 52 22	6 21 34 09	8 28 30 04	3 14 53 21	11 14 15 19	-21 00	+20 44	19 34	8 52	16
17	9 02 46 58	4 01 13 14	0 22 03 51	8 26 28 36	6 21 42 00	8 27 54 00	3 14 48 37	11 14 12 08	-20 49	+16 18	20 31	9 23	17
18	9 03 48 02	4 13 02 19	0 22 25 48	8 28 05 19	6 21 49 43	8 27 18 44	3 14 43 50	11 14 08 57	-20 37	+11 17	21 24	9 50	18

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रात: 5 घंटे 30 मिंट [10 जन., 06 से 23 फर., 06 तक] 1 फर. (2006 ई.) को अयनांश 23°/56′/31″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टें. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
19	9 04 49 06	4 24 49 35	0 22 48 07	8 29 42 35	6 21 57 19	8 26 44 31	3 14 39 02	11 14 05 47	-20 25	+5 53	22 19	10 15	19
20	9 05 50 10	5 06 38 46	0 23 10 46	9 01 20 25	6 22 04 47	8 26 11 35	3 14 34 13	11 14 02 36	-20 12	+0 16	23 13	10 40	20
21	9 06 51 13	5 18 34 18	0 23 33 46	9 02 58 47	6 22 12 06	8 25 40 08	3 14 29 24	11 13 59 25	-19 59	-5 26	-- --	11 05	21
22	9 07 52 16	6 00 41 18	0 23 57 05	9 04 37 44	6 22 19 17	8 25 10 21	3 14 24 31	11 13 56 14	-19 46	-11 01	0 10	11 30	22
23	9 08 53 18	6 13 05 10	0 24 20 42	9 06 17 17	6 22 26 20	8 24 42 25	3 14 19 39	11 13 53 03	-19 32	-16 18	1 07	12 02	23
24	9 09 54 20	6 25 51 03	0 24 44 39	9 07 57 26	6 22 33 14	8 24 16 28	3 14 14 45	11 13 49 53	-19 18	-21 03	2 09	12 37	24
25	9 10 55 21	7 09 03 26	0 25 08 54	9 09 38 12	6 22 40 00	8 23 52 38	3 14 09 50	11 13 46 42	-19 03	-24 55	3 14	13 20	25
26	9 11 56 22	7 22 45 17	0 25 33 26	9 11 19 34	6 22 46 36	8 23 31 01	3 14 04 54	11 13 43 31	-18 48	-27 32	4 21	14 09	26
27	9 12 57 23	8 06 56 59	0 25 58 16	9 13 01 34	6 22 53 05	8 23 11 45	3 13 59 58	11 13 40 20	-18 33	-28 30	5 27	15 15	27
28	9 13 58 22	8 21 35 47	0 26 23 23	9 14 44 13	6 22 59 23	8 22 54 50	3 13 55 05	11 13 37 09	-18 18	-27 31	6 28	16 26	28
29	9 14 59 21	9 06 35 28	0 26 48 47	9 16 27 28	6 23 05 33	8 22 40 21	3 13 50 07	11 13 33 59	-18 02	-24 33	7 22	17 42	29
30	9 16 00 19	9 21 46 50	0 27 14 27	9 18 11 22	6 23 11 34	8 22 28 20	3 13 45 12	11 13 30 48	-17 45	-19 52	8 06	18 57	30
31	9 17 01 16	10 06 59 17	0 27 40 23	9 19 55 52	6 23 17 25	8 22 18 47	3 13 40 17	11 13 27 37	-17 29	-13 53	8 45	20 10	31
फर.	9 18 02 12	10 22 02 37	0 28 06 35	9 21 40 58	6 23 23 07	8 22 11 44	3 13 35 23	11 13 24 26	-17 12	-7 07	9 19	21 19	फर.
2	9 19 03 07	11 06 48 38	0 28 33 01	9 23 26 38	6 23 28 40	8 22 07 08	3 13 30 29	11 13 21 15	-16 55	-0 06	9 50	22 27	2
3	9 20 04 00	11 21 12 15	0 28 59 43	9 25 12 49	6 23 34 03	8 22 04 59	3 13 25 36	11 13 18 05	-16 38	+6 45	10 21	23 33	3
4	9 21 04 52	0 05 11 18	0 29 26 39	9 26 59 29	6 23 39 16	8 22 05 15	3 13 20 44	11 13 14 54	-16 20	+13 05	10 53	-- --	4
5	9 22 05 44	0 18 46 07	0 29 53 48	9 28 46 36	6 23 44 20	8 22 07 54	3 13 15 53	11 13 11 43	-16 02	+18 36	11 28	0 10	5
6	9 23 06 32	1 01 58 44	1 00 21 11	10 00 34 02	6 23 49 13	8 22 12 56	3 13 11 04	11 13 08 32	-15 44	+23 05	12 07	1 46	6
7	9 24 07 20	1 14 51 59	1 00 48 46	10 02 21 43	6 23 53 56	8 22 20 13	3 13 06 15	11 13 05 21	-15 25	+26 18	12 50	2 49	7
8	9 25 08 06	1 27 29 05	1 01 16 35	10 04 09 33	6 23 58 30	8 22 29 47	3 13 01 29	11 13 02 11	-15 06	+28 08	13 39	3 50	8
9	9 26 08 51	2 09 53 00	1 01 44 36	10 05 57 22	6 24 02 54	8 22 41 32	3 12 56 47	11 12 59 00	-14 47	+28 31	14 30	4 46	9
10	9 27 09 34	2 22 06 21	1 02 12 48	10 07 45 00	6 24 07 08	8 22 55 27	3 12 52 05	11 12 55 49	-14 28	+27 29	15 30	5 35	10
11	9 28 10 16	3 04 11 19	1 02 41 12	10 09 32 14	6 24 11 11	8 23 11 25	3 12 47 24	11 12 52 38	-14 08	+25 10	16 30	6 18	11
12	9 29 10 56	3 16 09 45	1 03 09 48	10 11 18 51	6 24 15 04	8 23 29 25	3 12 42 47	11 12 49 27	-13 49	+21 46	17 27	6 54	12
13	10 00 11 35	3 28 03 14	1 03 38 35	10 13 04 34	6 24 18 47	8 23 49 22	3 12 38 12	11 12 46 17	-13 29	+17 30	18 24	7 26	13
14	10 01 12 12	4 09 53 21	1 04 07 32	10 14 49 03	6 24 22 20	8 24 11 13	3 12 33 39	11 12 43 06	-13 09	+12 35	19 20	7 53	14
15	10 02 12 49	4 21 41 56	1 04 36 39	10 16 31 56	6 24 25 41	8 24 34 54	3 12 29 09	11 12 39 55	-12 48	+7 14	20 12	8 19	15
16	10 03 13 23	5 03 31 05	1 05 05 57	10 18 12 48	6 24 28 53	8 25 00 20	3 12 24 43	11 12 36 44	-12 27	+1 37	21 06	8 44	16
17	10 04 13 57	5 15 23 31	1 05 35 25	10 19 51 10	6 24 31 53	8 25 27 29	3 12 20 19	11 12 33 33	-12 07	-04 05	22 00	9 08	17
18	10 05 14 28	5 27 22 28	1 06 05 02	10 21 26 22	6 24 34 43	8 25 56 16	3 12 15 59	11 12 30 23	-11 45	-09 42	22 57	9 34	18
19	10 06 15 00	6 09 31 47	1 06 34 49	10 22 58 20	6 24 37 22	8 26 26 38	3 12 11 42	11 12 27 12	-11 24	-15 02	23 58	10 02	19
20	10 07 15 29	6 21 55 41	1 07 04 45	10 24 25 57	6 24 39 52	8 26 58 31	3 12 07 29	11 12 24 00	-11 03	-19 53	-- --	10 34	20
21	10 08 15 59	7 04 38 35	1 07 34 50	10 25 48 45	6 24 42 09	8 27 31 52	3 12 03 21	11 12 20 50	-10 41	-23 57	1 00	11 12	21
22	10 09 16 24	7 17 44 38	1 08 05 04	10 27 06 04	6 24 44 16	8 28 06 37	3 11 59 12	11 12 17 39	-10 20	-26 57	2 04	11 59	22
23	10 10 16 50	8 01 17 08	1 08 35 27	10 28 17 18	6 24 46 11	8 28 42 42	3 11 55 10	11 12 14 29	-9 58	-28 30	3 09	12 55	23

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट [24 फर., 06 से 31 मार्च, 06 तक]

मार्च, (2006 ई.) को अयनांश 23°/56′/35″

ता.	सूर्य (Sun)	चन्द्र (Moon)	मंगल (Mars)	बुध (Merc.)	गुरु (Jup.)	शुक्र (Venus)	शनि (Sat.)	राहु (Rahu)	सू. क्रां.	चं. क्रां.	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	फरवरी
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
24	10 11 17 14	8 15 17 45	1 09 05 59	10 29 21 46	6 24 47 55	8 29 20 05	3 11 51 13	11 12 11 18	-9 36	-28 19	4 11	14 00	24
25	10 12 17 37	8 29 45 39	1 09 36 39	11 00 18 50	6 24 49 28	8 29 58 43	3 11 47 18	11 12 08 07	-9 14	-26 14	5 03	15 12	25
26	10 13 17 59	9 14 37 05	1 10 07 26	11 01 07 54	6 24 50 50	9 00 38 30	3 11 43 27	11 12 04 57	-8 51	-22 19	5 51	16 28	26
27	10 14 18 18	9 29 45 06	1 10 38 23	11 01 48 29	6 24 52 00	9 01 19 26	3 11 39 42	11 12 01 46	-8 29	16 52	6 35	17 42	27
28	10 15 18 36	10 15 00 22	1 11 09 27	11 02 20 09	6 24 53 00	9 02 01 28	3 11 36 01	11 11 58 35	-8 06	-10 19	7 11	18 55	28
मार्च	10 16 18 52	11 00 12 37	1 11 40 40	11 02 42 32	6 24 53 48	9 02 44 31	3 11 32 25	11 11 55 24	-7 43	-03 11	7 45	20 06	मार्च
2	10 17 19 07	11 15 12 05	1 12 11 59	11 02 55 26	6 24 54 25	9 03 28 35	3 11 28 53	11 11 52 13	-7 21	+04 01	8 19	21 15	2
3	10 18 19 20	11 29 51 15	1 12 43 26	11 02 58 48	6 24 54 50	9 04 13 36	3 11 25 27	11 11 49 03	-6 58	+10 51	8 50	22 24	3
4	10 19 19 30	0 14 05 19	1 13 15 01	11 02 52 41	6 24 55 04	9 04 59 32	3 11 22 05	11 11 45 52	-6 35	+16 56	9 24	23 32	4
5	10 20 19 39	0 27 52 26	1 13 46 42	11 02 37 25	6 24 55 07	9 05 46 21	3 11 18 49	11 11 42 41	-6 12	+21 58	9 59	-- --	5
6	10 21 19 45	1 11 13 14	1 14 18 30	11 02 13 23	6 24 54 58	9 06 34 01	3 11 15 39	11 11 39 30	-5 48	+25 11	10 45	0 42	6
7	10 22 19 50	1 24 10 02	1 14 50 24	11 01 41 15	6 24 54 38	9 07 22 30	3 11 12 33	11 11 36 19	-5 25	+27 56	11 33	1 43	7
8	10 23 19 52	2 06 46 14	1 15 22 24	11 01 01 49	6 24 54 07	9 08 11 45	3 11 09 31	11 11 33 09	-5 02	+28 12	12 26	2 41	8
9	10 24 19 52	2 19 05 43	1 15 54 31	11 00 16 04	6 24 53 25	9 09 01 47	3 11 06 36	11 11 29 58	-4 38	+27 59	13 24	3 33	9
10	10 25 19 50	3 01 12 24	1 16 26 44	10 29 25 12	6 24 52 31	9 09 52 32	3 11 03 47	11 11 26 47	-4 15	+25 57	14 22	4 18	10
11	10 26 19 46	3 13 10 01	1 16 59 02	10 28 30 25	6 24 51 26	9 10 43 59	3 11 01 03	11 11 23 36	-3 51	+22 47	15 21	4 56	11
12	10 27 19 39	3 25 01 53	1 17 31 26	10 27 33 04	6 24 50 10	9 11 36 08	3 10 58 25	11 11 20 26	-3 28	+18 43	16 18	5 28	12
13	10 28 19 31	4 06 50 55	1 18 03 56	10 26 34 29	6 24 48 43	9 12 28 53	3 10 55 53	11 11 17 15	-3 04	+13 56	17 11	5 57	13
14	10 29 19 21	4 18 39 39	1 18 36 30	10 25 36 00	6 24 47 05	9 13 22 18	3 10 53 26	11 11 14 04	-2 40	+08 39	18 08	6 23	14
15	11 00 19 08	5 00 30 19	1 19 09 10	10 24 38 50	6 24 45 16	9 14 16 18	3 10 51 05	11 11 10 53	-2 17	+03 03	19 01	6 48	15
16	11 01 18 54	5 12 24 59	1 19 41 55	10 23 44 09	6 24 43 14	9 15 10 54	3 10 48 50	11 11 07 43	-1 53	-02 42	19 57	7 42	16
17	11 02 18 38	5 24 25 42	1 20 14 44	10 22 52 56	6 24 41 03	9 16 06 03	3 10 46 41	11 11 04 32	-1 29	-8 23	20 53	7 38	17
18	11 03 18 20	6 06 34 33	1 20 47 39	10 22 06 01	6 24 38 41	9 17 01 44	3 10 44 39	11 11 01 21	-1 06	-13 51	21 51	8 04	18
19	11 04 18 00	6 18 53 55	1 21 20 38	10 21 24 05	6 24 36 08	9 17 57 58	3 10 42 43	11 10 58 10	-0 42	-18 50	22 52	8 36	19
20	11 05 17 38	7 01 26 20	1 21 53 42	10 20 47 37	6 24 33 24	9 18 54 41	3 10 40 53	11 10 54 59	-0 18	-23 06	23 54	9 41	20
21	11 06 17 14	7 14 14 31	1 22 26 50	10 20 16 57	6 24 30 29	9 19 51 53	3 10 39 06	11 10 51 49	+0 06	-26 22	-- --	9 54	21
22	11 07 16 49	7 27 21 08	1 23 00 03	10 19 52 20	6 24 27 24	9 20 49 33	3 10 37 28	11 10 48 38	+0 29	-28 18	0 58	10 45	22
23	11 08 16 22	8 10 48 31	1 23 33 21	10 19 33 51	6 24 24 08	9 21 47 41	3 10 35 57	11 10 45 27	+0 53	-28 38	1 59	11 45	23
24	11 09 15 53	8 24 38 09	1 24 06 44	10 19 21 31	6 24 20 42	9 22 46 14	3 10 34 33	11 10 42 16	+1 17	-27 14	2 56	12 52	24
25	11 10 15 23	9 08 50 13	1 24 40 09	10 19 15 11	6 24 17 05	9 23 45 11	3 10 33 13	11 10 39 05	+1 40	-24 05	3 46	14 04	25
26	11 11 14 51	9 23 22 55	1 25 13 40	10 19 14 46	6 24 13 18	9 24 44 33	3 10 32 01	11 10 35 55	+2 04	-19 20	4 28	15 17	26
27	11 12 14 17	10 08 12 17	1 25 47 15	10 19 20 04	6 24 09 21	9 25 44 19	3 10 30 53	11 10 32 44	+2 27	-13 21	5 04	16 28	27
28	11 13 13 41	10 23 12 04	1 26 20 54	10 19 30 50	6 24 05 14	9 26 44 26	3 10 29 54	11 10 29 33	+2 51	-06 32	5 38	17 39	28
29	11 14 13 03	11 08 14 19	1 26 54 37	10 19 46 52	6 24 00 58	9 27 44 53	3 10 29 01	11 10 26 22	+3 14	+00 41	6 14	18 48	29
30	11 15 12 23	11 23 10 25	1 27 28 24	10 20 07 54	6 23 56 31	9 28 45 42	3 10 28 14	11 10 23 12	+3 38	+07 48	6 45	19 58	30
31	11 16 11 42	0 07 52 15	1 28 02 15	10 20 33 41	6 23 52 10	9 29 46 50	3 10 27 34	11 10 20 01	+4 01	+14 24	7 21	21 07	31

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटों ग्रहों का निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे भा. स्टै. टा. वि. २०६२ (2005–06 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
१	१० १४ ४४ २९	९ २३ ०२	८ ०० ३५
४	१० १४ ५३ २८	९ २३ ०६	८ ०० ३४
७	१० १५ ०२ १३	९ २३ ११	८ ०० ३३
१०	१० १५ १० ४२	९ २३ १५	८ ०० ३२
१३	१० १५ १८ ५४	९ २३ १८	८ ०० ३०
१६	१० १५ २६ ५४	९ २३ २२	८ ०० २८
१९	१० १५ ३४ ३७	९ २३ २५	८ ०० २६
२२	१० १५ ४१ ५४	९ २३ २८	८ ०० २४
२५	१० १५ ४९ ००	९ २३ ३०	८ ०० २१
२८	१० १५ ५५ ४२	९ २३ ३३	८ ०० १८
मई	१० १६ ०२ ००	९ २३ ३५	८ ०० १५
४	१० १६ ०८ ०६	९ २३ ३६	८ ०० १२
७	१० १६ १३ ४२	९ २३ ३८	८ ०० ०९
१०	१० १६ १९ ००	९ २३ ३९	८ ०० ०५
१३	१० १६ २३ ४८	९ २३ ४०	८ ०० ०१
१६	१० १६ २८ १८	९ २३ ४०	७ २९ ५७
१९	१० १६ ३२ २४	९ २३ ४०	७ २९ ५३
२२	१० १६ ३६ ०६	९ २३ ४०	७ २९ ४९
२५	१० १६ ३९ १८	९ २३ ४०	७ २९ ४४
२८	१० १६ ४२ ०६	९ २३ ३९	७ २९ ४०
३१	१० १६ ४४ ३०	९ २३ ३८	७ २९ ३५
जून	१० १६ ४५ १२	९ २३ ३८	७ २९ ३४
४	१० १६ ४७ ०४	९ २३ ३७	७ २९ २९
७	१० १६ ४८ २७	९ २३ ३५	७ २९ २५
१०	१० १६ ४९ २४	९ २३ ३३	७ २९ २०
१३	१० १६ ४९ ५३	९ २३ ३१	७ २९ १५
१६	१० १६ ४९ ५७	९ २३ २९	७ २९ १०
१९	१० १६ ४९ ३५	९ २३ २६	७ २९ ०६
२२	१० १६ ४८ ४६	९ २३ २४	७ २९ ०१
२५	१० १६ ४७ ३३	९ २३ २०	७ २८ ५६
२८	१० १६ ४५ ५३	९ २३ १७	७ २८ ५२
३०	१० १६ ४४ ३३	९ २३ १५	७ २८ ४९

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
१	१० १६ ४३ ४९	९ २३ १४	७ २८ ४७
४	१० १६ ४१ २१	९ २३ १०	७ २८ ४३
७	१० १६ ३८ २८	९ २३ ०६	७ २८ ३८
१०	१० १६ ३५ १२	९ २३ ०२	७ २८ ३४
१३	१० १६ ३१ ३३	९ २२ ५८	७ २८ ३०
१६	१० १६ २७ ३३	९ २२ ५४	७ २८ २६
१९	१० १६ २३ ११	९ २२ ४९	७ २८ २२
२२	१० १६ १८ ३०	९ २२ ४५	७ २८ १९
२५	१० १६ १३ ३०	९ २२ ४०	७ २८ १६
२८	१० १६ ०८ ११	९ २२ ३५	७ २८ १२
३१	१० १६ ०२ ३६	९ २२ ३०	७ २८ ०९
अग.	१० १६ ०० ४१	९ २२ २९	७ २८ ०८
४	१० १५ ५४ ४४	९ २२ २४	७ २८ ०६
७	१० १५ ४८ ३३	९ २२ १९	७ २८ ०३
१०	१० १५ ४२ १०	९ २२ १४	७ २८ ०१
१३	१० १५ ३५ ३६	९ २२ ०९	७ २७ ५९
१६	१० १५ २८ ५१	९ २२ ०४	७ २७ ५९
१९	१० १५ २१ ५८	९ २१ ५९	७ २७ ५६
२२	१० १५ १४ ५९	९ २१ ५५	७ २७ ५५
२५	१० १५ ०७ ५५	९ २१ ५०	७ २७ ५४
२८	१० १५ ०० ४६	९ २१ ४५	७ २७ ५४
३१	१० १४ ५३ ३५	९ २१ ४१	७ २७ ५३
सितं.	१० १४ ५१ ११	९ २१ ३९	७ २७ ५३
४	१० १४ ४३ ५९	९ २१ ३५	७ २७ ५४
७	१० १४ ३५ ४९	९ २१ ३१	७ २७ ५४
१०	१० १४ २९ ४३	९ २१ २७	७ २७ ५५
१३	१० १४ २२ ४०	९ २१ २३	७ २७ ५५
१६	१० १४ १५ ४४	९ २१ १९	७ २७ ५७
१९	१० १४ ०८ ५७	९ २१ १६	७ २७ ५८
२२	१० १४ ०२ १९	९ २१ १२	७ २८ ००
२५	१० १३ ५५ ५२	९ २१ ०९	७ २८ ०२
२८	१० १३ ४९ ३७	९ २१ ०६	७ २८ ०५

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्तू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
१	१० १३ ४३ ३६	९ २१ ०४	७ २८ ०७
४	१० १३ ३७ ५०	९ २१ ०१	७ २८ १०
७	१० १३ ३२ २१	९ २० ५९	७ २८ १४
१०	१० १३ २७ १०	९ २० ५८	७ २८ १७
१३	१० १३ २२ १८	९ २० ५६	७ २८ २१
१६	१० १३ १७ ४७	९ २० ५५	७ २८ २५
१९	१० १३ १३ ३७	९ २० ५४	७ २८ २९
२२	१० १३ ०९ ४८	९ २० ५३	७ २८ ३३
२५	१० १३ ०६ २४	९ २० ५३	७ २८ ३८
२८	१० १३ ०३ २२	९ २० ५३	७ २८ ४३
३१	१० १३ ०० ४६	९ २० ५३	७ २८ ४८
नवं.	१० १३ ०० ००	९ २० ५३	७ २८ ५०
४	१० १२ ५७ ५९	९ २० ५४	७ २८ ५५
७	१० १२ ५६ २३	९ २० ५५	७ २९ ०१
१०	१० १२ ५५ १४	९ २० ५६	७ २९ ०६
१३	१० १२ ५४ ३२	९ २० ५८	७ २९ १२
१६	१० १२ ५४ १८	९ २१ ००	७ २९ १८
१९	१० १२ ५४ ३१	९ २१ ०२	७ २९ २४
२२	१० १२ ५५ १२	९ २१ ०४	७ २९ ३१
२५	१० १२ ५६ २०	९ २१ ०७	७ २९ ३७
२८	१० १२ ५७ ५६	९ २१ १०	७ २९ ४४
दिसं.	१० १३ ०० ००	९ २१ १३	७ २९ ५०
४	१० १३ ०२ ३१	९ २१ १७	७ २९ ५७
७	१० १३ ०५ ३०	९ २१ २१	८ ०० ०३
१०	१० १३ ०८ ५५	९ २१ २५	८ ०० १०
१३	१० १३ १२ ४७	९ २१ २९	८ ०० १७
१६	१० १३ १७ ०४	९ २१ ३४	८ ०० २४
१९	१० १३ २१ ४७	९ २१ ३९	८ ०० ३०
२२	१० १३ २६ ५५	९ २१ ४४	८ ०० ३७
२५	१० १३ ३२ २६	९ २१ ४९	८ ०० ४४
२८	१० १३ ३८ २१	९ २१ ५५	८ ०० ५०
३१	१० १३ ४४ ३८	९ २२ ००	८ ०० ५७

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
१ २००६	१० १३ ४६ ५०	९ २२ ०२	८ ०० ५९
४	१० १३ ५३ ३६	९ २२ ०८	८ ०१ ०५
७	१० १४ ०० ४४	९ २२ १४	८ ०१ १२
१०	१० १४ ०८ ११	९ २२ २०	८ ०१ १८
१३	१० १४ १५ ५७	९ २२ २७	८ ०१ २४
१६	१० १४ २४ ०१	९ २२ ३३	८ ०१ ३०
१९	१० १४ ३२ २१	९ २२ ४०	८ ०१ ३६
२२	१० १४ ४० ५७	९ २२ ४६	८ ०१ ४२
२५	१० १४ ४९ ४९	९ २२ ५३	८ ०१ ४८
२८	१० १४ ५८ ५४	९ २३ ००	८ ०१ ५३
३१	१० १५ ०८ ११	९ २३ ०६	८ ०१ ५८
फर.	१० १५ ११ २०	९ २३ ०९	८ ०२ ००
४	१० १५ २० ५३	९ २३ १६	८ ०२ ०५
७	१० १५ ३० ३५	९ २३ २२	८ ०२ ०९
१०	१० १५ ४० २७	९ २३ २९	८ ०२ १४
१३	१० १५ ५० २५	९ २३ ३६	८ ०२ १८
१६	१० १६ ०० ३०	९ २३ ४३	८ ०२ २२
१९	१० १६ १० ४१	९ २३ ५०	८ ०२ २६
२२	१० १६ २० ५५	९ २३ ५६	८ ०२ २९
२५	१० १६ ३१ १३	९ २४ ०३	८ ०२ ३२
२८	१० १६ ४१ ३२	९ २४ ०९	८ ०२ ३५
मार्च	१० १६ ४४ ५९	९ २४ १२	८ ०२ ३६
४	१० १६ ५५ १८	९ २४ १८	८ ०२ ३९
७	१० १७ ०५ ३८	९ २४ २४	८ ०२ ४१
१०	१० १७ १५ ५४	९ २४ ३०	८ ०२ ४३
१३	१० १७ २६ ०८	९ २४ ३६	८ ०२ ४५
१६	१० १७ ३६ १६	९ २४ ४२	८ ०२ ४६
१९	१० १७ ४६ २०	९ २४ ४८	८ ०२ ४७
२२	१० १७ ५६ १६	९ २४ ५३	८ ०२ ४८
२५	१० १८ ०६ ०५	९ २४ ५९	८ ०२ ४८
२८	१० १८ १५ ४५	९ २५ ०४	८ ०२ ४९
३१	१० १८ २५ १६	९ २५ ०९	८ ०२ ४९

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त्त वि. संवत् २०६२ (सं. २००५–०६ ई.)

समय शुद्धि विचार—

✸ **शुक्रास्त**—12 फरवरी (05 ई.) से 23 अप्रैल (05 ई.) तक शुक्रास्त रहेगा। 24 अप्रै. की प्रातः को पश्चिम में उदित होगा। ता. 25 से 27 अप्रै. के मध्य शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

✸ **श्राद्ध पक्ष**—18 सितम्बर से 3 अक्तू. तक की अवधि में श्राद्ध रहेंगे।

✸ **गुरू अस्त**—6 अक्तू. से 2 नवं. तक गुरू पश्चिम में अस्त रहेगा। गुरु अस्त से तीन दिन पूर्व गुरू वार्धक्य तथा तीन दिन पश्चात् गुरू बाल्यत्व दोष रहेगा।

✸ **ग्रहण शूल**—3 अक्तू. सोमवार की सायं को **कंकण सूर्यग्रहण** हस्त नक्षत्र में घटित होगा। जबकि द्वितीय खण्डग्रास (**ग्रस्तोदित**) चन्द्रग्रहण अश्विनी नक्षत्र कालीन लगेगा। ग्रहण से एक दिन पूर्व और तीन दिन पश्चात् शुभ कार्यों को करने का निषेध माना जाता है। कंकण ग्रहण कालीन नक्षत्र केवल एक मास तक तथा ग्रस्तोदित खण्ड वाला नक्षत्र 2 मास तक वर्जित माना जाता है।

✸ **त्रयोदश (13) दिन का पक्ष**—कार्तिक शुक्ल पक्ष (2 नवं. से 15 नवं. तक) **तेरह दिन** का पक्ष होने के कारण शास्त्रानुसार विवाह आदि शुभ कार्यों के लिए त्याज्य माना जाएगा।

कार्तिक शुक्ल पक्ष में दो तिथियों का क्षय होने से 'विश्वघस्त्र' या 'त्रयोदश दिनात्मक' पक्ष कहा जाता है। मुहूर्त शास्त्रों में तेरह दिन के पक्ष को विवाह, मुण्डन, गृह–प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कृत्यों के लिए त्याज्य लिखा है। 'ज्योतिर्निबन्ध' अनुसार—

उपनयनं परिणयनं वेशमारम्भादिकर्माणि। यात्रां द्विक्षयपक्षे कुर्यान्न जिजीविषुः पुरुषः॥

✸ **भीष्म पंचक**—11 नवं. से 15 नवं. तक भीष्म पंचक रहेंगे।

✸ **शुक्रास्तोदय सन् 2006 ई.**—11 जन. (06 ई.) को अर्धरात्रि के बाद पश्चिम में अस्त होगा तथा 17 जन. (06 ई०) की प्रातः से पूर्व दिशा में उदित होगा।

✸ **होलाष्टक**—7 मार्च से 14 मार्च (06 ई.) तक होलाष्टक होंगे। इन दिनों में भी शुभ कृत्यों का आरम्भ नहीं किया जाता।

✸ नीचे विवाह मुहूर्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्ति साम्य (९), दग्धा तिथि (१०)—इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मूहूर्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। **मुहूर्तों में सूक्ष्म क्रान्ति–साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय** लिया गया है।

विवाह मुहूर्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को **मीन लग्न** राशि जानें॥

नोट—आगे **मकर** लग्न पर गुरू की विशेष दृष्टि पड़ने के कारण शुभ एवं ग्राह्य माना गया है।

दि. ल. = दिन लग्न—रा. ल. = रात्रि लग्न

★ वैशाख मासे ★ (अप्रैल–मई) सन् २००५ ई.

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा/मिनटों में)
वैशा. कृष्ण	६	शुक्र	29 अप्रै.	१७ वैशा.	उषा.	धनु	ऽ बु. ऽ सा. । । ऽश । । । । ऽ	रा. ल. १० (रा. 1/36 उप., चंद्र-शनि का दान व पूजा) मकर लग्ने गुरू दृष्ट्या शुभः, दग्धातिः
वैशा. कृष्ण	७	शनि	30 अप्रै.	१८ वैशा.	उषा.	मकर	ऽ बु. ऽ सा । । ऽश. । । । । ।	लग्न गोधूलि, रात्रि लग्न ८ (बृश्चिके शुक्र षष्ठे पूज्य दान व) आवश्यके
वैशा. कृष्ण	८	रवि	1 मई	१९ वैशा.	श्रवणे	मकर	। । । । । ऽ रो. । । । ।	दि. ल. २ (शु. दा.), गोधू., रा. ल. ८ (बृश्चिके शुक्र षष्ठे पूज्य दा. व) आवश्यके
वैशा. कृष्ण	९	चन्द्रे	2 मई	२० वैशा.	धनिष्ठा	कुम्भे	। । । । । । ऽ ऽ । ।	दिन लग्न २, गोधूलि, क्रान्तिसाम्य दोषः सायं 17/16 से 21/24 तक
वैशा. कृष्ण	११/१२	बुधे	4 मई	२२ वैशा.	उ.भा.	मीन	। ऽ वै. । ऽ गु. । ऽ अ । ऽ । ।	रात्रि लग्न १० (षष्ठे शनि दान व पूजा), पादेन गुरू वेधाभावः
वैशा. कृष्ण	१२	गुरु	5 मई	२३ वैशा.	उ.भा.	मीन	। ऽ वै. । ऽ गु. । । । ऽ । ।	दिवस लग्न २ (वृषे शुक्र का दान), पादेन गुरू वेधाभावः
वैशा. शुक्ल	१/२	चन्द्रे	9 मई	२७ वैशा.	रोहिणी	वृष	। । । । । । ऽअति । । ।	रात्रि लग्न १० (मकर लग्ने षष्ठ, शनि का दान व पूजा)
वैशा. शुक्ल	२	मंग.	10 मई	२८ वैशा.	रोहिणी	वृष	। । । । । ऽरो. ऽ अति । । ।	दि. ल. २ (वृषे चन्द्र दान, गोधूलि, रात्रौ लग्न ८ (चं. शु. दान पूजा व–आवश्यके)
वैशा. शुक्ल	२/३	मंग.	10 मई	२८ वैशा.	मृग.	वृष	। । । । । ऽरो. । । । ।	रात्रि लग्न १० (मकरे शनि षष्ठ पूज्य, दान व)
वैशा. शुक्ल	३,	बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग.	वृष/मिथु	। । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. २ (चं. दा.), गोधूलि, रात्रि लग्न ८ (शुक्र व चंद्र का दान) चंद्रऽष्टम परिहारः

★ ज्येष्ठ मासे ★ (मई–जून)

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा/मिनटों में)
वैशा. शुक्ल	८	चंद्रे	16 मई	३ ज्ये.	मघा	सिंह	। । । । । ऽअ. । ऽ । ।	रात्रि लग्न १ (मेष लग्ने गुरू दान)
वैशा. शुक्ल	११	गुरु	19 मई	६ ज्ये.	हस्त	कन्या	। । ऽ गु. । । । ऽवज्र । । ।	रा.ल. १० (शनि षष्ठ पू. व दा.), १ (चं.दा. व पू.) मकर लग्न गुरू दृष्ट्या शुभ, (मेषे षष्ठ चन्द्र परि.)
वैशा. शुक्ल	१३	शनि	21 मई	८ ज्ये.	स्वाति	तुला	। ऽ । । । । ऽव्या । । ।	रा. ल. १० (शनि षष्ठे पूज्य व दानं), गुरू दृष्ट्या शुभं, १ (मेषे चन्द्र दान)

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घंटा-मिनटों में)
वैशा. शुक्ल	पूर्णि.	चंद्र	23 मई	१० ज्ये.	अनु.	बृश्चि.	। । । । Sबु । Sपरि S । ।	रात्रि लग्न १० (चंद्र-शनि का दान व पूजा), १ (चंद्र दान) मेषे चन्द्राष्टम परिहारः
ज्ये. कृष्ण	४/५	शुक्र	27 मई	१४ ज्ये.	उ.षा.	धन/मक.	। । । S शु. S श. । । S S S	दि. ल. ३ (चं. दा. लग्न प्रातः 8/16 उप.), ७ (बु. दा.), गोधू., रा. ल. १ (श.दा.), रात्रौ तिथिदोषSभाव
ज्ये. कृष्ण	५/६	शनि	28 मई	१५ ज्ये.	श्रवण	मकर	। । । । । S नृ. । S S ।	दि. ल. ७ (बुध दान), गो., रा. ल. १ (शु., श. दा.) क्रान्तिसाम्य दोष 18/19 से 23/37 तक
ज्ये. कृष्ण	६/७	रवि	29 मई	१६ ज्ये.	धनि.	मक/कुंभ	। । । । । । S ऐं । S ।	दि. ल. ३ (चं.-शु. दा.), मिथुन लग्न प्रातः 8/32 तक), रा. ल. ९ (शुक्र ७वें पू. दान व.) आवश्यके
ज्ये. कृष्ण	९	मंग.	31 मई	१८ ज्ये.	उ.भा.	मीन	। । । S गु. । । । S । ।	रात्रि लग्न १ (मेष लग्ने चंद्र, शुक्र व शनि के दान), पादेन गुरु वेधाभाव
ज्ये. कृष्ण	१०	बुध	1 जून	१९ ज्ये.	उ.भा.	मीन	। । । S गु. । S रो. । S । ।	दिवा लग्न ३ (बुध का दान), रात्रौ भद्रा दोष व्याप्तम्, पादेन गुरु वेधSभावः
ज्ये. कृष्ण	१२	शुक्र	3 जून	२१ ज्ये.	अश्वि.	मेष	S शु. । । । । S । S । ।	दिवा लग्न ३ (बुध का दान), दुपै. 15/40 से रात्रि पर्यन्त मृत्युबाण दोष
ज्ये. शुक्ल	६	रवि	12 जून	३० ज्ये.	मघा	सिंह	। S हर्ष । । । S S । । ।	ल. गोधूलि, रा. ल. ९ (धनु ल. बु. शु. ७वें पू. दा. वा), ११ (कुम्भे षष्ठ शनि पूज्य, दान वा, चंद्र दान), आवश्यके, रात्रि 25/25 उपरांत मृत्युबाण दोषः

☆ आषाढ़ मासे ☆ (जून–जुलाई)

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घंटा-मिनटों में)
ज्ये. शुक्ल	९/१०	गुरु	16 जून	३ आषा.	चित्रा	कन्या	Sश । Sके । S रा S । S । ।	रात्रि लग्न २ (वृष), मृत्युबाणदोष 17/20 तक, केतु युति का परिहारः
ज्ये. शुक्ल	१०	शुक्र	17 जून	४ आषा.	चित्रा	कन्या	S श । S के । S S अ । S । ।	दिवा लग्न ७ (चंद्र दान, तुला लग्न 15/47 तक, केतु. युति का परिहारः)
ज्ये. शुक्ल	१०/११	शुक्र	17 जून	४ आषा.	स्वाती	तुला	। । । । । । S परि. । । ।	रा. ल. २ (वृष ल. अर्धरात्रि 3/59 उप. (चंद्र दा. व पूजा) चंद्र षष्ठे शत्रु क्षेत्रे परिहारः
ज्ये. शुक्ल	११	शनि	18 जून	५ आषा.	स्वाती	तुला	। । । । । । S परि. । । ।	दिवा लग्ने भद्रा दोषः, रात्रि लग्न १ (मेषे चन्द्र ७वें एवं शनि का दान)
ज्ये. शुक्ल	१३	रवि	19 जून	६ आषा.	अनु.	बृश्चि.	। । । । । । । । । ।	रा. ल. १ (चं. शु. दा. व पूजा, लग्न रात 26/38 उप.), रा. ल. २ (चंद्र ७वें दान)
ज्ये. शुक्ल	१३	चंद्र	20 जून	७ आषा.	अनु.	बृश्चि.	। । । । । । S । । ।	दि. ल. ७ (चं. दा.), गोधू., रा. ल. ११ लग्नेश शनि षष्ठस्थ पूज्य दान वा–(आवश्यके)
आषा. कृष्ण	२	गुरु	23 जून	१० आषा	उ.षा.	धनु/मक.	। । । । S शु. श. Sरो. । । S ।	ल. गोधूली, रा. ल. १ (मेषे शुक्र व शनि का दान), २ (वृष)
आषा. कृष्ण	३	शुक्र	24 जून	११ आषा	श्रवण	मकर	Sके. Sवै. । । Sश. । । । । ।	रा. ल. १ (मेषे शुक्र व शनि का दान), २ (वृष) क्रान्तिसाम्य दोष प्रा. 9/13 से 15/14 तक
आषा. कृष्ण	४	शनि	25 जून	१२ आषा	धनि.	मक/कुंभ	। । । । । S मृ. S वि S । ।	दि. ल. ७ (दुपै. 3 बजे तक), रा. ल. २ (27/50 के बाद) (मृत्युबाण दोष दुपै. 3/15 से अर्धरात्रि 3/49 तक)
आषा. कृष्ण	७/८	मंग.	28 जून	१५ आषा	उ.भा.	मीन	। । । S गु. । । । । । S	दि. ल. ८, गोधूलि, रा. ल. १ (मेषे चं., मं., शुक्र, शनि का दान), २ (वृष), दग्धा वि.
आ. कृष्ण	९/१०	गुरु	30 जून	१७ आषा	अश्वि.	मेष	। । । । S के. S चौ. । S । ।	दि. ल. ७ (चंद्र ७वें दा. व पूज्य), रा. ल. २ (चंद्र दा.) वृष लग्ने भद्रा स्वर्ग लोके शुभमस्ति)
आषा. शुक्ल	३/४	शनि	9 जुला.	२६ आषा	मघा	सिंह	। । । । । । । । । ।	रात्रि लग्न १ (मंगल, शनि का दान) मेष लग्न रात 25/09 उप., २ (वृषे शुक्र दान)
आषा. शुक्ल	४	रवि	10 जुला.	२७ आषा	मघा	सिंह	। । । । । S चौ. । । । ।	दि. ल. ७ (मं. दा., दुपै. 13/48 तक, भद्रा पूर्वे), रा. ल. २ (शु. दा.) वृष लग्न रात 27/01 उप. (भद्रा बाद)
आषा. शुक्ल	७	बुध	13 जुला.	३० आषा	हस्त	कन्या	। । Sगु. । । । Sपरि S । ।	दि. ल. ७ (चं. मं. दा.), ८, गोधू., रा. ल. १ (चं. श. दा., चंद्र षष्ठ परिहार), रा. ल. २ (वृष लग्ने शुक्र का दान), पादेन गुरु युत्यभावः

☆ श्रावण मासे ☆ (जुलाई–अगस्त, 2005 ई.)

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में)
आ. शुक्ल	१०/११	रवि	17 जुला.	२ श्राव.	अनु.	वृश्चि.	। । । । । S मृ. S । S ।	दि. ल. ७ (चं.दा.), रा. ल. ३ (चं. दा.), मिथुन ल. 18 ता. की प्रातः 4/30 स्टें. टा. के बाद रा. ल. मिथुने चंद्र षष्ट परि.,–आवश्यके भद्रा स्वर्गे शुभ फलदा, (मृत्युबाण दोषः 15/45 से 28/25 तक)
आ. शुक्ल	११	चन्द्र	18 जुला.	३ श्राव.	अनु.	वृश्चि.	। । । । । S S । S ।	दिवा लग्न ५ (शनि का दान)–सिंह लग्न प्रातः 9/13 स्टें. टा. के बाद
आ. शुक्ल	१३	मंग.	19 जुला.	४ श्राव.	मूला	धनु	S सू. । । । । । S ऐं । । ।	रा. ल. ३ (मिथुने चन्द्र-शुक्र का दान)
आ. शुक्ल	१४/१५	बुधे	20 जुला.	५ श्राव.	उ.षा.	धनु	। । । । । S नृ. । । । ।	रात्रि लग्न ३ (चंद्र, शुक्र का दान, मिथुन ल. अर्धरात्रि 3/40 स्टें. टा. के बाद)
आ. शुक्ल	पूर्णि	गुरु	21 जुला.	६ श्राव.	उ.षा.	धनु/मक.	। । । । । । S वि. । । ।	दि. ल. ५ (प्रातः 8/54 स्टें. टा. तक), ८ (लग्ने भौम स्वगृही दृष्ट्या शुभः, ९ (बुध दा.)
आ. शुक्ल	पूर्णि	गुरु	21 जुला.	६ श्राव.	श्रवण	मकर	Sके । । Sशु. Sसू. । । S । ।	रात्रि लग्न २ (वृषे मंगल का दान), पादेन शुक्र वेधSभाव
श्राव. कृष्ण	१	शुक्र	22 जुला.	७ श्राव.	श्रवण	मकर	Sके । । Sशु. S सू.श । । S । ।	दि. ल. ८ (मं. दा.), वृश्चिके भौम स्वगृही दृष्ट्या शुभः, ९ (बु. दा.), गोधू. च (पादेन शुक्र वेधSभाव)
श्राव. कृष्ण	१/२	शुक्र	22 जुला.	७ श्राव.	धनि.	मकर	। । । S बु. S बु. S चौ. S । । ।	रात्रि लग्न २ (वृषे-मंगल का दान), पादेन बुध वेधSभावः
श्राव. कृष्ण	२/३	शनि	23 जुला.	८ श्राव.	धनि.	कुम्भ	। । । S बु. S बु. । S । । ।	दि. ल. ५ (चं. दा., सिंह ल. प्रातः 8/02 बाद), ८ (मं. दा.), ९ (बु. दा., धनु ल. 18/39 तक)
श्राव. कृष्ण	५	चन्द्रे	25 जुला.	१० श्राव.	उ.भा.	मीन	। । । S गु. । । । S । ।	दि. ल. ८ (लग्ने भौम स्वगृही दृष्ट्या शुभः, ९ (बु.दा.), गो., रा. ल. २ (मं.दा.), ३ (शु.दा.) पादेन गुरु वेधाभावः
श्राव. कृष्ण	१०	शनि	30 जुला.	१५ श्राव.	रोहि.	वृष	। । । । । । । S S । ।	दि. ल. ८ (दुपै. 15/07 उप., चंद्र ७वें दा., भद्रा स्वर्गे परिहारः, रा. ल. २, ३ (चं.शु.मं.दा.)
श्राव. कृष्ण	११	रवि	31 जुला.	१६ श्राव.	रोहि.	वृष	। । । । । । । S S । ।	दिवा लग्न ५ (सूर्य-शनि का दान), ८ (चंद्र, मंगल का दान), गोधूली च.
श्राव. कृष्ण	११	रवि	31 जुला.	१६ श्राव.	मृग.	वृष	। । । । । । । । S । ।	रात्रि लग्न २ (वृषे चंद्र, मंगल का दान), ३ (चं.-शु. दा.)
श्राव. कृष्ण	१२	चंद्रे	1 अग.	१७ श्राव.	मृग.	मिथुने	। । । । । S चौ S व्या S । ।	दिवा लग्न ५ (सूर्य, शनि का दान), ९ (चंद्र-बुध का दान)
श्राव. शुक्ल	१	शनि	6 अग.	२२ श्राव.	मघा	सिंह	। । । । । S अ । । । ।	दि. ल. ८ (स्वगृही दृष्ट्या भौम षष्ट परिहारः), ९ (बु.दा.), गोधूलि, रा.ल. २, (मं.–दा.) ३ (शु.दा.)
श्राव. शुक्ल	५/६	बुध	10 अग.	२६ श्राव.	चित्रा	कन्या	। Sसा. । । Sरा. Sचौ । । । S	गोधूलि लग्न, रा. ल. २ (मं.-चं. दा.), ३ (मं. दा.) दग्धा तिथौ चंद्र दान व पूजा
श्राव. शुक्ल	६	गुरु	11 अग.	२७ श्राव.	चित्रा	तुला	। S सा. । । S रा । । । । S	दि. ल. ५ (सू. श. दा.), ८ (चं. दा., स्वगृही दृष्ट्या भौम षष्ट परिहारः) दग्धा तिथौ चं.दा.
श्राव. शुक्ल	६/७	गुरु	11 अग.	२७ श्राव.	स्वा.	तुला	Sश. । । । । । S S । ।	रा. ल. ३ (शुक्र का दान) मिथुन लग्न रात 2/28 तक (क्रान्तिसाम्य दोष 26/29 से प्रा.)
श्राव. शुक्ल	७	शुक्र	12 अग.	२८ श्राव.	स्वा.	तुला	S श. । । । । S रो. SS । ।	दि. ल. ५ (7/03 के बाद) (सू.-श. का दा.), ८ (चं.द.), क्रान्तिसाम्य दोष 7/03 तक

☆ भाद्रपद मासे ☆ (अगस्त–सितम्बर)

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में)
श्राव. शुक्ल	१२/१३	बुध	17 अग.	२ भाद्र.	उ.षा.	धनु/मक	S सू. । । । । S । । । ।	दि. ल. ८ (14/12 उप.), ९ (बु. दा.), गोधू., रात्रौ 23/55 के बाद मृत्युबाण दोष
श्राव. शुक्ल	पूर्णि.	शुक्र	19 अग.	४ भाद्र.	धनि.	मक/कुंभ	। । । । । । S S । ।	दि. ल. ८ (स्टें. टा. 13/19 उप., भौम स्वक्षेत्रे शुभः), गोधू., रा. ल. २ (मं. दा.) ३ (केतु दान)
भाद्र. कृष्ण	४/५	मंग.	23 अग.	८ भाद्र.	अश्वि.	मेष	। S गं. । । । । S S S ।	रा. ल. २ (चं. मं. दा.), ३ (शु. के. दा.)-मिथुन 27/10 के उप. (27/09 तक क्रान्तिसाम्य दोष)
भाद्र. कृष्ण	५	बुध	24 अग.	९ भाद्र.	अश्वि.	मेष	। S गं । । । । । S S ।	दिवा लग्न ९ (बुध का दान),
भाद्र. कृष्ण	७/८	शुक्र	26 अग.	११ भाद्र.	रोहि.	वृष	S मं । । । । । S व्या. S । ।	रात्रि लग्न २ (वृषे चंद्र-मंग. दान) चंद्र लग्ने परिहारः, ३ (मिथुने केतु-शुक्र दान)
भाद्र. कृष्ण	८/९	शनि	27 अग.	१२ भाद्र.	रोहि.	वृष	Sमं. Sहर्ष । । । Sमृ.SS । ।	रा. ल. २ (चं. मं. दा.), वृष लग्न रात 23/32 स्टें. टा. तक), मृत्युबाण दोष रात 20/40 घं. मिं. तक
भाद्र. कृष्ण	९	शनि	27 अग.	१२ भाद्र.	मृग.	वृष	। S हर्ष । । । । । S । ।	रात्रि लग्न २ (चंद्र-मंगल का दान, चंद्र लग्ने परिहारः) ३ (मिथुने चंद्र दान)

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में)
भाद्र. कृष्ण	९	रवि	28 अग.	१३ भाद्र.	मृग.	वृष/मिथु	। S । । । S अ । S । S	दि. ल. ८ (चं.-मं. दा., भौम षष्ठे परिहार), वृश्चि. ल. 12/26 तक), ९ (चं. बु. दान) रा. ल. २ (मं. दान, रात 23/32 तक) तदुपरांत भद्रा विचार, दग्धा विचार आवश्यके
भाद्र. शुक्ल	३	मंग.	6 सितं.	२२ भाद्र.	हस्त	कन्या	। । S के । । S अ । । । ।	दि. ल. ८ (शु. दा., स्वक्षेत्रे षष्ठे भौमः शुभः), ९ (धनु), केतु युति का परिहार
भाद्र. शुक्ल	३	मंग.	6 सितं.	२२ भाद्र.	चित्रा	कन्या	। । Sगु. शु. । Sरा.Sअ। । । ।	रा. ल. ३ (के. दा.), पादेन गुरु-शुक्र युत्यभावः, क्रान्तिसाम्य दोष 17/51 से 22/00 तक
भाद्र. शुक्ल	४	बुध	7 सितं.	२३ भाद्र.	चित्रा	कन्या/तु	। । S गु. शु. । S रा । । । । ।	दिवा लग्न ८ (शु. दा., भौम षष्ठे स्वक्षेत्री शुभः), ९ (धनु), पादेन गु.-शु. युत्यभाव
भाद्र. शुक्ल	४	बुध	7 सितं.	२३ भाद्र.	स्वाती	तुला	S श. । । । । S रा S S । ।	रात्रौ लग्न ३ (मिथुन) तुला राशिस्थ चन्द्रगते भद्रा शुभ फलदा॥
भाद्र. शुक्ल	४/५	गुरु	8 सितं.	२४ भाद्र.	स्वाती	तुला	S श । । । । S रा S S । ।	दि. ल. ८ (चं.-शु. दा.) भौम षष्ठे स्वक्षेत्रे शुभः), ९, गोधू. रा. ल. ३ (मिथुन ल. रात 25/58 तक)
भाद्र. शुक्ल	९	चंद्र	12 सितं.	२८ भाद्र.	मूल	धनु	S गु । । । । S रो S । । ।	दि. ल. ८ (वृश्चिके स्वगृही दृष्ट्या भौम षष्ठ परिहार), गोधू., रा. ल. ३ (चं. दा., लग्न रात्रि 24/49 तक)
भाद्र. शुक्ल	१०/११	मंग.	13 सितं.	२९ भाद्र.	उ.षा.	धनु	S के । । । । । । S । ।	रात्रि लग्न ३ (मिथुने चन्द्र ७वें दानम्)
भाद्र. शुक्ल	११	बुध	14 सितं.	३० भाद्र.	उ.षा.	मकर	S के । । । । । । S । ।	दि. ल. ८ (स्वगृही दृष्ट्या भौम षष्ठ परिहारः), ९ (धनु), भद्रा पाताले शुभदा–आवश्यके
☆ मार्गशीर्ष मास ☆ (नवम्बर–दिसम्बर, 2005 ई.)								
मार्ग. कृष्ण	२	गुरु	17 नवं.	२ मार्ग.	रोहिणी	वृष	S मं । । । S बु S S । । ।	रा. ल. ५ (श. दा., ल. रा. 25/18 तक) मृत्युवाण दोष प्रातः 10/23 से रात्रि 22/15 स्टैं. टा. तक
मार्ग. कृष्ण	२	गुरु	17 नवं.	२ मार्ग.	मृग	वृष	। । । । । । । । । ।	रात्रि लग्न ५ (सिंहे शनि का दान)
मार्ग. कृष्ण	३	शुक्र	18 नवं.	३ मार्ग.	मृग	वृष/मिथु	। । । । । S अ । । । ।	दि. ल. ११ (षष्ठ शनि पूज्य, लग्न पर गुरु की दृष्टि शुभः), गोधू., रा. ल. ५ (श. दा., भद्रा स्वर्गगते परिहारः)
मार्ग. कृष्ण	७/८	बुध	23 नवं.	८ मार्ग.	मघा	सिंह	। । । । । । । S । ।	दि. ल. ११ (श. दा., लग्ने गुरु दृष्ट्या शुभः), गोधू., रा. ल. ५ (श.चं.दा.) सिंहे चं.ल. दोष परिहार
मार्ग. कृष्ण	८	गुरु	24 नवं.	९ मार्ग.	मघा	सिंह	। । । । । । । S । ।	दिवा लग्न ९, ११ (कुम्भे शनि का दान, लग्ने गुरु दृष्ट्या शुभः)
मार्ग. कृष्ण	१०	शनि	26 नवं.	११ मार्ग.	हस्त	कन्या	। । S के । । । S S । ।	रा. ल. ५ (सिंहे लग्ने शनि का दान), केतु युति का परिहारः
मार्ग. कृष्ण	११	रवि	27 नवं.	१२ मार्ग.	हस्त	कन्या	। । S के । । S अ S S । ।	दि. ल. ९ (बु. दा.), ११ (कुंभे शनि षष्ठ परि. गुरु त्रिकोणस्थ) गोधूलि, केतु युति परि.
मार्ग. कृष्ण	११/१२	रवि	27 नवं.	१२ मार्ग.	चित्रा	कन्या	। । । । S रा S । S । ।	रात्रि लग्न ५ (सिंह लग्ने शनि का दान)
मार्ग. कृष्ण	१२	चंद्र	28 नवं.	१३ मार्ग.	चित्रा	तुला	। । । । S रा । । S । ।	दि. ल. ९ (बु. दा.), ११ (कुम्भे शनि षष्ठे (गुरु त्रिकोणेन शुभः), गोधूलि, रात्रौ लग्नाभावः
मार्ग. शुक्ल	२	शुक्र	2 दिसं.	१७ मार्ग.	मूला	धनु	। S । । । । । । । ।	रात्रि लग्न ५ (सिंह लग्ने शनि का दान)
मार्ग. शुक्ल	३/४	रवि	4 दिसं.	१९ मार्ग.	उषा.	धनु	। । S शु । । । । । । ।	रात्रि लग्न ५ (सिंहे शनि का दान, लग्न रात 23/01 तक)
मार्ग. शुक्ल	५/६	मंग	6 दिसं.	२१ मार्ग.	श्रवण	मकर	। । । । । S अ S व्या S । ।	दिवा लग्न ९ (धनुषि बुध का दान)
मार्ग. शुक्ल	१०	शनि	10 दिसं.	२५ मार्ग.	रेवती	मीन	। S । । S के S चौ Sव्य S । S	दि. ल. ९ (बु. दान) प्रातः 9 के उप., ११ (श. दा.), दग्धा ति., रा. ल. अभावः, आवश्यके
मार्ग. शुक्ल	११	रवि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	अश्वि.	मेष	। । । । । S रो । । । ।	दि. ल. ९ (बु. दा.), रा. ल. ५ (श. दा.), कुम्भे भद्रा दोष व्याप्त
मार्ग. शुक्ल	१२	चंद्र	12 दिसं.	२७ मार्ग.	अश्वि.	मेष	। । । । । S । । । ।	दि. ल. ९ (प्रातः 8/13 बजे तक)

☆ माघ मासे ☆ (जनवरी–फरवरी 2006 ई.)

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में)
माघ कृष्ण	७	शनि	21 जन.	८ माघ	चित्रा	कं./तुला	I I I I I I I I I I	रात्रि लग्न ९ (धनु लग्ने राहु का दान)
माघ कृष्ण	७/८	रवि	22 जन.	९ माघ	चित्रा	तुला	I I I I I S रो. I I I I	दिवा लग्न ११ (शनि षष्ठ दोष परिहार, लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि)
माघ कृष्ण	७/८	रवि	22 जन.	९ माघ	स्वाती	तुला	S बु श. S I I I I Sशू S I I	गोधू., रात्रि लग्न ९ (राहु दान), शूल योग विचार–नाग पूजा व दान, आवश्यके
माघ कृष्ण	१२	गुरु	26 जन.	१३ माघ	मूला	धनु	I I I I I I S व्या. S I S	रा. ल. ८ (लग्न पर मंगल की स्वगृही दृष्टि तथा स्वक्षेत्री षष्ठे मं. शुभः), मं. का दान
माघ शुक्ल	१/२	चंद्रे	30 जन.	१७ माघ	धनि	मक/कुंभ	I S I I I I S व्या I I I	दि. ल. ११ (चं. दा., ल. पर गुरु की दृष्टि होने से षष्ठस्थ शनि दोष परि., रा. ल. ९ (रा. दा.)
माघ शुक्ल	५	गुरु	2 फर.	२० माघ	रेवती	मीन	I S I I S के. S अ. I I I I	रा. ल. ९ (धनुषि राहु का दान) **(बसन्त पंचमी)**
माघ शुक्ल	६	शुक्र	3 फर.	२१ माघ	रेवती	मीन	I S सा. I I S के.S अ I I I	दि. ल. ११ (लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से षष्ठ शनि परिहारः), गोधू.
माघ शुक्ल	६	शुक्र	3 फर.	२१ माघ	अश्वि.	मेष	I S सा. I I I I S S I I	रात्रि लग्न ९ (धनु-राहु का दान), सिंहे लग्नेश सूर्य षष्ठ दोषः
माघ शुक्ल	७	शनि	4 फर.	२२ माघ	अश्वि.	मेष	I S I I I I S S I I	दिवा लग्न ११ (गु. की शुभ दृष्टि होने से षष्ठे शनि परिहारः), **गोधूली च**
माघ शुक्ल	९/१०	चंद्र	6 फर.	२४ माघ	रोहि.	वृष	I I I I I S चौ S I S I	रात्रि लग्न ८ (षष्ठ स्वक्षेत्री भौम की लग्न पर शुभ दृष्टि)
माघ शुक्ल	१०	मंग.	7 फर.	२५ माघ	रोहि.	वृष	I S वै. I I I S चौ. S I S I	दि. ल. ११ (कुंभ लग्ने गुरु की शुभ दृष्टि), १ (गु. दा.), **गोधूली च.**
माघ शुक्ल	११	बुध	8 फर.	२६ माघ	मृग	वृष/मिथु	S मं Sवै. I I I I S S I I	दि. ल. ११ (लग्न पर गुरु की दृष्टि शुभः), १ (गु. दा.)

☆ फाल्गुण मासे ☆ (फरवरी–मार्च) 2006 ई.

पक्ष	तिथि	वार	ता.अंग्रेजी	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष	शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में)
माघ शुक्ल	पूर्णि.	चंद्र	13 फर.	२ फागु.	मघा	सिंह	I I I I S सू. S S S I I	दि. ल. १ (गु. दा.), गोधू., रा. ल. ७ (गुरु केन्द्रे भौमाष्टम परि.) तुला रा. 24/32 तक, तदुपरान्त मृत्युबाण दोषः
फागु. कृष्ण	२	बुध	15 फर.	४ फागु.	उफा	सिंह/कं.	I I I I I I S I I I	गोधू., रा. ल. ७ (चं.-मं. दा., गुरु केंद्रे शुभः), ९ (धनु ल. अर्धरात्रि के बाद प्रातः 4/50 तक, भद्रा पूर्वे)
फागु. कृष्ण	४/५	शुक्र	17 फर.	६ फागु.	चित्रा	कन्या	I S I S बु I I S S I I	रा. ल. ९ (रा. दा.), रात 24/42 तक शूल योग होने से तुला लग्ने भुजंगपात दोषः, पादेन बुध वेधSभावः
फागु. कृष्ण	५	शनि	18 फर.	७ फागु.	चित्रा	कं./तुला	I S I S बु I I Sगं SS I	दिवा लग्न १ (मेष लग्न प्रातः 10/44 के बाद, चंद्र गुरु का दान), गोधूलि, रात्रि लग्न ७ (गुरु केन्द्र गते भौमSष्टम परि.) तुला लग्न रात 23/54 तक
फा. कृष्ण	५/६	शनि	18 फर.	७ फागु.	स्वा.	तुला	Sश. Sगं. I I I Sचौ. I I S I	रा. ल. ७ (चं. दा., भौमाष्टम परिहारः, ९ (धनु में राहु का दान)
फागु. कृष्ण	६	रवि	19 फर.	८ फागु.	स्वा.	तुला	S श. S I I I S चौ I I S I	दि. ल. १ (चं. गु. दा.), ३ (शु. दा.), (दुपै. 15/25 के बाद विवाह नक्षत्र पर सूर्य का वेध दोष होगा)
फा. कृष्ण	७/८	चंद्रे	20 फर.	९ फागु.	अनु.	वृश्चि.	Sशु. I I ISमं Sरो Sव्या I I I	रात्रि लग्न ९ (धनुषि चंद्र-राहु का दान), धनु लग्न रात 27/05 के बाद
फागु. कृष्ण	८	मंग.	21 फर.	१० फागु.	अनु.	वृश्चि.	SशुSहर्ष I I SमंSरो.Sव्या I I I	दि. ल. १ (चं. गु. दा., चन्द्राष्टम परि.), गो., रा. ल. ७ (भौमाष्टम परि., दाने), ९ (रा.-चं. दा.)
फागु. कृष्ण	१०	गुरु	23 फर.	१२ फागु.	मूला	धनु	S बु. I I I I I S व S I I	प्रातः 10/50 स्टैं. टा. तक मृत्युबाण, रा. ल. ७ (भौम परि.), रात्रि 22/13 उपरांत–भद्रोत्तरे
फागु. कृष्ण	१२	शनि	25 फर.	१४ फागु.	उ.षा.	मकर	Sगु.SSशु. I I I S व्य. S I I	दिवा लग्न १ (मेषे गुरु दान), रात्रौ कृष्ण त्रयो. तिथि दोषः
फागु. शुक्ल	३	गुरु	2 मार्च	१९ फागु.	रेवती	मीन	I I I I S के. I I I I S	दि. ल. १ (चं.-गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ९ (चं.-रा. दा.), दिवस लग्ने दग्धा दोष का अभावः
फागु. शुक्ल	७	चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	वृष	I I S मं I I S S वि S I I	दिवा लग्न १ (बुध गुरु का दान), रात्रौ तिथि दोषः, भौम युति परिहारः

वि. सम्वत् २०६३ में सांकेतिक गुरु-शुक्रास्त काल लगभग ३ अक्तू. (२००६) से २९ नवं. तक शुक्रास्त तक लगभग ७ नवं. से २ दिसं. (२००६ ई.) के मध्य गुरु पश्चिम में अस्त रहेंगे॥

त्रिबल शुद्धि पर आधारित

वर-कन्या की राशि के अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त संवत् २०६२ वि. (सन् 2005-06 ई.)

नीचे वर–कन्या की जन्म अथवा प्रसिद्ध नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि**–सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्तों के शुभ मास एवं तारीखें दी जा रही हैं। कुण्डली मिलान के पश्चात् यदि आपको वर–कन्या के विवाह हेतु शुभ मास एवं उपयुक्त तारीखें जाननी हों तो **वर की राशि** तथा कन्या की राशि में जो मास, तारीखें समान होंगी, वहीं तारीखें दोनों के विवाह में शुभ एवं ग्राह्य होंगी। विवाह लग्न में और अधिक शुद्धता एवं सूक्ष्मता के लिए, गत पृष्ठों में दिए गए (गुण–दोषों सहित) मुहूर्तों में से न्यूनतम दोष **वाले शुभ मुहूर्त (किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्शानुसार) का चयन करें। उदाहरणार्थ**–मान लो, आपको **वैशाख** मास २००५ ई. में रात्रिकालीन **तुला राशि के लड़के** और **कुम्भ राशि की कन्या का** विवाह मुहूर्त जानना है, तो हमने पाया कि तुला राशि (लड़के) तथा कुम्भ राशि की कन्या के मुहूर्तों में ४ मई की समानता पाई जाती है। इस प्रकार वर–कन्या के विवाह हेतु ४ मई का मुहूर्त्त शुभ होगा। **कार्तिक मास** के मुहूर्त्त केवल पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। ध्यान रहे, **विवाह के मास का निर्धारण** प्रधानतः लड़के (वर) की राश्यनुसार ही किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विशेष विचारणीय होता है। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ एवं पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
मेष राशि—अप्रैल की ता. २९, ३०, **मई** की १, २, ४ (चं.दा.), ५ (चं.दा.), ९, १०, ११, १६, १९, २१, २७, २८, २९, ३१ (चं.दा.), **जून** की १-३ (चं.दा.), १२, १६, १७, १८, २३, २४, २५, २८-३० (चं.दा.), **जुला.** की ९, १०, १३, **अग.** की १७, १९, २३-२४, (चं.दा.), २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् २००६ ई. में जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४ (चं.दा.), ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २३, २५ और मार्च की २ (चं.दा.), ६ तारीखें शुभ एवं ग्राह्य रहेंगी।	मेष के वर को आषाढ़, आश्विन, माघ व फागुन मास शुभ तथा वैशाख, ज्येष्ठ, भाद्र. व कार्तिक मासों में सूर्य का दान, पूजादि करणीय हैं। श्रावण और मार्गशीर्ष त्याज्य हैं। मेष राशि की कन्या को वर्षारम्भ से 27 सितं. तक गुरु पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**मेष राशि—अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४-५ (चं.दा.), ९, १०, ११, १६, १९, २१, २७, २८, २९, ३१ (चं.दा.), **जून** की १-३ (चं.दा.), १२, १६, १७, १८, २३, २४, २५, २८-३० (चं.दा.), **जुला.** की ९, १०, १३, १९, २०, २१, २२, २३, २५ (चं.दा.), ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३-२४ (चं.दा.), २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०-११ (चं.दा.), १२, **सन् २००६ ई. में जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४ (चं.दा.), ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २३, २५ और **मार्च** की २ (चं.दा.) एवं ६ तारीखें शुभ एवं ग्राह्य होंगी।
वृष राशि—मई की १६, १९ (चं.दा.), २१, २३, २७ (१३/४३ बाद), २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १२, १६-१७ (चं.दा.), १८, १९, २०, २३ (रा.ल.), २४, २५, २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३ (चं.दा.), १७, १८, २१, २२, २३, २५, ३०-३१ (चं.दा.), **अग.** की १, ६, १० (चं.दा.), ११, १२, **नवं.** की १७ (चं.दा.), १८, २३, २४, २६-२७ (चं.दा.), २८, **दिसं.** की ६, १०, ११, १२, **जनवरी २००६ ई.** की २१, २२, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६-७-८ (चं.दा.), १३, १५, १७-१८ (चं.दा.), १९, २०, २१, २५, **मार्च** की २, ६ (चं.दा.) तारीखें शुभ रहेंगी।	वृष के वर को श्रावण, कार्तिक, फागुन मास शुभ तथा ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, मार्ग. एवं माघ मासों में सूर्य पूजा रहेगी। वैशाख व भाद्र. मास त्याज्य होंगे। वृष राशि की कन्या को गुरु 27 सितं. तक शुभ, परन्तु उसके पश्चात् पूज्य होगा।	**वृष राशि—अप्रै.** की ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ९-१०-११ (चं.दा.), १६, १९, २१, २३, २७ (१३/४३ बाद), २८, २९, ३१, **जून** को १, ३, १२, १६-१७ (चं.दा.), १८, १९, २०, २३ (रा.ल.), २४, २५, २८, ३०, **जुला.** को ९, १०, १३, १७, १८, २१, २२, २३, २५, ३०-३१ (चं.दा.), **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १९, २३, २४, २६-२७-२८ (चं.दा.), **सितं.** की ६-७ (चं.दा.), ८, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की ६, १०, ११, १२, **जनवरी २००६ ई.** की २१, २२, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६-७-८ (चं.दा.), १३, १५, १७-१८ (चं.दा.), १९, २०, २१, २५, **मार्च** की २, ६ (चं.दा.) शुभ रहेंगी।
मिथुन राशि—अप्रैल की २९, **मई** की २, ४, ५, ९-१०-११ (चं.दा.), **जून** की १६-१७ (चं.दा.), १८, १९, २०, २३ (२२/२६ तक), २५ (२२/३६ बाद), २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१ (दि. ल. ५) ०३, २५, ३०-३१ (चं.दा.), **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७ (१९/३० तक), १९ (१८/४९ बाद), २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६-७ (चं.दा.), ८, १२, १३, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई. में फर.** की १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, **मार्च** की २, ६ (चं.दा.) तारीखें शुभ रहेंगी।	मिथुन के वर को वैशाख, भाद्र., मार्गशीर्ष में विवाह शुभ, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फागुन में सूर्य पूजा, ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य हैं। मिथुन की कन्या को 27 सितं. तक गुरु की विशेष पूजा, परन्तु उसके बाद शुभ रहेगा।	**मिथुन राशि—अप्रैल** की २९, **मई** की २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७ (१२/४२ तक), २९ (१५/२४ बाद), ३१, **जून** को १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३ (२२/२६ तक), २५ (२२/३६ बाद), २८, ३०, **जुला.** को ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २३. २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७ (१९/३० तक), १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई. में जन.** की २१, २२, २६, ३० (१८/२८ बाद), **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, **मार्च** की २, ६ (चं.दा.) शुभ रहेंगी।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ एवं पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
कर्क राशि—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९ (१५/२३ तक), ३१, **जून** की १, ३, १२, **जुला.** की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११-१२ (चं.दा.), १७, १९ (१८/४८ तक), २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, १२, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३० (१८/२७ तक), **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८ शुभ रहेंगी।	कर्क के वर को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन में विवाह शुभ, श्रावण, भाद्र., मार्ग व माघ मासों में सूर्य पूजा, आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। कर्क की कन्या को गुरू 27 सितं. तक साधारण पूज्य, परन्तु उसके बाद विशेष रूपेण पूज्य होगा।	**कर्क राशि**—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९ (१५/२३ तक), ३१, **जून** की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५ (२२/३५ तक), २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३० (१८/२७ तक), **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।
सिंह राशि—**अप्रै.** की २९, ३०, **मई** की १, २, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, **जून** की ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, **अग.** को १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की ३ (रा.ल.), ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५ **मार्च** की ६ शुभ रहेंगी।	सिंह के वर को ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक व माघ शुभ, वैशाख, भाद्र., आश्विन व फागुन में सूर्य पूजा तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य होंगे। सिंह की कन्या को गुरू 27 सितं. तक शुभ, परन्तु उसके बाद साधारणतः पूज्य रहेगा।	**सिंह राशि**—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, **जून** को ३, १२, १६, १७, १९, २०, २३, २४, २५, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** को १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, ११, १२, **जन. २००६** को २१, २२, २६, ३०, **फर.** की ३ (रा.ल.), ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की ६ शुभ रहेंगी।
कन्या राशि—**मई** की १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, **जुला.** की ९-१० (चं.दा.), १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३ (२०/३१ तक), ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ तारीखें शुभ रहेंगी।	कन्या राशि के वर को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फागुन मास शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ में सूर्य पूजा तथा वैशाख, भाद्र. त्याज्य होंगे। कन्या राशि की लड़की को गुरू 27 सितं. तक सामान्यतः पूज्य, परन्तु बाद में शुभ रहेगा।	**कन्या राशि**—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, २४, २५, २८, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३ (२०/३१ तक), ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।
तुला राशि—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ११ (१०/५६ के बाद), **जून** की १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४-२५ (चं.दा.), २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७-१९ (चं.दा.), २३, २४, २८ (१२/२७ बाद), **सितं.** की ६-७ (चं.दा.), ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १८ (१३/४५ के बाद), २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **फर.** की १३, १५, १७, १८, १९, २०. २१, २३, २५ (चं.दा.), **मार्च** की २ शुभ रहेंगी।	तुला राशि के वर को वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फागुन में सूर्य पूजा, श्रावण, भादों—शुभ तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य होंगे। तुला राशि की कन्या को गुरू 27 सितं. तक विशेषतः पूज्य, परन्तु उसके बाद साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**तुला राशि**—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ११ (१०/५६ बाद), १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २८ (१२/२७ बाद), **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १८ (१३/४५ के बाद), २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ८ (१०/२१ के बाद), १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २ शुभ रहेंगी।
वृश्चिक राशि—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २ (चं.दा.), ४, ५, ९, १०, ११ (१०/५५ तक), १६, १९, २१ (चं.दा.), २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १२, **जुला.** की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३ (चं.दा.), २५, ३०, ३१, **अग.** की ६, १०, ११-१२ (चं.दा.), १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८ (१२/२६ तक), **सितं.** की ६, ७-८ (चं.दा.), १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८ (१३/४४ तक), २३, २४, २६, २७, २८ (चं.दा.), **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१-२२ (चं.दा.), २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८ (१०/२० तक) शुभ रहेंगी।	वृश्चिक के वर को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन, माघ मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण, मार्गशीर्ष मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। वृश्चिक राशि की कन्या को गुरू 27 सितं. तक शुभ किन्तु उसके बाद विशेष रूपेण पूज्य होगा।	**वृश्चिक राशि**—**अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ९, १०, ११ (१०/५५ तक), १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८ (१२/२६ तक), **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८ (१३/४४ तक), २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८ (१०/२० तक), १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ एवं पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
धनु राशि—अप्रैल की २९, ३०, **मई** की १, २, ४-५ (चं.दा.), ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१-**जून.** की १ (चं.दा.), ३, १२, १६, १७, १८, १९-२० (चं.दा.), २३, २४, २५, २८ (चं.दा.), ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, **अग.** की १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २-३ (चं.दा.), ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०-२१ (चं.दा.), २३, २५, **मार्च** की २, ६ तारीखें शुभ रहेंगी।	धनु के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक, फागुन मास शुभ, वैशाख, आषाढ़, भाद्र., माघ मासों में सूर्य पूजा तथा श्रावण, मार्ग. मास त्याज्य होंगे। धनु राशि की कन्या को गुरु 27 सितं. तक साधारण पूज्य, किन्तु उसके बाद शुभ होगा।	**धनु राशि—अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **जन. २००६ ई.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ शुभ होंगी।
मकर राशि—मई की १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३ (चं.दा.), १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३० (चं.दा.), **जुला.** की १३, १७, १८, १९-२० (चं.दा.), २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, १०, ११, १२, **नवं.** की १७, १८, २६, २७, २८, **दिसं.** की २-४ (चं.दा.), ६, १०, ११-१२ (चं.दा.), **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६ (चं.दा.), ३०, **फर.** की २, ३-४ (चं.दा.), ६, ७, ८, १५ (२२/२३ बाद), १७, १८, १९, २०, २१, २३ (चं.दा.), २५, **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, माघ व फागुन मासों में सूर्य पूजा तथा वैशाख, भाद्र. मास त्याज्य होंगे। मकर राशि की कन्या को गुरु 27 सितं. के बाद साधारण पूज्य रहेगा।	**मकर राशि—अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, **जुला.** की १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७, ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २६, २७, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१, २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८, १५ (२२/२३ के बाद), १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।
कुम्भ राशि—अप्रैल की २९, ३०-**मई** की १ (चं.दा.), २, ४, ५, ९-१०-११ (चं.दा.), **जून** की १७ (१५/४८ बाद), १८, १९, २०, २३-२४ (चं.दा.), २५, २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १७, १८, १९, २०, २१-२२ (चं.दा.), २३, २५, ३०-३१ (चं.दा.), **अग.** की १, ६, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६-२७-२८ (चं.दा.), **सितं.** की ७ (१२/०३ के बाद), ८, १२, १३, १४ (चं.दा.), **नवं.** की १७-१८ (चं.दा.), २३, २४, २८, **दिसं.** की २, ४, ६ (चं.दा.), १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **फर.** की १३, १५ (२२/२२ तक), १८ (१०/४४ के बाद), १९, २०, २१, २३, २५ (चं.दा.), **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।	कुम्भ राशि के वर को वैशाख, मार्ग., श्रावण मास शुभ तथा आषाढ़, भाद्र., कार्तिक व फागुन मासों में सूर्य की पूजा व दान रहेगा। ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य होंगे। कुम्भ राशि की कन्या को गुरु 27 सितं. तक विशेषतः पूज्य रहेगा, तदुपरान्त शुभ है।	**कुम्भ राशि—अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १२, १७ (१५/४८ बाद), १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ७ (१२/०३ के बाद), ८, १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २८, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१ (२८/१० बाद); २२, २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५ (२२/२२ तक), १८ (१०/४४ बाद). १९, २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।
मीन राशि—अप्रैल की २९, ३०, **मई** की १, २ (चं.दा.), ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २३, २७, २८, २९ (चं.दा.), ३१, **जून** की १, ३, १२, **जुला.** की १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३ (चं.दा.), २५, ३०, ३१, **अग.** की १ (चं.दा.), ६, १०, १७, १९ (चं.दा.), २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७ (१२/०२ तक), १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१ (२८/०९ तक), २६, ३० (चं.दा.), **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८ शुभ रहेंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्ग. मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक एवं फागुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्या को गुरु 27 सितं. के बाद विशेष रुपेण पूज्य रहेगा।	**मीन राशि—अप्रैल** की २९, ३०, **मई** की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २३, २७, २८, २९, ३१, **जून** की १, ३, १२, १६, १७ (१५/४७ तक), १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, **जुला.** की ९, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, **अग.** की १, ६, १०, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, **सितं.** की ६, ७ (१२/०२ तक), १२, १३, १४, **नवं.** की १७, १८, २३, २४, २६, २७, **दिसं.** की २, ४, ६, १०, ११, १२, **सन् २००६ ई.** में **जन.** की २१ (२८/०९ तक), २६, ३०, **फर.** की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८ (१०/४३ तक), २०, २१, २३, २५, **मार्च** की २, ६ शुभ रहेंगी।

कुछ अन्य उपयोगी मुहूर्त

मुण्डन संस्कार मुहूर्त सं. २०६२

बालक की आयु के विषम वर्षों में, उत्तरायण मासों में तथा बालक की जन्म राशि से अष्टमस्थ राशि/लग्न को छोड़कर, ज्येष्ठ मास में बड़े (ज्येष्ठ) लड़के का मुण्डन करना शुभ नहीं होता। यदि बालक की माता गर्भवती या रजस्वला हो, तो भी मुण्डन कार्य न करें। यदि मुण्डनों के साथ उपनयन संस्कार भी हो, तो दोषापत्ति नहीं॥ मुण्डन के समय, बालक को बढ़िया वस्त्राभूषणों से विभूषित नहीं करना चाहिए। कुल परम्परानुसार कुछ लोग नवरात्रों में अथवा अक्षया तीज आदि शुभ मुहूर्तों में, शक्ति पीठों में, देवी (माता) के मन्दिर में अथवा सिद्ध तीर्थ स्थलों पर बिना सुनियोजित मुहूर्त के भी मुण्डन आदि शुभ कर्म कर लेते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वै.कृ. ५/६, बुध	27 अप्रै.	१५ वैशा.	ज्येष्ठा	ल. वृष (चं. दा.), अभि.
वै. कृ. ८, रवि	1 मई	१९ वैशा.	श्रवण	ल. वृष, अभि. (विप्राय)
वै. कृ. ९, चंद्र	2 मई	२० वैशा.	धनिष्टा	वृष, अभि., रिक्तातिथौ चंद्र दानं (आवश्यके)
वै. कृ. १०, मंग.	3 मई	२१ वैशा.	शत.	मु. प्रातः 7/49 तक (क्षत्रियाणां)
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग	वृष ल., अभि. (अक्षयातीज)
वै. शु. ७, रवि	15 मई	२ ज्ये.	पुष्य	प्रातः 8/12 स्टै. टा. तक (विप्राय)
वै. शु. ११, शुक्र	20 मई	७ ज्ये.	हस्त	मु. प्रातः 6/59 के बाद, अभि.
वै. शु. १३, रवि	22 मई	९ ज्ये.	स्वाती	कर्क, अभि., विप्राणां
ज्ये. कृ. २, बुध	25 मई	१२ ज्ये.	ज्येष्ठा	अभि., दुपै. 12/45 तक
ज्ये. कृ. ५, शनि	28 मई	१५ ज्ये.	श्रवण	दि. ल. मिथुन, अभिजित
ज्ये. कृ. ६, रवि	29 मई	१६ ज्ये.	धनि.	ल. मिथुन (8/32 तक), विप्राणां
ज्ये. कृ. ७/८, चंद्र	30 मई	१७ ज्ये.	शत.	मिथुन, अभिजित
ज्ये.कृ. १२, शुक्र	3 जून	२१ ज्ये.	अश्वि.	मिथुन, अभिजित
ज्ये. शु. ३/४, शुक्र	10 जून	२८ ज्ये.	पुष्य	मु. दुपै. 12/39 के बाद
ज्ये. शु. ४/५, शनि	11 जून	२९ ज्ये.	पुष्य	मु. प्रातः 11/09 के बाद, भद्रोत्तरे (वैश्यानां)
ज्ये. शु. ११, शनि	18 जून	५ आषा.	स्वा.	मु. 8/10 तक, भद्रापूर्वे (वैश्यानां)
(सन् 2006 ई. में)				
माघ कृ. ७/८, रवि	22 जन.	९ माघ	चित्रा	कुम्भ, अभिजित
माघ कृ. ११/१२, गुरु	26 जन.	१३ माघ	ज्येष्ठा	कुम्भ, अभिजित्
माघ शु. १, चंद्र	30 जन.	१७ माघ	धनिष्ठा	कुम्भ, अभिजित
माघ शु. ६, शुक्र	3 फर.	२१ माघ	रेवती	मु. ल.कुम्भ, अभिजित
माघ शु. ७, शनि	4 फर.	२२ माघ	अश्वि.	कुम्भ, अभि. (वैश्यानां)
माघ शु. १०, मंग.	7 फर.	२५ माघ	रोहि.	लग्न कुम्भ (क्षत्रियाणां)
माघ शु. ११, बुध	8 फर.	२६ माघ	मृग.	लग्न कुम्भ, अभिजित
माघ शु. १३, शुक्र	10 फर.	२८ माघ	पुर्न	मु. कुम्भ लग्न, अभिजित
फा. कृ. ५, शनि	18 फर.	७ फागु.	चित्रा	ल. मेष 10/44 के बाद, वैश्यानां
फा. कृ. ६, रवि	19 फर.	८ फागु.	स्वाती	मेष (विप्राणां), अभिजित
फा. कृ. ९, बुध	22 फर.	११ फागु.	ज्येष्ठा	मेष (चं. दा.), अभि. आवश्यक
फा. शु. ३, गुरु	2 मार्च	१९ फागु.	रेवती	ल. मेष (चं. दा.), अभिजित
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहिणी	लग्न मेष, अभिजित

गृहारम्भ एवं नींवादि रखना सं. २०६२

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्तों में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, सवत्सा गोपूजन, कन्या पूजन, ब्राह्मण भोजन, दान आदि कृत्य करवाने के पश्चात् शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में १, ५, ७, ९ आदि प्रविष्टों में भूमि-शयन (सुप्त भूमि) का भी विशेषतः विचार किया जाता है। स्तम्भारोहण, छत (लैंटर आदि) के निर्माण काल में पंचक नक्षत्रों का भी विचार कर लेना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ७, शनि	30 अप्रै.	१८ वैशा.	उ.षा.	दि. मु. दुपै. 14/13 के बाद
वै. कृ. १२, गुरु	5 मई	२३ वैशा.	उ.भा.	लग्न वृष, अभिजित
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग	ल. वृष, अभि. (अक्षया ३)
वै. शु. ७, रवि	15 मई	२ ज्ये.	पुष्य	प्रातः 8/12 तक, आवश्यके- (रवि-पुष्य योग)
ज्ये. कृ. ५, शुक्र	27 मई	१४ ज्ये.	उ.षा.	दुपै. 14/05 के बाद, अभि.
ज्ये. कृ. ७/८, चंद्र	30 मई	१७ ज्ये.	शत.	लग्न मिथुन, अभिजित्
ज्ये.कृ. १०, बुध	1 जून	१९ ज्ये.	उ.भा.	मिथुन, अभिजित्
ज्ये. शु. ५, शनि	11 जून	२९ ज्ये.	पुष्य	मु. 11/09 के बाद, अभि.
ज्ये.शु. १०, शुक्र	17 जून	४ आषा.	चित्रा	ल. ४, ५, अभि. (मं. दा.)
आ.शु ११/१२, चं	18 जुला.	३ श्राव.	अनु.	लग्न सिंह (9/13 के बाद), अभिजित्
आ.शु. १५, गुरु	21 जुला.	६ श्राव.	उ.षा.	प्रातः 6/27 से 8/53 तक, अभि.
श्रा. कृ. २/३, शनि	23 जुला.	८ श्राव.	धनि.	सिंह ल. प्रातः 8/02 उप., अभि.
श्रा. कृ. १२, चंद्र	1 अग.	१७ श्राव.	मृग.	ल. सिंह (श. दा.), अभिजित
श्रा.शु. ६/७, गुरु	11 अग.	२७ श्राव.	चित्रा	सिंह (श. दा.), अभि.
श्रा. शु. ७, शुक्र	12 अग.	२८ श्राव.	स्वा.	सिंह (श. दा.), अभिजित्
श्रा. शु. १२, बुध	17 अग.	२ भाद्र.	उ.षा.	मुहूर्त दुपै. 14/12 उप.
श्रा. शु. १३, गुरु	18 अग.	३ भाद्र.	उ.षा.	प्रातः 7/05 तक
श्रा. शु. १५, शुक्र	19 अग.	४ भाद्र.	धनि.	मुहूर्त दुपै. 13/19 उपरांत
भा. कृ. ८, शनि	27 अग.	१२ भाद्र.	रोहि.	मुहूर्त प्रातः 9/15 तक
भा. कृ. १२, बुध	31 अग.	१६ भाद्र.	पुर्न.	प्रातः 7/13 तक
भा. शु. ११, बुध	14 सितं.	३० भाद्र.	उ.षा.	मु. प्रातः 10/22 तक, भद्रा पूर्वे
मार्ग. कृ. २, गु.	17 नवं.	२ मार्ग.	रोहि.	मु. प्रातः 10 बजे तक
मा. कृ. ३, शुक्र	18 नवं.	३ मार्ग.	मृग.	कुम्भ (श. दा.), अभि.
मा. कृ. ५/६, चं.	21 नवं.	६ मार्ग.	पुष्य	लग्न ९, ११, अभिजित्
मा. कृ. १२, चंद्र	28 नवं.	१३ मार्ग.	चित्रा	ल. ९, ११, अभिजित्
मा. शु. ५, चंद्र	5 दिसं.	२० मार्ग.	उ.षा.	लग्न कुम्भ, अभिजित्
मा. शु. ७, बुध	7 दिसं.	२२ मार्ग.	धनि.	कुम्भ ल., अभिजित
मा. शु. १०, शनि	10 दिसं.	२५ मार्ग.	उभा., रे.	लग्न ९, ११, अभिजित्
(सन् 2006 ई. में)				
माघ कृ. १, चंद्र	30 जन.	१७ माघ	धनि.	लग्न कुम्भ, अभिजित्
मा. शु. ७, शनि	4 फर.	२२ माघ	अश्वि.	लग्न कुम्भ, अभिजित्
मा. शु. ११, बुध	8 फर.	२६ माघ	मृग.	कुम्भ, मेष, अभिजित्
मा. शु. १३, शुक्र	10 फर.	२८ माघ	पुर्न.	कुम्भ, मेष, अभिजित्
फा.कृ. १२, शनि	25 फर.	१४ फागु.	उ.षा.	मेष, अभिजित्
फा. शु. ३, गुरु	2 मार्च	१९ फागु.	रेवती	मेष (चं. दा.) अभिजित्
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	मेष, अभिजित्

7 मार्च से होलाष्टक प्रारम्भ

गृहारम्भ में शुभाशुभ जानने हेतु ''सूर्यभात् वृष चक्र''

भाग	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम
बैल के अंग	शिर	अग्र-पाद	पृष्ठ-पाद	पृष्ठ	दक्ष-कुक्षि	पुच्छ	वाम-कुक्षि	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि दाह	शून्य	स्थिर	श्री लाभ	धन लाभ	स्वामी हानि	दरिद्रता	कष्ट दुख

विधि—बैल की आकृति बनाकर उसे आठ भागों में बांटे। सूर्य अधीष्ठित नक्षत्र से आरम्भ करके प्रत्येक भाग में उपरोक्त क्रमानुसार नक्षत्रों की स्थापना करके फल ज्ञात करें। जैसे—यदि गृह निर्माण के

समय सूर्य मघा नक्षत्र में हो, तो मघा, पूफा, उफा—यह ३ नक्षत्र प्रथम भाग (शिर्) पर आएंगे। इसी क्रम से अन्य सभी २७ नक्षत्रों की स्थापना क्रमानुसार करें। यदि फिर चक्र में लिखे फलानुसार मुहूर्त के शुभाशुभ का निर्णय करें। यदि सूर्य का नक्षत्र प्रथम भाग में पड़े तो मकान में अग्नि का भय हो, यदि पंचम भाग में पड़े तो धन लाभ होगा।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६२

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी से पूछ कर रखे गए पूर्व निर्धारित मुहूर्त पर किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा नव. गृह में **वास्तु शान्ति**, नवग्रह-पूजन-शान्ति, स्वास्ती वाचन एवं पंचदेव गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए। **ध्यान रहे,** सुप्तभूमि का विचार गृह निर्माण आरम्भ में ही विशेषतया करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ७, शनि	30 अप्रै.	१८ वैशा.	उषा.	दुपै. 14/13 के उप., भद्रा के बाद
वै. कृ. १२,गुरू	5 मई	२३ वैशा.	उ.भा.	वृष लग्न, अभिजित्
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग	वृष, अभिजित, अक्षया (३)
वै. शु. ७, रवि	15 मई	२ ज्येष्ठ	पुष्य	प्र. 8/12 तक, (रवि पुष्य योग)
वै.शु ११/१२, शुक्र	20 मई	७ ज्येष्ठ	हस्त	मु. 6/59 के बाद, अभिजित
ज्ये. कृ. ५, शुक्र	27 मई	१४ ज्ये.	उषा.	दुपै. 14/05 के बाद,
ज्ये. कृ. ६, शनि	28 मई	१५ ज्ये.	उषा./श्र.	प्रात: 6/07 तक विशेष मु., अभि.
ज्ये.कृ. १०,बुध	1 जून	१९ ज्ये.	उ.भा.	मिथुन, अभिजित्
ज्ये.कृ. १२,शुक्र	3 जून	२१ ज्ये.	अश्वि.	मिथुन, अभिजित्
ज्ये. शु. ५, शनि	11 जून	२९ ज्ये.	पुष्य	प्रात: 11/09 के बाद, अभि.
ज्ये.शु. १०, शुक्र	17 जून	४ आषा.	चित्रा	कर्क, सिंह (मं. दा.), अभि.
ज्ये.शु. ११, शनि	18 जून	५ आषा.	स्वा.	प्रात: 8/10 तक, भद्रापूर्व
ज्ये.शु. १३, चंद्र	20 जून	७ आषा.	अनु.	ल. ५ (मं. का दान), अभि.
मार्ग. कृ. २, गु.	17 नवं.	२ मार्ग.	रोहि.	मुहूर्त प्रात: 10 बजे तक, तदुपरांत मृत्युबाण
मा. कृ. ३, शुक्र	18 नवं.	३ मार्ग.	मृग	कुम्भ (श. दा.), अभिजित
मा.कृ. ५/६, चंद्र	21 नवं.	६ मार्ग.	पुष्य	लग्न ९, ११, अभिजित
मा. कृ. १२,चंद्र	28 नवं.	१३ मार्ग.	चित्रा	लग्न ९, ११, अभिजित
मा. शु. ५, चंद्र	5 दिसं.	२० मार्ग.	उषा.	प्रात: 11/04 उप., कुंभ, अभि.
मा. शु. ७, बुध	7 दिसं.	२२ मार्ग.	धनि.	कुम्भ लग्न, अभिजित्
मा. शु. १०,शनि	10 दिसं.	२५ मार्ग.	उभा/रे.	लग्न ९, ११, अभिजित
मा. शु. १२, चंद्र	12 दिसं.	२७ मार्ग.	अश्वि.	धनु लग्न (प्रात: 8/13 तक)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
(सन् 2006 ई. में)				
मा.शु. १/२, चंद्र	30 जन.	१७ माघ	धनि.	ल. कुम्भ (चं. दा.), अभि.
मा. शु. ६, शुक्र	3 फर.	२१ माघ	रेव.	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ७, शनि	4 फर.	२२ माघ	अश्वि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ११,बुध	8 फर.	२६ माघ	मृग.	कुम्भ, मेष, अभिजित
मा. शु. १३,शुक्र	10 फर.	२८ माघ	पुन.	कुम्भ, मेष, अभिजित
फा. कृ. ५, शनि	18 फर.	७ फागु.	चित्रा	मेष ल. 10/44 के बाद, अभि.
फा.कृ. १२,शनि	25 फर.	१४ फागु.	उषा.	मेष, अभिजित्
फा. शु. ३, गुरू	2 मार्च	१९ फागु.	रेवती	मेष (चं. दा.), अभिजित
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	मेष, अभिजित्।

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६२

पुराने (पुरातन) गृह प्रवेश के मुहूर्तों के लिए ऊपर दिए गए नूतन गृह-प्रवेश मुहूर्तों के अतिरिक्त नीचे लिखे मुहूर्त भी ग्रहणीय रहेंगे। अस्थाई तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश के लिए निम्नलिखित मुहूर्त ग्राह्य होंगे। पुरातन गृह प्रवेश के समय भी नवग्रह पूजन, शान्ति एवं देव पूजन, ब्राह्मण भोजन आदि कृत्य करने कल्याणकारी होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ८, रवि	1 मई	१९ वैशा.	श्रवण	लग्न वृष, अभिजित
ज्ये.कृ. ७/८, चंद्र	30 मई	१७ ज्ये.	शत.	लग्न ३, अभिजित्
ज्ये.शु. ३/४,शुक्र	10 जून	२८ ज्ये.	पुष्य	दुपै. 12/39 उप.
आ.शु. ११, चंद्र	18 जुला.	३ श्राव.	अनु.	सिंह ल. प्रा. 9/13 उप., अभि.
आ.शु. ५, गुरू	21 जुला.	६ श्राव.	उ.षा.	सिंह ल. 9/54 तक, अभि.
श्रा.कृ. पूर्ण शुक्र	22 जुला.	७ श्राव.	श्रवण	वृश्चिक, अभिजित्
श्रा.कृ. २/३, शनि	23 जुला.	८ श्राव.	धनि.	सिंह, अभिजित्
श्रा. कृ. ५, चंद्र	25 जुला.	१० श्राव.	उ.भा.	अभिजित्, वृश्चिक
श्रा. कृ. १२,चंद्र	1 अग.	१७ श्राव.	मृग.	सिंह, अभिजित
श्रा. शु. ६, गु.	11 अग.	२७ श्राव.	चित्रा	सिंह, (श. दा.), अभिजित
श्रा. शु. ७, शुक्र	12 अग.	२८ श्राव.	स्वा.	सिंह (प्रा. 7/03 उप.), अभि.
श्रा.शु. १३/१४,गुरू	18 अग.	३ भादों.	श्रव.	मु. दुपै. 12/30 उप.
भा. कृ. ५, बुध	24 अग.	९ भादों.	अश्वि.	अभिजित्, धनु.
भा. कृ. ८, शनि	27 अग.	१२ भादों.	मृग.	मुहू. प्रात: 9/15 तक
भा. कृ. १२,बुध	31 अग.	१६ भादों.	पुन.	मु. प्रात: 7/13 तक
भा. शु. ५, गु.	8 सितं.	२४ भादों	स्वा.	अभिजित्, वृश्चिक
भा. शु.११, बुध	14 सितं.	३० भादों	उ.षा.	मु. प्रात: 10/22 तक

विपणि (दुकान आदि व्यवसाय) शुरू करने के मुहूर्त्त सं. २०६२

विपणि (दुकान) अथवा मध्यम स्तरीय कारोबार शुरु करने के मुहूर्त सभी प्रकार के व्यवसाय को प्रारम्भ करने में ग्राह्य होंगे। व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व मुहूर्त वाले दिन अपने कार्यालय में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा श्री गणपति सहित पंचदेव पूजा, नवग्रह पूजन, कलशस्थापनादि के पश्चात् ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ७, शनि	30 अप्रै.	१८ वैशा.	उ.षा.	मुहूर्त दुपै. 14/13 के बाद
वै. कृ. ८, रवि	1 मई	१९ वैशा.	श्रव.	लग्न वृष, अभिजित
वै. कृ. १२,गुरू	5 मई	२३ वैशा.	उ.भा.	वृष लग्न, अभिजित्
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग.	ल. वृष, अभि. (अक्षया ३)
वै. शु. ७, रवि	15 मई	२ ज्ये.	पुष्य	मु. प्रात: 8/12 बजे तक
वै. शु. ११, शुक्र	20 मई	७ ज्ये.	हस्त	मु. प्रात: 6/59 के बाद, अभि.
ज्ये. कृ. ५, शुक्र	27 मई	१४ ज्ये.	उषा.	दुपै. 14/05 उपरान्त
ज्ये.कृ. ५/६, शनि	28 मई	१५ ज्ये.	श्रव.	अभिजित्
ज्ये. कृ. ६, रवि	29 मई	१६ ज्ये.	धनि.	मु. प्रात: 8/32 तक
ज्ये.कृ. १०,बुध	1 जून	१९ ज्ये.	उ.भा.	लग्न मिथुन, अभिजित्
ज्ये.कृ. १२,शुक्र	3 जून	२१ ज्ये.	अश्वि	मिथुन, अभिजित
ज्ये. शु. ५, शनि	11 जून	२९ ज्ये.	पुष्य	प्रात: 11/09 के बाद, अभि.
ज्ये.शु. १०, शुक्र	17 जून	४ आषा.	चित्रा	लग्न सिंह, अभिजित
ज्ये.शु. ११, शनि	18 जून	५ आषा.	स्वा.	प्रात: 8/10 तक, भद्रापूर्वे
ज्ये.शु. १३, चंद्र	20 जून	७ आषा.	अनु	लग्न ५ (मं. दा.), अभि.
आ.कृ. ३, शुक्र	24 जून	११ आषा.	उ.षा.	मुहूर्त प्रात: 9/12 तक
आ. कृ. ५, रवि	26 जून	१३ आषा.	धनि.	मुहूर्त प्रात: 9/32 तक
आ. कृ. ८, बुध	29 जून	१६ आषा.	रेव.	मुहूर्त प्रात: 11/23 तक
आ.कृ. १०, गु.	30 जून	१७ आषा.	अश्वि	मुहूर्त प्रात: 10/51 के बाद
आ. शु. ७, बुध	13 जुला.	३० आषा.	हस्त	लग्न ७, अभिजित
आ. शु. ११,चंद्र	18 जुला.	३ श्राव.	अनु	ल. सिंह 9/13 के बाद, अभि.
आ.शु. १५, गु.	21 जुला.	६ श्राव.	उषा.	ल. सिंह (प्रात: 8/54 तक)
श्रा.कृ.२/३, शनि	23 जुला.	८ श्राव.	धनि.	ल. सिंह (8/02 उप.), वृश्चि.
श्रा. कृ. ५, चंद्र	25 जुला.	१० श्राव.	उभा.	लग्न वृश्चि., अभिजित
श्रा. कृ. ११, र.	31 जुला.	१६ श्राव.	रोहि.	सिंह, वृश्चि., अभिजित
श्रा.कृ. १२, चंद्र	1 अग.	१७ श्राव.	मृग.	सिंह, अभिजित
श्रा. शु. ७, शुक्र	12 अग.	२८ श्राव.	स्वा.	सिंह, अभिजित
श्रा.शु.१२/१३, बु	17 अग.	२ भाद्र.	उषा.	मुहूर्त्त दुपै. 14/12 उप.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
श्रा.शु. १५, शुक्र	19 अग.	४ भाद्र.	धनि.	अभिजित, लग्न ८,
भा. शु. ५, गु.	8 सितं.	२४ भाद्र.	स्वा.	मुहूर्त 6/17 उप., अभिजित
भा. शु. ११,बुध	14 सितं.	३० भाद्र.	उषा.	अभिजित
मा. कृ. ३, शुक्र	18 नवं.	३ मार्ग.	मृग.	अभि., ल. कुम्भ (चं.श.दा.)
मा. कृ. ५/६ चं.	21 नवं.	६ मार्ग.	पुष्य	अभिजित, कुम्भ
मा. कृ. ११,रवि	27 नवं.	१२ मार्ग.	हस्त	लग्न धनु., अभिजित
मा. कृ. १२,चंद्र	28 नवं.	१३ मार्ग.	चित्रा	लग्न धनु, अभिजित
मा. शु. १०,शनि	10 दिसं.	२५ मार्ग.	रेवती	लग्न ९, ११, अभिजित
मा. शु. ११, रवि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	रे, अ.	मु. प्रात: 11/02 तक, भद्रापूर्व
मा. शु. १२, चंद्र	12 दिसं.	२७ मार्ग.	अश्वि.	ल. धनु (प्रात: 8/13 तक)
(सन् 2006 ई. में)				
मा.कृ. ७/८,रवि	22 जन.	९ माघ	चित्रा	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा.शु. १/२, चंद्र	30 जन.	१७ माघ	धनि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ३, बुध	1 फर.	१९ माघ	पू.भा.	मु. प्रात: 8/58 तक (बु. दा.)
मा. शु. ६, शुक्र	3 फर.	२१ माघ	रेवती	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ७, शनि	4 फर.	२२ माघ	अश्वि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ११,बुध	8 फर.	२६ माघ	मृग.	कुम्भ, मेष, अभिजित
मा. शु. १३,शुक्र	10 फर.	२८ माघ	पुन.	कुम्भ, मेष, अभिजित
फा. कृ. ५, शनि	18 फर.	७ फागु.	चित्रा	मे. ल. 10/44 के बाद, अभि.
फा. कृ. ६, रवि	19 फर.	८ फागु.	स्वाती	लग्न मेष, अभिजित
फा.कृ. १२,शनि	25 फर.	१४ फागु.	उ.षा.	मेष, अभिजित
फा. शु. २, बुध	1 मार्च	१८ फागु.	पू.भा.	मेष, अभिजित
फा. शु. ३, गु.	2 मार्च	१९ फागु.	रेव.	मेष (चं. दा.), अभिजित
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	मेष, अभिजित

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त वि. सं. २०६२

उपनयन में ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास का त्याग करें

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग.	लग्न वृष, अभिजित
वै. शु. ७, रवि	15 मई	२ ज्ये.	पुष्य	मुहूर्त लग्न ४, अभिजित
वै. शु. १०, बुध	18 मई	५ ज्ये.	पू.फा.	लग्न कर्क, अभिजित
वै. शु. ११/१२,शु.	20 मई	७ ज्ये.	हस्त	लग्न कर्क, अभिजित
ज्ये. कृ. ७, चंद्र	30 मई	१७ ज्ये.	शत.	मुहूर्त प्रात: 6/17 तक
ज्ये. शु. २/३, गु.	9 जून	२७ ज्ये.	आर्द्रा	लग्न सिंह, अभिजित
ज्ये. शु. ५, रवि	12 जून	३० ज्ये.	आश्ले	लग्न सिंह, अभिजित
ज्ये. शु. १०,शु.	17 जून	४ आषा.	चित्रा	लग्न सिंह, अभिजित
ज्ये. शु. १३,चंद्र	20 जून	७ आषा.	अनु	ल. सिंह (मं. दान), अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
(सन् 2006 ई. में)				
मा. कृ. ७, रवि	22 जन.	९ माघ	चित्रा	लग्न ११, अभिजित
मा.शु. १/२, चंद्र	30 जन.	१७ माघ	धनि.	कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ३, बुध	1 फर.	१९ माघ	पू.भा.	मु. प्रात: 8/58 तक, बुध दान
माघ शु. ६, शुक्र	3 फर.	२१ माघ	रेव.	कुम्भ, अभिजित
मा. शु. १२,गुरू	9 फर.	२७ माघ	आर्द्रा	कुम्भ, मेष, अभिजित
फा. कृ. २, बुध	15 फर.	४ फागु.	पू.फा.	मेष, अभिजित
फा. शु. २, बुध	1 मार्च	१८ फागु.	पूभा.	मेष, अभिजित
फा. शु. ३, गु.	2 मार्च	१९ फागु.	रेव.	मेष, (चं. दा.), अभिजित
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	मेष, अभिजित

द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त सं. २०६२

विवाह उपरांत पिता के गृह में आकर दूसरी बार पुन: पति के गृह में जाने को द्विरागमन (मुकलावा) कहते हैं। विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। यद्यपि १६ दिन के भीतर भी द्विरागमन हो, तो भी अमावस, रिक्ता तिथि अथवा शूल, वार आदि अशुभ योगों का भी विचार कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—अर्थात् शुक्र जिस दिशा (पूर्व या पश्चिम) में उदित होता हो, उस दिशा में शुक्र सम्मुख तथा उससे दाहिनी ओर की दिशा दक्षिणस्थ मानी जाती है। मुकलावा के निम्न मुहूर्त विवाहोपरांत १६ दिन के पश्चात् ही विशेषत: ग्रहणीय होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण
वै. कृ. १२,गुरू	5 मई	२३ वैशा.	उ.भा.	लग्न वृष, अभिजित
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग.	लग्न वृष, अभिजित
वै.शु. ११/१२, शुक्र	20 मई	७ ज्ये.	हस्त	कर्क, अभिजित
ज्ये. कृ. ५, शुक्र	27 मई	१४ ज्ये.	उ.षा.	दुपै. 14/05 के उपरांत
ज्ये. कृ. ६, रवि	29 मई	१६ ज्ये.	धनि	मु प्रात: 8/32 तक, सूर्य का दान
ज्ये.कृ. १०, बुध	1 जून	१९ ज्ये.	उभा.	मिथुन, अभिजित
ज्ये.कृ. १२,शुक्र	3 जून	२१ ज्ये.	अश्वि.	मिथुन, अभिजित
ज्ये. शु. १३,चंद्र	20 जून	७ आषा.	अनु.	लग्न ५ (मं. दा.), अभिजित
मा. कृ. २, गु.	17 नवं.	२ मार्ग.	रोहि.	मु. प्रात: 10 बजे तक
मा. कृ. ३, शुक्र	18 नवं.	3 मार्ग.	मृग	कुम्भ (श. दा.), अभिजित
मा. कृ. ५, रवि	20 नवं.	५ मार्ग.	पुर्न.	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा.कृ. ५/६, चंद्र	21 नवं.	६ मार्ग.	पुष्य	लग्न धनु, कुंभ, अभिजित
मा.कृ. ११/१२, रवि	27 नवं.	१२ मार्ग.	चित्रा	लग्न धनु, कुम्भ, अभिजित
मा. कृ. १२,चंद्र	28 नवं.	१३ मार्ग.	चित्रा	लग्न धनु, कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ७, बुध	7 दिसं.	२२ मार्ग.	शत.	मुहूर्त दुपै. 12/16 उपरांत
मा. शु. १२, चंद्र	12 दिसं.	२७ मार्ग.	अश्वि.	मुहूर्त प्रात: 8/13 तक
(सन् 2006 ई. में)				
फा. कृ. ६, रवि	19 फर.	८ फागु.	स्वाती	मेष, अभिजित
फा.कृ. १०, गु.	23 फर.	१२ फागु.	मूला	मुहूर्त प्रात: 10/51 के बाद
फा. शु. २, बुध	1 मार्च	१८ फागु.	पूभा.	मेष, अभिजित
फा. शु. ३, गु.	2 मार्च	१९ फागु.	रेव.	मेष (चं. दा.), अभिजित
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	मेष, अभिजित

सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्ति स्थापना) मुहूर्त्त

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। प्राय: सात्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। उत्तरायण में मुहूर्त्तों के अतिरिक्त भगवान् विष्णु की मूर्त्ति स्थापना में वामन जयन्ती, मत्स्य जयंती, अक्षया तृतीया, श्री कृष्ण मन्दिर की प्रतिष्ठा हेतु कृष्ण जन्माष्टमी, मार्गशीर्ष मास भी विशेष प्रशस्त है।

इसी भान्ति **श्री गणेश प्रतिमा** की स्थापना में उभा., रेवती नक्षत्र, मंगलवार, गणेश चतुर्थी विशेषकर भाद्रपद, माघ, वैशाख, कृष्ण एवं शुक्ल चतुर्थी तिथि विशेषत: शुभ मानी जाती हैं।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त श्री परशुराम जयंती, अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ है। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य होता है।

श्री शिव मूर्त्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूला नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी, नवरात्रे विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्त्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं। आगे दिए गए मुहूर्त भगवान् विष्णु, राम, शिव-शक्ति माता, श्री गणेश हनुमान आदि देवों के लिए शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्त्ति स्थापना) मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ७, शनि	30 अप्रै.	१८ वैशा.	उ.षा.	दुपै. 14/13 के बाद, सूर्य, शनि
वै. कृ. ८, रवि	1 मई	१९ वैशा.	श्रव.	लग्न वृष, अभि. श्री दुर्गा
वै. कृ. १२, गु.	5 मई	२३ वैशा.	उ.भा.	वृष, अभि., श्रीविष्णु श्रीराम कृष्ण
वै. शु. २, मंग.	10 मई	२८ वैशा.	रोहि.	ल. २, अभि (श्रीराम, श्रीहनुमान)
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग.	ल. २, अभि., (श्री विष्णु, श्री राम, दुर्गा-शक्ति, कृष्ण-राधा के लिए विशेष)
वै. शु. ७, रवि	15 मई	२ ज्ये.	पुष्य	मु. प्रातः 8/12 तक (सूर्य, श्री हनुमान के लिए विशेष)
वै. शु. ११, शुक्र	20 मई	७ ज्ये.	हस्त	मु. प्रातः 6/59 के बाद, अभि. (सर्वदेव के लिए)
वै.शु. १३/१४, रवि	22 मई	९ ज्ये.	स्वा.	शिव-शक्ति, श्री हनुमान विशेष
ज्ये.कृ. ५, शुक्र	27 मई	१४ ज्ये.	उ.षा.	दुपै. 14/05 उप., (विष्णु व शेषनाग के लिए विशेष)
ज्ये.कृ. ५/६, शनि	28 मई	१५ ज्ये.	श्रव.	अभि., (शिव, शक्ति, कार्तिकेय)
ज्ये. कृ. ६, रवि	29 मई	१६ ज्ये.	धनि.	मुहूर्त प्रातः 8/32 तक (शिव, सूर्य कार्तिकेय)
ज्ये.कृ. १०, बुध	1 जून	१९ ज्ये.	उभा.	मिथुन, अभि., सर्वदेव
ज्ये.कृ. १२, शुक्र	3 जून	२१ ज्ये.	अश्वि	मि., अभि., श्री विष्णु लक्ष्मी
ज्ये. शु. ५, शनि	11 जून	२९ ज्ये.	पुष्य	प्रातः 11/09 के बाद, अभि. शिव, शनि
ज्ये.शु. १०, शनि	17 जून	४ आषा.	चित्रा	सिंह, अभि., सर्वदेव
ज्ये.शु. ११, शनि	18 जून	५ आषा.	स्वा.	प्रातः 8/10 तक, शिव, शनि
ज्ये. शु. १२, चंद्र	20 जून	७ आषा.	अनु.	सिंह (मं. दा.), अभि. सर्वदेव
भा. कृ. ४, मंग.	23 अग.	८ भादों.	रेवती	प्रातः 10/10 उप., श्री गणेश
मा. शु. ४, बुध	7 सितं.	२३ भाद्र.	चित्रा	ल. ८, अभि., श्री गणेश जी
मा. कृ. ३, शुक्र	18 नवं.	३ मार्ग.	मृग.	ल. कुंभ, अभि., गौरी, दुर्गा
मा.कृ. ५/६, चंद्र	21 नवं.	६ मार्ग.	पुष्य	कुंभ, अभि., गौरी, शक्ति
मा. कृ. ११, रवि	27 नवं.	१२ मार्ग.	हस्त	ल. धनु. अभि., शिव-शक्ति
मा. कृ. ११, रवि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	रेव.	मु. प्रातः 11/02 तक, कृष्ण-राधा
मा. शु. १२, चंद्र	12 दिसं.	२७ मार्ग.	अश्वि	मु. प्रातः 8/15 तक (विष्णु लक्ष्मी के लिए विशेष)
(सन् 2006 ई. में)				
मा. कृ. ३, बुध	18 जन.	५ माघ	पूफा.	श्री गणेश जी
मा.कृ. ७/८, रवि	22 जन.	९ माघ	चित्रा	ल. कुंभ, अभि. (शिव, सूर्य)
मा.शु. १/२, चंद्र	30 जन.	१७ माघ	धनि.	ल. कुंभ, अभि., सर्वदेव
मा. शु. ३, बुध	1 फर.	१९ माघ	पूभा.	मु. प्रातः 8/58 तक, गौरी सर्वदेव
मा. शु. ६, शुक्र	3 फर.	२१ माघ	रेव.	ल. कुंभ, अभि., शिव परिवार
मा. शु. ७, शनि	4 फर.	२२ माघ	अश्वि	ल. कुंभ, अभि., सूर्यादि देव
मा. शु. ११, बुध	8 फर.	२६ माघ	मृग.	कुंभ, मेष, अभि., सर्वदेव
मा. शु. १३, शुक्र	10 फर.	२८ माघ	पुर्न.	कुंभ, मेष, अभि., शिव परिवार
फा. कृ. ५, शनि	18 फर.	७ फागु.	चित्रा	मु. 10/44 के बाद, अभि., शिव परिवार
फा. कृ. ६, रवि	19 फर.	८ फागु.	स्वाती	मेष, अभि., सूर्यादि देव
फा.कृ. १२, शनि	25 फर.	१४ फागु.	उ.षा.	ल. मेष, अभि., श्री शिव, शनि
फा. शु. ३, गुरू	2 मार्च	१९ फागु.	रेव.	मेष (चं. दा.), अभि., श्री दुर्गा आदि शक्ति
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	ल. मेष, अभि., विष्णु, सूर्यादि

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है—

दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारंभादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त २०६२

(अन्न प्राशन मुहूर्त्त में भी ग्राह्यं)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें या ४१वें तथा **विपणि** में दिए गए शुभ मुहूर्त्तों में नामकरण संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार, सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यो में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के अनुसार अथवा जन्म-नक्षत्र के चरणाक्षर से प्रारम्भ होने वाले अक्षर से युक्त किसी महान् पुरूष, कुलदेवता, ईश्वर या देववाचक, मंगल/कल्याणार्थक तथा कानों को मधुर लगने वाले अक्षर वाला नाम रखना चाहिए। यदि जन्म नक्षत्र/राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो लग्न, लग्नेश या भाग्येश ग्रह से सम्बन्धित राशि वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिए। उस दिन किसी ब्राह्मण द्वारा स्वास्ती वाचन, पंचदेव एवं नवग्रह पूजनादि करवा कर **ब्राह्मण** का भोजन, वस्त्र, फल दक्षिणा आदि द्वारा सत्कार करना चाहिए।

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती।

शुभ लग्न—(इ) १, ४, ७, १०।

विशेष—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

संसद् में शपथ ग्रह के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

श्री मद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायण आदि प्रारम्भ मुहूर्त्त सम्वत् २०६२ वि.

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्री मद्भागवत्, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष **श्रेष्ठतर** माना गया है। इनमें भी श्री मद्भागवत् व श्री हरिवंश पुराण के लिए वैशाख, आषाढ़, श्रावण, **भाद्रपद,** कार्तिक एवं माघ मास तथा अष्टमी तिथि एवं भाद्रपद भी शुभ माने जाते हैं। श्री रामचरितमानस तथा देवी भागवत (श्री दुर्गा पाठ) के लिए चैत्र व आश्विन नवरात्रे, दक्षिणायन, प्रतिपदा, तृतीया तथा नवमी तिथि भी प्रशस्त मानी जाती है। श्री शिवमहापुराण के लिए श्रावण एवं माघ फाल्गुण आदि उत्तरायण मास शुभ माने गए हैं। संवत् २०६२ में श्रीमद्भागवत्, हरिवंश एवं रामायण आदि के पाठारम्भ हेतु विशेष मुहूर्त्त लिखे

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ६, शुक्र	29 अप्रै.	१७ वैशा.	पू.षा.	अभिजित, (आवश्यके)
वै. कृ. ८, रवि	1 मई	१९ वैशा.	श्रव.	ल. वृष, अभि., भगवान् कृष्ण
वै. कृ. ९, चंद्र	2 मई	२० वैशा.	धनि.	वृष, अभि. (रामायण)
वै. कृ. १२, गु.	5 मई	२३ वैशा.	उ.भा.	लग्न वृष, अभिजित
वै. शु. ३, बुध	11 मई	२९ वैशा.	मृग.	ल. वृष, अभि. (अक्षया ३)
वै. शु. ७, रवि	15 मई	२ ज्ये.	पुष्य	प्रातः 8/12 तक
वै. शु. ११, शुक्र	20 मई	७ ज्ये.	हस्त	मु. 6/59 के बाद, अभि.
वै. शु. ६, रवि	29 मई	१६ ज्ये.	धनि.	मु. प्रातः 8/32 तक
ज्ये. शु. १०, शुक्र	17 जून	४ आषा.	चित्रा	लग्न सिंह, अभिजित
ज्ये. शु. १३, चंद्र	20 जून	७ आषा.	अनु	लग्न सिंह, अभिजित
आ. शु. ७, बुध	13 जुला.	३० आषा.	हस्त	लग्न तुला, अभिजित
आ. शु. ११, चंद्र	18 जुला.	३ श्राव.	अनु.	मु. 9/13 के बाद, अभिजित
आ. शु. १५, गु.	21 जुला.	६ श्राव.	उ.षा.	प्रातः 8/54 तक
श्रा. शु. ७, शुक्र	12 अग.	२८ श्राव.	स्वा.	लग्न सिंह, अभिजित
श्रा. शु. १२/१३, बु	17 अग.	२ भाद्र.	उ.षा.	दुपै. 14/12 उप.
श्रा. शु. १५, शुक्र	19 अग.	४ भाद्र.	धनि.	अभिजित, लग्न वृश्चिक
भा. कृ. ८, शनि	27 अग.	१२ भाद्र.	रोहि.	अभिजित, वृश्चिक
भा. शु. ५, गु.	8 सितं.	२४ भाद्र.	स्वा.	मु. प्रातः 6/17 उप., अभि.
भा. शु. ११, बुध	14 सितं.	३० भाद्र.	उ.षा.	अभिजित्
मा. कृ. ३, शुक्र	18 नवं.	३ मार्ग.	मृग.	अभि., ११, श्री देवीमा विशेष
मा. कृ. ६, चंद्र	21 नवं.	६ मार्ग.	पुष्य	अभिजित, कुम्भ
मा. कृ. ११, रवि	27 नवं.	१२ मार्ग.	हस्त	धनु, अभिजित
मा. कृ. १२, चंद्र	28 नवं.	१३ मार्ग.	चित्रा	लग्न धनु, अभिजित
मा. शु. ३, रवि	4 दिसं.	१९ मार्ग.	पू.षा.	धनु, अभिजित
मा. शु. ५, चंद्र	5 दिसं.	२० मार्ग.	उ.षा.	मु. प्रातः 11/04 उप., अभि.
मा. शु. ८, गुरु	8 दिसं.	२३ मार्ग.	पू.भा.	दुपै. 15/09 उप.
मा. शु. ११, रवि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	रेव.	मु. 11/02 तक, भद्रा पूर्व
मा. शु. १२, चंद्र	12 दिसं.	२७ मार्ग.	अश्वि	मु. प्रातः 8/15 तक
माघ शु. १/२, चं.	30 जन.	३० मार्ग.	धनि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ३, बुध	1 फर.	१९ मार्ग.	पू.भा.	मु. प्रातः 8/58 तक
मा. शु. ६, शुक्र	3 फर.	२१ मार्ग.	रेवती	लग्न कुम्भ, अभिजित
मा. शु. ११, बुध	8 फर.	२६ मार्ग.	मृग.	लग्न कुम्भ, मेष, अभि.
मा. शु. १३, शुक्र	10 फर.	२८ मार्ग.	पुर्न	कुम्भ, मेष, अभिजित
फा. शु. २, बुध	1 मार्च	१८ फागु.	पू.भा.	लग्न मेष, अभिजित
फा. शु. ३, गुरु	2 मार्च	१९ फागु.	रेव.	मेष, अभिजित
फा. शु. ७, चंद्र	6 मार्च	२३ फागु.	रोहि.	लग्न अभिजित

बड़ा व्यापार अथवा कारखाना आरम्भ करने का मुहूर्त्त

हस्त, पुष्य, उत्तरा-तीनों, चित्रा-इन नक्षत्रों में, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि (कारखाना)—इन वारों में और २, ३, ५, ७, ११, १३—इन तिथियों में, गुरु-शुक्रादि उदय काल एवं द्विपुष्कर-त्रिपुष्करादि शुभ मुहूर्त्तों में बड़े-बड़े व्यापार सम्बन्धी कारोबार करना शुभ एवं वृद्धिकारक होता है।

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमिक्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्ण-पक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियाँ।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

प्रदोष व्रतम्

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनि प्रदोष व्रत** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम प्रदोष** ऋणमोचन के लिए, मनः शान्ति एवं सुरक्षा के लिए **सोम प्रदोष व्रत** तथा आरोग्य प्राप्ति एवं आयु वृद्धि के लिए **अर्क (रवि)** प्रदोष व्रत विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करके शिव पूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् "**भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने उग्रयोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः॥**" से प्रार्थना करके भोजन करें॥

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)

शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना लाल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में **माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य** एवं **सम्पूर्ण पूजन विधि,** उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षड्क्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

विवाहादि शुभ कार्यों में दोषपूर्ण एवं त्याज्य—मुहूर्त्त संवत् २०६२

नीचे वि. संवत् २०६२ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है।

निवेदक—पं. पन्ना लाल

ता. मास	वार	वि. नक्षत्र	दोष विवरण
25 अप्रै.	चंद्र	विशा	शुक्र बाल्यत्व
26 अप्रै.	मंग.	अनु.	शुक्र बाल्यत्व
27 अप्रै.	बुध	अनु.	नक्षत्रान्त
28 अप्रै.	गुरु	मूला	शनि का वेध
30 अप्रै.	शनि	श्रवण	लग्नऽभाव
1 मई	रवि	धनि.	भौम युति, लग्नऽभाव
6 मई	शुक्र	रेव	कृष्ण त्र्योदशी
17 मई	मंग.	मघा	लग्नऽभाव
18 मई	बुध	उ.फा.	राहु का वेध
19 मई	गुरु	उ.फा.	राहु का वेध
20 मई	शुक्र	हस्त	लग्नऽभाव
20 मई	शुक्र	चित्रा	केतु युति, भौम वेध
21 मई	शनि	चित्रा	केतु युति, भौम वेध
22 मई	रवि	स्वा.	लग्नऽभाव
24 मई	मंग.	अनु.	लग्नऽभाव
25 मई	बुध	मूला	शनि वेध, मृत्युबाण दोष
26 मई	गुरु	मूला	शनि का वेध
28 मई	शनि	उ.षा.	नक्षत्रान्त
1 जून	बुध	रेव	राहु की युति
2 जून	गुरु	रेव	राहु की युति
2 जून	गुरु	अश्वि	लग्नऽभाव
7 जून	मंग.	मृग.	भुजंगपात, क्षीण चंद्र
8 जून	बुध	मृग.	सूर्य युति, भुजंगपात
13 जून	चंद्र	मघा	मृत्युबाण, मासान्त दोष
14 जून	मंग.	उ.फा.	संक्रान्ति दोष
15 जून	बुध	उ.फा.	राहु का वेध
15 जून	बुध	हस्त	मंगल का वेध
16 जून	गुरु	हस्त	मंगल का वेध
16 जून	गुरु	चित्रा	मृत्युबाण दोष
17 जून	शुक्र	चित्रा	केतु की युति
21 जून	मंग.	मूला	शनि का वेध
22 जून	बुध	मूला	शनि का वेध
24 जून	शुक्र	उ.षा.	भद्रा दोष, लग्नऽभाव
25 जून	शनि	श्रवण	वैधृति योग, लग्नऽभाव
26 जून	रवि	धनि.	लग्नऽभाव
29 जून	बुध	उ.भा.	नक्षत्रान्त
29 जून	बुध	रेव	मंगल, राहु की युति
30 जून	गुरु	रेव	मंगल, राहु युति, नक्षत्रान्त
1 जुला	शुक्र	अश्वि	नक्षत्रान्त, लग्नऽभाव

ता. मास	वार	वि. नक्षत्र	दोष विवरण
3 जुला	रवि	रोहि.	शूल योग, भुजंगपात
12 जुला	मंग.	उ.फा.	मंगल, राहु का वेध
13 जुला	बुध	उ.फा.	मंगल, राहु का वेध
14 जुला	गुरु	हस्त	लग्नऽभाव, भद्रा दोष
14 जुला	गुरु	चित्रा	केतु युति, मृत्युबाण दोष (दुपै. 12/05 से रात्रि 12/55 तक)
15 जुला	शुक्र	वि./स्वा.	मासान्त
19 जुला	मंग.	मूला	26/25 स्टैं. टा. तक सूर्य वेध
20 जुला	बुध	मूला	नक्षत्रान्त
26 जुला	मंग.	उ.भा.	लग्नऽभाव
26 जुला	मंग.	रेव	राहु की युति
27 जुला	बुध	रेव	राहु की युति
27 जुला	बुध	अश्वि	मंगल की युति
28 जुला	गुरु	अश्वि	मंगल की युति
7 अग.	रवि	मघा	लग्नऽभाव
8 अग.	चंद्र	उ.फा.	राहु का वेध
9 अग.	मंग.	उ.फा.	राहु वेध, भद्रा दोष
9 अग.	मंग.	हस्त	केतु की युति
10 अग.	बुध	हस्त	केतु की युति
13 अग.	शनि	अनु.	मंगल का वेध
14 अग.	रवि	अनु.	भौम वेध, मृत्युबाण
15 अग.	चंद्र	मूला	मासान्त
18 अग.	गुरु	उ.षा.	मृत्युबाण दोष
18 अग.	गुरु	श्रवण	सूर्य का वेध
19 अग.	शुक्र	श्रवण	नक्षत्रान्त
21 अग.	रवि	उ.भा.	केतु का वेध
22 अग.	चंद्र	उ.भा.	केतु का वेध
22 अग.	चंद्र	रेव	राहु की युति
23 अग.	मंग	रेव	राहु की युति
4 सितं.	रवि	उ.फा.	राहु का वेध
5 सितं.	चंद्र	उ.फा.	राहु वेध, मृत्युबाण
5 सितं.	चंद्र	हस्त	मृत्युबाण
9 सितं.	शुक्र	अनु.	मंगल का वेध
10 सितं.	शनि	अनु.	मंगल का वेध
11 सितं.	रवि	मूला	लग्नऽभाव
14 सितं.	बुध	श्रवण	मृत्युबाण दोष
15 सितं.	गुरु	श्रवण	मासान्त
16 सितं.	शुक्र	धनि	संक्रान्ति दोष

ता. मास	वार	वि. नक्षत्र	दोष विवरण
18 सितं. से 3 अक्तू. तक श्राद्ध रहेंगे			
गुरु वार्धक्य—3 से 5 अक्तू. गुरु अस्त—6 अक्तू. से 2 नवं.			
2 से 15 नवं.—13 दिन का पक्ष			
25 नवं.	शुक्र	उ.फा.	राहु का वेध
26 नवं.	शनि	उ.फा.	राहु वेध, मृत्युबाण
3 दिसं.	शनि	मूला	लग्नऽभाव, भुजंगपात
5 दिसं.	चंद्र	उ.षा.	मृत्युबाण दोष 17/20 तक
5 दिसं.	चंद्र	श्रवण	लग्नऽभाव
6 दिसं.	मंग.	धनि.	शनि का वेध
7 दिसं.	बुध	धनि.	शनि का वेध
9 दिसं.	शुक्र	उ.भा.	राहु युति, केतु वेध
10 दिसं.	शनि	उ.भा.	राहु युति, केतु वेध
11 दिसं.	रवि	रेव	नक्षत्रान्त
12 दिसं.	चंद्र	अश्वि	नक्षत्रान्त, परिघ योग
14 दिसं.	बुध	रोहि.	मासान्त
15 दिसं.	गुरु	रोहि.	पौष संक्रान्ति
15 दिसं. से 13 जन. (06) तक पौष मास			
(सन् 2006 ई.)			
19 जन.	गुरु	उ.फा.	शुक्र बाल्यत्व दोष
20 जन.	शुक्र	उ.फा.	शुक्र बाल्यत्व दोष
20 जन.	शनि	हस्त	राहु वेध, केतु युति
21 जन.	शनि	हस्त	राहु वेध, केतु युति, भद्रा दोष
23 जन.	चंद्र	स्वा.	शूल योग, भुजंगपात
24 जन.	मंग.	अनु.	मंगल वेध, मृत्युबाण
27 जन.	शुक्र	मूला	कृष्ण त्रयोदशी
30 जन.	चंद्र	श्रव.	नक्षत्रान्त
1 फर.	बुध	उ.भा.	राहु युति, केतु वेध
2 फर.	गुरु	उ.भा.	राहु युति, केतु वेध, मृत्युबाण
7 फर.	मंग.	मृग.	लग्नऽभाव
14 फर.	मंग.	मघा	मृत्युबाण दोष
16 फर.	गुरु	उ.फा.	भद्रा दोष, लग्नऽभाव
16 फर.	गुरु	हस्त	केतु युति, राहु का वेध

ता. मास	वार	वि. नक्षत्र	दोष विवरण
17 फर.	शुक्र	हस्त	केतु युति, राहु वेध, भुजगपात
19 फर.	रवि	स्वा.	रा. ल.सूर्य का वेध
22 फर.	बुध	मूला	मृत्युबाण दोष
24 फर.	शुक्र	उ.षा.	लग्नऽभाव
1 मार्च	बुध	उ.भा.	राहु युति, केतु वेध
2 मार्च	गुरु	उ.भा.	राहु युति, केतु वेध
3 मार्च	शुक्र	अश्वि	लग्नऽभाव, मृत्युबाण
5 मार्च	शनि	रोहि.	लग्नऽभाव
6 मार्च	रवि	मृग.	तिथि दोष
7 मार्च	चंद्र	मृग.	होलाष्टक प्रारम्भ

अभिजित मुहूर्त्त

श्री नारदानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते है। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है—

दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्ते हि अभिजित् प्रभुः।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। 'नारद पुराण' के अनुसार अभिजित् के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को अभिजित् काल कहा जाता है।

ध्यान रहे, बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त नहीं ग्रहण करना चाहिए॥

उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिंट बनते है। इनको उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिंट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिंट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारंभ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिंट = १२ घं. ४० मिंट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, **चन्द्रमा** को मन, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न** को **आत्मा** माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा **सूर्य**, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न **हों**, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, **गुरु**, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा **सप्तम** स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए! **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

× × | चंद्र | शनि | ×
शुक्र | विवाह सभी पाप ग्रह | ×
राहु | मंगल
× × | सभी ग्रह [चं.-गु.] (परिहार) | ×
लग्नेश शुक्र, चंद्र | चं. मं. लग्नेश शुभ ग्रह | ×

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य ३, ६ और ११वें **मंगल**, तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं—

लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्–

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी**, **केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष—लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे–बृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तण्ड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे–

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ **मु. चिं. पीयूषधारा**

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु**, **शुक्र** एवं **बुध** एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है।**—ज्योतिनिबन्ध**

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता। —**मु० गणपति**

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां पर सम्बन्धित देवता, ग्रहादि का दान व पूजा का उल्लेख कर दिया गया है।

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु अत्याधिक परिस्थितिवश भूलोक की भद्रा, अथवा भद्रा मुख, कण्ठ एवं हृदयगत भद्रा को छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

भविष्य पुराणानुसार—भद्रा की **पाँच घड़ी** मुख में, दो घड़ी **कण्ठ में**, ११ घड़ी **हृदय में**, चार घड़ी नाभि में, पाँच घड़ी कटि में और तीन घड़ी पुच्छ में स्थित रहती है। जब भद्रा मुख में रहती है, तब कार्य का नाश होता है, कण्ठ में धन का नाश, हृदय में प्राणों का भय, नाभि में कलह, कटि में अर्थभंश होता है, पर पुच्छ में निश्चित रूप में विजय एवं कार्य सिद्धि हो जाती है—

मुखेतु घटिकाः पंच द्वे कण्ठे तु सदा स्थिते। हृदि चैकादश प्रोक्ताश्चतस्रो नाभिमण्डले॥
कटयां पंचैव विज्ञेयातिस्त्राः पुच्छे जयावहाः। मुखे कार्य विनाशाय ग्रीवायां धननाशिनी॥

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा दोष निवारण के उपाय—भविष्य पुराणानुसार जिस दिन भद्रा हो और परमावश्यक परिस्थितिवश कोई शुभ कार्य करना ही पड़े तो उस दिन उपवास करना चाहिए तथा एक भुक्त रहना चाहिए। प्रातः स्नानादि के उपरान्त देव, पितरि आदि तर्पण के बाद कुशाओं की भद्रा की मूर्त्ति बनाए और पुष्प, धूप, दीप, गन्ध, नैवेद्य आदि से उसकी पूजा करें, फिर भद्रा के बारह नामों से हवन में १०८ आहुतियाँ देने के पश्चात् तिल और खीरादि सहित ब्राह्मण को भोजन कराकर स्वयं भी मौन होकर तिल मिश्रित कृशरान्न का अल्प भोजन करना चाहिए। फिर पूजन के अन्त में इस प्रकार मंत्र द्वारा प्रार्थना करते हुए कल्पित भद्राकुश को लोहे की पतरी पर स्थापित कर काले वस्त्र का टुकड़ा, पुष्प, गन्ध आदि से पूजित कर प्रार्थना करें—

छाया सूर्य सुते देवि विष्टिरिष्टार्थदायिनी। पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्रप्रदा भव॥

फिर तिल, तैल, सवत्सा काली गाय, काला कम्बल और यथाशक्ति दक्षिणा के साथ ब्राह्मण का सत्कार करे। भद्रा मूर्त्ति को बहते पानी में विसर्जित कर देना चाहिए। इस प्रकार विधिपूर्वक जो भी व्यक्ति भद्रा व्रत और व्रत का उद्यापन करता है, उसके किसी भी कार्य में विघ्न नहीं पड़ते। भद्रा व्रत करने वाले व्यक्ति को प्रेय, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा ग्रह आदि कष्ट नहीं देते।

भद्रा के बारह नाम—**(१) धान्या, (२) दधि मुखी, (३) भद्रा, (४) महामारी, (५) खरानना, (६) कालरात्रि, (७) महारुद्रा, (८) विष्टि, (९) कुलपुत्रिका, (१०) भैरवी, (११) महाकाली, (१२) असुरक्षयकरी॥**

उपरोक्त विधि से १०८ बार आहुतियां देने के अतिरिक्त, जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर भद्रा के १२ नामों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता है, उसे किसी व्याधि का भय नहीं होता। रोगी रोगमुक्त हो जाता है। सभी ग्रह अनुकूल फल देते हैं। उसके कार्यों में विघ्न नहीं होते। यथा—

द्वादशैव तु नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। न च व्याधिर्भवेत् तस्य रोगी रोगात् प्रमुच्यते।
ग्रहाः सर्वेऽनुकूलः स्युर्न च विघ्नादि जायते। रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत्॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) **पीयूषधारानुसार**—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥
—**पीयूषधारा**

(iii) ''दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि।
तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥''

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक** (भू

लोक) में–अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख) रहती है, अशुभफल **दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है–

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

मर्त्यलोकस्थ (४, ५, ११, १२) राशियों में स्थित **चन्द्रकालीन** भद्रा दिन में उत्तरार्ध वाली रात्रि में शुभ होगी।

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से,** दिन की **भद्रा सर्पिणी,** रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **बृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्यान्ह के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल–जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त, अष्टम, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्व कार्येषु शस्ता॥ –मु० चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिनिर्वन्धानुसार**–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का **समय गोधूलि काल है।**

(ii) मु० गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षात्तु सप्तमम्॥ –नारद

कार्य-सिद्धि के लिए मुहूर्त्त में श्रद्धाभाव आवश्यक

आदि काल से ही प्रत्येक मनुष्य बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। मनुष्य के क्रिया–कलापों को सुव्यवस्थित रूप देने के लिए तथा उसकी मनस्चेष्टाओं को सफलता प्रदान के लिए हमारे मनीषियों ने मुहूर्त शास्त्र का प्रणयन किया था। तिथि, वार, नक्षत्रादि से जनित मुहूर्त विद्या भी भारतीय ज्योतिष एवं काल गणना का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है। किसी भी धार्मिक एवं शुभ कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसके मुहूर्त सम्बन्धी जानकारी आवश्यक समझी जाती थी। मनुष्य मात्र की कल्याण भावना से प्रेरित होकर ही भारतीय आचार्यों ने मुहूर्त शास्त्र का सूत्रपात किया था। गृहस्थों के गर्भाधान, जन्म–दिन, मुण्डन, विवाह, मृतक आदि संस्कार तथा संन्यासियों के द्वारा किए गए यज्ञ, तपादि अनुष्ठान–सभी में मुहूर्तों का सम्बन्ध अवश्य होता था। शुभ मुहूर्तों के बिना गृहस्थ एवं श्रुति–स्मृति आदि शास्त्र परायण लोगों के कार्य सिद्ध हुए नहीं माने जाते थे–

वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिः शास्त्रमकलमषम्। विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्माणि न सिद्धयान्ति॥

प्राचीन धर्म परायण लोगों को **मुहूर्त शास्त्र** में पूर्ण श्रद्धा होने के कारण ही उनके द्वारा शुभ मुहूर्तों में आयोजित विवाह, पुत्रयेष्ठि आदि यज्ञ–अनुष्ठान आदि सफल होते थे। आजकल सर्वत्र देखने को आता है कि लोग बहुत से धार्मिक एवं अन्य काम्य कर्मों का प्रारम्भ सुनिश्चित मुहूर्त पर नहीं करते। **उदाहरण स्वरूप विवाह–मुहूर्त** ही लीजिए। कुछ लोग लड़के–लड़की की जन्मपत्रियों एवं नक्षत्रों का मिलान तो भली प्रकार करवा लेते हैं, परन्तु विवाह आदि शुभ कार्य सुनिश्चित मुहूर्त पर नहीं करते। फलस्वरूप दुर्भाग्यवश कई बार जन्मपत्री मिलान के बावजूद विवाह सम्बन्ध असफल होते देखे गए। तलाक तक की भी नौबत आ जाती है। इसका दोषारोपण टेवे/जन्मपत्री मिलान करने वाले पण्डित जी को भी सहन करना पड़ता है। उन्हें यह कहते सुना जा सकता है कि हमने तो फलां–फलां पण्डित जी से कुण्डली मिलान कराया था, जो गलत हुआ। वास्तव में आजकल की मनोवृत्ति अनुसार प्रत्येक मनुष्य अपने दुख का कारण दूसरों में आरोपित करना चाहता है, अपने निजी व्यवहार को नहीं देखना चाहता। विवाह, गृहप्रवेश, मुण्डन आदि शुभ मुहूर्त तभी सार्थक एवं फलीभूत हो सकते हैं, जबकि मुहूर्त ग्रहण करने वाले व्यक्ति को उनके प्रति पूरी श्रद्धा एवं विश्वास भी हो। क्योंकि बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन आदि कर्म, दिया हुआ दान, किया हुआ तप और जो भी किया हुआ कर्म है, वह असत् रूप है, ऐसा कर्म न तो इस लोक में और न परलोक में ही लाभप्रद एवं कल्याणकारी होता है–

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असत् इति उच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्यं नो दूह ॥ श्री मद्भगवत्गीता अध्याय १७।२८।

विवाह आदि शुभ कार्यों को सुनिश्चित एवं निर्धारित लग्न में करने के प्रयास करने चाहिएँ–

लग्नं कोटि गुणं विद्याद् ग्रहवीर्यं समन्वितम्।
तस्मात्सर्वेषु कार्येषु लग्न वीर्यं विलोकयेत्॥

इसी कारण लग्न को सभी मुहूर्तों की आत्मा कहा गया है–

तिथिः शरीरं मन इन्दुर्वीर्य विलग्नमात्माऽवयवास्तु माद्याः॥ ज्योतिर्निबंध

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार—

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **"आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्द्धमनुः)**। **दो सहोदर** (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गंधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे—

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र—जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है—

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है—

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है—

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

वर—वरण एवं सगाई मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबित सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अंगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह पद्धति'** का अवलोकन करें।

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों **वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों** में, रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त—

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाह संस्कार में **कुछ मुहूर्त्त ग्रन्थों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़** (आ. शुक्ला दशमी तक) **मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन** मासों में **विवाह प्रशस्त** कहे हैं। परन्तु कुछ आचार्यों ने **चैत्र व पौष** इन दो सौर मासों को त्याग कर शेष १० मासों को **विवाहादि** शुभ कार्यों को प्रशस्त माना है। इसी कारण **पंजाब, दिल्ली, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर** आदि प्रदेशों में अति प्राचीन काल से **श्रावण, भादों, आश्विन** मासों में भी विवाह की प्रथा चली आती है। कुछ **पर्वतीय प्रदेशों** में कार्तिक महीने भी विवाह होते हैं। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में, रविवार, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र शुभ वारों में, मंगल व शनिवार मध्यम कहे हैं। रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, स्वा., अनु., मूला, रेव तथा कात्यायनोक्त अश्वि., चित्रा, श्रव., धनि., सहित १५ नक्षत्रों में, वर का सूर्य व चन्द्रमा का बल देखकर विषम वर्षों में तथा कन्या का चन्द्र व गुरु बल देखकर सम वर्षों में विवाह करना शुभ माना गया है। कन्या की आयु यदि १६ वर्ष से अधिक हो, तो **गुरु का बल** देखना आवश्यक नहीं **(वसिष्ठः)**

लता दोष

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः
१२	७	३	२२	६	२४	८	९
धन हानि	अशुभ	मृत्यु	अशुभ	बंधु-नाश	कार्य-नाश	कुल-क्षय	मरण

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लता एवं पूर्ण चन्द्र के दिन नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७वां हो तो चन्द्रमा की लता जाने।

(पात-दोष कुरु, जांगल, कलिंग बंग और मगध में अतिनिन्दित है।)

अश्वि	भर	कृति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुर्न	विशा	अनु.	ज्येष्ठा	उषा	श्रव	धनि	शत	पूभा
मघा	हस्त	स्वा	मूला	मघा	रोह	रोहि	उफा	उषा	मृग	उषा	स्वा.	मृग	रोहि	उफा
अनु	उषा	उफा	००	हस्त	मृग	उषा	उषा	००	मघा	अनु.	००	स्वा.	हस्त	हस्त
रेव	उभा	००	००	मृग	उफा	००	००	००	मूला	००	००	मूला	उषा	अनु
००	००	००	००	००	अनु.	००	००	००	रेव	००	००	रेव	उभा	००

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है, हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, शूल—इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो भी पात दोष लगता है।

युति-दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ व पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चंद्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। क्रूर ग्रहों की युति विशेष करके वर्जित है। यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

वेध दोष

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	उषा	श्रव	रेव	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा

ऊपर के नक्षत्रों में से विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह क्रूर ग्रहों के वेध विशेषतया वर्जित माना गया है।

विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	ज्ये.	धनि	पूभा	उभा	अश्वि	कृति	मृग	पुन	उफा	हस्त

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जामित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जामित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिंद्य है।

बुध पञ्चक दोष

रोगपं	अग्निपं	राजपं	चौरपंचक	मृत्युपं	वाण
८।१७ २६	२।११ २०।२९	४ १३।२२	६।१५ २४	१।१० १९।२८	सूर्यांश
व्रते रवौ रात्रौ	गृहकार्ये भौमे दिवा	सेवाया शनौ दिवां	यातंरा भौमे रात्रौ	विवाह बुधे संध्याया	कार्येषु वारे समये

एकार्गल दोष

वि.	अति	शू	गं	व्य	व	वै	यो

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन विरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकार्गल दोष होता है। यह काश्मीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्ति साम्य दोष

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	सूर्य	चन्द्र
सिंह	मकर	धन	वृश्चि.	मीन	कुम्भ	चन्द्र	सूर्य

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो क्रान्ति-साम्य दोष हो जाने से विवाह में सर्वदा वर्जित है।

*वैशा., आषा., भाद्र., कार्ति., पौष., फा. मासों में शुक्ल पक्षीय तिथियां तथा ज्ये., श्रा., अश्वि., मार्ग व माघ में कृ. पक्षीय तिथियां ही वर्जित है।

दग्धा तिथि दोष

वैशा	ज्येष्ठ	आषाढ़	मार्ग	कार्ति	पौष	मास
श्रावण	फाल्गुन	आश्विन	भाद्र	माघ	चैत्र	मास
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

इन २ मासों में से २ तिथियां दग्ध होती है सो विवाह में वर्जित कहीं हैं, मध्य देश में त्याज्य है। कुछ विद्वानों अनुसार*

लत्तादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैनादि) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर इत्यादि)। एकार्गले व काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरु वाल्हिकेषु (आगरा आदि) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम्॥ सौराष्ट्र (कठियावाड़) शाल्वेः लताभं त्यजेत् विद्धकिल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे तिथयो मध्यदेशें विवर्जितः। युतिपरिहार-स्वर्क्षस्थः स्वोच्चगश्चंद्रो पित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो वली केन्द्रगतो विधुः। लत्तापांप उपग्रह परिहारः-वनसंख्यं चरणे खेट स्तत्संख्यं चरणं त्यजेत्। लत्तोपग्रहदानेषु त्याज्या नैवाऽघ्रय परे॥ परिहार-लत्तोपग्रहजामित्रयांतैकार्गलकर्त्तरी। एते दोषा विंनश्यंति लग्नेऽर्के दुर्बलान्विते॥

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्ण-पक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियां।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वयं करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, स्वास्थ्य धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं—

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां—१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल व बुध वारों में** मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**—यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**—रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवण:

लग्न—१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३)(क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त—यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां—२, ७, १२

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें दिन** कर लेते हैं।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.) शुभ वार = च., बु., गु., शु.

नक्षत्र—अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेघा-जनन संस्कार**—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः **"ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।"** तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **स्तनपान का मुहूर्त्त**—जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र—रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **षष्ठी पूजन**—जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन** रात्रि में **षष्ठी पूजन, कात्यायनी देवी'** का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन

करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

प्रसूता स्नान मुहूर्त—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरु, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

नामकरण संस्कार—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

नामकरण—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्विं, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मास में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

झूला आरोहन मुहूर्त—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

निष्क्रमण मुहूर्त—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावें। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

भूम्युपवेशन-मुहूर्त—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त—

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

जीविका परीक्षा—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

अन्न-प्राशन का मुहूर्त—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तशलाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞ **कर्ण वेध का मुहूर्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु. वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बालक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की शलाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞ **कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेजी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

☞ मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वाह्न काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में —वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयतीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ वर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

☞ **क्षौर (हजामत) कर्म मुहूर्त**—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हजामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुनः ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि जमीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १०, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में एवं चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (२१ दिसं. से २० जून तक) ५वें ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा—तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (२० जून तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३ (शुक्ल) तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, वीर, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, वीर, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव-रेव।
स्कूटर, कारादि सवारी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में।	अश्वि, उत्तरा-३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, पूर्वा-३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)ष १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भादर, माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	रोह, मृग, जुन, पुष्य, उत्तरी, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (१,५,७,९,१०,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्ट।
नए घर में प्रवेश	१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, चंद्र, बुध, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	चन्द्र; बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आ, श्रा, भा., आश्वि, मार्ग, माघ, फागु.।	अश्वि, कृति, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मू, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१ (कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूला, रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, माघ व फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूला, रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१ (कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूला, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूला, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१ (कृ) २,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३ (शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ), २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज़, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्टस Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्र, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त

मास—वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न—शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३—इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.—इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को पान और घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभर्तिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष—ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'—यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'—यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार** और **शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी और कर्म न करावें।

तैलाभ्यंग—अर्थात् तैल मालिश करना

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है।

निषिद्ध वारों में तैल लगाना हो, तो रविवार को पुष्प, गुरुवार को दूर्वा, मंगल को मिट्टी, और शुक्रवार को गोबर तेल में डालकर लगाने से दोष नहीं होता। गन्धयुक्त (सुगन्धित) तेल एवं प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता—**(नित्यं—अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥)**

फलित ज्योतिष की दुर्लभ पुस्तकें

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रात: ७/३० से प्रात: ९ बजे तक
मंगलवार—अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार—दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार—प्रात: १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार—प्रात: ९/०० से प्रात: १०/३० बजे तक
रविवार—सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

स्त्री जातक विचार

- यदि कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तमेश ग्रह के साथ शनि स्थित हो, तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है।
- यदि सूर्य, मंगल, बुध लग्न में हो और गुरु द्वादश भाव में स्थित हों, तो भी उस कन्या का विवाह दीर्घकाल में ही होता है।
- जिस स्त्री के जन्म काल में सप्तम भाव में शुभ-अशुभ—दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाहों के योग बनते हैं।
- यदि किसी स्त्री के सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा अन्य कोई पाप ग्रह ७वें भाव में स्थित हो, तो ऐसी स्त्री को वैवाहिक—सुख कम मिलता है।
- यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युति हों, तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।
- आठवें भाव में बुध गया हो ऐसी स्त्री काक—बन्ध्या होती है अर्थात् एक बार सन्तान होकर पुन: सन्तान होने में बाधा होती है।

विष कन्या योग

- शनिवार, आश्लेषा नक्षत्र और द्वितीया तिथि—में तीनों जिस दिन मिलें उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती हैं।
- मंगलवार, विशाखा नक्षत्र और द्वादशी तिथि—ये तीनों जिस दिन मिलें, उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती हैं।
- यदि पंचम भाव में धन अथवा मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, तो ऐसे योग वाली स्त्री को उपाय से सन्तान होती है।

माला योग

- यदि कुं. में बुध, गुरु और शुक्र ४, ७, १०वें स्थानों में स्थित हों, और शेष ग्रह इनमें भिन्न भावों में पड़ें हों, तो माला योग होता है। इस योग के होने से जातक धनवान् वस्त्राभूषणों से युक्त, एक से अधिक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला, एवं उच्च अधिकारी होता है। चुनाव, कम्पीटीशन आदि में प्राय: सफल रहता है।

शकट योग

- जन्म कुण्डली में यदि लग्न और सप्तम भाव में समस्त ग्रह पड़े हों तो शकट योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति स्वार्थी, चतुर, रोगी, दुष्ट, अल्प-विद्या, ड्राईवरी एवं संचालनादि कार्यों में सफल होता है। धन की उसे प्राय: कमी रहती है। बन्धुओं का सुख भी नहीं होता।

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

ग्रह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं—

ग्रह	शुष्कादि	तत्त्व	कद
सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल ग्रह	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी	मध्यम
गुरु	जलीय	आकाश या तेज़	मध्यम या ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल तत्त्व	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु तत्त्व	दीर्घ
राहु	शुष्क	वायु	दीर्घ
केतु	शुष्क	वायु	मध्यम

राशि तत्त्व

राशि	तत्त्व	कद
मेष	अग्नि	ह्रस्व
वृष	पृथ्वी	ह्रस्व
मिथुन	वायु	मध्यम
कर्क	जल	मध्यम
सिंह	अग्नि	दीर्घ
कन्या	पृथ्वी	दीर्घ
तुला	वायु	दीर्घ
वृश्चिक	जल	दीर्घ
धन	अग्नि	मध्यम
मकर	पृथ्वी	मध्यम
कुम्भ	वायु	ह्रस्व
मीन	जल	ह्रस्व

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व की राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भान्ति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

राशियों द्वारा वर्ण ज्ञान

मेष लग्न में लाल मिश्रित, **वृष** में पीला मिश्रित श्वेत, **मिथुन** में विविध मिश्रित श्वेत, **कर्क** में नीला मिश्रित सफेद, **सिंह** में गन्दमी, **कन्या** में श्याम मिश्रित सफेद, **तुला** में तालिका युक्त सफेद, **वृश्चिक** में लालिमा युक्त सफेद, **धनु** में पीत वर्ण युक्त सफेद, **मकर** में चितकबरा सफेद, **कुम्भ** में आकाश सदृश नीला, **मीन** में पीत युक्त गौर वर्ण। इस भान्ति लग्न राशि और लग्नेश के स्वरूप के अनुसार जातक के रूप-रंग का निश्चय करना चाहिए। इसके अतिरिक्त लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों का भी प्रभाव रहता है।

ग्रहों के अनुसार वर्ण (रूप-रंग) विचार

सूर्य से रक्त-श्याम (गन्दमी) **चन्द्र** से गौरवर्ण, **मंगल** से लाल वर्ण, **बुध** से दूर्वादल के समान श्यामल, **गुरु** सुवर्ण (बादामी), **शुक्र** से (नीलिमा युक्त) सफेद, **शनि** से श्यामवर्ण, **राहु** से कृष्ण एवं **केतु** से **धूम्र वर्ण** जानना चाहिए। **बुध-शुक्र** एक साथ हों तो गौरववर्ण न होते हुए भी सुन्दर आकृति होती है। **लग्न** एवं लग्नेश पर पाप ग्रह की दृष्टि होने से जातक के सौन्दर्य में कमी आती है।

शरीर के अंगों पर व्रण, तिलादि का विचार—जिस अंग का विचार करना हो, उस अंग की राशि जिस प्रकार की ह्रस्व या दीर्घ हो तथा उस राशि में रहने वाला जैसा ग्रह होगा, उस अंग की वैसी ही स्थिति (ह्रस्व या दीर्घ) होगी।

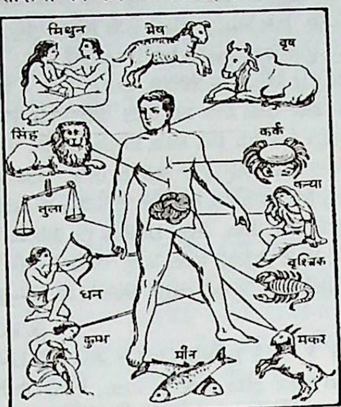
द्वादश भावों में अंग ज्ञान—ज्योतिष शास्त्र में **लग्न भाव** में स्थित राशि से सिर, **दूसरे भाव** की राशि को मुख, **तीसरे भाव** से वक्षस्थल और फेफड़े, **चौथे भाव** की राशि से हृदय और छाती, **पंचम** स्थान से कुक्षि और पीठ, **छठे भाव** से कमर और आंते, **सप्तम** स्थान से नाभि और गुप्तांग के बीच का स्थान, **अष्टम** स्थान से गुप्तांग, **नवम्** भाव से ऊरू और जंघा, **दशम्** स्थान से टेहुना, **एकादश** स्थान की राशि से पिण्डलियाँ, **द्वादश** स्थान से पाँव का विचार करना चाहिए।

राशि के अनुसार अंगों का विचार—(१) **मेष राशि** से मुख, मस्तिष्क। (२) **वृष** से नेत्र, जिह्वा, कण्ठ, भुजाएँ। (३) **मिथुन** राशि से हाथ, कन्धे, हृदय। (४) **कर्क** से पेट, (५) **सिंह** राशि से कमर, पीठ, मेरूदण्ड। (६) **कन्या** राशि से नाभि, पेट। (७) **तुला** राशि से नाभि के नीचे, गुर्दे, मूत्राश्य। (८) **वृश्चिक** से मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय, गुदा आदि। (9) **धनु** से जंघाएँ, नितम्ब। (10) **मकर** राशि से दोनों घुटने। (11) **कुम्भ** से दोनों पिंडलियां। (12) **मीन** राशि से दोनों पाँवों का विचार किया जाता है।

काल पुरुष में राशि ज्ञान

काल पुरुष एक काल्पनिक विराट् समय को पुरुष माना गया है, जिसमें द्वादश राशियों की कल्पना की गई है।

कालपुरुष के शिर में मेष राशि मुख में वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय में कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या इत्यादि काल पुरुष



के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्मे वह शिर जानना अन्य सब राशि क्रम से अंग होते हैं।

ग्रहों के अनुसार अंगों पर चिन्ह विचार

जिस भाव एवं राशि पर पाप ग्रह हों, उसमें व्रण (घाव) आदि और जिसमें शुभ ग्रह हों, उस स्थान पर चिन्ह कहना चाहिए। यदि ग्रह अपनी राशि या अपने नवांश में हो, तो, व्रण या चिन्ह जन्म (गर्भ) से ही समझना चाहिए। अन्यथा ग्रह की अपनी दशा के समय व्रण या चिन्ह प्रकट होते हैं।

यदि किसी जातक के जन्म लग्न में मंगल और सप्तम भाव में गुरु या शुक्र हो, तो उसके सिर में व्रण (दाग) होता है।

जन्म लग्न में **मंगल-शुक्र** और चन्द्रमा हों तो जातक को जन्म से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चोट लगने से घाव होता है। जन्म लग्न में शुक्र और आठवें स्थान में राहु हो, तो मस्तक या बाएँ कान में चिन्ह होगा। यदि लग्न में गुरु, सप्तम में राहु और आठवें स्थान में पाप ग्रह हों, तो जातक के बाएँ हाथ में चिन्ह होता है अथवा लग्न में गुरु या शुक्र हो और अष्टम में पाप ग्रह हों, तो भी बाएँ हाथ पर चिन्ह होगा।

पाँचवें या नवें (८, ९) शनि हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तो मूत्रेन्द्रिय या गुदा के समीप तिल होता है। पांचवें या नवम् भाव में शुक्र और बुध हों, अष्टम में गुरु और लग्न या चतुर्थ भाव में शनि हो, तो पेट पर चिन्ह होता है। **चतुर्थ स्थान** में राहु या शुक्र दोनों में से एक ग्रह स्थित हो और लग्न में शनि या मंगल स्थित हो, तो पाँव के तलवे में चिन्ह होता है। दूसरे भाव में शुक्र, **आठवें भाव** में सूर्य और तीसरे में मंगल हो तो जातक की कमर के आस-पास चिन्ह होता है। १२वें भाव में गुरु, नौवे भाव में चन्द्रमा और तीसरे या ११वें में बुध हो, तो गुदा स्थान में चिन्ह होता है।

जातक के शरीर में तिल, मस्सा, चिन्ह आदि का विचार लग्न राशि, लग्न स्थित द्रेष्काण राशि एवं शीर्षोदय राशि आदि के द्वारा भी किया जाता है।

पितृ-परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय पिता घर में था या नहीं ? जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चर राशि का होकर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थित राशि का हो तो पिता घर में नहीं था, परन्तु देश ही में है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा होगा।

माता पिता को अरिष्ट योग

पिता के लिये सूर्य तथा दशम् स्थान से और माता के लिये चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिये। यदि बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम् स्थान में पाप ग्रह बैटे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये। यदि सूर्य से ४/ ६ /८ स्थान में पाप ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २। १२ स्थान में व ४। ६। ८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जाने।

बालारिष्ट योग

शास्त्रानुसार जब तक बच्चा १२ वर्ष का न हो जावे, उसकी आयु निश्चित नहीं की जा सकती। बालक की कुण्डली में आयु योग होने पर भी कई बार माता-पिता के किए हुए पाप कर्मों से तथा ग्रहों के प्रभाव से बच्चे की अकाल मृत्यु हो जाती है। प्रथम चार वर्ष की आयु तक माता के पापों के कारण, ८ से १२ वर्ष तक की आयु तक बालक अपने पूर्व जन्म से पापों के कारण अपमृत्यु होती है। जन्म से आठ वर्ष तक बालारिष्ट, आठ से २० वर्ष की आयु तक योगारिष्ट तथा २० वर्ष से ३२ वर्ष की आयु तक अल्पायु कहलाती है। यदि बच्चे की कुण्डली में चतुर्थ या दशम् स्थान में शुभ ग्रह स्थित हों तो माता को सुखपूर्वक प्रसव होता है।

- यदि लग्न या चन्द्रमा से चौथे या सप्तम स्थान में क्रूर ग्रह हों, तो माता को प्रसव के समय अधिक कष्ट होगा अथवा ४ एवं सप्तम भावों पर शनि मंगल आदि क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, तो आप्रेशन द्वारा प्रसव होता है।
- यदि लग्न से छठे, आठवें तथा १२वे भावों में क्रूर ग्रह हों और इन स्थानों में शुभ ग्रह न हों तथा गुरु या शुक्र पाप ग्रहों के मध्य में हों, तो बच्चे सहित माता व सन्तान दोनों को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।
- यदि लग्न में पाप ग्रह हों और चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ स्थित हो तथा लग्न एवं चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो बालारिष्ट समझना चाहिए।
- लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह स्थित हों, तथा बारहवें भाव में क्षीण चन्द्रमा स्थित हो और उसे कोई शुभ ग्रह न देखता हो, तो विशेष बालारिष्ट योग होता है।
- चन्द्रमा ४-६-८-१२ भावों में हो तथा उसके दोनों ओर पाप ग्रह हों, तो चन्द्रमा पापाक्रान्त होने से बालक एवं माता दोनों को अरिष्ट होता है।
- यदि लग्न का स्वामी ७वें भाव में हो और वह शनि, राहु, मंगल आदि पाप ग्रहों से युक्त हो, तो एक वर्ष तक विशेष अरिष्ट होता है।

उपरोक्त बालारिष्ट के कुछ योग दिए गए हैं और अधिक अल्पायु के योगों के विस्तारपूर्वक जानने के लिए हमारी प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) प्रथम भाग पुस्तक का अध्ययन करें। उपरोक्त बालारिष्ट योगों के अतिरिक्त बालक के जन्म समय गण्डान्त नक्षत्र, विष घटी नक्षत्र, अशुभ ग्रह दशा, माता-पिता की कुण्डलियों में अशुभ ग्रह योगों पर भी विचार कर लेना चाहिए।

बालक/बालिका की कुण्डली में अरिष्ट योग या उसकी सम-भावना हो, तो उपयुक्त चिकित्सा उपायों के साथ-साथ प्रति वर्ष एवं प्रति मास (परिस्थिति अनुसार) जन्म तिथि, नक्षत्र के दिन (चान्द्र मास के हिसाब) या वर्ष प्रवेश कालीन जप, होम, नवग्रह पूजन, तुलादान, छायादान, मृतसंजीवनी मन्त्र का जप या मृत्युञ्जय मन्त्र का पाठ, दान एवं ब्राह्मण भोजन आदि करवाना कल्याणकारी रहेगा।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री—

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)** —भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

जन्मदिन कैसे मनाएं ?

पाश्चात्य सभ्यता की अन्धानुकरण की दौड़ में आजकल मध्यम एवं उच्च वर्ग के अधिकांश लोग अपना व अपने बच्चों का जन्मदिन गत बीते वर्ष जितनी मोमबत्तियाँ जलाकर, फिर उन्हें फूंक से बुझाकर तालियाँ बजाते हुए Happy Birthday to you बोलते हुए मनाते हैं। फूंकमार **प्रज्वलित ज्योत** को **बुझा देना** हमारी भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के विरुद्ध है।

जन्म दिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर सर्वप्रथम अपने अग्रजों (माता-पिता, दादा-दादी, गुरू आदि आप्त जन) को प्रणाम करके उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए (इसके अभाव में सर्वप्रथम सूर्य भगवान् के दर्शन करके गायत्री मन्त्र जप करें।)

तदुपरान्त शौचादि कार्यों से निवृत्त होकर सर्वोषधि गंगा जल सहित शुद्ध जल से स्नान कर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख होकर शुद्धासन पर बैठकर गणपति, शिव, विष्णु आदि देवों तथा नवग्रहों (स्वस्तिवाचन, एवं शान्ति पाठ आदि मन्त्रो का शुद्ध चित्त होकर स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण के द्वारा पूजन व पाठादि करवाना चाहिए। विशेषकर वर्ष कुण्डली और अरिष्टकर ग्रहों एवं मुंथा आदि का दान, जपादि करवाने से आरोग्य, सुख व समृद्धि बनी रहती है। इस दिन श्री मार्कण्डेय, भारद्वाज, कश्यप, अत्रेय, विश्वामित्र, गौतम, श्री परशुराम, श्री नारद, वशिष्ठादि दीर्घजीवी ऋषियों का स्मरण कर नमस्कार करने से दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।

पूजनोपरान्त हवन करवाना और ब्राह्मण भोजन करवाना शुभ होता है। जन्मदिन पर तिल प्रयोग भी आयुवर्द्धक होता है। तिल स्नान, तिल होम, तिल निर्मित वस्तु (क्षीरादि) का प्रयोग व दानादि शुभप्रद होता है।

पूजा के बाद केशरी वर्ण के वस्त्र में गुग्गल, नीम की पत्तियाँ, गोरोचन, सफेद सरसों तथा दूर्वा बाँधकर दाई भुजा में किसी ब्राह्मण द्वारा स्वस्तिवाचन मंगल मन्त्रों सहित बंधवा लेने से वर्षभर किसी अनिष्ट का भय नहीं रहता है।

जन्मदिन पर सूर्यदेव को '**ॐ घृणि सूर्याय नमः**' आदि मन्त्रों सहित अर्घ्य देना, गायत्री मन्त्र का पाठ तथा इस दिन श्री परमात्म तत्त्व का चिन्तन, स्मरण एवं संकीर्तन करना एवं दानादि शुभ कार्यों में प्रवृत्त रहना शुभ होता है।

जन्मदिन पर क्षौर कर्म (हजामत बनाना), माँस-मदिरा तामसिक वस्तुओं का सेवन, निन्दा, कलह, हिंसा, यात्रा, स्त्री प्रसंग, जूआ आदि कृत्य निषेध हैं। अग्रजों द्वारा मांगलिक मन्त्रों से शुभ आशीर्वाद ग्रहण करना सर्वप्रकार से कल्याणकारी रहता है—

"ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।"
"भद्रम् कर्णेभिः श्रृणुयाम् देवाः।
भद्रम् पश्येम् अक्षभिः यजत्रा।
स्थिरैः अङ्गैः तुष्टवांसः तनूभिः वयशेम् वि अशेमहि देवहितम् यदायुः॥"

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्टाद्यपादेऽवज्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूला नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। **यथा**-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूला नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूला के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूला नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूला नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से **'गण्डमूल शान्ति'** पुस्तक मंगवा लेवें।

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से "**व्रत और त्यौहार**" एवं **सप्तवार कथा** मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—"**एहि सूर्य सहस्त्राशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर**" स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "**ॐ नमः शिवाय**" आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे—चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र "**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**" की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए "**ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**" बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारणा करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रणाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र "**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**" का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे—मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र "**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**" का यथाशक्ति पाठ करे। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समधि,

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

''ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'' की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथा शक्ति मात्रा में करें—मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा कावल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र **''ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥''** का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र **''ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः''** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे. २०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्पद	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उषा
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर(मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूला
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ. फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे. पो. रा. री.	कं.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पूभा
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ।।जर	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सूचंमं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	वृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र									शत्रु नवपंचम चक्र		
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-वृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। **यथा—**

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह **अन्येऽपि—**

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि **पाप** ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

यथोक्तम्—

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ **—मु. पारिजात**

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते'' **—मु. चिंतामणि**

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ **—मुहूर्त्त दीपक**

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥ **—मुहूर्त्त दीपक**

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥'' **—मु. चिंतामणि**

अपरंच—

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ **—मु. चिंतामणि**

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

—मुहूर्त्त दीपक

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले—'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे—विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ **—मु. संग्रह दर्पण**

(शेष पृष्ठ 157 पर देखें)

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण **त्रय से** उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे—सुन्दर, सुशील, मधुरभाषिणी **एवं** पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह **सम्बन्ध** शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, **स्वस्थ** (शरीर) और आयु—इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में—विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :—

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** —ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार—४, ८, १२ राशियों का **ब्राह्मण**, १, ५, ९ का **क्षत्रिय**, २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार—सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। **समान वश्य होने पर २ गुण**, एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार—कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**—योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा—

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —वृहज्जयोतिः सार

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा—

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार—अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का **राक्षसगण**।

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गुण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में भिन्नता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। —पीयूषधारा

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। —मुहूर्त मार्त्तण्ड

(७) भकूट विचार—इसे **राशिकूट** भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष,** यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा—१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा—

न वर्गवर्णो न गणो: न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।

तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ —बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है—

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर—ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ —शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं। —मुहूर्त्तमार्त्तण्ड

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है।

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे—वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया—

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।

परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ —ज्योतिनिबन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है—आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्ये.	मूले	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पूफा	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उषा	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। —बृहज्योतिषसार

नाड़ी गुण विभाग— भिन्न नाड़ी में आठ गुण तथा समान नाड़ी (नाड्यैक्य) होने की स्थिति में शून्य गुण-अर्थात् गुणाभाव होता है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार—

(i) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है—

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नित्तान्त: उपेक्षणीय नहीं होता॥

(ii) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता—अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ —मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा—

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

***नोट**— ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे** एवं **तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(iii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद—इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ —ज्यो० चिन्तामणि

उपयुक्त उपायों से परिहार—

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए। **'बृहस्पति संहिता'** के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्री मृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है—

अन्यत्र भी लिखा है— श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त—

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

पृष्ठ 154 का शेष भाग

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। सभी लग्न कुण्डलियों में मंगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मंगल अथवा मंगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य से योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो, तो मंगल अशुभ की अपेक्षा **शुभ प्रभाव कारक** होगा। जैसे—मकर, मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मंगल को शुभ माना जाता है तथा **कर्क** एवं **सिंह लग्नों** में मंगल **केन्द्र त्रिकोणपति** होने से मंगल अशुभ न होकर योगकारक माना जाएगा—

''सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा शुभफलप्रदाः।
इसी भान्ति स्वोच्चस्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णम्।
नीचर्क्षगस्तु विपलं रिपु मन्दिरेऽल्पम्॥ (सारावली)
भाव सर्वे शुभपतियुता वीक्षितः वा शुभेशै—
तत्तद्भावाः सकल फलदाः पापदृक्योगहीनाः॥''

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी **अन्य तत्त्वों** का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जिनमें कुछ मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(१) चलित भाव कुण्डली— जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में **मंगल** सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(२) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(३) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(४) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का **पूर्ण सुख नहीं होता—**

दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते-तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा॥

(५) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नित्तान्त आवश्यक है।

(६) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (२७ या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या नक्षत्र ↓		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पूफा 1 से 4	उफा 1	उफा 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1,2,3	२२ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३ ॥ 3,8	३१ ॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३ ॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४ ॥ 1238	१८ 1358	२६ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१ ॥ 3	२३ ॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८ ॥ 8,9व	२६ 9,व	२१ ॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६ ॥ 1236	२० 1356	२० ॥ 1356	२१ 1356	२५ ॥ 3,6	२६ ॥ 3,6	२३ ॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५ ॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६ ॥ 3,6	१७ ॥ 2,3,6	१७ ॥ 2,3,6	१८ ॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३ ॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३ ॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२ ॥ 3468	१० ॥ 3568	२४ ॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३ ॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९ ॥ 1,2,8	२४ ॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९ ॥ 456व	१५ 3458	२४ ॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७ ॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१ ॥ 3,4	१९ ॥ 2,4,5	१२ 2358	१४ ॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८ ॥ 3,व	३१ ॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९ ॥ 3,5,8	२७ ॥ 3,5	२१ ॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२० ॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९ ॥ 3,4व	२१ ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७ ॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३ ॥ 3,5,6	२० ॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१ ॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७ ॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९ ॥ 1,3	२५ ॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९ ॥ 3,6	१६ ॥ 1246	२० ॥ 1234	१५ ॥ 1238	१८ 1358	१९ ॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३० ॥ 1,3	२१ ॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११ ॥ 12358	१८ ॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५ ॥ 1238	२३ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२ ॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११ ॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५ ॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५ ॥ 1246	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६ ॥ 8,9,व	१७ ॥ 158व	९ ॥ 1568व	१७ ॥ 156व	२१ ॥ 146व	२२ ॥ 136व	२१ 1346व	१६ ॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६ ॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६ ॥ 1236	२१ ॥ 123व
	पूफा 1 से 4	२६ 9,व	१८ ॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३ ॥ 145व	१५ ॥ 1458	२० 148व	२८ ॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२ ॥ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	१६ ॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५ 0	२४ 1,2व	२३ 123व	७ ॥ 1268
	उफा 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८ ॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१ ॥ 1,3,8	१७ ॥ 2,3,8	२५ ॥ 2,3	२० 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६ ॥ 128व	१३ ॥ 1236
कन्या	उफा 2,3,4	१३ 3578	२२ ॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४ ॥ 3,9	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1,3,8	२४ ॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२ ॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७ ॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७ ॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२ ॥ 1,3.8	२४ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२३ 3,5,6	१८ ॥ 236व	२२ ॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४ ॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२ ॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५ ॥ 1,3,6	२१ ॥ 3,5,6	१२ ॥ 3568	२७ 3,5,व	२२ ॥ 2,3,व	८ ॥ 2368	१४ ॥ 2346	२४ ॥ 3,4,6	२७ ॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-२)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या	नक्षत्र ↓	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पूफा 1 से 4	उफा 1	उफा 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२ ॥ 3,4,6	१४ 3468	२८ ॥ 3,4	२४ 3,7	२० ॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९ ॥ 3,6,9	२० ॥ 3,5,6	११ 3568	२६ ॥ 3,5,व	२५ ॥ 3,5,व	११ ॥ 3568	१७ ॥ 456व	१७ ॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	१७ ॥ 3,6,8	१३ 3678	१५ ॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६ ॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५ ॥ 3,5व	२५ ॥ 3,5व	२६ 2,3	२७ ॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२ ॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२० ॥ 3,4,8	१५ ॥ 3478	१० ॥ 3678	१८ ॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१ ॥ 4,5,6	१८ ॥ 3,5,8	१७ ॥ 358,व	१९ ॥ 358व	१७ ॥ 2346	१७ ॥ 2346	१९ 2346	२७ ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४ ॥ 1478	१९ ॥ 1,4,8	१४ ॥ 1368	२२ ॥ 1,3,6	१२ ॥ 1567	१३ 1567	१३ ॥ 1567	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	१५ ॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३ ॥ 136व	२१ ॥ 146व	१७ ॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५ ॥ 1378	२० 1367	२४ ॥ 1,3,6	२७ ॥ 1,3,4	२० ॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२० ॥ 1,5,7	२६ ॥ 9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९ ॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११ ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८ ॥ 1367	२५ 1,3,7	२९ ॥ 1,3	२२ ॥ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५ ॥ 135678	१० ॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४ ॥ 1345
धनु	मूला 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९ ॥ 1,5,7	१३ 1567	१३ ॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७ ॥ 4678	१७ ॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९ ॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पूषा 1 से 4	२६ 9	१८ ॥ 8,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 1457	११ 14578	१८ ॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	१३ 3478	१७ ॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७ ॥ 8,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३ ॥ 13568
	उषा 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७ ॥ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	२३ ॥ 3,7,व	८ ॥ 678व	८ ॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२८ ॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उषा 2,3,4	२७ 3,4,5	२८ ॥ 4,5	१४ ॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२ ॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४ ॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६ ॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६ ॥ 5678	१८ ॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४ ॥ 4,9व	१९ ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११ ॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२० ॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९ ॥ 4,5,7	५ ॥ 5678	१२ ॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१० ॥ 4568	२६ 3,4,5	३० ॥ 3,4	२७ 4,6	१९ ॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८ ॥ 3469	१३ 4567	४ ॥ 45678	१९ ॥ 357व	२५ ॥ 3,5,व	११ 568व	१८ ॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२ ॥ 3	२५ ॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६ ॥ 3,5,व	२० ॥ 356व	१२ ॥ 568व	११ ॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पूभा 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१ ॥ 3,4	३१ ॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७ ॥ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	१३ ॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९ ॥ 5,6,व	२५ ॥ 4,5व	१६ ॥ 458व	१५ ॥ 4,7,8	१५ ॥ 3478	१७ ॥ 3467
मीन	पूभा 4	१४ ॥ 1248	२२ 1234	१६ ॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८ ॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३ ॥ 1347	१४ ॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८ ॥ 1456
	उभा 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७ ॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७ ॥ 9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७ ॥ 135व	२७ 135व	१० 14566
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४ ॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७ ॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४ ॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७ ॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३ ॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९ ॥ 1456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-३)

वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6.7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 4,9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	२७ 2,3
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२१ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२१ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8	२६ ॥ 3,5,व
	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,7	१२ ॥ 4689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व	२७ 3,5,व
	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७ ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9	२६ 3,9
	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1,3,5	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ 9
	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 1,5,व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३ ॥ 6,7,8
	पूफा 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 156व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8	२६ 3,7
	उफा 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उफा 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568	१९ ॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-४)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → / कन्या नक्षत्र ↓	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 3,7,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
वृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12568	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूला 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पूषा 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उषा 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उषा 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पूभा 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,6,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पूभा 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उभा 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'**पंचांगदिवाकर**' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी था राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए २९ सितं., २००४ ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से ६/१७ सू.उ. प्राप्त (घण्टा मिनट वाले पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (६/२३) से 6 मिनट पूर्व (पहले) है। अतः घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में ६ मिनट के घटी पल १५ पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे**, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

२९ सितं., २००४ ई. को जालन्धर का पंचांग—

	घटी पल
तिथि	— २९/१० (समाप्ति काल)
नक्षत्र	— ५३/०८
योग	— ३९/३३

२९ सितं., २००४ ई. को दिल्ली का पंचांग

	घटी पल
तिथि	— २९/२५ (समाप्ति काल)
नक्षत्र	— ५३/२३
योग	— ३९/४८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०६१ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल अष्टमी, प्रविष्टे १५ चैत्र, तदनुसार २८ मार्च, २००४ ई. को दोपहर २ बजकर २४ मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ०५ पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/१४°/०६'/११" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१/२० की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जा सकती है। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और १४° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें ०/५१ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/०५ में जमा कर देने से कुल जोड़ २०/५६ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २०/५२ कर्क (३) राशि के सामने और २० अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २०/५६ से केवल ४ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ४ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इसी प्रकार ४ पलों के पीछे २२ कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/०५ घट्यादि) ३ गत राशि अर्थात् कर्क लग्न, २० अंश, २२ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ३/२०°/२२'/००')। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक '**ज्योतिष तत्त्व**' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)** चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे—लंदन; बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
मेष	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
वृष	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
मिथुन	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
कर्क	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
सिंह	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
कन्या	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
तुला	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
वृश्चिक	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
धनु	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
मकर	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१०	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मीन	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°

पलभा ५ ।५ ।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांश २७°

पलभा ६ ।६ ।५०

जयपुर, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रुखाबाद भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५२
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० — उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फ़िरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	२९	३९	४९	५८	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	२९
१०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	२१	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° — उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, रोहतक, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१०	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°)

पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	[illegible]	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	[illegible]	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°)

पलभा ७।४८।३०

जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१.४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१२ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण— मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।**

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

षड्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. षट्		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
मे.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
वृ.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
मि.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
क.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
सिं.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
कं.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
६	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सं	७	७	७	८	८	९	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
तु.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सं	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
वृ.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सं	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
ध.	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सं	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
म.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सं	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
कुं	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सं	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
मी.	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्गी फलादेश विचार

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमाश, ४ नवमांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश शुभ ग्रह हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी—होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु पीछे जो षड्वर्ग सारिणी दी गई है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशादि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण—मान लें लग्न स्पष्ट ५।।२९।२५ है। यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशादि ४।२९।।२५ है। सारिणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अतः हमारे अभीष्ट अंशादि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् **कर्क लग्न, द्रेष्काण ६** (कन्या), सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का ११ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमशः चंद्र, बुध, मंगल, शनि, शुक्र व शुक्र ग्रहों में २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फलयुक्त-श्रेष्ठ फल होगा। ग्रहस्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।४२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशादि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमशः ४।८ ।३ ।६ ।११ ।६ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करे। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करेंगे।

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही रहता है। **होरा लग्न** विषम ५ राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान, धन धान्य युक्त उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम ४ राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल मर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। **होरा लग्न** में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदु-भाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरवार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी, नीच कार्यों में प्रवृत्त, सुख में कमी होगी।

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता, धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। **द्रेष्काणपति** शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। **द्रेष्काणपति** चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। **द्रेष्काणेश** शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटादि का चिन्ह होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांशफल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमाँश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। **सप्तमांश लग्नपति** पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली सन्तान होती है। सप्तमांश लग्नपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, वुध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। **सप्तमांश** लग्नपति लग्न से ७।८ ।१२वें स्थान में पापग्रह से दृष्ट या गृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित अर्थात् निर्वाह योग्य धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। **द्वितीय नवांश** हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, **षष्ठ** में स्त्री के वशीभूत, नपुसंक अपव्ययी व प्रमादी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतघ्न द्वेषी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य-कुशल व धनधान्य से युक्त होता है। जो ग्रह जन्मकुण्डली व नवमांश कुण्डली-दोनों में उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ हो वह वर्गोत्तम कहलाता है जिसका फल अत्युत्तम कहा जाता है। **नवमांश लग्न** का स्वामी मंगल हो या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो जातक की स्त्री मिलनसार, श्वेत वर्ण पर कुछ तेज़ स्वभाव की होगी। बुध हो तो सुन्दर आकृति, चतुर, शिल्पविद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, विद्यावान, धार्मिक स्वभाव व शुभाचरभ वाली। शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगारप्रिय, श्वेतवर्णा सुन्दरी व कामुक होगी। **नवमांशपति शनि** हो तो क्रूर स्वभाव की, श्यामवर्णा पति से विरोध करने वाली स्त्री होती है। नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह स्वराशिस्थ अथवा केन्द्र त्रिकोण में स्थित तो जातक को स्त्री का अच्छा सुख मिलता है। **नवांशपति** भाग्येश के

साथ २ ।५ ।११वें भाव में उच्च या स्वराशि का होकर पड़ा हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल से धन् लाभ होता है। नवमांशपति पाप ग्रहों से युक्त या पाप ग्रह से दृष्टय होकर ६, ८वें या १२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। अधिकांश ग्रह यदि नीच नवांश में हों तो जातक पराधीन होकर जीवन निर्वाह करता है। **नवाँश कुण्डली** में जितने पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें भाव में स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या इनसे दृष्ट हो तो कन्याएं होती हैं। केतु या शनि होने से गर्भ स्थिर नहीं रहता है। अर्थात् गर्भपात का भय होता है।

द्वादशांश फल विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख तथा आयु सीमा का विचार किया जाता हैं। **द्वादशांश लग्न** का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि, मित्रराशि या उच्च राशि में स्थित होकर १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१०वें भावों में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि हो तो पिता का अल्प सुख होता है इसी भांति **द्वादशांश लग्न** का स्वामी स्त्री ग्रह शुभ ग्रहों युक्त, स्वराशि, मित्र या उच्चराशिस्थ होकर १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० वें भावों में हो तो माता का विशेष सुख होता है। यदि स्त्री ग्रह पापयुक्त या दृष्ट होकर ६ ।८ ।१२वें भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के द्वादशांश में क्रम से आयु प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०, ६६, १०० अर्थात् क्रम से द्वादशांश में इतने वर्ष की आयु प्राप्ति की संभावना होती है।

त्रिशांश फल विचार

त्रिशांश में जो ग्रह मित्र के घर में या उच्च में हो वह सभी कार्यों में उत्साही धनी, धर्मिष्ठ व पूज्य होता है। मंगल अपने त्रिशांश में स्थित हो तो वह प्राणी तेजस्वी धैर्यवान स्त्री-धन से युक्त, बुध अपने त्रिशांश में हो तो बुद्धिमान, संगीत, प्रेमी, गुरु हो तो जातक उद्यमी, धनवान, **शुक्र हो** तो जातक बहुपुत्रों वाला, अनेक स्त्रियों से मित्रता करने वाला होता है। **शनि** हो तो परस्त्रीगमन करने वाला, दुःखी व मलिन हृदय होगा।

सहज ग्रह शान्ति

अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जित धनस्य च। सर्वदा नियमस्थ सदा सानुग्रहा ग्रहाः ॥

जो व्यक्ति किसी को दुख नहीं देता, न किसी की हिंसा चाहता है, जो संयमी (अर्थात् जिसे अपने मन, वचन एवं कमी) आदि इन्द्रियों पर संयम है और जो धर्म निर्दिष्ट मार्ग से धन का उपार्जन करता है तथा जो शास्त्र प्रतिपादित नियमों का पालन करता है। उसपर ग्रह सदैव अनुग्रह—अर्थात् उन्हें अनुकूल शुभ फल प्रदान करते हैं तथा ईश्वर की कृपा बनी रहती है।

अपने पूर्वजों के प्रति श्राद्धादि तर्पण की महिमा

हमारे जो आत्मीय पूर्वज हमारे सुखों में अपने अन्तर्मन में सुखी होते थे एवं हमारे कष्टों से दुखी होते थे, उनकी स्मृति मिटाए नहीं मिटती। अपने उन आत्मीय पूर्वजों का शास्त्रीय मन्त्रों द्वारा आह्वान, पूजन एवं उनके याद में यथाशक्ति अन्न-धनादि का दान करना ही श्राद्ध कहलाता है । इस प्रकार अपने दिवंगत पितरों की स्मृति में जो कुछ भी अन्न, फल, वस्त्र, धनादि का श्रद्धापूर्वक दान किया जाता है, उसे श्राद्ध कहते हैं—

श्रद्धया दीयते यत्र तत् श्राद्धं प्रकीर्तितम् ॥

जो विधिवत् अपने पितृजनों के लिए श्राद्ध करता है, फिर उसे प्रज्ञा, धन, विद्या, धन, सम्पदा, निरोगता, यश अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति एवं दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं—

अमावस्या, आश्विन कृष्ण पक्ष, उत्तरायण-दक्षिणायन् श्राद्धयोग्य ब्राह्मण की प्राप्ति होना, विषुव संक्रान्ति (सूर्य की मेष एवं तुला संक्रान्ति), मकर सक्रान्ति, व्यतीपात, गजच्छाया-योग, चन्द्र-सूर्य ग्रहण तथा मृत्यु तिथि—ये सब श्राद्ध के काल (अवसर) कहे गए हैं।

अग्नि को प्रर्थना— **ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि ।**
उशन्नुशत आवाह पितृन्हविशे अत्तवे ॥ यजु १९।७०॥

'हे अग्ने! तुम्हारे यजन की कामना करते हुए हम तुम्हें स्थापित करते हैं । यजन की ही इच्छा रखते हुए तुम्हें प्रज्वलित करते हैं । हविष्य की इच्छा रखते हुए तुम भी तृप्ति की कामना वाले हमारे पितरों को हविष्य भोजन करने के लिए बुलाओ

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिः देवयानै :।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्तुऽस्मान् ॥ (यजु १८/५८)

"हे सोमपान करने योग्य अग्निष्वात पितृगण, देवताओं के साथ गमन करने योग्य मार्गो से यहाँ आवें और इस यज्ञ में स्वधा से तृप्त होकर हमें मानसिक उपदेश दें तथा हमारी रक्षा करें।"

इसके पश्चात् पितृगणों का नाम-गोत्र आदि का उच्चारण करते हुए प्रत्येक दिवंगत पूर्वज के निमित्त सर्वप्रथम कुशाओं को द्विगुणित करके उनका मूल और अग्रभाग दक्षिण की ओर किए हुए उन्हें अँगूठे और तर्जनी के बीच रखे और स्वयं दक्षिणाभिमुख होकर बाएं घुटने को पृथ्वी पर रखकर जनेऊ (यज्ञोपवीत) को अपसव्य (दाएं कंधे पर रखकर) अर्घ्य पात्र में जल एवं गंगाजल, काले तिल मिलाकर पितृ तीर्थ से (अंगूठा और तर्जनी के मध्य भाग से) पितरों के लिए तर्पण करे॥

उपरोक्त विधि से ३-३ अंजलि तिलसहित जल दें। यथा—

पिता के लिए—अमुकगोत्रः अस्मत्पिता, अमुक शर्मा (पिता नाम, जाति आदि). **वसुरूप-स्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलवा) तस्मै स्वधा नमः ॥ ३॥**

दादा को तर्पण के समय वसुरूप के स्थान रूद्र रूप का प्रयोग करें तथा माता को तर्पण के समय दा वसुरूपा शब्द प्रयोग करें।

इसके पश्चात् निम्नमन्त्र से पितृ तीर्थ से जलांजलि देवें—

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋत ज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ (यजुः १९।४९॥

श्राद्ध कर्म अपने निवास स्थान पर ही करना चाहिए, अथवा आवश्यक परिस्थितिवश मन्दिर या तीर्थों में भी किया जा सकता है । दूसरे के घर में जो श्राद्ध किया जाता है, उसमें श्राद्ध करने वाले पितरों को कुछ नहीं मिलता ॥

श्राद्ध से विमुख नहीं होना चाहिए जो व्यक्ति जानबूझ कर श्राद्ध नहीं करता, पितर शाप देकर वापिस लौट जाते हैं।

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट–जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश में उतने मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
अमृतसर (पंजा.)	31 37	74 55	-30 20
अलीगढ़ (उ. प्र.)	27 54	78 06	-17 36
अगरतला (त्रिपुरा)	23 49	91 18	+35 12
अहमदाबाद (गुज.)	23 03	72 40	-39 20
अहमदनगर (महा.)	19 05	74 48	-30 48
अखनूर (काश.)	32 54	74 45	-31 00
अजमेर (राज.)	26 27	74 42	-31 12
अल्मोड़ा (उत्तरां)	29 37	79 40	-11 20
अलवर (राज.)	27 34	76 38	-23 28
अमरावती (महा.)	20 56	77 48	-18 48
अम्बाला (हर.)	30 21	76 52	-22 32
अम्बिकापुर (म. प्र.)	23 10	83 15	+03 00
अंकलेश्वर (गुज.)	21 38	73 03	-37 48
अमेठी (उ. प्र.)	26 08	81 50	-02 40
अमरोहा (उ. प्र.)	28 54	78 29	-16 04
आनन्दपुर सा. (पं.)	31 15	76 32	-23 52
आनन्द (गुज.)	22 32	73 00	-38 00
अनन्तनाग (काश.)	33 43	75 12	-29 12
अनूपगढ़ (राज.)	29 07	73 06	-37 36
आजमगढ़ (उ. प्र.)	26 03	83 13	+02 52
अयोध्या (उ. प्र.)	26 48	82 14	-01 04
अबोहर (पंजा.)	30 08	74 12	- 33 12
आसनसोल (बंगा.)	23 42	87 01	+18 04
आगरा (उ. प्र.)	27 10	78 26	-18 00
आबू (राज.)	24 40	72 45	-39 00
ईलाहाबाद (उ. प्र.)	25 28	81 54	-02 24
इटावा (उ. प्र.)	26 47	79 02	-13 52
इम्फाल (मणि.)	24 46	93 58	+45 52
इन्दौर (म. प्र.)	22 44	75 50	-26 40
इटारसी (म. प्र.)	22 30	77 55	-18 20
उदयपुर (राज.)	24 35	73 41	-35 16
उज्जैन (म. प्र.)	23 09	75 43	-27 08
उन्नाव (उ. प्र.)	26 33	80 31	-07 56
उत्तरकाशी (उत्तरां.)	30 44	78 27	-16 12
ऊना (हि. प्र.)	31 32	76 18	-24 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
उधमपुर (ज. का.)	32 55	75 07	-29 32
ऋषिकेश (उत्तरां)	30 07	78 18	-15 12
एटा (उ. प्र.)	27 38	78 40	-15 20
औरंगाबाद (महा.)	19 53	75 23	-28 28
कटक (उड़ी.)	20 28	85 54	+13 36
कठुआ (ज. का.)	32 17	75 36	-27 36
कारगिल (ज. का.)	34 30	76 13	-25 08
किश्तवाड़ (ज. का.)	33 19	75 48	-26 48
कटरा (ज. का.)	33 01	74 58	-30 08
कटनी (म. प्र.)	23 47	80 27	-08 12
करनाल (हरि.)	29 42	77 02	-21 52
कलकत्ता (बंगा.)	22 34	88 24	+23 36
कपूरथला (पंजा.)	31 23	75 25	-28 20
करौली (राज.)	26 30	77 01	-21 56
कांगड़ा (हि. प्र.)	32 05	76 18	-24 48
कानपुर (उ. प्र.)	26 28	80 22	-08 32
कालका (हरि.)	30 49	76 57	-22 12
कुल्लू (हि. प्र.)	31 58	77 10	-21 20
कुराली (पंजाब)	30 50	76 35	-23 40
कोटकपूरा (पंजाब)	30 34	74 52	-30 32
कादियां (पंजाब)	31 49	75 23	-28 28
करसोग (हि. प्र.)	31 23	77 14	-21 04
किन्नौर (हि. प्र.)	31 32	78 20	-16 40
कंडाघाट (हि. प्र.)	30 57	77 08	-21 28
कोहिमा (ना.)	25 41	94 07	+46 28
कुमारसेन (हि. प्र.)	31 18	77 37	-19 32
कुरुक्षेत्र (हरि.)	29 59	76 48	-22 48
करतारपुर (पंजा.)	31 27	75 32	-27 52
कैथल (हरि.)	29 48	76 26	-24 16
कोल्हापुर (महा.)	16 42	74 16	-32 56
कोटखाई (हि.प्र.)	31 08	77 36	-19 36
कन्नौज (उ. प्र.)	27 03	79 58	-10 08
कोटा (राज.)	25 10	75 52	-26 32
खन्ना (पंजाब)	30 42	76 13	-25 08
खरड़ (पंजाब)	30 45	76 37	-23 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
खुर्जा (उ. प्र.)	28 15	77 50	-18 40
खण्डवा (म. प्र.)	21 50	78 07	-24 28
गया (बिहार)	24 49	85 01	+10 04
ग्वालियर (म. प्र.)	26 14	78 10	-17 20
गिलगित (ज. का.)	35 55	74 22	-32 32
गुरदासपुर (पंजाब)	32 03	75 27	-28 12
गुड़गांव (हरि.)	28 29	77 04	-21 44
गोरखपुर (उ. प्र.)	26 45	83 24	+03 36
गुवाहाटी (आसा.)	26 11	91 47	+37 08
गोधरा (गुज.)	22 45	73 40	-35 20
गाजीपुर (उ. प्र.)	25 34	83 35	+04 20
गोईंदवाल (पंजा.)	31 22	75 08	-29 28
गोराया (पंजा.)	31 06	75 47	-26 52
गंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40
गोण्डा (उ. प्र.)	27 08	82 01	-01 56
गढ़शंकर (पंजा.)	31 13	76 11	-25 16
गाजियाबाद (उ. प्र.)	28 40	77 26	-20 16
गुलमर्ग (ज. का.)	34 05	74 25	-32 20
गोवा (पंजिम)	15 27	73 50	-34 40
गोलकुण्डा (आ. प्र.)	17 24	78 23	-16 28
चम्बा (हि. प्र.)	32 34	76 08	-25 28
चित्तौड़गढ़ (राज.)	24 54	74 42	-31 12
चण्डीगढ़ (के. प्र.)	30 44	76 52	-22 32
चन्दौसी (उ. प्र.)	28 27	78 49	-14 44
चमौली (उत्तरां.)	30 24	79 21	-12 36
चूरु (राज.)	28 19	75 01	-29 56
चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	31 47	76 04	-25 44
छिन्दवाड़ा (म. प्र.)	22 03	78 58	-14 08
जालन्धर (पंजा.)	31 19	75 34	-27 44
जण्डयाला	31 36	75 03	-29 48
जंडियाला गुरु	31 51	75 37	-27 32
जम्मू (ज. का.)	32 43	74 54	-30 24
जौनपुर (उ. प्र.)	25 46	82 44	+00 56
जैसलमेर (राज.)	26 55	70 54	-46 24
जयपुर (राज.)	26 55	75 52	-26 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
जीन्द (हरि.)	29 19	76 21	-24 36
जमशेदपुर (बिहार)	22 50	86 10	+14 40
जामनगर (गुज.)	22 27	70 07	-49 32
जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	31 58	76 45	-23 00
जोधपुर (राज.)	26 18	73 04	-37 44
जबलपुर (म. प्र.)	23 10	79 59	-10 04
जलगांव (महा.)	21 03	75 39	-27 24
जैतों (पंजाब)	30 28	74 53	-30 28
ज़ीरा	30 57	74 59	-30 04
जगाधरी (हरि.)	30 10	77 16	-20 56
ज्वालामुखी (हि. प्र.)	31 53	76 20	-24 40
जाखल (हरि.)	29 49	75 49	-26 44
जूनागढ़ (गुज.)	21 31	70 36	-47 36
जोरहाट (आसा.)	26 46	94 16	+47 04
झांसी (उ. प्र.)	25 27	78 37	-15 32
झरिया (बिहार)	23 50	86 24	+15 36
झुंझुनू (राज.)	28 06	75 25	-28 20
टांडा उडमड़ (पंजा.)	31 40	75 41	-27 16
टोहाना (हरि.)	29 43	75 53	-26 28
टिहरी (उ. प्र.)	30 20	78 00	-16 00
टोंक (राज.)	26 11	75 50	-26 40
टोडारायसिंह (राज.)	26 00	75 29	-28 04
डबवाली मंडी (पं.)	29 59	74 42	-31 12
डोडा (ज. का.)	33 11	75 34	-27 44
डलहौज़ी (हि. प्र.)	32 31	76 00	-26 00
डिब्रूगढ़ (आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डूँगरपुर (राज.)	23 50	73 43	-35 08
तरनतारन (पंजा.)	31 28	74 58	-30 08
तिरुपति (आंध्र)	13 40	79 24	-12 24
त्रिवेन्द्रम (के.)	08 29	76 57	-22 12
थानेसर (हरि.)	29 58	76 56	-22 16
दिल्ली	28 39	77 12	-21 12
देहरादून (उत्तरां.)	30 19	78 04	-17 44
दसूहा (पंजा.)	31 49	75 39	-27 24
दीनानगर (पंजा.)	32 08	75 30	-28 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
दतारपुर (पंजा.)	31 53	75 45	-27 00
दार्जिलिंग (बंगा.)	27 03	88 18	+23 12
दुर्गापुर (बंगा.)	23 30	87 20	+19 20
दुर्ग (छत्तीसगढ़)	21 10	81 17	-04 52
द्वारिका (गुज.)	22 14	69 01	-53 56
देवरिया (उ. प्र.)	26 32	83 45	+05 00
दतिया (म. प्र.)	25 39	78 27	-16 12
धनबाद (बिहा.)	23 47	86 30	+16 00
धर्मशाला (हि. प्र.)	32 16	76 23	-24 28
धौलपुर (राज.)	26 42	77 53	-18 28
धूरी (पंजा.)	30 22	75 52	-26 32
नागौर (राज.)	27 11	73 40	-35 20
नवलगढ़ (राज.)	27 51	75 18	-28 48
नकोदर (पंजा.)	31 07	75 29	-28 04
नूरमहल (पंजा.)	31 01	75 22	-28 32
नौहर (राज.)	29 11	74 46	-30 56
नसीराबाद (राज.)	26 18	74 46	-30 56
नरवाना (हरि.)	29 36	76 08	-25 28
नासिक (महा.)	20 02	73 50	-34 40
नागपुर (महा.)	21 09	79 09	-13 24
नारनौल (हरि.)	28 02	76 14	-25 04
नंगल (पंजा.)	31 23	76 23	-24 28
नवांशहर (पंजा.)	31 07	76 08	-25 28
नाभा (पंजा.)	30 25	76 09	-25 24
नाहन (हि. प्र.)	30 33	77 21	-20 36
नालागढ़ (हि. प्र.)	30 57	76 22	-24 32
नैनीताल (उत्तरां.)	29 23	79 30	-12 00
नौशेरा (ज. का.)	33 13	74 17	-32 52
पठानकोट (पंजा.)	32 17	75 42	-27 12
पटियाला (पंजा.)	30 20	76 25	-24 20
पट्टी (पंजा.)	31 17	74 51	-30 36
पंचकूला (हरि.)	30 45	76 53	-22 28
पानीपत (हरि.)	29 23	77 01	-21 56
पिहोवा (हरि.)	29 56	76 36	-23 36
पिथौरागढ़ (उत्तरां.)	29 35	80 13	-09 08
पिंजौर (हरि.)	30 49	76 55	-22 20
पुँछ (ज. का.)	33 51	74 08	-33 28
पहलगाँव (ज. का.)	34 01	75 24	-28 24
पटना (बिहार)	25 37	85 13	+10 52
पीलीभीत (उ. प्र.)	28 38	79 48	-10 48
पालमपुर (हि. प्र.)	32 06	76 33	-23 48

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
पपरौला (हि. प्र.)	32 04	76 34	-23 44
प्रतापगढ़ (उ. प्र.)	25 50	81 59	-02 04
पाली (राज.)	25 46	73 25	-36 20
पोरबन्दर (गुज.)	21 37	69 37	-51 32
पंचमढ़ी (म. प्र.)	22 30	78 22	-16 32
पुरी (उड़ी)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया (बंगा.)	23 20	86 24	+15 36
पन्ना (म. प्र.)	24 44	80 14	-09 04
पिलानी (राज.)	28 23	75 35	-27 40
पुष्कर (राज.)	26 30	74 34	-31 44
पौड़ीगढ़वाल (उत्तरां)	30 09	78 47	-14 52
फतेहगढ़ सा. (पंजा.)	30 39	76 22	-24 32
फैज़ाबाद (उ. प्र.)	26 47	82 06	-01 36
फर्रुखाबाद (उ. प्र.)	27 24	79 36	-11 36
फगवाड़ा (पंजा.)	31 13	75 47	-26 52
फरीदकोट (पंजा.)	30 40	74 57	-30 12
फाज़िल्का (पंजा.)	30 24	74 04	-33 44
फिरोज़पुर (पंजा.)	30 55	74 40	-31 20
फिल्लौर (पंजा.)	31 01	75 48	-26 48
फरीदाबाद (हरि.)	28 25	77 22	-20 32
फ़तेहाबाद (हरि.)	29 31	75 30	-28 00
बटाला (पंजा.)	31 49	75 14	-29 04
बंगा (पंजा.)	31 11	75 59	-26 04
बलाचौर (पंजा.)	31 03	76 19	-24 44
बद्रीनाथ (उत्तरां.)	30 44	79 30	-12 00
बक्सर (उ. प्र.)	25 35	83 59	+05 56
बड़ौदा (गुज.)	22 18	73 13	-37 08
बड़गाम (ज. का.)	34 00	74 44	-31 04
बरनाला (पंजा.)	30 23	75 33	-27 48
बिजनौर (उ. प्र.)	29 23	78 11	-17 16
बुलन्दशहर (उ. प्र.)	28 24	77 52	-18 32
बनारस (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00
बरेली (उ. प्र.)	28 22	79 27	-12 12
बलिया (उ. प्र.)	25 44	84 11	+06 44
बदायूं (उ. प्र.)	28 02	79 10	-13 20
बाराबंकी (उ. प्र.)	26 56	81 13	-05 08
बारामूला (ज. का.)	34 10	74 30	-32 00
बनिहाल (ज. का.)	33 32	75 19	-28 44
बल्लभगढ़ (हरि.)	28 22	77 20	-20 40
बहादुरगढ़ (हरि.)	28 42	76 55	-22 20
बीकानेर (राज.)	28 01	73 22	-36 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
बांसवाड़ा (राज.)	23 30	74 24	-32 24
बागपत (उ. प्र.)	28 57	77 13	-21 08
बून्दी (राज.)	25 27	75 40	-27 20
बैजनाथ (हि. प्र.)	32 03	76 36	-23 36
बिलासपुर (हि. प्र.)	31 19	76 45	-23 00
बिलासपुर (म. प्र.)	22 05	82 12	-01 12
बस्तर (म. प्र.)	19 10	81 59	-02 04
बैंगलौर (क.)	12 58	77 36	-19 36
भटिंडा (पंजाब)	30 11	75 00	-30 00
भद्रवाह (का.)	33 04	75 50	-26 40
भिवानी (हरि.)	28 46	76 18	-24 48
भुवनेश्वर (उड़ी)	20 10	85 50	+13 20
भरतपुर (राज.)	27 05	77 30	-20 00
भावनगर (गुज.)	21 46	72 11	-41 16
भुज (गुज.)	23 15	69 40	-51 20
भिलई (छत्ती.)	21 13	81 26	-04 16
भिण्ड (म. प्र.)	26 36	78 46	-14 56
भीलवाड़ा (राज.)	25 21	74 40	-31 20
भोपाल (म. प्र.)	23 16	77 24	-20 24
मलेरकोटला (पंजा)	30 31	75 59	-26 04
मजीठा (पंजाब)	31 46	75 01	-29 56
मलोट (पंजाब)	30 13	74 29	-32 04
मानसा (पंजाब)	29 59	75 23	-28 28
मोगा (पंजाब)	30 48	75 10	-29 20
मोहाली (पंजा.)	30 43	76 42	-23 12
मार्तण्ड (का.)	33 48	75 18	-28 48
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	28 18	76 09	-25 24
मनसादेवी (हरि.)	30 44	76 52	-22 32
मकराना (राज.)	27 04	74 43	-31 08
मेरठ (उ. प्र.)	29 00	77 42	-19 12
मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	25 10	82 36	+00 24
मुरादाबाद (उ. प्र.)	28 51	78 49	+14 44
मुगलसराय (उ. प्र.)	25 17	83 11	+02 44
मंसूरी (उत्तरां.)	30 27	78 06	-17 36
मथुरा (उ. प्र.)	27 28	77 41	-19 16
मुज़फ्फर न. (उ.प्र.)	29 28	77 41	-19 16
मुक्तसर (पंजाब)	30 29	74 31	-31 56
मन्दसौर (म. प्र.)	24 03	[illegible]	-29 28
मैसूर (कर्ना.)	12 18	76 42	-23 12
मण्डी (हि. प्र.)	31 43	76 58	-22 08
मनीकरण (हि. प्र.)	32 01	77 20	-20 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
मनाली (हि. प्र.)	32 17	77 19	-20 44
मद्रास (चेन्नई) (ता.ना.)	13 04	80 17	-08 52
मुम्बई (महा.)	19 00	72 54	-38 24
यमुनानगर (हरि.)	30 08	77 16	-20 56
रामपुर बुशै. (हि. प्र.)	31 28	77 39	-19 24
रोहड़ (हि. प्र.)	31 12	77 44	-19 04
रोपड़ (पंजाब)	30 57	76 32	-23 52
राजपुरा (पंजाब)	30 29	76 34	-23 44
रायकोट (पंजाब)	30 41	75 36	-27 36
रोहतक (हरि.)	28 54	76 38	-23 28
रिवाड़ी (हरि.)	28 12	76 40	-23 20
रामबन (ज. का.)	33 14	75 15	-29 00
रियासी (ज. का.)	33 04	74 53	-30 28
रामनगर (ज. का.)	32 50	75 22	-28 32
रतलाम (म. प्र.)	23 21	75 07	-29 32
राजौरी (ज. का.)	33 23	74 18	-32 48
रायपुर (छत्ती.)	21 15	81 41	-03 16
रायबरेली (उ. प्र.)	26 14	81 16	-04 56
रामपुर (उ. प्र.)	28 48	79 03	-13 48
राँची (झार.)	23 23	85 23	+11 32
रायसिंहनगर (राज.)	29 32	73 27	-36 12
राजकोट (गुज.)	22 18	70 48	-46 48
रामेश्वरम् (ता.)	09 17	79 22	-12 32
रूड़की (उत्तरां.)	29 52	77 53	-18 28
लुधियाना (पंजा.)	30 55	75 54	-26 24
लेह (ज. का.)	34 10	77 40	-19 20
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	-10 00
लखनऊ (यू.पी.)	26 52	80 56	-06 16
लखीमपुर (उ. प्र.)	27 57	80 49	-06 44
लाडवा (हरि.)	29 59	77 05	-21 40
वाराणसी	25 20	83 00	+02 00
विशाखापट्टनम	17 42	83 20	+03 20
शिमला (हि. प्र.)	31 06	77 13	-21 08
शाहदरा (दिल्ली)	28 40	77 20	-20 40
शाहाबाद (हरि.)	30 10	76 55	-22 20
शाहजहांपुर (उ. प्र.)	27 54	79 57	-10 12
शोलापुर (महा.)	17 42	75 56	-26 16
शिलांग (मेघा)	25 34	91 56	+37 44
श्रीनगर (का.)	34 06	74 51	-30 36
श्रीगंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40
श्रीमाधोपुर (राज.)	27 25	75 32	-27 52
संगरूर (पं.)	30 12	75 53	-26 28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सरहिन्द (पं.)	30 38	76 23	-24 28	सरकाघाट (हि. प्र.)	31 43	76 22	-24 32	सागर (म. प्र.)	23 50	78 48	-14 48	हरिद्वार (उत्तरां.)	29 58	78 12	-17 12
सुल्तानपुर लोधी (पं.)	31 11	75 12	-29 12	सिरसा (हरि.)	29 32	75 06	-29 36	सिहोर (म. प्र.)	23 12	77 00	-22 00	हल्द्वानी (उ. प्र.)	29 13	79 31	-11 56
समाना (पं.)	30 09	76 12	-25 12	सोनीपत (हरि.)	28 58	76 59	-22 04	सहारनपुर (उ. प्र.)	29 58	77 30	-20 00	हाथरस (उ. प्र.)	27 36	78 06	-17 36
समराला (पं.)	30 51	76 11	-25 16	सूरतगढ़ (राज.)	29 19	73 57	-34 12	सीतापुर (उ. प्र.)	27 36	80 42	-07 12	हनुमानगढ़ (राज.)	29 35	74 21	-32 36
सुनाम (पंजाब)	30 08	75 48	-26 48	सूरत (गुजरात)	21 10	72 50	-38 40	सोमनाथ (गुज.)	21 04	70 26	-48 16	हापुड़ (उ. प्र.)	28 43	77 50	-18 40
साम्बा (ज. का.)	32 33	75 07	-29 32	सीकर (राज.)	27 36	75 09	-29 24	होशियारपुर (पंजा.)	31 32	75 57	-26 12	हरदोई (उ. प्र.)	27 23	80 10	-09 20
सुन्दरनगर (हि. प्र.)	31 33	76 54	-22 24	सवाईमाधोपुर (राज.)	25 59	76 30	-24 00	हमीरपुर (हि. प्र.)	31 42	76 30	-24 00	हैदराबाद (आ. प्र.)	17 24	78 30	-16 00
सोलन (हि. प्र.)	30 55	77 09	-21 24	साम्भर (राज.)	26 55	75 10	-29 20	हांसी (हरि.)	29 06	76 00	-26 00	होशंगाबाद (म. प्र.)	22 46	77 45	-19 00
सुजानपुर टि. (हि.प्र.)	31 50	76 31	-23 56	सिरोही (राज.)	24 54	72 55	-38 20	हिसार (हरि.)	29 10	75 46	-26 56	हावड़ा (बंगाल)	22 25	88 23	+23 32

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर
अम्ब	31 43	76 06	25 36	चामुण्डा देवी	32 08	76 20	24 40	नगर	32 10	77 20	20 40	मण्डी	31 43	76 58	22 08
अर्की	31 09	76 59	22 04	चिन्तपुरणी	31 47	76 04	25 44	नगरोटा बगवां	32 06	76 24	24 28	मनाली	32 17	77 19	20 44
आनी	31 28	77 20	20 40	चायल	31 03	77 14	21 04	नादौन	31 47	76 22	24 32	मनीकरण	32 01	77 20	20 40
आलमपुर	31 54	76 30	24 00	चौपाल	30 58	77 36	19 36	नाहन	30 33	77 21	20 36	मुबारकपुर	31 44	75 59	26 04
इन्दौरा	32 06	75 41	27 16	जवाली	32 06	76 01	25 56	नालागढ़	30 57	76 22	24 32	मशोबरा	31 07	77 14	21 04
ऊना	31 32	76 18	24 48	जस्सूर	32 17	75 55	26 20	नूरपुर	32 18	75 56	26 16	मंगवाल	32 03	76 05	25 40
करसोग	31 23	77 14	21 04	जतोग	31 08	77 08	21 28	नगरोटा	32 07	76 23	24 28	महासू	31 05	77 13	21 08
कसौली	30 54	77 02	21 52	जुब्बल	31 07	77 38	19 28	निरमण्ड	31 28	77 34	19 44	मैहतपुर	31 22	76 17	24 52
कल्पा	31 34	78 16	16 56	जोगिन्द्र नगर	31 58	76 45	23 00	नारकण्डा	31 15	77 28	20 08	खालसर	31 38	76 50	22 40
कण्डाघाट	30 57	77 08	21 28	ज्वालामुखी	31 53	76 20	24 40	नैना देवी	31 19	76 31	23 56	रामपुर बुशैहर	31 28	77 39	19 24
कांगड़ा	32 05	76 18	24 48	टीसा	32 48	76 12	25 12	पच्छाद	31 47	77 08	21 28	राजगढ़	30 52	77 22	20 32
काला अम्ब	30 29	77 13	21 08	ठयोग	31 08	77 33	19 48	पण्डोह	31 41	77 07	21 32	रायसन	32 05	77 07	21 32
कुफरी	31 07	77 12	21 12	डमटाल	32 13	75 41	27 16	पपरोला	32 04	76 34	23 44	रोहड़ू	31 12	77 44	19 04
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	21 48	डगशाई	30 53	77 06	21 36	परवाणू	30 52	77 05	21 40	लाहौल स्पीति	32 31	77 01	21 56
कोटखाई	31 08	77 36	19 36	डल्हौज़ी	32 31	76 00	26 00	पाओंटा साहिब	30 29	77 38	19 28	शाहपुर	32 14	76 12	25 12
कोटगढ़	31 19	77 29	20 04	डैहर	31 29	76 52	22 22	पालमपुर	32 06	76 33	23 48	शिमला	31 06	77 13	21 08
कोटला	32 17	76 02	25 52	ढलियारा	31 52	76 11	25 16	बरसर (भोटा)	31 34	76 28	24 08	शेरपुर	32 34	75 59	26 04
कुल्लू	31 58	77 10	21 20	तारादेवी	31 04	77 10	21 20	बसौली	31 34	76 23	24 28	सपाटू	30 57	77 01	21 56
कुमारसेन	31 18	77 37	19 32	तत्तापानी	31 14	77 10	21 20	बंगाना तै.	31 33	76 27	24 16	सरकाघाट	31 43	76 22	24 32
कुनिहार	30 58	77 10	21 20	त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	23 24	बड़ागांव	31 20	77 15	21 00	संतोखगढ़	31 21	76 20	24 40
किन्नौर	31 32	78 20	16 40	त्रिलोकपुर	30 34	77 09	21 24	बंजार	31 40	77 20	20 40	सैंज	31 49	77 19	20 44
केलांग	32 37	77 05	21 40	ददाहू	30 35	77 28	20 08	बनीखेत	32 32	75 58	26 08	सोलन	30 55	77 09	21 24
खजियार	32 31	76 03	25 40	देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	25 04	बकलोह	32 27	75 59	26 04	सुन्दरनगर	31 33	76 54	22 24
गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	24 48	दौलतपुर	31 46	75 58	26 08	बिलासपुर	31 19	76 45	23 00	सुजानपुर टिहरा	31 50	76 31	23 56
गगरेट	31 41	76 04	25 48	धनेटा	31 38	76 29	24 04	बैजनाथ	32 03	76 36	23 36	हमीरपुर	31 42	76 30	24 00
गोहर	31 32	77 02	21 52	धर्मशाला	32 16	76 23	24 28	भरवाईं	31 47	76 07	25 36	हड़सर	32 21	76 33	23 48
घुमारवीं	31 30	76 41	23 16	धर्मपुर	30 54	77 04	21 44	भरमौर	32 27	76 32	23 52	हाटकोटी	31 09	77 44	19 04
चम्बा	32 34	76 08	25 28	धारा	31 49	77 15	21 00	भुन्तर	31 54	77 09	21 24	हरिपुर	32 39	76 11	25 16
चच्योट	31 36	77 04	21 44	धौलाकुआं	30 30	77 29	20 04	भांखड़ा	31 20	76 30	24 00	हरिपुरधार	30 53	77 28	20 08

राजस्थान के मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
अजमेर	26 27	74 42	31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	37 36
अलवर	27 34	76 38	23 28
असोप	26 48	73 44	35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	25 30
अमेट	25 20	73 59	34 04
आबू	24 40	72 45	39 00
आमेर	26 59	75 52	26 32
उदयपुर	24 35	73 41	35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	34 56
करौली	26 30	77 01	21 56
कांकरोली	25 02	73 54	34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	30 32
केकड़ी	25 55	75 10	29 20
कोटा	25 10	75 52	26 32
खण्डेला	27 37	75 32	27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	35 44
गंगानगर	29 49	73 50	34 40
गंगापुर (टोंक)	26 29	76 46	22 56
गंगापुर (भीलवाड़ा)	25 13	74 16	32 56
घोटारू	27 18	70 04	49 44
चात्सू	26 36	75 59	26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	31 12
चूरू	28 19	75 01	29 56
चोमू	27 08	75 47	26 52
चोटां	25 28	71 06	45 36
छाबरा	24 40	76 54	22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	31 36
जयपुर	26 55	75 52	26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	40 00
जालौर	25 22	72 38	39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	46 24
जोधपुर	26 18	73 04	37 44
जोधासर	28 07	73 50	34 40
झालावाड़	24 36	76 09	25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	28 04
टोंक	26 11	75 50	26 40
डूंगरपुर	23 50	73 43	35 08
डीडवाना	27 17	74 25	32 20
तिजारा	27 55	76 50	22 40
थानागाजी	27 25	76 19	24 44
देओरा	26 30	70 42	47 12
देचू	26 47	72 20	40 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
देवली	25 46	75 25	28 20
देवलिया	24 38	74 42	31 12
देवीकोट	26 38	71 07	45 32
धौलपुर	26 42	77 53	18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	30 56
नागौर	27 11	73 40	35 20
नाथद्वारा	24 56	73 50	34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	26 48
नोखा	27 35	73 29	36 04
नौहर	29 11	74 46	30 56
पचपदरा	25 55	72 21	40 36
पाली	25 46	73 25	36 20
परबतसर	26 53	74 47	30 52
पिलानी	28 23	75 35	27 40
पल्लू	28 56	74 13	33 08
पुष्कर	26 30	74 34	31 44
पोखरन	26 56	71 55	42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	30 00
फलौदी	27 09	72 22	40 32
फुलेरा	26 52	75 16	28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	32 08
बयाना	26 55	77 17	20 52
ब्यावर	26 06	74 21	32 36
बाड़मेर	25 46	71 25	44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	23 44
बाप	27 24	72 22	40 32
बाराँ	25 07	76 30	24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	32 24
बालोतरा	25 50	72 14	41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	35 12
बीकानेर	28 01	73 22	36 32
बून्दी	25 27	75 40	27 20
भरतपुर	27 05	77 30	20 00
भादरा	29 15	75 20	28 40
भीनमाल	25 01	72 19	40 44
भीलवाड़ा	25 21	74 40	31 20
मकराना	27 04	74 43	31 08
महाजन	28 49	73 56	34 16

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
मांगरोल	25 21	76 30	24 00
मारवाड़ जंक्शन	25 44	73 45	35 00
मावली	24 48	73 58	34 08
मेड़ता	26 40	74 06	33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	34 20
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	49 00
मोहनगढ़	27 17	71 18	44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	41 08
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	48 00
रायसिंहनगर	29 32	73 27	36 12
रीगस	27 21	75 34	27 44
रूपनगर	26 47	74 54	30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	29 44
लाठी	27 03	71 30	44 00
लूनी	26 00	72 52	38 32
शाहगढ़	27 08	69 58	50 08
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	40 36
शेरगढ़ (झालाबाड़)	24 41	76 32	23 52
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	45 12
समदड़ी	25 49	72 35	39 40
सरदार शहर	28 27	74 30	32 00
सरूपसर	29 22	73 37	35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	24 00
सांगानेर	26 49	75 52	26 32
सांचोर	24 41	71 50	42 40
साम्भर	26 55	75 10	29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	28 24
सिरोही	24 54	72 55	38 20
सिवाना	25 37	72 27	40 12
सीकर	27 36	75 09	29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	32 36

हरियाणा के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
अम्बाला	30 21	76 52	22 32	नरवाणा	29 36	76 08	25 28	महेन्द्रगढ़	28 18	76 09	25 24
अलीपुर	29 10	75 52	26 32	नारनौल	28 02	76 14	25 04	माहम	28 58	76 19	24 44
अगरोहा	29 20	75 38	27 28	नारायणगढ़	30 30	77 09	21 24	मोहाना	29 04	76 50	22 40
करनाल	29 42	77 02	21 52	नाहर	28 23	76 23	24 28	यमुनानगर	30 08	77 16	20 56
कलानौर	28 52	76 23	24 28	नीलोखेड़ी	29 52	76 54	22 24	रादौर	30 02	77 06	21 36
कालका	30 49	76 57	22 12	पंचकूला	30 45	76 53	22 28	रैना	29 28	74 54	30 24
कुरुक्षेत्र	29 59	76 48	22 48	पटौदी	28 19	76 48	22 48	रिवाड़ी	28 12	76 40	23 20
केसरी	30 15	76 53	26 28	पलवल	28 10	77 19	20 44	रोडी	29 44	75 15	29 00
कैथल	29 48	76 26	24 16	पानीपत	29 23	77 01	21 56	रोहतक	28 54	76 38	23 28
खतौली	30 37	76 58	22 08	पिंजौर	30 49	76 55	22 20	रिवासा	28 48	75 57	26 12
गुड़गांव	28 29	77 04	21 44	पिपली	29 59	76 52	22 32	लाडवा	29 59	77 05	21 40
गोहाना	29 09	76 41	23 16	पिहोवा	29 56	76 36	23 36	लोहारू	28 16	75 45	27 00
घरौण्डा	29 34	76 58	22 08	फतेहाबाद	29 31	75 30	28 00	शाहाबाद	30 10	76 55	22 20
जगाधरी	30 10	77 16	20 56	फरीदाबाद	28 25	77 22	20 32	सिरसा	29 32	75 06	29 36
जाखल	29 49	75 49	26 44	बल्लभगढ़	28 22	77 20	20 40	सिवानी	28 55	75 37	27 32
जीन्द	29 19	76 21	24 36	वहादुरगढ़	28 42	76 55	22 20	सोनीपत	28 58	76 59	22 04
झज्जर	28 38	76 39	23 24	भाद्रसों	29 56	76 56	22 16	हसनपुर	27 59	77 29	20 04
टोहाना	29 43	75 53	26 28	भिवानी	28 46	76 18	24 48	हांसी	29 06	76 00	26 04
थानेसर	29 58	76 56	22 16	मनसादेवी	30 44	76 52	22 32	हिसार	29 10	75 46	26 56
दादरी	28 33	77 32	19 52	मनीमाजरा	30 42	76 53	22 28				

जम्मू-कश्मीर के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मिं. सैं.
अनन्तनाग	33 43	75 12	29 12	चिलास	35 27	74 06	33 36	बसौली	32 30	75 49	26 24
अखनूर	32 54	74 45	31 00	चुशूल	33 35	78 39	15 24	बारामूला	34 10	74 30	32 00
अवन्तीपुरा	33 56	75 03	29 48	छम्ब	32 51	74 23	32 28	भद्रवाह	33 04	75 50	26 40
अमरनाथ गुफा	34 13	75 33	27 48	जम्मू	32 43	74 54	30 24	मार्तण्ड	33 48	75 18	28 48
इश्कुमान	36 36	73 50	34 40	जंगला	33 40	77 00	22 00	मिनीमर्ग	34 49	75 02	29 52
उड़ी	34 04	74 02	33 52	जास्कार	33 30	77 00	22 00	मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	35 56
ऊधमपुर	32 55	75 07	29 32	जस्मेरगढ़	32 18	75 05	29 40	मनावर	32 50	74 25	32 20
कठुआ	32 17	75 36	27 36	डोडा	33 11	75 34	27 44	रामनगर	32 50	75 22	28 32
कटरा	33 01	74 58	30 08	तेरू	36 11	72 45	39 00	राजौरी	33 23	74 18	32 48
कारगिल	34 30	76 13	25 08	द्रास	34 22	75 50	26 40	रामबन	33 14	75 15	29 00
केरन	34 40	73 59	34 04	नवांशहर	32 30	74 46	30 56	रियासी	33 04	74 53	30 28
किश्तवाड़	33 19	75 48	26 48	नागिर	36 17	74 45	31 00	लेह	34 10	77 40	19 20
कोटली	33 30	73 57	34 12	नौशेरा	33 13	74 17	32 52	वैष्णो देवी	33 03	74 56	30 16
कुलगाम	33 42	75 02	29 52	पदम	33 28	76 54	22 24	वूलर	34 20	74 37	31 22
खयालू	35 10	76 20	24 40	पहलगांव	34 01	75 24	28 24	शेरकिला	36 05	74 04	33 44
खरताक्षो	34 53	76 12	25 12	परिपंजाल	33 36	74 22	22 32	श्रीनगर	34 06	74 51	30 36
गुलमर्ग	34 05	74 25	32 20	पुंछ	33 51	74 08	33 28	साम्बा	32 33	75 07	29 32
गिलगित	35 55	74 22	32 32	बनिहाल	33 32	75 19	28 44	सोपूर	34 19	74 30	32 00
गुरयास	34 38	74 56	30 16	बटोटी	33 06	75 19	28 44	सोनामर्ग	34 19	75 20	28 40
चिनेनी	33 01	75 20	28 40	बटोत	33 10	75 06	29 36	सोन्दर	33 29	75 57	26 12
				बड़गाम	34 00	74 44	31 04	सोपुर	34 19	74 30	32 00

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टै. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– **एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। **सुश्री निधि शर्मा MSc.**

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.	नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
अर्थीस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30	कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30	कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30	कोलम्वो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30	कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30	कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30	कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30	कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland)	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30	कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30	ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)*	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30	जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	-35 24	15 00 पू.	+04 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 29 प.	-33 56	105 00 प.	+12 30	जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	-01 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30	जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	-10 00	82 30 पू.	00 00
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30	जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30	टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15	टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	-03 30
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30	टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	-35 48	120 00 प.	+13 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30	डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	-04 08	00 00	+05 30
कराची*	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30	डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	-32 12	75 00 प.	+10 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 .00	डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	-25 00	00 00 प.	+05 30

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
न्यूजर्सी (E.T.)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 09 प.	+03 24	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर*	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट(Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर*	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पु.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
बेकर्जफील्ड (Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान*	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी*	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
लाहौर* (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एंजलस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वोलवरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A. (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A. (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	41 16 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (—) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्राय: सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (—) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारिणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर —२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (—२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

—शुभचिन्तक पं. पन्ना लाल गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या — करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
१ जन	६ १७	१७ ४९	६ ३५	१७ ३१	६ ४५	१७ २१	६ ५६	१७ १०	७ ०८	१६ ५८	७ २२	१६ ४४	७ ३९	१६ २८	७ ५९	१६ ०८	८ ०८	१५ ५८	८ १९	१५ ४७
३ ,,	६ १८	१७ ५१	६ ३६	१७ ३३	६ ४६	१७ २४	६ ५६	१७ १३	७ ०८	१७ ००	७ २२	१६ ४६	७ ३९	१६ ३१	७ ५९	१६ ११	८ ०८	१६ ०१	८ १९	१५ ५०
५ ,,	६ १८	१७ ५२	६ ३६	१७ ३४	६ ४६	१७ २५	६ ५७	१७ १४	७ ०९	१७ ०२	७ २२	१६ ४९	७ ३८	१६ ३३	७ ५९	१६ १३	८ ०८	१६ ०४	८ १९	१५ ५३
७ ,,	६ १९	१७ ५३	६ ३७	१७ ३५	६ ४७	१७ २७	६ ५७	१७ १६	७ ०९	१७ ०४	७ २२	१६ ५१	७ ३८	१६ ३५	७ ५८	१६ १६	८ ०७	१६ ०७	८ १८	१५ ५६
९ ,,	६ २०	१७ ५४	६ ३७	१७ ३६	६ ४७	१७ २८	६ ५७	१७ १७	७ ०९	१७ ०५	७ २२	१६ ५३	७ ३८	१६ ३७	७ ५८	१६ १८	८ ०६	१६ ०९	८ १७	१५ ५९
११ ,,	६ २०	१७ ५५	६ ३८	१७ ३८	६ ४७	१७ २९	६ ५७	१७ १८	७ ०९	१७ ०७	७ २२	१६ ५५	७ ३७	१६ ४०	७ ५७	१६ २१	८ ०५	१६ ११	८ १५	१६ ०२
१३ ,,	६ २१	१७ ५६	६ ३८	१७ ३९	६ ४७	१७ ३०	६ ५७	१७ २०	७ ०८	१७ ०९	७ २१	१६ ५७	७ ३७	१६ ४२	७ ५६	१६ २३	८ ०४	१६ १४	८ १४	१६ ०४
१५ ,,	६ २२	१७ ५८	६ ३८	१७ ४०	६ ४७	१७ ३१	६ ५७	१७ २२	७ ०८	१७ ११	७ २१	१६ ५९	७ ३६	१६ ४४	७ ५५	१६ २६	८ ०३	१६ १७	८ १२	१६ ०८
१७ ,,	६ २२	१७ ५९	६ ३८	१७ ४१	६ ४७	१७ ३३	६ ५७	१७ २४	७ ०८	१७ १३	७ २०	१७ ०१	७ ३५	१६ ४७	७ ५४	१६ २९	८ ०१	१६ २१	८ १०	१६ १२
१९ ,,	६ २३	१८ ००	६ ३८	१७ ४२	६ ४७	१७ ३४	६ ५६	१७ २५	७ ०७	१७ १५	७ १९	१७ ०३	७ ३३	१६ ५०	७ ५२	१६ ३२	७ ५९	१६ २४	८ ०८	१६ १५
२१ ,,	६ २३	१८ ०१	६ ३८	१७ ४३	६ ४७	१७ ३५	६ ५६	१७ २७	७ ०६	१७ १७	७ १८	१७ ०६	७ ३२	१६ ५२	७ ५०	१६ ३५	७ ५७	१६ २७	८ ०६	१६ १९
२३ ,,	६ २३	१८ ०२	६ ३८	१७ ४४	६ ४६	१७ ३८	६ ५५	१७ २९	७ ०५	१७ १९	७ १७	१७ ०८	७ ३०	१६ ५५	७ ४८	१६ ३९	७ ५४	१६ ३०	८ ०४	१६ २३
२५ ,,	६ २३	१८ ०३	६ ३७	१७ ४६	६ ४६	१७ ४०	६ ५५	१७ ३१	७ ०४	१७ २१	७ १६	१७ १०	७ २९	१६ ५८	७ ४५	१६ ४२	७ ५२	१६ ३४	८ ००	१६ २७
२७ ,,	६ २३	१८ ०४	६ ३७	१७ ४८	६ ४५	१७ ४२	६ ५४	१७ ३३	७ ०३	१७ २३	७ १४	१७ १३	७ २७	१६ ०१	७ ४२	१६ ४५	७ ४९	१६ ३८	७ ५७	१६ ३१
२९ ,,	६ २३	१८ ०५	६ ३७	१७ ४९	६ ४५	१७ ४३	६ ५३	१७ ३४	७ ०२	१७ २५	७ १३	१७ १५	७ २५	१६ ०४	७ ४०	१६ ४८	७ ४७	१६ ४२	७ ५४	१६ ३५
३१ ,,	६ २३	१८ ०५	६ ३७	१७ ५१	६ ४४	१७ ४४	६ ५२	१७ ३६	७ ०१	१७ २७	७ ११	१७ १८	७ २३	१६ ०७	७ ३७	१६ ५२	७ ४४	१६ ४६	७ ५१	१६ ३९

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
२ फर	६ २३	१८ ०६	६ ३६	१७ ५२	६ ४३	१७ ४५	६ ५०	१७ ३७	६ ५९	१७ २९	७ ०९	१७ २०	७ २१	१७ ०९	७ ३४	१६ ५६	७ ४१	१६ ५०	७ ४८	१६ ४३
४ ,,	६ २२	१८ ०६	६ ३५	१७ ५३	६ ४१	१७ ४७	६ ४९	१७ ३९	६ ५८	१७ ३१	७ ०७	१७ २३	७ १८	१७ १२	७ ३२	१७ ००	७ ३८	१६ ५४	७ ४४	१६ ४७
६ ,,	६ २२	१८ ०७	६ ३४	१७ ५४	६ ४०	१७ ४९	६ ४८	१७ ४१	६ ५६	१७ ३३	७ ०५	१७ २५	७ १६	१७ १५	७ २८	१७ ०३	७ ३४	१६ ५७	७ ४१	१६ ५१
८ ,,	६ २२	१८ ०७	६ ३४	१७ ५५	६ ३९	१७ ५०	६ ४७	१७ ४२	६ ५४	१७ ३५	७ ०३	१७ २७	७ १३	१७ १७	७ २५	१७ ०७	७ ३१	१७ ०१	७ ३७	१६ ५५
१० ,,	६ २१	१८ ०८	६ ३३	१७ ५६	६ ३८	१७ ५०	६ ४५	१७ ४४	६ ५२	१७ ३७	७ ०१	१७ ३०	७ १०	१७ २०	७ २२	१७ १०	७ २७	१७ ०५	७ ३३	१६ ५९
१२ ,,	६ २१	१८ ०८	६ ३२	१७ ५७	६ ३६	१७ ५२	६ ४४	१७ ४६	६ ५०	१७ ३९	६ ५८	१७ ३२	७ ०८	१७ २३	७ १८	१७ १३	७ २४	१७ ०८	७ २९	१७ ०३
१४ ,,	६ २०	१८ ०८	६ ३१	१७ ५८	६ ३६	१७ ५३	६ ४२	१७ ४७	६ ४८	१७ ४१	६ ५६	१७ ३४	७ ०५	१७ २६	७ १५	१७ १६	७ २०	१७ १२	७ २५	१७ ०७
१६ ,,	६ २०	१८ ०९	६ ३०	१७ ५९	६ ३४	१७ ५५	६ ४०	१७ ४९	६ ४६	१७ ४३	६ ५३	१७ ३६	७ ०२	१७ २९	७ ११	१७ २०	७ १६	१७ १५	७ २१	१७ ११
१८ ,,	६ १९	१८ ०९	६ २८	१८ ००	६ ३३	१७ ५६	६ ३८	१७ ५०	६ ४३	१७ ४५	६ ५१	१७ ३९	६ ५८	१७ ३२	७ ०८	१७ २३	७ १२	१७ १९	७ १७	१७ १५
२० ,,	६ १९	१८ ०९	६ २७	१८ ०१	६ ३१	१७ ५७	६ ३६	१७ ५२	६ ४१	१७ ४७	६ ४८	१७ ४२	६ ५५	१७ ३५	७ ०४	१७ २६	७ ०८	१७ २३	७ १२	१७ १९
२२ ,,	६ १८	१८ १०	६ २६	१८ ०२	६ ३०	१७ ५८	६ ३५	१७ ५३	६ ३९	१७ ४९	६ ४५	१७ ४४	६ ५२	१७ ३८	७ ००	१७ २९	७ ०४	१७ २७	७ ०८	१७ २३
२४ ,,	६ १७	१८ १०	६ २४	१८ ०३	६ २७	१७ ५९	६ ३३	१७ ५५	६ ३६	१७ ५१	६ ४३	१७ ४६	६ ४९	१७ ४१	६ ५६	१७ ३३	७ ००	१७ ३०	७ ०३	१७ २७
२६ ,,	६ १६	१८ १०	६ २३	१८ ०३	६ २६	१८ ००	६ ३०	१७ ५६	६ ३४	१७ ५३	६ ४०	१७ ४८	६ ४६	१७ ४३	६ ५२	१७ ३६	६ ५५	१७ ३३	६ ५९	१७ ३१
२८ ,,	६ १५	१८ १०	६ २२	१८ ०४	६ २४	१८ ०१	६ २८	१७ ५८	६ ३२	१७ ५४	६ ३८	१७ ५०	६ ४२	१७ ४५	६ ४८	१७ ३९	६ ५१	१७ ३६	६ ५४	१७ ३४
१ मार्च	६ १५	१८ १०	६ २०	१८ ०५	६ २३	१८ ०२	६ २६	१७ ५९	६ ३०	१७ ५५	६ ३४	१७ ५२	६ ३९	१७ ४७	६ ४४	१७ ४२	६ ४७	१७ ३९	६ ५०	१७ ३८
३ ,,	६ १४	१८ ११	६ १९	१८ ०५	६ २२	१८ ०३	६ २४	१८ ००	६ २८	१७ ५७	६ ३१	१७ ५४	६ ३५	१७ ४९	६ ४०	१७ ४५	६ ४२	१७ ४३	६ ४५	१७ ४१
५ ,,	६ १३	१८ ११	६ १७	१८ ०६	६ २०	१८ ०४	६ २२	१८ ०२	६ २४	१७ ५९	६ २८	१७ ५६	६ ३२	१७ ५२	६ ३६	१७ ४८	६ ३८	१७ ४७	६ ४०	१७ ४४
७ ,,	६ १२	१८ ११	६ १५	१८ ०७	६ १८	१८ ०५	६ २०	१८ ०३	६ २२	१८ ०१	६ २५	१७ ५८	६ २८	१७ ५५	६ ३२	१७ ५१	६ ३३	१७ ५०	६ ३५	१७ ४८
९ ,,	६ ११	१८ ११	६ १४	१८ ०८	६ १६	१८ ०६	६ १८	१८ ०४	६ २०	१८ ०२	६ २२	१८ ००	६ २६	१७ ५८	६ २८	१७ ५५	६ २९	१७ ५४	६ ३०	१७ ५२
११ ,,	६ १०	१८ ११	६ १२	१८ ०८	६ १४	१८ ०७	६ १५	१८ ०५	६ १७	१८ ०४	६ १९	१८ ०३	६ २१	१८ ००	६ २३	१७ ५८	६ २४	१७ ५७	६ २६	१७ ५६
१३ ,,	६ ०८	१८ ११	६ ११	१८ ०९	६ १२	१८ ०८	६ १३	१८ ०७	६ १४	१८ ०६	६ १६	१८ ०५	६ १७	१८ ०३	६ १९	१८ ०१	६ २०	१८ ०१	६ २१	१८ ००
१५ ,,	६ ०७	१८ ११	६ ०९	१८ १०	६ १०	१८ ०९	६ १०	१८ ०८	६ ११	१८ ०७	६ १२	१८ ०८	६ १३	१८ ०७	६ १५	१८ ०५	६ १५	१८ ०४	६ १६	१८ ०३
१७ ,,	६ ०६	१८ ११	६ ०८	१८ १०	६ ०८	१८ १०	६ ०८	१८ ०९	६ ०९	१८ ०९	६ ०९	१८ ०९	६ १०	१८ ०८	६ १०	१८ ०८	६ ११	१८ ०८	६ १२	१८ ०७
१९ ,,	६ ०५	१८ ११	६ ०५	१८ ११	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ ११	६ ०६	१८ १०	६ ०६	१८ ११	६ ०६	१८ ११	६ ०६	१८ ११
२१ ,,	६ ०४	१८ ११	६ ०४	१८ ११	६ ०४	१८ ११	६ ०३	१८ १२	६ ०२	१८ १२	६ ०२	१८ १३	६ ०२	१८ १३	६ ०२	१८ १४	६ ०१	१८ १५	६ ०१	१८ १५
२३ ,,	६ ०३	१८ ११	६ ०३	१८ १२	६ ०२	१८ १२	६ ०१	१८ १३	५ ५९	१८ १४	५ ५९	१८ १५	५ ५८	१८ १६	५ ५७	१८ १७	५ ५७	१८ १८	५ ५६	१८ १९
२५ ,,	६ ०२	१८ ११	६ ०२	१८ १२	६ ००	१८ १३	५ ५८	१८ १४	५ ५६	१८ १५	५ ५६	१८ १७	५ ५५	१८ १९	५ ५३	१८ २१	५ ५२	१८ २१	५ ५१	१८ २२
२७ ,,	६ ००	१८ ११	६ ००	१८ १२	५ ५७	१८ १४	५ ५६	१८ १५	५ ५३	१८ १६	५ ५३	१८ १९	५ ५१	१८ २१	५ ४८	१८ २४	५ ४७	१८ २४	५ ४६	१८ २६
२९ ,,	५ ५९	१८ ११	५ ५७	१८ १३	५ ५५	१८ १५	५ ५३	१८ १७	५ ५०	१८ १८	५ ५०	१८ २१	५ ४७	१८ २४	५ ४४	१८ २७	५ ४३	१८ २८	५ ४१	१८ ३०
३१ ,,	५ ५८	१८ १०	५ ५५	१८ १३	५ ५३	१८ १६	५ ५१	१८ १८	५ ४६	१८ २०	५ ४६	१८ २३	५ ४३	१८ २६	५ ४२	१८ ३०	५ ३९	१८ ३१	५ ३४	१८ ३३
२ अप्रै	५ ५७	१८ १०	५ ५३	१८ १४	५ ५१	१८ १७	५ ४९	१८ १९	५ ४५	१८ २२	५ ४३	१८ २५	५ ४०	१८ २९	५ ४०	१८ ३३	५ ३४	१८ ३१	५ ३१	१८ ३७
४ ,,	५ ५६	१९ १०	५ ५१	१८ १४	५ ४९	१८ १७	५ ४६	१८ २०	५ ४३	१८ २३	५ ४०	१८ २७	५ ३६	१८ ३१	५ ३६	१८ ३६	५ २९	१८ ३८	५ २६	१८ ४१
६ ,,	५ ५५	१८ १०	५ ५०	१८ १५	५ ४७	१८ १८	५ ४४	१८ २१	५ ४१	१८ २५	५ ३७	१८ २९	५ ३२	१८ ३४	५ ३२	१८ ३९	५ २६	१८ ४२	५ २२	१८ ४५
८ ,,	५ ५४	१८ १०	५ ४८	१८ १६	५ ४५	१८ १९	५ ४२	१८ २२	५ ३८	१८ २६	५ ३४	१८ ३१	५ २९	१८ ३६	५ २९	१८ ४२	५ १९	१८ ४५	५ १७	१८ ४८
१० ,,	५ ५२	१८ १०	५ ४६	१८ १७	५ ४३	१८ २०	५ ४०	१८ २४	५ ३५	१८ २८	५ ३१	१८ ३३	५ २५	१८ ३९	५ २५	१८ ४६	५ १४	१८ ४९	५ १२	१८ ५२
१२ ,,	५ ५१	१८ १०	५ ४५	१८ १७	५ ४१	१८ २१	५ ३८	१८ २५	५ ३३	१८ २९	५ २८	१८ ३५	५ २१	१८ ४१	५ २१	१८ ४९	५ ११	१८ ५२	५ ०७	१८ ५६
१४ ,,	५ ५०	१८ १०	५ ४३	१८ १८	५ ३९	१८ २२	५ ३५	१८ २६	५ ३०	१८ ३१	५ २४	१८ ३७	५ १८	१८ ४४	५ १८	१८ ५२	५ ०६	१८ ५६	५ ०२	१९ ००
१६ ,,	५ ४९	१८ १०	५ ४१	१८ १८	५ ३७	१८ २३	५ ३३	१८ २७	५ २७	१८ ३२	५ २१	१८ ३९	५ १४	१८ ४६	५ १४	१८ ५५	५ ०२	१८ ५९	४ ५८	१९ ०४
१८ ,,	५ ४८	१८ १०	५ ४०	१८ १९	५ ३६	१८ २४	५ ३०	१८ २९	५ २५	१८ ३४	५ १८	१८ ४१	५ १२	१८ ४९	५ १२	१८ ५८	४ ५८	१९ ०२	४ ५३	१९ ०७
२० ,,	५ ४७	१८ ११	५ ३९	१८ १९	५ ३४	१८ २४	५ २८	१८ ३०	५ २२	१८ ३६	५ १६	१८ ४३	५ ०८	१८ ५१	५ ०८	१९ ०१	४ ५३	१९ ०४	४ ४८	१९ ११
२२ ,,	५ ४६	१८ ११	५ ३७	१८ २०	५ ३२	१८ २५	५ २६	१८ ३१	५ २०	१८ ३८	५ १३	१८ ४५	५ ०४	१८ ५४	५ ०४	१९ ०४	४ ४९	१९ ०९	४ ४४	१९ १५
२४ ,,	५ ४५	१८ ११	५ ३६	१८ २०	५ ३१	१८ २६	५ २४	१८ ३२	५ १७	१८ ३९	५ १०	१८ ४७	५ ०१	१८ ५६	५ ०१	१९ ०७	४ ४५	१९ १३	४ ३९	१९ १८

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अप्रैल	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
२६ अप्रै	५ ४५	१८ ११	५ ३४	१८ २१	५ २९	१८ २७	५ २२	१८ ३४	५ १५	१८ ४१	५ ०८	१८ ४९	४ ५८	१८ ५९	४ ५८	१९ ११	४ ४१	१९ १६	४ ३५	१९ २२
२८ ,,	५ ४४	१८ ११	५ ३३	१८ २२	५ २७	१८ २८	५ २०	१८ ३५	५ १३	१८ ४३	५ ०४	१८ ५१	४ ५४	१९ ०१	४ ५४	१९ १४	४ ३७	१९ १९	४ ३१	१९ २५
३० ,,	५ ४३	१८ ११	५ ३२	१८ २३	५ २६	१८ २९	५ १८	१८ ३६	५ ११	१८ ४४	५ ०२	१८ ५३	४ ५१	१९ ०४	४ ५१	१९ १७	४ ३३	१९ २३	४ २६	१९ २९
२ मई	५ ४२	१८ १२	५ ३०	१८ २३	५ २४	१८ ३०	५ १६	१८ ३८	५ ०९	१८ ४६	४ ५९	१८ ५५	४ ४८	१९ ०६	४ ३५	१९ २०	४ २९	१९ २६	४ २२	१९ ३३
४ ,,	५ ४२	१८ १२	५ २९	१८ २४	५ २३	१८ ३१	५ १५	१८ ३९	५ ०७	१८ ४७	४ ५७	१८ ५७	४ ४५	१९ ०९	४ ३२	१९ २३	४ २५	१९ २९	४ १८	१९ ३७
६ ,,	५ ४१	१८ १२	५ २८	१८ २५	५ २१	१८ ३२	५ १३	१८ ४०	५ ०५	१८ ४९	४ ५४	१८ ५९	४ ४३	१९ ११	४ २८	१९ २६	४ २२	१९ ३२	४ १४	१९ ४०
८ ,,	५ ४०	१८ १२	५ २७	१८ २६	५ २०	१८ ३३	५ १२	१८ ४१	५ ०३	१८ ५१	४ ५२	१९ ०१	४ ४०	१९ १४	४ २५	१९ २९	४ १८	१९ ३६	४ १०	१९ ४४
१० ,,	५ ४०	१८ १३	५ २६	१८ २६	५ १९	१८ ३४	५ ११	१८ ४२	५ ०१	१८ ५३	४ ५०	१९ ०३	४ ३७	१९ १६	४ २०	१९ ३२	४ १५	१९ ३९	४ ०६	१९ ४७
१२ ,,	५ ४०	१८ १३	५ २५	१८ २७	५ १८	१८ ३५	५ ०९	१८ ४४	४ ५९	१८ ५४	४ ४८	१९ ०५	४ ३५	१९ १९	४ १७	१९ ३५	४ ११	१९ ४२	४ ०३	१९ ५१
१४ ,,	५ ३९	१८ १४	५ २४	१८ २८	५ १७	१८ ३६	५ ०७	१८ ४६	४ ५७	१८ ५६	४ ४६	१९ ०७	४ ३२	१९ २१	४ १४	१९ ३७	४ ०८	१९ ४५	३ ५९	१९ ५४
१६ ,,	५ ३९	१८ १४	५ २४	१८ २९	५ १६	१८ ३७	५ ०६	१८ ४७	४ ५६	१८ ५७	४ ४४	१९ ०९	४ ३०	१९ २४	४ १२	१९ ४०	४ ०५	१९ ४९	३ ५६	१९ ५८
१८ ,,	५ ३८	१८ १४	५ २३	१८ ३०	५ १५	१८ ३८	५ ०५	१८ ४८	४ ५४	१८ ५९	४ ४२	१९ ११	४ २८	१९ २६	४ ०९	१९ ४३	४ ०२	१९ ५२	३ ५३	२० ०१
२० ,,	५ ३८	१८ १५	५ २२	१८ ३१	५ १४	१८ ३९	५ ०४	१८ ४९	४ ५३	१९ ००	४ ४१	१९ १३	४ २६	१९ २८	४ ०७	१९ ४६	३ ५९	१९ ५५	३ ५०	२० ०४
२२ ,,	५ ३८	१८ १५	५ २२	१८ ३१	५ १३	१८ ४०	५ ०३	१८ ५०	४ ५२	१९ ०२	४ ३९	१९ १५	४ २४	१९ ३०	४ ०४	१९ ४८	३ ५७	१९ ५८	३ ४७	२० ०७
२४ ,,	५ ३८	१८ १६	५ २१	१८ ३२	५ १२	१८ ४१	५ ०२	१८ ५१	४ ५१	१९ ०३	४ ३८	१९ १६	४ २२	१९ ३२	४ ०२	१९ ५१	३ ५४	२० ००	३ ४४	२० १०
२६ ,,	५ ३८	१८ १६	५ २१	१८ ३३	५ ११	१८ ४२	५ ०१	१८ ५२	४ ५०	१९ ०५	४ ३६	१९ १८	४ २१	१९ ३४	४ ०१	१९ ५३	३ ५२	२० ०३	३ ४२	२० १३
२८ ,,	५ ३८	१८ १७	५ २०	१८ ३४	५ ११	१८ ४३	५ ००	१८ ५४	४ ४९	१९ ०६	४ ३५	१९ १९	४ १९	१९ ३६	३ ५९	१९ ५६	३ ५०	२० ०५	३ ३९	२० १६
३० ,,	५ ३८	१८ १७	५ २०	१८ ३४	५ ११	१८ ४४	५ ००	१८ ५५	४ ४८	१९ ०७	४ ३४	१९ २०	४ १८	१९ ३८	३ ५८	१९ ५८	३ ४८	२० ०८	३ ३७	२० १८
१ जून	५ ३८	१८ १८	५ २०	१८ ३५	५ १०	१८ ४५	४ ५९	१८ ५६	४ ४७	१९ ०८	४ ३३	१९ २२	४ १७	१९ ३९	३ ५६	२० ००	३ ४६	२० १०	३ ३५	२० २१
३ ,,	५ ३८	१८ १८	५ २०	१८ ३६	५ १०	१८ ४६	४ ५९	१८ ५७	४ ४७	१९ ०९	४ ३२	१९ २४	४ १६	१९ ४१	३ ५५	२० ०२	३ ४५	२० १२	३ ३३	२० २३
५ ,,	५ ३८	१८ १९	५ २०	१८ ३७	५ १०	१८ ४७	४ ५८	१८ ५८	४ ४६	१९ १०	४ ३२	१९ २५	४ १५	१९ ४२	३ ५३	२० ०४	३ ४३	२० १४	३ ३२	२० २६
७ ,,	५ ३८	१८ १९	५ २०	१८ ३७	५ १०	१८ ४८	४ ५८	१८ ५९	४ ४६	१९ ११	४ ३१	१९ २७	४ १४	१९ ४४	३ ५२	२० ०६	३ ४२	२० १६	३ ३०	२० २८
९ ,,	५ ३९	१८ २०	५ २०	१८ ३८	५ १०	१८ ४९	४ ५८	१९ ००	४ ४६	१९ १२	४ ३१	१९ २८	४ १४	१९ ४५	३ ५२	२० ०७	३ ४१	२० १८	३ २९	२० ३०
११ ,,	५ ३९	१८ २०	५ २०	१८ ३९	५ १०	१८ ५०	४ ५८	१९ ०१	४ ४५	१९ १३	४ ३०	१९ २९	४ १३	१९ ४६	३ ५१	२० ०८	३ ४१	२० २०	३ २८	२० ३१
१३ ,,	५ ३९	१८ २१	५ २०	१८ ४०	५ १०	१८ ५१	४ ५८	१९ ०१	४ ४५	१९ १४	४ ३०	१९ ३०	४ १२	१९ ४८	३ ५०	२० १०	३ ४०	२० २२	३ २७	२० ३४
१५ ,,	५ ३९	१८ २१	५ २०	१८ ४०	५ १०	१८ ५१	४ ५९	१९ ०२	४ ४६	१९ १५	४ ३०	१९ ३१	४ १२	१९ ४९	३ ५०	२० ११	३ ३९	२० २२	३ २७	२० ३५
१७ ,,	५ ३९	१८ २२	५ २१	१८ ४१	५ १०	१८ ५१	४ ५९	१९ ०३	४ ४६	१९ १६	४ ३१	१९ ३१	४ १३	१९ ४९	३ ५०	२० १२	३ ३९	२० २३	३ २७	२० ३६
१९ ,,	५ ४०	१८ २२	५ २१	१८ ४१	५ ११	१८ ५२	४ ५९	१९ ०३	४ ४६	१९ १६	४ ३१	१९ ३२	४ १३	१९ ५०	३ ५०	२० १२	३ ३९	२० २३	३ २७	२० ३६
२१ ,,	५ ४०	१८ २३	५ २२	१८ ४२	५ ११	१८ ५२	५ ००	१९ ०४	४ ४७	१९ १७	४ ३१	१९ ३२	४ १३	१९ ५०	३ ५१	२० १३	३ ४०	२० २३	३ २७	२० ३६
२३ ,,	५ ४१	१८ २३	५ २२	१८ ४२	५ १२	१८ ५३	५ ००	१९ ०४	४ ४७	१९ १७	४ ३३	१९ ३३	४ १४	१९ ५१	३ ५२	२० १३	३ ४१	२० २४	३ २८	२० ३६
२५ ,,	५ ४१	१८ २४	५ २३	१८ ४३	५ १२	१८ ५३	५ ०१	१९ ०५	४ ४८	१९ १७	४ ३३	१९ ३३	४ १५	१९ ५१	३ ५३	२० १३	३ ४१	२० २४	३ २९	२० ३६
२७ ,,	५ ४२	१८ २४	५ २३	१८ ४३	५ १३	१८ ५३	५ ०१	१९ ०५	४ ४८	१९ १८	४ ३४	१९ ३३	४ १६	१९ ५१	३ ५४	२० १३	३ ४३	२० २४	३ २९	२० ३६
२९ ,,	५ ४२	१८ २४	५ २४	१८ ४३	५ १३	१८ ५३	५ ०२	१९ ०५	४ ४९	१९ १८	४ ३४	१९ ३३	४ १७	१९ ५१	३ ५४	२० १३	३ ४३	२० २४	३ ३२	२० ३६
१ जुला	५ ४२	१८ २४	५ २४	१८ ४३	५ १४	१८ ५३	५ ०२	१९ ०५	४ ४९	१९ १८	४ ३४	१९ ३२	४ १७	१९ ५०	३ ५४	२० १२	३ ४४	२० २३	३ ३२	२० ३५
३ ,,	५ ४३	१८ २५	५ २४	१८ ४३	५ १५	१८ ५४	५ ०३	१९ ०५	४ ५०	१९ १७	४ ३५	१९ ३२	४ १८	१९ ५०	३ ५६	२० १२	३ ४५	२० २२	३ ३३	२० ३४
५ ,,	५ ४४	१८ २५	५ २५	१८ ४३	५ १५	१८ ५३	५ ०४	१९ ०५	४ ५१	१९ १७	४ ३७	१९ ३१	४ १९	१९ ४९	३ ५८	२० ११	३ ४७	२० २१	३ ३५	२० ३३
७ ,,	५ ४४	१८ २५	५ २६	१८ ४३	५ १६	१८ ५३	५ ०५	१९ ०४	४ ५२	१९ १७	४ ३८	१९ ३१	४ २०	१९ ४९	४ ००	२० १०	३ ४९	२० २०	३ ३७	२० ३२
९ ,,	५ ४५	१० २५	५ २७	१८ ४३	५ १७	१८ ५३	५ ०६	१९ ०४	४ ५३	१९ १६	४ ३९	१९ ३१	४ २२	१९ ४८	४ ०२	२० ०९	३ ५१	२० १८	३ ४०	२० ३०
११ ,,	५ ४५	१८ २५	५ २७	१८ ४३	५ १८	१८ ५३	५ ०७	१९ ०४	४ ५४	१९ १६	४ ४०	१९ ३०	४ २४	१९ ४७	४ ०४	२० ०७	३ ५३	२० १७	३ ४२	२० २८
१३ ,,	५ ४६	१८ २५	५ २८	१८ ४३	५ १९	१८ ५३	५ ०८	१९ ०३	४ ५६	१९ १५	४ ४२	१९ २९	४ २५	१९ ४५	४ ०६	२० ०५	३ ५५	२० १६	३ ४४	२० २६
१५ ,,	५ ४६	१८ २५	५ २९	१८ ४३	५ २०	१८ ५२	५ ०९	१९ ०२	४ ५७	१९ १४	४ ४३	१९ २८	४ २७	१९ ४४	४ ०८	२० ०४	३ ५७	२० १४	३ ४७	२० २४
१७ ,,	५ ४७	१८ २५	५ २९	१८ ४२	५ २१	१८ ५२	५ १०	१९ ०१	४ ५८	१९ १३	४ ४५	१९ २७	४ २९	१९ ४२	४ १०	२० ०२	४ ००	२० १२	३ ५०	२० २२

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ:	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
१९ जुला	५ ४७	१८ २५	५ ३०	१८ ४२	५ २२	१८ ५१	५ ११	१९ ०१	४ ५९	१९ १२	४ ४६	१९ २५	४ ३१	१९ ४१	४ १२	२० ००	४ ०३	२० ०९	३ ५२	२० १९
२१ ,,	५ ४७	१८ २५	५ ३१	१८ ४१	५ २२	१८ ५०	५ १२	१९ ००	५ ०१	१९ ११	४ ४८	१९ २४	४ ३३	१९ ३९	४ १४	१९ ५७	४ ०६	२० ०७	३ ५५	२० १७
२३ ,,	५ ४७	१८ २५	५ ३२	१८ ४१	५ २३	१८ ४९	५ १३	१८ ५९	५ ०२	१९ १०	४ ५०	१९ २२	४ ३५	१९ ३७	४ १६	१९ ५५	४ ०८	२० ०४	३ ५८	२० १४
२५ ,,	५ ४८	१८ २४	५ ३२	१८ ४०	५ २४	१८ ४८	५ १४	१८ ५८	५ ०४	१९ ०८	४ ५१	१९ २१	४ ३७	१९ ३५	४ १९	१९ ५३	४ ११	२० ०१	४ ०१	२० ११
२७ ,,	५ ४८	१८ २४	५ ३३	१८ ३९	५ २५	१८ ४७	५ १५	१८ ५७	५ ०५	१९ ०७	४ ५३	१९ १९	४ ३९	१९ ३३	४ २२	१९ ५०	४ १४	१९ ५८	४ ०४	२० ०७
२९ ,,	५ ४९	१८ २३	५ ३४	१८ ३८	५ २६	१८ ४६	५ १७	१८ ५५	५ ०७	१९ ०५	४ ५५	१९ १७	४ ४१	१९ ३१	४ २४	१९ ४७	४ १७	१९ ५५	४ ०७	२० ०४
३१ ,,	५ ४९	१८ २३	५ ३५	१८ ३७	५ २७	१८ ४५	५ १७	१८ ५४	५ ०८	१९ ०४	४ ५७	१९ १५	४ ४४	१९ २८	४ २७	१९ ४४	४ २०	१९ ५२	४ ११	२० ०१
२ अग	५ ५०	१८ २२	५ ३५	१८ ३६	५ २८	१८ ४४	५ १९	१८ ५२	५ ०९	१९ ०२	४ ५९	१९ १३	४ ४६	१९ २५	४ ३०	१९ ४१	४ २३	१९ ४८	४ १४	१९ ५७
४ ,,	५ ५०	१८ २२	५ ३६	१८ ३५	५ २९	१८ ४३	५ २०	१८ ५१	५ ११	१९ ००	५ ००	१९ ११	४ ४८	१९ २३	४ ३३	१९ ३८	४ २६	१९ ४५	४ १८	१९ ५३
६ ,,	५ ५०	१८ २१	५ ३६	१८ ३४	५ ३०	१८ ४२	५ २२	१८ ५०	५ १२	१८ ५८	५ ०२	१९ ०८	४ ५०	१९ २०	४ ३६	१९ ३४	४ २८	१९ ४२	४ २१	१९ ४९
८ ,,	५ ५०	१८ २१	५ ३७	१८ ३३	५ ३१	१८ ४०	५ २३	१८ ४८	५ १४	१८ ५६	५ ०४	१९ ०६	४ ५३	१९ १८	४ ३९	१९ ३१	४ ३२	१९ ३८	४ २५	१९ ४५
१० ,,	५ ५०	१८ २०	५ ३८	१८ ३२	५ ३२	१८ ३९	५ २५	१८ ४६	५ १६	१८ ५४	५ ०६	१९ ०३	४ ५५	१९ १५	४ ४२	१९ २८	४ ३५	१९ ३४	४ २८	१९ ४५
१२ ,,	५ ५१	१८ १९	५ ३९	१८ ३१	५ ३३	१८ ३७	५ २६	१८ ४४	५ १७	१८ ५२	५ ०८	१९ ०१	४ ५७	१९ १२	४ ४५	१९ २४	४ ३८	१९ ३०	४ ३२	१९ ३७
१४ ,,	५ ५१	१८ १८	५ ३९	१८ ३०	५ ३३	१८ ३५	५ २७	१८ ४२	५ १९	१८ ४९	५ १०	१८ ५८	५ ००	१९ ०८	४ ४७	१९ २१	४ ४२	१९ २६	४ ३५	१९ ३२
१६ ,,	५ ५१	१८ १७	५ ४०	१८ २८	५ ३४	१८ ३४	५ २८	१८ ४०	५ २०	१८ ४७	५ १२	१८ ५६	५ ०२	१९ ०५	४ ५१	१९ १७	४ ४५	१९ २२	४ ३९	१९ २८
१८ ,,	५ ५१	१८ १६	५ ४१	१८ २६	५ ३५	१८ ३२	५ २९	१८ ३८	५ २२	१८ ४५	५ १४	१८ २३	५ ०४	१९ ०२	४ ५३	१९ १३	४ ४८	१९ १८	४ ४२	१९ २३
२० ,,	५ ५१	१८ १५	५ ४१	१८ २५	५ ३६	१८ ३०	५ ३०	१८ ३६	५ २३	१८ ४३	५ १६	१८ ५०	५ ०७	१८ ५९	४ ५७	१९ ०९	४ ५१	१९ १४	४ ४६	१९ १९
२२ ,,	५ ५१	१८ १४	५ ४२	१८ २३	५ ३७	१८ २८	५ ३२	१८ ३४	५ २५	१८ ४०	५ १८	१८ ४७	५ ०९	१८ ५६	४ ५९	१९ ०५	४ ५५	१० १०	४ ४९	१९ १५
२४ ,,	५ ५१	१८ १३	४ ४२	१८ २२	५ ३८	१८ २७	५ ३३	१८ ३२	५ २६	१८ ३७	५ १९	१८ ४४	५ १२	१८ ५२	५ ०२	१९ ०१	४ ५८	१९ ०६	४ ५३	१९ १०
२६ ,,	५ ५१	१८ १२	५ ४३	१८ २०	५ ३९	१८ २५	५ ३४	१८ २९	५ २८	१८ ३४	५ २१	१८ ४१	५ १४	१८ ४९	५ ०५	१८ ५७	५ ०१	१९ ०२	४ ५७	१९ ०५
२८ ,,	५ ५१	१८ ११	५ ४३	१८ १९	५ ३९	१८ २३	५ ३५	१८ २७	५ २९	१८ ३२	५ २३	१८ ३८	५ १६	१८ ४५	५ ०८	१८ ५३	५ ०४	१८ ५७	५ ००	१९ ०१
३० ,,	५ ५१	१८ १०	५ ४४	१८ १७	५ ४०	१८ २१	५ ३६	१८ २५	५ ३१	१८ २९	५ २५	१८ ३५	५ १९	१८ ४१	५ ११	१८ ४९	५ ०८	१८ ५३	५ ०४	१८ ५६
१ सितं	५ ५१	१९ ०९	५ ४४	१८ १५	५ ४१	१८ १९	५ ३७	१८ २३	५ ३२	१८ २७	५ २७	१८ ३२	५ २२	१८ ३८	५ १४	१८ ४५	५ ११	१८ ४८	५ ०८	१८ ५१
३ ,,	५ ५१	१८ ०८	५ ४५	१८ १३	५ ४२	१८ १७	५ ३८	१८ २०	५ ३४	१८ २४	५ २९	१८ २९	५ २४	१८ ३४	५ १६	१८ ४१	५ १४	१८ ४३	५ ११	१८ ४७
५ ,,	५ ५१	१८ ०७	५ ४६	१८ १२	५ ४२	१८ १५	५ ३९	१८ १८	५ ३५	१८ २१	५ ३१	१८ २६	५ २६	१८ ३०	५ २०	१८ ३६	५ १७	१८ ३९	५ १५	१८ ४२
७ ,,	५ ५०	१८ ०६	५ ४६	१८ १०	५ ४३	१८ १२	५ ४०	१८ १५	५ ३७	१८ १८	५ ३३	१८ २३	५ २८	१८ २७	५ २३	१८ ३१	५ २१	१८ ३४	५ १८	१८ ३७
९ ,,	५ ५०	१८ ०४	५ ४६	१८ ०८	५ ४४	१८ १०	५ ४१	१८ १३	५ ३८	१८ १६	५ ३५	१८ ११	५ ३१	१८ २३	५ २६	१८ २७	५ २४	१८ २९	५ २२	१८ ३२
११ ,,	५ ५०	१८ ०३	५ ४६	१८ ०७	५ ४४	१८ ०८	५ ४२	१८ १०	५ ३९	१८ १३	५ ३७	१८ १६	५ ३३	१८ १९	५ २९	१८ २३	५ २७	१८ २४	५ २५	१८ २७
१३ ,,	५ ५०	१८ ०२	५ ४७	१८ ०५	५ ४५	१८ ०६	५ ४३	१८ ०८	५ ४१	१८ १०	५ ३९	१८ १३	५ ३६	१८ १५	५ ३२	१८ १९	५ ३०	१८ २०	५ २९	१८ २२
१५ ,,	५ ५०	१८ ००	५ ४७	१८ ०३	५ ४६	१८ ०४	५ ४४	१८ ०५	५ ४२	१८ ०७	५ ४०	१८ १०	५ ३८	१८ ११	५ ३४	१८ १४	५ ३४	१८ १६	५ ३२	१८ १७
१७ ,,	५ ५०	१७ ५९	५ ४८	१८ ०१	५ ४७	१८ ०२	५ ४५	१८ ०३	५ ४४	१८ ०४	५ ४२	१८ ०६	५ ४१	१८ ०८	५ ३८	१८ १०	५ ३७	१८ ११	५ ३६	१८ १२
१९ ,,	५ ४९	१७ ५८	५ ४८	१७ ५९	५ ४७	१८ ००	५ ४६	१८ ०१	५ ४५	१८ ०२	५ ४४	१८ ०३	५ ४३	१८ ०४	५ ४१	१८ ०६	५ ४१	१८ ०६	५ ४०	१८ ०७
२१ ,,	५ ४९	१७ ५७	५ ४८	१७ ५७	५ ४८	१७ ५८	५ ४७	१७ ५८	५ ४७	१७ ५९	५ ४६	१७ ५९	५ ४५	१८ ००	५ ४४	१८ ०१	५ ४४	१८ ०१	५ ४३	१८ ०२
२३ ,,	५ ४९	१७ ५५	५ ४९	१७ ५५	५ ४९	१७ ५५	५ ४९	१७ ५६	५ ४८	१७ ५६	५ ४८	१७ ५६	५ ४८	१७ ५६	५ ४७	१७ ५६	५ ४७	१७ ५६	५ ४७	१७ ५७
२५ ,,	५ ४९	१७ ५४	५ ४९	१७ ५४	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५३	५ ५०	१७ ५२	५ ५०	१७ ५२	५ ५०	१७ ५२	५ ५०	१७ ५२
२७ ,,	५ ४९	१७ ५३	५ ५०	१७ ५२	५ ५१	१७ ५१	५ ५१	१७ ५०	५ ५१	१७ ५०	५ ५२	१७ ५०	५ ५२	१७ ४८	५ ५३	१७ ४८	५ ५३	१७ ४८	५ ५४	१७ ४७
२९ ,,	५ ४९	१७ ५२	५ ५१	१७ ५०	५ ५१	१७ ४९	५ ५२	१७ ४८	५ ५३	१७ ४७	५ ५४	१७ ४६	५ ५५	१७ ४५	५ ५६	१७ ४३	५ ५७	१७ ४३	५ ५८	१७ ४२
१ अक्तू	५ ४९	१७ ५१	५ ५१	१७ ४८	५ ५२	१७ ४७	५ ५३	१७ ४६	५ ५४	१७ ४४	५ ५६	१७ ४३	५ ५७	१७ ४१	५ ५९	१७ ३८	६ ००	१७ ३९	६ ०१	१७ ३७
३ ,,	५ ४९	१७ ४९	५ ५१	१७ ४६	५ ५३	१७ ४५	५ ५४	१७ ४३	५ ५६	१७ ४१	५ ५८	१७ ४०	६ ००	१७ ३७	६ ०३	१७ ३५	६ ०३	१७ ३४	६ ०५	१७ ३२
५ ,,	५ ४८	१७ ४८	५ ५२	१७ ४४	५ ५४	१७ ४३	५ ५५	१७ ४०	५ ५७	१७ ३८	६ ००	१७ ३७	६ ०२	१७ ३३	६ ०६	१७ ३०	६ ०७	१७ २९	६ ०८	१७ २७
७ ,,	५ ४८	१७ ४७	५ ५२	१७ ४३	५ ५५	१७ ४१	५ ५७	१७ ३८	५ ५९	१७ ३६	६ ०२	१७ ३३	६ ०५	१७ ३०	६ ०९	१७ २६	६ १०	१७ २४	६ १२	१७ २२
९ ,,	५ ४८	१७ ४६	५ ५३	१७ ४२	५ ५५	१७ ३९	५ ५८	१७ ३६	६ ०१	१७ ३३	६ ०४	१७ ३०	६ ०७	१७ २७	६ १२	१७ २२	६ १४	१७ १९	६ १६	१७ १७

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
११ अक्तू	५ ४८	१७ ४५	५ ५३	१७ ४०	५ ५६	१७ ३७	५ ५९	१७ ३४	६ ०२	१७ ३१	६ ०६	१७ २७	६ १०	१७ २३	६ १५	१७ १८	६ १७	१७ १५	६ २०	१७ १३
१३ ,,	५ ४८	१७ ४४	५ ५४	१७ ३८	५ ५७	१७ ३५	६ ००	१७ ३१	६ ०४	१७ २८	६ ०८	१७ २४	६ १२	१७ २०	६ १८	१७ १४	६ २१	१७ ११	६ २३	१७ ०८
१५ ,,	५ ४९	१७ ४३	५ ५५	१७ ३७	५ ५८	१७ ३३	६ ०२	१७ २९	६ ०६	१७ २५	६ १०	१७ २१	६ १५	१७ १६	६ २१	१७ १०	६ २४	१७ ०७	६ २७	१७ ०३
१७ ,,	५ ४९	१७ ४२	५ ५५	१७ ३५	५ ५९	१७ ३१	६ ०३	१७ २७	६ ०७	१७ २३	६ १२	१७ १८	६ १८	१७ १२	६ २४	१७ ०६	६ २८	१७ ०२	६ ३१	१६ ५९
१९ ,,	५ ४९	१७ ४१	५ ५६	१७ ३४	६ ००	१७ ३०	६ ०५	१७ २५	६ ०९	१७ २०	६ १४	१७ १५	६ २०	१७ ०९	६ २८	१७ ०२	६ ३१	१६ ५८	६ ३५	१६ ५४
२१ ,,	५ ४९	१७ ४०	५ ५७	१७ ३२	६ ०१	१७ २८	६ ०६	१७ २३	६ ११	१७ १८	६ १६	१७ १३	६ २३	१७ ०५	६ ३१	१६ ५८	६ ३५	१६ ५४	६ ३९	१६ ४९
२३ ,,	५ ४९	१७ ३९	५ ५८	१७ ३१	६ ०२	१७ २६	६ ०७	१७ २१	६ १२	१७ १५	६ १८	१७ १०	६ २६	१७ ०२	६ ३४	१६ ५४	६ ३८	१६ ५०	६ ४३	१६ ४५
२५ ,,	५ ४९	१७ ३९	५ ५८	१७ २९	६ ०३	१७ २४	६ ०८	१७ १९	६ १४	१७ १३	६ २०	१७ ०३	६ २८	१६ ५९	६ ३८	१६ ५०	६ ४२	१६ ४६	६ ४६	१६ ४१
२७ ,,	५ ५०	१७ ३८	५ ५९	१७ २८	६ ०५	१७ २३	६ १०	१७ १७	६ १६	१७ ११	६ २२	१७ ०४	६ ३१	१६ ५६	६ ४१	१६ ४६	६ ४६	१६ ४२	६ ५०	१६ ३७
२९ ,,	५ ५०	१७ ३८	६ ००	१७ २७	६ ०६	१७ २१	६ १२	१७ १५	६ १८	१७ ०९	६ २४	१७ ०२	६ ३४	१६ ५३	६ ४५	१६ ४२	६ ४९	१६ ३८	६ ५४	१६ ३२
३१ ,,	५ ५०	१७ ३७	६ ००	१७ २६	६ ०७	१७ २०	६ १३	१७ १४	६ २०	१७ ०७	६ २७	१६ ५९	६ ३७	१६ ५०	६ ४८	१६ ३९	६ ५२	१६ ३४	६ ५८	१८ २८
२ नवं.	५ ५१	१७ ३७	६ ०२	१७ २४	६ ०८	१७ ११	६ १४	१७ १२	६ २२	१७ ०५	६ ३०	१६ ५६	६ ३९	१६ ४७	६ ५१	१६ ३५	६ ५६	१६ ३०	७ ०२	१६ २४
४ ,,	५ ५१	१७ ३६	६ ०३	१७ २३	६ ०९	१७ १८	६ १६	१७ ११	६ २३	१७ ०३	६ ३२	१६ ५४	६ ४२	१६ ४५	६ ५४	१६ ३२	७ ००	१६ २७	७ ०६	१६ २१
६ ,,	५ ५२	१७ ३६	६ ०४	१७ २३	६ १०	१७ १७	६ १८	१७ ०९	६ २५	१७ ०१	६ ३४	१६ ५२	६ ४५	१६ ४२	६ ५७	१६ २९	७ ०३	१६ २३	७ १०	१६ १७
८ ,,	५ ५२	१७ ३५	६ ०५	१७ २२	६ १२	१७ १६	६ १९	१७ ०८	६ २७	१६ ५९	६ ३७	१६ ५०	६ ४८	१६ ३९	७ ०१	१६ २६	७ ०७	१६ २०	७ १४	१६ १३
१० ,,	५ ५३	१७ ३५	६ ०६	१७ २२	६ १३	१७ १५	६ २१	१७ ०६	६ २९	१६ ५७	६ ३९	१६ ४८	६ ५०	१६ ३७	७ ०४	१६ २३	७ १०	१६ १७	७ १७	१६ ०९
१२ ,,	५ ५४	१७ ३५	६ ०७	१७ २१	६ १५	१७ १४	६ २२	१७ ०५	६ ३१	१६ ५६	६ ४१	१६ ४७	६ ५३	१६ ३५	७ ०७	१६ २०	७ १४	१६ १४	७ २१	१६ ०६
१४ ,,	५ ५४	१७ ३५	६ ०८	१७ २१	६ १६	१७ १३	६ २४	१७ ०४	६ ३३	१६ ५५	६ ४४	१६ ४५	६ ५६	१६ ३३	७ ११	१६ १७	७ १८	१६ ११	७ २५	१६ ०३
१६ ,,	५ ५५	१७ ३४	६ ०९	१७ २०	६ १७	१७ १२	६ २६	१७ ०३	६ ३५	१६ ५४	६ ४६	१६ ४३	६ ५९	१६ ३१	७ १४	१६ १५	७ २१	१६ ०८	७ २९	१६ ००
१८ ,,	५ ५६	१७ ३४	६ ११	१७ २०	६ १८	१७ १२	६ २७	१७ ०३	६ ३७	१६ ५३	६ ४८	१६ ४१	७ ०१	१६ २९	७ १७	१६ १२	७ २५	१६ ०५	७ ३३	१५ ५७
२० ,,	५ ५७	१७ ३५	६ १२	१७ १९	६ २०	१७ ११	६ २९	१७ ०२	६ ३९	१६ ५२	६ ५१	१६ ४०	७ ०४	१६ २७	७ २०	१६ १०	७ २८	१६ ०३	७ ३६	१५ ५४
२२ ,,	५ ५८	१७ ३५	६ १३	१७ १९	६ २१	१७ ११	६ ३१	१७ ०१	६ ४१	१६ ५१	६ ५३	१६ ३९	७ ०७	१६ २५	७ २३	१६ ०८	७ ३१	१६ ००	७ ४०	१५ ५१
२४ ,,	५ ५८	१७ ३५	६ १४	१७ १९	६ २३	१७ १०	६ ३२	१७ ०१	६ ४३	१६ ५०	६ ५५	१६ ३८	७ ०९	१६ २४	७ २६	१६ ०६	७ ३५	१५ ५८	७ ४४	१५ ४९
२६ ,,	५ ५९	१७ ३५	६ १५	१७ १९	६ २४	१७ १०	६ ३४	१७ ००	६ ४५	१६ ५०	६ ५७	१६ ३७	७ १२	१६ २२	७ २९	१६ ०४	७ ३८	१५ ५६	७ ४७	१५ ४७
२८ ,,	६ ००	१७ ३६	६ १७	१७ १९	६ २६	१७ १०	६ ३६	१७ ००	६ ४७	१६ ४९	६ ५९	१६ ३६	७ १४	१६ २१	७ ३२	१६ ०३	७ ४१	१५ ५५	७ ५०	१५ ४५
३० ,,	६ ०१	१७ ३६	६ १८	१७ १९	६ २८	१७ १०	६ ३७	१७ ००	६ ४९	१६ ४९	७ ०१	१६ ३६	७ १७	१६ २१	७ ३५	१६ ०२	७ ४४	१५ ५३	७ ५४	१५ ४३
२ दिसं.	६ ०२	१७ ३७	६ १९	१७ १९	६ २९	१७ १०	६ ३९	१७ ००	६ ५१	१६ ५८	७ ०३	१६ ३५	७ १९	१६ २०	७ ३८	१६ ०१	७ ४७	१५ ५२	७ ५७	१५ ४२
४ ,,	६ ०३	१७ ३७	६ २१	१७ २०	६ ३०	१७ १०	६ ४१	१७ ००	६ ५२	१६ ४८	७ ०५	१६ ३५	७ २१	१६ २०	७ ४०	१६ ००	७ ४९	१५ ५१	८ ०१	१५ ४१
६ ,,	६ ०४	१७ ३८	६ २२	१७ २०	६ ३२	१७ १०	६ ४२	१७ ००	६ ५४	१६ ४८	७ ०७	१६ ३५	७ २३	१६ १९	७ ४३	१५ ५९	७ ५२	१५ ५०	८ ०४	१५ ३९
८ ,,	६ ०५	१७ ३८	६ २३	१७ २०	६ ३३	१७ १०	६ ४४	१७ ००	६ ५५	१६ ४८	७ ०९	१६ ३५	७ २५	१६ १९	७ ४५	१५ ५९	७ ५४	१५ ५०	८ ०६	१५ ३९
१० ,,	६ ०६	१७ ३९	६ २४	१७ २१	६ ३४	१७ ११	६ ४५	१७ ००	६ ५७	१६ ४८	७ ११	१६ ३५	७ २७	१६ १८	७ ४७	१५ ५८	७ ५७	१५ ४९	८ ०९	१५ ३८
१२ ,,	६ ०७	१७ ४०	६ २५	१७ २२	६ ३५	१७ ११	६ ४६	१७ ०१	६ ५८	१६ ४८	७ १३	१६ ३५	७ २९	१६ १७	७ ४९	१५ ५८	७ ५९	१५ ४८	८ ११	१५ ३७
१४ ,,	६ ०८	१७ ४१	६ २७	१७ २३	६ ३७	१७ १२	६ ४८	१७ ०१	७ ०	१६ ४९	७ १४	१६ ३५	७ ३१	१६ १९	७ ५१	१५ ५८	८ १	१५ ४८	८ १३	१५ ३७
१६ ,,	६ ०९	१७ ४२	६ २८	१७ २३	६ ३८	१७ १३	६ ४९	१७ ०२	७ १	१६ ४९	७ १५	१६ ३६	७ ३२	१६ १९	७ ५३	१५ ५९	८ ३	१५ ४८	८ १४	१५ ३८
१८ ,,	६ १०	१७ ४३	६ २९	१७ २४	६ ३९	१७ १४	६ ५०	१७ ०३	७ २	१६ ५०	७ १७	१६ ३६	७ ३३	१६ २०	७ ५४	१५ ५९	८ ४	१५ ४९	८ १६	१५ ३८
२० ,,	६ ११	१७ ४४	६ ३०	१७ २५	६ ४०	१७ १५	६ ५१	१७ ०४	७ ४	१६ ५१	७ १८	१६ ३७	७ ३५	१६ २१	७ ५५	१६ ००	८ ५	१५ ५०	८ १७	१५ ३९
२२ ,,	६ १२	१७ ४५	६ ३१	१७ २६	६ ४१	१७ १६	६ ५२	१७ ०५	७ ५	१६ ५२	७ १९	१६ ३८	७ ३६	१६ २१	७ ५६	१६ ००	८ ६	१५ ५१	८ १८	१५ ३९
२४ ,,	६ १३	१७ ४६	६ ३२	१७ २७	६ ४२	१७ १७	६ ५३	१७ ०६	७ ६	१६ ५४	७ २०	१६ ३९	७ ३७	१६ २३	७ ५७	१६ ०२	८ ७	१५ ५२	८ १९	१५ ४१
२६ ,,	६ १४	१७ ४७	६ ३३	१७ २८	६ ४३	१७ १८	६ ५४	१७ ०७	७ ६	१६ ५५	७ २१	१६ ४१	७ ३७	१६ २४	७ ५८	१६ ०३	८ ८	१५ ५३	८ १९	१५ ४२
२८ ,,	६ १५	१७ ४८	६ ३४	१७ २९	६ ४४	१७ २०	६ ५५	१७ ०९	७ ७	१६ ५६	७ २१	१६ ४२	७ ३८	१६ २५	७ ५८	१६ ०५	८ ८	१५ ५४	८ १९	१५ ४४
३० ,,	६ १६	१७ ४९	६ ३४	१७ ३०	६ ४५	१७ २१	६ ५६	१७ १०	७ ८	१६ ५७	७ २२	१६ ४४	७ ३८	१६ २६	७ ५९	१६ ०७	८ ८	१५ ५७	८ १९	१५ ४६
३१ ,,	६ १७	१७ ५०	६ ३४	१७ ३१	६ ४५	१७ २३	६ ५६	१७ १०	७ ८	१६ ५८	७ २२	१६ ४४	७ ३८	१६ २७	७ ५९	१६ ०८	८ ८	१५ ५८	८ १९	१५ ४७

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २ मिनट घटाने तथा अस्त में २ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू० उ० व सू० अ० में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार—१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकेण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	७ २८	१७ २९	७ २७	१७ २८	७ २७	१७ २९	७ २३	१७ २८	७ २४	१७ २६	७ २७	१७ २९	७ २२	१७ २७	७ २३	१७ २७	७ २७	१७ २९	७ २२	१७ २५	७ २२	१७ २६
4	७ २८	१७ ३२	७ २८	१७ ३१	७ २८	१७ ३२	७ २४	१७ ३१	७ २५	१७ २९	७ २७	१७ ३१	७ २३	१७ ३०	७ २४	१७ २९	७ २८	१७ ३१	७ २३	१७ २९	७ २२	१७ २८
7	७ २९	१७ ३४	७ २८	१७ ३३	७ २८	१७ ३३	७ २४	१७ ३२	७ २५	१७ ३१	७ २७	१७ ३३	७ २४	१७ ३२	७ २४	१७ ३१	७ २८	१७ ३४	७ २३	१७ ३०	७ २२	१७ २९
10	७ २९	१७ ३७	७ २९	१७ ३६	७ २९	१७ ३६	७ २४	१७ ३४	७ २५	१७ ३३	७ २८	१७ ३५	७ २४	१७ ३४	७ २४	१७ ३३	७ २८	१७ ३६	७ २३	१७ ३२	७ २२	१७ ३१
13	७ २८	१७ ३९	७ २८	१७ ३८	७ २८	१७ ३९	७ २३	१७ ३६	७ २५	१७ ३६	७ २७	१७ ३८	७ २३	१७ ३६	७ २४	१७ ३५	७ २८	१७ ३९	७ २३	१७ ३५	७ २२	१७ ३४
16	७ २८	१७ ४२	७ २७	१७ ४१	७ २८	१७ ४२	७ २३	१७ ३९	७ २५	१७ ३९	७ २६	१७ ४१	७ २३	१७ ३९	७ २३	१७ ३८	७ २७	१७ ४२	७ २२	१७ ३७	७ २१	१७ ३७
19	७ २७	१७ ४४	७ २६	१७ ४३	७ २७	१७ ४३	७ २३	१७ ४२	७ २४	१७ ४३	७ २५	१७ ४३	७ २२	१७ ४१	७ २२	१७ ४२	७ २६	१७ ४६	७ २१	१७ ४१	७ २१	१७ ४१
22	७ २६	१७ ४७	७ २५	१७ ४६	७ २६	१७ ४६	७ २२	१७ ४४	७ २३	१७ ४५	७ २५	१७ ४५	७ २१	१७ ४३	७ २१	१७ ४३	७ २५	१७ ४८	७ २०	१७ ४३	७ २०	१७ ४३
25	७ २५	१७ ५०	७ २५	१७ ४९	७ २५	१७ ४९	७ २१	१७ ४७	७ २२	१७ ४८	७ २४	१७ ४८	७ २०	१७ ४६	७ २०	१७ ४६	७ २४	१७ ५०	७ १९	१७ ४६	७ १९	१७ ४६
28	७ २३	१७ ५२	७ २३	१७ ५१	७ २४	१७ ५२	७ १९	१७ ५०	७ २०	१७ ५०	७ २३	१७ ५१	७ १८	१७ ४९	७ १९	१७ ४९	७ २३	१७ ५३	७ १७	१७ ४८	७ १७	१७ ४८
31	७ २१	१७ ५५	७ २१	१७ ५४	७ २१	१७ ५४	७ १७	१७ ५३	७ १८	१७ ५४	७ २२	१७ ५५	७ १६	१७ ५२	७ १८	१७ ५२	७ २२	१७ ५६	७ १५	१७ ५१	७ १५	१७ ५१
3 फर.	७ २०	१७ ५८	७ १९	१७ ५७	७ १९	१७ ५७	७ १६	१७ ५६	७ १७	१७ ५७	७ १९	१७ ५७	७ १५	१७ ५५	७ १६	१७ ५४	७ २०	१७ ५८	७ १४	१७ ५४	७ १३	१७ ५४
6	७ १८	१८ ००	७ १७	१७ ५९	७ १८	१८ ००	७ १४	१७ ५८	७ १५	१७ ५९	७ १७	१७ ५९	७ १३	१७ ५७	७ १४	१७ ५७	७ १८	१८ ०१	७ १२	१७ ५६	७ १२	१७ ५६
9	७ १५	१८ ०३	७ १४	१८ ०३	७ १५	१८ ०२	७ १२	१८ ०२	७ १२	१८ ०२	७ १४	१८ ०१	७ १०	१८ ०१	७ ११	१८ ००	७ १५	१८ ०४	७ ०९	१८ ००	७ ०९	१८ ००
12	७ १२	१८ ०६	७ १२	१८ ०६	७ १२	१८ ०६	७ ०८	१८ ०४	७ ०९	१८ ०४	७ १२	१८ ०४	७ ०७	१८ ०३	७ ०९	१८ ०२	७ १३	१८ ०६	७ ०६	१८ ०२	७ ०६	१८ ०२
15	७ १०	१८ ०८	७ ०९	१८ ०८	७ १०	१८ ०८	७ ०६	१८ ०६	७ ०६	१८ ०६	७ ०९	१८ ०७	७ ०५	१८ ०५	७ ०६	१८ ०५	७ १०	१८ ०९	७ ०५	१८ ०४	७ ०४	१८ ०४
18	७ ०७	१८ १०	७ ०६	१८ १०	७ ०७	१८ १०	७ ०३	१८ ०८	७ ०३	१८ ०८	७ ०६	१८ ०९	७ ०२	१८ ०७	७ ०३	१८ ०७	७ ०७	१८ १२	७ ०२	१८ ०७	७ ०२	१८ ०७
21	७ ०४	१८ १३	७ ०३	१८ १३	७ ०४	१८ १३	७ ००	१८ ११	७ ००	१८ ११	७ ०३	१८ १२	६ ५९	१८ १०	७ ००	१८ १०	७ ०४	१८ १४	६ ५९	१८ ०९	६ ५८	१८ १०
24	७ ०१	१८ १५	७ ००	१८ १४	७ ०१	१८ १५	६ ५७	१८ १३	६ ५७	१८ १३	७ ०१	१८ १५	६ ५६	१८ १२	६ ५७	१८ १२	७ ०१	१८ १६	६ ५६	१८ ११	६ ५५	१८ १२
27	६ ५८	१८ १८	६ ५७	१८ १७	६ ५८	१८ १८	६ ५४	१८ १६	६ ५४	१८ १६	६ ५६	१८ १७	६ ५३	१८ १५	६ ५४	१८ १५	६ ५७	१८ १९	६ ५२	१८ १४	६ ५३	१८ १४
2 मार्च	६ ५४	१८ २०	६ ५३	१८ २०	६ ५३	१८ १९	६ ५०	१८ १८	६ ५०	१८ १९	६ ५३	१८ २०	६ ४९	१८ १७	६ ५०	१८ १७	६ ५३	१८ २०	६ ४८	१८ १६	६ ४९	१८ १६
5	६ ५१	१८ २२	६ ५०	१८ २१	६ ५१	१८ २२	६ ४७	१८ २०	६ ४७	१८ २०	६ ५०	१८ २२	६ ४६	१८ १९	६ ४७	१८ १९	६ ५१	१८ २३	६ ४६	१८ १८	६ ४६	१८ १८
8	६ ४६	१८ २४	६ ४६	१८ २३	६ ४६	१८ २४	६ ४३	१८ २२	६ ४३	१८ २३	६ ४६	१८ २४	६ ४१	१८ २१	६ ४३	१८ २१	६ ४७	१८ २५	६ ४२	१८ २१	६ ४०	१८ २०
11	६ ४३	१८ २७	६ ४२	१८ २६	६ ४३	१८ २६	६ ३९	१८ २४	६ ४०	१८ २४	६ ४३	१८ २६	६ ३८	१८ २४	६ ४०	१८ २३	६ ४४	१८ १७	६ ३९	१८ २२	६ ३७	१८ २३
14	६ ४०	१८ २८	६ ३९	१८ २७	६ ३९	१८ २७	६ ३६	१८ २५	६ ३६	१८ २५	६ ३९	१८ २७	६ ३६	१८ २५	६ ३७	१८ २४	६ ४०	१८ २८	६ ३५	१८ २४	६ ३५	१८ २४
17	६ ३६	१८ ३०	६ ३५	१८ २९	६ ३५	१८ २९	६ ३२	१८ २७	६ ३२	१८ २७	६ ३५	१८ २९	६ ३१	१८ २७	६ ३२	१८ २६	६ ३६	१८ ३०	६ ३१	१८ २५	६ ३०	१८ २६
20	६ ३१	१८ ३२	६ ३०	१८ ३१	६ ३१	१८ ३१	६ २६	१८ २९	६ २८	१८ ३१	६ ३१	१८ ३१	६ २६	१८ २९	६ २८	१८ २७	६ ३२	१८ ३२	६ २७	१८ २६	६ २५	१८ २८

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	६ २८	१८ ३४	६ २७	१८ ३३	६ २८	१८ ३३	६ २४	१८ ३०	६ २५	१८ ३१	६ २८	१८ ३३
26	६ २४	१८ ३६	६ २३	१८ ३५	६ २४	१८ ३५	६ २१	१८ ३३	६ २१	१८ ३३	६ २४	१८ ३५
29	६ २१	१८ ३८	६ २०	१८ ३७	६ २०	१८ ३७	६ १८	१८ ३४	६ १८	१८ ३४	६ २०	१८ ३७
2 अप्रै.	६ १५	१८ ४०	६ १४	१८ ३९	६ १५	१८ ४०	६ १२	१८ ३७	६ १३	१८ ३८	६ १५	१८ ४०
5	६ १२	१८ ४३	६ १०	१८ ४२	६ १२	१८ ४२	६ ०८	१८ ३९	६ ०९	१८ ३९	६ १२	१८ ४२
8	६ ०९	१८ ४५	६ ०८	१८ ४४	६ ०८	१८ ४३	६ ०५	१८ ४२	६ ०६	१८ ४२	६ ०८	१८ ४३
11	६ ०४	१८ ४७	६ ०३	१८ ४६	६ ०४	१८ ४६	६ ०१	१८ ४४	६ ०१	१८ ४४	६ ०४	१८ ४६
14	६ ०१	१८ ५०	६ ००	१८ ४९	६ ०१	१८ ४९	५ ५८	१८ ४७	५ ५८	१८ ४७	६ ०१	१८ ४९
17	५ ५७	१८ ५१	५ ५६	१८ ५०	५ ५७	१८ ५१	५ ५४	१८ ४९	५ ५४	१८ ४९	५ ५७	१८ ५०
20	५ ५४	१८ ५४	५ ५३	१८ ५३	५ ५४	१८ ५३	५ ५१	१८ ५१	५ ५१	१८ ५१	५ ५४	१८ ५३
23	५ ५०	१८ ५६	५ ५०	१८ ५६	५ ५०	१८ ५५	५ ४७	१८ ५३	५ ४७	१८ ५३	५ ५०	१८ ५५
26	५ ४८	१८ ५८	५ ४७	१८ ५८	५ ४८	१८ ५७	५ ४५	१८ ५५	५ ४५	१८ ५५	५ ४८	१८ ५७
29	५ ४६	१९ ०१	५ ४५	१९ ००	५ ४५	१९ ००	५ ४२	१८ ५८	५ ४२	१८ ५८	५ ४५	१९ ००
2 मई	५ ४४	१९ ०२	५ ४३	१९ ०१	५ ४३	१९ ०१	५ ४०	१८ ५९	५ ४०	१८ ५९	५ ४३	१९ ०१
4	५ ४१	१९ ०३	५ ३९	१९ ०२	५ ४०	१९ ०२	५ ३७	१८ ५९	५ ३७	१८ ५९	५ ४०	१९ ०२
7	५ ३८	१९ ०५	५ ३७	१९ ०४	५ ३७	१९ ०४	५ ३४	१९ ००	५ ३४	१९ ००	५ ३७	१९ ०४
10	५ ३५	१९ ०७	५ ३४	१९ ०६	५ ३५	१९ ०६	५ ३२	१९ ०३	५ ३३	१९ ०४	५ ३५	१९ ०६
13	५ ३४	१९ ०९	५ ३२	१९ ०८	५ ३३	१९ ०९	५ ३०	१९ ०६	५ ३०	१९ ०६	५ ३३	१९ ०९
16	५ ३२	१९ ११	५ ३०	१९ ११	५ ३१	१९ ११	५ २८	१९ ०७	५ २९	१९ ०७	५ ३१	१९ ११
19	५ ३०	१९ १३	५ २८	१९ १२	५ २९	१९ १३	५ २६	१९ ०९	५ २६	१९ ०९	५ २९	१९ १३
22	५ २८	१९ १४	५ २६	१९ १३	५ २७	१९ १४	५ २४	१९ ११	५ २४	१९ ११	५ २७	१९ १४
25	५ २७	१९ १६	५ २५	१९ १५	५ २६	१९ १६	५ २३	१९ १४	५ २४	१९ १४	५ २६	१९ १६
28	५ २५	१९ १८	५ २४	१९ १७	५ २५	१९ १८	५ २२	१९ १६	५ २२	१९ १६	५ २५	१९ १८
31	५ २४	१९ २०	५ २२	१९ २१	५ २४	१९ २०	५ २१	१९ १७	५ २१	१९ १७	५ २४	१९ २०
3 जून	५ २३	१९ २३	५ २२	१९ २२	५ २३	१९ २२	५ २०	१९ १९	५ २०	१९ १९	५ २३	१९ २२
6	५ २३	१९ २४	५ २१	१९ २३	५ २२	१९ २४	५ २०	१९ २१	५ २०	१९ २१	५ २२	१९ २४
9	५ २२	१९ २५	५ २१	१९ २५	५ २२	१९ २५	५ १९	१९ २२	५ १९	१९ २२	५ २२	१९ २५
12	५ २२	१९ २७	५ २१	१९ २६	५ २२	१९ २७	५ १८	१९ २३	५ १८	१९ २३	५ २२	१९ २७
15	५ २२	१९ २८	५ २१	१९ २७	५ २२	१९ २८	५ १८	१९ २३	५ १९	१९ २३	५ २२	१९ २८
18	५ २१	१९ ३०	५ २१	१९ २९	५ २१	१९ ३०	५ १८	१९ २४	५ १९	१९ २५	५ २१	१९ २९
21	५ २२	१९ ३१	५ २२	१९ ३०	५ २२	१९ ३१	५ १९	१९ २५	५ २०	१९ २६	५ २२	१९ ३१
24	५ २३	१९ ३२	५ २२	१९ ३१	५ २३	१९ ३२	५ २१	१९ २५	५ २२	१९ २६	५ २३	१९ ३२
27	५ २५	१९ ३३	५ २३	१९ ३२	५ २५	१९ ३२	५ २२	१९ २७	५ २२	१९ २७	५ २५	१९ ३२
30	५ २५	१९ ३३	५ २४	१९ ३३	५ २५	१९ ३३	५ २३	१९ २७	५ २३	१९ २७	५ २५	१९ ३३
3 जुला	५ २६	१९ ३२	५ २५	१९ ३२	५ २६	१९ ३२	५ २४	१९ २८	५ २५	१९ २८	५ २७	१९ ३२
6	५ २८	१९ ३२	५ २७	१९ ३१	५ २८	१९ ३२	५ २६	१९ २७	५ २६	१९ २८	५ २८	१९ ३१
9	५ ३०	१९ ३०	५ २९	१९ २९	५ ३०	१९ ३१	५ २७	१९ २७	५ २८	१९ २७	५ ३०	१९ ३०
12	५ ३२	१९ २९	५ ३१	१९ २८	५ ३१	१९ २९	५ २९	१९ २६	५ २९	१९ २६	५ ३१	१९ २९

नगर	शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	६ २३	१८ ३१	६ २५	१८ ३०	६ २९	१८ ३४	६ २४	१८ २८	६ २२	१८ ३०
26	६ २०	१८ ३३	६ २१	१८ ३३	६ २५	१८ ३६	६ २०	१८ ३१	६ १९	१८ ३२
29	६ १६	१८ ३५	६ १७	१८ ३५	६ २१	१८ ३८	६ १६	१८ ३३	६ १५	१८ ३४
2 अप्रै.	६ ११	१८ ३७	६ १२	१८ ३७	६ १६	१८ ४१	६ ११	१८ ३६	६ १०	१८ ३६
5	६ ०७	१८ ३९	६ ०९	१८ ३९	६ १३	१८ ४३	६ ०८	१८ ३७	६ ०६	१८ ३८
8	६ ०४	१८ ४१	६ ०५	१८ ४१	६ ०९	१८ ४४	६ ०४	१८ ३९	६ ०३	१८ ४०
11	६ ००	१८ ४३	६ ०१	१८ ४३	६ ०५	१८ ४७	६ ००	१८ ४१	५ ५९	१८ ४२
14	५ ५७	१८ ४६	५ ५८	१८ ४६	६ ०२	१८ ४९	५ ५७	१८ ४४	५ ५६	१८ ४५
17	५ ५३	१८ ४७	५ ५४	१८ ४८	५ ५८	१८ ५१	५ ५३	१८ ४६	५ ५२	१८ ४६
20	५ ५०	१८ ५०	५ ५१	१८ ५१	५ ५५	१८ ५४	५ ५०	१८ ४९	५ ४९	१८ ४९
23	५ ४६	१८ ५२	५ ४८	१८ ५२	५ ५१	१८ ५६	५ ४७	१८ ५१	५ ४५	१८ ५१
26	५ ४४	१८ ५४	५ ४५	१८ ५४	५ ४९	१८ ५८	५ ४४	१८ ५२	५ ४३	१८ ५३
29	५ ४२	१८ ५७	५ ४२	१८ ५७	५ ४६	१९ ०१	५ ४१	१८ ५५	५ ४१	१८ ५६
2 मई	५ ३९	१८ ५८	५ ४०	१८ ५८	५ ४४	१९ ०२	५ ३९	१८ ५६	५ ३८	१८ ५७
4	५ ३७	१८ ५९	५ ३७	१९ ००	५ ४१	१९ ०३	५ ३६	१८ ५८	५ ३६	१८ ५८
7	५ ३४	१९ ०१	५ ३४	१९ ०१	५ ३८	१९ ०५	५ ३३	१९ ००	५ ३३	१९ ००
10	५ ३२	१९ ०३	५ ३२	१९ ०३	५ ३६	१९ ०७	५ ३१	१९ ०३	५ ३१	१९ ०२
13	५ ३०	१९ ०५	५ ३०	१९ ०५	५ ३४	१९ १०	५ २९	१९ ०५	५ २९	१९ ०४
16	५ २८	१९ ०७	५ २८	१९ ०७	५ ३२	१९ १२	५ २७	१९ ०६	५ २७	१९ ०६
19	५ २६	१९ ०९	५ २६	१९ १०	५ ३०	१९ १४	५ २५	१९ ०८	५ २५	१९ ०८
22	५ २४	१९ ११	५ २५	१९ ११	५ २८	१९ १५	५ २३	१९ १०	५ २४	१९ १०
25	५ २३	१९ १३	५ २४	१९ १४	५ २७	१९ १७	५ २२	१९ १२	५ २३	१९ १२
28	५ २१	१९ १५	५ २१	१९ १५	५ २६	१९ १९	५ २१	१९ १४	५ २१	१९ १४
31	५ २०	१९ १७	५ २०	१९ १७	५ २५	१९ २१	५ २०	१९ १६	५ २०	१९ १६
3 जून	५ २०	१९ २०	५ २०	१९ १९	५ २४	१९ २३	५ १९	१९ १८	५ १९	१९ १९
6	५ १९	१९ २१	५ २०	१९ २१	५ २३	१९ २५	५ १९	१९ २०	५ १८	१९ २०
9	५ १९	१९ २२	५ २०	१९ २२	५ २३	१९ २६	५ १९	१९ २१	५ १९	१९ २१
12	५ १८	१९ २३	५ १९	१९ २३	५ २३	१९ २८	५ १९	१९ २२	५ १८	१९ २२
15	५ १८	१९ २३	५ १९	१९ २३	५ २३	१९ २९	५ १८	१९ २३	५ १८	१९ २२
18	५ १७	१९ २४	५ १९	१९ २४	५ २३	१९ ३०	५ १८	१९ २४	५ १७	१९ २३
21	५ १८	१९ २५	५ २०	१९ २५	५ २३	१९ ३१	५ १९	१९ २४	५ १८	१९ २४
24	५ १९	१९ २५	५ २१	१९ २५	५ २४	१९ ३२	५ २०	१९ २४	५ १८	१९ २४
27	५ २१	१९ २६	५ २२	१९ २६	५ २६	१९ ३३	५ २१	१९ २५	५ २०	१९ २५
30	५ २२	१९ २६	५ २३	१९ २७	५ २६	१९ ३२	५ २२	१९ २५	५ २२	१९ २५
3 जुला	५ २३	१९ २७	५ २४	१९ २८	५ २८	१९ ३२	५ २३	१९ २५	५ २३	१९ २६
6	५ २५	१९ २८	५ २५	१९ २८	५ २९	१९ ३२	५ २४	१९ २५	५ २५	१९ २७
9	५ २७	१९ २७	५ २७	१९ २७	५ ३१	१९ ३१	५ २६	१९ २४	५ २७	१९ २६
12	५ २९	१९ २६	५ २८	१९ २५	५ ३२	१९ ३०	५ २७	१९ २३	५ २८	१९ २५

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	५ ३३	१९ २८	५ ३३	१९ २७	५ ३३	१९ २८	५ ३०	१९ २६	५ ३१	१९ २५	५ ३३	१९ २८	५ ३०	१९ २५	५ ३०	१९ २४	५ ३४	१९ २९	५ २९	१९ २२	५ ३०	१९ २४
18	५ ३४	१९ २७	५ ३३	१९ २६	५ ३४	१९ २७	५ ३२	१९ २४	५ ३२	१९ २४	५ ३४	१९ २७	५ ३१	१९ २३	५ ३२	१९ २२	५ ३५	१९ २८	५ ३१	१९ २१	५ ३१	१९ २२
21	५ ३६	१९ २५	५ ३५	१९ २५	५ ३६	१९ २५	५ ३३	१९ २१	५ ३३	१९ २२	५ ३६	१९ २५	५ ३३	१९ २१	५ ३३	१९ २१	५ ३७	१९ २६	५ ३२	१९ २०	५ ३३	१९ २०
24	५ ३८	१९ २३	५ ३७	१९ २२	५ ३८	१९ २३	५ ३५	१९ १९	५ ३६	१९ २०	५ ३८	१९ २३	५ ३५	१९ १९	५ ३५	१९ १९	५ ३९	१९ २४	५ ३४	१९ १८	५ ३५	१९ १८
27	५ ४०	१९ २२	५ ३९	१९ २१	५ ४०	१९ २२	५ ३७	१९ १७	५ ३८	१९ १८	५ ४०	१९ २२	५ ३७	१९ १८	५ ३७	१९ १८	५ ४१	१९ २३	५ ३६	१९ १६	५ ३७	१९ १६
30	५ ४२	१९ १९	५ ४१	१९ १९	५ ४२	१९ १९	५ ३९	१९ १५	५ ४०	१९ १६	५ ४२	१९ १९	५ ३९	१९ १६	५ ३९	१९ १५	५ ४३	१९ २०	५ ३८	१९ १४	५ ३८	१९ १४
2 अग.	५ ४४	१९ १८	५ ४३	१९ १७	५ ४४	१९ १८	५ ४१	१९ १४	५ ४२	१९ १५	५ ४४	१९ १८	५ ४१	१९ १४	५ ४१	१९ १३	५ ४५	१९ १९	५ ४०	१९ १२	५ ४०	१९ १३
5	५ ४६	१९ १६	५ ४५	१९ १५	५ ४६	१९ १६	५ ४३	१९ १२	५ ४४	१९ १३	५ ४६	१९ १६	५ ४३	१९ १३	५ ४३	१९ ११	५ ४७	१९ १७	५ ४२	१९ १०	५ ४३	१९ १२
8	५ ४८	१९ १३	५ ४७	१९ १२	५ ४८	१९ १३	५ ४५	१९ ११	५ ४६	१९ १२	५ ४८	१९ १३	५ ४५	१९ ११	५ ४५	१९ ०९	५ ४९	१९ १४	५ ४४	१९ ०७	५ ४५	१९ १०
11	५ ५०	१९ ११	५ ४९	१९ १०	५ ५०	१९ ११	५ ४७	१९ ०८	५ ४८	१९ ०९	५ ५०	१९ ११	५ ४७	१९ ०८	५ ५७	१९ ०६	५ ५१	१९ १२	५ ४६	१९ ०४	५ ४७	१९ ०७
14	५ ५१	१९ ०९	५ ५०	१९ ०८	५ ५१	१९ ०९	५ ४८	१९ ०६	५ ४९	१९ ०७	५ ५१	१९ ०९	५ ४८	१९ ०५	५ ४८	१९ ०२	५ ५२	१९ १०	५ ४७	१९ ००	५ ४८	१९ ०५
17	५ ५३	१९ ०४	५ ५२	१९ ०३	५ ५३	१९ ०४	५ ५०	१९ ०१	५ ५१	१९ ०३	५ ५३	१९ ०४	५ ५०	१९ ०१	५ ५०	१८ ५९	५ ५४	१९ ०५	५ ४९	१८ ५७	५ ५०	१९ ००
20	५ ५५	१९ ०१	५ ५५	१९ ०१	५ ५५	१९ ०१	५ ५२	१८ ५९	५ ५३	१९ ००	५ ५५	१९ ०१	५ ५२	१८ ५९	५ ५२	१८ ५७	५ ५६	१९ ०२	५ ५१	१८ ५५	५ ५२	१८ ५८
23	५ ५७	१८ ५८	५ ५७	१८ ५८	५ ५७	१८ ५८	५ ५४	१८ ५५	५ ५५	१८ ५५	५ ५७	१८ ५८	५ ५४	१८ ५५	५ ५४	१८ ५४	५ ५८	१८ ५९	५ ५३	१८ ५३	५ ५३	१८ ५४
26	५ ५९	१८ ५४	५ ५९	१८ ५३	५ ५९	१८ ५३	५ ५६	१८ ५०	५ ५७	१८ ५१	५ ५८	१८ ५४	५ ५६	१८ ५०	५ ५६	१८ ५१	५ ५९	१८ ५५	५ ५५	१८ ४८	५ ५५	१८ ४९
29	६ ०१	१८ ५०	६ ००	१८ ४९	६ ००	१८ ५०	५ ५८	१८ ४६	५ ५९	१८ ४७	५ ५९	१८ ५०	५ ५८	१८ ४६	५ ५८	१८ ४६	६ ०२	१८ ५०	५ ५७	१८ ४५	५ ५७	१८ ४५
1 सितं.	६ ०२	१८ ४६	६ ०२	१८ ४५	६ ०२	१८ ४६	५ ५९	१८ ४४	६ ००	१८ ४५	६ ०२	१८ ४६	५ ५९	१८ ४४	६ ००	१८ ४३	६ ०४	१८ ४६	५ ५९	१८ ४१	५ ५८	१८ ४३
4	६ ०४	१८ ४३	६ ०३	१८ ४१	६ ०४	१८ ४२	६ ०२	१८ ४०	६ ०३	१८ ४१	६ ०४	१८ ४२	६ ०१	१८ ३९	६ ०२	१८ ३९	६ ०६	१८ ४२	६ ०१	१८ ३९	६ ००	१८ ३८
7	६ ०६	१८ ४०	६ ०६	१८ ३९	६ ०६	१८ ४०	६ ०४	१८ ३७	६ ०४	१८ ३७	६ ०५	१८ ३९	६ ०३	१८ ३७	६ ०४	१८ ३६	६ ०७	१८ ३९	६ ०३	१८ ३७	६ ०२	१८ ३५
10	६ ०९	१८ ३५	६ ०९	१८ ३४	६ ०९	१८ ३४	६ ०६	१८ ३२	६ ०६	१८ ३२	६ ०८	१८ ३३	६ ०६	१८ ३२	६ ०५	१८ ३२	६ ०९	१८ ३५	६ ०५	१८ ३१	६ ०५	१८ ३१
13	६ ११	१८ ३१	६ ११	१८ ३०	६ ११	१८ ३०	६ ०७	१८ २८	६ ०८	१८ २९	६ १०	१८ २९	६ ०७	१८ २८	६ ०७	१८ २८	६ ११	१८ ३१	६ ०६	१८ २७	६ ०७	१८ २७
16	६ १२	१८ २७	६ १२	१८ २६	६ १२	१८ २७	६ ०९	१८ २४	६ १०	१८ २५	६ १२	१८ २७	६ ०९	१८ २४	६ ०९	१८ २४	६ १३	१८ २८	६ ०८	१८ २४	६ ०९	१८ २३
19	६ १४	१८ २३	६ १४	१८ २३	६ १३	१८ २३	६ १०	१८ २०	६ ११	१८ २१	६ १४	१८ २३	६ १०	१८ २०	६ १०	१८ २०	६ १४	१८ २३	६ ०९	१८ १८	६ १०	१८ १९
22	६ १६	१८ १८	६ १६	१८ १८	६ १६	१८ १८	६ १२	१८ १५	६ १३	१८ १६	६ १६	१८ १८	६ १२	१८ १५	६ १३	१८ १६	६ १७	१८ १८	६ १२	१८ १३	६ १२	१८ १४
25	६ १७	१८ १५	६ १७	१८ १५	६ १७	१८ १५	६ १४	१८ १२	६ १५	१८ १३	६ १७	१८ १५	६ १४	१८ १२	६ १४	१८ १२	६ १८	१८ १५	६ १३	१८ १०	६ १४	१८ ११
28	६ १९	१८ ११	६ १९	१८ ११	६ १९	१८ ११	६ १६	१८ ०८	६ १७	१८ ०९	६ १९	१८ ११	६ १५	१८ ०८	६ १६	१८ ०८	६ १९	१८ १२	६ १५	१८ ०७	६ १५	१८ ०७
1 अक्तू	६ २२	१८ ०७	६ २१	१८ ०७	६ २२	१८ ०७	६ १८	१८ ०४	६ १८	१८ ०४	६ २१	१८ ०७	६ १७	१८ ०४	६ १८	१८ ०३	६ २२	१८ ०७	६ १७	१८ ०२	६ १६	१८ ०३
4	६ २३	१८ ०४	६ २३	१८ ०३	६ २३	१८ ०४	६ १९	१८ ००	६ १९	१८ ००	६ २३	१८ ०४	६ १८	१८ ००	६ १९	१८ ००	६ २३	१८ ०४	६ १८	१७ ५९	६ १८	१७ ५९
7	६ २५	१८ ०१	६ २४	१८ ००	६ २४	१८ ००	६ २१	१७ ५७	६ २१	१७ ५७	६ २४	१८ ००	६ २०	१७ ५७	६ २१	१७ ५६	६ २५	१८ ००	६ २०	१७ ५६	६ २०	१७ ५६
10	६ २७	१७ ५७	६ २६	१७ ५६	६ २६	१७ ५६	६ २३	१७ ५४	६ २४	१७ ५५	६ २६	१७ ५६	६ २२	१७ ५३	६ २३	१७ ५३	६ २७	१७ ५६	६ २३	१७ ५२	६ २३	१७ ५२
13	६ २९	१७ ५३	६ २८	१७ ५२	६ २९	१७ ५२	६ २६	१७ ५०	६ २६	१७ ५०	६ २९	१७ ५२	६ २४	१७ ४९	६ २६	१७ ४९	६ ३०	१७ ५३	६ २५	१७ ४९	६ २५	१७ ४८
16	६ ३१	१७ ५०	६ ३०	१७ ४९	६ ३१	१७ ४९	६ २८	१७ ४७	६ २८	१७ ४७	६ ३१	१७ ४९	६ २६	१७ ४६	६ २८	१७ ४५	६ ३२	१७ ४९	६ २७	१७ ४५	६ २६	१७ ४५
19	६ ३३	१७ ४६	६ ३२	१७ ४५	६ ३३	१७ ४५	६ ३०	१७ ४३	६ ३०	१७ ४३	६ ३३	१७ ४५	६ २९	१७ ४२	६ ३०	१७ ४२	६ ३४	१७ ४६	६ २९	१७ ४१	६ २९	१७ ४१
22	६ ३६	१७ ४३	६ ३५	१७ ४३	६ ३५	१७ ४२	६ ३२	१७ ४०	६ ३२	१७ ४०	६ ३५	१७ ४२	६ ३१	१७ ३९	६ ३२	१७ ४०	६ ३६	१७ ४३	६ ३१	१७ ३८	६ ३०	१७ ३८
25	६ ३८	१७ ४०	६ ३८	१७ ४०	६ ३७	१७ ४०	६ ३४	१७ ३७	६ ३४	१७ ३६	६ ३७	१७ ४०	६ ३३	१७ ३६	६ ३४	१७ ३६	६ ३८	१७ ४०	६ ३३	१७ ३५	६ ३२	१७ ३५
28	६ ४०	१७ ३७	६ ४०	१७ ३७	६ ३९	१७ ३७	६ ३६	१७ ३४	६ ३६	१७ ३३	६ ३९	१७ ३७	६ ३५	१७ ३३	६ ३६	१७ ३४	६ ४०	१७ ३७	६ ३५	१७ ३२	६ ३५	१७ ३२
31	६ ४३	१७ ३४	६ ४३	१७ ३४	६ ४२	१७ ३३	६ ३९	१७ ३१	६ ३९	१७ ३१	६ ४२	१७ ३४	६ ३८	१७ ३०	६ ३९	१७ ३१	६ ४३	१७ ३४	६ ३८	१७ २९	६ ३८	१७ २९
3 नवं.	६ ४५	१७ ३०	६ ४५	१७ ३१	६ ४४	१७ ३०	६ ४१	१७ २८	६ ४१	१७ २८	६ ४४	१७ ३१	६ ४०	१७ २७	६ ४१	१७ २८	६ ४५	१७ ३२	६ ४०	१७ २७	६ ४०	१७ २६

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	६ ४८	१७ २९	६ ४७	१७ २८	६ ४७	१७ २८	६ ४३	१७ २६	६ ४३	१७ २६	६ ४७	१७ २८	६ ४३	१७ २६	६ ४३	१७ २५	६ ४७	१७ २९	६ ४२	१७ २४	६ ४२	१७ २५
9	६ ५०	१७ २७	६ ४९	१७ २६	६ ४९	१७ २६	६ ४५	१७ २४	६ ४५	१७ २४	६ ४९	१७ २६	६ ४५	१७ २४	६ ४५	१७ २३	६ ५०	१७ २७	६ ४४	१७ २२	६ ४४	१७ २३
12	६ ५२	१७ २५	६ ५१	१७ २४	६ ५१	१७ २४	६ ४७	१७ २२	६ ४७	१७ २३	६ ५१	१७ २४	६ ४७	१७ २२	६ ४७	१७ २१	६ ५२	१७ २५	६ ४६	१७ २०	६ ४६	१७ २१
15	६ ५४	१७ २३	६ ५३	१७ २३	६ ५४	१७ २३	६ ५१	१७ २०	६ ५१	१७ २०	६ ५४	१७ २३	६ ४९	१७ २०	६ ५१	१७ २०	६ ५५	१७ २४	६ ४९	१७ १९	६ ४८	१७ १९
18	६ ५७	१७ २१	६ ५६	१७ २१	६ ५७	१७ २१	६ ५४	१७ १९	६ ५४	१७ १८	६ ५७	१७ २१	६ ५२	१७ १८	६ ५४	१७ १८	६ ५८	१७ २२	६ ५३	१७ १७	६ ५१	१७ १७
21	७ ००	१७ २०	६ ५९	१७ १९	६ ५९	१७ २०	६ ५६	१७ १८	६ ५६	१७ १७	६ ५९	१७ २०	६ ५५	१७ १७	६ ५६	१७ १७	७ ००	१७ २१	६ ५५	१७ १६	६ ५४	१७ १६
24	७ ०२	१७ १९	७ ०१	१७ १८	७ ०२	१७ १९	६ ५९	१७ १७	६ ५९	१७ १८	७ ०३	१७ १९	६ ५८	१७ १६	६ ५९	१७ १६	७ ०४	१७ २०	६ ५८	१७ १५	६ ५७	१७ १५
27	७ ०४	१७ १९	७ ०४	१७ १८	७ ०४	१७ १८	७ ०१	१७ १७	७ ०१	१७ १७	७ ०४	१७ १८	७ ००	१७ १६	७ ०२	१७ १५	७ ०५	१७ १९	७ ०१	१७ १४	६ ५९	१७ १५
30	७ ०७	१७ १८	७ ०६	१७ १८	७ ०७	१७ १८	७ ०४	१७ १६	७ ०४	१७ १६	७ ०६	१७ १८	७ ०३	१७ १५	७ ०४	१७ १५	७ ०७	१७ १९	७ ०३	१७ १४	७ ०२	१७ १४
3 दिसं	७ ०९	१७ १८	७ ०८	१७ १८	७ ०९	१७ १८	७ ०६	१७ १६	७ ०६	१७ १६	७ ०९	१७ १८	७ ०५	१७ १५	७ ०६	१७ १५	७ १०	१७ १९	७ ०५	१७ १४	७ ०४	१७ १४
6	७ १२	१७ १८	७ ११	१७ १७	७ १२	१७ १८	७ ०९	१७ १५	७ ०९	१७ १५	७ १२	१७ १८	७ ०८	१७ १५	७ ०९	१७ १५	७ १३	१७ १९	७ ०८	१७ १४	७ ०७	१७ १४
9	७ १४	१७ १८	७ १३	१७ १८	७ १४	१७ १८	७ ११	१७ १५	७ ११	१७ १५	७ १४	१७ १८	७ १०	१७ १५	७ ११	१७ १५	७ १५	१७ १९	७ १०	१७ १४	७ ०९	१७ १४
12	७ १६	१७ १९	७ १५	१७ १८	७ १६	१७ १९	७ १४	१७ १६	७ १४	१७ १६	७ १६	१७ १९	७ १२	१७ १६	७ १४	१७ १६	७ १७	१७ २०	७ १३	१७ १५	७ ११	१७ १५
15	७ १८	१७ २१	७ १७	१७ २०	७ १८	१७ २१	७ १६	१७ १८	७ १६	१७ १७	७ १८	१७ २१	७ १४	१७ १८	७ १६	१७ १७	७ १९	१७ २२	७ १५	१७ १६	७ १३	१७ १६
18	७ २०	१७ २२	७ १९	१७ २१	७ २०	१७ २१	७ १७	१७ १९	७ १७	१७ १८	७ २०	१७ २२	७ १६	१७ १८	७ १७	१७ १८	७ २१	१७ २३	७ १६	१७ १७	७ १५	१७ १७
21	७ २२	१७ २३	७ २१	१७ २२	७ २२	१७ २३	७ १९	१७ २१	७ १९	१७ २०	७ २२	१७ २३	७ १८	१७ २०	७ १९	१७ १९	७ २३	१७ २४	७ १८	१७ १८	७ १७	१७ १८
24	७ २३	१७ २४	७ २२	१७ २३	७ २३	१७ २४	७ २०	१७ २२	७ २१	१७ २२	७ २३	१७ २४	७ १९	१७ २१	७ २०	१७ २१	७ २४	१७ २५	७ १९	१७ २०	७ १८	१७ १९
27	७ २५	१७ २६	७ २४	१७ २५	७ २५	१७ २६	७ २१	१७ २३	७ २१	१७ २३	७ २५	१७ २६	७ २१	१७ २३	७ २१	१७ २२	७ २६	१७ २७	७ २०	१७ २१	७ २०	१७ २१
30	७ २६	१७ २८	७ २५	१७ २७	७ २६	१७ २८	७ २२	१७ २४	७ २२	१७ २४	७ २६	१७ २७	७ २२	१७ २४	७ २२	१७ २४	७ २७	१७ २८	७ २१	१७ २३	७ २१	१७ १४

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहडू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

उदाहरण—यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अतः **५ दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व** पढ़ें।

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	९
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२.३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६'	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से **ज्योतिष तत्त्व** मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा.पू. भा.				पुष्य. अनु.उ. भा. ५७			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूला. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि			पुष्य विशा शत.			श्ले. अनु. पूभा. अश्वि		

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उभा. भर.			पूफा मूला रेव कृति			उफा. पूषा रोह			हस्त उषा मृग		

योगिनी दशा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा—मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**—पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा** और **अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान 120 वर्षों का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत—विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र—6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	6
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	16	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	16	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

ज्वालामुखी योग

इस योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतय सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती है। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूला नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका या नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस प्रकार ५ नक्षत्रों एवं ५ तिथियों के संयोग से ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग के अशुभ फल को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित है—

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गांव,
नारी पहने चूड़ियाँ, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कूएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ती अतिशयाक्तपूर्ण हो सकती है परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। **ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो** तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कूआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीघ्र सूख जाए—यदि कोई रोग ग्रस्त हो जल्दी ठीक न हो—इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ग्रहों की विंशोत्तरी दशाओं का वर्णन

फलित ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों द्वारा अपना शुभशुभ फल प्रदान करने का समय ज्ञात करने के लिए **भारतीय दशा-पद्धति** का विशेष महत्त्व है। सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा एवं सूक्ष्म दशाकाल में फल देते हैं। भारतीय आचार्यों ने ग्रहों की अनेक प्रकार की दशाओं एवं अन्तर्दशाओं आदि का वर्णन किया है, जैसे विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा, अष्ट.तरी दशा, काल दशा इत्यादि मुख्य हैं। परन्तु उत्तरी भारत में सर्वाधिक महत्त्व एवं मान्यता महर्षि पाराशर द्वारा प्रतिपादित विंशोत्तरी महादशाऽन्तर दशा पद्धति को दी जाती है। तदनन्तर योगिनी दशा एवं तदुपरान्त अष्टोतरी दशा को मान्यता प्रदान की जाती है। आचार्य वराहमिहिरानुसार जातक को जिस ग्रह की दशाऽन्तरदशा होती है, उस ग्रहावधि में उस ग्रह की छाया जातक पर रहती है। अग्नि (तेज), पृथ्वी, जल, आकाश और वायु-इन पांचों में से जो महाभूत जिस ग्रह से सम्बन्धित होता है, वह ग्रह अपनी दशा और अन्तर्दशा में उस महाभूत की कांति को प्राणी के शरीर एवं उसकी चेष्टाओं से प्रकट करता है। जैसे सूर्य एवं मंगल की दशा में जातक रूपवान, तेजवान एवं कान्तियुक्त हो जाता है। यदि अशुभ हो, तो जातक में क्रोधाधिक्य, पित्त प्रकोप, नेत्र पीड़ा या रक्त विकार होते हैं। यदि जातक को मधुर-अम्लादि मृष्ट रसों के प्रति रूचि, संगीत, गायन, कल्पना, काम एवं भोगासक्ति की प्रबलता हो, तो जातक पर चन्द्र एवं शुक्र कृत जल की छाया जानें। जब जातक के शरीर से उत्तम सुगन्धि (बुध नीचादि अशुभ हो, तो दुर्गन्ध) आती हो, तो बुध कृत पृथ्वी की छाया जानें। जब जातक की प्रवृत्ति धर्म-कर्म एवं परोपकार की ओर बढ़े एवं भक्ति संगीत की ओर रूचि हो और वाणी में भी मधुरता एवं गाम्भीर्य हो तो, गुरु कृत आकाश तत्त्व सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए। जो स्पर्श में कोमल हो, या वायु सम्बन्धी प्रकोप हो, तो आकाश सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए।

छाया शुभाशुभ फलानि निवेदयन्ती लक्ष्म्या मनुष्यपशु पक्षिषुलक्षणज्ञैः।
तेजो गुणान् बह्रिरपि प्रतिभासयन्ती, दीपप्रभा स्फटिकरत्न घटस्थितेव॥ वृहत्संहिता॥

''विंशोत्तरी दशा'' का मुख्य आधार **चन्द्र स्पष्ट** एवं उससे सम्बन्धित **नक्षत्र** होते हैं। किसी जातक के जन्म समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है। उस नक्षत्र-चरण के अनुसार ही ग्रह दशा का निधारण किया जाता है। किसी व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र में होगा, उसी नक्षत्र के स्वामी ग्रह से विंशोत्तरी दशा का प्रारम्भ माना जाता है। चन्द्र स्पष्ट तथा नक्षत्रों के भयात्-भभोग (सर्वक्षं) द्वारा जन्म दशा के भोग्य वर्षों को जानने की सरल विधियां **''ज्योतिष तत्त्व-गणित खण्ड में तथा इसी पँचांग दिवाकर''** में पढ़ सकते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए चन्द्र संचार से ग्रहों की **भोग्य दशा** वर्षों का विवरण संक्षिप्त रूप से आगामी पृष्ठों पर कर रहे हैं। गणित सहित इसका विस्तृत विवरण **ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)** में लिख चुके हैं।

चन्द्र स्पष्ट से नक्षत्रों एवं ग्रहों के भोग्य वर्ष

क्रम	नक्षत्र	राशि अंश कला	से	रा. अं. क. तक	नक्षत्र स्वामी	दशा वर्ष
1.	अश्विनी	0 - 00 - 00	से	0 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
2.	भरणी	0 - 13 - 20	से	0 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
3.	कृतिका	0 - 26 - 40	से	1 - 10 - 00 तक	सूर्य	6 वर्ष
4.	रोहिणी	1 - 10 - 00	से	1 - 23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
5.	मृगशिर	1 - 23 - 20	से	2 - 06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
6.	आर्द्रा	2 - 06 - 40	से	2 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
7.	पुनर्वसु	2 - 20 - 00	से	3 - 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
8.	पुष्य	3 - 03 - 20	से	3 - 16 - 40 तक	शनि	19 वर्ष
9.	आश्लेषा	3 - 16 - 40	से	4 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष
10.	मघा	4 - 00 - 00	से	4 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
11.	पूर्वाफाल्गुनी	4 - 13 - 20	से	4 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
12.	उत्तराफाल्गुनी	4 - 26 - 40	से	5 - 10 - 20 तक	सूर्य	20 वर्ष
13.	हस्त	5 - 10 - 00	से	5 -23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
14.	चित्रा	5 - 23 - 20	से	6 - 06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
15.	स्वाती	6 - 60 - 40	से	6 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
16.	विशाखा	6 - 20 - 00	से	7 - 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
17.	अनुराधा	7 - 03 - 20	से	7 - 16 - 40 तक	शनि	19 वर्ष
18.	ज्येष्ठा	7 - 16 - 40	से	8 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष
19.	मूला	8 - 20 - 00	से	8 - 13 - 20 तक	केतु	7 वर्ष
20.	पूर्वाषाढ़ा	8 - 13 - 20	से	8 - 26 - 40 तक	शुक्र	20 वर्ष
21.	उत्तराषाढ़ा	8 - 26 - 40	से	9 - 10 - 00 तक	सूर्य	6वर्ष
22.	श्रवण	9 - 10 -00	से	9 - 23 - 20 तक	चन्द्र	10 वर्ष
23.	धनिष्ठा	9 - 23 - 20	से	10 -06 - 40 तक	मंगल	7 वर्ष
24.	शतभिषा	10 -06 - 40	से	10 - 20 - 00 तक	राहु	18 वर्ष
25.	पूर्वाभाद्रपद	10 - 20 - 00	से	11- 03 - 20 तक	गुरु	16 वर्ष
26.	उत्तराभाद्रपद	11-03-20	से	11-16- 40 तक	शनि	19 वर्ष
27.	रेवती	11 - 16- 40	से	0 - 00 - 00 तक	बुध	17 वर्ष

प्रत्येक ग्रह के अन्तर्गत तीन-तीन नक्षत्रों का समावेश होता है। जो ग्रह जिन-जिन नक्षत्रों का स्वामी होता है। तदनुसार ही नक्षत्र के दशा वर्षों का निर्धारण होता है। **जैसे**—कृतिका, उत्तराफाल्गुनी

एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों का स्वामी **सूर्य ग्रह** होने से, कृतिका आदि प्रत्येक नक्षत्र की दशा का मान सूर्य प्रदत्त छः (6) वर्ष होंगे। इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों की दशा के भोग्य वर्ष मान होंगे। आगे लिखी तालिका से स्पष्ट होगा—

जन्म नक्षत्र (Birth Nakshatra)	(क्रम)	नक्षत्र स्वामी ग्रह (Lord of Nakshatra)	भोग्य दशा वर्ष Duration of Period)
कृतिका, उ. फाल्गुनी, उ. षा.	1	सूर्य	6 वर्ष
रोहिणी, हस्त, श्रवण	2.	चन्द्र	10 वर्ष
मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा	3.	मंगल	7 वर्ष
आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा	4.	राहु	18 वर्ष
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद	5.	गुरु	16 वर्ष
पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद	6.	शनि	19 वर्ष
अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	7.	बुध	17 वर्ष
मघा, मूला, अश्विनी	8.	केतु	7 वर्ष
पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी	9.	शुक्र	20 वर्ष

विंशोत्तरी दशा पद्धति में ग्रहों की दशा का क्रम उपरोक्त तालिका में दर्शाए गए अनुक्रम के अनुसार ही किया जाता है, यथा—सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र। इसको कण्ठस्थ करने के लिए (आ चं भौ रा जी शबु केशु) का सूत्र याद कर सकते हैं, जैसे आ से तात्पर्य सूर्य, च से चन्द्र, भौ को भौम (मंगल), रा को राहु, जी को जीव (गुरु) समझें इत्यादि जन्म समय किसी ग्रह की भुक्त-भोग्य दशा ज्ञात करने के लिए चन्द्र स्पष्ट पद्धति एवं नक्षत्र के भयात्-भभोग की प्रक्रिया ग्रहण कीजाती है। दोंनें विधियों द्वारा किसी ग्रह की भोग्य दशा लगभग समान आती है। दोनों प्रकार की प्रणालियों का सरल विवरण उदाहरण सहित हमारी पँचाग दिवाकर या ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में देख सकते हैं।

ग्रहों की अन्तर्दशा जानने की विधि

ग्रहों की अन्तर्दशा के भोग्य वर्ष, मास आदि जानने के लिए महादशा ग्रह के वर्षों को अन्तर्दशा ग्रह के वर्षों से गुणा करके जो संख्या मिले,उसे 120 से भाग देने पर अन्तर्दशा के **भोग्य वर्ष,** फिर शेष को 12 से गुणा करके पुन: 120 से भाग देने पर तथा शेष 30 से गुणा करके पुन: 120 से भाग देने पर हमें अर्न्तदशा के भोग्य दिन आदि प्राप्त होंगे। **उदाहरणस्वरूप**—यदि हमें शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के भोग्य वर्षादि जानने हैं, तो शनि की महादशा के 19 वर्ष को शुक्र दशा के 20 वर्ष से गुणा करने पर हमें 380 की संख्या मिली, इसको 120 से भाग देने पर 3 वर्ष तथा शेष 20 को 12 से गुणा करके प्राप्त संख्या 240 को पुन: 120 से भाग देने पर हमें 2 मास प्राप्त हुए। इस प्रकार शनि महादशा के मध्य शुक्रान्तर भोग्यदशा 3 वर्ष, 2 महीने होगी। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों की अन्तर्दशाएं जान सकते हैं। सूर्यादि सभी ग्रहों की अन्तर्दशाओं के भोग्य वर्ष, मासादि के चक्र आप इसी में तथा **पंचाँगदिवाकर** में अवलोकन कर सकते हैं।

ग्रहों की विंशोत्तरी महादशा के फलादेश के सम्बन्ध में उपरोक्त 'ज्योतिष तत्त्व' (गणित खण्ड) पृष्ट 210 से पृष्ठ 213 तक का अध्ययन कर सकते हैं। सम्पादक

दशाऽन्तर्दशा के फलादेश सम्बनधी विशेष नियम

(1) जो ग्रह उच्च राशिस्थ, मित्र राशि या वर्गोत्तम में हो या स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण (१,४, ५, ७, ९, १०) में स्थित हो, वह अपनी दशा या अन्तर्दशा काल में कार्यो में लाभ व उन्नति, आरोग्य सुख, अभीष्ट कार्यो में सफलता, भाग्योन्नति आदि सुख प्रदान करवाता है।

(2) जो ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, वक्री ग्रह एवं अस्तंगत हो, उसकी दशाऽन्तर्दशा में बनते कामों में अड़चनें, धन हानि, रोग एवं शत्रु भय, अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं। इसी भान्ति वक्री ग्रह की दशा में स्थान परिवर्तन, धन हानि एवं सुख में कमी होती है।

(3) पाप ग्रह की महादशा में अशुभ भावस्थ पाप ग्रह की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य हानि, शत्रु भय, धन का नुकसान, बन्धुओं से वैर,कलह-क्लेश, अड़चनें, मानसिक व शारीरिक कष्ट होते हैं।

(4) जिस ग्रह की महादशा हो, उससे छटे या आठवें या 12वें स्थान में स्थित ग्रहों की अन्तर्दशा हो, तो जातक को धन हानि, कार्य-व्यवसाय में बाधाएं, अत्यधिक संघर्ष एवं धन का खर्च, स्थानान्तरण एवं मानसिक तनाव, कलह व शरीर कष्ट होते हैं।

(5) शुभ ग्रह की महादशा के मध्य शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो, तो उसका फल उत्तम होगा। उसमें धन लाभ, आरोग्य सुख, अभिलषित कार्यों में सफलता, विद्या लाभ एवं स्त्री (पति) सुख व संतान आदि सुख प्राप्त होते हैं। महादशा स्वामी एवं अन्तर्दशा स्वामी दोनों बलान्वित हों, तो और भी अच्छा है।

(6) केन्द्र भावों को विष्णु स्थान और त्रिकोण भावों को लक्ष्मी स्थान भी कहा जाता है। केन्द्र त्रिकोण के स्वामी ग्रह यदि केन्द्र-त्रिकोण (1-4-5-6-9-10) भावों में ही आ जावें, तो विशेष शुभ फल देते हैं, इनकी दशाऽन्तर्दशा में विपुल धन, लाभ, धर्म-परायणता, विद्या, भूमि-जायदाद, विद्या एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा स्त्री-संतान सम्बन्धी पारिवारिक सुखों की उपलब्धि होती है।

(7) दु:स्थानों (6, 8 एवं 12वें) स्थानों में स्थित ग्रहों अथवा उनके स्वामी ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में धन हानि, रोग, शत्रु, धन का अत्यधिक खर्च, कठिनाइयाँ , शरीर कष्ट, मानसिक तनाव एवं संघर्ष होते हैं।

(8) जो ग्रह शुभ एवं योगकारक ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा अस्त, वक्री एवं सन्धिगत न हो, तो उस ग्रह की दशाऽन्तर्दशा में धन लाभ, प्रिय बन्धुओं का सुख, भूमि, वाहन आदि का लाभ, विद्या एवं धर्म में रुचि तथा कार्यों में सफलता होती है।

(9) महादशा ग्रह का स्वामी एवं अन्तर्दशा ग्रह का स्वामी परस्पर मित्र क्षेत्री हों तथा कुण्डली में उनकी पारस्परिक स्थिति 6-8 या 12वीं न हो, तो उनकी दशाऽन्तर्दशा में ग्रह अपने भावेशत्व के अनुसार भूमि, जायदाद, धन, परिवार आदि का सुख प्रदान करेगा।

(10) जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, यदि अन्तर्दशा स्वामी ग्रह उसका शत्रु हो, या शत्रु राशि में स्थित हो, या छठे/आठवें में हो, या लग्नेश का शत्रु हो, तो ऐसी अन्तर्दशा में शत्रु भय, रोग भय, धन हानि, स्थान परिवर्तन, भाई-बन्धुओं से वैर-विरोध तथा बनते कार्यों में अड़चनें पड़ती हैं।

(11) शुभ ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो, उस अन्तर्दशा का पूर्वार्द्धभाग सुखदायक और उत्तरार्द्ध भाग कष्टकारी होता है।

(12) शनि की दशा में चन्द्र का अन्तर अथवा चन्द्रमा की दशा में शनि का अन्तर काल प्राय:आर्थिक दृष्टि से कष्टकारी होता है।

इसके अतिरिक्त यदि चन्द्रमा शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में हो, तो उसकी महादशा के मध्य यदि सप्तमेश की अन्तर्दशा हो, तो भी कष्टकारी होती है।

(13) शनि में मंगल अथवा मंगल में शनि की अन्तर्दशा संघर्षपूर्ण, रोग एवं शरीर कष्ट तथा आर्थिक दृष्टि से परेशानीकारक रहती है।

(14) शनि में सूर्य की दशा और सूर्य में शनि की अन्तर्दशा प्राय: जातक के स्वास्थ्य की दृष्टि से तथा उसके माता-पिता एवं अग्रजों के लिए कष्टकारी होती है।

(15) राहु और केतु की दशाऽन्तर्दशा प्राय: अशुभफली होती है। यदि राहु ३, ६ या ११वें भाग में हों, तो अच्छा फल भी प्रकट होता है।

(16) जो ग्रह उच्च राशि से निकलकर नीच राशि की ओर जा रहा हो, उसकी दशा को **अवरोहिणी दशा** कहा जाता है। यह दशा अशुभ एवं कष्टकारी होती है। परन्तु यदि अवरोही ग्रह उच्च, मित्र या अपने नवांश में हो, तो वह दशा मिश्रित फल देने वाली होती है।

(17) जो ग्रह नीच से उच्च राशि की ओर अग्रसर हो, उसकी दशा को **आरोहिणी दशा** कहते हैं। इस अवधि में जातक को शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि ग्रह नीच या शत्रु राशि के नवांश में हो, तो शुभ फलों में कमी होती है।

(18) यदि कोई ग्रह अपनी उच्च राशि, मित्र राशि या स्वराशिगत हों, परन्तु वही ग्रह नीच या शत्रु नवांश में हो तो उस ग्रह की दशा पूर्वार्ध भाग में शुभ तथा उत्तरार्ध में मिश्रित फल देने वाली होगी।

(19) ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा के फल सम्बन्धी अन्तिम निर्णय करते समय उस समय के गोचर ग्रहों के प्रभाव पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए।

भावेश अनुसार विंशोत्तरी दशा का फल

1. लग्नेश ग्रह की दशा में उद्यम में वृद्धि, शारीरिक सुख, धन लाभ, भूमि, वाहन आदि सुख होते हैं,परन्तु धन का अपव्यय एवं परिवार सम्बन्धी परेशिानियां भी देखी गई हैं।

2. द्वितीयेश की दशा में धन-आय के साधन बढ़ते हैं परन्तु यदि धनेश पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो वृथा खर्च एवं स्वास्थ्य के लिए अशुभ है।

3. तृतीयेश की दशा में संघर्ष एवं भ्रमण अधिक रहेगा। भाई-बन्धु एवं आत्मीय जनों के बारे में परेशानियां व खर्च भी अधिक होते हैं।

4. चतुर्थेश दशा में भूमि, मकान, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, माता का सुख होता है। यदि अशुभ ग्रह युक्त हो, तो माता या पिता दोनों में से किसी एक को शरीर कष्ट का भय।

5. पंचमेश की दशा में विद्या की प्राप्ति, धन लाभ-संतान-सुख एवं सोची हुई योजनाओं में सफलता प्राप्त होती है। यदि अशुभ या पाप ग्रह युक्त हों, तो विघ्न एवं अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होती है।

6. षष्ठेश की दशा में रोग व शत्रुओं का भय, मातुल पक्ष को कष्ट, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं, शरीर कष्ट तथा खर्च अधिक होते हैं।

7. सप्तमेश पाप ग्रह हो, तो उसकी दशा में शरीर कष्ट, धन हानि, स्त्री को कष्ट, तनाव एवं व्यवसाय में बाधाएँ आती हैं। यदि शुभ ग्रह हों, तो मिश्रित फल होते हैं।

8. अष्टमेश (पाप ग्रह हो तो) उसकी दशा में परिवारिक बन्धुओं सम्बन्धी परेशानी, आर्थिक उलझनें, बनते कामों में विघ्न, एवं मृत्युतुल्य कष्ट होते हैं। यदि शुभ ग्रह हों,तो कष्टों में कमी होती हैं।

9. नवमेश की दशा में परोपकार एवं धार्मिक भावना में वृद्धि, तीर्थ यात्रा, विद्या में उन्नति, भाग्यवश लाभ व उन्नति, कार्य-व्यवसाय में सफलता और श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं।

10. दशमेश की दशा में कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति, सरकारी क्षेत्रों से लाभ, परन्तु माता के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होगी।

11. एकादशेश की दशा में आय के स्रोतों में वृद्धि, तथा गत किए गए प्रयासों में सफलता होती है। विद्या, संतान के लिए शुभ है। यदि एकादशेश पाप ग्रह युक्त व दृष्ट हो, तो स्वयं जातक के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होती है।

12. द्वादशेश की दशा में गुप्त चिन्ताऐं, खर्च की अधिकता, वृथा भागदौड़ एवं धन हानि तथा बनते कामों में अड़चनें होती हैं।

दशाफल में प्रत्येक लग्नगत ग्रहों का शुभाशुभ

आगे मेषादि द्वादश लग्नों के अन्तर्गत ग्रह दशाओं के शुभाशुभत्व का विवरण दे रहे हैं। किसी लग्न में ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व का निर्देश सदा के लिए स्थायी नहीं समझना चाहिए। कुछ स्थितियों में किसी लग्न विशेष में शुभफल प्रदक लिखा ग्रह भी अपना दशाऽन्तर्दशा में अशुभ फल देने लगता है। **उदाहरण स्वरूप** मेष लग्न में गुरु को (भाग्येश होने के कारण) शुभ फल देने वाला लिखा गया है। परन्तु जन्म कुण्डली में यदि गुरु नीच (मकर) राशि का होकर अस्त एवं वक्री होकर पड़ा हो अथवा शत्रु राशि (२, ६) का होकर राहु, शनि आदि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो गुरु अपना दशाऽन्तर्दशा में जातक को उच्च विद्या एवं भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाऐं, बड़े आत्मीय लोगों के साथ विरोध, धन का अपव्यय एवं रोग आदि अशुभ फल भी होते हैं। इसी प्रकार अशुभ ग्रह भी कई बार स्थान, स्थिति एवं शुभ ग्रहों की दृष्टि के कारण शुभ एवं मिश्रित फल देने लगते हैं। आगे दशाफल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण देते हैं—

दशा फल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण

लग्न राशि	शुभ फल	अशुभ फल	मिश्रित फल
मेष	सूर्य, मंगल, गुरु	बुध, शुक्र	चन्द्र, शनि, राहु, केतु
वृष	सूर्य, बुध, शुक्र शनि	मंगल, केतु	चन्द्र, राहु, गुरु
मिथुन	चंद्र, बुध शुक्र	मंगल, केतु	सूर्य, गुरु, शनि, राहु
कर्क	चन्द्र, मंगल	बुध, शनि, राहु,	सूर्य, केतु, गुरु, शुक्र
सिंह	सूर्य, मंगल	शनि, शुक्र, राहु	चन्द्र, बुध, गुरु, केतु
कन्या	बुध, शुक्र	मंगल, सूर्य, केतु,	चन्द्र, शानि, गुरु, राहु
तुला	बुध, शुक्र, शनि,	सूर्य, राहु, गुरु	चंद्र, मंगल, केतु
बृश्चिक	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध, शनि, राहु	मंगल, शुक्र, केतु
धनु	सूर्य, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि, राहु,	बुध, चन्द्र, केतु
मकर	बुध, शुक्र, शनि	चन्द्र, गुरु	सूर्य, मंगल, राहु, केतु
कुम्भ	मंगल, शुक्र, शनि	चन्द्र, केतु	सूर्य, बुध, गुरु, राहु
मीन	चन्द्र, मंगल, गुरु	सूर्य, शुक्र, राहु	बुध, शनि, केतु

सूर्य की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

सूर्य में सूर्य का अन्तर—कुण्डली में उच्च, स्वराशि या मित्र राशि का होकर, १, ३, ६, ९, १० या ११ वें भाव में हो, तो जातक के उद्यम एवं पराक्रम में वृद्धि, स्वास्थ्य का लाभ, पिता एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से लाभ, मान-सम्मान एवं पदोन्नति हो, व्यवसाय में धन लाभ के अवसर, विदेश गमन तथा सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होती है। यदि सूर्य शत्रु, नीचादि राशिगत होकर २, ७, ८ या १२वें भाव में हो तो उपरोक्त सुखों में कमी, भाई-बन्धुओं से कलह-क्लेश एवं असहयोग, स्वास्थ्य हानि, आर्थिक एवं परिवारिक परेशानियां, नेत्र विकार तथा क्रोध व उत्तेजना अधिक रहे। यदि सूर्य शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो, तो मिश्रित फल रहेंगे। इन दिनों सूर्य उपासन एवं सूर्य सम्बन्धी दान करना शुभ होगा।

सूर्य में चन्द्रान्तर—कुण्डली में चन्द्र उच्च, स्वराशि, मित्र राशि होकर केन्द्र-त्रिकोणादि शुभ भावों में हो, तो जातक को इस दशा में मन को प्रसन्नता देने वाले समाचार प्राप्त होंगे। धन प्राप्ति के साधनों में वृद्धि, माता एवं स्त्री से सुख, सन्तान सुख तथा कुछ महत्त्वपूर्ण लोगों के साथ मैत्री सम्बन्ध बनेंगे। इस अवधि में सुन्दर वस्त्र, स्त्री आभूषण, वाहन, धन सम्पत्ति आदि सुखों की प्राप्ति तथा परिवारिक जनों का सहयोग भी मिलेगा। विदेश यात्रा एवं धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है। यदि चन्द्र नीच या शत्रुराशिगत होकर अशुभ भावस्थ होकर क्षीण बली, क्रूर ग्रह युक्त अथवा सूर्य से षडाष्टक स्थिति में हो, तो जातक को शारीरिक एवं मानसिक परेशानी, असुखद यात्रा, गृह कलह, परिवारिक चिन्ता, तनाव, आय कम तथा खर्च अधिक हों। माता या स्त्री सम्बन्धी कष्ट, नेत्र विकार, सिर पीड़ा, वात, कफ आदि सम्बन्धी रोगों का भय हो।

सूर्य में मंगल का अन्तर—मंगल स्वराशि, उच्चादि स्थिति में हो तो जातक के पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, भूमि लाभ, मकान, पुत्र-सन्तति, गृह में मंगल एवं वाहनादि सुखों में वृद्धि होती है। इस अवधि में भाई-बन्धुओं एवं मित्रों का सहयोग, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य में लाभ, सरकारी क्षेत्रों से लाभ एवं सफलता मिलती है। सन्तान सम्बन्धी प्रसन्नता एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। यदि सूर्य से मंगल छटे, आठवें या १२वें स्थान में हो, अथवा नीच, वक्री या शत्रु राशिगत होकर शनि आदि अशुभ ग्रह से युक्त हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से विरोध, धन हानि, रक्त विकार एवं चोटादि का भय, सन्तान कष्ट, किसी प्रिय-बन्धु से तकरार एवं परिवार एवं धन सम्बन्धी चिन्ताएं होती हैं।

सूर्य में राहु का अन्तर—सूर्य व राहु के मध्य स्वाभाविक शत्रुता होती है। परन्तु यदि कुण्डली में सूर्य व राहु के मध्य ३, ६, १०, ११वां सम्बन्ध बनता हो, तो जातक को विघ्नों एवं संघर्ष के बाद धन लाभ, भाग्योन्नति हो, जातक का मन सांसारिक विषयों की ओर अधिक आकृष्ट होता है। जातक को व्यवसाय में दौड़धूप एवं कठिनाईयों के बाद धनार्जन होता है। यदि सूर्य से राहु (कुण्डली में) १, ४, ५, ६, ७, ८ या १२वें स्थान पर हो, तो धन-हानि, स्त्री-पुत्र या अन्य आत्मीय जनों को कष्ट, नेत्र विकार, सिर पीड़ा, मन्दाग्नि, वायु प्रकोप आदि अशुभ फल होते हैं।

सूर्य में गुरु का अन्तर—गुरु उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ५, ७, ९, १०) में हो, तो जातक को उच्च विद्या में सफलता, भाई-बन्धुओं का सुख एवं सहयोग प्राप्त हो, उच्च पद-प्रतिष्ठा, विवाह, संतान एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति, धन सम्पदा, एवं पुत्र सुख के योग हों, स्त्री की कुण्डली में पति सुख प्राप्ति के योग। गुरु की भुक्ति में धर्म-कर्म एवं परोपकार में प्रवृत्ति तथा ज्योतिष एवं पौराणिक साहित्य में भी रुचि बढ़ती है तथा गुणों में वृद्धि, श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क होते हैं। सूर्य से गुरु ६, ८, १२वें भाव में हो, नीच राशिस्थ हो या पाप ग्रहों से युक्त हो तो जातक को शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, धन हानि, राज भय, विद्या में रुकावटें, उदर विकार, धन का अपव्यय एवं बनते कामों में अड़चनें, परिवारिक कलह, स्त्री (पति) एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता होती है।

सूर्य मध्ये शनि का अन्तर—कुण्डली में शनि उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा अवधि में शत्रु नाश, व्यवसाय में धन लाभ विवाह एवं सन्तान सुख तथा क्रय-विक्रय में वृद्धि तथा आय के स्रोतों में गुप्त युक्तियों द्वारा बढ़ौत्तरी होती है। महादशा स्वामी सूर्य से शनि यदि ६, ८ या १२वें स्थान पर हो, नीच या पापग्रह युक्त हो, तो जातक को गुप्त शत्रु भय, संकट, बन्धु वियोग, पिता व अग्रजों पर कष्ट, धन हानि, पाप कर्मों में रुचि, बनते कामों में बाधाएं, उच्च विद्या में बाधाएं, शरीर कष्ट, कफ, वायु प्रकोप, दान्तों व कानों में पीड़ा एव मानसिक तनाव बढ़ जाते हैं।

सूर्य मध्ये बुधान्तर—कुण्डली में बुध उच्च राशि या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो बुध की अन्तरदशा में विद्या में सफलता एवं उन्नति, व्यवसाय में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे, विवाह एवं सन्तान सुख, आय के स्रोतों में वृद्धि, ज्योतिष, गणित, कम्पयूटर्स, तंत्र आदि बौद्धिक कार्यों में रुचि बढ़े।

बुध ६, ८, १२वें भाव अस्त, वक्री आदि स्थिति में हो तो जातक को शरीर कष्ट, व्यवसाय एवं मन में अस्थिरता, सिर, पीड़ा, तनाव, वात, पित्त, कफ़ एवं चर्म रोगों का भय होता है। शेष पृष्ठ 199 पर देखें।

योगिनी दशाओं का फल

भारतीय फलित ज्योतिष में अनेक प्रकार की दशाओं और उनके फलों का वर्णन मिलता है। विंशोत्तरी दशा पद्धति के पश्चात् उत्तर-पश्चिमी भारत में योगिनी दशा का प्रणयन अवश्य किया जाता है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर इत्यादि प्रदेशों में योगिनी दशाओं का विशेष प्रचलन है।

योगिनी दशा के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हम अपने ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं। पाठकों की सुविधा के लिए संक्षेप में पुनः जानकारी देते हैं।

योगिनी दशा में मंगल आदि दशाओं का कुल मान 36 वर्ष का होता है। 36 वर्ष के पश्चात् उनकी पुनः आवृत्ति होती है। इन आठ दशाओं के क्रमशः ये नाम हैं—

1. मंगला, 2. पिंगला, 3. धान्या, 4. भ्रामरी, 5. भद्रिका, 6. उल्का, 7. सिद्धा, और **8. संकटा।** इनकी क्रम संख्या अनुसार ही इनकी वर्ष संख्या निर्धारित की गई है, जिनका कुल जोड़ 36 वर्ष आता है। 1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 = कुल 36 वर्ष। मंगला, पिंगला आदि दशाएं अपना नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा जानने की विधि—विंशोत्तरी दशा की भांति ही योगिनी दशा का आधार 27 नक्षत्र हैं। यथा-अश्विनी नक्षत्र से प्रारम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में 3 जोड़ करके, कुल जमा को 8 द्वारा भाग देने से यदि 1 शेष बचे तो मंगला, 2 शेष बचें तो पिंगला, 3 बचें तो धान्या इत्यादि क्रमानुसार दशा जानें, यदि शेष शून्य (0) बचे तो आठवीं अर्थात् संकटा दशा जानें।

प्रत्येक दशा का स्वामी ग्रह भी अलग-अलग ग्रह होता है। किस नक्षत्र के अन्तर्गत मंगला, पिंगला, आदि कौन सी दशा आती है तथा उस दशा का स्वामी कौन सा ग्रह है। यह सब आगामी तालिका (चक्र) से जान सकते हैं—

जन्म नक्षात्रानुसार योगिनी दशा चक्र

दशा नाम	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
दशा वर्ष क्रम	1	2	3	4	5	6	7	8
दशा स्वामी	चंद्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	रा. के
जन्म नक्षत्र	आर्द्रा चित्रा श्रवण	पुर्न स्वाती धनिष्ठा	पुष्य विशाखा शतभिषा	अश्ले. अनु. पू. भा. अश्वि.	मघा ज्येष्ठा उभा. भरणी	पूफा. मूला रेवती कृतिका	उफा. पूषा. रोहिणी	हस्त उषा. मृग.

-जन्म नक्षत्र से योगिनी दशा का भोग्य काल जानना-

विंशोत्तरी दशा पद्धति के समान ही योगिनी दशा में जन्म कालीन नक्षत्र का भयात (नक्षत्र का बीता हुआ काल) तथा भभोग (कुल मान)—दोनों को पलात्मक में बना लें। फिर पलात्मक भयात् को योगिनी की जन्म दशा वर्षों से गुणा करके, प्राप्त संख्या को पलात्मक भभोग के द्वारा भाग देने से योगिनी दशा के भुक्त वर्ष, मास आदि निकल आएँगे। इस प्राप्त वर्ष, मासादि जो जन्म दशा के कुल वर्षों में से घटा देने से हमें जन्म कालीन भोग्य दशा के वर्ष, मास आदि प्राप्त हो जाएंगे।

उदाहरण—मान लो, **20 अक्तूबर, सन् 2000 ई., शुक्रवार की अर्द्धरात्रि 1 बजकर 30 मिंट (ईष्ट ४७/१३) पर जन्म किसी बालक की योगिनी दशा निकालनी है। जन्म समयानुसार पुष्य नक्षत्र का भयात् ३० घड़ी १० पल तथा भभोग ६६ घड़ी ४५ पल होंगे। ऊपर लिखी तालिका अनुसार धान्या दशा प्रारंभ होगी। अब पलात्मक भयात् को दशा वर्ष 3 से गुणा करने पर 5430 पल प्राप्त हुए। इसको पुष्य नक्षत्र के भभोग 4005 से भाग देने पर हमें भुक्त दशा 1 वर्ष 4 मास, 8 दिन प्राप्त हुए।**

इसको धान्या दशा के कुल मान 3 वर्ष में से घटा देने पर हमें भोग्य धान्या दशा के 1 वर्ष 07 मास तथा 22 दिन प्राप्त हुए। इसको जन्म तारीख, मास, वर्ष आदि में जमा करने पर धान्य दशा 12 जून, 2002 तक समाप्त होगी। इसके आगे क्रमानुसार भ्रामरी (4 वर्ष), भद्रिका (5 वर्ष) इत्यादि जमा करते जाने से आगामी वर्षों का भोग्य दशाकाल प्राप्त हो जाएगा।

योगिनी दशा में अन्तर्दशा निकालने की विधि—अन्तर्दशा सम्बन्धी चक्र ज्योतिष तत्त्व गणित-खण्ड में उदाहरण सहित पढ़ सकते हैं।

(1) मंगला दशा (1 वर्ष)—(ज्ञानान्दकरी दशा भवति सा ज्ञेया सदा मंगला)—मंगला दशा में मंगल कार्यों का उदय होता है। विद्या में सफलता, जातक की प्रवृत्ति धार्मिक कार्यों, ब्राह्मणों एवं ईश्वर भक्ति एवं परोपकार के कार्यों में बढ़ती है। स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होता है। गृह में किसी मंगल कार्य का उत्सव होने की भी सम्भावना होती है। जातक की प्रवृत्ति सत्कार्यों की ओर अधिक रहती है।

(2) पिंगला दशा (2 वर्ष)—इस दशा में शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, घरेलू कलह-क्लेश, धन हानि, बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, कार्यों में विफलता, नीच लोगों से कुसंगति, व्याकुलता, गुप्त चिन्ता, अस्वस्थता आदि अशुभ फल होते हैं। पिंगला दशा प्रारम्भ में कुछ सुखकारक परन्तु उत्तरार्द्ध में कष्टकारी मानी जाती है। जातक का अधिकांश समय सोच-विचार में व्यतीत होता है। मित्र भी शत्रुओं जैसा व्यवहार करते हैं। आय कम खर्च अधिक होते हैं।

(3) धान्या दशा फल (3 वर्ष)—इस दशा में जातक को धन-धान्य एवं सुख के साधनों में वृद्धि होती है। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं। स्त्री एवं सन्तान की ओर से खुशी प्राप्त होती है। विद्या लाभ, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। जातक व धन तीर्थ

यात्रा, धर्म एवं परोपकारी कार्यों में भी व्यय होता है। सरकारी क्षेत्रों से भी सम्मान एवं लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं।

(4) भ्रामरी दशा (4 वर्ष)—स्त्री, संतान अथवा परिवार की तरफ से परेशानी, कलह-कलेश का भय, अधिकांश समय भ्रमण (घूमने फिरने) में व्यतीत हो, कई प्रकार के कार्यों में व्यस्तता रहे, परन्तु स्थिरता न हो, आय कम तथा खर्च अधिक रहें, स्वास्थ्य भी ठीक न रहे, चित्त में व्याकुलता रहे, शत्रु भय, शरीर कष्ट तथा किसी ऋण लेने की भी सम्भावना हो सकती है। इस दशा काल में दौड़धूप व खर्च अधिक होते हैं।

(5) भद्रिका दशा (5 वर्ष)—इस दशा काल में जातक के पुण्यों का उदय और धर्म-कर्म की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। साथ ही धन-धान्य की वृद्धि तथा जातक के गुणों का प्रकाश बढ़ता है। उच्च विद्या में सफलता, व्यवसाय में लाभ व उन्नति, गृह में कोई मंगल कार्य हो, विप्रादि श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क, सुन्दर एवं सुशील स्त्री का सुख, वाहन एवं भूमि आदि सुखों की प्राप्ति होती है। कामुक एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। दशा के अन्तिम भाग में व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष व कठिनाइयों का सामना होता है।

(6) उल्का दशा (6 वर्ष)—इस दशा में जातक का निकटस्थ सम्बन्धियों एवं मित्रों से मतभेद एवं विरोध रहे, कोई बना बनाया काम बिगड़े, अत्यधिक संघर्ष करने पर भी आय कम व खर्चों की अधिकता रहे। स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानियां, क्रोध एवं तनाव अधिक हो। दुर्घटना से चोटादि का भय, शरीर कष्ट, बुद्धि में विभ्रम, व्याधि एवं शत्रु भय, हृदय, उदर, कान, दांतों, पैरों एवं नेत्रों में पीड़ा तथा व्यसनों आदि के कारण कष्ट आदि अशुभ फल प्रकट होते हैं।

(7) सिद्धा दशा (7 वर्ष)—उच्च विद्या में सफलता, सोचे हुए (अभीष्ट) कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, जातक की धार्मिक कृत्यों (परोपकार आदि) की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि विधाओं की ओर रूचि, भूमि-जायदाद, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों में वृद्धि तथा उच्चपदासीन (प्रतिष्ठित)लोगों से सम्बन्ध बढ़ते हैं। विवाह एवं गृहस्थ सुख और सौभाग्य में वृद्धि तथा व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं। दशा के अन्त में पारिवारिक उलझनों के कारण कुछ कठिनाईयां व चिन्ताएं होती हैं।

(8) संकटा दशा (8 वर्ष)—में भाई-बन्धुओं या पारिवारिक सदस्यों के साथ विरोध एवं मन-मुटाव पैदा हो। शरीर कष्ट एवं शत्रु भय, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएं, अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ प्राप्त न हो, किसी विश्वस्त मित्र द्वारा धोखा दिए जाने की सम्भावना एवं धन हानि, स्त्री एवं सन्तान आदि के कारण तनाव व गुप्त चिन्ता, व्यवसाय में अस्थिरता, भ्रमणशीलता व खर्च अधिक हो, परदेश (विदेश आदि) में जाने की उत्कट इच्छा (अभिलाषा) बनी रहती है। इस दशावधि में उत्साह एवं पराक्रम में कमी, मानसिक व शारीरिक कष्ट, वात-पित्त एवं कफ़ादि में विकार के कारण रोग भय, अपव्यय, विघ्न भय आदि अशुभ फल होते हैं। संकटा दशा का पूर्वार्ध भाग राहु से तथा उत्तरार्द्ध भाग केतु से प्रभावित रहता है।

उपरोक्त पिंगला, उल्का, संकटा आदि क्रूर एवं अशुभ दशा के फल प्रकट हो रहें हों, तो जातक को उस दशा स्वामी ग्रह से सम्बन्धित ग्रह का जाप, पूजा एवं दानादि करके ग्रह शान्ति करवा लेना चाहिए।

–योगिनी दशा में अन्तर्दशाओं का फल विचार–

योगिनी अन्तर्दशाओं में जब मंगला आदि शुभ दशाओं के अन्तर में धान्या, भद्रिका आदि शुभ योगिनी की ही अन्तर्दशा चलती है, तो अपने ग्रह स्वामी के गुणों के अनुसार शुभ फलों में वृद्धि होती है। यदि दोनों योगिनी अन्तर्दशाऐं अशुभ फलप्रदा होंगी, तो अशुभ फलों की मात्रा में वृद्धि होगी। यदि मुख्य योगिनी शुभफली एवं उपदशा अशुभफली हो, तो मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

नोट—विंशोत्तरी, योगिनी आदि सभी प्रकार की दशाओं के फल का विचार करते समय उस समय की '**पंचाँग दिवाकर**' में दी गई ग्रहों की गोचर स्थिति एवं उसके प्रभाव को भी ध्यान में अवश्य रखना चाहिए। इससे ग्रह फलकथन में अधिक सूक्ष्मता होगी— पं. पन्ना लाल ज्योतिषी।

पृष्ठ 197 का शेष भाग **सूर्य मध्ये केतु का अन्तर**—केतु स्वगृही (वृश्चिक, धनु व मीन) राशि का होकर सूर्य से ३, ६, १० या ११वें भाव में हो तो जातक को निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहते हैं। परन्तु आय के साधनों में अनिश्चितता बनी रहती है। आवेशपूर्वक किए गए कार्यों में रुकावटें पैदा होंगी। यदि सूर्य से केतु की स्थिति ६, ८, या १२ वें भाव में हो, तो जातक को देश-प्रदेश में भ्रमण करना पड़े एवं भागदौड़ अधिक हो, व्यवसायिक क्षेत्रों द्वारा आय में कमी, परन्तु खर्च बहुत हो, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं आत्मीय जनों को कष्ट, पारिवारिक कलह, स्थानान्तरण एवं शारीरिक कष्ट, नेत्र एवं सिर दर्द व अन्य क्लिष्ट रोगों का भय होता है।

सूर्य मध्ये शुक्र का अन्तर—शुक्र उच्चस्थ, मित्र क्षेत्री हो एवं केन्द्र-त्रिकोण भावों में स्थित हो तो जातक शुक्र की अन्तर्दशा में स्त्री सुख, मकान, वस्त्र आभूषण एवं वाहनादि भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। उच्चस्तरीय लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।संगीत, गायन,कला आदि क्षेत्रों में रूचि होगी। काम एवं भोगवृत्ति बढ़ेगी। आय के साथ खर्च भी अधिक होंगे। यदि शुक्र कुण्डली में छटे, आठवें या १२वें भाव में नीच या शुभ राशिगत हो, तो जातक को धन हानि अथवा वस्त्रों, मनोरंजन कार्यों एवं स्त्रियों तथा विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक हो, नीच लोगों के साथ संगति अधिक होगी। व्यवसाय आदि पर व्यय अधिक, गुप्त रोग होने की आशंका रहे। स्त्री एवं संतान सम्बन्धी चिन्ता हो।

नोट—अन्य दशाअन्तर्दशाओं का फल आगामी वर्ष के पंचांगदिवाकर में देंगें अथवा अधिक जानकारी के लिए ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-दो का अध्ययन करें।

अनिष्ट निवारक नवग्रह यन्त्र और उनको धारण करने की विधि

संसार में प्रत्येक मनुष्य को अपने पूर्व जन्म में तथा वर्तमान जन्म में किए गए कर्मों एवं नव ग्रहों के प्रभावस्वरूप अनेक प्रकार के शुभ-अशुभ (सुख-दुखादि) फलों की प्राप्ति होती है। जिस पुरुष/स्त्री की जन्म राशि या प्रसिद्ध राशि पर सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह अशुभ प्रभाव डाल रहे हों, उन्हें तदानुसार सम्बन्धित ग्रह यंत्र को अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोने, चांदी अथवा तांबे के तावीज़ में रखकर गले में धारण करे अथवा पुरुष दाहिनी भुजा में तथा स्त्री बाई भुजा में धारण करें। इन यंत्रों को सोना, चांदी अथवा तांबे के लाकेट अथवा प्लेट पर खुदवा कर उस पर सम्बन्धित ग्रह की पूजा शुभ मुहूर्त में विधिपूर्वक धारण करने से ग्रह जनित अनिष्ट प्रभाव का निवारण होकर सब प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं।

अष्टगंध—केशर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, अगर-तगर तथा कुमकुम।

सूर्य का यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र का यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल का यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध का यन्त्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु का यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र का यन्त्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि का यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु का यन्त्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु का यन्त्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

'नवग्रहों के ध्यान मन्त्र'

सूर्य—पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः। सप्तश्वः सप्तज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः॥

चन्द्रमा—श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः। श्वेतवाहनः गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥

मंगल—रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥

बुध—पीतमाल्याबरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥

बृहस्पति—देवानां गुरुः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥

शुक्र—दैत्यानां गुरुः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥

शनि—इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः कर्त्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥

राहु—करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥

केतु—धूम्रा द्विबाहवः सर्वेगदिनो विकृताननाः। गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

(मत्स्यपुराण ९४।१—९)

सूर्यादि ग्रहों के यंत्र-धारण विधि

सूर्य यन्त्र—जन्मपत्री में सूर्य की स्थिति अशुभ हो अथवा विंशोतरी दशा में सूर्य की अशुभ दशा चल रही हो, गोचर स्थिति भी अशुभ हो, तो सूर्य यंत्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन (यदि कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र भी हो तो और भी अच्छा है) उपर्युक्त विधि अनुसार अष्टगन्ध से लिखकर सोने या ताम्र के तावीज़ में रखकर अथवा सोने या ताम्र की प्लेट पर खुदवा कर लाल रुमाल एवं लाल (गुलाबी) डोरी में लपेट कर अपने पास रखे। प्रातः धारण करने से पूर्व यंत्र पर "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" इस मन्त्र का ७ हजार बार जाप करना कल्याणकारी होगा।

चन्द्र यन्त्र—आपकी राशि को जन्मकुण्डली में दशा-अन्तरदशा अथवा गोचर में चन्द्रमा अशुभ हो तो चन्द्र यन्त्र को शुक्ल पक्ष के सोमवार विशेषकर रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में सायं काल को उपर्युक्त विधि अनुसार चांदी का यंत्र धारण करें अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर चांदी के तावीज़ में रखकर सफेद डोरी में धारण करें। यंत्र धारण करने से पूर्व उस पर "**ॐ सों सोमाय नमः**" या "**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**" इस मंत्र का ११००० पाठ पूरा कर लेना शुभ होगा।

मंगल यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में मंगल ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के मंगलवार को मृगशिर, चित्रा या धनिष्टा नक्षत्र कालीन "**ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः**" मन्त्र को दस हज़ार संख्या में जाप एवं पूजा के पश्चात् ताम्बे का यन्त्र (प्लेट, लाकेट आदि) धारण करना श्रेयकर रहता है। ताम्र यंत्र के अभाव में भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिखकर ताम्बे के तावीज़ में धारण कर सकते हैं।

बुध यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में बुध के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के बुधवार को आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र के समय सोने या चांदी की प्लेट, अंगूठी या लाकेट पर खुदवा कर हरे रुमाल में बुध यंत्र धारण करें। धारण करे से पूर्व इस पर बुध के बीज मंत्र का ९००० की संख्या में पाठ करना शुभ होगा।

गुरु यन्त्र—अपनी राशि पर कुण्डली में गुरु के अरिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के गुरुवार को पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के समय या किसी अन्य शुभ मुहूर्त पर सोने, चांदी या ताम्बे की प्लेट अथवा लाकेट या अंगूठी पर यन्त्र खुदवा कर गुरु का बीजमंत्र "**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**" (१९०००) पढ़ते हुए पीले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से अनिष्ट प्रभाव दूर हो जाता है।

शुक्र यन्त्र—अपनी राशि या कुण्डली में शुक्र ग्रह के अनिष्ट के निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को पूर्वाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा या भरणी नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में चांदी की प्लेट या लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर शुक्र का बीज मंत्र "**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**" १६००० की संख्या में पढ़कर श्वेत चन्दन और श्री गंगा जल के ३ छींटे देते हुए गुलाबी रुमाल में लपेटकर अपने पास रखें।

शनि यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में शनि ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को पुष्य, अनुराधा या उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में सोने या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर, शनि के बीज मंत्र "**ॐ शं शनैश्चराय नमः**" मन्त्र की ३ माला का जाप करके यथाशक्ति दान के उपरान्त काले रुमाल में लपेट कर अपने पास रखें।

राहु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्मकुण्डली में राहु के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को आर्द्रा, स्वाती या शतभिषा नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में चांदी अथवा सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी में यन्त्र खुदवा कर राहु के बीज मन्त्र "**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**" को कम-से-कम तीन माला का जाप करके दानपूर्वक धूम्र वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से लाभ होगा।

केतु यन्त्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में केतु के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्ल पक्ष के मंगलवार या रविवार को अश्विनी, मघा या मूला नक्षत्र में अथवा किसी शुभ मुहूर्त कालीन चांदी या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट या अंगूठी में यंत्र को खुदवाकर केतु के बीज मन्त्र "**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**" की तीन माला का जाप करके दानपूर्वक लहसुनिया जैसे वर्ण के रुमाल में लपेट कर अपने पास रखने से नेष्ट फल दूर हो जाता है।

भाग्योदय देखने का चक्र

यदि आपको किसी व्यक्ति के भाग्य का फल जानना हो, तो उस व्यक्ति को कहें कि वह व्यक्ति 1 से 31 की संख्या के भीतर कोई भी अंक मन में सोच ले। तदुपरान्त उसको पूछें कि नीचे लिखे A से लेकर E तक के पाँच यन्त्रों में से किस-किस यन्त्र में उसका सोचा हुआ अंक विद्यमान् है। जिस-जिस यन्त्र में अमुक व्यक्ति का सोचा हुआ अंक मिले, उस यन्त्र के दाईं तरफ के सबसे ऊपर के कोने वाले पहले हिन्दसों को परस्पर जमा कर लेने से व्यक्ति विशेष के मन में सोची हुई संख्या पता लग जाएगी। उस अंक की संख्या के आधार पर व्यक्ति के '**भाग्य का फल**' आगे लिखे अनुसार जानें—

उदाहरण—मान लो किसी मनुष्य ने अपने मन में 22 का अंक सोचा है। अब देखो कि यह 22 का अंक खाना नं० A, B, C, D, E में कहाँ मिलता है। अब इन यन्त्रों B, C, E के ऊपर के दायें कोनें के अंकों 2 + 4 + 16 को जोड़ो तो 22 का जोड़ बनता है। अत: प्रश्नकर्त्ता ने 22 का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। इसी भान्ति अन्य अंकों के बारे में भी विचार करें।

नं० A

7	5	3	1
15	13	11	9
17	19	21	23
25	27	29	31

नं० B

7	6	3	2
15	14	11	10
23	22	19	18
31	30	27	26

नं० C

30	29	28	4
22	21	20	23
15	13	12	14
5	6	7	31

नं० D

30	10	28	8
26	25	24	31
14	13	12	27
9	29	11	15

नं० E

29	30	31	16
26	25	24	20
21	22	23	27
17	18	19	28

(1) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुमकों इस का ध्यान भी न होगा। (2) धैर्य रखें, भाग्योदय होने वाला है। फिर भी प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहें। (3) किसी ऐसे साधन द्वारा तुम्हारी आशा पूर्ण होगी जिसका आपको ध्यान भी नहीं होगा। (4) जिस गुप्त चिन्ता के लिए आप परेशान हो, उसकी सफलता के लिए अभी कुछ विलम्ब हो सकता है, अपना पुरुषार्थ जारी रखें। (5) आपके लिए खुशी का समय आने वाला है, धैर्य रखें। सूर्य उपासना करना शुभ होगा। (6) घबराओ नहीं, तुम्हारी बेहतरी का साधन (ईश्वर कृपा से) शीघ्र निकल आएगा। (7) आपकी मुश्किलों का हल माता-पिता के आशीर्वाद से ही निकल पाएगा। (8) तुम्हारे भाग्य में धन-सम्पत्ति का सुख लिखा है, किन्तु विशेष परिश्रम करना होगा, लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा। (9) थोड़े दिनों में आपके सामने विदेश यात्रा सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जाएगा, इसको स्वीकृति देने से पहले गम्भीरता से विचार करना उचित होगा। (10) इस समय आपका भाग्य गर्दिश में है, विशेष पुरुषार्थ एवं शिव उपासना करने से सफलता मिलेगी। (11) आपके संघर्ष और परेशानियों का समय बीत गया है, आने वाले दिनों में धन-लाभ एवं सुख के साधन बढ़ेंगे। (12) उतावलेपन से बनते काम बिगड़ सकते हैं। धीरज से काम लें, धीरे-धीरे ही बिगड़े कामों में सुधार आएगा। (13) किसी प्रिय बन्धु के सहयोग से बिगड़ा हुआ कोई विशेष काम बनेगा। (14) अभी बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। मानसिक तनाव व उद्विघ्नता से बचें। (15) भाग्य में अभी कशमकश रहेगी। लगभग अढ़ाई महीने बाद सुधार के योग हैं। (16) ईश्वर पर भरोसा रखो, लगभग दो महीने बाद भाग्य में परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। (17) अभी सितारे गर्दिश में है, लगभग डेढ़ मास बाद हालात में सुधार होगा। (18) अनावश्यक चिन्ता एवं तनाव से बचें, अच्छा समय आने वाला है। (19) उत्साहपूर्वक कर्म करते रहें, भाग्य में परिवर्तन व शुभ लाभ के योग पाए जाते हैं। (20) अपने भाग्य एवं पुरुषार्थ पर भरोसा रखें, मनोवांछित कार्यो में सफलता मिलने वाली है। (21) वर्तमान काल में आपके भाग्य के सितारे गर्दिश में है। लगभग एक मास बाद हालात में सुधार के योग हैं। (22) विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। (23) आर्थिक परेशानियों के कारण तनाव होगा, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में लाभ व उन्नति के योग हैं। (24) वर्तमान में समय संघर्षपूर्ण होगा। निकट भविष्य में मनोवांछित कार्यों में सिद्धि प्राप्ति होने के संकेत हैं। (25) किसी अंतरंग मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। अचानक धन लाभ भी होगा। (26) वृथा कामों में समय न गंवाओ, आने वाले दो महीनों में लाभ व उन्नति के योग हैं। (27) व्यर्थ की चिन्ता न करें, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में सुखद परिवर्तन होने के आसार हैं। (28) उत्साह से अपने कर्त्तव्य पालन में लगे रहें, लगभग दो मास में भाग्य में शुभ परिवर्तन होने वाला है। (29) संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण मन अशान्त रहेगा। लगभग अढ़ाई मास बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। (30) अपने निश्चय पर दृढ़ रहें, लगभग डेढ़ मास आर्थिक कामों में सुधार होगा। (31) वर्तमान परिस्थितियां संघर्षपूर्ण होंगी। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन के बाद सफलता प्राप्त होगी।

स्वप्न—शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्यो. विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	गर्भपात	गम्भीर रोग	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	घूंघट देखना	नया कारोबार	जुआ खेलना	धन हानि	तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	जेब काटना	धन हानि	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
अन्धेरा देखना	दुःख मिले	कबूतर देखना	शुभ समाचार	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	जड़ें देखना	दीर्घायु	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	काला नाग	राज्य सम्मान	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	जड़ें काटना	संकट का सूचक	तैरते देखना	आयु में वृद्धि
अर्थी देखना	रोग मुक्त	किला देखना	तरक्की पाना	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कोढ़ी देखना	रोग सूचक	घडी देखना	यात्रा का संकेत	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
आकाश देखना	तरक्की होना	कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	झाड़ू देखना	नुकसान हो	तीर मारना	खुशी मिले
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ	कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	झांकी देखना	अशुभ	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	चावल खाना	शुभ समाचार	झोली देखना	विजय संकेत	तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
आत्महत्या करना	दीर्घायु	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	तोता देखना	धन लाभ
आलू देखना	मुसीबत आना	कोयल देखना	कोई शुभ समाचार	चादर देखना	बदनामी हो	झरना देखना	दुःख दूर हों	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो	कबाब खाना	अपयश/विवाद	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि	तराजू देखना	व्यापार लाभ
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	ताली बजाना	खुशी मिले
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	खून करना	संकट आना	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	ताश खेलना	व्यापार लाभ
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	खिलौना देखना	सुख शान्ति	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	टापू देखना	संकट लक्षण	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	टोपी देखना	प्रगति हो	तरबूज देखना	परेशानी
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	खेत देखना	संकट पूर्ण	छींकना	कार्य बाधा	ठग मिलना	धन हानि	तांगा देखना	झगड़ा हो
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	थूक देना	परेशानी बढ़े
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	गुरु देखना	कार्य सफलता	छपाई देखना	अपमानित होना	ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	गोबर देखना	पशु लाभ हो	छंटनी देखना	पदोन्नति	ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	थप्पड़ खाना	शुभ
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जख्म देखना	परेशानियां	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	थन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
ऊँट देखना	अंग घात	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दूध पीना	खुशी प्राप्ति
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दही देखना	सफलता
कमल देखना	धन प्राप्ति	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	जल देखना	मान सम्मान	डाकू देखना	धन हानि	दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दु:ख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दक्षिणा देना	मंगल कार्य
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व दखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दु:ख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दु:ख दूर हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मधुमक्खी देखना	व्यापार वृद्धि
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दु:ख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	चिन्ता, हानि
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके ''महामृत्युञ्जय मन्त्र'' का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल	अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ	बायें हाथ	धन हानि
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति	नाभि	पुत्र प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि	हृदय	सुख-यश प्राप्ति
दाहिना कान	आयु वृद्धि	गुदा	रोग भय
बायां कान	भूषण लाभ	गुप्तांग	मित्र से भेंट
दाईं भुजा	मान-सम्मान	दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बाईं भुजा	धन-हानि, राज भय	बायें पाँव	रोग-क्लेश
कण्ठ	शत्रु नाश	पावों की उंगलियों	यात्रा
पीठ के मध्य	क्लह-क्लेश	गर्दन	यश, लाभ
बाईं पीठ	रोग भय		
दायीं पीठ	सुख लाभ		
दायें कन्धे	विजय, सफलता		
बायें कन्धे	दुश्मनों से भय		
कमर	रोग भय		
दाईं जाँघ	धन हानि		
बाईं जाँघ	पुत्र से लाभ		
दायें हाथ	धन लाभ		

स्वप्न एवं अन्य शकुन सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से स्वप्न-ज्योतिष विज्ञान नामक पुस्तक मँगवाकर पढ़ें। —जनरल बुक डिपो

अंगस्फुरण फल

अंग	फल	अंग	फल
सिर	पृथ्वी लाभ	बाहुमध्य	धनागमः
माथा	स्थान लाभ	कर (हाथ)	धन प्राप्ति
वामभुज	प्रिय प्राप्ति	छाती	विजय
नेत्र	प्रियदर्शन	पार्श्व	उत्तम प्रीति
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन	नाभि	यात्रा से लाभ
कपोल	स्त्री सुख	उदर पेट	कोष प्राप्तिः
नासा	गन्ध सुख	वृष्ण	पुत्र लाभ
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन	जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
कण्ठ	भूषण प्राप्ति	जंघा	हानिप्रद
ग्रीवा	शत्रु भय	चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
पीठ	पराजय	चरण के नीचे	लाभप्रदः
कन्धा	मित्र समागम	दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति	कण्ठे	शत्रुनाश

फलित ज्योतिष में कुछ प्रसिद्ध योगों का वर्णन

निम्नलिखित योगों में राहु–केतु का समावेश नहीं किया जाता (ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग-2 से उद्धृत)

रूचकादि पंच–महापुरुष योग

'**पंच महापुरुष**' योग के शीर्षक के अन्तर्गत रूचक आदि पांच शुभ योगों का वर्णन प्रायः सभी प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में मिलता है। इनका फल राजयोगों के समान शुभ माना जाता है। आधुनिक युग में इनके फलस्वरूप जातक राजा तो न सही, परन्तु राज तुल्य ऐश्वर्य, धन, सन्तति आदि सुखों को प्राप्त करता है। विशेषकर मंगल, बुध, गुरु आदि योगकारक ग्रहों की अपनी–अपनी दशा में अवश्य शुभ एवं श्रेष्ठ फल होते हैं।

यदि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि अपनी उच्च राशि या मूलत्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हों, तो क्रम से रूचक, भद्र, हंस, मालव्य और शशक नामक पंच–महापुरुष योग होता है। जातकाभरणम्, मानसागरी, सारावली इत्यादि ग्रन्थों का यही मत है परन्तु मन्त्रेश्वर महाराज के मतानुसार यदि जन्म लग्न से केन्द्र में स्वोच्च, स्वराशिस्थ, भौमादि, ग्रह न भी हों परन्तु यदि चन्द्र लग्न से उपरोक्त भौम आदि ग्रह केन्द्रगत हों, तो भी रूचक आदि योगों का निर्माण होता है तथा धन–धान्य आदि शुभ फल घटित होते हैं–

लग्नेन्दोरपि योग पंचकमिदं साम्राज्य सिद्धिप्रदं॥ तेष्वेकादिषु भाग्यवान् नृपसमो राजा नृपेन्द्रोऽधिकः॥

अर्थात् चन्द्र लग्न से केन्द्र में उपर्युक्त पांच ग्रहों में कोई स्वराशि या उच्च राशि का होकर केन्द्र में हो, तो साम्राज्य और सिद्धि प्रदान करने वाला होता है। शुक्र, भौम, बुधादि ग्रह यदि सूर्य के साथ अस्तंगत हों, तो जातक को विशेष उत्तम फल न देकर अपनी दशा में केवल शुभ फल देते हैं।

(1) **रूचक योग**–यदि मंगल कुंडली में उच्च राशि का या स्वरराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो रूचक नामक योग होता है। ऐसे जातक का दीर्घ चेहरा हो, जातक अत्यन्त साहसी, गुणी, शूरवीर, कांति युक्त सुन्दर, सुगठित शरीर, रक्त–गंदमी वर्ण, बलिष्ठ शत्रुओं पर विजय पाने वाला, कीर्तिवान, धनवान्, परिश्रमी और स्वाभिमानी स्वभाव का होता है।

दीर्घास्य स्वच्छ कान्ति बहुरूचिरबलः साहसावाप्त कार्य। गर्विष्ठो रूचके प्रतीत गुणवान् सेनापतिः जित्वरः॥

ऐसा जातक अपने साहस, बल से कार्य सिद्धि करवाने वाला, कुछ तेज स्वभाव, गुरु एवं देवी–देवताओं का भक्त, ज्योतिष, मन्त्र, धर्म आदि शास्त्रों में रुचि रखने वाला, धन, यश एवं सवारी आदि सुखों से युक्त तथा दीर्घायु होता है। देखें उदा. कुंडली नं. 73

(2) **भद्र योग**–बुध यदि अपनी उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो भद्र नामक योग बनता है। ऐसा जातक तीव्र बुद्धिमान, प्रभावशाली, सुन्दर मुखाकृति, स्वच्छ रहन–सहन, मृदु एवं मधुरभाषी, दीर्घायु, सन्तुलित एवं सुगन्धित शरीर और सुन्दर नाक वाला, सात्विक एवं परोपकारी, दानी स्वभाव, ज्योतिष, धर्म एवं योगादि शास्त्रों का जानकार, विद्वान, धैर्यवान, धर्मात्मा, शंख के समान वाणी, बौद्धिक कार्यों में विशेष कुशल, स्वतन्त्र विचारक किन्तु अपने विचारों को गुप्त रखने वाला, यशस्वी एवं लोगों में आदर प्राप्त करने वाला, ऐसे जातक के हाथ एवं पावों में शंख, पक्षी, चक्र, ध्वजा, कमल आदि के चिन्ह भी होते हैं।

आयुष्मान् सकुशाग्र बुद्धिः अमलो विद्वज्जनश्लाधितो। भूपो भद्रकयोगजोऽति विभवश्चारस्थानं कोलाहलः॥

ऐसे जातक का सुन्दर मस्तक, लम्बी, गोल एवं पुष्ट बाहें, धन–सम्पदा से युक्त वैभवशाली और उच्च पदाधिकारी होता है। उदाहरण कुंडली हेतु देखें धनु लग्न के अन्तर्गत कुंडली नं. 86 (श्री लाल बहादुर शास्त्री) देखें **ज्योतिष तत्त्व**

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
अश्विनी १	०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवैद्य गुड, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुडोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृत्तिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ॥५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वागपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्कान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल्गुनी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिबतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वात्र दान	५ हजार	ॐ वायरत्ररदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवसुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु-वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्विषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य-सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोररराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र-पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा-द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्त्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि—आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि—भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

।। अथ बालकष्टावली पूतना विधान ।।

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रात: समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशो: स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गो श्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह द पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गो श्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से राहु, ५ बचें तो **गुरु**, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल के २१ दिन, राहु के ५४ दिन, गुरु के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, केतु के २१ दिन तथा शुक्र के ६० दिन मुद्दा दशा में होते हैं।

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७— इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्षमित्र	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९
गुप्तमित्र	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११
प्रत्यक्षशत्रु	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७
गुप्तशत्रु	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	:६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, पारिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, पारिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में—**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुन: उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुन: उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 3	22	44
	8	28	14
अर्थात् (रविवार)	1 वार	4	14

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि—आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार को गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रात: साढ़े पाँच (5/30)बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2005 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2005 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 31 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गइं वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 31 के सामने हमें 3 वार, 22 घण्टे एवं 44 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार 28 घण्टे, 14 मिनट प्राप्त हुए। अब 28 घण्टों में से 24 घं. घटा देने और 1 वार बढ़ा देने से हमें 8 वार अर्थात् रविवार की प्रात: 4 बजकर, 14 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की मध्य रात्रि एवं 2 अक्तू. की प्रात: 4 बजकर 14 पर हमें **सिंह वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न सिंह में सं. २०६२ की पंचांग से 2 अक्तू. 2005 ई. प्रात: 4/14 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46		19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

कलियुग में समस्त दु:खों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। "कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम्॥" श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी** है।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने स शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मन्त्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक **काम्य तान्त्रिक प्रयोग,** कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आ नहीं पाएँगे॥ मूल पाठ के साथ हवन विधि भी (हिन्दी) टीका सहित दी गई है जिससे कर्मकाण्डी पण्डित जी के अतिरिक्त साधारण श्रद्धालु भी विधि अनुसार पाठ करके भगवती देवी की कृपा के पात्र बन सकते हैं। धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तान्त्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्री दुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है। श्री दुर्गाचन सृति भी उपलब्ध है।

भेंट—55 रुपए डाक व्यय 20 रु. अलग॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

प्रकाशक—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

—स्मार्त्त और वैष्णव का भेद—

वेद, श्रुति-स्मृति आदि ग्रन्थों को मानने वाले धर्म परायण प्राय: सभी गृहस्थी लोग स्मार्त्त कहलाते है। इनके लिए व्रतोपवास आदि के साधारण नियम ही अनुसरणीय होते हैं। पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, राज. आदि के निवासी गृहस्थी प्राय: स्मार्त्त के अन्तर्गत आते हैं।

वैष्णव—वह धर्म परायण लोग जिन्होंने किसी प्रतिष्ठित वैष्णव सम्प्रदाय के गुरु से दीक्षा ग्रहण की हो, गले में श्री गुरु द्वारा दी गई कण्ठी धारण की गई हो तथा मस्तक एवं गले पर श्री खण्ड चन्दन या गोपी चन्दन के तिलक त्रिपुण्ड्र आदि के चिन्ह धारण किए हुए एवं विशिष्ट सम्प्रदाय से सम्बन्धित भक्त जन वैष्णव कहलाते हैं।

धर्म सिन्धुकार ने एकादशी, अष्टमी आदि व्रतों में स्मार्त्त एवं गृहस्थ जनों को पूर्वा विद्धा में व्रतादि करने का निर्देश दिया है, जबकि वैष्णवों एवं विधवाओं आदि को परवर्ती तिथि में व्रतादि करने का निर्देश दिया है—

"स्मार्त्तनां गृहिणां पूर्वा पोष्या। यतिर्भि निष्काम गृहिभि-वनस्थै विधवाभिवैष्णवैश्च परैवोपोष्या।"

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद

(चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°—२०' (अंश कला) होगा (१३°—२०') ÷ 4 = 3°—20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रतयेक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्यो. तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०—००—००	अश्विनी (१) मेषे	४—००—००	मघा (१) सिंहे	८—००—००	मूला (१) धनु
०—०३—२०	,, (२) ,,	४—०३—२०	,, (२) ,,	८—०३—२०	,, (२) ,,
०—०६—४०	,, (३) ,,	४—०६—४०	,, (३) ,,	८—०६—४०	,, (३) ,,
०—१०—००	,, (४) ,,	४—१०—००	,, (४) ,,	८—१०—००	,, (४) ,,
०—१३—२०	भरणी (१) ,,	४—१३—२०	पूफा (१) ,,	८—१३—२०	पूषा (१) ,,
०—१६—४०	,, (२) ,,	४—१६—४०	,, (२) ,,	८—१६—४०	,, (२) ,,
०—२०—००	,, (३) ,,	४—२०—००	,, (३) ,,	८—२०—००	,, (३) ,,
०—२३—२०	,, (४) ,,	४—२३—२०	,, (४) ,,	८—२३—२०	,, (४) ,,
०—२६—४०	कृतिका (१) मेषे	४—२६—४०	उफा (१) ,,	८—२६—४०	उषा (१) ,,
१—००—००	,, (२) वृषे	५—००—००	,, (२) कन्या	९—००—००	उषा (२) मक
१—०३—२०	,, (३) ,,	५—०३—२०	,, (३) ,,	९—०३—२०	,, (३) ,,
१—०६—४०	,, (४) ,,	५—०६—४०	,, (४) ,,	९—०६—४०	,, (४) ,,
१—१०—००	रोहिणी (१) ,,	५—१०—००	हस्ते (१) ,,	९—१०—००	श्रव (१) ,,
१—१३—२०	,, (२) ,,	५—१३—२०	,, (२) ,,	९—१३—२०	,, (२) ,,
१—१६—४०	,, (३) ,,	५—१६—४०	,, (३) ,,	९—१६—४०	,, (३) ,,
१—२०—००	,, (४) ,,	५—२०—००	,, (४) ,,	९—२०—००	,, (४) ,,
१—२३—२०	मृगशिर (१) ,,	५—२३—२०	चित्रा (१) ,,	९—२३—२०	धनि (१) ,,
१—२६—४०	,, (२) ,,	५—२६—४०	,, (२) ,,	९—२६—४०	,, (२) ,,
२—००—००	,, (३) मिथुन	६—००—००	चित्रा (२) तुला	१०—००—००	,, (३) कुंभे
२—०३—२०	,, (४) ,,	६—०३—२०	,, (४) ,,	१०—०३—२०	,, (४) ,,
२—०६—४०	आर्द्रा (१) ,,	६—०६—४०	स्वाती (१) ,,	१०—०६—४०	शतभिषा (१),,
२—१०—००	,, (२) ,,	६—१०—००	,, (२) ,,	१०—१०—००	,, (२) ,,
२—१३—२०	,, (३) ,,	६—१३—२०	,, (३) ,,	१०—१३—२०	,, (३) ,,
२—१६—४०	,, (४) ,,	६—१६—४०	,, (४) ,,	१०—१६—४०	,, (४) ,,
२—२०—००	पुनर्वसु (१) ,,	६—२०—००	विशाखा (१) ,,	१०—२०—००	पूभा (१) ,,
२—२३—२०	,, (२) ,,	६—२३—२०	,, (२) ,,	१०—२३—२०	,, (२) ,,
२—२६—४०	,, (३) ,,	६—२६—४०	,, (३) ,,	१०—२६—४०	,, (३) ,,
३—००—००	पुनर्वसु (४) कर्के	७—००—००	,, (४) वृश्चिके	११—००—००	पूभा (४) मीने
३—०३—२०	पुष्ये (१) ,,	७—०३—२०	अनुराधा (१) ,,	११—०३—२०	उभा (१) ,,
३—०६—४०	,, (२) ,,	७—०६—४०	,, (२) ,,	११—०६—४०	,, (२) ,,
३—१०—००	,, (३) ,,	७—१०—००	,, (३) ,,	११—१०—००	,, (३) ,,
३—१३—२०	,, (४) ,,	७—१३—२०	,, (४) ,,	११—१३—२०	उभा (४) ,,
३—१६—४०	अश्ले (१) ,,	७—१६—४०	ज्ये. (१) ,,	११—१६—४०	रेवती (१) ,,
३—२०—००	,, (२) ,,	७—२०—००	,, (२) ,,	११—२०—००	,, (२) ,,
३—२३—२०	,, (३) ,,	७—२३—२०	,, (३) ,,	११—२३—२०	,, (३) ,,
३—२६—४०	,, (४) ,,	७—२६—४०	,, (४) ,,	११—२६—४०	रेवती (४) ,,
				००—००—००	अश्वि. (१) मेषे

'दैनिक लग्न सारिणी'—दिल्ली-के लग्न ज्ञान

[जालन्धर की दै. लग्न सारणी के अतिरिक्त दिल्ली की दैनिक सारिणी]

आगामी पृष्ठों में दी गई लग्न सारणी में अंग्रेज़ी तारीखों के अनुसार दिल्ली में निरयण मेषादि लग्नों का समाप्ति काल घंटा-मिंट भा० स्टैं० टा० में दिया गया है। किसी महीने की तारीख को कौन-सा लग्न कब समाप्त होगा। यह इस सारिणी से शीघ्र ही जाना जा सकता है। सूक्ष्मता के लिए आगामी पृष्ठ में दी गई वार्षिक संस्कार तालिका का भी प्रयोग कर लेना उचित रहेगा। लग्न सम्बन्धी और अधिक सूक्ष्मता एवं स्पष्टता लाने के लिए गत पृष्ठों में दी गई दिल्ली की लग्न सारिणी (अक्षांश २९°, पलभा आधारित) का जन्मेष्ट एवं सूर्य स्पष्ट का प्रयोग करते हुए सूक्ष्म लग्न स्पष्ट भी ज्ञात कर सकते हैं।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौतु देवतां वदेत् ॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	ध्वजादि अष्टक वर्गाः
अ इ उ ए ओ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह	उच्चारित प्रश्नाक्षरणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातु मूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमास	४५ दिन	दो मास	दो मास	एकवर्ष	प्रवासी दिनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्ठि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुण	यव	गोधूमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहिता	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्ठि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुखादि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चौर जाति प्रश्ने ज्ञानम्
उखल	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्टगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय हानि प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्षामोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्षा अविधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धिभविष्यति नवा
शुभः	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभः	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्ने आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन लाभ प्रश्ने लाभालाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्ने भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	11 34	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुलाई	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

जुलाई — दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अगस्त — दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

सितंबर — दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अक्तूबर — दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर ता.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं.	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर ता.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्मा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**—पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त $१\frac{१}{२}$ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमश: उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाश: रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें।

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल–कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला–साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर–दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र–बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय–विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा** है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क–वितर्क करने में कुशल, दूर–दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाद तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन–पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धो और लेखन सम्बन्धी कार्यो को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृति रहेगी, अपने कार्य–क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए–नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय–विक्रय, पुस्तक–लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल–पुर्जो के कार्य–व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र–मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला–संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर–पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश–विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि–चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी–छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े–बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई–बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य–व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन–यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध–शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा–गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय–विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना** है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत

व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा** (Diamond) अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न—वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा है**। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न—धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज है**। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न—मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न—लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम है। स्त्रियों के लिए, पुखराज शुभ** होगा।

मीन लग्न—मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

जब हमारी घड़ियां बारह (१२) बजाती हैं

विश्व के प्रत्येक देश का मानक समय (स्टैण्डर्ड टाईम) अलग-अलग होता है। एक ही समय में अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाईम में कई घण्टों का अन्तर रहता है। **उदाहरणार्थ** जब भारत में दोपहर के १२ बजे होते हैं, तो इंग्लैण्ड में प्रातः के साढ़े छः (६.३०) बजे होते हैं। एवं पाकिस्तान में प्रातः के साढ़े ग्यारह (११.३०) बजे होते हैं। ध्यान रहे, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि कई देशों में अप्रैल के प्रथम रविवार से अक्तूबर के प्रथम सप्ताह तक सभी घड़ियों का समय एक घण्टा आगे बढ़ा दिया जाता है। जिससे उनके मानक समयान्तर (Difference of Standard Times) में एक घण्टे का अन्तर पड़ जाता है। नीचे भिन्न-भिन्न कुछ देशों के स्टै. समय और भारत के स्टै. समय का अन्तर स्पष्ट करते हैं। अमेरिका, कैनेडा, रूस आदि अति विस्तृत देशों में एक से अधिक स्टै. टाईम का निर्धारण किया जाता है।

नाम देश	राजधानी	स्टै. समय	नाम देश	राजधानी	स्टै. समय
अमेरिका	वाशिंगटन	९.३० प्रातः	भारत	नई दिल्ली	१२ दुपैहर
अफगानिस्तान	काबुल	११.०० प्रातः	पाकिस्तान	इस्लामाबाद	११.३० दुपै.
आस्ट्रेलिया	कैनबरा	४.३० सायं	फ्रांस	पैरिस	७.३० प्रातः
आयरलैंड	डबलिन	६.३० प्रातः	स्विट्जरलैंड	जिनेवा	७.३० प्रातः
इंडोनेशिया	जकार्ता	१.३० दुपै.	जापान	टोकियो	३.३० दुपै.
इंग्लैंड	लन्दन	६.३० प्रातः	चीन	पीकिंग	२.३० दुपै.
इटली	रोम	७.३० प्रातः	रूस	मास्को	९.३० प्रातः
ईरान	तैहरान	१०.०० प्रातः	सऊदी अरब	मक्का	९.३० प्रातः
ओमान	मस्कट	१०.३० प्रातः	थाईलैंड	बैंकाक	१.३० दुपै.
कीनिया	नैरोबी	९.३० प्रातः	डैनमार्क	कोपनहैगन	७.३० प्रातः
कैनेडा	ओटावा	९.३० प्रातः	श्रीलंका	कोलम्बो	१२.०० दुपै.
कुवैत	कुवैत	९.३० प्रातः	सिंगापुर	सिंगापुर	२.०० दुपै.
बंगलादेश	ढाका	१२.३० दुपै.	मलेशिया	कुआलालम्पुर	२.०० दुपै.
द. कोरिया	सियोल	३.३० सायं	न्यूजीलैंड	वलिंगटन	६.३० शाम
ग्रीस	एथसिं	८.३० प्रातः	जर्मनी	बर्लिन	७.३० प्रातः
जांबिया	लुसाका	७.३० प्रातः	जार्डन	अमन	७.३० प्रातः
कतर	अरब	९.३० प्रातः	फिलिपाईन	मनीला	२.३० दुपै.
बर्मा	रंगून	१३.०० दुपै.	रोमानिया	बुखापेस्ट	८.३० प्रातः

चरणामृत ग्रहण करने का मन्त्र—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
विष्णोः पादोदकां पीटवा पुनर्जन्म न विद्यते॥

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी ३१° । १९ अक्षांश जालन्धर, एवं २३° । ३० अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेजी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यतः अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन २८ की अपेक्षा २९ होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की १ तारीख से २८ फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **१ मार्च से ३१ दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

२९ फरवरी के लग्न मान के लिए २८ फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**—ता. १६ अप्रैल, १९९५ को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. १६ अप्रैल को ७.२९ पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +२ मिनट प्राप्त हुए। अतः सन् १९९५ में **मेष लग्न** ७.३१ पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९२B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१
१९९३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९९४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९६B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१	—१
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	—१	—१	०	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१

दैनिक लग्न सारणी **अप्रैल-मई (वैशाख)** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	३१	५ ३९	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	१ १५	२ ४०	४ ०२
15	ज्ये.	५ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी **मई-जून (ज्येष्ठ)** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	२	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	३	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	४	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	५	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	६	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	७	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	८	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	९	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	१०	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	११	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१२	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१३	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१४	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१५	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१६	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१७	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१८	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	१९	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२०	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२१	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२२	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२३	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२४	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२५	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२६	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२७	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२८	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	२९	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३०	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३१	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	३२	६ ०१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५
17	भाद्र	५ ५७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	२	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	३	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	४	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	५	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	६	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	७	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	८	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	९	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	१०	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	११	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१२	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१३	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१४	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१५	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं	१६	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१७	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१८	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	१९	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२०	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२१	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२२	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२३	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२४	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२५	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२६	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२७	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२८	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	२९	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३०	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	३१	६ १९	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४
17	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	२	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	३	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	४	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	५	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	६	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	७	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	८	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	९	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१३	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१४	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू	१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१८	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	१९	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२०	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२३	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२४	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२५	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२६	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२८	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	२९	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३०	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्टू-नवं. (कार्तिक) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्टूबर	कार्तिक	तुला घं. मिं.	बृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	बृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष मास) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३.५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ० ६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ० २	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१३ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ [illegible]	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**—मान लो आपने १६ जुलाई, २००५ को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें —८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। **सुश्री निधि शर्मा M.Sc.**

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+३	+२	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	-५	-५	-५	-३	-३	-६	-५	-५	-४	-५	-५	-५
अजमेर	+१०	+१२	+१३	+१२	+८	+४	-१	-३	-४	-१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	-१	-५	-४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	-१५	-१२	-१३	-१५	-२१	-२९	-३४	-३७	-३६	-३२	-२६	-२०
अलीगढ़	-४	-३	-३	-५	-७	-१३	-१६	-१७	-१७	-१३	-११	-७
अयोध्या	-१८	-१८	-१५	-१९	-२१	-२५	-२८	-३०	-२८	-२७	-२४	-१६
अलवर	+३	+४	+४	+२	+१	-४	-६	-७	-७	-४	+१	+४
आगरा	-४	-२	-२	-४	-७	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-६
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	-८	-१४	-१९	-१७	-१०	-१	+७
ऊना (हि. प्र.)	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३
उधमपुर	-२	-२	-२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+६	+०	-७	-१४	-१९	-१७	-१०	-२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१३	+७	+२	-४	-८	-६	-१	+६	+१३
करनाल	-५	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-४	-३
कालका	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-४	-३
कुरुक्षेत्र	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-३	-३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	-१	-१	+१	-०	-०	-०	-०	-१
कोटखाई	-७	-७	-७	-७	-७	-८	-७	-७	-७	-६	-६	-७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	-१	-६	-११	-१४	-१३	-८	-२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	-०	-०	-१	+०	-०	-०	-०	-०	-१
काठमण्डू	-३२	-३१	-३१	-३०	-३३	-३८	-४०	-४२	-४२	-४०	-३६	-३३
कलकत्ता	-३७	-३२	-३५	-४०	-४९	-५८	-६४	-६९	-६८	-६१	-५३	-४४
कानपुर	-१०	-८	-९	-११	-१५	-२१	-२५	-२७	-२६	-२१	-१७	-१३
कांगड़ा	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
कुल्लू	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-५	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	-२	-२	-२	-१	-०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	-१	-१	-१	-०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-३
ग्वालियर	-३	-१	-१	-२	-९	-१२	-१६	-१८	-१७	-१३	-८	-५
गुरदासपुर	+१	+१	+१	+१	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	-२३	-२१	-२२	-२४	-२७	-३२	-३५	-३७	-३६	-३२	-२७	-२४
गुड़गांव	-१	-१	-१	-१	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-६	-४
गोहाटी	-५५	-४८	-५३	-५५	-६१	-६८	-७२	-७५	-७३	-६९	-६४	-६०
गाज़ियाबाद	-२	-१	-१	-२	-२	-७	-९	-११	-११	-९	-६	-३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	-२६	-१८	-२३	-२७	-३३	-४२	-४७	-५१	-४१	-४४	-३७	-३२
चण्डीगढ़	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
चिन्तपूर्णी	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-१
चम्बा	-६	-७	-६	-६	-४	-२	+१	+२	+१	+०	+३	-४
जयपुर	+७	+१०	+१३	+६	+२	-३	-७	-९	-९	-७	-२	+३
ज्वालामुखी	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
जम्मू	-१	-२	-१	-१	+२	+४	+६	+७	+६	+५	+३	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+१९	+१४	+१०	+५	+१	-२	-१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+१	+०	-१	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-१
जैसलमेर	+२६	+२७	+२६	+२२	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	-२	+०	-१	-६	-११	-१७	-२२	-२५	-२३	-१८	-१३	-७
जगन्नाथपुरी	-२२	-१६	-१३	-२६	-३७	-४९	-५९	-६४	-६३	-५५	-४४	-३२
दिल्ली	-२	-१	-१	-२	-४	-८	-११	-१२	-१२	-१०	-७	-५
दुर्ग (म. प्र.)	-६	-०	-२	-१०	-१९	-२७	-३७	-४२	-४२	-३१	-२१	-१४
देहरादून	-९	-८	-८	-९	-९	-११	-१२	-१२	-१३	-११	-९	-९
धर्मशाला	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन (हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१२	-११	-११	-१२	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+९	+११	+०	-१०	-२१	-३०	-३४	-३३	-२७	-७	-६
नदौन (हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-३	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-३	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-२	-२	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+०	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-१८	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२५	-२१	-२९	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+३	+२	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोजपुर	+३	+३	+३	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१२	-२१	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१६	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-९	-९	-१०	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-६	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+२	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१७	-१९	-२५	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	-१	-२	-६	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+९	+५	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ (उ. प्र.)	-४	-३	-३	-३	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि. प्र.)	-५	-४	+०	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-६	-६	-५
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	+४	-३	-३	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+२०	+२१	+४	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-२	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२८	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-४	-४	-३	-३	-५	-५	-५	-३	-४	-४	-४
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	+०	+१	+१	-०	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-२	-१	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-७	-५	-१४	-१९	-२४	-२८	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	+२	+१	+४	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-५	-१	-४	-४	-५	-५	-५	-५	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-३	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-७	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१९	+१७	+७	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-४	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-३	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+१	-१	-१	+०	+०	-१	-१	-२	-२	+०	+१	+२

द्वादश भावों, राशियों एवं नवग्रहों से रोग विचार

रोग विचार की दृष्टि से भावों का विशेष महत्त्व है क्योंकि भावगत होकर ही विभिन्न राशियों एवं ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते हैं। इन लग्न आदि द्वादश भावों द्वारा ही मनुष्य जीवन से सम्बन्धित प्रायः सभी विषयों के बारे में माना जा सकता है। जन्म कुण्डली का कोई भी भाव अशुभ राशि एवं पाप ग्रह से दूषित होने पर जातक के शरीरांग में ग्रह राशि से सम्बन्धित वैसे ही रोग को प्रकट करने लगता है। कौन-सा भाव किस प्रकार के रोगों की अभिव्यक्ति करता है ? उसका विचार निम्नानुसार करना चाहिए—

प्रथम भाव लग्न—शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, मस्तिष्क रोग, सिर दर्द, मानसिक रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, मुहाँसे, उन्माद, रक्ताघात, मिर्गी आदि, इस भाव का कारक सूर्य है।

द्वितीय भाव—मुख रोग, नेत्र रोग, कर्ण रोग, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुख, पक्षाघात, डिप्थीरिया, फोड़ा, फुँसी, मद्य-पान, दाहिनी आँख, वाक्शक्ति, वाणी, स्वर आदि इस भाव का कारक गुरु है।

तृतीय भाव—धैर्य, सामर्थ्य, बल, दाहिना कान, भुजाएँ, श्वांस की नली, फेफड़े, खाँसी, दमा आदि श्वास रोग, पराक्रम, मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजु एवं कन्धे में पीड़ा या जकड़न, नकसीर, ब्रोंकाईटिस, एलर्जी, गले की खराबी, यात्रा में कष्ट, दुर्घटना आदि। इसका कारक मंगल है।

चतुर्थ भाव—छाती, हृदय एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, उदर एवं पाचन सम्बन्धी रोग, गैस विकार, जलोदर, कैंसर, वातरोग, माता को कष्ट आदि, इस भाव का कारक चन्द्र व बुध हैं।

पंचम भाव—पित्त रोग, जिगर एवं गुर्दे के रोग, जठराग्नि, पीलिया, हृदय सम्बन्धी रोग, नेत्र रोग, कमर में पीड़ा, ज्वर, बुद्धि, स्मरण शक्ति का ह्रास आदि, दिल की धड़कन कम या अधिक होना, उदर, गर्भाशय एवं मूत्राशय सम्बन्धी रोगों का विचार। इस भाव का कारक गुरु है।

षष्ठ भाव—यह भाव तो रोग का ही स्थान है। इस भाव से विशेष तौर पर रोग का विचार करते हैं। इस भाव से नाभि, पेट, कमर एवं अंतड़ियों (आंतों) सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त आदि दाँत, अमाशय सम्बन्धी, अपैंडिक्स, पथरी, हर्निया आदि इस भाव के मंगल व शनि कारक हैं।

सप्तम भाव—इस भाव से वस्ति, गुर्दे, मूत्राशय सम्बन्धी रोग, कमर-दर्द, प्रमेह, मधुमेह, प्रदर, पथरी, गर्भाशय, बवासीर, स्पाण्डलाइटिस, रीढ़ की हड्डी का दर्द, काम एवं सैक्स एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी एवं गुप्त रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक शुक्र है।

अष्टम भाव—आयु, मृत्यु, मृत्यु का कारण, वीर्य विकार, बवासीर, पथरी, हर्निया, मधुमेह, रक्त दोष, गुर्दे सम्बन्धी, वायु विकार, विचित्र पेचीदा रोग, गुदा, अण्डकोश, जननेन्द्रिय एवं गुप्तांग, दुर्घटना एवं चोट आदि स्त्रियों के मासिक धर्म की अनियमितता गर्भाशय एवं यौन रोगों आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

नवम भाव—लिवर एवं रक्त विकार, कमर एवं उसके आस-पास अंगों से सम्बन्धित रोग, गठिया, साइरिका, दुर्घटना, चोट, घाव, पक्षाघात, मज्जा एवं स्त्रियों के मासिक धर्म, पीठ, पेट एवं मेरूदण्ड से सम्बन्धित रोग, शुभाशुभ स्वप्न, गुप्त चिन्ता एवं अधिक यात्रा से उत्पन्न थकान, मन की शान्ति, सन्तोष आदि। इस भाव के कारक सूर्य व गुरू हैं।

दशम भाव—इस भाव से गठिया, एग्जिमा, त्वचा रोग, घुटनों, पीठ एवं जोड़ों के दर्द, मिर्गी, बाईं जांघ, दाँतों, हड्डियों सम्बन्धी एवं वायु सम्बन्धी रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव के सूर्य, बुध, गुरू व शनि कारक हैं।

एकादश भाव—इस भाव से रक्त संचालन प्रक्रिया, श्वास-प्रक्रिया, नसों, जोड़ों में दर्द आदि, शीत विकार, हृदय रोग, स्नायु तन्त्र, गला, कान, बायां हाथ, पिंडलियों-पाँव (विशेषकर दाहिना) आदि में चोट, शीत लगना, ठण्ड आदि का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक भी गुरू ही है।

द्वादश भाव—इस भाव से मानसिक एवं नेत्र रोग, कर्ण पीड़ा, शक्तिहीनता (कमज़ोरी), पीलिया, अनूर्जता (Allergy), बायां कान, दोनों पैर, काम जन्य एवं स्त्री (पत्नी) सम्बन्धी रोग, पक्षाघात, एड़ी में चोट आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

मेषादि द्वादश राशियों से रोग विचार

द्वादश भावों की भान्ति द्वादश राशियों एवं नवग्रहों के द्वारा भी अरिष्ट रोगों का निर्णय किया जाता है। जैसे—मेष राशि से सिर व मस्तिष्क रचना, वृष से नेत्र, जिह्वा, मुख, कण्ठ आदि में रोग का विचार किया जाता है। शरीर में किसी भी रोग का निदान करने के लिए नक्षत्र भाव, राशियों व ग्रहों से सम्बन्धित शरीरांगों एवं रोगों की जानकारी आवश्यक है। स्पष्टीकरण के लिए भाव एवं राशियों से सम्बन्धित शरीर अंग तथा रोगों का विवरण आगे दिया जाता है—

भावों एवं राशियों से सम्बन्धित शरीरांग एवं रोग

भाव	राशि	तत्त्व	शरीरांग	सम्भावित रोग
लग्न (प्रथम)	मेष	अग्नि	मस्तक, सिर, दिमाग, ऊपरी जबड़ा, मस्तिष्क संरचना, शिर सहित मुखाकार, पिटयूटरी-ग्लैण्ड।	मस्तिष्क रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, उन्माद, मुहांसे, मिर्गी, रक्ताघात, रक्तविकार, सिर दर्द, टाईफायड, पित्त की गर्मी आदि।
द्वितीय	वृष	पृथ्वी	नेत्र, कान, नाक, गाल, होंठ, दाँत, मुख, जिह्वा कण्ठ, थायराईड, निचला जबड़ा, वाणी, ग्रासनली (Food-Pipe)।	नेत्र, मुख, कर्ण, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुख-विकार, डिप्थीरिया, फोड़ा, फुँसी, दाहिनी आँख, वाक्-शक्ति, मद्य-पान।
तृतीय	मिथुन	वायु	कन्धे, भुजाएँ, कोहनी, हथेली, ऊपरी पसली, कान, फेफड़े, कण्ठ, ग्रीवा, हाथ, बाजू, श्वास नली, कोशिकाएं।	मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजु एवं कन्धों में पीड़ा, नकसीर, एलर्जी, सामर्थ्य खांसी, दमा आदि श्वास रोग, गले की खराबी, यात्रा में दुर्घटना, चोटादि।
चतुर्थ	कर्क	जल	फेफड़े, हृदय, नीचे की पसली, छाती, वक्षस्थल, स्तन, पेट, पाचन प्रक्रिया मानसिक शान्ति।	छाती एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, पाचनशक्ति, गैस विकार, कैंसर, हिस्टीरिया, जलोदर, वात रोग आदि।
पंचम	सिंह	अग्नि	लिवर, तिल्ली, हृदय, पीठ, कोख, कमर, रक्त, जिगर, मेरूदण्ड, पीठ।	पित्त, जिगर एवं गुर्दे के रोग, नेत्रों, कमर, ज्वर, हृदय, बुद्धि विक्षिप्तता, स्मरणशक्ति, दिल की धड़कन, मूत्राशय, गर्भाशय पीलिया व लिवर सम्बन्धी।
षष्ठ	कन्या	पृथ्वी	कमर, आँतें (आंतड़ियां) नाभि चक्र, वस्ति, पेट पैर, अमाशय, पैनक्रिया, पाचन प्रक्रिया।	नाभि चक्र, पेट, कमर एवं आंतों सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त, मरोड़, पथरी, हर्निया, मधुमेह, दुर्घटना से चोट आदि अपेंडिक्स।
सप्तम	तुला	वायु	अण्डाशय, डिम्ब ग्रंथी गर्भाशय का ऊपर भाग वस्ति (पेडू), कटि।	पेडू, गुर्दे एवं मूत्राशय सम्बन्धी रोग, कमर दर्द, पथरी, गर्भाशय, रीढ़ की हड्डी, काम, सैक्स सम्बन्धी गुप्त रोग।
अष्टम	बृश्चिक	जल	जननेन्द्रिय, गुदा, अण्ड-कोष, भ्रूण, लिंग, योनि, गर्भाशय, प्रोस्टेट।	मृत्यु का कारण, बवासीर, हर्निया, पत्थरी, रक्तदोष, मधुमेह, गुर्दे सम्बन्धी, वायु-विकार, गुप्तांग सम्बन्धी पेचीदा यौन रोग, मासिक धर्म एवं गर्भाशय हिस्टीरिया सम्बन्धी स्त्री रोग, दुर्घटना आदि।
नवम	धनु	अग्नि	जांघ, नितम्ब, कमर, लिवर, रीढ़ की हड्डी, घुटनें।	रक्त विकार, कमर एवं लिवर सम्बन्धी, गठिया, दुर्घटना से चोट आदि ; मेरूदण्ड सम्बन्धी शुभाशुभ स्वप्न, अधिक श्रम से थकान, ऋतु विकार, गठिया, एग्जीमा आदि।
दशम	मकर	पृथ्वी	दोनों घुटने, टांगें, हड्डियाँ, जोड़, बाल, नाखून, बाह्य त्वचा।	त्वचा रोग, घुटनों, पीठ एवं जोड़ों के दर्द, मिर्गी, बाईं जांघ दाँत एवं हड्डियों सम्बन्धी, वायु विकार आदि।
एकादश	कुम्भ	वायु	नसों, जोड़ों, श्वास, रक्त, संचालन, दोनों पिण्ड-लियों, कान, घुटने, एड़ीयां।	रक्त संचालन, श्वास, प्रक्रिया, नसों, जोड़ों में दर्द, शीत-विकार, हृदय रोग, स्नायु, तन्त्र, गला, बायां हाथ, पिंडलियों में दर्द, शीत, वात-कफादि प्रकोप।
द्वादश	मीन	जल	दोनों पैर, टखने, पाँव के तलवे, पैरों की अँगु-लियाँ, नसें, दाँत आदि।	नेत्र रोग, कर्ण-पीड़ा, कमजोरी, पीलिया, अनूर्जता (एलर्जी), बायां कान, दोनों पैर, काम जन्य एवं स्त्री सम्बन्धी कष्ट/रोग पक्षाघात, एड़ी में चोट आदि।

उपरोक्त राशियों में जो राशि शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होती है, वह अंग पुष्ट तथा स्वस्थ होता है, जो राशि पाप ग्रहों से युक्त, पीड़ित, दृष्ट हो, वह अंग क्षीण एवं रोग युक्त होने की सम्भावना होती है।

ग्रहों एवं राशियों के तत्त्वानुसार रोगों की पहचान

द्वादश राशियों एवं **नवग्रहों** में कुछ अग्नि तत्त्व, कुछ वायु तत्त्व आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन तत्त्वों की प्रकृति के आधार पर रोगों की पहचान सरलता से हो सकती है, जैसे—

(क) अग्नि तत्त्व—मेष, सिंह व धनु अग्नि तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं तथा **सूर्य एवं मंगल ग्रह** भी अग्नि तत्त्व प्रमुख ग्रह हैं। यदि जन्म कुण्डली में अग्नि तत्त्व वाली राशि एवं सूर्यादि ग्रह स्वगृही, उच्चादि ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हों, तो जातक का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा, आत्मिक बल, ओज एवं क्रियात्मक शक्ति तीव्र एवं अच्छी होती है। व्याधि एवं अस्वस्थता थोड़े काल की, परन्तु तीव्र हो सकती है। यदि मेषादि अग्नि तत्त्व की राशियां तथा सूर्य, मंगल, नीच, शत्रु आदि ग्रहों, राशि से युक्त या पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो जातक के निम्न रोगों से पीड़ित होने की सम्भावना होती है, जैसे—मस्तिष्क रोग, उच्चरक्तचाप, नेत्र विकार, अस्थि एवं चर्म रोग, तीव्र ज्वर, अग्नि शस्त्र, विषादि से कष्ट, माईग्रेन, मेरूदण्ड, अनिद्रा, तीव्र सिर दर्द, उदर एवं पीठ विकार, बवासीर, हृदय रोग, पित्तजनित रोग, अतिसार, चित्त व्याकुलता, नासूर, फोड़ा, घाव, जलन, पक्षाघात, शस्त्राघात, मुहाँसे, जननेन्द्रियाँ आदि गुप्त अंग।

(ख) पृथ्वी तत्त्व—वृष, कन्या व मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं, तथा बुध ग्रह भी पृथ्वी तत्त्व के अन्तर्गत आता है। यदि कुण्डली में पृथ्वी तत्त्व वाली राशि एवं पृथ्वी तत्त्व ग्रह बुध शुभ भाव में एवं उच्च मित्रादि राशि में हों, तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, कार्य-कुशल, अध्ययनशील, सतर्क, प्रभावशाली वाणी, तार्किक, उच्चशिक्षित, स्वस्थ एवं तीव्र स्मरणशक्ति एवं कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है। यदि उपरोक्त वृषादि पृथ्वी तत्त्व की राशि पाप ग्रहों से पीड़ित हो, एवं बुध नीच, शत्रु आदि राशिगत हो, तो जातक की निम्नलिखित रोगों में से राश्यनुसार रोग होने की सम्भावना होती है, यथा—

मस्तिष्क विकार, स्मरण शक्ति का ह्रास, हकलाहट, पक्षाघात, सूंघने, वाणी, सुनने एवं बोलने की शक्ति का ह्रास, दौरे पड़ना, त्वचा, नाखून, कश, नाड़ी एवं हड्डियों के रोग, नेत्र रोग, कण्ठ रोग, त्वचा, खुजली या कुष्ठ रोग, मन्दाग्नि, मानसिक भ्रान्ति, नाड़ी एवं स्नायुतन्त्र की दुर्बलता, पीलिया, वात-पित-कफ त्रिदोष से उत्पन्न रोग, दुःस्वप्न, भ्रान्ति (वहम), सोच एवं वाणी में दुर्बलता आदि।

(ग) वायु तत्त्व—मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि—ये वायु तत्त्व की राशियाँ हैं, तथा शनि ग्रह भी वायु तत्त्व प्रधान है। यदि कुण्डली में वायु तत्त्व प्रधान राशियां शनि-शुक्र आदि मित्र ग्रह युक्त एवं शनि भी स्वगृही, उच्चादि शुभ अवस्था में हों, तो जातक उत्साहशील, स्वाभिमानी, उच्च-प्रतिष्ठित, राजनीतिज्ञ, चुस्त एवं स्वस्थ-चित्त एवं पुष्ट शरीर का होता है। यदि वायु तत्त्वीय राशियाँ सूर्य, मंगल आदि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट अथवा उनकी दशाऽन्तरदशा हो, तो जातक को निम्नलिखित रोग होने की आशंका होती है—वायु और कफ जन्य रोग, अत्यधिक श्रम के कारण कमजोरी, ब्लडप्रैशर, कठिन उदर शूल, स्पांडलाइटिस, सन्निपात, पत्थरी, लकवा आदि, पोलियो, पक्षाघात, वातशूल, मानसिक दुर्बलता, पत्नी एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट, पेड़, पत्थर या शस्त्र आदि से चोट, कैंसर, मधुमेह, हाथ, पाँव एवं टांगों की दुर्बलता, प्रेत, पिशाच आदि जटिल मानसिक व कायिक रोग तथा प्राण वायु, अपान वायु आदि को संकेत करते हैं।

(घ) जल तत्त्व—कर्क, बृश्चिक एवं मीन-ये जल तत्त्व की राशियां हैं तथा चन्द्र व शुक्र भी जल तत्त्वीय ग्रह हैं। यदि उक्त राशियाँ चन्द्र-गुरु आदि ग्रहों के प्रभाव शुभस्थ हों तथा चन्द्र-शुक्र ग्रह स्वगृही, उच्च-मित्र आदि राशियों में हों तो जातक तीव्र बुद्धिमान, दूसरों के मनोभावों को समझने में कुशल, धार्मिक एवं परोपकारी, देश-विदेशों की यात्राएँ करने वाला, स्वस्थ अंगों एवं पुष्ट शरीर का होगा।

यदि जलीय तत्त्व की राशियां तथा ग्रह शत्रु, नीच आदि ग्रहों से पीड़ित हों तो जातक को उनकी दशाऽन्तर दशा एवं गोचरवश नीचे लिखे रोग होने की सम्भावनाएँ होती हैं—

नेत्र रोग, कफ, शीत (ठण्ड), उदर रोग, श्वास गेग, पागलपन, उन्माद, मानसिक रोग, हिस्टीरिया, जननेन्द्रिय, गर्भाशय, मासिक धर्म सम्बन्धी स्त्रियों के रोग, डायरिया, हैज़ा, ड्राप्सी, रक्त, त्वचा, मज्जा, वीर्य एवं मूत्राशय सम्बन्धी, अतिसार, मन्दाग्नि, कफ एवं वायु रोग, प्रमेह, मधुमेह, पत्थरी, धातु-विकार, शीत ज्वर, अनिद्रा, नाड़ी दौर्बल्य, मूत्र विकार, पाण्डु रोग (पीलिया), काम-जन्य गुप्त रोग आदि।

(ङ) आकाश तत्त्व से सम्बन्धित—यदि कुण्डली में गुरु स्वराशि, उच्चादि अवस्था में हो, तो जातक का शरीर स्थूल, पुष्ट एवं स्वस्थ होता है। यदि नीच राशिस्थ या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को नीचे लिखे रोगों की सम्भावना होती है—

कफज रोग, मूर्छा, अंतड़ियों का ज्वर, लिवर अर्थात् यकृत् सम्बन्धी पीलिया आदि रोग, अपचन, रक्त कैंसर, उदर, वायु, गठिया, नाभिचक्र में दोष, कर्ण रोग, गुल्म (पेट का फोड़ा), टाईफाईड, हर्निया, शारीरिक स्थूलता या दुर्बलता, पेट-गैस, देव या ब्राह्मणों के शाप से कष्ट आदि।

(च) राहु के कारण होने वाले रोग—कुटिल मति, असत्य में रूचि, कुतर्क, हृदय में

रोग, कमज़ोरी, वातज पीड़ा, कृमि रोग, पैर में चोट, दिल की जलन, कुष्ट, पाँव में चोट, पीड़ा आदि, स्त्री, सन्तान आदि सम्बन्धी परेशानी, सर्प और प्रेत आदि के कारण कष्ट-भय, अरूचि, उचाटता, जोड़ों एवं वायु सम्बन्धी रोग।

(छ) केतु के कारण होने वाले रोग—चर्म रोग, श्वेत कुष्ट, विष विकार, जलोदर, गर्भाशय सम्बन्धी, फोड़े, फुँसी, चेचक, विषादि के कारण उत्पन्न रोग, दुर्घटना से चोट आदि प्रेत-पिशाच आदि जनित रोग-कष्ट, पित्त जनित रोग तथा पुरुषों एवं स्त्रियों के गुप्त पेचीदा रोगों का विचार किया जाता है।

राहु व केतु दोनों के अनिष्ट प्रभावस्वरूप कई बार ऐसे पेचीदा एवं रहस्यात्मक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका निदान कुशल डॉक्टरों द्वारा भी नहीं हो पाता है।

जन्म कुण्डली से रोग विचार

जन्म कुण्डली में किसी भी भाव से सम्बन्धित रोग कष्ट आदि जानने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक होता है, जैसे—(1) भाव में अशुभ ग्रहों को बैठना (2) भावेश ग्रह का त्रिकादि (6, 8, 12वें) भावों में बैठना (3) भावेश का शत्रु एवं पापी ग्रहों से युक्त होना (4) भावेश का पापी ग्रहों से वीक्षित होना (5) भाव का अशुभ (शत्रु नीच आदि) ग्रहों से देखा जाना (6) भाव सम्बन्धी कारक ग्रह की शुभाशुभ स्थिति (7) जातक की वर्तमान कालीन दशा-अन्तर्दशा का विचार तथा (8) गोचर ग्रहों का शुभाशुभ विचार।

ऊपरलिखित सभी तत्त्व भाव सम्बन्धी फल को प्रभावित करते हैं। भावों तथा भावेश सम्बन्धी ग्रहों की स्थिति जितनी अधिक खराब होगी, उतना ही उस भाव सम्बन्धी कष्ट होगा।

सामान्यतः लग्नेश ग्रह चाहे स्वयं शुभ ग्रह हो, या पाप ग्रह हो, वह जहाँ बैठ जाता है, उस स्थान की वृद्धि ही करता है। लग्नेश जिस भाव के स्वामी के साथ बैठा हो, उस भाव स्वामी के फल को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त कुण्डली में सूर्य व चन्द्रादि के बलाबल का भी विचार करना चाहिए। चन्द्रमा मस्तिष्क पर प्रभाव करता है, **लग्न शरीर का द्योतक** है और **सूर्य आत्मा का।** यदि कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा बली हों और शत्रु ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हों, **तो उस जातक का स्वास्थ्य अच्छा** रहता है। भारतीय आयुर्वेद की यह प्रबल मान्यता है कि शारीरिक रोगों का मस्तिष्क की स्थिति के साथ गहरा सम्बन्ध है। इसी कारण प्राचीन काल से ही हमारे ज्योतिष शास्त्र में अरिष्ट आदि के सम्बन्ध में चन्द्रमा की स्थिति एवं बलाबल पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है।

(1) यदि लग्नेश और षष्ठेश एक ही राशि में हों और उनके साथ सूर्य भी हो, तो जातक को षष्ठेश एवं सूर्य की दशाऽन्तर्दशा में तीव्र ज्वर, नेत्र रोग, स्त्री व संतान कष्ट, अग्नि पीड़ा आदि कष्टों की सम्भावना होती है।

(2) लग्नेश, षष्ठेश और चन्द्रमा एक ही राशि में इकट्ठे हों, तो जातक को हैज़ा, शीत-प्रकोप, मानसिक कष्ट एवं जल-वायु से सम्बन्धित रोगों एवं अनिद्रा, मन्दाग्नि, चित्त व्याकुलता आदि रोगों का भय होता है।

(3) यदि कुण्डली में लग्नेश, षष्ठेश व मंगल एक ही भाव में इकट्ठे हों, तो जातक को इन ग्रहों की दशा में दुर्घटना या शस्त्राघात से विस्फोट आदि से चोट, पीड़ा, फोड़े एवं आप्रेशनादि, ज्वर आदि रोगों की सम्भावना होती है।

(4) यदि लग्नेश व षष्ठेश के साथ बुध भी एक ही राशि में स्थित हों, तो जातक को वात-पित्त जनित रोग, अरूचि, उदर विकार, दुर्बलता, वाणी विकार, पत्थरी, वमन, डकार, मन्दाग्नि, खुजली, दाद आदि त्वचा रोग, मति-भ्रम आदि विचित्र रोगों की सम्भावना होती है।

(5) यदि लग्नेश, षष्ठेश के साथ गुरु स्वगृही, उच्चादि राशि में हों, तो जातक का शरीर प्रायः स्वस्थ होता है। परन्तु यदि गुरु व लग्नेश नीच, शत्रु आदि राशि में हो, तो जातक को कफ, कान, नाक, गला, लिवर, पीलिया, पत्थरी आदि रोगों का भय होता है।

(6) यदि लग्नेश, षष्ठेश व शुक्र एक साथ किसी अशुभ राशि में हों, तो जातक, प्रमेह, मधुमेह, गुप्त रोग, धातु क्षय सम्बन्धी रोग तथा स्त्री को भी शरीर कष्ट की सम्भावना होती है।

(7) यदि लग्नेश, षष्ठेश—दोनों शनि के साथ एक ही भाव में हों, तो जातक को दुर्बलता, वातज अर्थात् वायु प्रकोप, अपचन, श्वास रोग, हड्डियों, दाँतों एवं नेत्र सम्बन्धी रोगों का भय होता है।

(8) लग्नेश, षष्ठेश व राहु तीनों एक ही राशि में हों, तो हृदय में दुर्बलता, मानसिक, तनाव, सिर में पीड़ा, वायु प्रकोप, सर्प, प्रेत एवं चोरी आदि का भय होता है।

(9) लग्नेश, षष्ठेश व केतु तीनों एक ही भाव में हों, तो जातक को फोड़ा, फुँसी, चेचक सम्बन्धी, त्वचा रोग, विष प्रकोप तथा स्त्रियों को आप्रेशन, गर्भाशय, मासिक धर्म सम्बन्धी विकारों की सम्भावनाएँ होती हैं।

(10) यदि षष्ठ भाव या षष्ठेश के साथ बुध व शुक्र का सम्बन्ध हों, तो जातक को आहार व्यवहार में असंयम के कारण रोग होता है।

यदि षष्ठेश भौमादि पाप ग्रह के साथ लग्न में हों, तो जातक को दुर्घटना या चोटादि से व्रण या आप्रेशन होता है। यदि शनि हों, तो अपचन एवं वायु-विकार होता है।

नोट—विविध रोगों सम्बन्धी विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों एवं शास्त्र सम्मत उपायों के साथ हमारे शीघ्र प्रकाशित होने वाली फलित और रोग सम्बन्धी आगामी पुस्तक की प्रतीक्षा करें। पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी गणितकर्ता पंचाँग दिवाकर॥

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो० तुलसीकृत रामायण (भाषा–टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयांगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन–पठनार्थ घर में रखना अथवा दान–दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत 251/- रुपए। आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 125 रुपए (डाक व्यय अलग)

बाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य हैं। (मूल्य 200 रु.) ये ग्रन्थ पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध हैं। मूल्य 800 रुपए। डाक व्यय अलग।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवन् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरित्रों का सजीव एवं सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य 100 रुपए, डाक व्यय अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र 250 रुपए आर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम सुखसागर—**मूल्य 100 रु.।**

महाभारत भाषा

महर्षि वेदव्यास की अमूल्य सम्पूर्ण रचना 18 पर्वों का सरल हिन्दी रूपान्तर हैं। जिसमें राजा परीक्षित की कथा, कौरव पाण्डवों की वंशोत्पति, भीष्म प्रतिज्ञा से लेकर महाभारत के भयंकर युद्ध का साष्टांग वर्णन दिया गया है। **मूल्य 200 रु.।**

अष्टावक्र गीता

चित्त के सन्देहों को दूर करने एवं ज्ञान के मुमुक्षयों को तमोमय अंधकार नष्ट करने तथा शान्त, अद्वैत और निर्मल आत्मा के लिए इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। (**मूल्य 100 रुपए**)।

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 55 रुपए। सजिल्द 65 रुपए।

बड़ा भक्ति सागर

जिसमें नित्यकर्म पद्धति, ईश्वर प्रार्थना, स्तोत्र, चालीसे, सन्ध्या व आरतियों का अपूर्व संग्रह प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य 40 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली महात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। **मूल्य 100 रु.।**

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्दवेद-1 खण्ड, अर्थववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। **मूल्य सम्पूर्ण सैट-425 रु.।**

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव–भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। **मूल्य केवल 200 रु.।** मनीआर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय पृथक।

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25/-

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

योग वशिष्ठ (दो भाग)	500/-
व्यापार रत्न	300/-
धर्मसिन्धु	250/-
निर्णयसिन्धु	500/-
चाणक्य नीति	40/-
विदुर नीति	40/-
महामृत्युञ्जय साधना	50/-
श्री गरुण पुराड़ (प्रेतकल्प)	50/-
कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली	35/-
कर्मकाण्ड प्रदीपः	80/-
कर्मठगुरु	**80/-**
कवच संग्रह	20/-
भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेज़ी पर)	150/-
लाल किताब (सामुद्रिक)	149/-
मंत्र महोदधि	125/-
षोडश संस्कार पद्धति	50/-
वास्तु शान्ति प्रयोग	25/-
मन्त्र सागर	100/-
बगुलामुखी उपासना	40/-
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	40/-
मंत्र द्वारा रोग निवारण	35/-
मंत्र शक्ति	40/-
मनोकामना पूरक मंत्र	60/-
वृहद् कौवा तंत्र	30/-
सूर्यशक्ति से इलाज	25/-
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	30/-
आरती संग्रह ग्लेज़चित्र	30/-
योग वसिष्ठ महारामायण	150/-
महालक्ष्मी व्रत कथा (ग्लेज़)	25/-
गरुड़ पुराण भा. टी.	30/-
विशाल हस्त सामुद्रिक	100/-
वैशाख महात्म्य	25/-
विशाल भृगु संहिता पद्धति	250/-
पं. देवीदयालु का राशिफल (सन् 2005 ई.)	30/-
माघ महात्म्य	25/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	**225/-**
ज्योतिष शास्त्र	35/-
कार्तिक महात्म्य	25/-
व्यापारिक तेज़ी मन्दी ज्ञान	25/-
नित्य कर्म पाठमाला	40/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	40/-
वसिष्ठी हवन पद्धति	25/-
असली आल्हाखण्ड	**101/-**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**45/-**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**65/-**
सूर्य पुराण (भा. टी.)	50/-
हस्त रेखा विज्ञान	60/-
सूर्य उपासना (भाषा)	40/-
तान्त्रिक सिद्धियाँ	50/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	100/-
मन्त्र सिद्धि	35/-
श्री हरिवंश पुराण बड़ा	300/-
श्री हरिवंश पुराण (मध्यम)	100/-
देवीभागवत पुराण बड़ा	175/-
मनुस्मृति	40/-
देवी-देवता सिद्धि	35/-
कर्मकाण्ड पद्धति	**100/-**
भजन सरोवर	100/-
लाल किताब (हिन्दी)	**500/-**
लाल किताब (हिन्दी मध्यम)	120/-

अपने आर्डर के साथ 50/- रुपपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर

फोन–2457959

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा–तेजी)	100 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	50 रु.
मोटर वाईडिंग	40 रु.
पशु चिकित्सा	40 रु.
विवाहित आनन्द	35 रु.
पत्नी पथ प्रदर्शक	35 रु.
लाटरी गाईड	40 रु.
स्वर लिपि संग्रह	50 रु.
व्यापार रत्न	300 रु.
टेलीविजन वीडियो गाईड	30 रु.
Dictionary (Big)	250 रु.
Dictionary (Med.)	120 रु.
ताश के जादू	40 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज (बड़ी)	150 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	95 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	150 रु.
रेडियो ट्रांजिस्टर गाईड	30 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	120 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	50 रु.
जूडो कराटे सीखें	30 रु.
हारमोनियम सीखिए	60 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	50 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	50 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	48 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	40 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	25 रु.
तेजी मन्दा सट्टा	35 रु.
मिलिंग मशीन	45 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	50 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	80 रु.
ए. सी. मोटर वाईडिंग	80 रु.
स्टीम बायलर्स और इंजन	100 रु.
प्लास्टिक गुड्स इंडस्ट्रीज	60 रु.
स्क्रीन प्रिंटिंग	100 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
बनाइये खाना वेजीटेरियन	75 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	100 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	30 रु.
भारतीय व्यंजन	25 रु.
रोटी–परांठे व कचौरियां	36 रु.
151 पेय पदार्थ	36 रु.
फल सब्जी से चिकित्सा	40 रु.
101 वर्ष कैसे जिएं	35 रु.
चाइनिज़ कुकरी	35 रु.
शहनाज ब्यूटी बुक	125 रु.
योगासन चिकि. विज्ञान स्वा. रामदेव	125 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स	50 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	35 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
एलोपैथिक चिकि. (कोकचा)	200 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	180 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	100 रुपए
हृदय रोग	40 रुपए
घर का वैद्य	40 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
सूर्य शक्ति से ईलाज	25 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	150 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	35 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	135 रुपए
न्यू एलोपैथिक मैडी. गाईड	40 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	50 रुपए
योगासन एवं साधना	50 रुपए
वृहद बूटी प्रचार	35 रुपए
जड़ी–बूटियाँ	30 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	150 रु.
यूनानी चिकित्सा सार (वैद्यनाथ)	150 रु.
सचित्र योगासन	30 रु.
वनौषधि शतक (बैद्यनाथ)	100 रु.
रस भस्मों का सेवन	25 रु.
भैषज्य भास्कर	50 रु.
ईलाजुलगुर्बा	85 रु.
शरीर रचना क्रिया वि.	50 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	40 रु.
आयुर्वेद मंथन	30 रु.
सुगम परिवार चिकित्सा	40 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	245 रु.
गुणकारी जड़ी–बूटियां	60 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	45 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	60 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	70 रु.
भाव प्रकाश निघन्टु	120 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	50 रु.
योग द्वारा इलाज	30 रु.
योगासन	30 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	30 रु.
घरेलू इलाज	30 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	125 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	100 रु.
84 योगासन व स्वास्थ्य	40 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	50 रु.

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र

पुस्तक	मूल्य
काली किताब	400 रु.
काली किताब (छोटी)	150 रु.
महाइन्द्रजाल	150 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	100 रु.
शाबर मंत्र विद्या	50 रु.
तंत्र–मंत्र–यंत्र रहस्य	300 रु.
यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र (छोटी)	35 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	60 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	60 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	125 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	200 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	120 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	40 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	50 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	60 रु.
काली तंत्र शास्त्र	50 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	50 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	60 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	30 रु.
यंत्र–मंत्र–तंत्र टोटके	40 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	60 रु.
धनप्रदायक तांत्रिक क्रियाएं	50 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	30 रु.
11000 गंडे ताबीज़ और टोटके	150 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	150 रु.
मंत्र रहस्य	80 रु.
यंत्र विधान	120 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	75 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	50 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	50 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	60 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	60 रु.
मनोकामना सिद्धि	30 रु.
वशीकरण मन्त्र	30 रु.
चीन बंगाल का जादू	30 रु.
कामाक्षा मन्त्र	30 रु.
सूर्य तन्त्रम्	40 रु.
कामाख्या उपासना	40 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	125 रु.
महाविद्या मंत्र तंत्र	30 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	80 रु.
श्री नवग्रह साधना रहस्य	50 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
कर्मकाण्ड प्रदीप:	80 रु.
विवाह पद्धति	45 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
कर्मकाण्ड पद्धति	100 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65 रु.
कार्तिक प्रसूता शान्ति	12 रु.
श्राद्ध पद्धति	25 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	100 रु.
कर्मकाण्ड भारती	70 रु.
पूजा पद्धति	50 रु.
पूजा भास्कर	40 रु.
हवन रहस्यम्	50 रु.
ग्रह नक्षत्र शान्ति रहस्यम्	50 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	55 रु.
हनुमान कवच	15 रु.
श्री दुर्गा पूजन विधान	15 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
नवग्रह पूजन विधान	15 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	60 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा)	30 रु.
सनातन संस्कार विधि	125 रु.
संस्कार पद्धति	60 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	40 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	20 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	160 रु.
हवन पद्धति	25 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	25 रु.
नित्यकर्म प्रयोग माला	40 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा समुच्चय	50 रु.
अन्त्येष्टि संस्कार पद्धति	15 रु.
सर्व व्रतोद्यापन प्रकाश	100 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	35 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	100 रु.

अपने आर्डर के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

फोन–2457959

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्यमराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (२) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (३) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ, ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, **हिन्दी-पंजाबी** में मोती एवं **अंग्रेज़ी** में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रति का अनामिका या कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा—(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न** वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र

में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण—'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र—ॐ, ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु—रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज,** व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि—जो **पुखराज** स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि** का माना जाता है।

परीक्षा—(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख** की बाधा **को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **"ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः"** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हज़ार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न—सुनैला—इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्राय: श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान—अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण—हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक सुख** में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र,** एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का १६ हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न—(i) फिरोज़ा—नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)– यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। **हिन्दी** में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा—(i) असली **नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो** दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने **से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

गुण—नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों** में शनि के **बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की **संख्या में अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी का प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

ज्योतिष सम्बन्धी अनुपम पुस्तकें वी० पी. पी. द्वारा मंगवाएँ

ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)

इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान–सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली, ग्रहों से सप्तवर्गी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। (मूल्य 60 रुपए)

वर्षफल चन्द्रिका

(नवीन संशोधित संस्करण)

इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय, नवीन वेधसिद्ध सारिणी के अतिरिक्त **लाल किताब** के अनुसार वर्षफल बनाने तथा पुराणोक्त, तान्त्रिक व लाल किताब के उपायों का समावेश किया गया है। प्रश्नकाल एवं गोचरफल कथन की रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर का ठीक–ठीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। (मूल्य 60 रु.)

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) प्रथम भाग

गत कई वर्षों से जो प्रकाशानाधीन था। अब छपकर आ चुका है। फलित ज्योतिष सम्बन्धी आरम्भिक जानकारी सहित प्रत्येक लग्न एवं राशि के अनुसार ग्रहों का फल, दृष्टि फल, तथा कुण्डली में बनने वाले अनेकों योगों एवं फलादेश बताने के मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। लेखक के अथक परिश्रम का परिणाम है। मूल्य 250/-

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) द्वितीय भाग

(फलित ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हेतु)

फलादेश कथन में विशेष सूत्र, तुला से मीन लग्न राशियों तक के सम्बन्ध में गुण, स्वभाव, शिक्षा, कैरियर, स्वास्थ्य रोग, प्रेम विवाह, व्यवसाय उपायों आदि के सम्बन्ध में सूक्ष्म एवं विस्तृत जानकारी, कुण्डली में सभी ग्रहों का अनेक उदाहरण कुण्डलियों सहित भावगत फलादेश, दो-तीन एवं अधिक ग्रहों के योग फल, दशाऽन्तर्दशाओं द्वारा फलादेश, त्रिशांश, ज्योतिष और रोग, स्त्री जातिकाओं सम्बन्धी फल एवं मंगलीक दोष आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण एवं शोधपूर्ण व्याख्याओं सहित अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य 250 रुपए।

पं० देवीदयालु ज्यो. एण्ड सन्ज़ द्वारा प्रकाशित 'राशिफल' —सन् 2005 ई.

जन्म एवं नाम राशि के आधार पर सन् 2005 ई० का दैनिक एवं साप्ताहिक राशिफल-- जिसमें प्रत्येक स्त्री-पुरुष की वर्षभर में समय-समय पर घटने वाली घटनाएँ और उनका प्रभाव, व्यवसाय, दाम्पत्य सुख, स्वास्थ्य तथा अन्य समस्त विषयों के फलादेश सहित उपाए दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त संक्षिप्त त्यौहार, शनि-साढ़ेसाति तथा रत्नों सम्बन्धी जानकारी भी दी गई है। (मूल्य—30 रु.)

ज्योतिष सम्बन्धी अन्य अमूल्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
अर्द्ध शताब्दि पंचांग	**640 रु०**
श्री दशवर्षीय पंचांग	160 रु०
ग्रहों को कैसे शान्त करें	**--85 रु०**
तनुभाव प्रकाश	**30 रु०**
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	40 रु०
ज्यो. ज्ञान शास्त्र (पंजाबी)	75 रु०
ज्योतिष और सन्तान योग	50 रु०
ज्योतिष और रोग	60 रु०
ज्योतिष और व्यवसाय	50 रु०
भारतीय ज्योतिष (नेमिचन्द्र)	200 रु०
फलदीपिका	120 रु०
भृगु संहिता	200 रु०
भृगु संहिता (छोटी)	100 रु०
भारतीय ज्योतिष (लाल किताब)	155रु.
लाल किताब ज्योतिष (पं. अशान्त)	200 रु०
शनि साढ़ेसति से छुटकारा	40 रु०
षड्वर्ग फलम	180 रु०
ज्योतिष के अनुभूत रहस्य	250 रु०
अष्टकवर्ग सिद्धान्त व प्रयोग	100 रु०
कालसर्पयोग कारण-निवारण	120 रु०
मंगलीक दोष भ्रांति-निदान	135 रु०
फलित ज्योतिष रैडिरैक्नर	60 रु०
क्या कहते हैं कुण्डली के ग्रह	80 रु०
रावण संहिता (छोटी)	**400 रु०**
रावण संहिता (बड़ी)	**2500 रु०**
काली किताब	**150 रु०**
भृगु संहिता महाशास्त्र	**2100 रु०**
शनि शमन	**115 रु०**
शत्रु शमन	**190 रु०**
मानसागरी (भा० टी०)	100 रु०
भारतीय फलित ज्योतिष	120 रु०
बृहज्ज्योतिषसार	80 रु०
जातकभरणम्	80 रु०
मुहूर्त्त चिन्तामणि	60 रु०
बृहज्जातकम्	150 रु०
वृहद् होरा शास्त्रम्	200 रु०
आयुर्निर्णय	**200 रु०**
जातकतत्त्वम्	**125/-**
अर्घ मार्तण्ड	55 /-
मुहूर्त्त मार्तण्ड	125/-
ज्योतिष तत्त्व प्रकाश	**155/-**
प्रश्न मार्ग (दो खण्ड)	300/-
केवलज्ञान प्रश्नचूड़ामणि	45/-
प्रश्न चन्द्रप्रकाश	70/-
प्रश्न भास्कर	80/-
प्रश्न विद्या	50/-
वैवाहिक सुख	**95/-**
सन्तान सुख-सर्वांग चिंतन	165/-
वैवाहिक विलम्ब के उपाए	95/-
भावकुतूहलम्	60/-
नाक्षत्र ज्योतिष	80/-
जातक भूषणम्	150 रु०
कुण्डली दर्पण	80 रु०
दशाफल विचार	**45 रु०**
दशाफल दर्पण	**60 रु०**
कालसर्पयोग निवारण अनुष्ठान	65 रु०
लघु पराशरी भाष्य	**165 रु०**
मंत्र सागर	**100 रु०**
शिव मंत्रावली	**100 रु०**
हस्तरेखा शास्त्र-श्रीमाली	80 रु०
चन्द्र हस्त विज्ञान	225 रु०
हस्त रेखा विज्ञान-कीरो	60 रु०
सम्पूर्ण हस्तरेखा शास्त्र	150 रु०
हस्तरेखाएँ और दाम्पत्य जीवन	50 रु०
चमत्कार चिन्तामणि	175/-
ज्यो० द्वारा रोग विचार	125/-
ज्यो. और दाम्पत्य जीवन	200/-
ज्यो. और कालनिर्णय	50/-
कालसर्प एवं घट विवाह	100/-
लग्न दर्शन पं. अशान्त (चार भाग)	400/-
ज्योतिष सर्वस्व	200/-
अनिष्ट ग्रह निवारण	40/-
सूर्य सिद्धान्त	60/-
लघु पाराशरी	40/-
सर्वार्थ चिन्तामणि	70/-
सुनहरी किताब	150/-
अष्टकवर्ग से भविष्य ज्ञान	100/-

—वास्तुशास्त्र विज्ञान पर—

पुस्तक	मूल्य
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	100 रु०
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	120 रु०
रेमिडियल वास्तु शास्त्र	150 रु०
भारतीय वास्तुशास्त्र	120 रु०
व्यवहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु०
कमर्शियल वास्तुशास्त्र	150 रु०
पर्यावरण वास्तुशास्त्र	150 रु०
वास्तुकला और भवन निर्माण	120 रु०
वास्तुशास्त्र रहस्य	250 रु०
वास्तु द्वारा धन प्रवेश	300 रु०
समरांगण वास्तुशास्त्र	70 रु०
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	200 रु०
वास्तु दोष निवारण	100 रु०
फेंग शुई 151 स्वर्णिम सूत्र	100 रु०

रत्न ज्योतिष

पुस्तक	मूल्य
रत्न ज्योतिष	50 रु०
रत्न पहने भाग्य बदलें	60 रु०
रत्न प्रदीप	100 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	110 रु.
रत्न, रुद्राक्ष और भाग्य	150 रु.
रत्न और रुद्राक्ष	40 रु.
रत्न परिचय	40 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	**200 रु.**
रेखाओं का रहस्यमय संसार	195 रु.

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)

शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना लाल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में **माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य एवं सम्पूर्ण पूजन विधि**, उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षडक्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पुस्तक खरीदते समय व्याख्याकार **पं. पन्ना लाल ज्योतिषी** का नाम तथा **जनरल बुक डिपो का पता** अवश्य देख लें अथवा सीधे वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं। **मूल्य 25/-** (डाक व्यय अलग)।

ज्योतिष की दुर्लभ

लाल किताब

अब हिन्दी में उपलब्ध मूल्य डाक व्यय सहित 500 रुपए

उर्दू की फोटोस्टेट (असली)

मूल्य—1500 रुपए

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज़)

अड्डा होशियारपुर

जालन्धर शहर (पंजाब) फोन : 2457959

नोट—प्रत्येक आर्डर के साथ 50 रुपए अग्रिम राशि M.O. द्वारा भेजें। (डाक व्यय अलग)